नव-नालन्दा-महाविहार-ग्रन्थमाला

सुमङ्गलविलासिनी

(दीघनिकाय-अट्ठकथा)

ततियो भागो



संशोधक

डा० महेश तिवारी शास्त्री

नव-नालन्दा-महाविहार-गन्थमाला
बिहाररज्जाणाय पकासिता

सुमङ्गलविलासिनी

दीघनिकाय-अट्ठकथा

ततियो भागो

प्रधान संशोधक
डॉ० नथमल टाटिया
एम० ए०, डी० लिट्०
निदेशक
नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा

संशोधक
डॉ० महेश तिवारी शास्त्री,
एम० ए० (पालि, संस्कृत) पी-एच. डी.
शोध-प्राध्यापक
नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा



नव नालन्दा महाविहार
नालन्दा (बिहार)

बुद्धाब्द २५२०   ई० १९७६   विक्रमाब्द २०३३

मुख्य वितरक :—

चौखम्बा संस्कृत सिरीज,
गोपाल मन्दिर लेन,
पो० बा० नं० ८,
वाराणसी-१
(उत्तर प्रदेश)

मूल्य 34 रुपये

मुद्रक :—
बिहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ लि० प्रेस,
एक्जीवीशन रोड, पटना-८००००१

Nava Nālandā Mahāvihāra Publication
Published under the authority of
Government of Bihār

THE

SUMANGALA-VILĀSINĪ

DĪGHANIKĀYA-AṬṬHAKATHĀ

Vol. III

General Editor,
Dr. Nathmal Tatia,
M. A., D. Litt.
Director,
Nava Nālandā Mahāvihāra.

Editor :
Dr. Mahesh Tiwary, Shastry,
M. A., (Pali, Sanskrit) Ph. D.
Research Professor,
Nava Nālandā Mahāvihāra



NAVA NĀLANDĀ MAHĀVIHĀRA
NĀLANDĀ (Bihar)

B. E. 2520 C. E. 1976 V. E. 2033

Sole Agents :—
M/s. Chaukhambā Sanskrit Series
Gopal Mandira Lane,
Post Box No. 8,
Varanasi-1
(U. P.)

Price *Rupees*

Printed by :—
Bihar Rajya Shikshak Sahayog Sangh Ltd. Press,
Exhibition Road, Patna-800001.



The Government of Bihar established the Nalanda Institute of Post-Graduate Studies and Research in Buddhist Learning and Pali (**The Nava Nālandā Mahāvihāra**) at Nalanda in 1951 with the object, *inter alia*, to promote advanced studies and to publish works of permanent value to scholars. This Institute is one of five others, planned by the Government as a token of their homage to the tradition of learning and scholarship for which ancient Bihar was noted. It has been doing useful work in the field of scholarship for the last twentyfive years.

As part of the programme of rehabilitating and reorientating ancient learning and scholarship, the edition and publication of the Aṭṭhakathās have been undertaken with the co-operation of the scholars of the Institute. The Government of Bihar hope to continue to sponsor such projects and trust that this humble service to the work of scholarship and learning would bear fruit in the fulness of time.

प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

नव नालन्दा महाविहार की अट्ठकथा प्रकाशन योजना के अन्तर्गत सुमंगलविलासिनी जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रकाशन का सफल पर्यवसान अत्यन्त हर्ष का विषय है। बिहार सरकार तथा महाविहार के विद्वान सदस्य के सहृदय सहयोग के फलस्वरूप ही यह संभव हो पाया है। मेरा विश्वास उत्तरोत्तर दृढ़ होता जा रहा है कि हम कुछ ही वर्षों में समस्त अट्ठकथाओं को सर्व प्रथम देवनागरी लिपि में सुधीजनों के सामने उपस्थित कर सकेंगे।

सुमंगलविलासिनी, तृतीय खण्ड दीघनिकाय के चौदह सुत्तों की अट्ठकथा है। इसमें तीन सुत्त महावग्ग के तथा ग्यारह सुत्त पाथिकवग्ग के हैं। इन चौदह सुत्तों की अट्ठकथाओं में अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण विपुल सामग्रियों का संग्रह है। ईसा पूर्व शताब्दी के भारत के यथार्थ रूप दर्शाने में ये विमल दर्पणवत् हैं। आशा है इनसे बौद्धविद्या के जिज्ञासुओं को प्रभूत लाभ हो सकेगा।

सुमंगलविलासिनी, तृतीय भाग का सम्पादन मेरे विद्वान् शिष्य डा० महेश तिवारी, शोध प्राध्यापक, नव नालन्दा महाविहार, द्वारा सफलता पूर्वक किया गया है। यह अत्यन्त प्रसन्नता है कि ये पूर्ण निष्ठा, तत्परता एवं मनोयोग के साथ इस कार्य में संलग्न हैं। मेरी मंगलकामना तथा शुभाशीष है कि ये स्वस्थ तथा दीर्घायु हों, जिससे पालि एवं बौद्ध विद्या के अधिकाधिक ग्रन्थों को सुधीजनों के सम्मुख उपस्थित कर सकें।

नथमल टाटिया

निदेशक

नव नालन्दा महाविहार,

नालन्दा

पुरोवाक्

सुमंगलविलासिनी, तृतीय भाग में दीघनिकाय के अवशेष चौदह सुत्तों की अट्ठकथा है। इसमें महावग्ग के सक्कपञ्हसुत्त, महासतिपट्ठानसुत्त, तथा पायासिराजञ्ञसुत्त तथा पाथिकवग्ग के पाथिकसुत्त, उदुम्बरिकसुत्त, चक्कवत्तिसुत्त, अग्गञ्ञसुत्त, सम्पसादनीयसुत्त, पासादिकसुत्त, लक्खणसुत्त, सिगालसुत्त, आटानाटियसुत्त एवं संगीतिसुत्त की अट्ठकथायें सम्मिलित हैं। इनके प्रकाशन के साथ दीघनिकाय की सम्पूर्ण अट्ठकथा का प्रकाशन सम्पन्न है।

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि तैयार करने में पूर्व स्वीकृत प्रक्रिया का अनुगमन किया गया है। बर्मा में हुई षष्ट बौद्ध संगीति के अवसर पर संशोधित एवं बर्मी लिपि में प्रकाशित ग्रन्थ सुमंगलविलासिनी के आधार पर इसकी पाण्डुलिपि तैयार की गई है। पुनः पालि टेक्स्ट सोसायटी, लन्दन द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ का इसके साथ तुलनात्मक अभिवचन किया गया। उसमें उपलब्ध पाठ भेदों पर विचार करते हुए यथासंभव पादटिप्पणी में उनका उपयोग किया गया है। शंकास्थलों के निवारणार्थ हेवावतरण संस्करण सिंहली, तथा महामुकुट राजविद्यालय संस्करण स्यामी का भी सहायता उपयोगी रही है। सर्वत्र यह यत्न रहा है कि प्रस्तुत ग्रन्थ को निरर्थक पाठ भेदों से बोझिल नहीं किया जाय।

नव नालन्दा महाविहार में गत बीस वर्षों से प्रकाशन योजना गतिशील है। ग्रन्थ सम्पादन की दिशा में जिस विधि की स्वीकृति है, उसकी परिधि में इस ग्रन्थ का सम्पादन किया गया है। मूल ग्रन्थ के व्याख्येय पदों को अपेक्षाकृत पुष्ट एवं कृष्ण अक्षरों में रखा गया है। उदाहृत पद युग्म उद्धरण चिन्हों के मध्य रखे गये हैं। अट्ठकथा का अध्ययन करते समय पाठक को मूल ग्रन्थ से सर्वदा तारतम्य बना रहे, इस उद्देश्य से दीघनिकाय के पृष्ट प्रसंग तथा अनुच्छेद क्रमांक निर्दिष्ट हैं। ये सभी अंक नालन्दा संस्करण के हैं। प्रसंगानुसार रोमन तथा बर्मी लिपियों में उपलब्ध ग्रन्थों का अवलोकन सुगमतया किया जा सके, इसलिए पार्श्व में इनके पृष्ठांक अंकित हैं। इस दिशा में एकमात्र यत्न यही रहा है कि शुद्ध पाठ द्वारा ग्रन्थ को सुगमतया अवबोध्य बनाया जाय। बड़े बड़े अनुच्छेदो को सोपान, विषय-प्रतिपादन तथा स्पष्टीकरण की दृष्टि से विभक्त कर यथा स्थान शीर्षक अनुशीर्षकों आदि से उन्हें संविलसित किया गया है।

सुमंगलविलासिनी के प्रकाशन के सफल पर्यवसान के अवसर पर कल्याणमित्रों एवं गुरुजनों की स्मृति सजीव हो उठती है, जिनकी प्रेरणा एवं आशीर्वचनों के फलस्वरूप यह कार्य सम्पन्न हो पाया है। इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं पावन कर्त्तव्य समझता हूं। इस दिशा में सर्वप्रथम मैं बिहार सरकार के शिक्षाविभाग के प्रति आभारव्यक्त करता हूं, जिसके द्वारा समुचित अनुदान देकर दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशन की योजनाओं के कार्यान्वियन में उदारतापूर्वक सहयोग दिया जाता है। पूज्य गुरुदेव स्वर्गीय भिक्षु जगदीश काश्यप, डा० सत्कड़ी मुखर्जी तथा डा० वी० पी० बापट के चरणों में मैं श्रद्धा एवं भक्ति से नत हूं, जिनके अहैतुकी कृपा ही इस दिशा में मेरी प्रवृत्ति का श्रोत है। डा० नथमल टाटिया के स्नेह भरे मार्गदर्शन, सुखद प्रेरणामूलक वचन, तथा सतत प्रोत्साहन इस कार्य को सफल बनानें में सहायक हुए हैं। डा० अनुकूल चन्द्र बनर्जी, डा० विश्वनाथ बनर्जी, डा० बी० जिनानन्द आदि नें अपने परम सुखद वचनों से मुझे सर्वदा उत्साहित किया है। मैं इन सबके प्रति कृतज्ञ हूं।

महाविहार, बिहार, के सरस परिवेश में सम्पादन-विषयक चर्चाओं के अनेक अवसर आये हैं। प्रसंगगत ग्रन्थिस्थलों के परिष्करण में नव नालन्दा महाविहार के प्राध्यापक गण श्री डा० उ० धम्मरतन, डा० चन्द्रिका सिंह उपासक, डा० उ० जागराभिवंश, प्रो० ब्रह्मानन्द सरस्वती, प्रो० दिलीपकुमार बनर्जी, प्रो० उमाशंकर व्यास, प्रो० विजयकुमार शर्मा, डा० नन्दकिशोर प्रसाद, डा० नन्दकिशोर उपाध्याय, प्रो० कृष्णा चौधरी, डा० पारसपतिनाथ सिंह प्रभृति से मुझे प्रभूत लाभ हुआ है। डा० अंगराज चौधरी के आलोचनात्मक विश्लेषण तथा सूक्ष्म विवेचन से मुझे कई नई दिशायें प्राप्त हुई हैं। डा० ना० हे० साम्ताणि के सुझाव मूल्यवान सिद्ध हुए हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष श्री मिथिलेश्वर प्रसाद एवं उनके सहयोगियों ने आवश्यक पुस्तकों को उपलब्ध कराने में देश काल की परिधि को निर्बाध कर सहायता दी है। महाविहार के अन्य सदस्यों ने भी कार्य के विभिन्न आरोह अवरोह के क्षणों में विविध लाभ पहुंचाया है। इन सभी कल्याण मित्रों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

इस ग्रन्थ के सम्पन्न होने में मेरे शोध छात्रों का योग कम नहीं रहा है। सर्व श्री डा० परमेश्वर दयाल सिंह, डा० जनार्दन उपाध्याय, सत्येन्द्र प्रसाद सिंह ने ग्रन्थ की अनुक्रमणिका बनाने में सहायता प्रदान की है। श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह का योग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इन्होंने अत्यन्त तत्परता एवं निष्ठा के साथ प्रूफ संशोधन का कार्य सम्पन्न कर ग्रन्थ को अल्प काल में सुधी जनों के सम्मुख लाने में सहायता दी है। मैं सभी छात्रों को हार्दिक

साधुवाद देता हूं तथा मंगलकामना करता हूं कि इनका भविष्य समुज्वल हो।

अन्त में मैं बिहार राज्य शिक्षक सहयोग संघ प्रेस के व्यवस्थापक श्री ठाकुर दयाल सिंह, कोषपाल श्री जगधारी पाण्डेय अन्य सभी कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूं, जिनके मधुर व्यवहार, तत्परता, निष्ठा एवं कर्मठता के कारण पुस्तक का मुद्रण यथा समय हो पाया है।

ग्रन्थ मुद्रण क्रम में यत्न यही रहा है कि इसे शुद्ध रूप में सुधीजनों के सम्मुख उपस्थित किया जाय, पर मनुष्य तो स्वभावतः स्खलनधर्मा है। त्रुटियां उसका अनुगमन किये बिना नहीं रहती हैं। यहां भी कुछ अशुद्धियां रह गई हैं। इनके परिहार केलिए ग्रन्थ के प्रारम्भ में एक शुद्धिपत्र दे दिया गया है। पुनः पुनः विनम्र निवेदन एवं क्षमा याचना के साथ सुधी जनों से सादर अनुरोध है कि—अपने अध्ययन क्रम में प्राप्त अन्य त्रुटियों से मुझे अवगत कराने की कृपा करें, जिससे भविष्य में इसका सुन्दरतर रूप दिया जा सके।

महेश तिवारी

३०-३-७६

भूमिका

परिचिति–सुमङ्गलविलासिनी, भाग तीन, दीघनिकाय के चौदह सुत्तों की अट्ठकथा है। इसमें 'महावग्ग' के तीन सुत्त—सक्कपञ्हसुत्त, महासतिपट्ठानसुत्त एवं पायासिराजञ्ञसुत्त तथा पाथिकवग्ग के ग्यारह सुत्त-पाथिकसुत्त, उदुम्बरिकसुत्त, चक्कवत्तिसुत्त, अग्गञ्ञसुत्त, सम्पसादनीयसुत्त, पासादिकसुत्त, लक्खणसुत्त, सिगालोवादसुत्त, आटानाटियसुत्त, संगीतिसुत्त तथा दसुत्तरसुत्त आये हैं। इन सुत्तों की व्याख्या करते हुए बुद्धघोष ने विपुल सामग्रियों के भण्डार का यहाँ संग्रह किया है। ये सामग्रियां परिमाण में इतनी विशाल हैं कि इनका सम्यक् विन्यास इस सीमित परिधि में सम्भव नहीं है। ये सामग्रियाँ भी विविध विषयक हैं। इसलिए उनका विषयानुसार विभाजन स्थापन-निरूपन एवं मूल्यांकन अपने में एक विशाल कार्य है। अतः प्रकृत प्रसंग में इनके विभिन्न अंगों के विस्तार वर्णन से अपने को पृथक कर कुछ ही सुत्तों की निश्चित सामग्रियों तक सीमित रखना उचित प्रतीत होता है। यों तो भगवान बुद्ध के सभी उपदेश अपने में परम हितकारी हैं, पर गृही धर्म एवं आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से सिगालोवादसुत्त[1] (सिगालसुत्त) तथा सतिपट्ठानसुत्त[2] अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। इसलिए यहाँ केवल दो सुत्तों का ही विवरण उपस्थित करने का यत्न है।

सिगालोवादसुत्त

दीघनिकाय के सुत्तों में सिगालोवादसुत्त का महत्वपूर्ण स्थान है। इस सुत्त में भगवान बुद्ध द्वारा गृहस्थों के लिए उपदेश दिये गये हैं। गृही जीवन के समस्त अंगों पर विचार करते हुए उसके सर्बांग विकास की पृष्ठभूमि में इस उपदेश का कथन कहा जा सकता हैं। यह एक सामान्य धारणा प्रचलित है कि भगवान बुद्ध के उपदेश केवल भिक्षुओं के लिए हैं। इस सामान्य धारणा का यहाँ स्पष्ट निराकरण देखा जा सकता है। परम कारुणिक तथागत की वाणी गृही तथा प्रव्रजित सबके हित के लिए है। यह

---

१. भगवा ति न इदानेव अद्दस, पच्चूससमये पि बुद्धचक्खुना लोकं ओलोकेन्तो एतं दिसा नमस्समानं दिस्वा "अज्ज अहं सिङ्गालस्स गहपतिपुत्तस्स गिहिविनयं सिङ्गालसुत्तन्तं कथेस्सामि, महाजनस्स सा कथा सफला भविस्सति, गन्तब्बं मया एत्था" ति।

सु० वि० ३.२७४।

२. अयती ति वा अयनो, गच्छति पवत्तती ति अत्थो। ...संसारतो निब्बानं गच्छतीति अत्थो। इमस्मिं धम्मविनये पवत्तति, न अञ्ञत्था ति वुत्तं होति।

सु० वि० ३.५६।

तो उनके प्रथम आदेश से ही प्रकट है, जब उन्होंने भिक्षुओं को बहुजन हिताय बहुजन-सुखाय की भावना से अनुप्राणित कर लोक कल्याण में विचरण करने के लिए कहा था[1]। ऐसा भी कहा जाता है कि भगवान बुद्ध ने अपना उपदेश करते हुए पुनः पुनः भिक्षुओं को ही सम्बोधित किया है और सम्भवतः उस सम्बोधन को देखकर ही ऐसी धारणा बन गई है कि बुद्ध के ये उपदेश भिक्षुओं के लिए ही हैं। आचार्य बुद्धघोष ने इसका निराकरण करते हुए दर्शाया है कि परम कारूणिक तथागत के उपदेश को इस प्रकार सीमित करना उचित नहीं है। उपदेश क्रम में भिक्षुओं का सम्बोधन तो एक देसना की विधि मात्र है। जिस प्रकार राजा के आगमन से मंत्रीगण, अंगरक्षक, सेनापति आदि का आगमन स्वतः अभिप्रेत है, उसी प्रकार सम्बोधन के रूप में भिक्षु शब्द के प्रयोग के साथ उनकी चार प्रकार की परिषद् समाविष्ट है। उस शब्द से भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक तथा उपासिका सबका कथन इष्ट समझना चाहिए[2]। इस पृष्ठ भूमि में सिगालोवाद सुत्त में आगत तथ्यों पर विचार करने से प्रकट होता है कि भगवान बुद्ध ने गृहस्थों के लिए भी सर्वविध कल्याणप्रद तथ्यों का कथन किया है।

इस सुत्त की देशना राजगृह के 'वेणुवन कलन्दकनिवास' नामक विहार में की गई है। उस विहार के नामकरण का भी कुछ कारण है। यह विहार वेणु गुम्ब से परिवारित होने के कारण वेणुवन के नाम से विख्यात था। कहा जाता है कि इस विहार के चतुर्दिक प्राचीर की भांति वेणुदण्ड ही स्थित थे। वाह्य रूप से विहार वेणुदण्डों के अरण्य के रूप में ही प्रतीत होता था[3]। पुनः यह कलन्दक अर्थात् गिलहरियों से अभिवसित होने के कारण कलन्दकनिवाप भी कहलाता है। कहा जाता है कि किसी समय एक राजा उद्यान-क्रीड़ा की दृष्टि से उस विहार में आया हुआ था। वह सुरामत्त होने के कारण शीघ्र ही निद्रा अभिभूत हो उठा। राजा को प्रसुप्त जान

---

१. चरथ भिक्खवे, चारिकं बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय सुखाय देवमनुस्सानं।

म० व० पृ० २३।

२. भिक्खू ति पटिपत्तिसम्पादकपुग्गलनिदस्सनमेतं। ...तस्मिं गहिते पन सेसा गहिताव होन्ति राजगमनादीसु राजग्गहणेन सेसपरिसा विय। यो च इमं पटिपत्तिं पटिपज्जति, सो भिक्खु नाम होती ति पटिपत्तिया भिक्खुभावदस्सनतो पि 'भिक्खू' ति आह। पटिपन्नको हि देवो वा होतु मनुस्सो वा, भिक्खू ति सङ्खं गच्छति येव। यथाह—

अलंकतो चेपि समं चरेय्य,
सन्तो दन्तो नियतो ब्रह्मचारी।
सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं,
सो ब्राह्मणो सो समणो स भिक्खू ति॥

सु० वि० ३.६८।

३. तं किर वेलूहि परिक्खित्तं अहोसि अट्ठारसहत्थेन च पाकारेन गोपुरट्टालकयुत्तं नीलोभासं मनोरमं तेन वेलुवनं ति वुच्चति।

सु० वि० ३.२७२।

एक कृष्ण वर्ण का सर्प उसे डसने के लिए आ पहुंचा। इतने में एक कलन्दक अर्थात् गिलहरी ने राजा के कान के निकट शब्द उपस्थित कर उसे जगा दिया। राजा ने प्रबुद्ध होकर उस सर्प तथा कलन्दक दोनों को देखा एवं सर्प द्वारा अपने प्राणरक्षा में सहायक कलन्दक को जान उस विहार को उनके लिए अभय स्थान घोषित किया। तब से वह स्थान उन कलन्दकों के लिए अभय स्थान बन गया एवं बहुसंख्यक तथा विविध वर्ण की गिलहरियाँ वहाँ रहने लगी। फलस्वरूप वह विहार कलन्दक निवाप नामक नाम से अभिहित हुआ[1]।

इस सुत्त में गृहस्थों के लिए देसना दिशा के व्याज से की गई है। जिस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर एवं नीचे की दिशा के अन्तर्गत ही समस्त दिशाएं समाविष्ट हो जाती हैं, उसी प्रकार भगवान बुद्ध ने समस्त गृही जीवन को छः अंगों में समाविष्ट करने का यत्न किया है। वे छः अंग हैं—(१) माता-पिता, (२) आचार्य, (३) स्त्री-पुत्र, (४) मित्र-आमात्य, (५) श्रमण-ब्राह्मण तथा (६) दास एवं कर्मकर। इन्हीं सामाजिक छः इकाईयों में गृही जीवन इस प्रकार से समाविष्ट हो गया है कि कोई भी अंग इनके अतिरिक्त नहीं बचते हैं। इस प्रकार छः दिशाओं में व्याप्त समस्त जगत् की भाँति इन छः इकाइयों में समस्त गृही जीवन को विशिष्ट रूप से रखने का यत्न किया गया है। इनमें माता पिता को पूर्व दिशा कहा गया है। आचार्य का कथन दक्षिण दिशा के नाम से है। स्त्री-पुत्र पश्चिम दिशा हैं। तथा मित्र एवं आमात्य को उत्तर दिशा कहा गया है। दास तथा कर्मकर नीचे की दिशा है तथा साधु-ब्राह्मण ऊपर की दिशा के नाम से चर्चित है। यहां पर दर्शनीय है कि जिस प्रकार इन छः दिशाओं की पूजा से समस्त जगत् की पूजा युक्त समझी जा सकती है, उसी प्रकार इन छः ईकाइयों की पूजा से सम्पूर्ण समाज की पूजा अभिप्रेत है। यहां पूजा शब्द का प्रयोग अत्यन्त ही आधुनिक एवं नवीन अर्थ में देखा जाता है। पूजा शब्द यहाँ अर्चना के अर्थ में अभिप्रेत नहीं है वरन् इसका प्रयोग कर्तव्य के अर्थ में है[2]। तात्पर्य यह है कि इन छः व्यक्तियों के प्रति विहित कर्त्तव्य के सम्यक् परिपालन से

---

१. अञ्ञतरो राजा तत्थ उय्यानकीलनत्थं आगतो सुरामदेन मत्तो दिवा निद्दं ओक्कमि। ...अथ सुरागन्धेन अञ्ञतरस्मा सुसिररुक्खा कण्हसप्पो निक्खमित्वा रञ्ञो अभिमुखो आगच्छति। ...कालकवेसेन आगन्त्वा कण्णमूले सद्दमकासि। राजा पटिबुज्झि। कण्हसप्पो निवत्तो। ...'इमाय कालकाय मम जीवितं दिन्नं' ति कालकानं तत्थ निवापं पट्ठपेसि, अभयघोसं च घोसापेसि। तस्मा तं ततोपभुति कलन्दकनिवापो ति सङ्खयं गतं। कलन्दका ति हि कालकानं एत नामं।

सु० वि० ३.२७२।

२. न खो, गहपतिपुत्त, अरियस्स विनये एवं छ दिसा नमसितब्बा।

दि० नि० ३ १३६।

+ + +

सो एवं चुद्दस पापकापगतो छद्दिसापटिच्छादी उभोलोकविज्जायपटिपन्नो होति।

दी० नि० ३.१८०।

सम्पूर्ण गृही समाज के प्रति कर्त्तव्यों का परिपालन हो जाता है। इस दृष्टि से ही यहाँ दिशा की उपमा से समाज को छः इकाईयों में विभक्त कर उनके प्रति कर्त्तव्य करने की विधा अत्यन्त सुन्दर, सुव्यवस्थित एवं युक्त प्रतीत होती है।

इस प्रसंग में यह भी ज्ञातव्य है कि इस विशेष प्रकार के उपदेश की एक पृष्ठभूमि भी है। कहा जाता है कि 'सिगाल' नामक श्रद्धालु गृहपति अपने पुत्र 'सिगालक' को अनेक यत्न के उपरान्त भी अपने जीवन में सुशिक्षित नहीं कर सका[1]। कुल की परम्परा पुत्र के माध्यम से ही जीवित रहती है। इस पृष्ठभूमि में अपने पुत्र को अशिक्षित देख वह सर्वदा चिन्तित रहता था। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है। अनित्य के प्रवाह से कोई वंचित नहीं रहते हैं। क्रमशः 'सिगाल' गृहपति के भी जीवन-क्षण समीप आ गये। वह क्षीण इन्द्रिय हो मरण-मंच पर निपन्न था। उसके सामने यदि कोई चिन्ता थी, तो पुत्र के शिक्षा की। इसलिए उसने आवश्यक समझा कि उस अन्तिम क्षण में भी उसे कुछ उपदेश दिये जायं। गृहपति व्यवहार कुशल तथा श्रद्धा सम्पन्न व्यक्ति था। इसलिए उसने यह आवश्यक समझा कि अन्तिम क्षण में अपने पुत्र को कुछ विशेष शिक्षाओं से उपेत किया जाय। उसने देखा कि राजगृह की भूमि सन्त से अनुचरित है। यहाँ सन्तों का आगमन सर्वदा होता रहता है। इसलिए कोई ऐसे मार्ग का चयन किया जाय, जिससे उसके पुत्र को सन्तों का समागम प्राप्त हो। ऐसा सोच उसने अपने पुत्र को यह समझाया कि वह उसकी अन्तिम वाणी का सत्कार करे। वह प्रति दिन प्रातः काल स्नान कर राजगृह के चौरास्ते पर भीगे वस्त्र, भीगे केश खड़ा होकर सभी दिशाओं का नमस्कार करे। उसे विश्वास था कि ऐसा करते हुए उसके पुत्र के प्रति किसी सन्त की दृष्टि पड़ जाएगी, तथा उसके द्वारा उसके पुत्र को दिशा का सम्यक् ज्ञान करा दिया जाएगा। इसी प्रश्न पर चिन्तन करते हुए गृहपति ने लोकलीला समाप्त की[2]। पुत्र ने भी यह आवश्यक समझा कि वह पिता की उस अन्तिम वाणी का आदर करे। उनके मृत्यु के उपरान्त वह प्रतिदिन प्रातः काल ही स्नान कर भीगे वस्त्र, भीगे केश राजगृह के चौरास्ते पर जा छः सामान्य दिशाओं का नमस्कार करने लगा। पिता के इस अन्तिम उपदेश में उसे श्रद्धा थी।

गृहपति का पुत्र के शिक्षा विषयक चिन्तन यथार्थ निकला। एक दिन वह शुभ मुहूर्त आ गया, जब उसके पुत्र के लिए ज्ञान प्राप्ति के क्षण भी परिपक्व हो गये। अन्य दिनों के भांति वह गृहपति पुत्र राजगृह के चौरास्ते पर सभी दिशाओं का नमस्कार कर रहा था। उसका यह कार्य अव्यवच्छिन्न गति से चल रहा था। पूर्वाह्न काल की

---

१. इति नं यावजीवं अे वदन्ता पि मातापितरो सासने उपनेतुं नासक्खिसु।

सु० वि० ३.२७३।

१. अथ नं सत्था वा सावका वा पस्सित्वा "किं करोसी" ति पुच्छिस्सन्ति। ततो "मय्हं पिता दिसा नमस्सनं करोही ति मं ओवदी" ति वक्खति।

सु० वि० ३.२७३।

शुभ वेला आई। काषाय वर्ण के चीवरों से अपने को अच्छादित कर हाथ में भिक्षापात्र ले सौम्य गति से भगवान बुद्ध ने राजगृह में भिक्षा के लिए प्रवेश किया। उनका मुख-मण्डल अपूर्व कान्ति मे युक्त था। उस पर शान्ति विद्यमान थी। उनके राजगृह की ओर एक एक पद-निक्षेप में आध्यात्मिक गरिमा प्रस्फुटित हो रही थी। क्रमशः उस राजगृह के चौरास्ते के निकट पहुंचते ही उनकी दृष्टि उस युवक की ओर आकृष्ट हुई जो अनवरत गति से दिशाओं के नमस्कार में तल्लीन था। सर्वज्ञ तथागत ने उस युवक को देखा एवं उसके पिता के उद्देश्य को भी समझ लिया। उन्होंने स्मित गति से उस युवक के निकट जाकर उसके इस प्रकार की चर्या का कारण पूछा। गृहपति पुत्र ने सरल शब्दों में इसका कथन किया कि उसके पिता ने अपने अन्तिम क्षण में उसे ऐसा ही आदेश दिया था कि वह इन दिशाओ का नकस्कार करे। उनकी उस वाणी का समादर करते हुए वह दिशाओं की अर्चना में तल्लीन है। ऐसा सुन तथागत ने उसे स्पष्ट शब्दों में समझाया कि दिशाओं की अर्चना में उसके पिता का उद्देश्य कुछ अन्य था, एवं उन्होंने स्पष्ट शब्दों में उस यथार्थ अर्थ को दर्शाते हुए कहा :—

"मातापिता दिसा पुब्बा, आचरिया दक्खिणा दिसा।
पुत्तदारा दिसा पच्छा, मित्तामच्चा च उत्तरा ॥
"दासकम्मकरा हेट्ठा, उद्धं समणब्राह्मणा।
एता दिसा नमस्सेय्य, अलमत्तो कुले गिही ॥[1]"

बुद्ध के इस उपदेश से यह स्सष्ट है कि दिशा से सामान्य दिशाएं अभिप्रेत नहीं हैं। वरन् इससे दिशाओं के रूप में समाज की छः इकाइयों की अभ्यर्थना ही अभिप्रेत है। अब यहाँ विचारनीय यह है कि समाज की एक-एक इकाई को एक-एक दिशा विशेष के नाम से कथन क्यों किया गया? मूल त्रिपिटक में इसकी चर्चा नहीं है। पर बुद्धघोष ने इसपर विचार करने का यत्न किया है।

माता-पिता को पूर्व दिशा कहा गया है। इस प्रकार के संकेत में जो अर्थ निहित है, वह यह है कि इस लोक में पुत्र के प्रति पूर्व अर्थात् आरम्भ में जो कुछ भी कार्य किये जाते हैं, वे माता-पिता द्वारा ही किये जाते हैं। माता-पिता द्वारा ही अंगुलि-निर्देश न्याय से स्नेह-मिश्रित वाणी में लोक-व्यवहार के तथ्य प्रकट किये जाते हैं। शनैः शनैः उस बालक के हृदय में व्यावहारिक जगत् का परिचय कराते हुए उसके मानस में आध्यात्म-बीज का बपन किया जाता है। बालक के जीवन निर्माण एवं वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार करने में माता-पिता का ही मुख्य रूप से योग होता है। इसलिए पूर्व अथात् प्रारम्भ में उनके द्वारा किये गये कृत्यों को ध्यान में रखते हुए माता पिता को पूर्व दिशा कहा गया है[2]।

---

१. दी० नि० ३.१४८।

२. मातापितरो पुब्बुपकारिताय पुरत्थिमा दिसा ति वेदितब्बा। सु० वि० ३.२८५।

आचार्य को दक्षिण दिशा कहा गया है। दक्षिण शब्द यहाँ उनके दक्षिणेय्य अर्थ का द्योतक है। माता-पिता द्वारा अभिवर्द्धित पुत्र के मानस धरातल पर आचार्य द्वारा विद्या बीज का बपन किया जाता है। उनसे प्राप्त विद्या के आधार पर ही वह अपने जीवन का निर्माण करता है। स्मृतियों में भी जहाँ पाँच प्रकार के पिता का कथन किया गया है, वहाँ आचार्य का द्वितीय स्थान है। किसी भी व्यक्ति के जीवन निर्माण में आचार्य का प्रभूत योग रहता है, क्योंकि उन्हीं की विद्याएं ही उसके जीवन को सुव्यवस्थित करने में सहायक होती हैं। ऐसे पुनीत कार्य किये जाने के कारण ही आचार्य दक्षिणा पूजा, वन्दना आदि के पात्र समझे जाते हैं। उनकी इस प्रकार की दक्षिणेय्यता पर ध्यान रखते हुए ही उन्हें दक्षिण दिशा कहा गया है[1]।

पुत्र तथा स्त्री को उत्तर दिशा की संज्ञा दी गई है। इस प्रसंग में आचार्य बुद्ध घोष का मत है कि पुत्र तथा स्त्री का आगमन मनुष्य के जीवन में पश्चात् रूप में होता है। क्रमशः जब वह विवाहोचित आयु को प्राप्त करता है, तब उसके जीवन स्त्री का प्रवेश होता है। उसके उपरान्त पुत्र का आगमन होता है। इस दृष्टि से पश्चात् आगमन के कारण ही स्त्री तथा पुत्र को उत्तर दिशा कहा गया है[2]।

मित्र और आमात्य का मनुष्य के जीवन में प्रभूत योग है। मित्र जीवन में एक सहयोग की पृष्ठभूमि तैयार करता है, जिसका अभिग्रन्थन समता, स्वार्थरहितता, उदारता, एवं तत्परता पर आधारित होता है। मित्र केवल मैत्री का मार्ग ही प्रशस्त नहीं करता है, वरन् समयानुसार उचित परामर्श देकर उसे सम्यक् मार्ग पर लगाता भी है। मित्र एवं आमात्यों के माध्यम से ही मनुष्य लोक में व्याप्त दुखों से उत्तीर्ण होता है। मित्र ही आध्यात्मिक अर्थ में कल्याण-मित्र कहलाता है, जिसके सहयोग से मनुष्य आध्यात्मिक जीवन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को पार कर एक सबल आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करता है। इस प्रकार मित्र एवं आमात्यों के योग से लौकिक एवं आध्यात्मिक मार्ग में उपलब्ध बाधाओं को उत्तीर्ण होने के अर्थ में ही मित्र एवं आमात्य को उत्तर दिशा कहा गया है। यहाँ उत्तर शब्द में तत्परता के साथ संतरण का भाव अभिप्रेत है[3]।

उत्तर शब्द से अवतरण कर अर्थ भी देखा जा सकता है। मनुष्य का जीवन दुःखों से अभिभूत है। पर ये दुःख मनुष्य को निराशपूर्ण एवं कर्महीन बनाने के लिए नहीं है। वरन् उनके प्रहाण के लिए प्रेरणादायक हैं। प्रहाण के लिए जो यत्न किया जाता है, उनके लिए कटिबद्ध हो अवतरण की आवश्यकता होती है। इस कार्य में मित्र

---

१. आचरिया दक्खिणेय्यताय दक्खिणा दिसा ति। सु० वि० ३.२८५।

२. पुत्तदारा पिट्ठितो अनुबन्धनवसेन पच्छिमा दिसा ति। सु० वि० ३.२८५।

३. यस्मा खो मित्तामच्चे निस्साय ते ते दुक्खविसेसे उत्तरति, तस्मा उत्तरा दिसा ति। सु० वि० ३.२८५।

एवं आमात्यों का प्रभूतयोग होता है। इसलिए दुख निवारणार्थ यत्न के लिए अवतरण में सहायक होने के अर्थ में मित्र एवं आमात्य को उत्तर दिशा से अभिहित किया गया है।

इस प्रसंग में दास तथा कर्मकरों को निम्न दिशा के रूप में दर्शाया गया है। इसके सामाजिक तथा व्यवहारनिष्ठ दो कारण हो सकते हैं। सामाजिक संगठन के अनुसार दास तथा कर्मकरों का स्थान उस समय निम्न था। जिस प्रकार शरीर का निम्न अंग पादमूल है, उसी प्रकार पादमूल की भाँति सामाजिक दृष्टि से निम्न स्थान प्राप्त करने के कारण दास कर्मकर निम्न समझे जाते थे। आचार्य बुद्धघोष ने इस कथन पर अन्य दृष्टि से विचार किया है। उनका कहना है कि वस्तुतः जो कार्य करने वाले हैं तथा सेवावृति से अपना जीवन व्यतित करते हैं, वे ही समाज के आधार हैं। यदि सेवावृति वालों का समाज में कोई स्थान न रहे तो समाज की सुप्रतिष्ठा नहीं हो सकती है। कृषि, उद्योग वाणिज्य आदि सभी सेवा पर ही आधारित हैं। यदि उनके द्वारा सेवा न प्रदान की जाय, तो समाज का संचालन ही अवरुद्ध हो जायगा। इसलिए प्रतिष्ठान या आधार की दृष्टि से ही दास एवं कर्मकरों को निम्न दिशा कहा गया है। यहाँ उन्हें निम्न दर्शाने की भावना नहीं है। वरन् समाज के आधारस्वरूप दर्शाने की भावना है[१]।

पुनः श्रमण-ब्राह्मण को ऊपर की दिशा कहा गया है। इस प्रसंग में सर्वप्रथम श्रमण तथा ब्राह्मण शब्द विचारणीय हैं। पापों के उपशमन के अर्थ में वे श्रमण कहलाते हैं तथा पापों को अपने से सब प्रकार से धो डालने के अर्थ में वे ब्राह्मण हैं। 'धम्मपद' के 'ब्राह्मणवग्ग' में भगवान बुद्ध ने ब्राह्मण के गुणों पर प्रकाश डाला है। उन गुणों को देखने से प्रकट होता है कि समस्त तृष्णाओं से रहित जन कल्याण में रतपुरुष को ही ब्राह्मण कहा जाता है। वे श्रमण तथा ब्राह्मण अनेक उदात्त गुणों से परिपूर्ण रहते हैं। इसलिए वे पूज्य, उच्च तथा महान् समझे जाते हैं। यहाँ ये शब्द किसी जाति विशेष के द्योतक नहीं हैं, पर गुणविशेष के ही द्योतक हैं। अपने गुणविशेष के कारण ही समाज में इनका उच्च स्थान प्राप्त है। इस प्रसंग में यह भी ज्ञातव्य है कि वे केवल अपने उत्थान के लिए ही गुणों का उपार्जन नहीं करते हैं, वरन् परकल्याण के लिए ही वे अपने में उन विशेष गुणों का समावेश करते हैं। ऐसी चर्या के कारण वे जन-मानस में उच्च स्थान पाप्त करते हैं। इस दृष्टि से उन्हें ऊपर की दिशा कहा गया है।[२]

अब इन छः दिशाओं के व्याज से कहे गये समाज के छः इकाईयों का प्रसंगवश उल्लेख करते हुए यहाँ इस बात पर भी विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है कि भगवान बुद्ध ने इन छः व्यक्तियों की पूजा किस प्रकार से करने का विधान किया है।

---

१. दासकम्मकरा पादमूले पतिट्ठानवसेन हेट्ठिमा दिसा ति। — सु० वि० ३.२८५।

२. समणब्राह्मणा गुणेहि उपरिट्ठितभावेन उपरिमा दिसा ति वेदितब्बा। — सु० वि० ३.२८५।

प्रसंग से स्पष्ट है कि यहां 'पूजा' शब्द सेवा तथा कर्त्तव्य के अर्थ में है। इन छः दिशा-रूपी छः इकाईयों के प्रति जो पूजा की विधा बुद्ध द्वारा दर्शायी गई है, वह उनके प्रति विहित कर्त्तव्यों का परिपालन हैं। इस प्रसंग में जिन कर्त्तव्यों का उल्लेख है तथा उनके फलस्वरूप उपलभ्य लाभों की चर्चा है, वह व्यवहार परिनिष्ठ है। तथागत ने अत्यन्त व्यावहारिक दृष्टिकोण से ही इनका कथन किया है। उन्होंने यह भी दर्शाया है कि सेवा एकांगी नहीं होती है। यह परस्पर भाव से होती है। इस तथ्य का दर्शन हम उनके इन वचनों में कर सकते हैं।

पूर्व दिशारूपी माता-पिता की पूजा के प्रसंग में बुद्ध ने उनके प्रति पांच प्रकार के अनिवार्य कर्त्तव्यों का विधान किया है। वे इस प्रकार हैं :—

१. माता-पिता ने हमारा भरण-पोषण किया है, इसलिए मुझे भी उनका भरण-पोषण करना चाहिए। जब शिशु अबोध एवं असमर्थ रहता है, तब वह मां के द्वारा ही अभिपोषित होता है। मां अपने स्तनपान कराकर स्नेह से उसे पालती है। उसके मुख से नाक से निकलते हुए मलों को साफ कर शुद्ध जल से स्नान करवाती है एवं उसे विविध प्रकार से सुशोभित करती है। बालक के पालन-पोषण में अपने समस्त प्रकार के दुःखों को वह भूल जाती है। अत: माता-पिता द्वारा किये गये कर्त्तव्यों का स्मरण करते हुए उनके प्रति भी पुत्र को कर्त्तव्य करना चाहिए। उनके वृद्ध हो जाने पर पाद प्रक्षालन, स्नान, भोजन प्रदान आदि के द्वारा उनकी सेवा करनी चाहिए।

२. इस प्रसंग में जिस दूसरे कर्त्तव्य का उल्लेख है, उसमें यह कहा गया है कि मैं भी उनके प्रति कर्म करूंगा। अर्थात् पुत्र को युवा अवस्था प्राप्त कर विभिन्न शिल्पों को सिख कर, राजकुल में जाकर या अन्य स्थानों में जाकर विविध कृत्यों द्वारा कुछ उपार्जन करना चाहिए। उस उपार्जित धन-धान्य से माता-पिता की सेवा करनी चाहिए।

३. पुत्र को चाहिए कि वह कुल वंश की रक्षा करे। माता-पिता द्वारा प्राप्त क्षेत्र, वस्तु, हिरण्य आदि का व्यर्थ रूप से विनाश न कर कुल वंस की रक्षा करनी चाहिए। अथवा यदि माता-पिता के वंश परम्परा में अधार्मिक परम्परा विद्यमान हो तो उसका क्रमशः धार्मिक परम्परा के रूप में परिवर्त्तन कर वंश की रक्षा करनी चाहिए। साथ ही उस कुल या वंश में जो साधु-सन्तों की सेवा या दान आदि की परम्पराएं चलती आ रही हों, उनमें कोई उच्छेद नहीं डालकर उनको उसी रूप से विद्यमान रखना चाहिए।

४. माता-पिता से प्राप्त उत्तराधिकार की उचित रक्षा होनी चाहिए। ऐसा देखा जाता है कि अपने पुत्र को आज्ञानुसारी न देख माता-पिता उन्हें अपुत्र रूप में समझते हैं तथा ऐसा विचारने लगते हैं कि उस प्रकार के पुत्र दायज्य के अधिकारी नहीं हैं। इसलिए पुत्र के लिए आवश्यक है कि माता-पिता का

आज्ञाकारी हो। अपने कार्यकलाप से उनका अभिरंजन करते हुए उनके इच्छानुसार ही उत्तराधिकार प्राप्त करे।

५. इस प्रसंग में माता-पिता के प्रति पुत्र का जो पाँचवें कर्त्तव्य का उल्लेख है, वह उनके मरने पर दक्षिणा देने का है। बौद्ध परम्परा में ऐसी मान्यता है कि पितृ-गण अपने पुत्र-पौत्र आदि के द्वारा किये गये शुभ कर्मों से लाभान्वित होते हैं। वे अपने पुत्रादि के द्वारा दिये गये दान से सुन्दर गति को प्राप्त करते है। खुद्दकपाठ के 'तिरोकुड्डसुत्त' में पितरों के प्रति दान देने का विधान किया गया है। इस प्रसंग में पत्तिदान ही विशेष महत्वपूर्ण है। पुत्र अपने किये हुए शुभ कर्मों को माता-पिता के सुगति लाभ के लिए उत्सर्ग करे। इसे ही पत्तिदान या पुण्यदान कहा जाता है। 'सिगालोवाद सुत्त' में पुत्र द्वारा माता-पिता के प्रति इन्हीं पाँच कर्त्तव्यों का विधान देखा गया है। इन पांच प्रकार के कर्त्तव्यों का समुचित ढंग से करना ही पूर्व दिशारूपी माता-पिता की पूजा है।

इस प्रसंग में यह भी दर्शाया गया है कि कोई कार्य निरर्थक नहीं होता है। वह शुभ एवं अशुभ रूप से अपना फल देता है। अथवा यह कहा जाय कि किसी कार्य में भी प्रवृत्ति तबतक सम्यक् रूप से नहीं होती है जब तक उससे प्राप्त फलों का ज्ञान न हो जाय। जब पुत्र के लिए यह विहित बताया गया है कि वह माता-पिता के प्रति पांच कर्त्तव्यों का पालन करे। वहाँ साथ ही यह भी दर्शाया गया है कि माता-पिता भी पुत्र के प्रति पाँच प्रकार के कर्त्तव्यों का पालन करें। इनका विधान निम्नलिखित क्रम से किया गया है :—

कहा गया है कि जब पुत्र द्वारा माता-पिता सम्पूजित होते हैं तो वे (१) पुत्र को अकुशल कर्मों से बचाते हैं। प्राणातिपात अदिन्नादान आदि जो अकुशल कर्म हैं, वे वर्तमान जीवन में तथा भविष्य में इन दुष्कर्मों के होने वाले दुष्परिणामों को बता देते हैं। वे इनके दुष्कर्मों को दर्शाते हुए कहते हैं कि—'हे पुत्र ! ऐसा दुष्कर्म न करो।' ऐसे स्नेह मिश्रित वाक्यों से उन्हें पाप कर्म करने से बचाते हैं। (२) वे केवल पापकर्मों से बचाते ही नहीं हैं, वरन् पुण्य कर्मों की ओर प्रवृत्त भी कराते हैं। यहाँ दर्शनीय है कि जो कार्य कुशल हेतुओं से युक्त है, वे पुण्य कर्म कहलाते हैं। प्राणवध से विरति, चोरी से विरति, व्यवभिचार से विरति आदि कुशल कर्म हैं। ये कुशल कर्म इस लोक तथा परलोक दोनों में सुख देने वाले होते हैं। इसलिए कहा जाता है कि पुण्यकारी अपने कुशल कर्मो के कारण सुख पूर्वक सोता है। वह इस लोक में भी आनन्दित होता है तथा परलोक में भी आनन्दित होता है। इन सब तथ्यों को दर्शाते हुए वे अपने पुत्रों को पुण्य कर्म में प्रवृत्त कराते हैं। (३) माता-पिता अपने पुत्रों के सर्वविध कल्याण चाहते हुए उन्हें उपयोगी शिल्प की शिक्षा देते हैं। जिस शिल्प की शिक्षा से उसका ऐहिक तथा पारलौकिक दोनों जीवन सुफल हो—इस प्रकार की शिक्षा उन्हें देते हैं। (४) जब माता-पिता अपने पुत्र को सभी दृष्टि से सुशिक्षित देख लेते हैं, तो वे उनका संयोग एक अनुकूल भार्या से कराते हैं। उन्हें प्रणय-सूत्र में बांधकर

सुव्यवस्थित गृही जीवन व्यतीत करने के लिए सुन्दर अवसर प्रदान करते हैं। ऐसा करते हुए वे इस बात पर विशेष रूप से ध्यान रखते है कि जिस भार्या का उसके साथ संयोग हो रहा है, वह वाह्य सौन्दर्य एवं आन्तरिक सौन्दर्य से युक्त हो, अर्थात् वह रूपवती हो, शीलवती हो एवं सुशिक्षा के लिए अन्यों को प्रेरणा देने वाली हो। (५) पुनः वे जब यह देख लेते हैं कि उनके पुत्र सभी दृष्टियों से गृही जीवन के लिए उपयुक्त हो गये तब उन्हें यथा समय अपना उत्तराधिकार उन्हें दे देते हैं। बुद्धघोष ने दायज्यदान के लिए दो उचित समय का उल्लेख किया है। वे हैं—नित्य समय तथा काल समय। वे नित्य उठकर उन्हें ऐसा सदुपदेश देते हैं कि यह ग्राह्य है, यह अग्राह्य है, तुम्हें विहित कर्मों का पालन करना चाहिए, न कि अविहित कर्मों का। उन्हें उस कुशल कर्मों की ओर निर्देश करते उनका परिपालन ही विहित बतलाते हैं। इसे ही 'नित्य समय दायज्य दान' कहा जाता है। कालसमय का अभिप्राय जीवन के विशिष्ट अवसरों से है। शिक्षा की अवधि में, विवाह आदि की अवधि में दिया गया दान 'कालसमय दान' है। इसमें भौतिक वस्तुओं का दान तथा धर्मदान सम्मिलित है। ऐसे दान में ही मरणमंच पर निपन्न होकर किया गया धर्मोपदेश भी सम्मिलित है। वे मरणमंच पर पड़े हुए ऐसा धर्मोवाद करते हैं कि इस प्रकार का कुशल कर्म करो, यह कुशल कर्म उभय लोकों में सुखदायी होगा। इस प्रकार पुत्र द्वारा माता-पिता के प्रति विहित कर्त्तव्यों के पालन से माता-पिता भी उनके प्रति विहित कर्त्तव्यों का पालन करते हैं। परस्पर धर्मानुचरण की इस सेवा-विधि से माता-पिता रूप पूर्व दिशा पूजित होती है। वह कर्त्तव्यों के मधुमय परिवेश से आच्छादित होती है। साथ ही वह भयरहित एवं क्षेमयुक्त होती है। क्योंकि माता-पिता भी सम्यक् प्रतिपन्न रहते हैं एवं पुत्र भी सम्यक् प्रतिपन्न होते हैं[1]।

आचार्य को दक्षिण दिशा कहा गया है एवं ऐसा कहते हुए दक्षिण दिशा की पूजा की बात कही गई है। आचार्य की पूजा का अर्थ है उनके प्रति विहित कर्त्तव्यों का पालन करना। इस क्रम में भगवान बुद्ध ने शिष्य द्वारा आचार्य के प्रति पाँच कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है। उनमें प्रथम है 'उट्ठान'। उट्ठान का अर्थ है आचार्य को दूर से ही आते हुए देखकर आसन से उठकर उनका सत्कार करना चाहिए। उनके निकट जा यदि वे कुछ भार लेते आ रहे हैं, तो उसे स्वयं ग्रहण कर लेना चाहिए। उनके लिए आसन बिछा उन्हें बैठाकर ऋतु के अनुसार बिजन, पादधोवन, पादप्रच्छालन आदि कर्मों द्वारा उन्हें शान्त करना चाहिए। द्वितीय कर्त्तव्य 'उपट्ठान' है। 'उपट्ठान' का अर्थ सेवा है। भगवान ने इस कर्म में दर्शाया है कि दिन में तीन बार या चार बार आचार्य की सेवा करनी चाहिए। विशेष कर जब शिष्य उनसे विद्या ग्रहण कर रहा हो

---

१. इमेहि खो, गहपतिपुत्त, पञ्चहि ठानेहि पुत्थेहि पुरत्थिमा दिसा मातापितरो पच्चुपट्ठिता इमेहि पंचहि ठानेहि पुत्तं अनुकम्पन्ति। एवमस्स एसा दक्खिणा दिसा पटिच्छन्ना होति, खेमा अप्पटिभया।

तो उसके द्वारा सेवा अवश्य ही होनी चाहिए। सेवा से संतुष्ट हो वे सभी विद्याओं को अनायास ही शिष्य के सम्मुख रख देते हैं, जैसे गाय अपने थन में निहित क्षीर को वत्स के सम्मुख स्नेहवश रख देते हैं। कर्त्तव्य की तीसरी विधा 'सुश्रुषा' है। इसका अर्थ श्रद्धापूर्वक उनकी बातों का श्रवण करना है। जब उनकी बातों को सुनने में श्रद्धा होती है तब श्रद्धा से गृहीत विद्या अनायास ही छात्र तक पहुंच जाती है। अश्रद्धापूर्वक सुनने से उससे विशेष लाभ नहीं होता है। विद्या के मूलभूत तत्त्व उनके हृदय में प्रविष्ट नहीं होते हैं। चौथा कर्त्तव्य 'परिचर्या' है। इसके अन्तर्गत अवशिष्ट सभी बातें कही गई हैं। बुद्धघोष ने इसका विवरण देते हुए कहा है कि शिष्य को प्रातःकाल उठकर आचार्य के लिए मुख प्रच्छालन हेतु जल एवं दतौन्न देना चाहिए। भोजन के समय भी जल लेकर उनके सम्मुख खड़े होकर विधिवत् वन्दना कर उनके पीछे चलना चाहिए। प्रातः काल उनके मलिन वस्त्रों को धो देना चाहिए। सायंकाल स्नान के लिए जल देना चाहिए। अस्वस्थ होने पर उनकी सेवा करनी चाहिए। जिस सेवा से उनके मानस में शान्ति विद्यमान हो सके, उस प्रकार की सेवा कर उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिए। इस क्रम में जिस पांचवें कर्त्तव्य का उल्लेख है वह है 'आदर पूर्वक शिल्प ग्रहण करना'। इसका अभिप्राय यह है कि आचार्य अल्प या अधिक जो कुछ भी विद्यादान दें, उसे आदर-पूर्वक ग्रहण करना चाहिए, एवं पुनः पुनः आवृत्ति द्वारा उसे परिपुष्ट करना चाहिए। इन्हीं पाँच कर्त्तव्यों का विधिवत् पालन करने से आचार्यरूप दक्षिण दिशा की पूजा हो जाती है।

यहाँ दर्शनीय यह है कि बुद्ध के लिए ये उपदेश व्यवहार परिनिष्ठ हैं। इसलिए इनका फल भी सुन्दर होता है। शिष्य को अपने कर्त्तव्य में निष्ठ देखकर आचार्य भी उसके प्रति पांच प्रकार के कर्त्तव्यों का पालन करते हैं। उनमें प्रथम कर्त्तव्य यह है कि वे सुन्दर ढंग से उसे सुविनीत बनाते हैं। किसी भी कार्य के लिए अनुशासन का होना अनिवार्य है। इसलिए बैठने, खड़ा होने, खाने-पीने, पापमित्रों की संगति को छोड़ने तथा कल्याणमित्रों की संगति करने में वे उसे सुशिक्षित करते हैं। दूसरा कर्त्तव्य उनका यह होता है कि सुगृहीत विधि से वे विद्या को ग्रहण कराते हैं। इसका अभिप्रांय यह है कि अर्थ, व्यंजन, प्रयोग आदि दर्शाते हुए विद्या को उनके सामने इस प्रकार रखते हैं कि वह सुगृहीत हो जाय। पुनः वे सभी शिल्पों का सुन्दर ढंग से आख्यान करते हैं। जिन-जिन विद्याओं की मनुष्य के जीवन में आवश्यकता होती है उन-उन विद्याओं को उत्तम ढंग से उनके सामने रखते हैं तथा जिस प्रकार उन्हें गृहीत हो जाय वैसा उपाय करते हैं। इनके अतिरिक्त वे अपने मित्र एवं आमात्यों से शिष्यों का परिचय करा कर उसके यश को फैलाते हैं। अपने मित्रों के मध्य वे ऐसा कहते हैं कि यह मेरा शिष्य व्यक्त, बहुश्रुत और मेरे समान है। ऐसा कहते हुए वे मित्र-आमात्यों के बीच उसका स्थान सुदृढ़ करते हैं। पुनः जो उनके कर्त्तव्य का अन्तिम रूप है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह यह है कि वे सभी दिशाओं में उस शिष्य की रक्षा करते हैं। जिस-जिस दिशा में उस विद्या का प्रसार सम्भव रहता है एवं उससे उसे लाभसत्कार की प्राप्ति हो सकती

है, उस दिशा में उसे भेजते हैं। अथवा जिस दिशा में आचार्य का नाम रहता है, उस दिशा में ही वे शिष्य को भेजते हैं एवं उसे भी अपने गुणों के प्रकाश का अवसर देते हैं। वे कुछ ऐसी विद्याओं को भी सिखला देते हैं, जिनका अलौकिक प्रभाव होता है। यदि शिष्य अरण्य के बीच से जा रहा है, तो उस विद्या के अनवरत जप द्वारा उसे अरण्य के चोर देख नहीं सकते हैं। जो अमनुष्य घातक जन्तु हैं, वे उसकी हिंसा नहीं कर सकते हैं। इस प्रकार गुरु अपने शिष्य को लौकिक दृष्टि से भी त्राण देते हैं। इतना ही नहीं जिस-जिस दिशा में वह जाता है, तथा कुछ विद्याओं को सिखलाता है एवं उन विद्याओं में यदि कुछ शंकाएं रह जाती हैं, तो उनके सम्बन्ध में आकर पूछने पर वे पुनः ऐसा कहते हैं कि इस दिशा में मेरा शिष्य रहता हैं। आप उसी दिशा में जाकर उससे पूछें—ऐसा करने से शिष्य की कृति फैलती है। उसे लाभ, सत्कार, प्रतिष्ठा तथा संरक्षा सभी दिशाओं में प्राप्त होती है। इस प्रकार शिष्य द्वारा गुरु की आराधना किये जाने के उपरान्त आचार्य भी तद्रूप कर्त्तव्य के पालन से शिष्य को सुव्यवस्थित करते हैं। आचार्य एवं शिष्य द्वारा पारस्परिक कर्त्तव्य के करने से दक्षिण दिशा जो आचार्य कही गई है, उसकी पूजा हो जाती है।

स्त्री को पश्चिम दिशा कहा गया है। इस क्रम में सर्व प्रथम स्वामी द्वारा स्त्री के प्रति किये जाने वाले कर्त्तव्यों का उल्लेख है। कहा गया है कि स्वामी को अपने स्त्री के प्रति पांच प्रकार के कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। इनमें प्रथम कर्त्तव्य है कि उसे सम्मान देना चाहिए। जिस प्रकार वह अपना सम्मान चाहता है, वैसा ही स्त्री को भी सम्मान मिले, इसका उपाय करना चाहिए। जिस प्रकार मनुष्य, देवता या किसी सखा को सम्मान देता है, वैसा ही कर्त्तव्य उसका, स्त्री के प्रति भी होना चाहिए। दूसरा कर्त्तव्य यह है कि उसका अपमान नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार दास कर्मकार आदि किसी कार्य को करते समय अरूचिपूर्ण या निम्नभावना से अनुप्राणित हो करते हैं, उसी प्रकार की भावना स्त्री में उत्पन्न होने का अवसर नहीं देना चाहिए। अर्थात् वाणी से या काय कर्म द्वारा या मन से ही उसे छोटा नहीं समझना चाहिए। तीसरा कर्त्तव्य व्यवभिचार से सम्बन्ध रखता है। इस सम्बन्ध में कहा गया है कि स्वामी को 'अनतिचर्या' नहीं करनी चाहिए, वरन् उसमें ही सन्तुष्ट रहना चाहिए। उसे व्यवभिचार से विरत रहना चाहिए। इस प्रसंग में चतुर्थ कर्त्तव्य के रूप में यह कहा गया है कि धन ऐश्वर्य में उसे पूर्ण अधिकार देना चाहिए। यदि अपार सम्पत्ति भी हो एवं पुरुष उसे छिपाकर रखता है, तो उससे स्त्री को क्रोध होता है। एवं थोड़ी भी सम्पत्ति हो एवं पुरुष आदरपूर्वक उसके हाथों में रख देता है, तो वह उससे अत्यन्त प्रसन्न रहती है। उसकी प्रसन्नता गृह में सुखद वातावरण निर्माण में परम सहायक होती है। इसी प्रसंग में भगवान बुद्ध ने यह भी बतलाया है कि यथा समय अलंकार भी प्रदान करना चाहिए। स्त्रियां स्वभावतः मण्डनविभूषणधर्मा होती हैं। उन्हें आवश्यक आभूषणों को देकर सन्तुष्ट रखना चाहिए। इस प्रकार स्वामी द्वारा पांच प्रकार के कर्त्तव्यों के किये जाने से पश्चिम-दिशा रूपी भार्या की पूजा हो जाती है और यही पश्चिम दिशा की यथार्थ पूजा है।

जब पति द्वारा भार्या के प्रति पाँच प्रकार के कर्त्तव्य किये जाते हैं, तो वह भी पाँच प्रकार के कर्त्तव्यों का पालन अपने पति के प्रति करती है। वह विहित ढंग से सभी गृह कर्मों को करती है। यवागु, भात आदि के परिपाचन एवं भोजन के पृथक पृथक कार्य हैं। प्रातः काल यवागुका पान होता है। दिवस में भात आदि का परिपाचन होता है। जब भार्या प्रसन्न रहती है, तब जिस समय जिस भोजन के परिपाक आदि का विधान है, उस समय ही उसे परिपाचित कर अपने स्वामी को उपस्थित करती हैं। पुनः वह अपने परिजनों का संग्रह करती है। जितने परिवार एवं कुटुम्ब के लोग हैं, वे सभी परिजन हैं। उन्हें सम्मान एवं सामयिक उपहार आदि देकर संगृहीत करती है। जो जो परिजन जहाँ-जहाँ विक्षिप्त रूप से विद्यमान रहते हैं उन-उन का समयानुरूप उनसे सम्बन्ध स्थापित करती है। इस प्रसंग में यह भी दर्शाया गया हैं कि पति की ओर से सन्तुष्ट हो वह व्यवभिचारिनी नहीं होती है। पति के अतिरिक्त किसी अन्य की चिन्ता वह अपने मन में भी नहीं करती है। वह अपने मन को पूर्णतः अपने पति की अभिवृद्धि मनोनुकूल स्थिति आदि में लगाये रहती है। पुनः कृषि, वाणिज्य और सेवा से जो धन एकत्र होता है, उस धन की वह पूर्णतः रक्षा करती है। साथ ही धन की अभिवृद्धि कैसे हो—इसका भी यत्न करती है। अन्त में उन्होंने यह भी दर्शाया है कि गृह कार्य जितने होते हैं, उनके यथा समय सम्पादन में वह निपुण होती है। वह आलस्य का परित्याग कर गृह कार्यों को करने में तल्लीन होती है। जैसे कुछ आलसी लोग जहाँ-तहाँ बैठने के समय असमय में बैठे ही रहते हैं, या सोने के असमय में भी सोये रहते हैं। जिस कार्य का जो समय है, उस समय उस कार्य के प्रति जागरूक नहीं रहते हैं, वैसा इसके सम्बन्ध में नहीं देखा जाता है। वह पूर्ण तत्परता के साथ समस्त कार्यों को आलस्य रहित हो सम्पादित करती है। इस प्रकार दोनों के पारस्परिक कर्त्तव्य पालन से पश्चिम दिशा रूपी भार्या पूजित होती है।

इस क्रम में मित्र आमात्य को उत्तर दिशा कहा गया है। मित्र-आमात्य जीवन में अत्यन्त उपयोगी प्राणी होते हैं। उनके सहयोग से मनुष्य अनेक प्रकार के कार्यों का सम्पादन करता है। इसलिए यह विहित दर्शाया गया है कि मित्र एवं आमात्यों के प्रति भी पाँच प्रकार के कर्त्तव्य किये जायं। उन्हें आवश्यक वस्तुओं का स्वार्थ विरहित होकर दान किया जाय। जो वस्तु एक के पास विपुल रूप से उपलब्ध होती है, तो उस मित्र को चाहिए कि उपलब्ध वस्तुओं को उसे भी उपलब्ध करावे, जिसके पास वे अनुपलब्ध हैं। इस प्रसंग में दूसरा कर्त्तव्य प्रिय वचन से सम्बन्ध रखता है। वह मित्र के साथ मधुर वचनों का ही प्रयोग करे। ऐसा वचन न बोले जिससे मित्र के हृदय में आघात पहुंचे। इस प्रसंग में यह भी विहित दर्शाया गया है कि मित्र के प्रति सर्वदा हित की कामना ही की जाय। जिन-जिन कार्यों के करने से मित्र का हित होता है, उन-उन कार्यों का करना युक्त बतलाया गया है। ऐसा कोई भी अवसर न आने दिया जाय, जिससे उसके कार्यों द्वारा मित्र को किसी प्रकार की हानि होने की बात हो। पुनः मित्र के साथ समानता का व्यवहार किया जाय। ऐसा मित्र के निर्धन होने पर

या अन्य किसी दृष्टि से विपन्न होने पर भी उसके प्रति असमानता का व्यवहार नहीं किया जाय। यदि उसे किसी वस्तु की आवश्यकता हो एवं मित्र के घर में वह उपलब्ध हो, तो उसे देने के प्रसंग में असत्य भाषण या कपट का व्यवहार नहीं किया जाय। भगवान बुद्ध ने इस प्रसंग में यह भी दर्शाया है कि जब किसी से मैत्री की जाय तो केवल मैत्री की सीमा उसी पुरुष तक न रखी जाय वरन् उनके पुत्र, पुत्रियाँ, पौत्र, प्रपौत्र आदि से भी मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखा जाय। इस प्रकार पारस्परिक सहयोग द्वारा मैत्री की अभिवृद्धि ही की जाय। जब मित्र के प्रति इस प्रकार के कर्त्तव्य किये जाते हैं, तब वे भी अपने मित्र के प्रति विहित कर्त्तव्य का पालन करते हैं। जब उनका मित्र प्रमाद्-वश कुछ अनुचित कार्य कर डालता है, तब वे उसकी रक्षा करते है। प्रमाद् के समय उसकी सम्पत्ति का भी विनाश न हो इस बात पर ध्यान रखते हुए उसके सम्पत्ति की भी रक्षा करते हैं। जिन-जिन कारणों से मित्र में प्रमाद बढ़ने के अवसर हो सकते हैं, उन-उन कारणों पर वे विभिन्न प्रकार से मित्र को संयमित करते हैं। जब कभी ऐसी स्थिति आ जाती है, जब मित्र विभिन्न प्रकार के भयों से ग्रस्त हो जाता है, तब वे उसे शरण प्रदान करते हैं। राजभय, चोरभय, आदि के समय वह उसका साथ देकर उसे निर्भय बनाते हैं। जब मित्र विभिन्न प्रकार की विपत्तियों के मध्य अपने को संत्रस्त पाता है, तब वे उसका परित्याग नहीं करते हैं। अपने मित्र के उपकारों का स्मरण कर वह स्वयं ही नहीं वरन् अपने समस्त परिवार सहित मित्र की सेवा, अर्चना आदि करते हैं। इस प्रकार मित्रों के पारस्परिक कर्त्तव्य पालन द्वारा मित्र-आमात्य रूप ऊत्तर दिशा पटिपूजित हो उठती है।

निम्न दिशा को दासकर्मकर कहा गया है। पूर्व में दर्शाया जा चुका है, कि दासकर्मकर ही परिवार के आधार हैं। इसलिए स्वामी का यह कर्त्तव्य है, कि इन दास एवं कर्मकरों के प्रति पाँच प्रकार के विहित कर्त्तव्यों का पालन करे। इस क्रम में जो प्रथम कर्त्तव्य है, वह यह है कि दास की शक्ति के अनुसार ही कामों का विधान किया जाय। यदि वह बालक हो तो, उसके लिए बालकोचित काम ही दिये जायँ। यदि वह वृद्ध हो तो उसकी उम्र के अनुसार ही काम दिया जाय। यदि स्त्री दासी के रूप में काम करती हो, तो उसकी उम्र आदि का पूर्णतः ध्यान रखते हुए कार्य का विधान किया जाय। इस प्रकार बल के अनुरूप ही दासों के प्रति कार्य का विधान हो। दूसरा कर्त्तव्य भोजन और वेतन देने से सम्बन्ध रखता है। उसके काम के अनुरूप ही कार्य की मर्यादा का ध्यान रखते हुए भोजन एवं वेतन का भी विधान किया जाना चाहिए। जब दास अस्वस्थ हो, तो उस दशा में स्वामी का कर्त्तव्य और भी बढ़ जाता है। उसके लिए यह आवश्यक है कि उस रुग्न दास की सेवा वह स्वयं करे। ऐसी सेवा करने से वह उसके हृदय को जीत सकता है। इस क्रम में एक अन्य बात भी विचारनीय है, जिसका कथन कर्त्तव्य के रूप में किया गया है। घर में विभिन्न प्रकार के भोजन बनते हैं। स्वामी को ऐसा चाहिए कि उन विभिन्न प्रकार के भोजनों में से उस दास को भी दें। ऐसा करने से जो भोजन विषयक लोलुप्ता बनी रहती है, वह समाप्त

हो जाती है। इस प्रसंग में अन्य विचारणीय बात है कि वेतन आदि यथा समय ही दिये जायं। वेतन प्रदान के लिए जो-जो समय निर्धारित हों, उनका प्रमाद्‌वश अतिक्रमण न करके उस-उस समय में ही वेतन देने का यत्न किया जाय। जिस वेतन को प्राप्त कर वह अपने परिवार का भरण-पोषण करता है, उसे उस वेतन पर आस्था तथा अवलम्ब होना चाहिए, जिसके अनुरुप वह कुछ कार्य कर सके। इसलिए यह आवश्यक बतलाया गया है कि नियमित रूप तथा समयानुकूल भोजन एवं अवकाश देने की व्यवस्था होनी चाहिए। स्वामी द्वारा इन पाँच प्रकार के कर्त्तव्यों के किये जाने से दासकर्मकर भी उसके अनुरूप हो जाते हैं तथा वे लोग उनके कार्यों में सहायक होते हैं। जब वे स्वामी के अनुकूल रहते हैं, तब उनका यत्न रहता है कि उनके सभी सुख के उपकरण अनुदिन वृद्धि को प्राप्त करें। कर्त्तव्यों के निर्देशन क्रम में यह भी दर्शाया गया है कि कर्त्तव्य का पालन पारस्परिक होता है। जब एक दास स्वामी के कर्त्तव्यों से सन्तुष्ट रहता है, तब वह भी उनके प्रति विहित कर्त्तव्यों का पालन करता है। वह स्वामी के उठने से पूर्व ही उठ जाता है। पूर्व में उठकर उसके लिए जो विहित कर्त्तव्य हैं, उसको सम्पन्न करता है। स्वामी के उठने पर इन सम्पन्न कृत्यों को देखकर आह्‌लाद होता है कि सभी कार्य नियमानुसार यथा समय कर लिये गये होते हैं। वह स्वामी के सो जाने के बाद सोता है। वे जब जगे रहते हैं तब तक वह उनकी इच्छाओं को सर्वदा देखता रहता है कि वे क्या चाहते हैं ? तद्‌नुसार वह कृत्य करता है। वह उन्हीं वस्तुओं को लेता है जो स्वामी द्वारा उसे दे दिये जाते हैं। चोरी के द्वारा किसी भी वस्तु का हरण नहीं करता है। पुनः वह सुकृत कर्मों को ही करने वाला होता है। वह यह नहीं देखता है कि इस कर्म के करने से मुझे केवल लाभ होगा या हानि होगी वरन् स्वार्थ की भावना का परित्याग कर केवल अपने कर्त्तव्य को निभाने में ही तत्पर रहता है। इस क्रम में यह भी देखा जाता है कि वह सन्तुष्ट दास अपने स्वामी के यश का परिहरण करता है। जहाँ कहीं भी सभा मध्य या सत्‌पुरुषों के बीच उसके स्वामी विषयक कोई कथा-प्रसंग आता है, तो वह उनकी प्रशंसा करता है। सर्वदा इस तथ्य का प्रतिपादन करते रहता है कि उसके स्वामी उसके साथ दासवत् व्यवहार नहीं करते हैं, वरन् पुत्र सदृश प्रेम से ही उसका परिपालन करते हैं। इस प्रकार स्वामी एवं दास के पारस्परिक कर्त्तव्य द्वारा निम्न दिशा पूजित होती है।

इस क्रम में श्रमण-ब्राह्मण को ऊपर दिशा कहा गया है। एक गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह श्रमण-ब्राह्मण के प्रति पाँच प्रकार के कर्त्तव्यों का पालन करे। वह उनके प्रति मैत्रीपूर्ण काय कर्म करे। मैत्री चित्त से अनुप्राणित काय-कर्म को ही मैत्रीपूर्ण काय कर्म कहा गया है। भिक्षुओं को भोजन के लिए निमन्त्रण देने के लिए विहार में जाना, धर्म-करक को लेकर जल देना, उनकी परिक्रमा करना, ये मैत्री पूर्ण कायकर्म हैं। भिक्षु को भिक्षा के लिए प्रविष्ट देख आदर पूर्वक यवागु दिये जायं, भोजन दिये जायं, आदि वचनों द्वारा परिवार के सदस्यों को प्रेरित कर उन्हें साधुवाद देते हुए धर्म श्रवण करना मैत्रीपूर्ण-वची-कर्म है। पुनः मन में ऐसा चिन्तन करना कि मेरे

कुल से सम्बन्धित स्थविर बैररहित हिंसारहित होवें, मैत्रीपूर्ण मनोकर्म है। इस प्रकार शरीर, वचन तथा मन के द्वारा मैत्रीपूर्ण काय कर्म, वची कर्म तथा मनोकर्म मैत्रीपूर्ण कर्म कहे जाते हैं। इस क्रम में यह भी दर्शाया गया है कि उन श्रमण-ब्राह्मणों के लिए उसका द्वार निवृत होना चाहिए। शीलवान भिक्षु सर्वदा उसके घर आवें, अपने मंगलमय वचनों से उसे संतृप्त करें, इसे ही बिबृत द्वार रखना कहा गया है। साथही यह भी आवश्यक दर्शाया गया है कि उन्हें जो कुछ भी उपलब्ध खाद्य पदार्थ हो, उसे प्रदान किया जाय। इस प्रसंग में आमिस प्रदान की चर्चा है। सभी प्रकार के भोजन के पूर्व खाये जाने वाले पदार्थ आमिस कहे जाते हैं। यवागू, भात आदि जो भोजन के पूर्व जलपान के रूप में ग्रहीत होते हैं, उन्हें आमिस कहते हैं। उन्हें इस प्रकार के आमिस को देकर संतृप्त करना चाहिए। इस प्रकार से श्रमण-ब्राह्मणों के प्रति पाँच प्रकार के कर्त्तव्यों का उल्लेख है।

पूर्व में दर्शाया जा चुका है कि विहित रीति से किया गया कोई भी कार्य व्यर्थ नहीं होता है। इसलिए जब श्रमण-ब्राह्मणों के प्रति गृहस्थ पाँच प्रकार के कर्त्तव्यों का पालन करते हैं, तब वे साधु ब्राह्मण उनसे प्रसन्न होकर उनके कल्याण के लिए कुछ कर्त्तव्यों का पालन करते हैं। उनके छः प्रकार के कर्त्तव्य परम कल्याणप्रद देखे जाते हैं। इनकी चर्चा इस प्रकार उपलब्ध होती है। वे उन्हें पाप से रोकते हैं। जब कभी ऐसे क्षण आते हैं जब गृहस्थ चित्त-दुर्बलता के कारण पाप करने के लिए प्रवृत्त होता है, तब वे पापकर्म के दुष्परिणामों का कथन कर तथा मनुष्य जीवन की दुर्लभता की चर्चा कर उसे पापकर्म से रोकते हैं। पुनः वे कल्याण अर्थात् पुण्य कर्म में उन गृहस्थों को प्रवृत्त कराते हैं। उनके समक्ष पुण्य कर्मों के फलों को दर्शाते हैं। 'पुण्यकारी इस लोक में तथा परलोक में आनन्द करता है'—इस वचन को दुहराते हुए उसे पुण्य कर्म करने के लिए प्रेरणा देते हैं। इतना ही नहीं, जो विद्याएं अश्रूत रहती हैं, गृहस्थ के लिये अज्ञात बनी रहती है; उन्हें वे सुनाते हैं। ऐसा करते हुए नई-नई विद्याओं से उसे परिचित कराते हैं। जो विद्याएं गृहस्थों द्वारा श्रूत, परिज्ञात एवं चर्चित रहती हैं, उन्हें वे जनमानस से दृढ़ तथा परिस्कृत करते हैं। इस प्रकार लौकिक जीवन के लिए उपयोगी बातों का कथन कर उसके समक्ष स्वर्ग का मार्ग दर्शाते हैं। इस क्रम में वे उन पुण्य कर्मों का उल्लेख करते हैं, जिनके सम्पादन से मनुष्य शरीर के अन्त होने पर स्वर्ग में जाता है। इस प्रकार गृहस्थों द्वारा श्रमण-ब्राह्मणों के प्रति तथा श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा गृहस्थों के प्रति किये गये कर्त्तव्यों के फलस्वरूप ऊपर की दिशा पूजित हो जाती है।

भगवान बुद्ध ने इन्हीं छः दिशाओं के व्याज से समाज की छः इकाइयों के प्रति पारस्परिक कर्त्तव्य का विधान किया है। इन्हीं छः इकाइयों के अन्तर्गत सभी प्रकार के प्राणी आ जाते हैं। इसलिये छः दिशाओं की पूजा के साथ सम्पूर्ण समाज के प्रति किये गये कर्त्तव्यों का यथार्थ रूप इस उपदेश में देखा जा सकता है।

बुद्ध के सामने समाज का, विशेष कर मनुष्य-मात्र का सर्वांगीण विकास इष्ट था। इसलिये समाज में मधुमय वातावरण बनाने के लिये जो-जो कार्य उपयुक्त हैं उन सबका इस सुत्त में विधान किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि समाज में केवल छः दिशाओं की पूजा से ही सुखद परिवेश का निर्माण नहीं होता है, वरन् समाज में सभी दृष्टियों से सुखद वातावरण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उसके अन्य उपयोगी नियमों का भी पालन किया जाय। इस दिशा में निम्नोक्त बातें विचारनीय हैं :—

(१) उसे चार प्रकार के क्लेशयुक्त कर्म नहीं करना चाहिए। वे हैं—प्राणातिपात, अदिन्नादान, कामेसुमिच्छाचार, एवं मुसावाद[१]। इनमें प्रथम तीन कायिक दुष्कर्म है, तथा चौथा वाचसिक दुष्कर्म है। इनमें प्राणातिपात, जीव-हिंसा, प्राणबद्ध आदि का ही नाम है। बौद्ध परम्परा के अनुसार आत्मा या आत्मीय कुछ नहीं है। जो मनुष्य है, वह पाँच स्कन्धों का संघात मात्र है। मनुष्य के व्यक्तित्व में पाँच स्कन्धों के अतिरिक्त और कोई ऐसा तत्व नहीं है जिसे आत्मा या आत्मीय कहा जा सकता है। तब बध होता किसका है? जिसके द्वारा इन पाँच स्कन्धों का संधारण होता है, वह जीवितेन्द्रिय है। उसका उपच्छेद ही प्राणबद्ध है। ऐसा जानते हुए किसी प्राणी को उसके जीवन से पृथक कर देना प्राण-बध कहा जाता है।

आचार्य बुद्धघोष ने इसपर प्रकाश डालते हुए दर्शाया है कि प्राणी शब्द व्यवहार में सत्व के लिए आया है। परमार्थ रूप में यह जीवीतेन्द्रिय का दूसरा नाम है। इसलिए उस जीवीतेन्द्रिय के उपच्छेद के लिए काय तथा वची द्वार से प्रवृत्त बधक चेतना प्राणातिपात है। इस कर्म के होने में पाँच बातों का होना आवश्यक है—प्राणी हो, यह प्राणी है ऐसा ज्ञान हो, उसके प्रतिघात के लिए बाधक चित्त हो, वध के लिए यत्न हो एवं उसके फलस्वरूप मरण हो। प्राण-वध के लिए छः प्रकार का प्रयोग होता है। यथा—अपने हाथ से, किसी को आज्ञा देकर, किसी घातक वस्तु को फेंक कर, घात के लिए कोई स्थाई खडयन्त्र कर, किसी विद्या के द्वारा तथा ऋद्धि के द्वारा। इस प्रकार प्राण हिंसा के लिए जो वधक चेतना है, उसका परित्याग ही प्राणातिपात से विरति है, जिसको जीवन में उतारना समाज के सम्यक् विकास के लिए आवश्यक है।

दूसरा क्लेशयुक्त कर्म अदिन्नादान या चोरी है। जो वस्तु न दी गई हो, उसको ग्रहण करना या दूसरे के वस्तु का हरण करना चोरी है। यह भी एक प्रकार की स्तैय चेतना है। दूसरे की वस्तु हो. उसको ग्रहण करने की चेतना हो एवं उसको लेने के लिए

---

१. पाणातिपातो अदिन्नादानं, मुसावादो च वुच्चति।
परदारगमनं चेव, नप्पसंसन्ति पण्डिता॥

दी० नि० ३.१४०।

यत्न हों, इन सबके साथ जो स्तेय चेतना उत्पन्न होती है, वह अदिन्नादान है। इसके लिए भी पाँच बातों का होना आवश्यक है। पहली बात यह है कि कोई ऐसी वस्तु हो जो दूसरे की हो, दूसरी बात यह है कि उस दूसरे की वस्तु को ग्रहण करने का बिचार हो, स्तेय चित्त का तृतीय स्थान है, चतुर्थ उसके लिये यत्न है एवं उसका हरण पांचवा है। प्राणातिपात के लिए जो ऊपर में छः प्रयोग दर्शाये गये हैं, वे सभी अदिन्नादान के संदर्भ में भी युक्त प्रतीत होते हैं।

कामेसुमिच्छाचार तीसरा क्लिष्ट कर्म है। यह व्यवभिचार का द्योतक है। गृही के लिए यह आवश्यक है कि वह व्यवभिचार से विरत रहे। वह अपनी एक भार्या से संतुष्ट हो जीवन व्यतीत करे। इस प्रसंग में भी दर्शाया गया है कि मैथुन समाचार, मिथ्या आचरण, लामकाचार आदि एकान्ततः मिथ्याचार है। शरीर या वचन से किसी भी स्त्री के साथ संसर्ग करना या मन से चिन्तन करना व्यवभिचार के अन्तर्गत है। विशेषकर इस प्रसंग में दर्शाया गया है कि पुरुष किसी प्रकार से भी पर-स्त्री में अनुरंजन न करे। साथ ही कुछ बालिकाओं या स्त्रियों का उल्लेख है जो प्रत्येक स्थिति में अगमनीय है। वे हैं—माता द्वारा रक्षित, पिता द्वारा रक्षित, माता-पिता द्वारा रक्षित, भाई द्वारा रक्षित, बहन द्वारा रक्षित, किसी सम्बन्धी द्वारा रक्षित, गोत्र के किसी व्यक्ति द्वारा रक्षित, हर प्रकार से रक्षा के लिए दी गई एवं जिसे किसी प्रकार का दण्ड दिया गया हो। इनके अतिरिक्त भी यहां दस प्रकार के स्त्रियों का उल्लेख है। वे हैं—धन से खरीदी गई स्त्री, तीव्र इच्छा वाली स्त्री, भोग की इच्छा वाली स्त्री, पटवासिनी, वोदपदकिनी, वोभटचुम्बटा, दासी, कर्मकारी, धज्जाहटा, मुहूत्तिका। ये स्त्रियां विशेषकर सामाजिक दृष्टि से अगमनीय समझी जाती हैं। इसलिए सामाजिक सुव्यवस्था एवं सामाजिक अनुकूल परिवेश बनाने के लिए यह आवश्यक है कि समाज का प्रत्येक प्राणी अकुशल कर्मों का परित्याग करे।

इस क्रम में मुसावाद या असत्य कथन भी एक प्रकार का दोष समझा जाता है। जो बात अतथ्य हो, उसे तथ्य के रूप में कहना, या जो बात हुई ही न हो वह हो चुकी इस प्रकार असत्य वस्तु को सत्य के रूप में कहने की जो वचीविज्ञप्ति को उत्पन्न करने वाली बधक चेतना है, उसे मुसावाद कहते हैं। इसके लिए भी चार बातों का होना आवश्यक है—असत्य वस्तु, उसको सत्य के रूप में कथन का चित्त, उसके लिए यत्न एवं दूसरे का उस बात का जानना। मिथ्या कथन की बात के लिए वचन से भी प्रेरणा दी जाती है। पत्र लिख कर आगे रख कर भी प्रेरणा दी जाती है। "इसका अर्थ ऐसा होता है एवं इसको इस रूप में देखना चाहिए"—ऐसा प्राचीर आदि में लिखकर भी इसकी भूमिका तैयार की जा सकती है। इस प्रकार जो झूठ बोलने की प्रक्रिया है, उससे विरत रहना ही समाज को सुव्यवस्थित एवं सुखी रूप प्रदान करने में सहायक हो सकता है। इस लिए कहा गया है कि लोक कल्याण के लिए इन चार अकुशल कर्मों को न किया जाय।

इस क्रम में कुछ परिस्थितियों का भी उल्लेख है, जिनसे वशीभूत होकर मनुष्य पाप कर्म करता है। इन परिस्थितियों से छन्द, द्वेष, मोह तथा भय के कारण सम्यक् पथ का परित्याग कर मनुष्य मिथ्या पद को अपनाता है[1]। उसे जान लेना चाहिए कि इनके प्रभाव में जो कर्म होते हैं, वे सभी हीन होते हैं, इस लिए इनके प्रभाव में आकर अशुभ कर्मों को नहीं करना चाहिए क्यों कि ये चारो अकुशल धर्म ऐसे प्रवल है कि इनसे या इनके कारण सम्यक् मार्ग का अतिक्रमण हो जाता है। ऐसा होने से मनुष्य का यश वैसे ही क्षीण होने लनता है। जिस प्रकार कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा की कलाएं क्षीण होती हैं।

आचार्य बुद्ध घोष ने इन चार अकुशल प्रवृतियों के प्रभाव से होने वाले दुष्कर्मों की चर्चा करते हुए कहा है कि मनुष्य छन्द अर्थात प्रेम के कारण अनुचित गति से गमन करते हुए अकर्त्तव्य को कर्त्तव्य के रूप में करता है। वह छन्द वश मित्र या सम्बन्धी के प्रति आसक्त हो उनसे प्राप्त होने वाले लाभ के कारण ही किसी स्वामी को भी अस्वामी के रूप में घोषित करता है। जब वह द्वेष के बाहुल्य से अनुचित मार्ग का अनुशरण करता है तो किसी व्यक्ति के प्रति वैर भावना को विकसित कर अस्वामी को स्वामी के रूप में स्थापित करता है, जो अधिक मोहवश या ज्ञान के अभाव में अस्वामी को स्वामी करता है, ऐसा मोह गति के कारण हो सकता है। कोई मनुष्य भय के कारण भी पाप-कर्म करता है। किसी राजा के प्रिय व्यक्ति के प्रति चिन्तन करते हुए वह उसके बालों को देखता है एवं सोचता है कि वह उसे दुरुपयोग कर सकता है। इसलिए राजा आदि के भय कारण भी मनुष्य पाप करता है। कभी-कभी मनुष्य मोह अर्थात् अज्ञान के कारण पाप कर्म करता है। अज्ञान का प्राबल्य अधिक होने के कारण वह अपने रूप को समझ नहीं पाता है। फलतः वह अपने रूप में आता है तो धीरे-धीरे उसके विचारों से सहमत होकर राजा आदि सहस्त्र मुद्रा तथा गो आदि उस दान के रूप में देते हैं। इस लिए उसे यह आवश्यक है कि वह काम करे पर ठीक से करे। जो अकुशल आस्रव हैं उसको वह जान ले एवं जानकर ही वह विभिन्न वस्तुओं के प्रति अपने चित्त को लगावें।

इस क्रम में भगवान बुद्ध ने कुछ ऐसे कार्यो का भी उल्लेख किया है जो गृहस्थ आदि के लिए हानिकारक है। उन कार्यों को करके वह अपने संचित भोग को बिनष्ट करता हैं। साथ ही साथ वह लोक में अयश को प्राप्त करता है। उन कार्यों में मद्य-पान, असमय में यत्र-तत्र घुमना, ऐसा स्थान जहाँ विभिन्न स्वभाव वाले लोगों का समागम होता है वहाँ विचरन करना, जुआ खेलना, पापी-मित्रों के साथ में रहना तथा

---

१. छन्दा दोसा भया मोहा, यो धम्मं अतिवत्तति।
निहीयति यसो तस्स, काळपक्खे व चन्दिमा ॥

दी० नि० ३. १४०।

आलस्य से युक्त रहना है[१]। भगवान ने इनमें से प्रत्येक के दोषों को स्पष्टतः दिग्दर्शन कराया है[१]।

इस प्रसंग में सुरा पर प्रकाश डालते हुए बुद्धघोष ने इसके कई प्रकारों का उल्लेख किया है। मूल ग्रन्थ के अनुसार पहले सुरा एवं मेरय इसके दो प्रकार हैं[२]। इनमें सुरा के पाँच भेद हैं। यथा—पीट्ठ सुरा, पुप सुरा, ओदन सुरा, कीर्णपक्खित सुरा, तथा सम्भार-संयुक्त-सुरा। मेरय भी पाँच प्रकार के हैं। यथा—फूल से निर्मित आसव, फल से निर्मित आसव, मधु मे बने आसव, गुड़ से बने आसव एवं इसी प्रकार की सामग्रियों से बने हुए आसव। ये विभिन्न प्रकार के मद्य हैं। वे सभी मद उत्पन्न करने वाले हैं। इनके कारण जो क्षति होती है, वह संख्या में अनेक हैं। जैसे :— धन की हानि, कलह की वृद्धि, रोगों की उत्पत्ति, अयश, गोपनीय बातों का प्रकाश एवं बुद्धि का भ्रष्ट हो जाना प्रधान है। मद्य-पान करने वाला समाज में धनहीन, रोगी, यशहीन, एवं मूढ़-गण सबके लिए घृणा का पात्र बनता है। इसलिए सामाजिक दृष्टि से सुरा-पान अपायमुख है।

विशिखा कहते हैं नगर के चौरास्ते को या ऐसे स्थानों पर जहाँ विभिन्न प्रकार के लोग आते-जाते रहते हैं। ऐसे स्थानों में असमय में विचरण करना पतन का कारण है। ऐसा करने से वह स्वयं अरक्षित तथा अगुप्त रहता है। उससे पुत्र तथा स्त्रियाँ भी अरक्षित एवं अगुप्त रहती है। इसी प्रकार उसकी सम्पत्ति की भी क्षति होती है तथा रक्षा नहीं हो पाती है। वह मनुष्यों द्वारा शंका का पात्र बनता है जब कभी समाज में कोई दुष्कर्म होता है तब मनुष्य उसको ही उसका पात्र समझते हैं। उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार की असत्य बात भी सत्य ही समझी जाती है। इस दशा में वह अनेक प्रकार के दुःखों का भागी बनता है। इसलिए विकाल विशिखा अनुचरिया लौकिक दृष्टि से अत्यन्त निन्दनीय बतलाया गया है एवं यह पतन का एक मार्ग है।

मेला आदि को 'समज्ज' कहते हैं। उसमें विचरण करना भी हानिप्रद है। ऐसे स्थानों में नित्य गान आदि विविध प्रकार के अभद्र मनोरंजन होते रहते हैं। उनसे अभिरक्त मनुष्य सर्वदा ऐसे ही चिन्तन में व्यस्त रहता है कि नृत्य कहाँ हो रहा है?

---

१. उस्सूरसेय्या परदारसेवना,
वेरप्पसवो च अनत्थता च।
पापा च मित्ता सुकदरिया च,
एते छ ठाना पुरिसं धंसयन्ति॥
दी० नि० ३.१४२।

१. एत्थ सुरा ति पिट्ठसुरा पूव सुरा ओदनसुरा किण्णपक्खित्ता संभारसयुत्ता ति पंच सुरा। मेरयं ति पुप्फासवो फलासवो मध्वासयो गुलासवो, संभारसंयुत्तो ति पंच आसबा। तं सब्बं पि मदकरणवसेन मज्जं। सु० वि० ३.२७६।

गान कहाँ हो रहा है ? वादन का समागम कहाँ है ? आख्यान अर्थात् विभिन्न प्रकार के उत्तेजक पद्यों का कथन कहाँ हो रहा है ? पाणिस्वर तथा कुम्भथुन आदि की व्यवस्था कहां हैं ? इन्हीं विभिन्न प्रकार के अभद्र दृश्यों को देखने में रत्त रहने के कारण उसके मन में सर्वदा तनाव की स्थिति बनी रहती है। ऐसी दशा में वह अपने गृह के संचालन विषयक कोई भी कार्य नहीं कर पाता है। इस लिए इसे अपायमुख कहा गया है।

जुआ खेलना भी समाज के लिए हानिकर बतलाया गया है। इसके कई दोष हैं। जुआ के क्रम में जो जय है वह बैर को बढ़ाती है। जो हार जाता है, वह अपने नष्ट धन के लिए चिन्तित होता है। देखते-देखते ही अपार धन की हानि हो जाती है। समाज के बीच उसके बातों पर कोई विश्वास नहीं करता है। उसके मित्र और अमात्य भी उसका साथ छोड़ देते हैं। कारण उसकी संगति से उन्हें अयश का भय रहता है। विवाह-निमन्त्रण आदि के समय भी वह मनुष्यों द्वारा उपेक्षित होता है। इसलिए यह भी सामाजिक दृष्टि से एक पतन का मार्ग है।

भगवान बुद्ध ने पापी मित्रों की संगति के दोष को भी स्पष्ट रूप से दर्शाया है। उनमें पहला धूर्त्त कहलाता है। यह ऐसे मित्र का अधिवचन है जो सर्वदा जुआ खेलने में तत्पर रहता है। वह स्वयं तो उसमें रत्त ही रहता है, दूसरे साथियों को भी अभिरत्त कराता है। दूसरा सोण्ड कहलाता है। यह मद्य पीने वाले का ही दूसरा नाम है। ऊपर कहे हुए विभिन्न प्रकार के मद्यों के पान में ही वह हमेशा तत्पर रहता है। तीसरे प्रकार का मित्र पिपासु कहलाता है। वह मद्य-पान के लिए तीव्र आसक्ति से युक्त रहता है। मद्य-पान के लिए वह अपना सबकुछ विनष्ट कर देता है[1]। स्वाँग रचकर दूसरे को ठगने वाले व्यक्ति को 'नेकतिक' कहते हैं। वह विभिन्न प्रकार का रूप बनाता है एवं वैसे रूप से मनुष्यों को आकृष्ट करता है। जो उसकी ओर आकृष्ट हो जाते हैं, उन्हें वह विविध प्रकार से ठगता है। पुनः कुछ ऐसे भी पापी मित्र हैं जो 'वंचनिक' कहलाते हैं। वे मनुष्यों के सामने ही कुछ चमत्कार दर्शा कर लोगों को अपने वश में कर लेते हैं एवं देखते-देखते ही दूसरों का अपहरण कर वे वहाँ से चल देते हैं। एक प्रकार के ऐसे भी पापी मित्रों का कथन कहा गया है, जिसे साहसिक कहा जाता है। वे हठात् किसी पर आक्रमण कर उसका हरण करते है। जो मनुष्य ऐसे पापी मित्रों की संगति में एक बार आ जाते हैं, वे सर्वदा उनके जाल में पड़े रहते हैं। उनका चित्त दूषित हो जाता है, एवं अयुक्त स्थान को ही युक्त स्थान समझने लगता है। वे कभी भी सत्पुरुषों की संगति में नहीं जाते हैं वरन् मालगन्ध से अपने को अलंकृत कर पापी मित्र की ही

---

१. अक्खेहि दिब्बन्ति सुरं पिवन्ति,
यन्तित्थियो पाणसमा परेसं।
निहीनसेवी न च बुद्धसेवी,
निहीयते कालपक्खे व चन्दो ॥
दी० नि० ३.१४३।

संगति करते हैं। जिस प्रकार कोई सुअर माला से अलंकृत हो उत्तम पीठ पर बैठा हुआ बिष्टा के कुएं में ही निमग्न रहता है, उसी प्रकार ये मित्र भी पतन के मार्ग में ही निमग्न रहते हैं। ऐसा करते हुए वे अपना लोक तथा परलोक दोनों विनष्ट करते हैं[1]।

इस प्रसंग में भगवान बुद्ध ने कुछ ऐसे मित्रों का कथन किया है जो वस्तुतः मित्र नहीं हैं, केवल मित्र का स्वांग रचते हैं। यथा—जो कुछ भी हरण करने वाला मित्र। वह मित्र जिस किसी रीति से जो कुछ भी हरण करने की बात ही सोचता है, वह किसी से इस लिए मैत्री करता है कि उसे कुछ प्राप्ति हो सकेगी, इस प्रकार के दूसरे मित्र को 'वचीपरम मित्र' कहते हैं। वह केवल वचन मात्र से ही मित्र है। वह मित्रों को वस्तुतः कुछ लाभ नहीं पहुंचाता हैं वरन् केवल वचन मात्र से ही प्रलोभन एवं भ्रम में डाले रहता है। तीसरे को 'मित्र प्रतिरूप' कहते हैं। यह सम्मुख रूप से तो मित्र कहलाता है, पर पीछे में सब कुछ अमित्र का कार्य करता है। वह मित्र भी अमित्र की श्रेणी में आता है जो कुशल अकुशल सभी प्रकार के कर्मों की प्रवृत्ति के समय केवल प्रिय बोलता है। उसके अनवरत प्रिय बचन से पाप कर्मों की बृद्धि होती है। पुनः जो मित्र पतन की ओर ले जाने वाले हैं, वे भी अमित्र कहे जाते हैं। इस प्रसंग में 'पराभव सुत्त' दर्शनीय है जहाँ पतन के कारणों का उल्लेख है[2]। उन पतन्नोन्मुख कार्यों में प्रवृत कराने वाले को भी अमित्र समझना चाहिए। यहाँ इन्हें इस रूप में दर्शाने का एक मात्र कारण यह है कि भगवान बुद्ध गृही जीवन को भी उतना ही सुखी देखना

---

१. अक्खित्थियो वारुणी नच्चगीतं,
दिवा सोप्पं पारिचरिया अकाले।
पापा च मिता सुकदरिया च,
एते छ ठाना पुरिसं धंसयन्ति॥
दी० नि० ३.१४२।

२. निद्दासीली समासीली, अनुट्ठाता च यो नरो,
अलसो कोधपञ्ञाणो, तं पराभवतो मुखं।
यो मातरं पितरं वा, जिण्णकं गतयोब्बनं।
पहु सन्तो न भरति, तं पराभवतो मुखं॥
पहूत वित्तो पुरिसो, सहिरञ्ञो सभोजनो।
एको भुञ्जति सादूनि, तं पराभवतो मुखं॥
इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो, अक्खधुत्तो च यो नरो।
लद्धं लद्धं विनासेति, तं पराभवतो मुखं॥
सेहि दारेहि असन्तुट्ठो, वेसियासु पदुस्सति।
दुस्सति परदारेसु, तं पराभवतो मुखं॥
सु० नि० ९५-९६।

चाहते हैं, जितना प्रव्रजीत जीवन को। इसलिए जो गृही जीवन में सुख के बाधक तत्त्व हैं, उनका उन्होंने स्पष्टतः निदर्शन कर दिया है[1]।

अमित्रों का कथन करने के उपरान्त भगवान ने उन मित्रों का भी कथन किया है, जो वस्तुतः मित्र हैं। उन्होंने मित्र को सुहृद बतलाया है। सुन्दर हृदय वाले तथा शुद्ध एवं परोपकारी मित्र को ही 'सुहृद' कहते हैं। वे चार प्रकार के होते हैं। यथा-उपकारी, समान-सुख-दुःखी, अर्थकथनकारी एवं अनुकम्पक। इनमें उपकारी मित्र वह है जो निःस्वार्थ भाव से अपने मित्र का उपकार करता है। जब वह अपने मित्र को प्रमत्त देखता है, तो वह उसकी सहायता के लिए आगे जढ़ता है। पमत्त का अर्थ 'मद्यप' है। उसे ग्राम मध्य या ग्राम द्वार पर या जहाँ कहीं मार्ग में पड़े हुए देखकर उसके निकट बैठ जाता है, जिससे उसके बस्त्र आदि का भी कोई हरण न करे। जब वह उस नशा से युक्त होता है तब उसे उसके गृह तक पहुंचाते हुए उपदेश करता है एवं मद्य-पान के दोषों को दर्शाते हुए उसे विरत रहने की प्रवृत्ति उत्पन्न करता है। पुनः उसे इस प्रकार से प्रमत्त रहने के समय उसकी सम्पत्ति की रक्षा करता है। मदमत्त हो पड़े रहने के समय उसका गृह अरक्षित होता है। इसलिए उसके गृह में जाकर उसकी रक्षा करता है। जब कभी भय की स्थिति आती है, तो उसको शरण देता है एवं उसके मन में निर्भय रहने की प्रेरणा देता है। जब किसी लाभप्रद काम करने का समय आता है या अर्जन करने की आवश्यकता उत्पन्न होती है, तब उसे ऐसे उपायों को दर्शाता है जिनसे अल्पकाल में अधिक अर्जन हो। इन्हीं दृष्टियों से उपकारी मित्र 'सुहृद' कहलाता है। दूसरा मित्र 'समान-सुख-दुःखी' कहलाता है। जो गुप्त बातें रहती हैं एवं उनसे मित्र का उपकार सम्भव है, तो उन गुप्त बातों का कथन करता है। कुछ ऐसी भी गुप्त बातें रहती हैं, जिनका गुप्त रहना ही मित्र के लिए हितकर बात है। वैसी गुप्त बातों को वह गुप्त रखता है। विपत्ति के समय उसका साथ नहीं छोड़ता है। जिन-जिन उपायों से बिपत्ति का निवारण हो उन उपायों को ही अपनाता है। यदि आवश्यकता आती है तो मित्र के लिए वह प्राण तक का भी परित्याग कर देता है।

मित्र का जो तीसरा प्रकार है—वह 'अर्थकथनकारी' है। अर्थ से यहाँ अभिप्राय हित से है। जिससे मित्र का हित हो, वही उसका अर्थ है। ऐसे हित की रक्षा के लिए उसे पाप-कर्म से रोकता है। प्राणातिपात, अदिन्नादान, व्यभिचार आदि जो अकुशल कर्म हैं, उनको वह निवारित करता है। ऐसा करते हुए अकुशल कर्म के दुष्परिणामों

---

१. अञ्ञदत्थुहरो मित्तो, यो च मित्तो वची परो।
अनुप्पियं च यो आह, अपायेसु च यो सखा॥
एते अमित्ते चत्तारो, इति विञ्ञायपण्डितो।
आरका परिवज्जेय्य, मग्गं पटिभयं यथा ति॥
दी० नि० ३. १४४।

का वह कथन करता है। पुनः वह कुशल कर्मों में उसकी प्रवृत्ति उत्पन्न करता है। दान देना, शील का पालन करना, समाधी का अभ्यास करना; ज्ञान एवं वय में वृद्ध पुरुषों का सत्कार करना; वृद्ध, रुग्न एवं असहाय पुरुषों की सेवा करना; कुशल धर्म का उपदेश करना; महापुरुषों की बातों को सुनना; अपने द्वारा अर्जित पुण्य कर्मों का दान देना; दूसरों द्वारा दान के रूप में प्राप्त पुण्य कर्मों को आदर के साथ स्वीकार करना तथा मिथ्या दृष्यियों को हटाकर सम्यक् दृष्टि में प्रतिष्ठित होना ये कुशल कर्म हैं। ऐसे ही कुशल कर्मों में वह अपने मित्र को लगाता है। पुनः जो उपकारी विद्या उससे अश्रुत या अज्ञात रहती हैं, उस विद्या का वह आख्यान करता है। साथ ही उस मार्ग का निदर्शन करता है, जिस मार्ग से स्वर्ग गमन सम्भव हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि वह उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास में सहायक कर्मों के प्रति उसे प्रेरित करता है, जिससे उसे सुगति प्राप्त हो। इन्हीं दृष्टियों से 'अर्थ कथनकारी' मित्र को भी सुहृद कहा गया है।

इस प्रसंग में 'अनुकम्पक मित्र' का भी परम सहायक रूप देखा जाता है। करुणा से पूर्ण आर्द्र भाव को 'अनुकम्पा' कहते है। ऐसा मित्र अपने मित्र की विभिन्न परिस्थितियों के प्रति सहानुभूति रखता है। उसकी जब अवृद्धि का समय आता है एवं अपने मित्र तथा उसके स्त्री-पुत्र को अवृद्धि की दशा में जब वह देखता है, तो वह स्वयं भी उनके दु:ख में भाग लेता है। उनकी ऐसी स्थिति से दु:खी होता है। पुनः जब उनकी वृद्धि का समय देखता है तथा उस क्रम में ऐश्वर्य के लाभ की बातों को सुनता है, तब वह भी आनन्दित होता है। यदि कोई मित्र की निन्दा करता है तो वहाँ वह उसका निवारण करता है। वह उसके रूप, वर्ण, जाति, गोत्र, शील आदि का सुन्दर कथन कर उसकी निन्दा को रोक देता है। जहाँ ऐसी स्थिति आती है कि कोई उसके मित्र की प्रशंसा करता है, तो वह उसमें भी योग देता है एवं उसके कथन को सुभाषित बतलाते हुए अपने मित्र के गुणों का पुनः पुनः कथन करता है। इन्हीं दृष्टियों से अनुकम्पक मित्र भी सुहृद कहलाता है[१]।

भगवान बुद्ध ने इन चार प्रकार के उपकारी मित्रों का कथन कर यह दर्शाया है कि पण्डितजन इन मित्रों को जाने तथा जानकर इनका साथ करें। जिस प्रकार माता अपने एक मात्र पुत्र की रक्षा करती है, उसी प्रकार ऐसे मित्रों की भी रक्षा करें। ऐसा करने से समाज में वह उसी प्रकार सुशोभित तथा प्रकाशित होता है, जिस प्रकार पर्वत के शिखर पर रात्रि काल में प्रज्वलित अग्नि सुशोभित होती है।

---

१. उपकारो च यो मित्तो, सुखे दुक्खे च यो सखा।
अत्थक्खायी च यो मित्तो, यो च मित्तानुकम्पको।

दी० नि० ३.१४५।

इस क्रम में एक अन्य उपयोगी अंग पर बल दिया गया है। और वह है 'अप्रमाद' अर्थात् आलस्य का त्याग। भगवान बुद्ध ने प्रमाद अर्थात् आलस्य को मृत्यु-पद तथा अप्रमाद को अमृत-पद कहा गया है[1]। जो लोग प्रमाद का परित्याग कर अमृत-पद की पाप्ति के लिए आगे बढ़ते हैं, वे शीघ्र ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर अपार सुख की अनुभूति करते हैं। बुद्ध की अन्तिम वाणी में भी यही कहा गया है कि मनुष्य को अप्रमादी हो अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लग जाना चाहिए। इसलिए इस क्रम में उन्होंने पहले प्रमाद अर्थात् आलस्य के दोष को दर्शाया है। आलसी मनुष्य कभी भी अपने कार्य को यथासमय नहीं करता है। वह इस प्रकार सोचना प्रारम्भ करता है कि 'अभी अत्यन्त शीत है', इसलिए काम करने का समय नहीं है और वह काम नहीं करता है। वह प्रातःकाल उठने पर भी दूसरे द्वारा कार्य करने के लिए प्रेरित होने पर 'अभी अत्यन्त शीत है, शीत के प्रकोप से हड्डियाँ टूटती हैं', इस लिए अग्नि के निकट बैठ समय काट देता है। फलतः उस अवधि में जो कार्य सम्पन्न होने वाले रहते हैं, वे नहीं हो पाते हैं। पुनः जब गृष्म काल आता है। एवं कार्य में प्रयुक्त होने की आवश्यकता होती है तब वह सोचना प्रारम्भ करता है कि अभी तो अत्यन्त उष्णा है, कार्य करने का समय नहीं है। फलतः वह उष्णा होने के कारण कार्य नहीं करता है। संध्या के बेला में कार्य की आवश्यकता होने पर उसकी वाणी में ऐसे ही स्वांग भरे वचन रहते हैं कि अभी तो अत्यन्त सांध्य बेला है, जो कार्य करने का उचित समय नहीं है। ऐसा सोच वह कार्य नहीं करता है। प्रातः काल जब कार्य करने का समय आता है, तब पुनः वह ऐसा कहना प्रारम्भ करता हैं कि अभी तो अत्यन्त प्रातः है, इसलिए काम क्यों किया जाय? कभी यदि वह भोजन नहीं किये रहता है तो कार्य न करने का उसके सम्मुख एक व्याज मिल जाता हैं और वह यही कह उठता हैं कि अभी तो मैं अत्यन्त भूखा हूँ', इसलिए कार्य कैसे हो सकता हैं? जब भोजन आदि से सम्पन्न हो जाता हैं तो वैसी स्थिति में भी काम न करने की इच्छा से—"मैंने अधिक खा लिया हैं, काम क्यों करु ऐसा कहता हैं[2]"। इस प्रकार उसके आलस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने के कारण जो पहले से एकत्र भोग सामग्रियाँ रहती हैं वे नष्ट हो जाती हैं तथा आगे भोग सामग्रियों का संग्रह नहीं होता हैं। इसलिए आलस्य के उक्त छः दोषों का अनुस्मरण करते हुए आलस्य का परित्याग इष्ट बतलाया गया हैं[3]।

---

१. अप्पमादो अमतपदं, पमादो पच्चुनो पदं।
अप्पमत्ता न मीयन्ति, ये पमत्ता यथा मता॥

ध० प० २१।

२. अतिसीतं अतिउण्हं, अतिसायमिदं अहु।
इति विसट्ठकम्मन्ते, अत्था अच्चेन्ति माणवे ति॥

दी० नि० ३.१४३।

३. योध सीतं च उण्हं च, तिणा भिय्यो न मञ्ञति।
करं पुरिसकिच्चानि, सो सुखं न विहायती ति॥

दी० नि० ३.१४६।

जिस प्रकार आलस्य में छः दोष देखे जाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के पतन में सहायक अन्य भी छः अंग हैं। वे हैं—जुआ में प्रवृत्त स्त्रियाँ, मदिरा, नृत्य-गान, दिन में सोना तथा असमय में सेवा करना, पापी मित्र एवं कंजूस। इन्हें भी एक चतुर गृहस्थ को जानना होगा और इसके साथ ध्यान रखना होगा कि ये घातक हैं।

उसे जीवन में आगे बढ़ते समय पग-पग पर मनुष्यों की पहचान होनी चाहिए। उसे अनेक ऐसे मित्र मिलेंगे जो पान-सखा मात्र ही रहेंगे अर्थात् वे मदिरा पान में साथी होंगे एवं इस कार्य के लिए ही मैत्री की स्थापना करेंगे। ऐसे भी मिलेंगे जो अपने प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए प्रिय वचन कहेंगे पर उनके प्रिय वचन की पृष्ठ-भूमि में स्वार्थ भाव ही भरा रहेगा। इसलिए ध्यान रखना चाहिए कि ऐसे दुष्ट-मित्रों का साथ नहीं करें। मित्र तो जीवन में वही होता है, जो स्वार्थ-रहित हो, उसके उपकार में हाथ बँटावे। अन्यथा ऐसे पापी मित्र जिनके कार्य कलाप अकुशल होते हैं; वे इस लोक तथा परलोक दोनों को नष्ट कर देते हैं[१]।

इस क्रम में यह भी जानना चाहिए कि जुआ खेलने में रति रखना, मदिरा पान करना, दूसरों की स्त्रियों को प्रिय समझना, नीच पुरुषों की संगति करना एवं पण्डित-जनों की संगति का परित्याग करना, लौकिक दृष्टि से अत्यन्त घातक है। इन कार्यों में रत्त पुरुष का यश ऐसे ही क्षीण हो जाता है, जिस प्रकार कृष्ण-पक्ष में चन्द्रमा क्षीण हो जाता है। यह व्यवहारिक जगत् में देखा जाता है कि जो मदिरा पीने में रत्त होता है, वह निर्धन हो अकिंचन बन जाता है। वह मद्यप धनहीन होने के कारण निम्नगामी हो पहले ऋणी बनता है। पुनः उसके भार से भी भारित हो अकुशल कर्मों को करने लगता है। इसलिए इस प्रसंग में जो आवश्यक है कि मनुष्य विवेकशील तथा अप्रमादी बने, वह सूर्योदय के बाद तक न सोये, पर स्त्रियों के साथ गमन न करे, बैर बढ़ाने वाले कार्यों में लिप्त नहीं हो, अनर्थकारी कार्य भी न करे, पापी मित्रों की संगति छोड़े एवं उदार बने, वह न तो दिन में ही सोये, न रात में जगे, मद्यप लोगों का सर्वथा परित्याग करे। ऐसी मानसिक पृष्ठभूमि तैयार कर वह शीत, उष्ण आदि से सम्बन्धित आलस्य का परित्याग कर पुरुषकृत्य करे[२]।

सभी पदार्थ विनाशशील हैं। आयु के क्षण भी नष्ट होते जा रहे हैं। इसलिए जीवन में एक-एक क्षण का सदुपयोग आवश्यक है। जिस प्रकार उपवन के फूलों का सदुपयोग कर सुन्दर मालाएं बनाई जा सकती हैं, उसी प्रकार जीवन के क्षणों का

---

२. होति पानसखा नाम, होति सम्पियसम्पियो।
यो च अत्थेसु जातेसु, सहायो होति सो सखा॥

दी० नि० ३.१४२।

१. न दिवा सोप्पसीलेन, रत्तिमुट्ठानदेस्सिना।
निच्चं मत्तेन सोण्डेन, सक्का आवसितुं घरं॥

दी० नि० ३.१४३।

सदुपयोग कर कुशल कर्म किये जायँ। जिस प्रकार यदि उपवन के फूलों का सदुपयोग न हो तो वे भी जीर्ण-शीर्ण हो बिखर जायेंगे, उसी प्रकार यदि जीवन के क्षणों का उपयोग न हो तो वे भी व्यर्थ में नष्ट हो जायेंगे[१]। इसलिए हम इस जीवन में भौतिक लाभों के साथ आध्यात्मिक लाभों का भी संतुलन रखें। ऐसा रखने से ही मनुष्य यहाँ भी सुखी रह सकता है तथा अन्यत्र भी सुखी हो सकता है। मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि भौतिक लाभों का संग्रह करे पर वह धर्ममय हो। पुनः जिस धन का वह संग्रह करे, उसे चार भागों में विभक्त करें। एक भाग को वह अपने भोजन में लगावे, दो भागों को अन्य आवश्यक कार्यों में लगावे तथा चतुर्थ भाग को आपदकाल के लिए सुरक्षित रखे। लोक व्यवहार में सर्वदा तत्पर एवं अप्रमादी बने, विपत्तियों से घबड़ाए नहीं, अच्छे मित्रों का संग्रह करे, दानी, प्रियवादी, समभाव रखने वाला, उदार एवं उत्तम लक्ष्य में रत रहे। उसे यह समझना चाहिए कि लोक के जो संग्रह हैं, वे न माता-पिता, न पुत्र आदि के लिए हैं, वरन् संग्रह का उद्देश्य सत्कर्म की अभिवृद्धिपूर्वक जीवन यापन के लिए है। मनुष्य माता-पिता या पुत्र के कारण लोक में यशस्वी नहीं हो सकता है, वरन् धर्माचरण एवं उत्तम गुणों के कारण वह महान बन सकता है एवं यश का भागी हो सकता है। इसलिए भगवान ने कहा है कि पुण्यकारी यहाँ भी आनन्द करता है तथा परलोक में भी आनन्द करता है। वह सर्वत्र आनन्द करता है। इन्हीं[२] सब वाक्यों के साथ भगवान बुद्ध के उपदेश यहाँ गृही जनों के लिए

---

१. अचिरं वतयं कायो, पठविं अधिसेस्सति।
छुद्धो अपेतविञ्ञाणो, निरत्थं व कलिंगरं॥
ध० प० २१।

यथा पि पुप्फरासिम्हा, कयिरामालागुणे बहू।
एवं जातेन मच्चेन, कत्तब्बं कुसलं बहुं॥
ध० प० २८।

२. इध मोदति पेच्च मोदति, कतपुञ्ञो उभयत्थ मोदति।
सो मोदति सो पमोदति, दिस्वा कम्मविसुद्धमत्तनो॥

× × ×

इध नन्दति पेच्च नन्दति, कतपुञ्ञो उभयत्थ नन्दति।
पुञ्ञं मे कतं ति नन्दति, भिय्यो नन्दति सुग्गतिं गतो॥
ध० प० १६।

× × ×

दानं च पेय्यवज्जं च, अत्थचरिया च या इध।
समानत्तता च धम्मेसु, तत्थ तत्थ यथारहं।
एते खो संगहा लोके, रथस्साणीव मायतो॥
एते च संगहा नास्सु, न माता पुत्तकारणा।
लभेथ मानं पूजं च, पिता वा पुत्तकारणा॥
यस्मा च संगहा एते, समवेक्खन्ति पण्डिता।
तस्मा महत्तं पप्पोन्ति, पासंसा च भवन्ति ते तिं॥
दी० नि० ३.१४६।

है, जिनका केन्द्र बिन्दु यह है कि इस लौकिक जीवन का सफल निर्माण भौतिक तथा आध्यात्मिक उपकरणों के आधार पर ही हो। इनमें नैतिक तथा आध्यात्मि उपकरण जीवन के मूल आधार है।

२. महासतिपट्ठानसुत्त

'सतिपट्ठान' शब्द दो पदों से बना है। 'सति' एवं 'उपट्ठान'। 'सति' का अर्थ सतत जागरूकता है। उपट्ठान उपस्थिति का द्योतक है। इसलिए मानस द्वार पर स्मृति का सतत जागरूक रहना ही स्मृति उपस्थान है[1]। जिस प्रकार नगर द्वार पर या गृह द्वार पर स्थित प्रहरी के जागरूक रहने पर कोई चोर या अवांछनीय पुरुष उस नगर या गृह में प्रवेश नहीं करते हैं। प्रहरी कुछ कहता भी नहीं है, केवल वह जागरूक आने जाने वाले पुरुषों के प्रति सतर्कता से दृष्टिपात करता है। उसकी इस प्रकार की जाग्रत मन:स्थिति के कारण कोई भी अवाँछनीय पुरुष उस नगर या गृह में प्रविष्ट करने का साहस नहीं करते हैं; उसी प्रकार मानस-द्वार पर स्मृति के विद्यमान रहने से ही अकुशल धर्म स्वभावत: उत्पन्न नहीं होते हैं। वे स्मृति की सतर्क उपस्थिति से प्रसुप्त अवस्था में ही पड़े रह जाते हैं। इसलिए अकुशल धर्मों के निवारण के लिए स्मृति की उपस्थिति अत्यन्त आवश्यक है।

भगवान बुद्ध ने सत्त्वों के कल्याण के लिए जिस धर्म-पथ का प्रज्ञापन किया है, वह मध्यम मार्ग कहलाता है। वह शील, समाधि एवं प्रज्ञा से युक्त है। यह पथ अत्यन्त महत्वपूर्ण सरल तथा क्रमिक विकासयुक्त है। पर देखने में वह जितना सुगम प्रतीत होता है, अभ्यास में उतना सुगम नहीं है। शील का सम्यक् परिपालन, रूप समाधि तथा अरूप समाधि का सम्यक् अभ्यास, प्रज्ञा का उदय तथा वस्तुओं के स्वरूप को जान उनसे चित्त की आसक्ति का निवारण कर निर्वाण का साक्षात्कार करना अत्यन्त कठिन एवं समय साध्य मार्ग है। यह स्पष्ट है कि यह धर्म-चक्षु उत्पन्न कर यथार्थ ज्ञान से सुपरिचित करा कर निर्वाण की ओर उन्मुख कराता है तथापि इसमें जो दीर्घकालीन अभ्यास की बात है, वह सबके लिए सुगम नहीं हो सकती है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान बुद्ध ने सत्त्वों के कल्याण के लिए एक ऐसे मार्ग का अन्वेषण

---

१. पतिट्ठाति अस्मिं ति पट्ठानं। सतिया पट्ठानं सतिपट्ठानं, पधानं ठानं ति वा पट्ठानं। सतिया पट्ठानं हत्थिट्ठान-अस्सट्ठानादीनि विय।

×××

पट्ठपेतब्बतो पट्ठानं, पवत्तयितब्बतो ति अत्थो। सतिया सतिया पट्ठानं सतिपट्ठानं।

×××

पट्ठाती ति पट्ठानं, उपट्ठाति ओक्कन्दित्वा पक्खन्दित्वा पत्थरित्वा पवत्ततीति अत्थो। सति येव सतिपट्ठानं। अथवा सरणट्ठेन सति, उपट्ठानत्थेन पट्ठानं। इति सति च सा पट्ठानं चा ति सतिपट्ठानं।

सु० नि० ३-६५।

किया है, जो अल्प समय में ही धर्म की परियत्ति तथा पटिपत्ति का यथार्थ ज्ञान करा दे। इस मार्ग का आविष्कार या स्थापना उन्होंने कहीं अन्यत्र से नहीं की वरन् मज्झिमा पटिपदा के उपदेश के अन्तर्गत है। इस क्रम में उन्होंने 'सम्मासति' का कथन एक मार्ग के अंग के रूप में किया गया है। उन्होंने उसी अंग को एक भावना एवं अभ्यास की विधि के रूप में स्थापित किया[1]। उन्होंने देखा की स्मृति के सम्यक् अभ्यास का मार्ग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके उचित प्रयोग से सभी प्रकार के दुःखों का निरोध तथा निर्वाण की प्राप्ति सम्भव है। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान बुद्ध ने अपने अनवरत अभ्यास से प्राप्त अनुभव के आधार पर सम्यक् स्मृति के महत्व को समझाया एवं इसे एक ऐसी शक्ति के रूप में पाया, जिसके सरल अभ्यास से समस्त दुःखों का उपसम हो सकता है। इसलिए उन्होंने इस सुत्त का कथन पुनः पुनः किया जो त्रिपिटक के विभिन्न स्थानों में उपलब्ध हैं। साथ ही इस सुत्त में निहित आध्यात्मिक बल को उन्होंने जितना स्पष्ट रूप से कथन किया है वह अन्यत्र नहीं देखा जाता है। उन्होंने बड़े ही सबल शब्दों में सिंहनाद किया कि—"भिक्षुओं, सत्वों की विशुद्धि के लिए, शोक तथा परिदेव के उपसम के लिए, शारीरिक एवं मानसिक दुःख की परिसमाप्ति के लिए, ज्ञान की प्राप्ति के लिए तथा निर्वाण के साक्षात्कार के लिए यही एकमात्र मार्ग है, जिसे चार स्मृति उपस्थान कहते हैं[2]।

इस सुत्त की देशना कुरू राज्य के कम्मासधम्म नामक निगम में हुआ है। बुद्धघोष के अनुसार इसकी भी एक समृद्ध पृष्ठभूमि देखी जाती है। कहा जाता है कि कुरू राष्ट्र में निवास करने वाले भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक तथा उपासिकाएं जीवन के भौतिक एवं आध्यात्मिक उपकरणों से सम्पन्न होने के कारण सर्वदा शरीर एवं मन से मृदु एवं जिज्ञासु हुआ करती थीं। उनके मानस धरातल पर धर्म की पृष्टभूमि में श्रद्धा तथा प्रज्ञा से सम्प्रयुक्त सुन्दर परिवेश स्वभावतः बना हुआ था, जिसके कारण वे गम्भीर देशना को सुगमतया ग्रहण करने में समर्थ थे। इसलिए भगवान बुद्ध ने अन्य स्थानों में 'सतिपट्ठान' की देशना न देकर कुरू वासियों के लिए ही देना उपयुक्त समझा। जिस प्रकार कोई पुरुष सोने का एक पिटक प्राप्त कर उसमें नाना प्रकार के पुष्पों को रखता है। अथवा सुवर्ण मंजूषा को प्राप्त कर उसमें नाना प्रकार के रत्नों को रखता है, उसी प्रकार कुरू राष्ट्रवासियों को आध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध जान भगवान बुद्ध ने सतिपट्ठान का उपदेश कुरू राष्ट्र के कम्मासधम्म निगम में ही दिया।

---

१. एकायनं जातिखयन्तदस्सी,
मग्गं पजानाति हितानुकम्पी।
एतेन मग्गेन तरिंसु पुब्बे,
तरिस्सन्ति ये च तरन्ति ओघं॥
सं० नि० ४.१६०।

२. चतस्सो पि एता सतियो मग्गट्ठेन एकत्तं गच्छति। मग्गो ति केनट्ठेन मग्गो? निब्बानगमनट्ठेन। निब्बानत्थिकेहि मग्गनीयट्ठेन चा ति। सु० वि० ३.६६।

इस राष्ट्र के वासियों की मनोदशा के सम्बन्ध में आचार्य बुद्धघोष ने अनेक प्रशंसा के शब्द कहा है। उनके अनुसार यहाँ के भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक, उपासिका, प्रकृत रूप से स्मृति उपस्थान की भावना में रत्त होकर विहार करते थे। यहाँ तक कि दास, कर्मकार भी इस अभ्यास से सुपरिचित थे। उदकतीर्थ (पनघट) तथा सूत कातने आदि स्थानों में भी निरर्थक कथाएं नहीं होती थीं। यदि कोई स्त्री किसी दूसरी स्त्री से यह प्रश्न करती थी कि तुम स्मृति उपस्थान का अभ्यास कितना करती हो, एवं यदि उसका उत्तर अस्वीकारात्मक होता था, तो वह उसकी निन्दा करते हुए कहा करती थी कि—'तुम्हारा जीवन व्यर्थ है। तुम जीवित होकर भी मृत सदृश हो। इसलिए अब ऐसा उत्तर न देना। पुनः जो स्त्री ऐसा उत्तर देती थी कि—'मैं इस स्मृति उपस्थान की भावना करती हूँ, तब वह उसे साधुकार देते हुए कहा करती थी कि "तुम्हारा जीवन सुजीवन है। मनुष्य जीवन का लाभ यथार्थ है। तुम्हारे लिए ही भगवान बुद्ध का अवतार हुआ था।" इस प्रकार उसे उत्साहित करते हुए स्मृति उपस्थान की पुनः पुनः वृद्धि के लिए प्रोत्साहित करती थी।

कुरू राष्ट्र की प्रशंसा में बुद्धघोष के शब्द पुनः पुनः निःसरित होते हैं, जिससे यह प्रतीत होता है कि इस राज्य में धार्मिक वातावरण अत्यन्त सजीव था। स्मृति उपस्थान की भावना केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं थी, वरन् पक्षियों में भी यह अभ्यास पूर्ण रूप से विद्यमान था। इस प्रसंग में एक घटना का उल्लेख प्राप्त होता है। एक नट एक शुक के बच्चे को सिखा कर उस राज्य में विहार करता था। उसे कुछ दिनों तक भिक्षुओं के आश्रय में रहने का अवसर मिला तथा वहाँ से जाते समय उसने उस सुके के बच्चे को उन्हीं के साथ छोड़ दिया। श्रामणेरियों ने उसका पालन-पोषण किया एवं उसका 'बुद्ध रक्षित' नाम रखा। एक दिन वह सुग्गा उस विहार की महाथेरी के सम्मुख बैठा था। थेरी ने उससे साधना की बातें पूछीं। सुग्गे का उत्तर अस्वीकारात्मक था। थेरी ने उसे समझाया कि भिक्षुओं के मध्य रहते हुए उसे भावना से विरहित रहना उचित नहीं है। इसलिए उसे कुछ सिखाना चाहा। यह जानकर कि 'शुक' बहुत सी बातें नहीं सीख सकता है, इसलिए उसने केवल इतना ही कहा कि तुम "अस्थि, अस्थि" ऐसा पारायन करो। उस महाथेरी का उपदेश सुन वह सुग्गा उसी प्रकार 'अस्थि अस्थि' कहते हुए विहार करने लगा। एक दिन वह प्रातःकाल एक ध्वज के ऊपर बैठे हुए सूर्य की किरणों का आनन्द ले रहा था कि किसी अन्य पक्षी ने अपने नख से युक्त पंजे में उसे पकड़ लिया। शुक ने 'किरी, किरी' शब्द किया। श्रामणेरियों ने इसे सुन कर जान लिया कि 'बुद्ध-रक्षित' शुक को किसी पक्षी ने पकड़ लिया है। इस लिए उसके पीछे ढेले आदि फेंकते हुए उन लोगों ने उस सुग्गे को बचाया तथा उसे लाकर महाथेरी के सामने रख दिया। महाथेरी ने 'बुद्ध रक्षित' नामक सुग्गे से पूछा कि उस पक्षी द्वारा पकड़ लिये जाने के समय तुम क्या चिन्तन करते थे। सुग्गे ने उत्तर दिया कि मेरे सामने अन्य प्रकार का कोई चिन्तन नहीं था, केवल इतना ही चिन्तन चल रहा था कि एक अस्थिपुंज अन्य अस्थिपुंज को लेकर जा

रहा है, जो किसी स्थान में विकीर्ण हो जायेगा। इस प्रकार मैं अस्थिपुंज के बारे में ही चिन्तन करता था[1]। सुग्गे के इस बात को सुन उस महाथेरी ने उसे साधुकार दिया एवं भविष्यवाणी की कि भविष्य में तुम्हारी जीवन-मरण-परम्परा समाप्त हो जाएगी। इससे यह प्रकट होता है कि उस राज्य के पक्षियों में भी स्मृति उपस्थान का अभ्यास विद्यमान था। इसलिए इसको प्रौढ़तर बनाने के लिए भगवान ने यहाँ ही सतिपट्ठान सुत्त का उपदेश किया।

भगवान बुद्ध ने स्मृति उपस्थान का बिवरण देते हुए उसे 'एकायन' कहा है। एक 'अयन' कहने का अभिप्राय एकमात्र मार्ग होता है। अब यहाँ विचारणीय यह है कि जब मार्ग के अर्थ बोधक पालि में—'मग्ग', 'पन्थ', 'पथ', 'पज्ज', 'अंजस', 'वटुमायन', 'नावा', 'उत्तर', 'सेतु', 'कूल', 'भिसि' आदि हैं, तो इन सब में किसी का प्रयोग न कर उन्होंने 'अयन' शब्द का ही प्रयोग क्यों किया है[2]? क्या यह शब्द किसी विशेष अर्थ का गमक है? ऐसा प्रतीत होता है कि मार्ग के पर्याय अनेक शब्द होने पर भी उनके अर्थ में विभेद है। इनमें प्रत्येक शब्द पर्याय भेद से विभिन्न अर्थों के द्योतक हैं। 'अयन' शब्द को एक विशेष अर्थ का प्रतिपादक समझ भगवान बुद्ध ने इसका प्रयोग इस सुत्त के प्रारम्भ में किया है। इनके सम्मुख सत्व को दुःख की स्थिति से दुःख की निवृति की स्थिति में ले जाना है, एवं इस कार्य में सहायक यही एक मात्र मार्ग है। इसलिए अन्य मार्ग के पर्यायवाची शब्दों का कथन न कर उन्होंने 'अयन' का ही प्रयोग किया है[3]।

आचार्य बुद्धघोष ने एकान्त विहार पूर्वक गमन को 'अयन' बतलाया है। और यह गमन संसार से निर्वाण की ओर है। इस प्रकार के गमन के लिए यही एक मार्ग है। इसलिए उन्होंने अन्य पर्यायवाची शब्दों का परित्याग कर 'अयन' शब्द का प्रयोग किया है। जिसके द्वारा गमन किया जाय वह 'अयन' है। इस धर्म विनयमात्र में जिसकी प्रवृत्ति हो वह 'अयन' है। यस्मात् इस 'अयन' द्वारा ही बुद्ध प्रतिपादित धर्म-विनय में प्रवृत्त हो दुःख का अन्त किया जा सकता है, इसलिए इसे 'एकायन' अर्थात् एक मात्र मार्ग कहा गया है।

---

१. "न, अय्ये, अञ्ञं किंचि चिन्तेसिं, अट्ठिपुञ्जो व अट्ठिपुञ्जं गहेत्वा गच्छति, कतरस्मिं ठाने विप्पकिरिस्सती ति, एवं, अय्ये, अट्ठिपुञ्जमेव चिन्तेसिं" ति।

सु० वि० ३.५५।

२. मग्गो पन्थो पथो पज्जो, अञ्जसं वटुमायनं।
नावा उत्तरसेतू च, कुल्लो च भिसिसङ्कमो ति॥

३. अयती ति वा अयनो, गच्छति पवत्तती ति अत्थो। एकस्मिं अयनो ति एकायनो, इमस्मिं धम्मविनये पवत्तति, न अञ्ञत्था ति अत्थो।

× × ×

एकं निब्बानमेव गच्छती ति वुत्तं होति।

सु० वि० ३.५६।

इस पृष्ठभूमि में उन्होंने 'एकायन' का विवरण एक अन्य दृष्टि से प्रस्तुत करने का भी यत्न किया है। निर्वाण की उपलब्धि एक ही बार होती है और उस प्राप्ति का यह ही एक मात्र मार्ग है, इसलिए भी इसे एकायन कहा गया है। बुद्ध द्वारा प्रतिपादित परियत्ति तथा पटिपत्ति रस के कोविद आचार्यों ने इस मार्ग से ही निर्वाण का साक्षात्कार किया है तथा इस दृष्टि से यह अनुभूत प्रयोग मार्ग है, इसलिये यह 'एकायन' कहा जाता है'।

अब प्रकृत प्रसंग में सतिपट्ठान की भावना आदि पर विचार करना आवश्यक है। भगवान बुद्ध ने स्मृति उपस्थान के चार प्रकार बतलाया है। वे हैं :— कायानुपस्सना, वेदनानुपस्सना, चित्तानुपस्सना तथा धम्मानुपस्सना। यहाँ काय, वेदना, चित्त तथा धर्म के साथ अनुपस्सना शब्द का योग है। अनुपस्सना में दो पद है—'अनु' तथा 'पस्सना'। 'अनु' का अर्थ है 'निकट से' 'पस्सना' का अर्थ है 'देखना'। इस प्रकार अनुपस्सना का अर्थ यथार्थ दर्शन कहा जा सकता है। काय, वेदना, चित्त तथा धर्म का यथार्थ दर्शन ही चार प्रकार की 'अनुपस्ना' है, जो स्मृति उपस्थान के चार प्रकार हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :—

१. कायानुपश्यना :—काय शब्द से यहाँ रूपकाय अभिप्रेत है। चार महाभूत एवं उनसे उत्पन्न चौबीस उपादा रूप को ही रूप कहते हैं। इन्हीं रूपों का समूह काय या रूपकाय है। अथवा समूह अर्थ में एवं कुत्सित धर्मों के आय अर्थात् उत्पत्ति स्थान के अर्थ में काय है। कुत्सित धर्म से यहाँ केशलोमादि अभिप्रेत है। इन केशलोमादि धर्मों से भिन्न कोई काय नहीं है। कदलीस्तम्भ के स्तरों को हटाते हुए उसे सारहीन रूप में दर्शन सदृश या मुष्ठि को विनिवेष्ठित करने से रिक्त रूप में दर्शन सदृश काय का घनविनिब्भोग दर्शन ही कायानुपश्यना है। केशलोमादि धर्मों के समुह से भिन्न काय या स्त्री, पुरुष कुछ नहीं हैं। धर्मसमूह मात्र के प्रति ही अज्ञानवश सत्त्व का अभिनिवेश होता है। यथा :—

"यं पस्सति न तं दिट्ठं, यं दिट्ठं तं न पस्सति।
अपस्सं बज्झतो मूल्हो, बज्झमानो न बुज्झति" ॥

---

१. यस्मा एकवारं निब्बानं गच्छति, तस्मा एकायनो ति वदन्ति।

सु० वि० ३.५६।

× × ×

नाञ्ञत्र बोज्झा तपसा, नाञ्ञत्रिन्द्रियसंवरा।
नाञ्ञत्र सब्बनिस्सग्गा, सोत्थि पस्सामि पाणिनं॥

सं० नि० १.५१।

कायानुपश्यना का अभिप्राय जलविरहित मरीचिका में जलानुपश्यना के सदृश अनित्यदु:खअनात्म एवं अशुभ काय में नित्यसुखआत्म एवं शुभदर्शन नहीं है वरन् अनित्यदु:खअनात्मअशुभाकार-समूहानुपश्यना है। इसे अनित्यत: देखने से नित्य संज्ञा का, दु:खत: देखने से सुखसंज्ञा का तथा अनात्मत: देखने से आत्मसंज्ञा का प्रहाण होता है। ऐसा देखने से नन्दी, राग आसक्ति आदि का प्रहाण होता है[1]।

कायानुपश्यना की व्याख्या छ: शीर्षकों के अन्तर्गत की गई है। इन्हें आनापानपब्ब, इरियापथपब्ब, सम्पजानपब्ब, पटिकूलमनसिकारपब्ब, धातुमनसिकार-पब्ब तथा सिवथिकपब्ब कहते हैं।

'आनापानपब्ब' के अन्तर्गत आनापानस्मृति के अभ्यास की चर्चा की गई है। आन का आस्वास तथा 'अपान' का अर्थ प्रस्वास है। 'सति' यहाँ जागरुक रहने के भाव का द्योतक है। आते जाते स्वास पर चित्त को लगाकर जाग्रत रहना आनापानसति है। दीर्घकाल से विभिन्न विषयों पर आसक्त चित्त इस आलम्बन पर स्वभावत: नहीं आता है। वह बलवान् बैलों से जुते रथ के समान कुमार्ग की ओर ही दौड़ता है। जिस प्रकार बलवती गाय के समस्त दूध को पीने वाले बछड़े को दमित करने की इच्छा से गोप एक बड़े स्तम्भ को नीचे तक गाड़कर सबल रस्सी से बाँधता है। वह बछड़ा अब यत्र-तत्र दौड़ने में असमर्थ हो, उसी स्तम्भ के आश्रय से स्थित रहता है, उसी प्रकार चंचल चित्त को दमित करने की दृष्टि से आस्वास प्रस्वास की दृढ़ रज्जु में बांधना विहित बतलाया गया है। वह चित्त अनवरत अभ्यास से यत्र तत्र न जाकर उस आलम्बन में ही एकाग्र हो जाता है। इसलिए कहा गया है :—

> "यथा थम्भे निबन्धेय्य, वच्छं दमं नरो इध।
> बन्धेय्येवं सकं चित्तं, सतियारम्मणे दल्हं ति"॥

यह कैसे हो ? हम ऐसा व्यवहार में देखते हैं कि हमारा स्वास अनवरत गति से आता जाता रहता है। इस आते जाते हुए स्वास पर चित्त को एकाग्र करना आनापान स्मृति है। इसमें हमें मन को एकाग्र करने के लिए किसी विषय को ढुढ़ने की आवश्यकता नहीं है, वरन् मन को उस स्वभाव गति से आने जाने वाले स्वास पर एकाग्र करना आवश्यक है। जब वह स्वास ले रहा है, तब वह जानते हुए स्वास ले। जब वह स्वास का परित्याग करता है, तब जानते हुए स्वास का परित्याग करे। जब वह दीर्घ स्वास ले रहा है, तब वह जाने की बह दीर्घ स्वास ले रहा है। जब वह ह्रस्व स्वास ले रहा है तब भी वह जाने कि वह ह्रस्व स्वास ले रहा है। उसके समस्त काय में स्वास की गति स्वास लेते समय हो रही है, इसे भी जानें एवं स्वास के परित्याग के

---

१. ...निब्बिन्दतो नन्दिं पजहति, बिरज्जन्तो रागं पजहति, निरोधेन्तो समुदयं पजहति, पटिनिस्सज्जन्तो आदानं पजहती तिं वेदितब्बो। सु० वि० ३.७०।

समय भी उसकी गति सम्पूर्ण काय में हो रही है, ऐसा जाने। इस प्रकार आते-जाते स्वासों पर मन को एकाग्र कर उसकी आने जाने वाली गति के प्रति सर्वदा जागरूक रहे। स्वास की गति पर जागरूक रहते हुए अपनी भीतरी काय तथा वाह्य काय तथा दोनों के प्रति भी यथार्थ रूप से दर्शन करते हुए विहार करे। यह काय उत्पत्तिमान-धर्मा है, यह काय विनाशधर्मा है, यह काय उत्पत्तिमान तथा विनाशधर्मा है। इस प्रकार काय के स्वाभाविक धर्म के प्रति उसकी स्मृति जागृत हो जाती है। वह काय को इस रूप में यथार्थतः देखते हुए उसपर आसक्ति उत्पन्न नहीं करता है। लोक में किसी भी वस्तु के प्रति उसकी तृष्णा नहीं होती है। ऐसा होने से शनैः शनैः तृष्णा का प्रहाण होने लगता है तथा उसके प्रहाण से सुख की वृद्धि होती है।

'इरियापथपब्ब' के अन्तर्गत चार इरियापथों की ओर जागरूक रहने की बात कही गयी है। परम्परा के अनुसार जाना, खड़ा होना, बैठना तथा सोना ये चार इरियापथ हैं। इन चार इरियापथों के प्रति जागरूक रहना इरियापथ सति है। इसका अभिप्राय है कि वह जाते हुए जानता है कि "मैं जाता हूँ", स्थित होते समय जानता है कि "मैं स्थित हूँ", बैठे हुए वह जानता है कि मैं बैठा हूँ, तथा सोते समय जानता है कि "मैं सोता हूँ"। पुनः जैसे जैसे उसका मन एकाग्र होता है, वैसे वैसे उसे उसी क्रम में जानता है। इसके अतिरिक्त वह अन्तःकाय, वाह्यकाय तथा अन्तःवाह्यकाय के प्रति जागरूक रहता है। जो उत्पत्तिमान काय है उसको उत्पत्तिमान-काय समझते हुए विहार करता है। जो निरोधधर्माकाय है उसको निरोध-धर्मा-काय समझते हुए विहार करता है या उक्त काय को उभयरूप में यथार्थतः दर्शन करते हुए विहार करता है। ऐसा होने से शरीर के प्रति ममता का शनैः शनैः निरोध हो जाता है[१]।

'सम्पजानपब्ब' के अन्तर्गत पूर्णतः जागरूक रहकर विहार करने का उपदेश दिया गया है। यह जागरूकता विशेषकर शारीरिक कर्मों के प्रति होती है। आगे चलना, पीछे लौटना, आगे देखना, पीछे देखना आदि विभिन्न कार्य हैं। चीवर आदि धारण करना, भिक्षा पात्र आदि ग्रहण करना, भोजन को उचित रूप से प्राप्त करना

---

१. न कोचि सत्तो वा पुग्गलो वा गच्छति। 'गच्छामी' ति चित्तं उप्पज्जति, तं वायं जनेति, वायो विञ्ञत्तिं जनेति, चित्तकिरियवायोधातुविप्फारेन सकलकायस्स पुरतो अभिनीहारो गमनं ति पवुच्चति। ठानादीसु ति एसेव नयो। तेनाह t—

नावा मालुतवेगेन, जियावेगेन तेजनं।
यथा याति तथा कायो, याति वाताहतो अयं॥
यन्तं सुत्तवसेनेव, चित्त सुत्तवसेनिदं।
पयुत्तं काययन्तम्पि, याति ठाति निसीदति॥
को नाम एस सो सत्तो, यो विना हेतु पच्चयें।
अत्तनो आनुभावेन, तिट्ठे वा यदि वा वजे ति॥

सु० वि० ३.८१।

वह भी उसके कार्य हैं। अतः सम्प्रजन्य से युक्त भिक्षु आगे चलते हुए पूर्णतः जानता है कि वह आगे चल रहा है। पीछे जाते समय भी वह पूर्णतः जागरूक है कि वह पीछे चल रहा है। इसी प्रकार आगे देखते हुए तथा पीछे देखते हुए वह पूर्ण रूप से जागरूक रहता है। जब वह संघाटी, पात्र तथा चीवर को धारण करता है, तो अपने को उनके प्रति जागृत बनाये रहता है। यहाँ तक कि मल-मूत्र त्याग करते समय भी वह जानता है कि वह मल-मूत्र त्याग कर रहा है। अब यहाँ दर्शनीय यह है कि साधक इन विविध कार्यों के प्रति जागरूक क्यों होता है? इसका उत्तर यह है कि मन जो स्वभावतः चंचल है एवं प्रतिक्षण नानाविषयों के प्रति धावित रहता है, वह मन इतना सीख जाता है कि अब इन्हीं वस्तुओं पर ही जागृत रहना है। वह इन वस्तुओं के प्रति जागृत हो उन वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप अनित्य, दुःख, अनात्म के प्रति भी जागरूक होता है तथा उनके ऐसे स्वभाव को जानकर उनसे आसक्ति का परित्याग करता है जो बौद्ध-दर्शन का मुख्य विषय है। इस प्रकार 'सम्पजानपब्ब' में साधक अपने विविध कार्यकलापों के प्रति सतत् जागरूक रहने का अभ्यास करता है, जो आसक्ति निवारण की प्रक्रिया मात्र है।

इसके उपरान्त 'पटिकूलमनसिकारपब्ब' देखा जाता है। पटिकूलमनसिकार का अर्थ है अपने शरीर को जिस रूप में हम अज्ञानवश देखते हैं, उसके विपरीत देखना[1]। मनुष्य अपने शरीर पर गर्व करता है, शरीर के एक-एक अंग को सुन्दर एवं महान् समझ उसपर गर्व करता है। ऐसा करने से उसमें अहंकार-ममंकार की प्रवृत्ति बढ़ती है। इस प्रवृत्ति की पृष्ठभूमि में वह नानाप्रकार का अकुशल कर्म करता है, जो उसके दुःख का कारण है। इसलिए शरीर के प्रति बढ़ती आसक्ति को रोकने की दृष्टि से भगवान ने शरीर के प्रति विपरीत अभ्यास करने का उपदेश किया है। उनका कहना है कि यह शरीर बत्तीस प्रकार की गन्दगियों का गृहमात्र है। केश, लोम, नख, दन्त, त्वचा, अस्थि, अस्थिमिन्जा, बृक, हृदय, करीष, रक्त आदि बत्तीस अपवित्र पदार्थ इसमें भरे हुए हैं। यह शरीर वस्तुतः अस्थियों का नगर है, जो चमड़े मांस आदि से घिरा हुआ है। उनके मध्य ये बत्तीस अशुचि पदार्थ भरे पड़े हैं। इस नगर में जो नागरिक हैं, वे हैं—लोभ, द्वेष, मोह, मान इत्यादि[2]। जब शरीर की वास्तविक दशा यही है तब इसके प्रति आसक्ति कैसे की जा सकती है? इसके अतिरिक्त जो चक्षु, श्रोत्र आदि नव इन्द्रियाँ हैं, वे शरीर में नव द्वार हैं। उन नव द्वारों से सर्वदा अशुचि

---

१. अट्ठिनहारुसंयुत्तो, तचमंसावलेपनो।
छविया कायो पटिच्छन्नो, यथाभूतं न दिस्सति॥

सु० नि० २६७।

२. अट्ठीनं नगरं कतं, मंसलोहितलेपनं।
यत्थ जरा च मच्चु च, मानो मक्खो च ओहितो॥

ध० प० ३१॥

पदार्थों का बहना बना रहता है[१]। इस दृष्टि से शरीर में कोई भी एक ऐसा अंग नहीं है, जिसपर गर्व किया जा सकता है। उसको ऐसा जानकर शरीर के प्रति जो आसक्ति है, उसका निवारण करना चाहिए। इस प्रकार की शरीर के प्रति जागरूक रहना 'पटिकूलमनसिकार' है।

'धातुमनसिकार' के अन्तर्गत पृथ्वी, जल, अग्नि आदि के प्रति जागरूक रहने की बात है। उसे जानना चाहिए कि इस शरीर में पृथ्वी-धातु, आपोधातु, तेजोधातु, वायोधातु नामक चार भूत रूप हैं तथा उनसे उत्पन्न चौबीस उपादारूप हैं। इन्हीं अठाइस रूपों से उसके भौतिक शरीर का निर्माण हुआ है। ये सभी रूप स्वभावतः अनित्य, दुःख तथा अनात्म हैं। उनमें कहीं भी कुछ नित्य नहीं है, जिसे हम अपना कह सकते हैं अथवा जिसके प्रति ममत्वभाव की स्थापना की जा सकती है। उदाहरणस्वरूप जिस पृथ्वी को हम वाह्यरूप में एक ठोस पदार्थ समझते हैं, वह वस्तुतः वैसी नहीं है। वह वस्तुतः कर्कशता मात्र है। इसी प्रकार स्निग्धता या बन्धनत्व जल है। उष्णता अग्नि है एवं प्रवहमानता अथवा रूपों को संधारण करने का गुणमात्र ही वायु है। इन महाभूतों का कोई ठोस रूप हमें उपलब्ध नहीं होता है। इसलिए इनमें आसक्ति का कोई स्थान ही नहीं रह जाता है। जिस प्रकार ये चार महाभूत मात्र एक गुण विशेष हैं, कोई पदार्थ नहीं है, उसी प्रकार इनसे उत्पन्न उपादारूप भी कोई सत् पदार्थ नहीं हैं। वे भी निर्जीव गुण मात्र है। इस प्रकार से शरीर के भौतिक अंश के प्रति जागरूक रहना धातुमनसिकार है।

'नवसिवथिकपब्ब' में पुनः इस क्रम में शरीर से आसक्ति निवारण की दृष्टि से इसके एक अन्य रूप के प्रति भी सतत् स्मृतिमान रहने को कहा गया है जो मरने के बाद उपलब्ध होता है। कहा जाता है कि मरने के बाद यह शरीर श्मशान में फेंक दिया जाता है। इस प्रकार श्मशान में पड़े उस शरीर के एक दिन या दो दिन बीत जाते हैं। वह शरीर धीरे-धीरे फूलता है। पुनः नीला हो जाता है। उसमें नाना प्रकार के कृमि अपना घर बनाते हैं। काक, गृद्ध आदि जन्तु उसको खाना प्रारम्भ करते हैं[२]। इस प्रकार वह

---

१. अथस्स नवहि सोतेहि, असची सवति सब्बदा।
अक्खिम्हा अक्खिगूथको, कण्णम्हा कण्णगूथको॥
सिंघाणिका च नासातो, मुखेन वमतेकदा।
पित्तं सेम्हं च वमति, कायम्हा सेदजल्लिका॥
अथस्स सुसिरं सीसं, मत्थलुङ्गस्स पूरितं।
सुभतोनंमञ्ञति बालो, अविज्जाय पुरक्खतो॥ सु० नि० २९७।

२. यदा च सो मतो सेति, उद्धुमातो विनीलको।
अपविद्धो सुसानस्मिं, अनपेक्खा होन्ति ञातयो॥
खादन्ति नं सुवाना च, सिगाला च बका किमी।
काका गिज्झा च खादन्ति, ये चञ्ञे सन्ति पाणिनो॥
× × ×
यथा इदं तथा एतं, यथा एतं तथा इदं।
अज्झत्तं च बहिद्धा च, काये छन्दं विराजये॥ सु० नि० २९७-९८।

शरीर क्षत-विक्षत हो जहाँ तहाँ विकीर्ण हो जाता है। कहीं उसका मांस, कहीं अस्थि कहीं अस्थिमिन्जा, कहीं हृदय, कहीं हाथ, कहीं पैर, कहीं दांत बिखरे हुए दिखाई पड़ते हैं। इन्हें इस रूप में देखते हुए विचार करना चाहिए कि यह शरीर इस गति वाला ही है। इसकी यह गति होगी ही। इसका इस रूप में आना अनिवार्य तथा अपरिहार्य है। ऐसा सोचकर शरीर के प्रति जागरूक रहना 'सिवथिकापब्ब' में दर्शाया गया है। इस प्रकार से जागरूक रहने का प्रयोजन यही है कि शरीर के प्रति आसक्ति की वृद्धि न हो क्योंकि आसक्ति ही दुःख की जननी है तथा उसका विनोदन ही सुख है।

कायानुपस्सना के अन्तर्गत इन्हीं छः उपशीर्षों को रखते हुए छः दृष्टियों से सतत जागरूक रहने की शिक्षा दी गई है[1]।

२. **वेदनानुपश्यना**—वेदना का अर्थ अनुभव है। हमारे इन्द्रियों के आपाथ में नाना प्रकार के विषय आते हैं। उन विषयों का इन्द्रियों के साथ सम्पर्क होता है। सम्पर्क के अनन्तर एक अनुभूति होती है। इसे वेदना कहते हैं। यह अनुभूति अनुकूल, प्रतिकूल या उदासीन हो सकती है। इसलिए मुख्यतया वेदना के तीन भेद होते हैं जिन्हें सुखावेदना, दुःखावेदना तथा उपेक्षावेदना कहा जाता है। पुनः सुखावेदना भी मानसिक तथा शारीरिक भेद से दो प्रकार की होती है। इस दृष्टि से मानसिक अनुकूल वेदना को सोमनस्सवेदना तथा शारीरिक अनुकूल वेदना को सुखावेदना कहते हैं। दुःखावेदना के भी शारीरिक एवं मानसिक दो भेद होते हैं। मानसिक प्रतिकूल वेदना को दोमनस्स-वेदना तथा शारीरिक प्रतिकूल वेदना को दुःखवेदना कहते हैं। उपेक्षावेदना केवल मानसिक होती है।

यह स्वभाविक है कि प्रतिक्षण कोई न कोई वेदना उत्पन्न होती ही रहती है। इसलिए जिस क्षण जो वेदना उत्पन्न हो, उस क्षण हम उसके प्रति जागरूक रहें[2]। यदि सुखवेदना उत्पन्न है, तो हम जाने कि सुखवेदना उत्पन्न है। सोमनस्सवेदना के उत्पन्न होने पर भी हम इसी प्रकार जानें कि अभी सोमनस्स वेदना उत्पन्न है। इसी क्रम से

---

१. द्विपादकोयं असुचि, दुग्गन्धो परिहारति ।
नानाकुणपपरिपूरो, विस्सवन्तो ततो ततो ॥
एतादिसेन कायेन, यो मञ्ञे उण्णमेतवे ।
परं व अवजानेय्य, किमञ्ञत्र अदस्सना ॥

सु० नि० २६८।

२. यो दुक्खं दुक्खतो अद्द, दुक्खमद्दक्खि सल्लतो ।
अदुक्खमसुखं सन्तं, अद्दक्खि नं अनिच्चतो ।
स वे सम्मद्दसो भिक्खु, उपसन्तो चरिस्सती ति ॥

सं० नि० ३.१८५।

×××

सुखावेदना ठितिसुखा विपरिणामदुक्खा ति सब्बं वित्थारेतब्बं। सु० वि० ३.७४।

जब दुखवेदना उत्पन्न हो तब हम जानें कि दुखवेदना उत्पन्न है तथा दोमनस्स वेदना के उत्पन्न होने पर भी हम जाग्रत रहें कि दोमनस्स-वेदना उत्पन्न है। जिस क्षण उपेक्षा-वेदना कार्यरत रहती है, इसके प्रति भी हमारी जागरूकता बनी रहनी चाहिए। इस प्रकार जिस क्षण जिस प्रकार की वेदना उत्पन्न हो उस क्षण उस प्रकार की वेदना के प्रति जागरूक रहना 'वेदनानुपस्सना' है। यहाँ द्रष्टव्य है कि इस प्रकार की जागरूकता इसलिए आवश्यक है कि जो चित्त स्वभावतः चंचल है, वह अपने चांचल्य का परित्याग कर एक ही आलम्बन वेदना के प्रति जागरूक रहे। ऐसा होने से विभिन्न विषयों के प्रति उत्पन्न आसक्तियों का निवारण हो जाता है[1]।

३. **चित्तानुपस्सना** :—आलम्बन का चिन्तन करना ही चित्त है। इन्द्रियों के अपाथ में नाना प्रकार के विषय आते हैं। विषयों को जानने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। उस प्रक्रिया द्वारा उन विषयों की सूचना मन तक पहुंचायी जाती है, एवं मन उनके सम्बन्ध में चिन्तन करता है। भूमि भेद से चित्त के चार प्रकार होते हैं, जिन्हें कामावचर चित्त, रूपावचर चित्त, अरूपावचर चित्त तथा लोकोत्तर चित्त कहा जाता है। कुशल, अकुशल भेद की दृष्टि से भी चित्त के कई प्रकार होते हैं। यथा कुशलचित्त एक्कीस, अकुशलचित्त बारह, विपाकचित्त छत्तीस तथा क्रियाचित्त बीस होते हैं। इस दृष्टि से चित्तों की संख्या नवासी होती है[2]। पुनः कुशल चित्त सैंतीस, अकुशल चित्त बारह, विपाक चित्त बावन तथा क्रिया चित्त बीस, की दृष्टि से उनकी संख्या एक सौ एक्कीस हो जाती है[3]।

जीवन के प्रत्येक क्षण में कोई न कोई चित्त उत्पन्न होते रहते हैं। वे चित्त कभी रागसहित, कभी रागरहित, कभी द्वेष सहित, कभी द्वेष रहित, कभी मोह सहित, कभी मोह रहित आदि होते हैं। यहाँ पर वांछनीय यह है कि जिस समय जो चित्त उत्पन्न होता है, उस समय उसके प्रति जागरूक रहा जाय। यदि सरागचित्त उत्पन्न होता है, तो वह ऐसा जानता है कि सरागचित्त उत्पन्न हो रहा है। बीतरागचित्त के उत्पन्न होने पर भी वह जानता है कि बीतरागचित्त उत्पन्न हो रहा है। इसी प्रकार

---

१. याबदेव आणमत्ताय पटिस्सतिमत्ताय अनिस्सितो च बिहरति, न किञ्चि लोके उपादियति। एवं पि खो, भिक्खवे, भिक्खु, वेदनासु विहरति। दी० नि० २.२२२।

२. द्वादसाकुसलानेवं कुसलानेकवीसति।
छत्तिंसेव विपाकानि, क्रियाचित्तानि वीसति॥
चतुपञ्ञासधा कामे, रूपे पन्नरसीरये।
चित्तानि द्वादसारुप्पे, अट्ठधानुत्तरे तथा॥

अ० सं० ८६।

३. झानंगयोगभेदेन, कत्वेकेकं च पंचधा।
वुच्चतानुत्तरं चित्तं, चत्तालीसविधं ति च॥

अ० सं० ६०।

सदोषचित्त के उत्पन्न होने पर वह जानता है कि सदोषचित्त उत्पन्न हो रहा है या वीतदोषचित्त के उत्पन्न होते हुए भी वह जानता है कि वीतदोषचित्त उत्पन्न हो रहा है। जानने का यह क्रम मोहयुक्त चित्त के साथ भी है। जब मोहसहित चित्त उत्पन्न होता है, तब वह यह जानता है कि मोहसहितचित्त उत्पन्न हो रहा है। जब वीतमोहचित्त उत्पन्न होता है, तब भी वह जानता है कि वीतमोहचित्त उत्पन्न हो रहा है। इसी क्रम में संखित्तचित्त, विक्खित्तचित्त, महग्गतचित्त, अमहग्गतचित्त, सउत्तरचित्त, अनुत्तरचित्त, समाहितचित्त, असमाहितचित्त, विमुक्तचित्त, अविमुक्तचित्त आदि का उल्लेख आया है एवं इन समस्त प्रकार के चित्तों के प्रति जागरूक रहने की बात कही गई है। इस प्रसंग में यह ज्ञातव्य है कि लोभसहगत आठ प्रकार के अकुशलचित्त को 'सरागचित्त' कहते हैं[1]। लौकिक कुशल तथा अव्याकृतचित्त को वीतरागचित्त कहते हैं। दो प्रकार के दोमनस्ससहगत अकुशलचित्त को 'सदोषचित्त' कहते हैं तथा लौकिक कुशल एवं अव्याकृत चित्त को 'वीतदोषचित्त' कहते हैं। दो प्रकार के मोहसहगत अकुशलचित्त को समोहचित्त तथा लौकिक कुशल एवं अव्याकृतचित्त को 'वीतमोहचित्त' कहते हैं। रूपावचर तथा अरूपावचर चित्त को 'महग्गतचित्त' कहते हैं[2]। इनका 'अनुत्तरचित्त' भी नाम है। कामावचरचित्त को 'अमहग्गतचित्त' तथा 'सउत्तरचित्त' कहते हैं। जो चित्त रूपसमाधि, तथा अरूपसमाधि से युक्त है, उसे समाहितचित्त कहते हैं तथा इन समाधियों से रहित चित्त को 'असमाहितचित्त कहते हैं। जो चित्त तदंग तथा विक्खम्भन विमुक्तियों से विमुक्त है, उसे विमुक्तचित्त कहते हैं। इनसे रहित चित्त का अविमुक्तचित्त नाम है।

इस प्रकार जो विभिन्न प्रकार के चित्त हैं, वे मानसधरातल पर उत्पन्न होते रहते हैं। जिस क्षण में जो चित्त उत्पन्न होता है, उसके प्रति उस रूप से ही जाग्रत होते हुए जानना 'चित्तानुपस्सना' है। इस प्रकार के सतत् जागरण से अकुशल चित्तों की प्रवृत्ति स्वयंमेव निरुद्ध हो जाती है। केवल कुशल चित्त ही प्रवृत्त होते हैं। साथ ही जो चित्तों के साथ क्लेशों का सम्बन्ध होता है, वह स्वयं ही क्षीण होता जाता है। इस प्रकार की अनासक्ति एवं चित्त की शुद्धि की अभिवृद्धि के लिए ही यह भावना है[3]।

४. **'धम्मानुपस्सना'** :— 'धम्म' शब्द पालि में बहुअर्थक शब्द है। विभिन्न प्रसंगों में इसके विविध प्रकार के अर्थ देखे जाते हैं। प्रकृत प्रसंग में 'धम्म' शब्द का कथन पाँच धर्मों के द्योतन के लिए किया गया है। वे हैं—नीवरण, स्कन्ध, आयतन,

---

१. अट्ठधा लोभमूलानि, दोसमूलानि च द्विधा।
मोहमूलानि च द्वे ति, द्वादसाकुसला सियुं॥

अ० सं० ४२।

२. रूपावचरा, अरूपावचरा कुसलाव्याकता धम्मा—इमे धम्मा महग्गता। ध० सं० २३५।

१. केवलंहि इध चित्तपरिग्गाहिका सति दुक्खपच्चं ति एतं पदयोजनं कत्वा चित्तपरिग्गाहकस्स भिक्खुनो निय्यानमुखं वेदितब्बं। सु० वि० ३,६१।

बोध्यंग तथा चार-आर्य-सत्य। इन्हीं पाँच धर्मों के प्रति जागरूक रहते हुए उन्हें यथार्थरूप में जानना ही 'धम्मानुपस्सना' है। यहाँ द्रष्टव्य है कि भगवान बुद्ध ने इस स्मृति उपस्थान की भावना के क्रम में इन पाँच धर्मों का समावेश क्यों किया ? यद्यपि मूलग्रन्थ तथा अट्ठकथा में इसका स्पष्ट उत्तर नहीं देखा जाता है, पर ऐसा प्रकट होता है कि चित्त शुद्धि की दिशा में जो धर्म बाधक हैं, उनका कथन नीवरण के रूप में करते हुए स्कन्ध एवं आयतन द्वारा सत्व के यथार्थ स्वरूप का अभिदर्शन कराना इष्ट है। इसके उपरान्त ज्ञान प्राप्ति के सात अंग बोध्यांग के रूप में कहे गये हैं। उनके कथन का अभिप्राय सम्यक् दृष्टि के लिए पृष्ठ-भूमि तैयार करना है। इस प्रकार यथार्थ ज्ञान के साधक अंगों की जाग्रत अवस्था से युक्त पृष्ठभूमि में चार आर्य सत्यों का कथन किया गया है। चित्त विशुद्धि के प्रसंग को आधार मानकर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से क्रमशः विकास की जो दिशा है, उसका एक सुव्यवस्थित रूप इन पाँच धर्मों के कथन में देखा जा सकता है।

नीवरण चित्त की एकाग्रता में बाधक अंग है[1]। वांछित विषय पर वे चित्त को एकाग्र होने से रोकते हैं एवं उसमें चांचल्य को ला देते हैं। जबतक नीवरण कार्यरत रहते हैं, तब तक चित्तकी एकाग्रता इष्ट नहीं है। ये संख्या में पाँच हैं, यथा, कामछन्द, व्यापाद, थिनमिद्ध, उद्धच्च-कुकुच्च, तथा विचिकिच्छा। पाँच वाह्य इन्द्रियों द्वारा पाँच प्रकार के इन्द्रिय सुख का उपभोग करने की इच्छा 'कामछन्द' है[2]। दूसरों के विनाश या विविध प्रकार की हानि की चिन्ता 'व्यापाद' है[3]। चित्त एवं चैतसिकों से सम्बद्ध आलस्य का नाम 'थिनमिद्ध' है[4]। चित्त की भ्रान्तता उद्धच्च है। कृत तथा अकृत कर्मों के प्रति व्यर्थ चिन्तन करते रहना 'कुकुच्च' है[5]। बुद्ध धर्म तथा संघ के प्रति संशय को विचिकिच्छा कहते हैं[6]। ये नीवरण चित्त के साथ विद्यमान होकर उसे चंचल बनाये रहते हैं। इसलिए चित्त का नीवरण से युक्त हो, उसको उसी रूप में जानना नीवरण के प्रति जागरूक रहना है।

---

१. ध० सं० २५८।

२. यो कामेसु कामच्छन्दो कामरागो…
इदं वुच्चति कामच्छन्दनीवरणं ॥ ध० सं० २५८।

३. चित्तस्स आघातो पटिघातो……
इदं वुच्चति व्यापाद नीवरण ॥ ध० सं० २५६।

४. या चित्तस्स अकल्लता अकम्मञ्ञता……इदं वुच्चति थिनं। या कायस्स अकल्लता अकम्मञ्ञता……इदं वुच्चति मिद्धं। ध० सं० २५६।

५. चित्तस्स उद्धच्चं अवूपसमो चेतसो विक्खेपो……इदं वुच्चति उद्धच्चं। अकप्पिये कप्पियसञ्ञिता, कप्पिये अकप्पियसञ्ञिता……इदं वुच्चति उद्धच्चकुकुच्चनीवरणं। ध० सं० २५६।

६. सत्थरि कंखति विचिकिच्छति, धम्मे कंखति विचिकिच्छति, संघे कंखति विचिकिच्छति… द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो—इदं वुच्चति विचिकिच्छा। ध० सं० २६०।

पुनः इस प्रसंग में स्कन्धों के प्रति जागरूक रहने का विधान देखा जाता है। स्कन्ध का अर्थ पाँच उपादान स्कन्ध है। जब पाँच स्कन्ध क्लेशों से युक्त रहते हैं, तो उन्हें उपादान स्कन्ध कहते हैं। जब वे क्लेशविरहित रहते हैं, तब उन्हें पंचस्कन्ध कहते हैं। स्कन्धों से क्लेशों का अत्यन्त प्रहाण लोकोत्तरभूमि में होता है। इसलिए यहाँ जब स्कन्धों के प्रति जागरूक रहने की बात है, वहाँ पंचउपादान स्कन्ध अभिप्रेत हैं। वस्तुतः बलवती तृष्णा को उपादान कहते हैं। यस्मात् ये स्कन्ध ही बलवती तृष्णा का कारण बनते हैं, इसलिए वे उपादान स्कन्ध कहलाते हैं। ये पंचस्कन्ध धर्मपुंजमात्र या धर्मराशिमात्र हैं[1]। इनमें आत्मा या आत्मीय नामक कोई पदार्थ नहीं है। इन पाँच स्कन्धों की जो राशि या समुदाय है, उसको ही हम पुरुष, मनुज, मानव आदि कहते हैं।

'पंचस्कन्ध' में पाँच स्कन्ध समवेत हैं। वे हैं—रूपस्कन्ध, वेदनास्कन्ध, संज्ञा-स्कन्ध, संस्कारस्कन्ध, तथा विज्ञानस्कन्ध। रूप अट्ठाइस प्रकार के होते हैं[2]। वेदना पाँच प्रकार की होती है[3]। संज्ञा छ प्रकार की होती है। संस्कार पचास प्रकार के चैतसिकों का नाम है। विज्ञान नवासी या एक सौ एक्कीस प्रकार के चित्त को कहते हैं[4]। यहाँ पंचस्कन्धों के प्रति अनुपस्सना का अर्थ यह है कि इन्हें विशेष रूप से जाना जाय कि यह रूप है, यह रूप का समुदय है तथा यह रूप का निरोध है। इसी रीति से इन पंचस्कन्धो के यथार्थ रूप, उनका समुदय तथा उनके निरोध को सम्यक् रूप से जानना ही स्कन्धों के प्रति जागरूक रहना है। स्कन्धों का उत्पत्तिमान तथा निरोधधर्मा रूप के अभिदर्शन से उनके प्रति आसक्ति समाप्त हो जाती है, एवं आसक्ति की समाप्ति ही इस प्रकार की अनुपस्सना का लक्ष्य है।

---

१. उपादानस्स पच्चयभूता धम्मपुञ्जा धम्मरासयो ति अत्थो। सु० वि० ३.६७।

२. भूतप्पसादविसया, भावो हदयमिच्चपि।
जीविताहाररूपेहि, अट्ठारसविधं तथा॥
परिच्छेदो च विञ्ञत्ति, विकारो लक्खणं ति च।
अनिप्फन्ना दसा चे ति, अट्ठवीसविधं भवे॥
अ० सं० ६.५५।

३. सुखं दुक्खं उपेक्खाति, तिविधा तत्थवेदना।
सोमनस्सं दोमनस्समिति, भेदेन पञ्चधा॥
अ० सं० २२०।

४. चतुपञ्ञासधा कामे, रूपे पन्नरसीरये।
चित्तानि द्वादसारूप्पे, अट्ठधानुत्तरे तथा॥
इत्थेकूननवुतिप्पभेदं पन मानसं।
एकवीससतं वाथ विभजन्ति विचक्खणा॥
अ० सं० ८६।

स्कन्धों के प्रति जागरूक रहने के उपरान्त आयतनों के प्रति जागरूक रहने की बात है। पंचस्कन्ध का ही विस्तार आयतन है[१]। इसमें रूपस्कन्ध को ग्यारह भागों में विभक्त किया गया है एवं अन्य चार स्कन्ध एक स्कन्ध में गृहीत हैं। दुःख का विस्तार करने अर्थ में आयतन है; अथवा बहुत यत्न के बाद जिससे तृष्णा का निवारण किया जा सके, इस अर्थ में आयतन कहा जाता है; अथवा जो जीवन-मरण परम्परा का विस्तार करे इस अर्थ में आयतन है। इन्हीं सब दृष्टियों से आयतन का अर्थ अट्ठकथाओं में देखा जाता है। आयतन संख्या में बारह हैं। यथा चक्षु-आयतन, स्रोत-आयतन, घ्राण-आयतन, जिब्हा-आयतन, काय-आयतन, मन-आयतन, रूप-आयतन, शब्द-आयतन, गन्ध-आयतन, रस-आयतन, स्पष्ट्रव्य-आयतन तथा धर्म-आयतन। इनमें मन आयतन 'नाम' है। धर्म आयतन अंशतः 'नाम' तथा अंशतः 'रूप' है। अवशेष सभी आयतन रूप हैं। इन्हीं आयतनों के प्रति दस संयोजन उत्पन्न होते हैं। चक्षु के द्वारा रूप का आस्वादन करने से काम राग उत्पन्न होता है। अनिष्ट आलम्बन के प्रति क्रोधभाव दर्शाने से प्रतिघ संयोजन उत्पन्न होता है। रूप आलम्बन को नित्यध्रूव आदि समझने से दृष्टि संयोजन उत्पन्न होता है। इस प्रकार ये आयतन विभिन्न प्रकार के संयोजनों के कारण बनते हैं। इनको लेकर ही मनुष्य में अहं तथा मम भाव का उत्पाद होता है। इन आयतनों के प्रति जागरूक रहता हुआ पुरुष चक्षु को भी जानता है, रूप को जानता है, उन दोनों के प्रत्यय से जिस संयोजन की उत्पत्ति होती है, उस क्रम को जानता है। उस उत्पन्न संयोजन की उत्पत्ति तथा प्रहाण को जानता है। उस प्रहीण संयोजन की भविष्य में उत्पत्ति होती है, इसको भी जानता है। इसी क्रम से वह सभी आयतनों को जानते हुए विहार करता है। ऐसा जानने से संयोजनों की उत्पत्ति का कारण जान, उनकी उत्पत्ति न हो इस प्रकार से यत्नवान होता है। इस यत्न के फलस्वरूप भवचक्र में बाँधनेवाले संयोजनों की उत्पत्ति नहीं होती है। आयतनों के प्रति इस क्रम से जागरूक रहना धर्मानुपस्सना है।

इस क्रम में बोध्यांग के प्रति भी जागरूक होने का उल्लेख है। बोधि सम्यक् ज्ञान का नाम है। उसके अंग को बोध्यांग कहते हैं। इनके द्वारा बोधि की प्राप्ति में सुगमता होती है। उन सहायक अंगों का नाम ही बोध्यांग है। ये संख्या में सात हैं[२]। यथा—स्मृति, धर्मविचय, वीर्य, प्रीति, प्रश्रब्धि, समाधि तथा उपेक्षा। सतत् जागरूकता को 'स्मृति' कहते हैं। धर्मों का सम्यक् ज्ञान धर्मविचय है। धर्म से यहाँ कुशल एवं अकुशल धर्म अभिप्रेत हैं। सत्कर्म के प्रति उत्साह को 'वीर्य' कहते हैं। मानस धरातल

---

१. अविसेसतो पन आयतनतो, आयानं तननतो, आयतस्स च नयनतो आयतनं ति वेदितब्बं।
विसु० म० ३३६।

१. सत्त धम्मा धम्मविचयसम्बोज्झंगस्स उपादाय संवत्तन्ति—परिपुच्छकता, वत्थुविसदकिरिया, इन्द्रियसमत्तपटिपादना, दुपञ्ञपुग्गलपरिवज्जना, पञ्ञवन्तपुग्गलसेवना, गंभीरञाणचरियपच्चवेक्खणा तदधिमुत्तता ति।
सु० वि० ३.१०२।

पर इष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए उत्पन्न आनन्द को 'प्रीति' कहते हैं। मन तथा शरीर में व्याप्त शान्ति का नाम 'प्रश्रब्धि' है। इसके विद्यमान रहने से मन तथा शरीर में सर्वत्र शान्ति का प्रवाह विद्यमान रहता है। 'समाधि' कुशल चित्त की एकाग्रता है। न सुख, न दुःख, दोनों से भिन्न मानसिक समस्थिति को 'उपेक्षा' कहते हैं। इन सात बोध्यांगों के प्रति जागरूक हो उन्हें तथारूप जानना धम्मानुपस्सना है। यथा—जब आन्तरिक स्मृति बोध्यांग उसमें है, तो वह जानता है कि मुझमें आन्तरिक स्मृति बोध्यांग है। जब आन्तरिक स्मृति बोध्यांग नहीं है, तब वह जानता है कि आन्तरिक स्मृति बोध्यांग उसमें नहीं है। पुनः अनुत्पन्न स्मृति बोध्यांग की उत्पत्ति होती है, इसको भी वह जानता है तथा उत्पन्न स्मृति बोध्यांग की भावना पूर्ण होती है, इसे भी वह जानता है। इसी क्रम से वह सातो बोध्यांगों के प्रति स्मृतिमान हो जानता है। उनके उत्पत्तिमानता, व्ययधर्मता आदि को जान उनसे अनिश्रित हो विहार करता है तथा लोक में किसी वस्तु के प्रति उपादान नहीं करता है।

इस क्रम में चार आर्य सत्यों के प्रति भी जागरूक होने का भी उल्लेख है। आर्य पुरुषों द्वारा साक्षात्कार किये गये सत्य को आर्य सत्य कहते हैं। वे संख्या में चार हैं। यथा—दुक्ख-आर्य-सत्य, दुख-समुदय-आर्यसत्य, दुक्ख-निरोध-आर्यसत्य तथा दुक्ख-निरोध-गामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य।

मानस धरातल पर उत्पन्न अप्रिय, अमनाप, प्रतिकूल, वेदना दुःख है। इसकी अभिव्यक्ति जीवन में कई प्रकार से देखी जाती है। यथा—जन्म, जरा, मरण, शोक, परिदेव, दुःख, दोमनस्स, उपायास, अप्रिय का संयोग, प्रिय का वियोग, यथा इच्छित वस्तु का लाभ नहीं होना तथा संक्षेप में पाँच उपादान स्कन्ध ही दुःख है[1]। इनमें से प्रत्येक किस प्रकार दुःख है, इसका पूर्ण विवरण ग्रन्थ में देखा जाता है। तद्गत विषय का विश्लेषण करने से यह प्रकट होता है, कि चित्त की असातता, अप्रतिकूलता ही दुःख है। इस दुःख सत्य को यथार्थरूप में जानना धम्मानुपस्सना है[1]।

पुनः दुखसमुदय द्वितीय आर्य सत्य है। यह इस तथ्य को दर्शाता है कि दुःख उत्पन्न होता है। जो तृष्णा है, वह दुःख को उत्पन्न करने वाली है, आसक्ति से युक्त है एवं विभिन्न स्थानों में अनुराग उत्पन्न करती है। यह तृष्णा त्रिविध रूप में प्रवृत्त होती है। यथा—काम तृष्णा, भव तृष्णा, एवं विभव तृष्णा[2]। इन्हीं त्रिविद्ध तृष्णाओं

---

१. जाति पि दुक्खा, जरा पि दुक्खा, व्याधि पि दुक्खो, मरणं पि दुक्खं, अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो, पियेहि विप्पयोगो दुक्खो, यं पिच्छं न लभति तं पि दुक्खं। संखित्तेन पंचुपादानक्खन्धा दुक्खा। म० व० १३।

२. यायं तण्हा पोनोब्भविका नन्दिरागसहगता तत्रतत्राभिनन्दिनी, सेय्यथीदं कामतण्हा, भवतण्हा, विभवतण्हा। म० व० १३।

से लोक में आसक्ति उत्पन्न होती है। रूप, शब्द, गन्ध, रस आदि में तृष्णा आसक्ति उत्पन्न कर दुःख का कारण बनती है। इस प्रकार जो यह दुःख-आर्य-सत्य है, इसको यथारूप जानना धम्मानुपस्सना है।

दुक्खनिरोध आर्य सत्य तीसरा आर्य सत्य है। इसके द्वारा इस तथ्य का प्रतिपादन किया गया है, कि दुःख की परिसमाप्ति सम्भव है। जो दुःख उत्पन्न होता है, वह सकारण उत्पन्न होता है एवं दुःख का जो कारण है, वह तृष्णा है। जब कारण ज्ञात है तब उसके निरोध से दुःख का भी निरोध किया जा सकता है और यह दुःख का निरोध ही निर्वाण है[1]। इसलिए कहा गया है कि वह तृष्णा का अशेष वैराग्य, निरोध, प्रतिनिसर्ग, मुक्ति, अनालय ही दुख निरोध है। जो कुछ भी लोक में प्रियरूप, मनापरूप हैं एवं उनके प्रति जो तृष्णा है, उसके निरोध से दुःख का निरोध सम्भव है। दुःख-निरोध आर्य सत्य को यथार्थतः जानना धम्मानुपस्सना है।

पुनः दुखनिरोधगामिनी प्रतिपदा चतुर्थ आर्य सत्य कहा गया है। यह आष्टांगिक मार्ग का ही नाम है। इसके आठ अंग हैं—सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्मन्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति तथा सम्यक् समाधि[2]।

इनमें चार आर्य सत्यों का यथार्थ ज्ञान सम्यक् दृष्टि है। निष्क्रमण संकल्प, अव्यापाद संकल्प, अविहिंसा संकल्प को सम्यक् संकल्प कहते हैं। सम्यक् वचन के अन्तर्गत चार बातें आती हैं। वे हैं—असत्य कथन से विरति, पैशुण्य से विरति, कठोर वचन से विरति तथा निरर्थक वचन से विरति। सम्यक् कर्मन्त, प्राणातिपात, अदिन्नादान तथा व्यवभिचार से विरति है। इसी प्रकार जीविका के उपार्जन के लिए मिथ्या उपायों का परित्याग सम्यक् आजीविका है। सम्यक् व्यायाम चार प्रकार का होता है—अनुत्पन्न अकुशल धर्मों की अनुत्पत्ति के लिए यत्न अनुत्पन्न अकुशल धर्मों की अनुत्पत्ति के लिए यत्न, उत्पन्न अकुशल धर्मों के प्रहाण के लिए यत्न, अनुत्पन्न कुशल धर्मों की उत्पत्ति के लिए यत्न तथा उत्पन्न कुशल धर्मों की अभिवृद्धि के लिए यत्न। सम्यक् स्मृति सतत् जागरूकता का नाम है। यह चार प्रकार की होती है। यथा कायानुपश्यना, वेदनानुपश्यना, चित्तानुपश्यना तथा धर्मानुपश्यना।

---

१. यो तस्सा येव तण्हाय असेसविरागनिरोधो, चागो पटिनिस्सग्गो, मुत्तिअनालयो।

२. अयमेव अरियो अट्ठंगिको मग्गो...अयं खो सा मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा चक्खुकरणी आणकरणी उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बानाय सम्वत्तति।

म० व० १३।

कुशल चित्त की एकाग्रता समाधि है। चित्त चैतसिकों का सम्यक् प्रकार से एक विषय पर आधान अर्थात् स्थिति ही सम्यक् समाधि है[१]। उत्तरोत्तर विकास की दृष्टि से इसके दो भेद हैं, जिन्हें रूपसमाधि तथा अरूपसमाधि कहा जाता है। रूपसमाधि के अन्तर्गत पाँच ध्यान की अवस्थाएं हैं तथा अरूपसमाधि के भी चार ध्यान की अवस्थाएं हैं। इन विविध ध्यानिक अवस्थाओं को यथारूप जानना धम्मानुपस्सना है।

यहाँ जो नीवरण, स्कन्ध, आयतन, बोध्यांग तथा आर्य सत्य कहे गये हैं. उनका यथार्थ ज्ञान धम्मानुपस्सना कहा जा सकता है। साधक उनके आन्तरिक रूप, वाह्यरूप तथा दोनों रूपों को यथार्थतः जानता है। उनकी उत्पत्ति मानता, व्ययधर्मता तथा दोनों को सम्यक् रूप से जानता है। ऐसा जान वह लोक में अनिश्रित होकर विहार करता है। कहीं भी तृष्णा की अभिवृद्धि नहीं होने देता है। उसकी ऐसी भावना धर्मानुपश्यना है।

भगवान बुद्ध ने स्मृति उपस्थान की चर्चा करते हुए इसके गुणों पर प्रभूत प्रकाश डाला है। ऐसा सबल शब्दों में कहा है कि संसार से पार जाने का यही एक मात्र मार्ग है। इसलिए प्रथमतः उन्होंने यह दर्शाया है कि इसके सात वर्षों के अभ्यास से श्रोतापतिफल तथा सकदागामीफल एवं अनागामी अवस्था की भी प्राप्ति हो सकती है। अभ्यास की अवधि को कम करते हुए उन्होंने उसे सात दिनों तक ला दिया है एवं इस सात दिन के अभ्यास से भी उक्त श्रामण्य फलों की प्राप्ति इष्ट बतलाया है। ऐसा करते हुए उन्होंने पुनः दुहराया है कि सत्त्वों की विशुद्धि के लिए, शोक परिदेव के उपशम के लिए, दुःख आदि की समाप्ति के लिए, ज्ञान की प्राप्ति के लिए तथा निर्वाण के साक्षात्कार के लिए यही एक मात्र मार्ग है[२]।

स्मृति-उपस्थान के अभ्यास के सम्बन्ध में भगवान बुद्ध के उक्त सबल शब्द उनके सिंहनाद हैं। अनवरत अभ्यासजनित अनुभूति पर आधारित हैं। इसे एकमात्र मार्ग कहने में सार्थकता यह है कि इसमें समथ तथा विपश्यना दोनों का युगनद्ध भावना है।

---

२. एकारम्मणे चित्तचेतसिकानं समं सम्मा च आधानं। ठपनं ति वुत्तं होति।
वि० म० ५७।

१. एकायनो अयं, भिक्खवे, मग्गो सत्तानं विसुद्धिया, सोकपरिदेवानं समतिक्कमाय दुक्ख-दोमनस्सानं अत्थङ्गमाय, ञायस्स अधिगमाय, निब्बानस्स सच्छिकिरियाययदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना।
दी० नि० ३.२१७।

× × ×

एसेव मग्गो नत्थञ्ञो, दस्सनस्स विसुद्धिया।
एतञ्हि तुम्हे पटिपज्जथ, मारसेनप्पमदनं॥
एतञ्हि तुम्हे पटिपन्ना, दुक्खस्सन्तं करिस्सथ॥

सु० वि० ३.५८।

चित्त के चांचल्य का निवारण तथा धर्म स्वभाव का यथार्थावबोध एक भावना के क्रम में ही हो जाते हैं तथा उनके फल भी अचिरमेव दृष्टधर्मवेदनीय हैं। इसलिए इस पर दृढ़ता के साथ बल देते हुए जीवन-मरण-परम्परा से पार जाने का एक मात्र मार्ग कहा गया है।

एकायनं जातिखयन्तदस्सी,
मग्गं पजानाति हितानुकम्पी।
एतेन मग्गेन तरिंसु पुब्बे,
तरिस्सन्ति ये च तरन्ति ओघं[1]॥

—महेश तिवारी

१. सं० नि० ४.१६०।

सुमङ्गलविलासिनी

विसय-सूची

१. महावग्ग-अट्ठकथा

पाठा		पिट्ठङ्का
(८)	**सक्कपञ्हसुत्तवण्णना**	३
१.	निदानवण्णना	३
२.	पञ्चसिखगीतगाथावण्णना	७
३.	सक्कूपसङ्कमवण्णना	११
४.	गोपकवत्थुवण्णना	१३
५.	मघमाणववत्थु	१८
६.	पञ्हवेय्याकरणवण्णना	२७
७.	वेदनाकम्मट्ठानवण्णना	३१
८.	महासीवत्थेरवत्थु	३७
९.	पातिमोक्खसंवरवण्णना	४४
१०.	इन्द्रियसंवरवण्णना	४७
११.	सोमनस्सपटिलाभकथावण्णना	५०
(९)	**महासतिपट्ठानसुत्तवण्णना**	५४
१.	उद्देसवारकथावण्णना	५५
२.	कायानुपस्सना	७४
	(क) आनापानपब्बवण्णना	७४
	(ख) इरियापथपब्बवण्णना	७९
	(ग) चतुसम्पजञ्ञपब्बवण्णना	८२
	(घ) पटिकूलमनसिकारपब्बवण्णना	८२
	(ङ) धातुमनसिकारपब्बवण्णना	८३
	(च) नवसिवथिकपब्बवण्णना	८४
३.	वेदनानुपस्सनावण्णना	८७
४.	चित्तानुपस्सनावण्णना	९०
५.	धम्मानुपस्सना	९१
	(क) नीवरणपब्बवण्णना	९१
	(ख) खन्धपब्बवण्णना	
	(ग) आयतनपब्बवण्णना	९८
	(घ) बोज्झङ्गपब्बवण्णना	१००

पाठा	पिट्ठङ्का
(ङ) चतुसच्चपब्बवण्णना	११२
दुक्खसच्चनिद्देसवण्णना	११३
समुदयसच्चनिद्देसवण्णना	११५
निरोधसच्चनिद्देसवण्णना	११७
मग्गसच्चनिद्देसवण्णना	११८
(च) सतिपट्ठानभावनानिसंसवण्णना	१२२
(१०) पायासिराजञ्ञसुत्तवण्णना	**१२४**
१. निदानवण्णना	१२४
२. चन्दिमसूरियउपमावण्णना	१२६
३. चोरादिउपमावण्णना	१२६
४. गूथभारिकादिउपमावण्णना	१२९

२. पाथिकवग्ग-अट्ठकथा

(१) पाथिकसुत्तवण्णना	**१३३**
१. सुनक्खत्तवत्थुवण्णना	१३३
२. कोरक्खत्तियवत्थुवण्णना	१३६
३. अचेलकळारमट्ठकवत्थुवण्णना	१४०
४. अचेलपाथिकपुत्तवत्थुवण्णना	१४१
५. इद्धिपाटिहारियकथावण्णना	१४३
६. अग्गञ्ञपञ्ञत्तिकथावण्णना	१४८
(२) उदुम्बरिकसुत्तवण्णना	**१५०**
१. निग्रोधपरिब्बाजकवत्थुवण्णना	१५०
२. तपोजिगुच्छावादवण्णना	१५३
३. उपक्किलेसवण्णना	१५४
४. परिसुद्धपपटिकपत्तकथावण्णना	१५८
५. परिसुद्धतचप्पत्तादिकथावण्णना	१५८
६. निग्रोधस्स पज्झायनवण्णना	१६०
७. ब्रह्मचरियपरियोसानादिवण्णना	१६१
(३) चक्कवत्तिसुत्तवण्णना	**१६४**
१. अत्तदीपसरणतावण्णना	१६४
दळ्हनेमिचक्कवत्तिराजकथावण्णना	१६७
२. चक्कवत्तिअरियवत्तवण्णना	१६९
३. आयुवण्णादिपरिहानिकथावण्णना	१७१

पाठ		पिट्ठङ्का
४.	दसवस्सायुकसमयवण्णना	१७३
५.	आयुवण्णादिवड्ढनकथावण्णना	१७४
६.	सङ्खराजउप्पत्तिवण्णना	१७५
७.	भिक्खुनो आयुवण्णादिवड्ढनकथावण्णना	१७७
(४)	**अग्गञ्ञसुत्तवण्णना**	**१७९**
१.	वासेट्ठभारद्वाजवण्णना	१८०
२.	चतुवण्णसुद्धिवण्णना	१८३
३.	रसपथविपातुभाववण्णना	१८६
४.	चन्दिमसूरियादिपातुभाववण्णना	१८७
५.	भूमिपप्पटकपातुभावादिवण्णना	१९०
६.	इत्थिपुरिसलिङ्गादिपातुभाववण्णना	१९०
७.	महासम्मतराजवण्णना	१९१
८.	ब्राह्मणमण्डलादिवण्णना	१९२
९.	दुच्चरितादिकथावण्णना	१९३
१०.	बोधिपक्खियभावनावण्णना	१९३
(५)	**सम्पसादनीयसुत्तवण्णना**	**१९५**
१.	सारिपुत्तसीहनादवण्णना	१९५
२.	कुसलधम्मदेसनावण्णना	२०६
३.	आयतनपण्णत्तिदेसनावण्णना	२०९
४.	गब्भावक्कन्तिदेसनावण्णना	२०९
५.	आदेसनविधादेसनावण्णना	२१०
६.	दस्सनसमापत्तिदेसनावण्णना	२१२
७.	पुग्गलपञ्ञत्तिदेसनावण्णना	२१३
८.	पधानदेसनावण्णना	२१६
९.	पटिपदादेसनावण्णना	२१६
१०.	भस्ससमाचारादिवण्णना	२१७
११.	अनुसासनविधादिवण्णना	२१९
१२.	अञ्ञथासत्थुगुणदस्सनादिवण्णना	२२१
१३.	अनुयोगदानप्पकारवण्णना	२२३
१४.	तिपिटकअन्तरधानकथा	२२४
१५.	सासनअन्तरहितवण्णना	२२६
१६.	अच्छरियअब्भुतवण्णना	२३०

पाठा	पिट्ठङ्का

(६)	पासादिकसुत्तवण्णना	२३२
१.	निगंठनाटपुत्तकालङ्किरियवण्णना	२३२
२.	धम्मरतनपूजा	२३५
३.	असम्मासम्बुद्धप्पवेदितधम्मविनयवण्णना	२३६
४.	सम्मासम्बुद्धप्पवेदितधम्मविनयादिवण्णना	२३७
५.	संगायितब्बधम्मादिवण्णना	२३९
६.	पच्चयानुञ्ञातकारणादिवण्णना	२४०
७.	सुखल्लिकानुयोगादिवण्णना	२४०
८.	पञ्हब्याकरणवण्णना	२४१
९.	अब्याकतट्ठानवण्णना	२४३
१०.	पुब्बन्तसहगतदिट्ठिनिस्सयवण्णना	२४४
(७)	लक्खणसुत्तवण्णना	२४६
१.	द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणवण्णना	२४६
२.	सुप्पतिट्ठितपादतालक्खणवण्णना	२४७
३.	पादतलचक्कलक्खणवण्णना	२५१
४.	आयतपण्हितादितिलक्खणवण्णना	२५४
५.	सत्तुस्सदतालक्खणवण्णना	२५५
६.	करचरणादिलक्खणवण्णना	२५६
७.	उस्सङ्खपादादिलक्खणवण्णना	२५८
८.	एणिजङ्घलक्खणवण्णना	२५९
९.	सुखुमच्छविलक्खणवण्णना	२६०
१०.	सुवण्णवण्णलक्खणवण्णना	२६३
११.	कोसोहितवत्थुगुय्हलक्खणवण्णना	२६५
१२.	परिमण्डलादिलक्खणवण्णना	२६५
१३.	सीहपुब्बद्धकायादिलक्खणवण्णना	२६६
१४.	रसग्गसग्गितालक्खणवण्णना	२६७
१५.	अभिनीलनेत्तादिलक्खणवण्णना	२६७
१६.	उण्हीससीसलक्खणवण्णना	२६८
१७.	एकेकलोमतादिलक्खणवण्णना	२६९
१८.	चत्तालीसादिलक्खणवण्णना	२६९
१९.	पहूतजिव्हादिलक्खणवण्णना	२६९
२०.	सीहहनुलक्खणवण्णना	२७०
२१.	समदन्तादिलक्खणवण्णना	२७१

पाठा | पिट्ठङ्का

(८) सिङ्गालसुत्तवण्णना २७२
१. निदानवण्णना २७२
२. छदिसादिवण्णना २७४
३. चतुठानादिवण्णना २७५
४. छअपायमुखादिवण्णना २७६
५. सुरामेरयस्स छ आदीनवादिवण्णना २७७
६. पापमित्तताय छ आदीनवादिवण्णना २७९
७. मित्तपतिरूपकादिवण्णना २८०
८. सुहदमित्तादिवण्णना २८१
९. छद्दिसापटिच्छादनकण्डवण्णना २८४
(९) आटानाटियसुत्तवण्णना २९३
१. पठमभाणवारवण्णना २९३
२. परित्तपरिकम्मकथा ३०३
(१०) सङ्गीतिसुत्तवण्णना ३०६
१. निदानवण्णना ३०६
२. उब्भतकनवसन्धागारवण्णना ३०६
३. भिन्ननिगण्ठवत्थुवण्णना ३१०
४. एककवण्णना ३१०
५. दुकवण्णना ३१३
६. तिकवण्णना ३२२
७. चतुक्कवण्णना ३४७
८. अरियवंसचतुक्कवण्णना ३४९
९. सोतापत्तियङ्गादिचतुक्कवण्णना ३६४
१०. पञ्हब्याकरणादिचतुक्कवण्णना ३६७
११. दक्खिणाविसुद्धादिचतुक्कवण्णना ३६९
१२. अत्तन्तपादिचतुक्कवण्णना ३६९
१३. पञ्चकवण्णना ३७१
१४. अभब्बट्ठानादिपञ्चकवण्णना ३७२
१५. पधानियङ्गपञ्चकवण्णना ३७३
१६. सुद्धावासादिपञ्चकवण्णना ३७४
१७. चेतोखिलपञ्चकवण्णना ३७५
१८. चेतसोविनिबन्धादिपञ्चकवण्णना ३७६
१९. निस्सरणियपञ्चकवण्णना ३७७

पाठा	पिट्ठङ्का

२०.	विमुत्तायतनपञ्चकवण्णना	३७८
२१.	छक्कवण्णना	३७९
२२.	विवादमूलछक्कवण्णना	३८०
२३.	निस्सरणियछक्कवण्णना	३८१
२४.	अनुत्तरियादिछक्कवण्णना	३८२
२५.	सततविहारछक्कवण्णना	३८३
२६.	अभिजातिछक्कवण्णना	३८४
२७.	निब्बेधभागियछक्कवण्णना	३८४
२८.	सत्तकवण्णना	३८५
२९.	अधिकरणसमथसत्तकवण्णना	३८७
३०.	अट्ठकवण्णना	३९१
३१.	नवकवण्णना	३९३
३२.	दसकवण्णना	३९४
३३.	अकुसलकम्मपथदसकवण्णना	३९६
३४.	कुसलकम्मपथदसकवण्णना	३९९
३५.	अरियवासदसकवण्णना	४००
३६.	असेक्खधम्मदसकवण्णना	४०१
३७.	पञ्हसमोधानवण्णना	४०१
(११)	**दसुत्तरसुत्तवण्णना**	**४०३**
१.	निदानवण्णना	४०३
२.	एकधम्मवण्णना	४०५
३.	द्वेधम्मवण्णना	४०८
४.	तयोधम्मवण्णना	४०९
५.	चत्तारोधम्मवण्णना	४०९
६.	पञ्चधम्मवण्णना	४१०
७.	छधम्मवण्णना	४१२
८.	सत्तधम्मवण्णना	४१२
९.	अट्ठधम्मवण्णना	४१२
१०.	नवधम्मवण्णना	४१४
११.	दसधम्मवण्णना	४१५
१२.	निगमनकथा	४१७
१.	**सद्दानुक्कमणिका**	**४१९**
२.	**गाथानुक्कमणिका**	**४६३**

सुद्धिपण्णं

पिट्ठे	पन्तियं	असुद्धपाठो	सुद्धपाठो
८	२३	अङ्कसेन	अङ्कसेन
९	१	तूत्ततोमरं	तुत्ततोमरं
९	१३	कदलिक्खन्धसदिऊरू ति	कदलिक्खन्धसदिसऊरु ति
९	२५	सब्ब	सब्बं
१४	१३	निब्बत्तं ति	निब्बत्तन्ति
१५	२०	अज्झवसि	अज्झावसि
१८	२०	अथङ्गते	अत्थङ्गते
२१	२	अप्पमत्त काले	अप्पमत्तकाले
२५	९	आदिनि	आदीनि
२६	२२	पुब्बसन्निवासेन ।	पुब्बसन्निवासेन
२७	१	जनसक्केन	जरसक्केन
३०	५	सन्धय	सन्धाय
३०	१२	पच्चन्द०	पच्चन्त०
३५	१	उस्सक्कापेतुं	उस्सुक्कापेतुं
३५	२१	०विचारमनस्स०	०विचारसोमनस्स०
३७	२३	पापुणिसुं	पापुणिंसु
४०	५	पेन	तेन
४०	९	परिसम्भिदाहि	पटिसम्भिदाहि
४१	३	केसिय	कोसिय
४३	४	सविचार	सविचारं
४३	१७	अरहत्ते नेव	अरहत्तेनेव
४५	२२	जातरूमपरजतं	जातरूपरजतं
४७	२२	पसासो	पस्सासो
४९	२६	सङ्क्षिणा ति	सङ्क्षिणाति
५०	५	पियाप्पिय	पियाप्पियो
५१	५	परिभुञ्जस्सन्ती ति	परिभुञ्जिस्सन्ती ति
५१	११	सत्तो	सतो
५४	१०	०सुतं	०सुत्तं
५५	११	बद्धरक्खिता	बुद्धरक्खिता
५५	२०	अनुबन्तित्वा	अनुबन्धित्वा
५६	११	अयं ति	अयन्ति
५८	२६	निसुज्झन्ति	विसुज्झन्ति

पिट्ठे	पन्तियं	असुद्धपाठो	सुद्धपाठो
६०	१६	तिंसु भिक्खु	तिंस भिक्खू
६०	१७	कातब्बा	कातब्बो
६१	१	ब्यघमुखे	ब्यग्घमुखे
६१	११	०सच्छिकिरिय	०सच्छिकिरियं
६३	१	पञ्चहि,	पञ्चहि
६५	२	०वाणिजूयमा०	०वाणिजूपमा०
६८	१४	सेट्ठता	सेट्ठत्ता
६९	१०	अङ्गपच्चङ्ग०	अङ्गपच्चङ्ग०
७१	१७	विनायित्वा	विनयित्वा
७३	३	०दोमनस्स	दोमनस्सं
७५	८	०कम्मयता०	०कम्यता०
७५	२८	चित्तो	चितो
७६	२४	तिण्णगहनं	तिणगहनं
७७	२	तथेवासं	तथेवायं
७७	२३	०भत्त०	०मत्त०
७८	१	झानन ङ्गानि	झानङ्गानि
७९	३	०दिट्ठ०	०दिट्ठि०
७९	५	व	वा
७९	७	,आनापानपान०	आनापान०
८३	११	०पत्थानं	०पन्थानं
८५	२	मंसुस्सट्ठानेसु	मंसुस्सन्नट्ठानेसु
८५	८	इवमेव	इममेव
८५	१८	लञ्चित्वा	लुञ्चित्वा
८६	१८	चेतुसम्प०	चतुसम्प०
८७	९	पुन	पन
८८	११	पिय	विय
९९	८	समादियित्था	समादियित्वा
१००	२१	सम्बोज्झङ्ग	सम्बोज्झङ्गं
१०१	१२	अभिकन्तदीसु	अभिकन्तादीसु
१०४	४	समुट्ठानपनन्थं	समुट्ठापनत्थं
१०५	१	रूपठहन्ति	उपट्ठहन्ति
१०५	२५	न,	,न
१११	२१	भन्तमिग्गे	भन्तमिगे
१२०	१	विरमणसञ्ञानं	विरमणसञ्ञानं
१३०	१५	कतब्बं	कत्तब्बं

पिट्ठे	पन्तियं	असुद्धपाठो	सुद्धपाठो
१३३	९	गामिस्सामी ति	गमिस्सामी ति
१३४	११	इमागमन मग्गो	इधागमनमग्गो
१३७	५	मुखेनव	मुखेनेव
१४३	१	एकसेना ति	एकंसेना ति
१४५	९	पथिकपुत्तो	पाथिकपुत्तो
१४८	४	पटिहारियं	पाटिहारियं
१५१	१	आदीनी	आदीनि
१५८	२२	चुतुब्बिधेन	चतुब्बिधेन
१६१	११	ओघे	ओघे
१७२	१७	अधम्मारागो	अधम्मरागो
१७४	०	आयुवणा०	आयुवण्णा०
१८२	२४	सञ्ञात०	सञ्जात०
१८३	७	सुज्झुन्ती ति	सुज्झन्ती ति
१८६	५	सेट्ठेत्थेन	सेट्ठत्थेन
१८६	१०	इत्थभाव मनुस्सत्त	इत्थभावं मनुस्सत्तं
१९२	५	अनमि०	अनभि०
१९३	५	वा सेट्ठा	वासेट्ठा
१९६	२५	निज्जरवत्थुनि	निज्जरवत्थूनि
१९७	२४	गुणनं	गुणानं
२००	१३	से	सो
२०६	१	पसीदि ति	पसीदी ति
२०६	११	०ञाग्ण०	०ञाण०
२०७	१०	सोळसविधे न	सोळसविधेन
२११	१	एतनुपायेन	एतेनुपायेन
२१६	५	वित्थारकथ	वित्थारकथा
२१७	०	मस्स०	भस्स०
२१८	२४	गहिमा	गतिमा
२२०	९	सत्तवसेन	सतबसेन
२२०	२४	सउपारम्भणे	सउपारम्भा।
२२२	८	महापुरिसेना	महापुरिसेन
२२५	८	ओधतरणा	ओघतरणा
२२६	४	तम्बपणिदीपे	तम्बपण्णिदीपे
२३३	१४	अथं	अथ
२३६	५	पञ्हुद्दारं	पञ्हुद्दारं

पिट्ठे	पन्तियं	असुद्धपाठो	सुद्धपाठो
२४१	६	अभुब्बो	अभब्बो
२४२	१३	तं	न
२४३	१७	परियोसित्वा	परियेसित्वा
२४४	२४	इदाहु	उदाहु
२४५	१५	धनविनिब्भोगं	घनविनिब्भोगं
२४७	६	निवुत्तक्खन्धा	निवुत्थक्खन्धा
२५१	९	वसकुसलकम्मपथ०	दसकुसलकम्मपथ०
२५३	२४	वेववचनं	वेवचनं
२६१	८	सासञ्ञफलानि	सामञ्ञफलानि
२६५	१६	इदमेन	इदमेव
२६९	९	अपरि, पुण्णा	अपरिपुण्णा
२७२	१३	०धोसञ्च	०घोसञ्च
२७६	८	मेयं	मेरयं
२७९	१५	अनुस्सेहि	मनुस्सेहि
२८०	१०	पापुणति	पापुणाति
२८१	२	भायस्स	भयस्स
२८२	२१	दन	दस
२८७	२	अन्तवासिकेन	अन्तेवासिकेन
२९४	१६	केवलककप्पो	केवलकप्पो
२९६	१	०नाटननगरे	०नाटनगरे
२९६	१	उद्धता	बद्धत्ता
३०२	९	अथञ्च	अत्थञ्च
३०८	१२	विमुत्तिञाणदस्सम्पन्ना	विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्ना
३०८	२२	०परिवारतो	परिवारितो
३१३	१०	निब्बानञ्ज	निब्बानञ्च
३१५	८	सहधाम्मिके	सहधम्मिके
३१५	१०	अभिवचनं	अधिवचनं
३१६	१६	कर०	कार०
३२०	७	अविखेपो	अविक्खेपो
३२०	१६	पुत्तसोरच्चमेव	वुत्तसोरच्चम्मेव
३३१	२३	मनोदुच्चरितं	मनोदुच्चरितं
३३२	२३	वच्चुप्पन्ने	पच्चुप्पन्ने
३३४	७	अथ	अयं
३३६	२	अनुदहनुट्ठेन	अनुदहनट्ठेन

पिट्ठे	पन्तियं	असुद्धपाठो	सुद्धपाठो
३४५	४	कायमानेय्यं	कायमोनेय्यं
३४६	२०	रूप	रूपं
३४८	२२	उप्पदो	उप्पादो
३५६	११	०गाळे०	०माले०
३५७	२	गामिकभत्तं	गमिकभत्तं
३५७	१५	परिबहिरो	परिबाहिरो
३५७	१७	तमट्ठानसीसेन	कम्मट्ठानसीसेन
३५८	२	बहु, दातुकामो	बहुदातुकामो
३७४	७	तथागतना	तथागतेना ति
३८२	२२	दसवलस्स	दसबलस्स
३९१	११	कुसीतववत्थु	कुसीतवत्थु
३९३	१४	अघातं	आघातं
४०५	९	तेस	तेसं
४१४	१४	०रस्सनं	०दस्सनं
४१६	११	अभिनन्दता	अभिनन्दन्ता

संकेत-सूची

अ० सा०	=	अट्ठसालिनी
अं० नि०	=	अङ्गुत्तरनिकायो
इति०	=	इतिवुत्तकं
उदा०	=	उदानं
खु० पा०	=	खुद्दकपाठो
चु० नि०	=	चुल्लनिद्देसो
चु० व०	=	चुल्लवग्गो
जा०	=	जातकं
थेर० गा०	=	थेरगाथा
दी० नि०	=	दीघनिकायो
ध० प०	=	धम्मपदं
ध० सं०	=	धम्मसङ्गणि
प०	=	पट्ठानं
पटि० म०	=	पटिसम्भिदामग्गो
परि०	=	परिवारपाठो
पाचि०	=	पाचित्तियपालि
पारा०	=	पाराजिकपालि
पे० व०	=	पेतवत्थु
म० नि०	=	मज्झिमनिकायो
म० व०	=	महावग्गो
महा० नि०	=	महानिद्देसो
विभं०	=	विभङ्गो
वि० म०	=	विसुद्धिमग्गो
वि० व०	=	विमानवत्थु
सु० नि०	=	सुत्तनिपातो
सं० नि०	=	संयुत्तनिकायो

पादसंकेता

म०	=	बर्मी
रो०	=	रोमन
सी०	=	सिंहली
स्या०	=	स्यामी

सुमङ्गलविलासिनी

(दीघनिकाय–अट्ठकथा)

ततियो भागो

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

सुमङ्गलविलासिनी

(दीघनिकाय-अट्ठकथा)

(८) सक्कपञ्हसुत्तवण्णना

१. निदानवण्णना

B. 290
R. 697

१. **एवं मे सुतं** ति सक्कपञ्हसुत्तं[१]। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना। **अम्बसण्डा नाम ब्राह्मणगामो** (दी० नि० २.१९७) ति सो किर गामो अम्बसण्डानं अविदूरे निविट्ठो, तस्मा[२] "अम्बसण्डा" त्वेव वुच्चति। **वेदियके पब्बते** ति सो किर पब्बतो पब्बतपादे जातेन मणिवेदिका-सदिसेन नीलवनसण्डेन समन्ता परिक्खित्तो, तस्मा 'वेदियकपब्बतो'[३] 5 त्वेव सङ्ख्यं गतो। **इन्दसालगुहायं** ति पुब्बेपि सा द्विन्नं पब्बतानं अन्तरे गुहा, इन्दसालरुक्खो चस्सा द्वारे, तस्मा 'इन्दसालगुहा' ति सङ्ख्यं गता। अथ नं कुट्टेहि परिक्खिपित्वा द्वारवातपानानि योजेत्वा सुपरिनिट्ठितसुधाकम्ममालाकम्मलताकम्मविचित्तं लेणं कत्वा भगवतो अदंसु। पुरिमवोहारवसेन पन "इन्दसालगुहा" त्वेव नं सञ्जा- 10 नन्ति। तं सन्धाय वुत्तं 'इन्दसालगुहायं' ति।

उस्सुक्कं उदपादी ति धम्मिको उस्साहो उप्पज्जि। ननु च एस अभिण्हदस्सावी भगवतो, न सो देवतासन्निपातो नाम अत्थि, यत्थायं

१. सक्कपञ्हं—री०।   २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. वेदियपब्बतो—रो०।

न आगतपुब्बो। सक्केन सदिसो अप्पमादविहारी देवपुत्तो नाम नत्थि। अथ कस्मा बुद्धदस्सनं अनागतपुब्बस्स विय अस्स उस्साहो उदपादी ति? मरणभयेन सन्तज्जितत्ता। तस्मिं किरस्स समये आयु
R. 698 परिक्खीणो, सो पञ्च पुब्बनिमित्तानि दिस्वा "परिक्खीणो दानि मे
5 आयू" ति अञ्ञासि। येसञ्च देवपुत्तानं मरणनिमित्तानि आविभवन्ति, तेसु ये परित्तकेन पुञ्ञकम्मेन देवलोके निब्बत्ता, ते "कुहिं नु खो इदानि निब्बत्तिस्सामा" ति भयं सन्तासं आपज्जन्ति। ये कतभीरुत्ताना बहुं पुञ्ञं कत्वा निब्बत्ता, ते अत्तना दिन्नदानं रक्खितसीलं भावितभावनञ्च आगम्म "उपरिदेवलोकेसम्पत्तिं अनुभविस्सामा" ति
10 न भायन्ति।

सक्को पन देवराजा पुब्बनिमित्तानि दिस्वा दसयोजनसहस्सं देवनगरं, योजनसहस्सुब्बेधं वेजयन्तं, तियोजनसतिकं सुधम्मदेवसभं, योजनसतुब्बेधं पारिच्छत्तकं[1], सट्ठियोजनिकं पण्डुकम्बलसिलं[2], अड्ढतिया
B. 291 नाटककोटियो द्वीसु देवलोकेसु देवपरिसं, नन्दनवनं, चित्तलतावनं,
15 मिस्सकवनं, फारुसकवनं ति एतं सब्बसम्पत्तिं ओलोकेत्वा "नस्सति वत भो मे अयं सम्पत्ती" ति भयाभिभूतो अहोसि।

ततो "अत्थि नु खो कोचि समणो वा ब्राह्मणो वा लोकपितामहो महाब्रह्मा वा, यो मे हदयनिस्सितं सोकसल्लं समुद्धरित्वा इमं सम्पत्तिं थावरं करेय्या" ति ओलोकेन्तो कञ्चि अदिस्वा पुन अद्दस
20 "मादिसानं सतसहस्सानम्पि उप्पन्नं सोकसल्लं सम्मासम्बुद्धो उद्धरितुं पटिबलो" ति। अथेवं परिवितक्केन्तस्स "तेन खो पन समयेन सक्कस्स देवानमिन्दस्स उस्सुक्कं उदपादि भगवन्तं दस्सनाय"।

कहं नु खो भगवा एतरहि विहरती ति कतरस्मिं जनपदे कतरं नगरं उपनिस्साय कस्स पच्चये परिभुञ्जन्तो कस्स अमतं धम्मं देसय-
25 मानो विहरती ति। **अद्दसा खो** ति अद्दक्खि पटिविज्झि। **मारिसा**

1. महापारिच्छत्तकं—रो०। 2. ०सिलासनं—रो०।

ति पियवचनमेतं, देवतानं पाटियेक्को वोहारो। निद्दुक्खा ति पि वुत्तं होति। कस्मा पनेस देवे आमन्तेसि? सहायत्थाय। पुब्बे किरेस भगवति सळलघरे विहरन्ते एककोव दस्सनाय अगमासि। सत्था "अपरिपक्कं तावस्स ञाणं, कतिपाहं पन अतिक्कमित्वा मयि इन्द-सालगुहायं विहरन्ते पञ्च पुब्बनिमित्तानि दिस्वा मरणभयभीतो 5 द्वीसु देवलोकेसु देवताहि सद्धिं उपसङ्कमित्वा चुद्दस पञ्हे पुच्छित्वा उपेक्खापञ्हविस्सज्जनावसाने असीतिया देवतासहस्सेहि सद्धिं सोता-पत्तिफले पतिट्ठहिस्सती" ति चिन्तेत्वा ओकासं नाकासि। सो "मम R. 699 पुब्बेपि एककस्स गतत्ता सत्थारा ओकासो न कतो, अद्धा मे नत्थि मग्गफलस्स उपनिस्सयो, एकस्स पन उपनिस्सये सति चक्कवाळपरि- 10 यन्तायपि परिसाय भगवा धम्मं देसेतियेव। अवस्सं खो पन द्वीसु देवलोकेसु कस्सचि देवस्स उपनिस्सयो भविस्सति, तं सन्धाय सत्था धम्मं देसेस्सति। तं सुत्वा अहम्पि अत्तनो दोमनस्सं वूपसमेस्सामी" ति चिन्तेत्वा सहायत्थाय आमन्तेसि।

एवं भद्दं तवाति खो देवा तावतिंसा ति एवं होतु महाराज, 15 गच्छाम भगवन्तं दस्सनाय, दुल्लभो बुद्धुप्पादो, भद्दं तव, यो त्वं "पब्बतकीळं नदीकीळं[1] गच्छाम" ति अवत्वा अम्हे एवरूपेसु ठानेसु नियोजेसी ति। **पच्चस्सोसुं** ति तस्स वचनं सिरसा सम्पटिच्छिंसु।

२. **पञ्चसिखं गन्धब्बदेवपुत्तं आमन्तेसी** ति देवे ताव B. 292 आमन्तेतु, इमं कस्मा विसुं आमन्तेसि? ओकासकरणत्थं। एवं 20 किरस्स अहोसि "द्वीसु देवलोकेसु देवता गहेत्वा धुरेन पहरन्तस्स विय सत्थारं उपसङ्कमितुं न युत्तं। अयं पन पञ्चसिखो दसबलस्स उपट्ठाको वल्लभो इच्छितिच्छितक्खणे गन्त्वा पञ्हं पुच्छित्वा धम्मं सुणाति, इमं पुरतो पेसेत्वा ओकासं कारेत्वा इमिना कतोकासे उपसङ्कमित्वा पञ्हं पुच्छिस्सामी" ति ओकासकरणत्थं आमन्तेसि। 25

१. रो० पोत्थके नत्थि।

एवं भद्दं तवा ति सो[1] "एवं महाराज, होतु, भद्दं तव, यो त्वं मं[2] 'एहि, मारिस, उय्यानकीळादीनि वा नटसमज्जादीनि वा दस्सनाय गच्छामा' ति अवत्वा 'बुद्धं पस्सिस्साम, धम्मं सोस्सामा' ति वदसी" ति दळ्हतरं उपत्थम्भेन्तो देवानमिन्दस्स वचनं पटिस्सुत्वा अनुचरियं
5 सहचरणं[3] एकतो गमनं उपागमि।

तत्थ **बेलुवपण्डु** ति बेलुवपक्कं विय पण्डुवण्णं। तस्स किर सोवण्णमयं पोक्खरं, इन्दनीलमयो दण्डो, रजतमया तन्तियो पवाळमया वेठका वीणापत्तकं गावुतं, तन्तिबन्धनट्ठानं[4] गावुतं, उपरि दण्डको गावुतं ति तिगावुतप्पमाणा वीणा। इति सो तं वीणं आदाय
10 समपञ्ञासमुच्छना[5] मुच्छेत्वा अग्गनखेहि पहरित्वा मधुरं गीतस्सरं
R. 700 निच्छारेत्वा सेसदेवे सक्कस्स गमनकालं जानापेन्तो एकमन्तं अट्ठासि। एवं तस्स गीतवादितसञ्ञाय सन्निपतिते देवगणे **अथ खो सक्को देवानमिन्दो...पे०...वेदियके पब्बते पच्चुट्ठासि।**

३. **अतिरिव ओभासजातो** (दी० नि० २.१९८) ति अञ्ञेसु
15 दिवसेसु एकस्सेव देवस्स वा मारस्स वा ब्रह्मुनो वा ओभासेन ओभासजातो होति, तंदिवसं पन द्वीसु देवलोकेसु देवतानं ओभासेन अतिरिव ओभासजातो एकपज्जोतो सहस्सचन्दसूरियउग्गतकालसदिसो अहोसि। **परितो गामेसु मनुस्सा** ति समन्ता गामेसु मनुस्सा। पकतिसायमासकालेयेव किर गाममज्झे दारकेसु कीळन्तेसु तत्थ सक्को
20 अगमासि, तस्मा मनुस्सा पस्सित्वा एवमाहंसु। ननु च[6] मज्झिमयामे
B. 293 देवता भगवन्तं उपसङ्कमन्ति, अयं कस्मा पठमयामस्सापि पुरिमभागेयेव आगतो ति? मरणभयेनेव तज्जितत्ता। **किंसु नामा** ति किं नाम भो एतं, को नु खो अज्ज महेसक्खो देवो वा ब्रह्मा वा भगवन्तं पञ्हं पुच्छितुं धम्मं सोतुं उपसङ्कमन्तो, कथंसु नाम भो भगवा पञ्हं

१. सो पि—रो०।
२. रो० पोत्थके नत्थि।
३. सहचरियं—रो०।
४. तन्तिकन्धनट्ठानं—रो०।
५. ०मुच्छनाहि—रो०।
६. रो० पोत्थके नत्थि।

विस्सज्जेस्सति धम्मं देसेस्सति, लाभा अम्हाकं, येसं नो एवं देवतानं कङ्खाविनोदको सत्था अविदूरे विहारे वसति, ये लभाम थालकभिक्खम्पि कटच्छुभिक्खम्पि दातुं ति संविग्गा लोमहट्ठजाता उद्धग्गलोमा हुत्वा दसनखसमोधानसमुज्जलं अञ्जलिं सिरस्मिं[1] पतिट्ठपेत्वा नमस्समाना अट्ठंसु । 5

४. **दुरुपसङ्कमा** ति दुपयिरुपासिया । अहं सरागो सदोसो समोहो, सत्था वीतरागो वीतदोसो वीतमोहो, तस्मा दुपयिरुपासिया तथागता मादिसेन । **झायी** ति लक्खणूपनिज्झानेन च आरम्मणूपनिज्झानेन च झायी । तस्मिं येव झाने रता ति **झानरता** । तदन्तरं **पटिसल्लीना** ति तदन्तरं पटिसल्लीना सम्पति पटिसल्लीना वा । 10 तस्मा न केवलं झायी झानरता ति दुरुपसङ्कमा, इदानिमेव पटिसल्लीनातिपि दुरुपसङ्कमा । **पसादेय्यासी** ति आराधेय्यासि, ओकासं मे कारेत्वा ददेय्यासी ति वदति । **बेलुवपण्डुवीणं आदाया** ति ननु पुब्बेव आदिन्ना ति ? आम, आदिन्ना । मग्गगमनवसेन पन अंसकूटे R 701 लग्गिता, इदानि नं वामहत्थे ठपेत्वा वादनसज्जं कत्वा आदियि । 15 तेन वुत्तं "आदाया" ति ।

२. पञ्चसिखगीतगाथावण्णना

५. **अस्सावेसी** ति सावेसि । **बुद्धूपसञ्हिता** ति बुद्धं आरब्भ बुद्धं निस्सयं कत्वा पवत्ता ति अत्थो । सेसपदेसुपि एसेव नयो ।

वन्दे ते पितरं भद्दे, तिम्बरुं सूरियवच्छसे ति एत्थ सूरियवच्छसा[2] ति सूरियसमानसरीरा । तस्सा किर देवधीताय पादन्ततो 20 रस्मि उट्ठहित्वा केसन्तं आरोहति, तस्मा बालसूरियमण्डलसदिसा खायति, इति नं "सूरियवच्छसा" ति सञ्जानन्ति । तं सन्धायाह— "भद्दे, सूरियवच्छसे, तव पितरं तिम्बरुं गन्धब्बदेवराजानं वन्दामी"

१. सिरसि—रो० । २. सूरियवच्चसा—रो० ।

B. 294 ति । **येन जातासि कल्याणी** ति येन कारणभूतेन यं तिम्बरुं देवराजानं निस्साय त्वं जाता, कल्याणी सब्बङ्गसोभना[1] **आनन्दजननी ममा** ति मय्हं पीतिसोमनस्सवड्ढनी ।

वातोव सेदतं कन्तो ति यथा सञ्जातसेदानं सेदहरणत्थं वातो 5 इट्ठो होति कन्तो मनापो, एवं ति अत्थो । **पानीयं व पिपासतो** ति पातुमिच्छन्तस्स पिपासतो पिपासाभिभूतस्सा । **अङ्गीरसी** ति अङ्गे रस्मियो अस्सा ति अङ्गीरसी । तमेव आरब्भ आलपन्तो वदति । **धम्मो अरहतामिवा ति** अरहन्तानं नवलोकुत्तर धम्मो विय ।

जिघच्छतो ति भुञ्जितुकामस्स खुदाभिभूतस्स । **जलन्तमिव** 10 **वारिना** ति यथा कोचि जलन्तं जातवेदं उदककुम्भेन निब्बापेय्य, एवं तव कारणा उप्पन्नं मम कामरागपरिळाहं निब्बापेही ति वदति ।

युत्तं किञ्जक्खरेणुना (दी० नि० २.१९९) ति पदुमकेसररेणुना युत्तं । **नागो धम्माभितत्तोवा** ति धम्माभितत्तहत्थी विय । **ओगाहे ते थनूदरं** ति यथा सो नागो पोक्खरणिं ओगाहित्वा पिवित्वा 15 अग्गसोण्डमत्तं पञ्ञायमानं कत्वा निमुग्गो सुखं सातं विन्दति, एवं R. 702 कदा नु खो ते थनूदरं थनवेमज्झं उदरञ्च ओतरित्वा अहं सुखं सातं पटिलभिस्सामी ति वदति ।

"अच्चङ्कुसोव नागोव, जितं मे तुत्ततोमरं ।
कारणं नप्पजानामि, सम्मत्तो लक्खणूरुया[2]" ति ॥

20 एत्थ[3] तुत्तं वुच्चति कण्णमूले विज्झनअयदण्डको । **तोमरं** ति पादादीसु विज्झनदण्डतोमरं । **अङ्कुसो** ति मत्थके विज्झनकुटिलकण्टको । यो च नागो पभिन्नमत्तो[4] अच्चङ्कुसो होति, अङ्कुसं अतीतो; अङ्कुसेन विज्झियमानोपि वसं न गच्छति । सो "जितं मया तुत्ततोमरं, यो अहं अङ्कुसस्सपि वसं न गच्छामी" ति मददप्पेन किञ्चि

१. ०सोभने—रो० । २. लक्खणूरसा—रो० ।
३. रो० पोत्थके नत्थि । ४. पभिन्नमदत्ता—रो० ।

कारणं न बुज्झति। यथा सो अच्चङ्कुसो नागो "जितं मे तुत्ततोमरं" ति किञ्चि कारणं नप्पजानाति, एवं अहम्पि लक्खणसम्पन्नऊरुताय लक्खणूरुया सम्मत्तो मत्तो पमत्तो उम्मत्तो विय किञ्चि कारणं नप्पजानामी ति वदति। अथवा अच्चङ्कुसोव नागो अहम्पि सम्मत्तो लक्खणूरुया किञ्चि ततो विरागकारणं नप्पजानामि। कस्मा? 5 B. 295 यस्मा तेन नागेन विय जितं मे तुत्ततोमरं, न कस्सचि[1] वदतो वचनं आदियामि।

तयि गेधितचित्तोस्मी ति भद्दे लक्खणूरुतयि बद्धचित्तोस्मि[2]। **गेधितचित्तो** ति वा गेधं अज्झुपेतचित्तो। **चित्तं विपरिणामितं** ति पकतिं जहित्वा ठितं। **पटिगन्तुं न सक्कोमी** ति निवत्तितुं न 10 सक्कोमि। **बङ्कघस्तोव अम्बुजो** ति बळिसं गिलित्वा ठितमच्छो विय। "घसो" तिपि पाठो, अयमेवत्थो।

वामूरू ति वामाकारेन सण्ठितऊरु, कदलिक्खन्धसदिऊरू ति वा अत्थो। **सजा** ति आलिङ्ग। **मन्दलोचने** ति इत्थियो न तिखिणं निज्झायन्ति मन्दं आलोचेन्ति ओलोकेन्ति, तस्मा "मन्दलोचना" ति 15 वुच्चन्ति। **पलिस्सजा** ति सब्बतोभागेन आलिङ्ग। **एतं मे अभिपत्थितं** ति एतं मया अभिण्हं पत्थितं।

अप्पको वत मे सन्तो ति पकतियाव मन्दो समानो। **वेल्लितकेसिया** ति केसा मुञ्चित्वा पिट्ठियं विस्सट्ठकाले[3] सप्पो विय वेल्लन्ता R. 703 गच्छन्ता[4] अस्सा ति वेल्लितकेसी, तस्सा वेल्लितकेसिया। **अनेकभावो** 20 **समुप्पादी** ति अनेकविधो जातो। **अनेकभागो** ति वा पाठो। **अरहन्तेव दक्खिणा** ति अरहन्तम्हि दिन्नदानं विय नानाप्पकारतो पभिन्नो।

यं मे अत्थि कतं पुञ्ञं ति यं मया कतं पुञ्ञमत्थि। **अरहन्तेसु तादिसू** ति तादिलक्खणप्पत्तेसु अरहन्तेसु। **तया सद्धिं विपच्चतं** ति सब्बं तया सद्धिमेव विपाकं देतु। 25

१. ०किञ्चि—रो०। २. पटिबद्धचित्तो—रो०।
३. ० पन—रो०। ४. गच्छन्ती ति तं अस्सा ति—रो०।

एकोदी ति एकीभावं गतो। **निपको सतो** ति नेपक्कं वुच्चति पञ्ञा, ताय समन्नागतो ति निपको। सतिया समन्नागतत्ता सतो। **अमतं मुनि जिगीसानो** ति यथा सो बुद्धमुनि अमतं निब्बानं जिगीसति परियेसति, एवं तं अहं सूरियवच्छसे जिगीसामि परियेसामि। यथा 5 वा सो अमतं जिगीसानो एसन्तो गवेसन्तो विचरति, एवाहं तं एसन्तो गवेसन्तो[1] विचरामी ति पि अत्थो।

यथापि मुनि नन्देय्य, पत्वा सम्बोधिमुत्तमं ति यथा बुद्धमुनि बोधिपल्लङ्के निसिन्नो सब्बञ्ञुतञ्ञाणं पत्वा नन्देय्य तोसेय्य[2]। **एवं** B. 296 **नन्देय्यं** ति एवमेव अहम्पि तया मिस्सीभावं गतो नन्देय्य, 10 पीतिसोमनस्सजातो भवेय्यं ति वदति। **ताहं भद्दे वरेय्याहे** ति अहे ति आमन्तनं, अपो[3] भद्दे सूरियवच्छसे, सक्केन[4] देवानमिन्देन "किं द्वीसु देवलोकेसु देवरज्जं गण्हसि, सूरियवच्छसं" ति, एवं वरे दिन्ने देवरज्जं पहाय "सूरियवच्छसं गण्हामी" ति एवं तं अहं वरेय्यं इच्छेय्यं गण्हेय्यं ति अत्थो।

15 **सालं व न चिरं फुल्लं** (दी० नि० २.१९९) ति तव पितु नगर-द्वारे नचिरं पुप्फितो सालो अत्थि। सो अतिविय मनोहरो। तं नचिरं फुल्लसालं विय। **पितरं ते सुमेधसे** ति अतिसस्सिरीकं[5] तव पितरं **वन्दमानो नमस्सामि** नमो करोमि। **यस्साऐतादिसी पजा** ति यस्स आसि एतादिसी धीता।

R. 704 20 ६. **संसन्दती** ति कस्मा गीतसद्दस्स चेव वीणासद्दस्स च वण्णं कथेसि[6]? किं तत्थ भगवतो सारागो अत्थी ति? नत्थि। छळङ्गु-पेक्खाय उपेक्खयो भगवा एतादिसेसु ठानेसु, केवलं इट्ठानिट्ठं जानाति, न तत्थ रज्जति। वुत्तम्पि चेतं "संविज्जति खो, आवुसो, भगवतो चक्खु[7], पस्सति भगवा चक्खुना रूपं, छन्दरागो भगवतो नत्थि,

१. रो० पोत्थके नत्थि।
२. तुसेय्य—रो०।
३. अहे—रो०।
४. किं०—रो०।
५. अतिविय०—रो०।
६. कथेति—रो०।
७. चक्खुं—रो०।

सुविमुत्तचित्तो भगवा। संविज्जति खो, आवुसो, भगवतो सोतं'' ति (सं० नि० ३.१४९) आदि। सचे पन वण्णं न कथेय्य, पञ्चसिखो "ओकासो मे कतो" ति न जानेय्य। अथ सक्को "भगवता पञ्चसिखस्स ओकासो न कतो" ति देवता गहेत्वा ततोव पटिनिवत्तेय्य, ततो महाजानियो[1] भवेय्य। वण्णे पन कथिते "कतो भगवता पञ्चसिखस्स 5 ओकासो'' ति देवताहि सद्धिं उपसङ्कमित्वा पञ्हं पुच्छित्वा विस्सज्जनावसाने असीतिया देवतासहस्सेहि सद्धिं सोतापत्तिफले पतिट्ठहिस्सती ति ञत्वा वण्णं कथेसि।

तत्थ **कदा संयूळ्हा** (दी० नि० २.२००) ति कदा गन्थिता पिण्डिता। **तेन खो पनाहं भन्ते समयेना** ति तेन समयेन तस्मिं 10 तुम्हाकं सम्बोधिप्पत्तितो पट्ठाय अट्ठमे सत्ताहे। **भद्दा नाम सूरियवच्छसा** ति नामतो भद्दा सरीरसम्पत्तिया सूरियवच्छसा। **भगिनी** ति वोहारवचनमेतं, देवधीता ति अत्थो। **परकामिनी** ति परं कामेति अभिकङ्खति।

उपनच्चन्तिया ति नच्चमानाय। सा किर एकस्मिं समये 15 B. 297 चातुमहाराजिकदेवेहि सद्धिं सक्कस्स देवराजस्स नच्चं दस्सनत्थाय गता, तस्मिं च खणे सक्को तथागतस्स अट्ठ यथाभुच्चे गुणे पयिरुदाहासि। एवं तस्मिं दिवसे गन्त्वा नच्चन्ती अस्सोसि।

३. सक्कूपसङ्कमवण्णना

७. **पटिसम्मोदती** (दी० नि० २.२००) ति "संसन्दति खो ते'' तिआदीनि वदन्तो भगवा सम्मोदति, पञ्चसिखो पटिसम्मोदति। 20 गाथा च भासन्तो पञ्चसिखो सम्मोदति, भगवा पटिसम्मोदति। **आमन्तेसी** ति जानापेसि। तस्स किरेवं अहोसि "अयं पञ्चसिखो मया मम[2] कम्मेन पेसितो अत्तनो कम्मं करोति। एवरूपस्स सत्थु सन्तिके

१. महाजातिनको—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

ठत्वा कामगुणूपसञ्हितं अननुच्छविकं कथेसि। नटा नाम निल्लज्जा होन्ति, कथेन्तो विप्पकारम्पि दस्सेय्य। हन्द नं मम कम्मं जानापेमी" ति चिन्तेत्वा आमन्तेसि।

R. 705 एवञ्च पन तथागता ति धम्मसङ्गाहकत्थेरेहि ठपितवचनं। 5 अभिवदन्ती अभिवादनसम्पटिच्छनेन वड्ढितवचनेन[1] वदन्ति। अभिवदितो ति वड्ढितवचनेन वुत्तो।

८. उरुन्दा समपादी (दी० नि० २.२०१) ति महन्ता विवटा अहोसि, अन्धकारो गुहायं अन्तरधायि। आलोको उदपादी ति यो पकतिया गुहायं अन्धकारो, सो अन्तरहितो, आलोको जातो। 10 सब्बमेतं धम्मसङ्गाहकानं वचनं।

९. चिरपटिकाहं भन्ते ति चिरतो अहं, चिरतो पट्ठायाहं दस्सनकामो ति अत्थो। केहिचि केहिचि किच्चकरणीयेही ति देवानं धीता च पुत्ता च अङ्के निब्बत्तन्ति, पादपरिचारिका इत्थियो सयने निब्बत्तन्ति, तासं मण्डनपसाधनकारिका देवता सयनं परिवारेत्वा निब्बत्तन्ति, 15 वेय्यावच्चकरा अन्तोविमाने निब्बत्तन्ति, एतेसं अत्थाय अड्डकरणं[2] नाम नत्थि। ये पन सीमन्तरे निब्बत्तन्ति, ते "तव सन्तका[3], मम सन्तका" ति निच्छेतुं असक्कोन्ता अड्डं करोन्ति, सक्कं देवराजानं पुच्छन्ति। सो "यस्स विमानं आसन्नतरं, तस्स B. 298 सन्तका" ति वदति। सचे द्वेपि समट्ठाने होन्ति, "यस्स विमानं 20 ओलोकेन्ती[4] ठिता, तस्स सन्तका" ति वदति। सचे एकम्पि न ओलोकेति, तं उभिन्नं कलहुपच्छेदनत्थं अत्तनो सन्तकं करोति। कीळादीनिपि किच्चानि करणीयानेव। एवरूपानि तानि करणीयानि सन्धाय "केहिचि केहिचि किच्चकरणीयेही" ति आह।

सलळागारके ति सलळमयगन्धकुटियं। अञ्ञतरेन समाधिना 25 ति तदा किर भगवा सक्कस्सेव अपरिपाककतं ञाणं विदित्वा ओकासं

१. वन्दितवचनेन—रो०। २. अट्टकरणं—रो०।
३. सन्तिका—रो०। ४. ओलोकेन्तो—रो०।

अकारेतुकामो[१] फलसमापत्तिविहारेन निसीदि। तं एस अजानन्तो "अञ्ञतरेन समाधिना" ति आह। भूजति च नाम्मा ति भूजती ति तस्सा नामं। परिचारिका ति पादपरिचारिका देवधीता। सा किर द्वे फलानि पत्ता। तेनस्सा देवलोके अभिरतियेव नत्थि। निच्चं भगवतो उपट्ठानं आगन्त्वा अञ्जलिं सिरसि ठपेत्वा भगवन्तं नमस्समाना 5 तिट्ठति। नेमिसद्देन तम्हा समाधिम्हा वुट्ठितो ति "समापन्नो सद्दं सुणाती" ति नो[२] वत रे[२] वत्तब्बे[३]। ननु भगवा सक्कस्स देवानमिन्दस्स R. 706 "अपिचाहं आयस्मतो चक्कनेमिसद्देन तम्हा समाधिम्हा वुट्ठितो" ति भणती ति। तिट्ठतु नेमिसद्दो, समापन्नो नाम अन्तोसमापत्तियं कण्ण-मूले धममानस्स सङ्खयुगळस्सा पि असनिसन्निपातस्सा पि सद्दं न 10 सुणाति। भगवा पन "एत्तकं कालं सक्कस्स ओकासं न करिस्सामी" ति परिच्छिन्दित्वा कालवसेन फलसमापत्तिं समापन्नो। सक्को "न दानि मे सत्था ओकासं करोती" ति गन्धकुटिं पदक्खिणं कत्वा रथं निवत्तेत्वा देवलोकाभिमुखं पेसेसि। गन्धकुटिपरिवेणं रथसद्देन समोहितं[४] पञ्चङ्गिकतूरियं विय अहोसि। भगवता यथापरिच्छिन्नकालवसेन 15 समापत्तितो वुट्ठितस्स रथसद्देनेव पठमावज्जनं उप्पज्जि, तस्मा एवमाह।

४. गोपकवत्थुवण्णना

१०. सीलेसु परिपूरकारिनी (दी० नि० २.२०२) ति पञ्चसु सीलेसु परिपूरकारिनी। इत्थित्तं विराजेत्वा ति इत्थित्तं नाम अलं, न हि इत्थित्ते ठत्वा चक्कवत्तिसिरिं, न सक्कमारब्रह्मसिरियो पच्चनु- 20 भवितुं, न पच्चेकबोधिं, न सम्मासम्बोधिं गन्तुं सक्का ति एवं इत्थित्तं विराजति नाम। महन्तमिदं पुरिसत्तं नाम सेट्ठं उत्तमं, एत्थ ठत्वा सक्का एता सम्पत्तियो पापुणितुं ति एवं पन पुरिसत्तं भावेति नाम। सापि एवमकासि। तेन वुत्तं—"इत्थित्तं विराजेत्वा पुरिसत्तं भावेत्वा" B. 299

१. अकातुकामो—रो०। २-२. नेमी ति—रो०।
३. वत्तब्बो—रो०। ४. समाहतं—रो०।

ति। हीनं गन्धब्बकायं ति हीनं लामकं गन्धब्बनिकायं। कस्मा पन ते परिसुद्धसीला तत्थ उप्पन्ना ति? पुब्बनिकन्तिया। पुब्बेपि किर नेसं एतदेव वसितट्ठानं, तस्मा निकन्तिवसेन तत्थ उप्पन्ना। उपट्ठानं ति उपट्ठानसालं। पारिचारियं ति परिचरणभावं। गीतवादितेहि
5 अम्हे परिचरिस्सामा ति आगच्छन्ति।

पटिचोदेसी ति सारेसि। सो किर ते दिस्वा "इमे देवपुत्ता अतिविय विरोचेन्ति अतिवण्णवन्तो, किं नु खो कम्मं कत्वा आगता" ति आवज्जन्तो "भिक्खू अहेसुं" ति अद्दस। ततो "भिक्खू होन्तु, सीलेसु परिपूरकारिनो" ति उपधारेन्तो "परिपूरकारिनो" ति अद्दस।
R. 707 10 "परिपूरकारिनो होन्तु, अञ्ञो गुणो अत्थि नत्थी" ति उपधारेन्तो "झानलाभिनो" ति अद्दस। "झानलाभिनो होन्तु, कुहिं वासिका[1]" ति उपधारेन्तो "मय्हं व[2] कुलूपका" ति अद्दस। परिसुद्धसीला नाम छसु देवलोकेसु यत्थिच्छन्ति, तत्थ निब्बत्तं ति। इमे पन[3] उपरिदेवलोके च न निब्बत्ता। झानलाभिनो नाम ब्रह्मलोके निब्बत्तन्ति, इमे च
15 ब्रह्मलोके न निब्बत्ता। अहं पन एतेसं ओवादे ठत्वा देवलोकसामिकस्स सक्कस्स देवानमिन्दस्स पल्लङ्के पुत्तो हुत्वा निब्बत्तो, इमे हीने गन्धब्बकाये निब्बत्ता। अट्ठिवेधपुग्गला[4] नामेते वट्टेत्वा वट्टेत्वा गाळ्हं विज्झितब्बा ति चिन्तेत्वा कुतोमुखा नामा तिआदीहि वचनेहि पटिचोदेसि।

20 तत्थ कुतोमुखा ति भगवति अभिमुखे धम्मं देसेन्ते तुम्हे कुतोमुखा किं अञ्ञा विहिता इतो चितो च ओलोकयमाना उदाहु निद्दायमाना? दुद्दिट्ठरूपं ति दुद्दिट्ठसभावं दट्ठुं अयुत्तं। सहधम्मिके ति एकस्स सत्थु सासने समाचिण्णधम्मे कतपुञ्ञे। तेसं भन्ते ति तेसं गोपकेन देवपुत्तेन एवं वत्वा पुन "अहो तुम्हे निल्लज्जा अहिरिका" ति
25 आदीहि वचनेहि पटिचोदितानं द्वे देवा दिट्ठेव धम्मे सतिं पटिलभिंसु।

१. वासिनो—रो०। २. ते—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि। ४. पटिवेधपुग्गला—रो०।

कायं ब्रह्मपुरोहितं ति ते किर चिन्तयिंसु—"नटेहि नाम नच्चन्तेहि गायन्तेहि वादेन्तेहि आगन्त्वा दायो नाम लभितब्बो अस्स। अयं पन अम्हाकं दिट्ठकालतो पट्ठाय पक्खित्तलोणं उद्धनं विय तटतटायतेव, किं नु खो इदं" ति आवज्जन्ता अत्तनो समणभावं परिसुद्धसीलतं झानलाभितं तस्सेव कुलूपकभावञ्च दिस्वा "परिसुद्धसीला नाम छसु देवलोकेसु यथारुचिते ठाने निब्बत्तन्ति, झानलाभिनो ब्रह्मलोके। मयं उपरिदेवलोकेपि ब्रह्मलोकेपि निब्बत्तितुं नासक्खिम्ह। अम्हाकं ओवादे ठत्वा अयं इत्थिका उपरि निब्बत्ता। मयं भिक्खू समाना भगवति ब्रह्मचरियं चरित्वा हीने गन्धब्बकाये निब्बत्ता। तेन नो अयं एवं निग्गण्हाती" ति ञत्वा तस्स कथं सुणन्तायेव तेसु द्वे जना पठमज्झानसतिं पटिलभित्वा झानं पादकं कत्वा सङ्खारे सम्मसन्ता अनागामिफलेयेव पतिट्ठहिंसु। अथ नेसं सो परित्तो कामावचरत्तभावो धारेतुं नासक्खि। तस्मा तावदेव चवित्वा ब्रह्मपुरोहितेसु निब्बत्ता। सो च नेसं कायो तत्थ ठितानंयेव निब्बत्तो। तेन वुत्तं—"तेसं, भन्ते, गोपकेन देवपुत्तेन पटिचोदितानं द्वे देवा दिट्ठेव धम्मे सतिं पटिलभिंसु कायं ब्रह्मपुरोहितं" ति।

B. 300 · 5 · 10 · R, 708 · 15

तत्थ **दिट्ठेव धम्मे** ति तस्मिं येव अत्तभावे झानसतिं पटिलभिंसु। तत्थेव ठत्वा चुता पन कायं ब्रह्मपुरोहितं ब्रह्मपुरोहितसरीरं पटिलभिंसु ति एवमत्थो दट्ठब्बो। **एको पन देवो** ति एको देवपुत्तो निकन्तिं छिन्दितुं असक्कोन्तो कामे अज्झवसि, तत्थेव आवासिको अहोसि। 20

११. **संघञ्चुपट्ठासिं** (दी० नि० २.२०३) ति संघञ्च उपट्ठासिं। **सुधम्मताया** ति धम्मस्स सुन्दरभावेन। **तिदिवूपपन्नो** ति तिदिवे तिदसपुरे उपपन्नो। **गन्धब्बकायूपगते वासीने** गन्धब्बकायं आवासिको हुत्वा उपगते। **ये च मयं पुब्बे मनुस्सभूता** ति ये पुब्बे मनुस्सभूता मयं अन्नेन पानेन उपट्ठहिम्हा ति इमिना सद्धिं योजेत्वा अत्थो वेदितब्बो। 25

पादूपसङ्गय्हा ति पादे उपसङ्गय्ह पादधोवनपादमक्खनानुप्पदानेन पूजेत्वा चेव वन्दित्वा च। **सके निवेसने** ति अत्तनो घरे। इमस्सापि पदस्स उपट्ठहिम्हा ति इमिनाव सम्बन्धो।

पच्चत्तं वेदितब्बो ति अत्तनाव वेदितब्बो। **अरियान सुभासितानी** ति तुम्हेहि वुच्चमानानि बुद्धानं भगवन्तानं[1] सुभासितानि।

B. 301 **तुम्हे पन सेट्ठमुपासमाना** ति उत्तमं बुद्धं भगवन्तं उपासमाना अनुत्तरे बुद्धसासने वा। **ब्रह्मचरियं** ति सेट्ठचरियं। **भवतूपपत्ती** ति भवन्तेनं उपपत्ति।

अगारे वसतो मय्हं ति घरमज्झे वसन्तस्स मय्हं।

स्वज्जा ति सो अज्ज। **गोतमसावकेना** ति इध गोपको गोतमसावको ति वुत्तो। **समेच्चा** ति समागन्त्वा।

R. 709 **हन्द वियायाम ब्यायामा** ति हन्द उय्यमाम ब्यायमाम। **मा नो मयं परपेस्सा अहुम्हा** ति नो ति निपातमत्तं, मा मयं परस्स पेसनकारकाव अहुम्हा ति अत्थो। **गोतमसासनानो** ति इध पकतिया पटिविद्धं पठमज्झानमेव गोतमसासनानी ति वुत्तं, तं अनुस्सरं अनुस्सरित्वा ति अत्थो।

चित्तानि विराजयित्वा ति पञ्चकामगुणिकचित्तानि विराजयित्वा। **कामेसु आदीनवं** ति विक्खम्भनवसेन पठमज्झानेन कामेसु आदीनवं अद्दसंसु, समुच्छेदवसेन ततियमग्गेन। **कामसंयोजनबन्धनानी** ति कामसञ्ञोजनानि च कामबन्धनानि च। **पापिमयोगानी** ति पापिमतो मारस्स योगभूतानि, बन्धनभूतानी ति अत्थो। **दुरच्चयानी** ति दुरतिक्कमानि। **सइन्दा देवा सपजापतिका** ति इन्दं जेट्ठकं कत्वा उपविट्ठा सइन्दा पजापतिं देवराजानं जेट्ठकं कत्वा उपविट्ठा सपजापतिका। **सभायुपविट्ठा** ति सभायं उपविट्ठा, निसिन्ना ति अत्थो।

१. ०सुत्वा—रो०।

वीरा (दी० नि० २.२०५) ति सूरा। **विरागा** ति वीतरागा। **विरजं करोन्ता** ति विरजं अनागामिमग्गं करोन्ता उप्पादेन्ता। **नागोव सन्नानि गुणानी** ति कामसञ्ञोजनबन्धनानि छेत्वा देवे तावतिंसे अतिक्कमिंसु। **संवेगजातस्सा** ति जातसंवेगस्स सक्कस्स।

कामाभिभू ति दुविधानम्पि कामानं अभिभू। **सतिया विहीना** ति झानसतिविरहिता। 5

तिण्णं तेसं ति तेसु तीसु जनेसु। **आवसिनेत्थ एको** ति तत्थ हीने काये एकोयेव आवासिको जातो। **सम्बोधिपथानुसारिनो** ति अनागामिमग्गानुसारिनो। **देवेपि हीळेन्ती** ति द्वे देवलोके हीळेन्तो अधोकरोन्ता उपचारप्पनासमाधीहि समाहितत्ता अत्तनो पादपंसुं देवतानं मत्थके ओकिरन्ता आकासे उप्पतित्वा गता ति। B. 302 10

एतादिसो धम्मप्पकासनेत्था ति एत्थ सासने एवरूपा धम्मप्पकासना, याय सावका एतेहि गुणेहि समन्नागता होन्ति। **न तत्थ किं कङ्खति कोचि सावको** ति किं तत्थ तेसु सावकेसु कोचि एकसावकोपि बुद्धादीसु वा चातुद्दिसभावे वा न कङ्खति "सब्बदिसासु असज्जमानो अगय्हमानो विहरती" ति। इदानि भगवतो वण्णं भणन्तो "नितिण्णओघं विचिकिच्छछिन्नं, बुद्धं नमस्साम जिनं जनिन्दं" ति आह। तत्थ **विचिकिच्छछिन्न** ति छिन्नविचिकिच्छं। **जनिन्दं** ति सब्बलोकुत्तमं। R. 710 15

यं ते धम्मं ति यं तव धम्मं। **अज्झगंसु ते** ति ते देवपुत्ता अधिगता। **कायं ब्रह्मपुरोहितं** ति अम्हाकं पस्सन्तानञ्ञेव ब्रह्मपुरोहितसरीरं। इदं वुत्तं होति—यं तव धम्मं जानित्वा तेसं तिण्णं जनानं ते द्वे विसेसगू अम्हाकं पस्सन्तानंयेव कायं ब्रह्मपुरोहितं अधिगन्त्वा मग्गफलविसेसं अज्झगंसु, मयम्पि तस्स धम्मस्स पत्तिया आगतम्हासि मारिसा ति। **आगतम्हसे** ति सम्पत्तम्ह। **कतावकासा भगवता, मञ्हं पुच्छेमु मारिसा** ति सचे नो भगवा ओकासं करोति, अथ भगवता कतावकासा हुत्वा पञ्हं, मारिस पुच्छेय्यामा ति अत्थो। 20 25

५. मघमाणववत्थु

१२. **दीघरत्तं विसुद्धो खो अयं यक्खो** (दी० नि० २.२०६) ति चिरकालतो पभुति विसुद्धो। कीवचिरकालतो? अनुप्पन्ने बुद्धे मगधरट्ठे मचलगामके मघमाणवकालतो पट्ठाय। तदा किरेस एकदिवसं कालस्सेव वुट्ठाय गाममज्झे मनुस्सानं गामकम्मकरणट्ठानं 5 गन्त्वा अत्तनो ठितट्ठानं पादन्तेनेव पंसुकचवरं अपनेत्वा रमणीय-मकासि, अञ्ञो आगन्त्वा तत्थ अट्ठासि। सो तावतकेनेव सतिं पटिलभित्वा मज्झे गामस्स खलमण्डलमत्तं ठानं सोधेत्वा वालुकं ओकिरित्वा दारूनि आहरित्वा सीतकाले अग्गिं करोति, दहरा च महल्लका च आगन्त्वा तत्थ निसीदन्ति।

B. 303 10 अथस्स एकदिवसं एतदहोसि "मयं नगरं गन्त्वा राजराजमहा-मत्तादयो पस्साम। इमेसुपि चन्दिमसूरियेसु 'चन्दो नाम देवपुत्तो, R. 711 सूरियो नाम देवपुत्तो' ति वदन्ति। किं नु खो कत्वा एते एता सम्पत्तियो अधिगता" ति? ततो "नाञ्ञं किञ्चि, पुञ्ञकम्ममेव कत्वा" ति चिन्तेत्वा "मयापि एवंविधसम्पत्तिदायकं[1] पुञ्ञकम्ममेव 15 कत्तब्बं" ति चिन्तेसि।

सो कालस्सेव वुट्ठाय यागुं पिवित्वा वासिफरसुकुदालमुसलहत्थो चतुमहापथं गन्त्वा मुसलेन पासाणे उच्चालेत्वा पवट्टेति, यानानं अक्खपटिघातरुक्खे हरति, विसमं समं करोति, चतुमहापथे सालं करोति, पोक्खरणिं खणति, सेतुं बन्धति। एवं दिवसं कम्मं कत्वा 20 अत्थङ्गते सूरिये घरं एति। तं अञ्ञो पुच्छि—"भो, मघ, त्वं पातोव निक्खमित्वा सायं अरञ्ञतो एसि, किं कम्मं करोसी" ति? पुञ्ञकम्मं करोमी। सग्गगामिमग्गं सोधेमी ति। किमिदं, भो पुञ्ञं नामा ति? त्वं न जानासी ति? आम, न जानामी ति। नगरं गतकाले दिट्ठपुब्बा ते राजराजमहामत्तादयो ति? आम, दिट्ठपुब्बा

१. एवं दिब्ब०—रो०।

ति। पुञ्ञकम्मं कत्वा तेहि तं ठानं लद्धं, अहम्पि एवंविधसम्पत्ति-
दायकं कम्मं करोमि। "चन्दो नाम देवपुत्तो, सूरियो नाम देवपुत्तो"
ति सुतपुब्बं तया ति? आम सुतपुब्बं ति। एतस्स सग्गस्स
गमनमग्गं अहं सोधेमी ति। इदं पन पुञ्ञकम्मं किं तवेव वट्टति,
अञ्ञस्स न वट्टती ति? न कस्सचेतं वारितं ति। यदि एवं स्वे 5
अरञ्ञं गमनकाले मय्हम्पि सद्दं देही ति। पुन दिवसे तं गहेत्वा
गतो। एवं तस्मिं गामे तेत्तिंस[1] मनुस्सा तरुणवया सब्बे तस्सेव
अनुवत्तका अहेसुं। ते एकच्छन्दा हुत्वा पुञ्ञकम्मानि करोन्ता
विचरन्ति। यं दिसं गच्छन्ति, मग्गं समं करोन्ता एकदिवसेनेव
करोन्ति, पोक्खरणिं खणन्ता, सालं करोन्ता, सेतुं बन्धन्ता एकदिवसे- 10
नेव निट्ठापेन्ति।

अथ नेसं गामभोजको चिन्तेसि—"अहं पुब्बे एतेसु सुरं पिवन्तेसु
पाणघातादीनि करोन्तेसु च कहापणादिवसेन चेव दण्डबलिवसेन च
धनं लभामि, इदानि एतेसं पुञ्ञकरणकालतो पट्ठाय एत्तको आयो
नत्थि, हन्द ने राजकुले परिभिन्दामी" ति राजानं उपसङ्कमित्वा 15 R. 712
चोरे महाराज पस्सामी ति। कुहिं, ताता ति? मय्हं गामे ति।
किं चोरा नाम, ताता ति? राजापराधिका देवा ति। किं जातिका
ति? गहपतिजातिका देवा ति। गहपतिका किं करिस्सन्ति,
तया जानमानेन कस्मा मय्हं न कथितं ति? भयेन, महाराज, न B. 304
कथेमि[2]। इदानि मा मय्हं दोसं करेय्याथा ति। अथ राजा "अयं 20
मय्हं महारवं रवती" ति सद्दहित्वा "तेन हि गच्छ, त्वमेव ने आनेही"
ति बलं दत्वा पेसेसि। सो गन्त्वा दिवसं अरञ्ञे कम्मं कत्वा
सायमासं भुञ्जित्वा गाममज्झे निसीदित्वा "स्वे किं कम्मं करिस्साम,
किं मग्गं समं करोम, पोक्खरणिं खणाम, सेतुं बन्धामा" ति मन्तय-
मानेयेव ते परिवारेत्वा "मा फन्दित्थ, रञ्ञो आणा" ति बन्धित्वा 25
पायासि। अथ खो नेसं इत्थियो "सामिका किर वो 'राजापराधिका

१. वदिस—रो०। २. कथेसि—रो०।

चोरा' ति बन्धित्वा निय्यन्ती" ति सुत्वा "अतिचिरेन कूटा[१] एते 'पुञ्ञकम्मं करोमा' ति दिवसे दिवसे अरञ्ञेव अच्छन्ति, सब्बकम्मन्ता परिहीना, गेहे न किञ्चि वड्ढति, सुट्ठु बद्धा सुट्ठु गहिता" ति वदिंसु।

5 गामभोजको पि ते नेत्वा रञ्ञो दस्सेसि। राजा अनुपपरिक्खित्वायेव "हत्थिना मद्दापेथा" ति आह। तेसु नीयमानेसु मघो इतरे आह—"भो, सक्खिस्सथ मम वचनं कातुं" ति? तव वचनं करोन्तायेवम्ह इमं भयं पत्ता, एवं सन्तेपि तव वचनं करोम, भण भो, किं करोमा ति? एत्थ भो वट्टे चरन्तानं नाम निबद्धं एतं, किं 10 पन तुम्हे चोरा ति? न चोरम्हा ति। इमस्स लोकस्स सच्चकिरिया नाम अवस्सयो, तस्मा सब्बेपि "यदि अम्हे चोरा, हत्थी मद्दतु, अथ न चोरा, मा मद्दतू" ति सच्चकिरियं करोथा ति। ते तथा अकंसु। हत्थी उपगन्तुम्पि न सक्कोति, विरवन्तो पलायति, हत्थिं तुत्ततोमरङ्कुसेहि कोट्टेन्तापि उपनेतुं न सक्कोन्ति। "हत्थिं उपनेतुं न सक्कोमा" 15 ति रञ्ञो आरोचेसुं। तेन हि उपरि कटेन पटिच्छादेत्वा मद्दापेथा ति। उपरि कटे दिन्ने दिगुणरवं विरवन्तो पलायति।

राजा सुत्वा पेसुञ्ञकारकं पक्कोसापेत्वा आह—"तात, हत्थी मद्दितुं न इच्छती" ति? आम, देव, जेट्ठकमाणवो मन्तं जानाति, मन्तस्सेव अयमानुभावो ति। राजा तं पक्कोसापेत्वा "मन्तो किर ते R. 713 20 अत्थी" ति पुच्छि? नत्थि, देव, मय्हं मन्तो, सच्चकिरियं पन मयं करिम्ह—"यदि अम्हे रञ्ञो चोरा, मद्दतु, अथ न चोरा, मा मद्दतू" ति, सच्चकिरियाय नो एस अनुभावो ति। किं पन, तात, तुम्हे कम्मं B. 305 करोथा ति? अम्हे देव मग्गं समं करोम, चतुमहापथे सालं करोम, पोक्खरणिं खणाम, सेतुं बन्धाम, एवरूपानि पुञ्ञकम्मानि करोन्ता 25 विचरिम्हा ति।

१. ञाता—रो०।

अयं तुम्हे किमत्थं पिसुणेसी ति ? अम्हाकं पमत्तकाले इदञ्चिदञ्च लभति, अप्पमत्त काले तं नत्थि, एतेन कारणेना ति । तात, अयं हत्थी नाम तिरच्छानो, सोपि तुम्हाकं गुणे जानाति । अहं मनुस्सो हुत्वापि न जानामि । तुम्हाकं वसनगामं तुम्हाकं येव पुन अहरणीयं कत्वा देमि, अयम्पि हत्थी तुम्हाकं येव होतु, पेसुञ्ञकारकोपि तुम्हाकं 5 येव दासो होतु । इतो पट्ठाय मय्हम्पि पुञ्ञकम्मं करोथा ति धनं दत्वा विस्सज्जेसि । ते धनं गहेत्वा वारेन हत्थिं आरुय्ह गच्छन्ता मन्तयन्ति "भो पुञ्ञकम्मं नाम अनागतभवत्थाय करीयति, अम्हाकं पन अन्तोउदके पुप्फितं नीलुप्पलं विय इमस्मिं येव अत्तभावे विपाकं देति । इदानि अतिरेकं पुञ्ञं करिस्सामा" ति, किं करोमा ति ? 10 चतुमहापथे थावरं कत्वा महाजनस्स विस्समनसालं करोम, इत्थीहि पन सद्धिं अपत्तिकं कत्वा करिस्साम, अम्हेसु हि "चोरा" ति गहेत्वा नीयमानेसु इत्थीनं एकापि चिन्तामत्तकम्पि अकत्वा "सुबद्धा[1] सुगहिता" ति उट्ठहिंसु, तस्मा तासं पत्तिं न दस्सामा ति । ते अत्तनो गेहानि गन्त्वा हत्थिनो तेत्तिंसपिण्डं देन्ति, तेत्तिंस तिणमुट्ठियो 15 आहरन्ति, तं सब्बं हत्थिस्स कुच्छिपूरं जातं । ते अरञ्ञं पविसित्वा रुक्खे छिन्दन्ति, छिन्नं छिन्नं हत्थी कड्ढित्वा सकटपथे ठपेसि । ते रुक्खे तच्छेत्वा सालाय कम्मं आरभिंसु ।

मघस्स गेहे सुजाता, सुधम्मा, चित्ता, नन्दा ति चतस्सो भरियायो अहेसुं । सुधम्मा वड्ढकिं पुच्छति—"तात, इमे सहाया कालस्सेव 20 गन्त्वा सायं एन्ति, किं कम्मं करोन्ती" ति ? "सालं करोन्ति, अम्मा" ति । तात, मय्हम्पि सालाय पत्तिं कत्वा देही" ति । "इत्थीहि अपत्तिकं करोमा" ति एते वदन्ती ति । सा वड्ढकिस्स अट्ठ R. 714 कहापणे दत्वा[2]—"तात[3], येन केनचि उपायेन मय्हं पत्तिकं करोही" ति आह[4] । सो साधु अम्मा ति वत्वा पुरेतरं वासिफरसुं गहेत्वा 25

१. सुट्ठु बद्धा—रो० । २. अदासि—रो० ।
३. इन्द तात—रो० । ४. रो० पोत्थके नत्थि ।

गाममज्झे ठत्वा "किं भो अज्ज इमस्मिम्पि काले न निक्खमथा" ति उच्चासद्दं कत्वा "सब्बे मग्गं आरुळ्हा" ति ञत्वा "गच्छथ ताव
B. 306 तुम्हे, मय्हं पपञ्चो अत्थी" ति ते पुरतो कत्वा अञ्ञं मग्गं आरुय्ह कण्णिकूपगं रुक्खं छिन्दित्वा तच्छेत्वा मट्ठं कत्वा आहरित्वा सुधम्माय
5 गेहे ठपेसि—"मया देहीति वुत्तदिवसे नीहरित्वा ददेय्यासी" ति ।

अथ निट्ठिते दब्बसम्भारकम्मे भूमिकम्मतो पट्ठाय यावबन्धन-थम्भुस्सापन-सङ्घाटयोजन-कण्णिकमञ्चबन्धनेसु कतेसु सो वड्ढकी कण्णिकमञ्चे निसीदित्वा चतूहि दिसाहि गोपानसियो उक्खिपित्वा "भो एकं पमुट्ठं अत्थी" ति आह । किं भो पमुट्ठं, सब्बमेव त्वं
10 पमुस्ससी ति । इमा भो गोपानसियो कत्थ पतिट्ठहिस्सन्ती ति ? कण्णिका नाम लद्धुं वट्टती ति । कुहिं भो इदानि सक्का लद्धुं ति ? कुलानं गेहे सक्का लद्धुं ति । आहिण्डन्ता पुच्छथा ति । ते अन्तोगामं पविसित्वा पुच्छित्वा सुधम्माय घरद्वारे "इमस्मिं घरे कण्णिका अत्थी" ति आहंसु[1] । सा "अत्थी" ति आह । हन्द मूलं गण्हाही
15 ति । मूलं न गण्हामि, सचे मम पत्तिं करोथ, दस्सामी ति । एथ भो मातुगामस्स पत्तिं न करोम, अरञ्ञं गन्त्वा रुक्खं छिन्दिस्सामा ति निक्खमिंसु ।

ततो वड्ढकी "किं न लुद्धा, तात, कण्णिका" ति पुच्छि । ते तमत्थं आरोचयिंसु । वड्ढकी कण्णिकमञ्चे[2] निसिन्नोव आकासं
20 उल्लोकेत्वा "भो अज्ज नक्खत्तं सुन्दरं, इदं अञ्ञं संवच्छरं अतिक्कमित्वा सक्का लद्धुं । तुम्हेहि च दुक्खेन आभता दब्बसम्भारा ते सकलसंवच्छरेन इमस्मिं येव ठाने पूतिका भविस्सन्ति । देवलोके निब्बत्तकाले तस्सापि एकस्मिं कोणे साला होतु, आहरथ नं" ति आह । सापि याव ते न पुन आगच्छन्ति, ताव कण्णिकाय हेट्ठिमतले
25 "अयं साला सुधम्मा नामा" ति अक्खरानि छिन्दापेत्वा अहतेन

१. पुच्छिंसु—रो० । २. ०मज्झे—रो० ।
३. नं—रो० ।

वत्थेन वेठेत्वा ठपेसि । कम्मिका आगन्त्वा—"आहार, रे कण्णिकं, यं होतु तं होतु, तुय्हम्पि पत्तिं करिस्सामा" ति आहंसु । सा नीहरित्वा "ताता, याव अट्ठ वा सोळस वा गोपानसियो न आरोहन्ति, ताव इमं वत्थं मा निब्बेठयित्था" ति वत्वा अदासि । "साधु" ति सम्पटिच्छित्वा गहेत्वा गोपानसियो आरोपेत्वाव वत्थं निब्बेठेसुं । R. 715 5

एको महागामिकमनुस्सो[1] उद्धं[2] ओल्लोकेन्तो अक्खरानि दिस्वा "किं, भो, इदं" ति अक्खरञ्ञुं मनुस्सं पक्कोसापेत्वा दस्सेसि । सो "सुधम्मा नाम अयं साला" ति आह । "हरथ, भो, मयं आदितो पट्ठाय सालं कत्वा नाममत्तम्पि न लभाम, एसा रतनमत्तेन कण्णिक-रुक्खेन सालं अत्तनो नामेन कारेती" ति विरवन्ति । वड्ढकी तेसं विरवन्तानं येव गोपानसियो पवेसेत्वा आणिं दत्वा सालाकम्मं निट्ठापेसि । B. 307 10

सालं तिधा विभजिंसु । एकस्मिं कोट्ठासे इस्सरानं वसनट्ठानं अकंसु, एकस्मिं दुग्गतानं, एकस्मिं गिलानानं । तेत्तिंस जना तेत्तिंस फलकानि पञ्ञपेत्वा हत्थिस्स सञ्ञं अदंसु—"आगन्तुको आगन्त्वा यस्स अत्थते फलके निसीदति, तं गहेत्वा फलकसामिकस्सेव गेहे पतिट्ठपेहि । तस्स पादपरिकम्मपिट्ठिपरिकम्मखादनीयभोजनीय-सयनानि सब्बानि फलकसामिकस्सेव भारो भविस्सन्ती" ति । हत्थी आगतागतं गवेत्वा फलकसामिकस्स गेहं नेति, सो तस्स तं दिवसं कत्तब्बं करोति । 15 20

मघमाणवो सालतो अविदूरे ठाने कोविळाररुक्खं रोपापेसि[3], मूले चस्स पासाणफलकं अत्थरि । नन्दा नामस्स भरिया अविदूरे पोक्खरणिं खणापेसि, चित्ता मालावच्छे रोपापेसि, सब्बजेट्ठिका पन आदासं गहेत्वा अत्तभावं मण्डयमानाव विचरति । मघो तं[4] आह— 25

१. मग्ग०—रो० । २. उच्चं—रो० ।
३. रोपेसि—रो० । ४. रो० पोत्थके नत्थि ।

"भद्दे, सुधम्मा, सालाय पत्तिका जाता, नन्दा पोक्खरणिं खणापेसि, चित्ता मालावच्छे रोपापेसि। तव पन पुञ्ञकम्मं नाम नत्थि, एकं पुञ्ञं करोहि, भद्दे" ति सा "त्वं कस्स कारणा करोसि, ननु तया कतं मय्हमेवा" ति वत्वा अत्तभावमण्डनमेव अनुयुञ्जति।

5 मघो यावतायुकं ठत्वा ततो चवित्वा तावतिंसभवने सक्को हुत्वा R. 716 निब्बत्ति। तेपि तेत्तिंस गामिकमनुस्सा कालं कत्वा तेत्तिंस देवपुत्ता हुत्वा तस्सेव सन्तिके निब्बत्ता। सक्कस्स वेजयन्तो नाम पासादो सत्त योजनसतानि उग्गच्छि, धजो तीणि योजनसतानि उग्गच्छि, कोविळाररुक्खस्स निस्सन्देन समन्ता तियोजन 10 सतपरिमण्डलो पञ्चदसयोजनपरिणाहक्खन्धो पारिच्छत्तको B. 308 निब्बत्ति, पासाणफलकस्स निस्सन्देन पारिच्छत्तकमूले सट्ठियोजनिका पण्डुकम्बलसिला निब्बत्ति। सुधम्माय कण्णिकरुक्खस्स निस्सन्देन तियोजनसतिका सुधम्मा देवसभा निब्बत्ति। नन्दाय पोक्खरणिया निस्सन्देन पञ्ञासंयोजना नन्दा नाम[1] पोक्खरणी निब्बत्ति। चित्ताय 15 मालावच्छवत्थुनिस्सन्देन सट्ठियोजनिकं चित्तलतावनं नाम उय्यानं निब्बत्ति।

सक्को देवराजा सुधम्माय देवसभाय योजनिके सुवण्णपल्लङ्के निसिन्नो तियोजनिके सेतच्छत्ते धारियमाने तेहि देवपुत्तेहि ताहि देवकञ्ञाहि अड्ढतियाहि नाटककोटीहि द्वीसु देवलोकेसु देवताहि च 20 परिवारितो महासम्पत्तिं ओलोकेन्तो ता तिस्सो इत्थियो दिस्वा "इमा ताव पञ्ञायन्ति, सुजाता कुहिं" ति ओलोकेन्तो "अयं मम वचनं अकत्वा गिरिकन्दराय बकसकुणिका हुत्वा निब्बत्ता" ति दिस्वा देवलोकतो ओतरित्वा तस्सा सन्तिकं गतो। सा दिस्वाव सञ्जानित्वा अधोमुखा जाता। "बाले, इदानि किं सीसं न उक्खिपसि? त्वं मम 25 वचनं अकत्वा अत्तभावमेव मण्डयमाना वीतिनामेसि। सुधम्माय च नन्दाय च चित्ताय च महासम्पत्ति निब्बत्ता। एहि अम्हाकं सम्पत्तिं

१. रो० पोत्थके नत्थि।

पस्सा'' ति देवलोकं नेत्वा नन्दाय पोक्खरणिया पक्खिपित्वा पल्लङ्के निसीदि ।

नाटकित्थियो "कुहिं गतत्थ, महाराजा'' ति पुच्छिंसु । सो अनारोचेतुकामोपि ताहि निप्पीळियमानो "सुजाताय सन्तिकं'' ति आह । कुहिं निब्बत्ता, महाराजा ति ? कन्दरपादे ति । इदानि कुहिं ति ? नन्दापोक्खरणियं मे विस्सट्ठा ति । एथ भो अम्हाकं अय्यं पस्सामा ति सब्बा तत्थ अगमंसु । सा पुब्बे सब्बजेट्ठिका हुत्वा ता अवमञ्ञित्थ, इदानि तापि तं दिस्वा—"पस्सथ, भो अम्हाकं अय्याय मुखं कक्कटकविज्झनसूलसदिसं'' ति आदिनि वदन्तियो केळिं अकंसु । सा अतिविय अट्टियमाना सक्कं देवराजानं आह—"महाराज, इमानि सुवण्णरजतमणिविमानानि वा नन्दापोक्खरणी वा मय्हं किं करिस्सति, जातिभूमि येव महाराज सत्तानं सुखा, मं तत्थेव कन्दरपादे विस्सज्जेही" ति । सक्को तं तत्थ विस्सज्जेत्वा "मम वचनं करिस्ससी'' ति आह । करिस्सामि, महाराजाति । पञ्च सीलानि गहेत्वा अखण्डानि कत्वा रक्ख, कतिपाहेन तं एतासं जेट्ठिकं करिस्सामी ति । सा तथा अकासि ।

सक्को कतिपाहस्स अच्चयेन "सक्का नु खो सीलं रक्खितुं'' ति गन्त्वा मच्छरूपेन उत्तानको हुत्वा तस्सा पुरतो उदकपिट्ठे ओसरति । सा "मतमच्छको भविस्सती'' ति गन्त्वा सीसे अग्गहेसि । मच्छो नङ्गुट्ठं चालेसि । सा "जीवति मञ्ञे" ति उदके विस्सज्जेसि । सक्को आकासे ठत्वा "साधु, साधु, रक्खसि सिक्खापदं, एवं तं रक्खमानं कतिपाहेनेव नाटकानं जेट्ठिकं करिस्सामी'' ति आह । तस्सापि पञ्च वस्ससतानि आयु अहोसि । एकदिवसम्पि उदरपूरं नालत्थं, सुक्खित्वा परिसुक्खित्वा मिलायमानापि सीलं अखण्डेत्वा कालं कत्वा बाराणसियं कुम्भकारगेहे निब्बत्ति ।

सक्को "कुहिं निब्बत्ता" ति ओलोकेन्तो दिस्वा "ततो इध आनेतुं न सक्का, जीवितवुत्तिमस्सा दस्सामी'' ति सुवण्णएळालुकानं

5 10 R. 717 15 B. 309 20 25

यानकं पूरेत्वा मज्झे गामस्स महल्लकवेसेन निसीदित्वा "एळालुकानि गण्हथा" ति उक्कुट्ठिमकासि। समन्ता गामवासिका आगन्त्वा "देहि, ताता" ति आहंसु। अहं सीलरक्खकानं देमि, तुम्हे सीलं रक्खथा ति। तात मयं सीलं नाम कीदिसं ति पि न जानाम, मूलेन 5 देही ति। "सीलरक्खकानंयेव दम्मी" ति आह[१]। "एथ, रे कोसि अयं एळालुकमहल्लको" ति सब्बे निवत्तिंसु।

सा दारिका पुच्छि—"अम्म, तुम्हे एळालुकत्थाय गता तुच्छहत्थाव आगता" ति। कोसि, अम्म, एळालुकमहल्लको "अहं सीलरक्खकानं दम्मी" ति वदति, नूनिमस्स दारिका सीलं खादित्वा[२] 10 वत्तन्ति, मयं सीलमेव न जानामा ति। सा "मय्हं आनीतं भविस्सती" ति गन्त्वा "एळालुकं, तात, देही" ति आह। त्वं सीलानि रक्खसि अम्मा ति ? आम, तात रक्खामी ति। इदं मया तुय्हमेव आभतं ति गेहद्वारे यानेन सद्धिं ठपेत्वा पक्कामि। सापि यावजीवं सीलं रक्खित्वा चवित्वा[३] वेपचित्तिअसुरस्स धीता हुत्वा R. 718 15 निब्बत्ति। सीलनिस्सन्देन पासादिका अहोसि। सो "धीतुविवाहमङ्गलं करिस्सामी" ति असुरे सन्निपातेसि।

सक्को "कुहिं निब्बत्ता" ति ओलोकेन्तो "असुरभवने निब्बत्ता। अज्जस्सा विवाहमङ्गलं करिस्सन्ती" ति दिस्वा "इदानि यंकिञ्चि कत्वा आनेतब्बा मया" ति असुरवण्णं निम्मिनित्वा गन्त्वा[४] असुरानं B. 310 20 अन्तरे अट्ठासि। "तव सामिकं वारेही" ति तस्सा हत्थे पिता पुप्फदामं अदासि—"यं इच्छसि, तस्सूपरि खिपाही" ति। सा ओलोकेन्ती सक्कं दिस्वा पुब्बसन्निवासेन। सञ्जातसिनेहा "अयं मे सामिको" ति तस्सूपरि दामं खिपि। सो तं बाहाय गहेत्वा आकासे उप्पति, तस्मिं खणे असुरा सञ्जानिंसु। ते "गण्हथ, गण्हथ, जरसक्कं, 25 वेरिको अम्हाकं, न मयं एतस्स दारिकं दस्सामा" ति अनुबन्धिंसु।

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. समादित्वा—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि। ४. रो० पोत्थके नत्थि।

वेपचित्ति पुच्छि "केनाहटा" ति? जनसक्केन महाराजा ति। "अवसेसेसु अयमेव सेट्ठो, अपेथा" ति आह। सक्को नं नेत्वा अड्ढतिय-कोटिनाटकानं जेट्ठिकट्ठाने ठपेसि। सा सक्कं वरं याचि—"महाराज, मय्हं इमस्मिं देवलोके माता वा पिता वा भाता वा भगिनी वा नत्थि, यत्थ यत्थ गच्छसि, तत्थ तत्थ मं गहेत्वाव गच्छ महाराजा" ति। सक्को "साधू" ति पटिञ्ञं अदासि। 5

एवं मचलगामके मघमाणवकालतो पट्ठाय विसुद्धभावमस्स सम्पस्सन्तो भगवा "दीघरत्तं विसुद्धो खो अयं यक्खो" ति आह। **अत्थसञ्हितं** ति अत्थनिस्सितं कारणनिस्सितं।

६. पञ्हवेय्याकरणवण्णना

१४. **किं संयोजना** (दी० नि० २.२०६) ति किं बन्धना[1], केन बन्धनेन बद्धा हुत्वा। **पुथुकाया** ति बहुजना। **अवेरा** ति अप्पटिघा। **अदण्डा** ति आवुधदण्डधनदण्डविनिमुत्ता। **असपत्ता** ति अपच्चत्थिका। **अब्यापज्जा** ति विगतदोमनस्सा। **विहरेमु अवेरिनो** ति अहो वत केनचि सद्धिं अवेरिनो विहरेय्याम, कत्थचि कोपं न उप्पादेत्वा अच्छराय गहितकं जङ्घसहस्सेन सद्धिं परिभुञ्जेय्यामा ति दानं दत्वा पूजं कत्वा च पत्थयन्ति। **इति च नेसं होती** ति एवञ्च नेसं अयं पत्थना होति। **अथ च पना** ति एवं पत्थनाय सतिपि। 10 15

इस्सामच्छरियसंयोजना ति परसम्पत्तिखीयनलक्खणा इस्सा, अत्तसम्पत्तिया परेहि साधारणभावस्स असहनलक्खणं मच्छरियं। इस्सा च मच्छरियञ्च संयोजनं एतेसं ति इस्सामच्छरियसंयोजना। अयमेत्थ सङ्खेपो। वित्थारतो पन इस्सामच्छरियानि अभिधम्मे वुत्तानेव। R. 719 20

आवासमच्छरियेन पनेत्थ यक्खो वा पेतो वा हुत्वा तस्सेव आवासस्स सङ्कारं सीसेन उक्खिपित्वा विचरति। कुलमच्छरियेन B. 311

[1]-[1]. रो० पोत्थके नत्थि।

तस्मिं कुले अञ्ञेसं दानादीनि करोन्तो दिस्वा "भिन्नं वतिदं कुलं ममा" ति चिन्तयतो लोहितम्पि मुखतो उग्गच्छति, कुच्छिविरेचनम्पि होति, अन्तानिपि खण्डाखण्डानि हुत्वा निक्खमन्ति। लाभमच्छरियेन संघस्स वा गणस्स वा सन्तके लाभे मच्छरायित्वा पुग्गलिकपरिभोगेन[1] 5 परिभुञ्जित्वा यक्खो वा पेतो वा महाअजगरो वा हुत्वा निब्बत्तति। सरीरवण्णगुणवण्णमच्छरियेन पन परियत्तिधम्ममच्छरियेन च अत्तनोव वण्णं वण्णेति, न परेसं वण्णं, "किं वण्णो एसो" ति तं तं दोसं वदन्तो परियत्तिञ्च कस्सचि किञ्चि अदेन्तो दुब्बण्णो चेव एळमूगो च होति।

10 अपिच आवासमच्छरियेन लोहगेहे पच्चति। कुलमच्छरियेन अप्पलाभो होति। लाभमच्छरियेन गूथनिरये निब्बत्तति। वण्णमच्छरियेन भवे निब्बत्तस्स वण्णो नाम न होति। धम्ममच्छरियेन कुक्कुळनिरये निब्बत्तति। इदं पन इस्सामच्छरियसंयोजनं सोतापत्तिमग्गेन पहीयति। याव तं नप्पहीयति, ताव देवमनुस्सा 15 अवेरतादीनि पत्थयन्तापि वेरादीहि न परिमुच्चन्ति येव।

तिण्णा मेत्थ कङ्खा ति एतस्मिं पञ्हे मया तुम्हाकं वचनं सुत्वा कङ्खा तिण्णा ति वदति, न मग्गवसेन तिण्णकङ्खतं दीपेति। **विगता कथंकथा** ति इदं कथं, इदं कथं ति अयम्पि कथंकथा विगता।

१५. निदानादीनि वुत्तत्थानेव। **पियाप्पियनिदानं** 20 (दी० नि० २.२०७) ति पियसत्तसङ्खारनिदानं मच्छरियं, अप्पियसत्तसङ्खारनिदाना इस्सा। उभयं वा उभयनिदानं। पब्बजितस्स हि सद्धिविहारिकादयो, गहट्ठस्स पुत्तादयो हत्थिअस्सादयो वा सत्ता पिया होन्ति केळायिता ममायिता, मुहुत्तम्पि ते अपस्सन्तो अधिवासेतुं न सक्कोति। सो अञ्ञं तादिसं पियसत्तं लभन्तं दिस्वा R. 720 25 इस्सं करोति। "इमिना अम्हाकं किञ्चि कम्मं अत्थि, मुहुत्तं ताव नं

१. पुग्गलिकभोगं—रो०।

देथा'' ति तमेव अञ्ञेहि याचितो ''न सक्का दातुं, किलमिस्सति वा उक्कण्ठिस्सति वा'' ति आदिनि वत्वा मच्छरियं करोति। एवं ताव उभयम्पि पियसत्तनिदानं होति। भिक्खुस्स पन पत्तचीवर-परिक्खारजातं, गहट्ठस्स वा अलङ्कारादिउपकरणं पियं होति मनापं। सो अञ्ञस्स तादिसं उप्पज्जमानं दिस्वा ''अहो वत्तस्स एवरूपं न 5 B. 312 भवेय्या'' ति इस्सं करोति, याचितो वापि ''मयम्पेतं ममायन्ता न परिभुञ्जाम, न सक्का दातुं'' ति मच्छरियं करोति। एवं उभयम्पि पियसङ्खारनिदानं होति। अप्पिये[1] पन ते वुत्तप्पकारे सत्ते च सङ्खारे च लभित्वा सचेपिस्स ते अमनापा होन्ति, तथापि किलेसानं विपरीत-वुत्तिताय ''ठपेत्वा मं को अञ्ञो एवरूपस्स लाभी ति इस्सं वा 10 करोति, याचितो तावकालिकम्पि अददमानो मच्छरियं वा करोति। एवं उभयम्पि अप्पियसत्तसङ्खारनिदानं होति।

छन्दनिदानं ति एत्थ परियेसनछन्दो, पटिलाभछन्दो, परिभोग-छन्दो, सन्निधिछन्दो, विस्सज्जनछन्दो ति पञ्चविधो छन्दो। कतमो परियेसनछन्दो ? इधेकच्चो अतित्तो छन्दजातो रूपं परियेसति, सद्दं, 15 गन्धं, रसं, फोट्ठब्बं परियेसति, धनं परियेसति। अयं परियेसनछन्दो।

कतमो पटिलाभछन्दो ? इधकच्चो अतित्तो छन्दजातो रूपं पटि-लभति, सद्दं, गन्धं, रसं, फोट्ठब्बं पटिलभति, धनं पटिलभति। अयं पटिलाभछन्दो।

कतमो परिभोगछन्दो ? इधेकच्चो अतित्तो छन्दजातो रूपं परि- 20 भुञ्जति, सद्दं, गन्धं, रसं, फोट्ठब्बं परिभुञ्जति, धनं परिभुञ्जति। अयं परिभोगछन्दो।

कतमो सन्निधिछन्दो ? इधेकच्चो अतित्तो छन्दजातो धनसन्निचयं करोति ''आपदासु भविस्सती'' ति। अयं सन्निधिछन्दो।

१. अप्पियेहि—रो०।

कतमो **विस्सज्जनछन्दो** ? इधेकच्चो अतित्तो छन्दजातो धनं विस्सज्जेति, हत्थारोहानं, अस्सारोहानं, रथिकानं, धनुग्गहानं—"इमे मं रक्खिस्सन्ति गोपिस्सन्ति ममायिस्सन्ति सम्परिवारयिस्सन्ती" ति। अयं विस्सज्जनछन्दो। इमे पञ्च छन्दा। इध तण्हामत्तमेव, तं
5 सन्धय इदं वुत्तं।

वितक्कनिदानो ति एत्थ "लाभं पटिच्च विनिच्छयो" (दी० नि० २.४८) ति एवं वुत्तो विनिच्छयवितक्को वितक्को नाम।
B. 313 **विनिच्छयो** ति द्वे विनिच्छया तण्हाविनिच्छयो च दिट्ठिविनिच्छयो च। अट्ठसतं तण्हाविचरितं तण्हाविनिच्छयो नाम। द्वासट्ठि दिट्ठियो दिट्ठि-
10 विनिच्छयो नामाति एवं वुत्ततण्हाविनिच्छयवसेन हि इट्ठानिट्ठपियाप्पिय-ववत्थानं न होति। तदेव हि एकच्चस्स इट्ठं होति, एकच्चस्स अनिट्ठं, पच्चन्दराजमज्झिमदेसराजूनं गण्डुप्पादमिगमंसादीसु विय। तस्मिं पन तण्हाविनिच्छय-विनिच्छिते पटिलद्धवत्थुस्मिं "एत्तकं रूपस्स भविस्सति, एत्तकं सद्दस्स, एत्तकं गन्धस्स, एत्तकं रसस्स, एत्तकं
15 फोट्ठब्बस्स भविस्सति, एत्तकं मय्हं भविस्सति, एत्तकं परस्स भविस्सति, एत्तकं निदहिस्सामि, एत्तकं परस्स दस्सामी" ति ववत्थानं वितक्कविनिच्छयेन होति। तेनाह "छन्दो खो, देवानमिन्द, वितक्कनिदानो" ति।

पपञ्चसञ्ञासङ्खानिदानो (दी० नि० २.२०८) ति तयो
20 पपञ्चा तण्हापपञ्चो, मानपपञ्चो, दिट्ठिपपञ्चो ति। तत्थ अट्ठसततण्हा-विचरितं तण्हापपञ्चो नाम। नवविधो मानो मानपपञ्चो नाम। द्वासट्ठि दिट्ठियो दिट्ठपपञ्चो नाम। तेसु इध तण्हापपञ्चो अधिप्पेतो। केनट्ठेन पपञ्चो ? मत्तपमत्ताकारपापनट्ठेन पपञ्चो। तंसम्पयुत्ता सञ्ञा पपञ्चसञ्ञा। सङ्खा वुच्चति कोट्ठासो "सञ्ञानिदाना हि पपञ्चसङ्खा"
25 तिआदीसु विय। इति पपञ्चसञ्ञासङ्खानिदानो ति पपञ्चसञ्ञा-कोट्ठासनिदानो वितक्को ति अत्थो।

१. ०होति—रो०।

पपञ्चसञ्ञासङ्खानिरोधसारुप्पगामिनिं ति एतिस्सा पपञ्चसञ्ञा-सङ्खाय खया निरोधो वूपसमो, तस्स सारुप्पञ्चेव तत्थ गामिनि चा ति सह विपस्सनाय मग्गं पुच्छति।

७. वेदनाकम्मट्ठानवण्णना

१६. अथस्स भगवा **सोमनस्संपाहं** (दी० नि० २.२०८) ति तिस्सो वेदना आरभि। किं पन भगवता पुच्छितं कथितं, अपुच्छितं, सानुसन्धिकं, अननुसन्धिकं ति? पुच्छितमेव कथितं, नो अपुच्छितं, सानुसन्धिकमेव, नो अननुसन्धिकं। देवतानञ्हि रूपतो अरूपं पाकटतरं, अरूपेपि वेदना पाकटतरा। कस्मा? देवतानञ्हि करजकायं सुखुमं, कम्मजं बलवं, करजकायस्स सुखुमत्ता, कम्मजस्स बलवत्ता एकाहारम्पि अतिक्कमित्वा न तिट्ठन्ति, उण्हपासाणे ठपितसप्पिपिण्डि विय विलीयन्ती ति सब्बं ब्रह्मजाले वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। तस्मा भगवा सक्कस्स तिस्सो वेदना आरभि। दुविधञ्हि कम्मट्ठानं—रूपकम्मट्ठानं, अरूपकम्मट्ठानं च। रूपपरिग्गहो, अरूप-परिग्गहोतीपि एतदेव वुच्चति। तत्थ भगवा यस्स रूपं पाकटं, तस्स सङ्खेपमनसिकारवसेन वा वित्थारमनसिकारवसेन वा चतुधातुववत्थानं वित्थारेन्तो रूपकम्मट्ठानं कथेति। यस्स अरूपं पाकटं, तस्स अरूप-कम्मट्ठानं कथेति। कथेन्तो च तस्स वत्थुभूतं रूपकम्मट्ठानं दस्सेत्वाव कथेति, देवानं पन अरूपकम्मट्ठानं पाकटं ति अरूपकम्मट्ठानवसेन वेदना आरभि।

तिविधो हि अरूपकम्मट्ठाने अभिनिवेसो—फस्सवसेन, वेदनावसेन, चित्तवसेना ति। कथं? एकच्चस्स हि सङ्खित्तेन वा वित्थारेन वा परिग्गहिते रूपकम्मट्ठाने तस्मिं आरम्मणे चित्तचेतसिकानं पठमाभि-निपातो तं आरम्मणं फुसन्तो उप्पज्जमानो फस्सो पाकटो होति। एकच्चस्स तं आरम्मणं अनुभवन्ती उप्पज्जमाना वेदना पाकटा होति। एकच्चस्स तं आरम्मणं परिग्गहेत्वा तं विजानन्तं उप्पज्जमानं विञ्ञाणं पाकटं होति।

5 · 10 B. 314 · R. 722 · 15 · 20 · 25

तत्थ यस्स फस्सो पाकटो होति, सोपि न केवलं फस्सोव उप्पज्जति, तेन सद्धिं तदेव आरम्मणं अनुभवमाना वेदनापि उप्पज्जति, सञ्जानमाना सञ्ञापि, चेतयमाना चेतनापि, विजानमानं विञ्ञाणम्पि उप्पज्जती ति फस्सपञ्चमकेयेव परिग्गण्हाति। यस्स वेदना पाकटा 5 होति, सोपि न केवलं वेदनाव उप्पज्जति, ताय सद्धिं तदेव आरम्मणं फुसमानो फस्सोपि उप्पज्जति सञ्जानमाना सञ्ञापि, चेतयमाना चेतनापि, विजानमानं विञ्ञाणम्पि उप्पज्जती ति फस्सपञ्चमकेयेव परिग्गण्हाति। यस्स विञ्ञाणं पाकटं होति, सोपि न केवलं विञ्ञाणमेव उप्पज्जति, तेन सद्धिं तदेवारम्मणं फुसमानो फस्सोपि 10 उप्पज्जति, अनुभवमाना वेदनापि, सञ्जानमाना सञ्ञापि, चेतयमाना चेतनापि उप्पज्जती ति फस्सपञ्चमकेयेव परिग्गण्हाति।

सो "इमे फस्सपञ्चमका धम्मा किं निस्सिता" ति उपधारेन्तो "वत्थुनिस्सिता" ति पजानाति। वत्थु नाम करजकायो, यं सन्धाय B. 315 वुत्तं—"इदञ्च पन मे विञ्ञाणं एत्थ सितं एत्थ पटिबद्धं" ति। सो 15 अत्थतो भूतानि चेव उपादारूपानि च। एवमेत्थ वत्थु रूपं, फस्स-पञ्चमका नामं ति नामरूपमत्तमेव पस्सति। रूपञ्चेत्थ रूपक्खन्धो, नामं चत्तारो अरूपिनो खन्धा ति पञ्चक्खन्धमत्तं होति। नामरूप-विनिमुत्ता हि पञ्चक्खन्धा, पञ्चक्खन्धविनिमुत्तं वा नामरूपं नत्थि। R. 723 सो "इमे पञ्चक्खन्धा किं हेतुका" ति उपपरिक्खन्तो अविज्जादि-20 हेतुका" ति पस्सति। ततो "पच्चयो चेव पच्चयुप्पन्नञ्च इदं, अञ्ञो सत्तो वा पुग्गलो वा नत्थि, सुद्धसङ्खारपुञ्जमत्तमेवा" ति सप्पच्चयनाम-रूपवसेन तिलक्खणं आरोपेत्वा विपस्सनापटिपाटिया "अनिच्चं दुक्खं अनत्ता" ति सम्मसन्तो विचरति। सो अज्ज अज्जाति पटिवेधं आकङ्खमानो तथारूपे दिवसे उतुसप्पायं, पुग्गलसप्पायं, भोजनसप्पायं, 25 धम्मसवनसप्पायं वा लभित्वा एकपल्लङ्केन निसिन्नोव विपस्सनं मत्थकं पापेत्वा अरहत्ते पतिट्ठाति। एवमिमेसम्पि तिण्णं जनानं याव अरहत्ता कम्मट्ठानं कथितं होति।

इध पन भगवा अरूपकम्मट्ठानं कथेन्तो वेदनासीसेन[1] कथेसि। फस्सवसेन हि विञ्ञाणवसेन वा कथियमानं एतस्स न पाकटं होति, अन्धकारं विय खायति। वेदनावसेन पन पाकटं होति। कस्मा? वेदनानं उप्पत्तिया पाकटताय। सुखदुक्खवेदनानञ्हि उप्पत्ति पाकटा। 5 यदा सुखं उप्पज्जति, तदा सकलं सरीरं खोभेन्तं मद्दन्तं फरमानं अभिसन्दयमानं सतधोतसप्पिं खादापयन्तं विय, सतपाकतेलं मक्खयमानं विय, घटसहस्सेन परिळाहं निब्बापयमानं विय, "अहो सुखं, अहो सुखं" ति वाचं निच्छारयमानमेव उप्पज्जति। यदा दुक्खं उप्पज्जति, तदा सकलसरीरं खोभेन्तं मद्दन्तं फरमानं अभिसन्दयमानं तत्तफालं पवेसेन्तं विय, विसीनतम्बलोहेन आसिञ्चन्तं विय, सुक्खतिणवनप्पतिम्हि अरञ्ञे दारुउक्काकलापं खिपमानं विय "अहो दुक्खं, अहो दुक्खं" ति विप्पलापयमानमेव उप्पज्जति। इति सुखदुक्खवेदनानं उप्पत्ति पाकटा होति। 10

अदुक्खमसुखा पन दुद्दीपना अन्धकारेन विय अभिभूता। सा सुखदुक्खानं अपगमे सातासातपटिक्खेपवसेन मज्झत्ताकारभूता 15 अदुक्खमसुखा वेदना ति नयतो गण्हन्तस्स पाकटा होति। यथा किं? यथा अन्तरा पिट्ठिपासाणं आरुहित्वा पलातस्स मिगस्स अनुपदं गच्छन्तो मिगलुद्दको पिट्ठिपासाणस्स ओरभागेपि परभागेपि पदं B. 316 दिस्वा मज्झे अपस्सन्तोपि "इतो आरुळ्हो, इतो ओरुळ्हो मज्झे पिट्ठिपासाणे इमिना पदेसेन गतो भविस्सती" ति नयतो जानाति। 20 R. 724 एवं आरुळ्हट्ठाने पदं विय हि सुखवेदनाय उप्पत्ति पाकटा होति, ओरुळ्हट्ठाने पदं विय दुक्खवेदनाय उप्पत्ति पाकटा होति। इतो आरुय्ह, इतो ओरुय्ह, मज्झे एवं गतो ति नयतो गहणं विय सुखदुक्खानं अपगमे सातासातपटिक्खेपवसेन मज्झत्ताकारभूता अदुक्खमसुखा वेदना ति नयतो गण्हन्तस्स पाकटा होति। एवं भगवा पठमं 25 रूपकम्मट्ठानं कथेत्वा पच्छा अरूपकम्मट्ठानं वेदनावसेन निवत्तेत्वा दस्सेसि।

१. वेदनावसेन—रो०।

न केवलञ्च इधेव एवं दस्सेसि, महासतिपट्ठाने, मज्झिमनिकायम्हि सतिपट्ठाने, चूळतण्हासङ्खये, महातण्हासङ्खये, चूळवेदल्लसुत्ते, महावेदल्लसुत्ते, रट्ठपालसुत्ते, मागण्डियसुत्ते, धातुविभङ्गे आनेञ्ज-सप्पाये, सकले वेदनासंयुत्तेति एवं अनेकेसु सुत्तन्तेसु पठमं रूपकम्मट्ठानं
5 कथेत्वा पच्छा अरूपकम्मट्ठानं वेदनावसेन निवत्तेत्वा दस्सेसि। यथा च तेसु तेसु, एवं इमस्मिम्पि सक्कपञ्हे पठमं रूपकम्मट्ठानं कथेत्वा पच्छा अरूपकम्मट्ठानं वेदनावसेन निवत्तेत्वा दस्सेसि। रूपकम्मट्ठानं पनेत्थ वेदनाय आरम्मणमत्तकंमेव सङ्खित्तं, तस्मा पाळियं नारुळ्हं भविस्सति।

10 १७. अरूपकम्मट्ठाने यं तस्स पाकटं वेदनावसेन अभिनिवेसमुखं, तमेव दस्सेतुं **सोमनस्संपाहं, देवानमिन्दा** ति आदिमाह। तत्थ **दुविधेना** ति द्विविधेन, द्वीहि कोट्ठासेही ति अत्थो। **एवरूपं सोमनस्सं न सेवितब्बं** ति एवरूपं गेहसितसोमनस्सं न सेवितब्बं। गेहसित-सोमनस्सं नाम "तत्थ कतमानि छ गेहसितानि सोमनस्सानि?
15 चक्खुविञ्ञेय्यानं रूपानं इट्ठानं कन्तानं मनापानं मनोरमानं लोका-मिसपटिसंयुत्तानं पटिलाभं वा पटिलाभतो समनुपस्सतो[1], पुब्बे वा पटिलद्धपुब्बं अतीतं निरुद्धं विपरिणतं समनुस्सरतो उप्पज्जति सोम-नस्सं। यं एवरूपं सोमनस्सं,इदं वुचति गेहसितं सोमनस्सं" ति एवं छसु द्वारेसु वुत्तकामगुणनिस्सितं सोमनस्सं (म० नि० ३.२९९) ति।

B. 317 20 **एवरूपं सोमनस्सं सेवितब्बं** ति एवरूपं नेक्खम्मसितं सोमनस्सं सेवितब्बं। नेक्खम्मसितं सोमनस्सं नाम—"तत्थ कतमानि छ
R. 725 नेक्खम्मसितानि सोमनस्सानि? रुपानं त्वेव अनिच्चतं विदित्वा विपरिणामविरागनिरोधं पुब्बे चेव रूपा एतरहि च सब्बे ते रूपा अनिच्चा, दुक्खा, विपरिणामधम्माति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय
25 पस्सतो उप्पज्जति सोमनस्सं, यं एवरूपं सोमनस्सं, इदं वुचति नेक्खम्मसितं सोमनस्सं" (म० नि० ३.३०१) ति एवं छसु द्वारेसु

१. समनुस्सरतो—रो०।

इट्ठारम्मणे आपाथगते अनिच्चादिवसेन विपस्सनं पट्ठपेत्वा उस्सक्कापेतुं सक्कोन्तस्स "उस्सुक्किता मे विपस्सना" ति सोमनस्सजातस्स उप्पन्नं सोमनस्सं। सेवितब्बं ति इदं नेक्खम्मवसेन, विपस्सनावसेन, अनुस्सतिवसेन, पठमज्झानादिवसेन च उप्पज्जनकसोमनस्सं सेवितब्बं नाम। 5

तत्थ **यं चे सवितक्कं सविचारं** ति तस्मिम्पि नेक्खम्मसिते सोमनस्से यं नेक्खम्मवसेन, विपस्सनावसेन, अनुस्सतिवसेन, पठमज्झानवसेन च उप्पन्नं सवितक्कं सविचारं सोमनस्सं ति जानेय्य। **यं चे अवितक्कं अविचारं** ति यं पन दुतियततियज्झानवसेन उप्पन्नं अवितक्कं अविचारं सोमनस्सं ति जानेय्य। **ये अवितक्के अविचारे,** 10 **ते पणीततरे** ति एतेसुपि द्वीसु यं अवितक्कं अविचारं, तं पणीततरं ति अत्थो।

इमिना किं कथितं होति? छिन्नं अरहत्तं कथितं। कथं? एको किर[1] भिक्खु सवितक्कसविचारे सोमनस्से विपस्सनं पट्ठपेत्वा "इदं सोमनस्सं किं निस्सितं" ति उपधारेन्तो "वत्थुनिस्सितं" ति पजानाती 15 ति फस्सपञ्चमके वुत्तनयेनेव अनुक्कमेन अरहत्ते पतिट्ठाति। एको अवितक्कअविचारे सोमनस्से विपस्सनं पट्ठपेत्वा वुत्तनयेनेव अरहत्ते पतिट्ठाति। तत्थ अभिनिविट्ठसोमनस्सेसुपि सवितक्कसविचारतो अवितक्कअविचारं[2] पणीततरं। सवितक्कसविचारसोमनस्सविपस्सनातोपि अवितक्कअविचारविपस्सना पणीततरा। सवितक्कसविचार- 20 सोमनस्सफलसमापत्तितोपि अवितक्कअविचारमनस्सफलसमापत्तियेव पणीततरा। तेनाह भगवा "ये अवितक्के अविचारे, ते पणीततरे" ति।

१८. **एवरूपं दोमनस्सं न सेवितब्बं** ति एवरूपं गेहसितदोमनस्सं B. 318 न सेवितब्बं। गेहसितदोमनस्सं नाम—"तत्थ कतमानि छ गेहसितानि 25 दोमनस्सानि? चक्खुविञ्ञेय्यानं रूपानं इट्ठानं कन्तानं मनापानं

१. हि०—रो०। २. ०तं—रो०।

R. 726 मनोरमानं लोकामिसपटिसंयुत्तानं अप्पटिलाभं वा अप्पटिलाभतो समनुपस्सतो पुब्बे वा अपटिलद्धपुब्बं अतीतं निरुद्धं विपरिणतं समनूस्सरतो उप्पज्जति दोमनस्सं, यं एवरूपं दोमनस्सं, इदं वुच्चति गेहसितदोमनस्स (म० नि० ३.२९९) ति । एव छसु द्वारेसु 5 इट्ठारम्मणं नानुभविं, नानुभविस्सामि नानुभवामी ति वितक्कयतो उप्पन्नं कामगुणनिस्सितं दोमनस्सं ।

एवरूपं दोमनस्सं सेवितब्बं (दी० नि० २.२०८) ति एवरूपं नेक्खम्मसितदोमनस्सं सेवितब्बं । नेक्खम्मसितदोमनस्सं नाम—''तत्थ कतमानि छ नेक्खम्मसितानि दोमनस्सानि ? रूपानं त्वेव अनिच्चतं 10 विदित्वा विपरिणामविरागनिरोधं पुब्बे चेव रूपा एतरहि च सब्बे ते रूपा अनिच्चा, दुक्खा, विपरिणामधम्मा ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दिस्वा अनुत्तरेसु विमोक्खेसु पिहं उपट्ठापेति 'कुदास्सु नामाहं तदायतनं उपसम्पज्ज विहरिस्सामि, यदरिया एतरहि आयतनं उपसम्पज्ज विहरन्ती' ति । इति अनुत्तरेसु विमोक्खेसु पिहं उपट्ठापयतो 15 उप्पज्जति पिहपच्चया दोमनस्सं, यं एवरूपं दोमनस्सं, इदं वुच्चति नेक्खम्मसितदोमनस्सं'' (म० नि० ३.२९९) ति एवं छसु द्वारेसु इट्ठारम्मणे आपाथगते अनुत्तरविमोक्खसङ्खातअरियफलधम्मेसु पिहं उपट्ठपेत्वा तदधिगमाय अनिच्चादिवसेन विपस्सनं पट्ठपेत्वा उस्सुक्कापेतुमसक्कोन्तस्स इमम्पि पक्खं, इमम्पि मासं, इमम्पि संवच्छरं विपस्सनं 20 उस्सुक्कापेत्वा अरियभूमिं पापुणितुं नासक्खिन्ति अनुसोचतो उप्पन्नं दोमनस्सं । **सेवितब्बं** ति इदं नेक्खम्मवसेन, विपस्सनावसेन, अनुस्सतिवसेन, पठमज्झानादिवसेन च उप्पज्जनकदोमनस्सं सेवितब्बं नाम ।

तत्थ **यं चे सवितक्कसविचारं** ति तस्मिम्पि[1] दुविधे दोमनस्से 25 गेहसितदोमनस्समेव सवितक्कसविचारदोमनस्सं नाम । नेक्खम्मवसेन विपस्सनावसेन अनुस्सतिवसेन पठमदुतियज्झानवसेन च उप्पन्नदोमनस्सं

१. तस्मि—रो० ।

पन अवितक्कअविचारदोमनस्सं ति वेदितब्बं। निप्परियायेन पन अवितक्कअविचारदोमनस्सं नाम नत्थि। दोमनस्सिन्द्रियञ्हि एकंसेन अकुसलञ्चेव सवितक्कसविचारञ्च। एतस्स[1] पन भिक्खुनो मञ्ञनवसेन सवितक्कसविचारं ति च अवितक्कअविचारं ति च वुत्तं। R. 727

तत्रायं नयो—इध भिक्खु दोमनस्सपच्चयभूते सवितक्कसविचार 5 B. 319 धम्मे अवितक्कअविचारधम्मे च[2] दोमनस्सपच्चया एव उप्पन्ने मग्गफलधम्मे च अञ्ञेसं पटिपत्तिदस्सनवसेन दोमनस्सं ति गहेत्वा "कदा नु खो मे सवितक्कसविचारदोमनस्से विपस्सना पट्ठपिता भविस्सति, कदा अवितक्कअविचारदोमनस्से" ति च "कदा नु खो मे सवितक्कसविचारदोमनस्सफलसमापत्ति निब्बत्तिता भविस्सति, कदा अवितक्कअविचार- 10 दोमनस्सफलसमापत्ती" ति चिन्तेत्वा तेमासिकं, छमासिकं, नवमासिकं वा पटिपदं गण्हाति। तेमासिकं गहेत्वा पठममासे एकं यामं जग्गति, द्वे यामे निद्दाय ओकासं करोति, मज्झिमे मासे द्वे यामे जग्गति, एकं यामं निद्दाय ओकासं करोति, पच्छिममासे चङ्कमनिसज्जायेव यापेति। एवञ्चे अरहत्तं पापुणाति, इच्चेतं कुसलं। नो चे 15 पापुणाति, विसेसेत्वा छमासिकं गण्हाति। तत्रापि द्वे द्वे मासे वुत्तनयेन पटिपज्जित्वा अरहत्तं पापुणितुं असक्कोन्तो विसेसेत्वा नवमासिकं गण्हाति। तत्रापि तयो तयो मासे तथेव पटिपज्जित्वा अरहत्तं पापुणितुं असक्कोन्तस्स "न लद्धं वत मे सब्रह्मचारीहि सद्धिं विसुद्धिपवारणं पवारेतुं" ति आवज्जतो दोमनस्सं उप्पज्जति, 20 अस्सुधारा पवत्तन्ति गामन्तपब्भारवासीमहासीवत्थेरस्स विय।

८. महासीवत्थेरवत्थु

थेरो किर अट्ठारस महागणे वाचेसि। तस्सोवादे ठत्वा तिंससहस्सा भिक्खू अरहत्तं पापुणिंसु। अथेको भिक्खु "मय्हं ताव अब्भन्तरे गुणा अप्पमाणा, कीदिसा नु खो मे आचरियस्स गुणा" ति

१. तस्स—रो०। २. व—रो०।

आवज्जन्तो पुथुज्जनभावं पस्सित्वा "अम्हाकं आचरियो अञ्ञेसं अवस्सयो होति, अत्तनो भवितुं न सक्कोति, ओवादमस्स दस्सामी" ति आकासेन गन्त्वा विहारसमीपे ओतरित्वा दिवाट्ठाने निसिन्नं आचरियं उपसङ्कमित्वा वत्तं दस्सेत्वा एकमन्तं निसीदि।

5 थेरो—"किं कारणा आगतोसि पिण्डपातिका" ति आह। एकं अनुमोदनं गण्हिस्सामी ति आगतोस्मि, भन्ते ति। ओकासो न भविस्सति, आवुसो ति? वितक्कमाळके ठितकाले पुच्छिस्सामि, भन्ते ति। तस्मिं ठाने अञ्ञे पुच्छन्ती ति। भिक्खाचारमग्गे, भन्ते R. 728 ति? तत्रापि अञ्ञे पुच्छन्ती ति। दुपट्टनिवासनट्ठाने, सङ्घाटि- B. 320 10 पारुपनट्ठाने, पत्तनीहरणट्ठाने, गामे चरित्वा आसनसालायं यागुपीत-काले, भन्ते ति। तत्थ अट्ठकथाथेरा अत्तनो कङ्खं विनोदेन्ति, आवुसोति। अन्तोगामतो निक्खन्तकाले पुच्छिस्सामि, भन्ते ति? तत्रापि अञ्ञे पुच्छन्ति, आवुसो ति। अन्तरामग्गे, भन्ते, भोजन-सालायं भत्तकिच्चपरियोसाने, भन्ते, दिवाट्ठाने, पादधोवनकाले, 15 मुखधोवनकाले, भन्ते ति? तदा अञ्ञे पुच्छन्ती ति। ततो पट्ठाय याव अरुणा अपरे पुच्छन्ति, आवुसो ति। दन्तकट्ठं गहेत्वा मुख-धोवनत्थं गमनकाले, भन्ते ति? तदा अञ्ञे पुच्छन्ती ति। मुखं-धोवित्वा आगमनकाले, भन्ते ति? तत्रापि अञ्ञे पुच्छन्ती ति। सेनासनं पविसित्वा निसिन्नकाले, भन्ते ति? तत्रापि अञ्ञे पुच्छन्ती 20 ति। भन्ते, ननु मुखं धोवित्वा सेनासनं पविसित्वा तयो चत्तारो पल्लङ्के उसुम[1] गाहापेत्वा[2] योनिसोमनसिकारे कम्मं करोन्तानं ओकासकालेन भवितब्बं सिया, मरणखणम्पि न लभिस्सथ, भन्ते, फलकस्सदिसत्थ भन्ते परस्स अवस्सयो होथ, अत्तनो भवितुं म सक्कोथ, न मे तुम्हाकं अनुमोदनाय अत्थो ति आकासे उप्पतित्वा अगमासि।

25 थेरो—"इमस्स भिक्खुनो परियत्तिया कम्मं नत्थि, मय्हं पन अङ्कुसको भविस्सामी ति आगतो" ति ञत्वा "इदानि ओकासो न

१. रो॰ पोत्थके नत्थि। २. उह्यपेत्वा—रो॰।

भविस्सति, पच्चूसकाले गमिस्सामी" ति पत्तचीवरं समीपे कत्वा सब्बं दिवसभागं पठमयाममज्झिमयामञ्च धम्मं वाचेत्वा पच्छिमयामे एकस्मिं थेरे उद्देसं गहेत्वा निक्खन्ते पत्तचीवरं गहेत्वा तेनेव सद्धिं निक्खन्तो। निसिन्नअन्तेवासिका आचरियो केनचि पपञ्चेन निक्खन्तो ति मञ्ञिंसु। निक्खन्तो थेरो कोचि देव समानाचरियभिक्खू ति 5 सञ्ञं अकासि। थेरो किर "मादिसस्स अरहत्तं नाम किं, द्वीहतीहेनेव पापुणित्वा पच्चागमिस्सामी" ति अन्तेवासिकानं अनारोचेत्वाव आसाळ्हीमासस्स जुण्हपक्खतेरसिया निक्खन्तो गामन्तपब्भारं गन्त्वा चङ्कमं आरुय्ह कम्मट्ठानं मनसिकरोन्तो तं दिवसं अरहत्तं गहेतुं नासक्खि। उपोसथदिवसे सम्पत्ते "द्वीहतीहेन अरहत्तं 10 गण्हिस्सामी ति आगतो[१], गहेतुं पन नासक्खि। तयो मासे पन R. 729 तीणि दिवसानि विय याव महापवारणा ताव जानिस्सामी" ति वस्सं उपगन्त्वापि गहेतुं नासक्खि। पवारणादिवसे चिन्तेसि "अहं द्वीहतीहेन अरहत्तं गण्हिस्सामी ति आगतो, तेमासेनापि नासक्खिं, B. 321 सब्रह्मचारिनो पन विसुद्धिपवारणं पवारेन्ती" ति। तस्सेवं चिन्तयतो 15 अस्सुधारा पवत्तन्ति[२]। ततो "न मञ्चे मय्हं चतूहि इरियापथेहि मग्गफलं उप्पज्जिस्सति, अरहत्तं अप्पत्वा नेव मञ्चे पिट्ठिं पसारेस्सामि, न पादे धोविस्सामी" ति मञ्चं उस्सापेत्वा ठपेसि। पुन अन्तोवस्सं पत्तं, अरहत्तं गहेतुं नासक्खियेव एकूनतिंसपवारणासु अस्सुधारा पवत्तन्ति। गामदारका थेरस्स पादेसु फालितट्ठानानि 20 कण्टकेहि सिब्बन्ति, दवं[३] करोन्तापि "अय्यस्स महासीवत्थेरस्स विय पादा होन्तू" ति दवं[४] करोन्ति।

थेरो तिंस संवच्छरे महापवारणादिवसे आलम्बणफलकं निस्साय ठितो "इदानि मे तिंस वस्सानि समणधम्मं करोन्तस्स, नासक्खिं अरहत्तं पापुणितुं, अद्धा मे इमस्मिं अत्तभावे मग्गो वा फलं वा नत्थि, 25

१. बहि आगतो—रो०। २. पवत्ति—रो०।
३. रवं—रो०। ४. खं—रो०।

न मे लद्धं सब्रह्मचारीहि सद्धिं विसुद्धिपवारणं पवारेतुं" ति चिन्तेसि। तस्सेवं चिन्तयतोव दोमनस्सं उप्पज्जि, अस्सुधारा पवत्तन्ति। अथ अविदूरट्ठाने एको देवधीता रोदमाना अट्ठासि। को एत्थ रोदसी ति? अहं, भन्ते, देवधीता ति। कस्मा रोदसी 5 ति? रोदमानेन मग्गफलं निब्बत्तितं, पेन अहम्पि एकं द्वे मग्गफलानि निब्बत्तेस्सामी ति रोदामि, भन्ते ति।

ततो थेरो—"भो महासीवत्थेर, देवतापि तया सद्धिं केळिं करोन्ति, अनुच्छविकं नु खो ते एतं" ति विपस्सनं वड्ढेत्वा सह परिसम्भिदाहि अरहत्तं अग्गहेसि। सो "इदानि निपज्जिस्सामी" ति 10 सेनासनं पटिजग्गित्वा मञ्चकं पञ्ञपेत्वा उदकट्ठाने उदकं पच्चुपट्ठपेत्वा "पादे धोविस्सामी" ति सोपानफलके निसीदि।

अन्तेवासिकापिस्स "अम्हाकं आचारियस्स समणधम्मं कातुं गच्छन्तस्स तिंस वस्सानि, सक्खि[१] नु खो विसेसं निब्बत्तेतुं, नासक्खी[२]" ति आवज्जयमाना "अरहत्तं पत्वा पादधोवनत्थं निसिन्नो" 15 ति दिस्वा "अम्हाकं आचरियो अम्हादिसेसु अन्तेवासिकेसु तिट्ठन्तेसु 'अत्तनाव पादे धोविस्सती' ति अट्ठानमेतं, अहं धोविस्सामि अहं R. 730 धोविस्सामी" ति तिंससहस्सानिपि आकासेन गन्त्वा वन्दित्वा "पादे B. 322 धोविस्साम, भन्ते" ति आहंसु। आवुसो, इदानि तिंस वस्सानि होन्ति मम पादानं अधोतानं, तिट्ठथ, तुम्हे, अहमेव धोविस्सामी 20 ति।

सक्कोपि आवज्जन्तो—"मय्हं, अय्यो, महासिवत्थेरो अरहत्तं पत्तो तिंससहस्सानं अन्तेवासिकानं 'पादे धोविस्सामा' ति आगतानं पादे धोवितुं न देति। मादिसे पन उपट्ठाके तिट्ठन्ते 'मय्हं अय्यो सयं पादे धोविस्सती' ति अट्ठानमेतं, अहं धोविस्सामी" ति सन्निट्ठानं 25 कत्वा सुजाताय देविया सद्धिं भिक्खुसंघस्स सन्तिके पातुरहोसि।

१. असक्खि—रो०। २. सक्खी ति—रो०।

सो सुजं असुरकञ्ञं पुरतो कत्वा "अपेथ, भन्ते, मातुगामो" ति ओकासं कारेत्वा थेरं उपसङ्कमित्वा वन्दित्वा पुरतो उक्कुटिको निसीदित्वा "पादे धोविस्सामि, भन्ते" ति आह। केसिय, इदानि मे तिंस वस्सानि पादानं अधोतानं, देवतानञ्च पकतियापि मनुस्ससरीरगन्धो नाम जेगुच्छो, योजनसते ठितानम्पि कण्ठे 5 आसत्तकुणपं विय होति, अहमेव धोविस्सामी ति। भन्ते, अयं गन्धो नाम न पञ्ञायति, तुम्हाकं पन सीलगन्धो छ देवलोके अतिक्कमित्वा उपरि भवग्गं पत्वा ठितो। सीलगन्धतो अञ्ञो उत्तरितरो गन्धो नाम नत्थि, भन्ते, तुम्हाकं सीलगन्धेनम्हि आगतो ति वामहत्थेन गोप्फकसन्धियं गहेत्वा दक्खिणहत्थेन पादतलं परिमज्जि। दहरकुमार- 10 स्सेव पादा अहेसुं। सक्को पादे धोवित्वा वन्दित्वा देवलोकमेव गतो।

एवं "न लभामि सब्रह्मचारीहि सद्धिं विसुद्धिपवारणं पवारेतुं" ति आवज्जन्तस्स उप्पन्नं दोमनस्सं निस्साय भिक्खुनो मञ्ञनवसेन विपस्सनाय आरम्मणम्पि विपस्सनापि मग्गोपि फलम्पि सवितक्क- 15 सविचारदोमनस्सं ति च अवितक्काविचारदोमनस्सं ति च वुत्तं ति वेदितब्बं।

तत्थ एको भिक्खु सवितक्कसविचारदोमनस्से विपस्सनं पट्ठपेत्वा इदं दोमनस्सं किं निस्सितं ति उपधारेन्तो वत्थुनिस्सितं ति पजानाती ति फस्सपञ्चमके वुत्तनयेनेव अनुक्कमेन अरहत्ते पतिट्ठाति। एको अवि- 20 तक्काविचारे दोमनस्से विपस्सनं पट्ठपेत्वा वुत्तनयेनेव अरहत्ते पतिट्ठाति। तत्थ अभिनिविट्ठदोमनस्सेसु पि सवितक्कसविचारतो अवितक्कअविचारं पणीततरं। सवितक्कसविचारदोमनस्सविपस्सनातो पि अवितक्का- R. 731 विचारदोमनस्सविपस्सना पणीततरा। सवितक्कसविचारदोमनस्स- फलसमापत्तितोपि अवितक्कविचारदोमनस्सफलसमापत्तियेव पणीततरा। 25 तेनाह भगवा—"ये अवितक्कअविचारे ते[1] पणीततरे" ति। B. 323

[1] से—रो०।

१९. **एवरूपा उपेक्खा न सेवितब्बा** (दी० नि० २.२०८) ति एवरूपा गेहसितउपेक्खा न सेवितब्बा। गेहसितउपेक्खा चक्खुना रूपं दिस्वा उप्पज्जति उपेक्खा बालस्स मूळ्हस्स पुथुज्जनस्स अनोधिजिनस्स अविपाकजिनस्स अनादीनवदस्साविनो अस्सुतवतो पुथुज्जनस्स,
5 या एवरूपा उपेक्खा, रूपं सा नातिवत्तति, तस्मा सा उपेक्खा गेहसिता ति वुच्चती" ति एवं[1] छसू द्वारेसु इट्ठारम्मणे आपाथगते गुळपिण्डिके निलीनमक्खिका विय रूपादीनि अनतिवत्तमाना तत्थेव लग्गा लग्गिता हुत्वा उप्पन्ना कामगुणनिस्सिता उपेक्खा न सेवितब्बा।

10 **एवरूपा उपेक्खा सेवितब्बा** ति एवरूपा नेक्खम्मसिता उपेक्खा सेवितब्बा। नेक्खम्मसिता उपेक्खा नाम—"तत्थ कतमा छ नेक्खम्मसिता उपेक्खा? रूपानं त्वेव अनिच्चतं विदित्वा विपरिणामविरागनिरोधं 'पुब्बे चेव रूपा एतरहि च, सब्बे ते रूपा अनिच्चा, दुक्खा, विपरिणामधम्मा' ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय पस्सतो उप्पज्जति
15 उपेक्खा, या एवरूपा उपेक्खा, रूपं सा अतिवत्तति, तस्मा सा उपेक्खा नेक्खम्मसिता ति वुच्चती" (म० नि० ३.३००) ति। एवं छसु द्वारेसु इट्ठानिट्ठआरम्मणे आपाथगते इट्ठे अरज्जन्तस्स, अनिट्ठे अदुस्सन्तस्स, असमपेक्खनेन असम्मुय्हन्तस्स उप्पन्ना विपस्सना ञाणसम्पयुत्ता उपेक्खा। अपिच वेदनासभागा तत्र मज्झत्तुपेक्खापि
20 एत्थ उपेक्खाव। तस्मा **सेवितब्बा** ति अयं नेक्खम्मवसेन विपस्सनावसेन अनुस्सतिट्ठानवसेन पठमदुतियततियचतुत्थज्झानवसेन च उप्पज्जनकउपेक्खा सेवितब्बा नाम।

एत्थ **यं चे सवितक्कं सविचारं** ति तायपि नेक्खम्मसितउपेक्खाय यं नेक्खम्मवसेन विपस्सनावसेन अनुस्सतिट्ठानवसेन पठमज्झानवसेन
25 च उप्पन्नं सवितक्कसविचारं उपेक्खं ति जानेय्य। **यं चे अवितक्कं अविचारं** ति यं पन दुतियज्झानादिवसेन उप्पन्नं अवितक्काविचारं

१. एवमेव—रो०।

उपेक्खं ति जानेय्य । **ये अवितक्के अविचारे ते पणीततरे** ति एतासु R. 732
द्वीसु या अवितक्कअविचारा, सा पणीततराति अत्थो । इमिना किं
कथितं होति ? द्विन्नं अरहत्तं कथितं । एको[1] हि[2] भिक्खु सवितक्क- B. 324
सविचार उपेक्खाय विपस्सनं पट्ठपेत्वा अयं उपेक्खा किं निस्सिता ति
उपधारेन्तो वत्थुनिस्सिता ति पजानाती ति फस्सपञ्चमके वुत्तनयेनेव 5
अनुक्कमेन अरहत्ते पतिट्ठाति । एको अवितक्काविचाराय उपेक्खाय
विपस्सनं पट्ठपेत्वा वुत्तनयेनेव अरहत्ते पतिट्ठाति । तत्थ अभिनिविट्ठ-
उपेक्खासुपि सवितक्कसविचारतो अवितक्काविचारा पणीततरा ।
सवितक्क-सविचार-उपेक्खा-विपस्सनातोपि अवितक्काविचारउपेक्खा-
विपस्सनापणीततरा । सवितक्कसविचार-उपेक्खा-फलसमापत्तितोपि 10
अवितक्काविचारूपेक्खाफलसमापत्तियेव पणीततरा । तेनाह भगवा
"ये अवितक्के अविचारे ते पणीततरे" ति ।

एवं पटिपन्नो खो, देवानमिन्द, भिक्खु **पपञ्चसञ्ञासङ्खानिरोध-
सारुप्पगामिनिं पटिपदं पटिपन्नो होती** ति भगवा अरहत्तनिकूटेन
देसनं निट्ठपेसि । सक्को पन सोतापत्तिफलं पत्तो । बुद्धानञ्हि 15
अज्झासयो हीनो न होति, उक्कट्ठोव होति । एकस्सपि बहूनम्पि धम्मं
देसेन्तो अरहत्ते नेव कूटं गण्हन्ति । सत्ता पन अत्तनो अनुरूपे
उपनिस्सये ठिता केचि सोतापन्ना होन्ति, केचि सकदागामी, केचि
अरहन्तो । राजा विय हि भगवा, राजकुमारा विय वेनेय्या । यथा
हि राजा भोजनकाले अत्तनो पमाणेन पिण्डं उद्धरित्वा राजकुमारानं 20
उपनेति । ते ततो अत्तनो मुखप्पमाणेनेव कबळं करोन्ति । एवं भगवा
अत्तज्झासयानुरूपाय देसनाय अरहत्तेनेव कूटं गण्हाति । वेनेय्या
अत्तनो उपनिस्सयप्पमाणेन ततो सोतापत्तिफलमत्तं वा सकदागामि-
अनागामिअरहत्तफलमेव वा गण्हन्ति । सक्को पन सोतापन्नो जातो ।
सोतापन्नो च[3] हुत्वा भगवतो पुरतोयेव चवित्वा तरुणसक्को हुत्वा 25
निब्बत्ति । देवतानञ्हि चवमानानं अत्तभावस्स गतागतट्ठानं नाम न

१. कथं ? —रो० । २. रो० पोत्थके नत्थि ।
३. व — रो० ।

पञ्ञायति, दीपसिखागमनं विय होति। तस्मा सेसदेवता न जानिंसु। सक्को पन सयं चुत्तता भगवा च अप्पटिहतञाणत्ता द्वे व जना जानिंसु।
R. 733 अथ सक्को चिन्तेसि "मय्हं हि[1] भगवता तीसु ट्ठानेसु निब्बत्तितफलमेव कथितं, अयञ्च पन मग्गो वा फलं वा सकुणिकाय विय उप्पतित्वा
5 गहेतुं न सक्का, आगमनीयपुब्बभागपटिपदाय अस्स भवितब्बं। हन्दाहं उपरि खीणासवस्स पुब्बभागपटिपदं पुच्छामी" ति।

B. 325 **९. पातिमोक्खसंवरवण्णना**

२१. ततो तं पुच्छन्तो **कथं पटिपन्नो पन मारिसा** (दि० नि० २.२०९) तिआदिमाह। तत्थ **पातिमोक्खसंवराया** ति उत्तमजेट्ठकसील-संवराय। **कायसमाचारं** पी तिआदि सेवितब्बकायसमाचारादिवसेन
10 पातिमोक्खसंवरदस्सनत्थं वुत्तं। सीलकथा च नामेसा कम्मपथवसेन वा पण्णत्तिवसेन वा कथेतब्बा होति।

तत्थ कम्मपथवसेन कथेन्तेन असेवितब्बकायसमाचारो ताव पाणातिपातअदिन्नादानमिच्छाचारेहि कथेतब्बो। पण्णत्तिवसेन कथेन्तेन कायद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदवीतिक्कमवसेन कथेतब्बो।
15 सेवितब्बकायसमाचारो पाणातिपातादिवेरमणीहि चेव कायद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदअवीतिक्कमेन च कथेतब्बो। असेवितब्बवची-समाचारो मुसावादादिवचीदुच्चरितेन चेव वचीद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापद-वीतिक्कमेन च कथेतब्बो। सेवितब्बवचीसमाचारो मुसावादादि-वेरमणीहि चेव वचीद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदअवीतिक्कमेन च कथेतब्बो।

20 परियेसना पन कायवाचाहि परियेसनायेव। सा कायवची-समाचारगहणेन गहितापि समाना यस्मा आजीवट्ठमकसीलं नाम एतस्मिं येव द्वारद्वये उप्पज्जति, न आकासे, तस्मा आजीवट्ठमकसील-दस्सनत्थं विसुं वुत्ता। तत्थ नसेवितब्बपरियेसना अनरियपरियेसनाय कथेतब्बा। सेवितब्बपरियेसना अरियपरियेसनाय। वुत्तञ्हेतं—

१. रो० पोत्थके नत्थि।

"द्वेमा, भिक्खवे, परियेसना अनरिया च परियेसना, अरिया च परियेसना। कतमा, च भिक्खवे, अनरिया परियेसना। इध, भिक्खवे, एकच्चो अत्तना जातिधम्मो समानो जातिधम्मं येव परियेसति, अत्तना जराधम्मो, ब्याधिधम्मो, मरणधम्मो, सोकधम्मो, संकिलेसधम्मो समानो संकिलेसधम्मं येव परियेसति। 5

किञ्च, भिक्खवे, जातिधम्मं वदेथ? पुत्तभरियं, भिक्खवे, जातिधम्मं, दासिदासं जातिधम्मं अजेळकं जातिधम्मं, कुक्कुटसूकरं जातिधम्मं, हत्थिगवास्सवळवं जातिधम्मं, जातरूपरजतं जातिधम्मं। जातिधम्मा हेते, भिक्खवे, उपधयो, एत्थायं गथितो मुच्छितो अज्झापन्नो अत्तना जातिधम्मो समानो जातिधम्मं येव परियेसति। 10

R. 734

B. 326

किञ्च, भिक्खवे, जराधम्मं वदेथ। पुत्तभरियं, भिक्खवे, जराधम्मं ...पे... जराधम्मं येव परियेसति।

किञ्च, भिक्खवे, ब्याधिधम्मं वदेथ? पुत्तभरियं, भिक्खवे, ब्याधिधम्मं, दासिदासं ब्याधिधम्मं, अजेळकं, कुक्कुटसूकरं, हत्थिगवास्सवळवं ब्याधिधम्मं। ब्याधिधम्मा हेते, भिक्खवे, उपधयो, एत्थायं गथितो मुच्छितो अज्झापन्नो अत्तना ब्याधिधम्मो समानो ब्याधिधम्मं येव परियेसति। 15

किञ्च, भिक्खवे, मरणधम्मं वदेथ। पुत्तभरियं, भिक्खवे, मरणधम्मं ...पे... मरणधम्मयेव परियेसति।

किञ्च, भिक्खवे, सोकधम्मं वदेथ? पुत्तभरियं ...पे... सोकधम्मं-येव परियेसति। 20

किञ्च, भिक्खवे, संकिलेसधम्मं वदेथ ...पे... जातरूमपरजतं संकिलेसधम्मं। संकिलेसधम्मा, हेते, भिक्खवे, उपधयो, एत्थायं गथितो मुच्छितो अज्झापन्नो अत्तना संकिलेसधम्मो समानो सकिलेसधम्मंयेव परियेसति। अयं[१], भिक्खवे, अनरिया परियेसना (म० नि० १.२१०–१२) ति। 25

१. अयं हि—रो०।

अपिच कुहनादिवसेन पञ्चविधा, अगोचरवसेन छब्बिधा वेज्जकम्मादिवसेन एकवीसतिविधा[१], एवं पवत्ता सब्बापि अनेसना अनरियपरियेसनायेवा ति वेदितब्बा ।

"कतमा च, भिक्खवे, अरिया परियेसना ? इध, भिक्खवे,
5 एकच्चो अत्तना जातिधम्मो समानो जातिधम्मे आदीनवं विदित्वा अजातं अनुत्तरं योगक्खेमं निब्बानं परियेसति, अत्तना जराधम्मो, ब्याधि-मरण-सोक-संकिलेसधम्मो समानो संकिलेसधम्मे आदीनवं
B. 327 विदित्वा असंकिलिट्ठं अनुत्तरं योगक्खेमं निब्बानं परियेसति । अयं अरिया परियेसना(म० नि० १.२१२) ति ।

10 अपिच पञ्च कुहनादीनि छ अगोचरे एकवीसतिविधञ्च अनेसनं वज्जेत्वा भिक्खाचरियाय धम्मेन समेन परियेसनापि अरियपरियेसनायेवा ति वेदितब्बा ।

R. 735 एत्थ च यो यो "न सेवितब्बो" ति वुत्तो, सो सो पुब्बभागे पाणातिपातादीनं सम्भारपरियेसनापयोगकरणगमनकालतो पट्ठाय
15 न सेवितब्बो व । इतरो आदितो पट्ठाय सेवितब्बो, असक्कोन्तेन चित्तम्पि उप्पादेतब्बं । अपिच संघभेदादीनं अत्थाय परक्कमन्तानं देवदत्तादीनं विय कायसमाचारो न सेवितब्बो, दिवसस्स द्वत्तिक्खत्तुं तिण्णं रतनानं उपट्ठानगमनादिवसेन पवत्तो धम्मसेनापतिमहामोग्गल्लानत्थेरादीनं विय कायसमाचारो सेवितब्बो । धनुग्गहपेसनादि-
20 वसेन[२] वाचं भिन्दन्तानं देवदत्तादीनं विय वचीसमाचारो न सेवितब्बो, तिण्णं रतनानं गुणकित्तनादिवसेन पवत्तो धम्मसेनापतिमहामोग्गल्लानत्थेरादीनं विय वचीसमाचारो सेवितब्बो । अनरियपरियेसनं परियेसन्तानं देवदत्तादीनं विय परियेसना न सेवितब्बा, अरियपरियेसनमेव परियेसन्तानं धम्मसेनापतिमहामोग्गल्लानत्थेरादीनं
25 विय परियेसना सेवितब्बा ।

१. एकवीसति—रो० । २. धनुग्गाहक०—रो० ।

एवं पटिपन्नो खो ति एवं असेवितब्बं कायवचीसमाचारं परियेसनञ्च पहाय सेवितब्बानं परिपूरिया पटिपन्नो देवानमिन्द भिक्खु पातिमोक्खसंवराय उत्तमजेट्ठकसीलसंवरत्थाय पटिपन्नो नाम होती ति भगवा खीणासवस्स आगमनीयपुब्बभागपटिपदं कथेसि।

१०. इन्द्रियसंवरवण्णना

२२. दुतियपुच्छायं **इन्द्रियसंवराया** (दी० नि० २.२१०) ति इन्द्रियानं पिधानाय, गुत्तद्वारताय संवुतद्वारताया ति अत्थो। विस्सज्जने पनस्स **चक्खुविञ्ञेय्यं रूपं** पीतिआदि सेवितब्बरूपादिवसेन इन्द्रियसंवरदस्सनत्थं वुत्तं। तत्थ **एवं वुत्ते** ति हेट्ठा सोमनस्सादिपञ्हाविस्सज्जनानं सुतत्ता[1] इमिनापि एवरूपेन भवितब्बं ति सञ्जातपटिभानो भगवता एवं वुत्ते सक्को देवानमिन्दो भगवन्तं एतदवोच। **एतं इमस्स खो अहं भन्ते** ति आदिकं वचनं अवोच। भगवापिस्स ओकासं दत्वा तुण्ही अहोसि। कथेतुकामोपि हि यो अत्थं सम्पादेतुं न सक्कोति, अत्थं सम्पादेतुं सक्कोन्तो वा न कथेतुकामो होति, न तस्स भगवा ओकासं करोति। अयं पन यस्मा कथेतुकामो चेव, सक्कोति च अत्थं सम्पादेतुं तेनस्स भगवा ओकासमकासि।

तत्थ **एवरूपं न सेवितब्बं** ति आदीसु अयं सङ्खेपो—यं रूपं पस्सतो रागादयो उप्पज्जन्ति, तं न सेवितब्बं न दट्ठब्बं न ओलोकेतब्बं ति अत्थो। यं पन पस्सतो असुभसञ्ञा वा सण्ठाति, पसादो वा उप्पज्जति, अनिच्चसञ्ञापटिलाभो वा होति, तं सेवितब्बं।

यं चित्तक्खरं चित्तब्यञ्जनम्पि सद्दं सुणतो रागादयो उप्पज्जन्ति, एवरूपो सद्दो न सेवितब्बो। यं पन अत्थनिस्सितं धम्मनिस्सितं कुम्भदासिगीतम्पि सुणन्तस्स पसादो वा[2] उप्पज्जति, निब्बिदा वा सण्ठाति, एवरूपो सद्दो सेवितब्बो।

5 10 B. 328 15 R. 736 20

१. ०च — रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

यं गन्धं घायतो रागादयो उप्पज्जन्ति, एवरूपो गन्धो न सेवितब्बो। यं पन गन्धं घायतो असुभसञ्ञादिपटिलाभो होति, एवरूपो गन्धो सेवितब्बो।

यं रसं सायतो रागादयो उप्पज्जन्ति, एवरूपो रसो न सेवितब्बो।
5 यं पन रसं सायतो आहारे पटिकूलसञ्ञा चेव उप्पज्जति, सायितपच्चया च कायबलं निस्साय अरियभूमिं ओक्कमितुं सक्कोति, महासीवत्थेरभागिनेय्यसीवसामणेरस्स विय परिभुञ्जन्तस्सेव किलेसक्खयो वा होति, एवरूपो रसो सेवितब्बो।

यं फोट्ठब्बं फुसतो रागादयो उप्पज्जन्ति, एवरूपं फोट्ठब्बं न
10 सेवितब्बं। यं पन फुसतो सारिपुत्तत्थेरादीनं विय आसवक्खयो चेव, वीरियञ्च सुपग्गहितं, पच्छिमा च जनता दिट्ठानुगतिं आपादनेन अनुग्गहिता होति, एवरूपं फोट्ठब्बं सेवितब्बं। सारिपुत्तत्थेरो किर तिंस वस्सानि मञ्चे पिट्ठिं न पसारेसि, तथा महामोग्गल्लानत्थेरो। महाकस्सपत्थेरो वीसवस्ससतं मञ्चे पिट्ठिं न पसारेसि, अनुरुद्धत्थेरो
B. 329 15 पञ्ञास वस्सानि, भद्दियत्थेरो तिंस वस्सानि, सोणत्थेरो अट्ठारस वस्सानि, रट्ठपालत्थेरो द्वादस, आनन्दत्थेरो पन्नरस, राहुलत्थेरो द्वादस, बाकुलत्थेरो असीतिं वस्सानि, नाळकत्थेरो यावपरिनिब्बाना मञ्चे पिट्ठिं न पसारेसी ति।

ये मनोविञ्ञेय्ये धम्मे समन्नाहरन्तस्स रागादयो उप्पज्जन्ति,
20 "अहो, वत यं परेसं परवित्तूपकरणं तं ममस्सा" तिआदिना नयेन वा अभिज्झादीनि आपाथमागच्छन्ति एवरूपा धम्मा न सेवितब्बा। "सब्बे सत्ता अवेरा होन्तु" ति एवं मेत्तादिवसेन, ये वा पन तिण्णं थेरानं धम्मा, एवरूपा सेवितब्बा। तयो किर थेरा वस्सूपनायिक-
R. 737 दिवसे कामवितक्कादयो अकुसलवितक्का न वितक्केतब्बा ति कतिकं
25 अकंसु। अथ पवारणदिवसे संघत्थेरो संघनवकं पुच्छि—"आवुसो, इमस्मिं तेमासे कित्तके ठाने चित्तस्स धावितुं दिन्नं" ति? न, भन्ते, परिवेणपरिच्छेदतो बहि धावितुं अदासिं ति। दुतियं पुच्छि—"तव

आवुसो'' ति ? निवासगेहतो, भन्ते, बहि धावितुं न अदासिं ति। अथ द्वे पि थेरं पुच्छिसु "तुम्हाकं पन, भन्ते" ति ? नियकज्झत्तखन्ध-पञ्चकतो, आवुसो, बहि धावितुं न अदासिं ति। तुम्हेहि, भन्ते, दुक्करं कतं ति। एवरूपो मनोविञ्ञेय्यो धम्मो सेवितब्बो।

२३. **एकन्तवादा** (दी० नि० २.२११) ति एकोयेव अन्तो 5 वादस्स एतेसं, न द्वेधा गतवादा ति एकन्तवादा, एकंयेव वदन्ती ति पुच्छति। **एकन्तसीला** ति एकाचारा। **एकन्तछन्दा** ति एकलद्धिका। **एकन्तअज्झोसाना** ति एकन्तपरियोसाना।

अनेकधातु नानाधातु खो देवानमिन्द लोको ति देवानमिन्द, अयं लोको अनेकज्झासयो नानज्झासयो। एकस्मिं गन्तुकामे एको ठातु- 10 कामो होति। एकस्मिं ठातुकामे एको सयितुकामो होति। द्वे सत्ता एकज्झासया नाम दुल्लभा। तस्मिं अनेकधातुनानाधातुस्मिं लोके यं यदेव धातुं यं यदेव[1] अज्झासयं सत्ता अभिनिविसन्ति गण्हन्ति, तं तदेव। **थामसा परामासा** ति थामेन च परामासेन च। **अभिनिविस्स वोहरन्ती** ति सुट्ठु गण्हित्वा वोहरन्ति, कथेन्ति दीपेन्ति कित्तेन्ति[2]। 15 **इदमेव सच्चं मोघमञ्ञं** ति इदं अम्हाकमेव वचनं सच्चं, अञ्ञेसं वचनं मोघं तुच्छं निरत्थकं ति।

अच्चन्तनिट्ठा ति अन्तो वुच्चति विनासो, अन्तं अतीता निट्ठा B. 330 एतेसं ति अच्चन्तनिट्ठा। या एतेसं निट्ठा, यो परमस्सासो निब्बानं, तं सब्बेसं विनासातिक्कन्तं निच्चं ति वुच्चति। **योगक्खेमो** निब्बानस्सेव 20 नामं, अच्चन्तो योगक्खेमो एतेसं ति **अच्चन्तयोगक्खेमी**। सेट्ठट्ठेन ब्रह्मं अरियमग्गं चरन्ती ति **ब्रह्मचारी**। अच्चन्तत्थाय ब्रह्मचारी **अच्चन्तब्रह्मचारी**। **परियोसानं** तिपि निब्बानस्स नामं। अच्चन्तं परियोसानं एतेसं ति **अच्चन्तपरियोसाना**।

तण्हसङ्खयविमुत्ता ति तण्हासङ्खयो ति मग्गोपि निब्बानम्पि। 25 R. 738 मग्गो तण्हं सङ्खिणा ति विनासेती ति तण्हासङ्खयो। निब्बानं यस्मा

१. यं — रो०। २. किं ति — रो०।

तं आगम्म तण्हा सङ्खियति विनस्सति, तस्मा तण्हासङ्खयो। तण्हासङ्खयेन मग्गेन विमुत्ता, तण्हासङ्खये निब्बाने विमुत्ता अधिमुत्ता ति **तण्हासङ्खयविमुत्ता**।

एत्तावता च भगवता चुद्दसपि महापञ्हा ब्याकता होन्ति।
5 चुद्दस महापञ्हा[1] नाम इस्सामच्छरियं एको पञ्हो, पियाप्पिय एको छन्दो एको, वितक्को एको, पपञ्चो एको, सोमनस्सं एको, दोमनस्सं एको उपेक्खा एको, कायसमाचारो एको, वचीसमाचारो एको, परियेसना एको, इन्द्रियसंवरो एको, अनेकधातु एको, अच्चन्तनिट्ठा एको ति।

एजा (दी० नि० २.२१२) ति चलनट्ठेन तण्हा वुच्चति। सा
10 पीळनट्ठेन **रोगो**, अन्तो पदुस्सनट्ठेन **गण्डो**, अनुप्पविट्ठट्ठेन **सल्लं**। **तस्मा अयं पुरिसो** ति यस्मा एजा अत्तना कतकम्मानुरूपेन पुरिसं तत्थ तत्थ अभिनिब्बत्तत्थाय कड्ढति, तस्मा अयं पुरिसो तेसं तेसं भवानं वसेन उच्चावचं आपज्जति। ब्रह्मलोके उच्चो होति, देवलोके अवचो; देवलोके उच्चो, ममुस्सलोके अवचो; मनुस्सलोके उच्चो,
15 अपाये अवचो[2]। **येसाहं भन्ते** ति येसं अहं भन्ते। सन्धिवसेन पनेत्थ "येसाहं" ति होति। **यथासुतं यथापरियत्तं** ति यथा मया सुतो चेव उग्गहितो च, एवं। **धम्मं देसेमी** ति सत्तवतपदं धम्मं देसेमि।
B. 331 **न चाहं तेसं** ति अहं पन तेसं सावको न सम्पज्जामि। **अहं खो पन भन्ते** ति आदिना अत्तनो सोतापन्नभावं जानापेति।

११. सोमनस्सपटिलाभकथावण्णना

20 २५. **वेदपटिलाभं** (दी० नि० २.२१३) ति तुट्ठिपटिलाभं। **देवासुरसङ्गामो** ति देवानञ्च असुरानञ्च सङ्गामो। **समुपब्यूळ्हो** ति समापन्नो नलाटेन नलाटं पहरणाकारप्पत्तो विय। एतेसं किर कदाचि महासमुद्दपिट्ठे सङ्गामो होति तत्थ पन छेदनविज्झनादीहि

१. पि पञ्हा—रो०। २. नीचो—रो०।

अञ्ञमञ्ञं घातो नाम नत्थि, दारुमेण्डकयुद्धं विय जयपराजयमत्तमेव होति। कदाचि देवा जिनन्ति, कदाचि असुरा। तत्थ यस्मिं सङ्गामे देवा पुन अपच्चा गमनाय असुरे जिनिंसु, तं सन्धाय **तस्मिं खो पन भन्ते** ति आदिमाह। **उभयमेतं** ति उभयं एतं। दुविधम्पि ओजं एत्थ देवलोके देवायेव परिभुञ्जिस्सन्ती ति एवमस्स आवज्जन्तस्स बलवपीतिसोमनस्सं उप्पज्जि। **सदण्डावचरो** ति सदण्डावचरको, दण्डग्गहणेन सत्थग्गहणेन सद्धिं अहोसि, न निक्खित्तदण्डसत्थो ति दस्सेति। **एकन्तनिब्बिदाया** ति एकन्तेनेव वट्टे निब्बिन्दनत्थाया ति सब्बं महागोविन्दसुत्ते वुत्तमेव।

R. 739

पवेदेसी ति कथेसि दीपेसि। **इधेवा** ति इमस्मिं येव ओकासे। **देवभूतस्स मे सतो** ति देवस्स मे सतो। **पुनरायु च मे लद्धो** ति पुन अञ्ञेन कम्मविपाकेन मे जीवितं लद्धं ति, इमिना अत्तनो चुतभावञ्चेव उपपन्नभावञ्च आविकरोति।

२६. **दिविया काया** (दी०नि० २.२१४) ति दिब्बा अत्तभावा। **आयुं हित्वा अमानुसं** ति दिब्बं आयुं जहित्वा। **अमूळ्हो गब्भमेस्सामी** ति नियतगतिकत्ता अमूळ्हो हुत्वा। **यत्थ मे रमती मनो** ति यत्थ मे मनो रमिस्सति, तत्थेव खत्तियकुलादीसु गब्भं उपगच्छिस्सामी ति सत्तक्खत्तुं देवे च मानुसे चा ति इममत्थं दीपेति।

ञायेन विहरिस्सामी ति मनुस्सेसु उपपन्नोपि मातरं जीविता वोरोपनादीनं अभब्बत्ता ञायेन कारणेन समेन विहरिस्सामी ति अत्थो[1]।

सम्बोधि चे भविस्सती ति इदं सकदागामिमग्गं सन्धाय वदति, सचे सकदागामी भविस्सामी ति दीपेति। **अञ्ञाता विहरिस्सामी** ति अञ्ञाता आजानितुकामो हुत्वा विहरिस्सामि। **स्वेव अन्तो भविस्सती** ति सो एव मे मनुस्सलोके अन्तो भविस्सती ति।

B. 332

१. रो० पोत्थके नत्थि।

पुन देवो भविस्सामि, देवलोकस्मिं उत्तमो ति पुन देवलोकस्मिं उत्तमो सक्को देवानमिन्दो भविस्सामी ति वदति ।

अन्तिमे वत्तमानम्ही ति अन्तिमे भवे वत्तमाने । **सो निवासो भविस्सतो** ति ये ते आयुना च पञ्ञाय च अकनिट्ठा जेट्ठका
R. 740 5 सब्बदेवेहि पणीततरा देवा, अवसाने मे सो निवासो भविस्सति । अयं किर ततो सक्कत्तभावतो चुतो तस्मिं अत्तभावे अनागामिमग्गस्स पटिलद्धत्ता उद्धंसोतो अकनिट्ठगामी हुत्वा अविहादीसु निब्बत्तन्तो अवसाने अकनिट्ठे निब्बत्तिस्सति । तं सन्धाय एवमाह । एस किर अविहेसु कप्पसहस्सं वसिस्सति[1], अतप्पेसु द्वे कप्पसहस्सानि, सुदस्सेसु
10 चत्तारि कप्पसहस्सानि, सुदस्सीसु अट्ठ, अकनिट्ठेसु सोळसा ति एकतिंस कप्पसहस्सानि ब्रह्मआयुं अनुभविस्सति । सक्को देवराजा अनाथपिण्डिको गहपति विसाखा महाउपासिका ति तयोपि हि इमे एकप्पमाणआयुका एव, वट्टाभिरतसत्ता नाम एतेहि सदिसा सुखभागिनो नाम नत्थि ।

15 २७. **अपरियोसितसङ्कप्पो** (दी० नि० २.२१५) ति अनिट्ठित-मनोरथो । **यस्सु मञ्ञामि समणे** ति ये च समणे पविवित्तविहारिनो ति मञ्ञामि ।

आराधना ति सम्पादना । **विराधना** ति असम्पादना । **न सम्पायन्ती** ति सम्पादेत्वा कथेतुं न सक्कोन्ति ।

20 **आदिच्चबन्धुनं** ति आदिच्चोपि गोतमगोत्तो, भगवापि गोतमगोत्तो, तस्मा एवमाह । **यं करोमसी** ति यं पुब्बे ब्रह्मुनो नमक्कारं करोम । **सम देवेही** ति देवेहि सद्धिं, इतो पट्ठाय इदानि अम्हाकं ब्रह्मुनो नमक्कारकरणं नत्थी ति दस्सेति । **सामं करोमा** ति नमक्कारं करोम ।

१. वसति—रो० । १. अज्झत्ता पञ्हा—रो० ।

२८. **परामसित्वा** (दी० नि० २.२१६) ति तुट्ठाचित्तो सहायं हत्थेन हत्थम्हि पहरन्तो विय पथविं पहरित्वा, सक्खिभावत्थाय वा पहरित्वा "यथा त्वं निच्चलो, एवमाहं भगवती" ति। अज्झिट्ठपञ्हा[1] ति अज्झेसितपञ्हा पत्थितपञ्हा। सेसं सब्बत्थ उत्तानमेवा ति। B. 333

सक्कपञ्हसुत्तवण्णना निट्ठिता।

—०—

(९) महासतिपट्ठानसुत्तवण्णना

१. उद्देसवारकथावण्णना

B. 334
R. 741

१. **एवं मे सुत्तं** (दी॰ नि॰ २.२१७) ति महासतिपट्ठानसुत्तं। तत्रायमपुब्बपदवण्णना। **एकायनो अयं, भिक्खवे मग्गो** ति कस्मा भगवा इदं सुत्तमभासि ? कुरुरट्ठवासीनं गम्भीरदेसनापटिग्गहणसमत्थताय। कुरुरट्ठवासिनो किर भिक्खू भिक्खुनियो उपासका उपासिकायो
5 उतुपच्चयादिसम्पन्नत्ता तस्स रट्ठस्स सप्पायउतुपच्चयसेवनेन निच्चं कल्लसरीरा कल्लचित्ता च होन्ति। ते चित्तसरीरकल्लताय अनुग्गहितपञ्ञाबला गम्भीरकथं पटिग्गहेतुं समत्था होन्ति। तेन नेसं भगवा इमं गम्भीरदेसनापटिग्गहणसमत्थतं सम्पस्सन्तो एकवीसतिया ठानेसु कम्मट्ठानं अरहत्ते पक्खिपित्वा इदं गम्भीरत्थं
10 महासतिपट्ठानसुतं अभासि। यथा हि पुरिसो सुवण्णचङ्कोटकं लभित्वा तत्थ नानापुप्फानि पक्खिपेय्य, सुवण्णमञ्जूसं वा पन लभित्वा सत्तरतनानि पक्खिपेय्य, एवं भगवा कुरुरट्ठवासिपरिसं लभित्वा गम्भीरदेसनं देसेसि। तेनेवेत्थ अञ्ञानिपि गम्भीरत्थानि इमस्मिं
R. 742 दीघनिकाये महानिदानं मज्झिमनिकाये सतिपट्ठानं सारोपमं,
15 रुक्खोपमं रट्ठपालं, मागण्डियं, आनेञ्जसप्पायं ति अञ्ञानिपि सुत्तानि देसेसि।

अपिच तस्मिं जनपदे चतस्सो परिसा पकतियाव सतिपट्ठानभावनानुयोगमनुयुत्ता विहरन्ति, अन्तमसो दासकम्मकरपरिजनापि सतिपट्ठानपटिसंयुत्तमेव कथं कथेन्ति। उदकतित्थसुत्तकन्तट्ठानादीसुपि
20 निरत्थककथा नाम नप्पवत्तति। सचे काचि इत्थी "अम्म, त्वं कतरं सतिपट्ठानभावनं मनसिकरोसी" ति पुच्छिता "न किञ्ची" ति वदति, तं गरहन्ति "धिरत्थु, तव जीवितं, जीवमानापि त्वं मतसदिसा" ति। अथ नं "मा दानि पुन एवमकासी" ति ओवदित्वा अञ्ञतरं

सतिपट्ठानं उग्गण्हापेन्ति। या पन "अहं असुकसतिपट्ठानं नाम मनसिकरोमी" ति वदति, तस्सा "साधु साधु" ति साधुकारं कत्वा "तव जीवितं सुजीवितं, त्वं नाम मनुस्सत्तं पत्ता, तवत्थाय सम्मासम्बुद्धो उप्पन्नो" तिआदीहि पसंसन्ति। न केवलञ्चेत्थ मनुस्सजातिकाव सतिपट्ठानमनसिकारयुत्ता, ते निस्साय विहरन्ता 5 तिरच्छानगतापि।

तत्रिदं वत्थु—एको किर नटको सुवपोतकं गहेत्वा सिक्खापेन्तो B. 335 विचरति। सो भिक्खुनुपस्सयं उपनिस्साय वसित्वा गमनकाले सुवपोतकं पमुस्सित्वा गतो। तं सामणेरियो गहेत्वा पटिजग्गिंसु। बुद्धरक्खितोतिस्स नामं अकंसु। तं एकदिवसं पुरतो निसिन्नं दिस्वा 10 महाथेरी आह—"बुद्धरक्खिता" ति। किं, अय्ये ति? अत्थि ते कोचि भावनामनसिकारो ति? नत्थि, अय्ये ति। आवुसो, पब्बाजितानं सन्तिके वसन्तेन नाम विस्सट्ठसत्तभावेन भवितुं न वट्टति, कोचिदेव मनसिकारो इच्छितब्बो, त्वं पन अञ्ञं न सक्खिस्ससि, "अट्ठि अट्ठी" ति सज्झायं करोही ति। सो थेरिया ओवादे ठत्वा 15 "अट्ठि अट्ठी" ति सज्झायन्तो चरति।

तं एकदिवसं पातोव तोरणग्गे निसीदित्वा बालातपं तपमानं एको सकुणो नखपञ्जरेन अग्गहेसि। सो "किरि किरी" ति सद्दमकासि। सामणेरियो सुत्वा "अय्ये बुद्धरक्खितो सकुणेन गहितो, मोचेम नं" ति लेड्डुआदीनि गहेत्वा अनुबन्धित्वा मोचेसुं। तं 20 R. 743 आनेत्वा पुरतो ठपितं थेरी आह—"बुद्धरक्खित, सकुणेन गहितकाले किं चिन्तेसी" ति? न, अय्ये, अञ्ञं किञ्चि चिन्तेसिं, अट्ठिपुञ्जोव अट्ठिपुञ्जं गहेत्वा गच्छति, कतरस्मिं ठाने विप्पकिरिस्सती ति, एवं अय्ये अट्ठिपुञ्जमेव चिन्तेसिं ति। साधु, साधु, बुद्धरक्खित, अनागते भवक्खयस्स ते पच्चयो भविस्सती ति। एवं तत्थ तिरच्छानगतापि 25 सतिपट्ठानमनसिकारयुत्ता। तस्मा नेसं भगवा सतिपट्ठानबुद्धिमेव जनेन्तो इदं सुत्तमभासि।

तत्थ **एकायनो** ति एकमग्गो। मग्गस्स हि—

"मग्गो पन्थो पथो पज्जो, अञ्जसं वटुमायनं।
नावा उत्तरसेतू च, कुल्लो च भिसिसङ्कमो" ति॥

बहूनि नामानि। स्वायमिध अयननामेन वुत्तो। तस्मा
5 **एकायनो अयं, भिक्खवे, मग्गो** ति एत्थ एकमग्गो, अयं, भिक्खवे, मग्गो, न द्विधा पथभूतो ति एवमत्थो दट्ठब्बो। अथ वा एकेन अयितब्बो ति एकायनो एकेना ति गणसङ्गणिकं पहाय वूपकट्ठेन पविवित्तचित्तेन। अयितब्बो पटिपज्जितब्बो अयं ति वा एतेनाति
B. 336 अयनो, संसारतो निब्बानं गच्छन्ती ति अत्थो। एकस्स अयनो
10 एकायनो। एकस्सा ति सेट्ठस्स। सब्बसत्तसेट्ठो च भगवा, तस्मा भगवतो ति वुत्तं होति। किञ्चापि हि तेन अञ्ञेपि अयं ति, एवं सन्तेपि भगवतोव सो अयनो तेन उप्पादितत्ता। यथाह "सो हि, ब्राह्मण, भगवा अनुप्पन्नस्स मग्गस्स उप्पादेता" (म० नि० ३.६८) तिआदि। अयती ति वा अयनो, गच्छति पवत्तती ति अत्थो।
15 एकस्मिं अयनोति एकायनो, इमस्मिं येव धम्मविनये पवत्तति, न अञ्ञत्था ति वुत्तं होति। यथाह "इमस्मिं खो सुभद्द, धम्मविनये अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो उपलब्भती" (दी० नि० २.११६) ति। देसनाभेदोयेव हेसो, अत्थतो पन एकोव। अपिच एकं अयती ति
R. 744 एकायनो। पुब्बभागे नानामुखभावनानयप्पवत्तोपि अपरभागे एकं
20 निब्बानमेव गच्छती ति वुत्तं होति। यथाह ब्रह्मा सहम्पति—

एकायनं जातिखयन्तदस्सी,
मग्गं पजानाति हितानुकम्पी।
एतेन मग्गेन तरिंसु पुब्बे,
तरिस्सन्ति ये च तरन्ति ओघं
25 (सं० नि० ४.१६०) ति॥

केचि पन "न पारं दिगुणं यन्ती" ति गाथानयेन यस्मा एकवारं निब्बानं गच्छति, तस्मा "एकायनो" ति वदन्ति, तं न युज्जति।

इमस्स हि अत्थस्स सकिं अयनो ति इमिना ब्यञ्जनेन भवितब्बं। यदि पन एकं अयनमस्स एका गति पवत्ती ति एवं अत्थं योजेत्वा वुच्चेय्य, ब्यञ्जनं युज्जेय्य, अत्थो पन उभयथापि न युज्जति। कस्मा? इध पुब्बभागमग्गस्स अधिप्पेतत्ता। कायादिचतुआरम्मण-प्पवत्तो हि पुब्बभागसतिपट्ठानमग्गो इधाधिप्पेतो, न लोकुत्तरो। सो 5 च अनेकवारम्पि अयति, अनेकञ्चस्स अयनं होति।

पुब्बेपि च इमस्मिं पदे महाथेरानं साकच्छा अहोसियेव। तिपिटकचूळनागत्थेरो पुब्बभागसतिपट्ठानमग्गो ति आह। आचरियो पनस्स तिपिटकचूळसुमत्थेरो मिस्सकमग्गो ति आह। पुब्बभागो भन्ते ति? मिस्सको, आवुसो, ति। आचारिये पन पुनप्पुनं भणन्ते 10 अप्पटिबाहित्वा तुण्ही अहोसि। पञ्हं अविनिच्छिनित्वाव उट्ठहिंसु। B. 337 अथाचरियत्थेरो नहानकोट्ठकं गच्छन्तो "मया मिस्सकमग्गो कथितो, चूळनागो पुब्बभागमग्गो ति आदाय वोहरति, को नु खो एत्थ निच्छयो[1]" ति सुत्तन्तं आदितो पट्ठाय परिवत्तेन्तो "यो हि कोचि, भिक्खवे, इमे चत्तारो सतिपट्ठाने एवं भावेय्य सत्त वस्सानी" ति 15 इमस्मिं ठाने सल्लक्खेसि। लोकुत्तरमग्गो उप्पज्जित्वा सत्त वस्सानि तिट्ठमानो नाम नत्थि, मया वुत्तो मिस्सकमग्गो न लब्भति चूळनागेन दिट्ठो पुब्बभागमग्गोव लब्भती ति ञत्वा अट्ठमियं धम्म-सवने सङ्घुट्ठे अगमासि।

पोराणकत्थेरा किर पियधम्मसवना होन्ति। सद्दं सुत्वाव "अहं 20 पठमं, अहं पठमं" ति एकप्पहारेनेव ओसरन्ति। तस्मिं च दिवसे चूळनागत्थेरस्स वारो। तेन धम्मासने निसीदित्वा बीजनिं गहेत्वा R. 745 पुब्बगाथासु वुत्तासु थेरस्स आसनपिट्ठियं ठितस्स एतदहोसि "रहो निसीदित्वा न वक्खामी" ति। पोराणकत्थेरा हि अनुसूयका होन्ति। न अत्तनो रुचिमेव उच्छुभारं विय एवं उक्खिपेत्वा विचरन्ति, कारण- 25 मेव गण्हन्ति, अकारणं विस्सजेन्ति। तस्मा थेरो "आवुसो,

[1] विनिच्छयो—रो०।

चूळनागा" ति आह। सो आचरियस्स विय सद्दो ति धम्मं ठपेत्वा "किं भन्ते" ति आह। आवुसो, चूळनाग, मया वुत्तो मिस्सकमग्गो न लब्भति, तया वुत्तो पुब्बभागसतिपट्ठानमग्गोव लब्भती ति। थेरो चिन्तेसि—"अम्हाकं आचरियो सब्बपरियत्तिको तेपिटको सुतबुद्धो, 5 एवरूपस्सापि नाम भिक्खुनो अयं पञ्हो आलुळेति, अनागते मम भातिका इमं पञ्हं आलुळेस्सन्ती ति सुत्तं गहेत्वा इमं पञ्हं निच्चलं करिस्सामी" ति पटिसम्भिदामग्गतो "एकायनमग्गो वुच्चति पुब्बभागसतिपट्ठानमग्गो।

मग्गानट्ठङ्गिको सेट्ठो, सच्चानं चतुरो पदा।
10 विरागो सेट्ठो धम्मानं, द्विपदानञ्च चक्खुमा॥
एसेव मग्गो नत्थञ्ञो, दस्सनस्स विसुद्धिया।
एतञ्हि तुम्हे पटिपज्जथ, मारसेनप्पमद्दनं।
एतञ्हि तुम्हे पटिपन्ना, दुक्खस्सन्तं करिस्सथा"
ति॥

B. 338 15 मग्गो ति केनट्ठेन मग्गो? निब्बानगमनट्ठेन निब्बानगमनट्ठेन निब्बानत्थिकेहि मग्गनीयट्ठेन च। सत्तानं विसुद्धिया ति रागादीहि मलेहि अभिज्झाविसमलोभादीहि च उपक्किलेसेहि किलिट्ठचित्तानं सत्तानं विसुद्धत्थाय। तथा हि इमिनाव मग्गेन इतो सतसहस्स-
R. 746 कप्पाधिकानं चतुन्नं असङ्ख्येय्यानं उपरि एकस्मिं येव कप्पे 20 निब्बत्ते तण्हङ्करमेधङ्करसरणङ्करदीपङ्करनामके बुद्धे आदिं कत्वा सक्यमुनिपरियोसाना अनेके सम्मासम्बुद्धा अनेकसता पच्चेकबुद्धा गणनपथं वीतिवत्ता अरियसावका चाति इमे सत्ता सब्बे चित्तमलं पवाहेत्वा परमविसुद्धिं पत्ता। रूपमलवसेन पन संकिलेसवोदान-पञ्ञत्तियेव नत्थि। तथा हि—

25 "रूपेन संकिलिट्ठेन, संकिलिस्सन्ति मानवा।
रूपा सुद्धे विसुज्झन्ति, अनक्खातं महेसिना॥
चित्तेन संकिलिट्ठेन, संकिलिस्सन्ति मानवा।
चित्ते सुद्धे विसुज्झन्ति, इति वुत्तं महेसिना॥"

यथाह—"चित्तसंकिलेसा, भिक्खवे, सत्ता संकिलिस्सन्ति, चित्तवोदाना विसुज्झन्ती" ति तञ्च चित्तवोदानं इमिना सतिपट्ठानमग्गेन होति। तेनाह "सत्तानं विसुद्धिया" ति।

सोकपरिदेवानं समतिक्कमाया ति सोकस्स च परिदेवस्स च समतिक्कमाय पहानाया ति अत्थो। अयञ्हि मग्गो भावितो सन्तति- 5
महामत्तादीनं विय सोकस्समतिक्कमाय, पटाचारादीनं विय परिदेवसमतिक्कमाय संवत्तति। तेनाह "सोकपरिदेवानं समतिक्कमाया" ति किञ्चापि हि सन्ततिमहामत्तो—

"यं पुब्बे तं विसोधेहि, पच्छा ते मातु किञ्चनं।
मज्झे चे नो गहेस्ससि, उपसन्तो चरिस्ससी" 10
(सु० नि० ९१४) ति॥

इमं गाथं सुत्वाव सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पत्तो। पटाचारा—

"न सन्ति पुत्ता ताणाय, न पिता नापि बन्धवा।
अन्तकेनाधिपन्नस्स, नत्थि ञातीसु ताणता" 15
(ध० प० ४४) ति॥

B. 339
R. 747

इमं गाथं सुत्वा सोतापत्तिफले पतिट्ठिता। यस्मा पन कायवेदनाचित्तधम्मेसु किञ्चि धम्मं अनामसित्वा भावना नाम नत्थि, तस्मा तेपि इमिनाव मग्गेन सोकपरिदेवे समतिक्कन्ता ति वेदितब्बा।

दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमाया ति कायिकदुक्खस्स चेतसिक- 20
दोमनस्सस्स चा ति इमेसं द्विन्नं अत्थङ्गमाय, निरोधाया ति अत्थो। अयञ्हि मग्गो भावितो तिस्सथेरादीनं विय दुक्खस्स, सक्कादीनं विय च दोमनस्सस्स अत्थङ्गमाय संवत्तति।

तत्रायं अत्थदीपना—सावत्थियं किर तिस्सो नाम कुटुम्बिकपुत्तो चत्तालीस हिरञ्ञकोटियो पहाय पब्बजित्वा अगामके अरञ्ञे 25
विहरति। तस्स कनिट्ठभातु भरिया "गच्छथ, नं जीविता वोरोपेथा"

ति पञ्चसते चोरे पेसेसि। ते गन्त्वा थेरं परिवारेत्वा निसीदिंसु। थेरो आह—"कस्मा आगतत्थ उपासका" ति? तं जीविता वोरोपेस्सामा ति। पाटिभोगं मे उपासका, गहेत्वा अज्जेकरत्तिं जीवितं देथा ति। को, ते समण, इमस्मिं ठाने पाटिभोगो भविस्सती
5 ति? थेरो महन्तं पासाणं गहेत्वा द्वे ऊरुट्ठीनि भिन्दित्वा "वट्टति उपासका पाटिभोगो" ति आह। ते अपक्कमित्वा चङ्कमनसीसे अग्गिं कत्वा निपज्जिंसु। थेरस्स वेदनं विक्खम्भेत्वा सीलं पच्चवेक्खतो परिसुद्धं सीलं निस्साय पीतिपामोज्जं उप्पज्जि। ततो अनुक्कमेन विपस्सनं वड्ढेन्तो तियामरत्तिं समणधम्मं कत्वा अरुणुग्गमने अरहत्तं पत्तो इमं
10 उदानं उदानेसि—

"उभो पादानि भिन्दित्वा, सञ्ञपेस्सामि वो अहं।
अट्टियामि हरायामि, सरागमरणं अहं॥
एवाहं चिन्तयित्वान, यथाभूतं विपस्सिसं।
सम्पत्ते अरुणुग्गम्हि, अरहत्तमपापुणिं"
15 ति॥

अपरेपि तिंसु भिक्खू भगवतो सन्तिके कम्मट्ठानं गहेत्वा अरञ्ञ-
R. 748 विहारे वस्सं उपगन्त्वा "आवुसो, तियामरत्तिं समणधम्मोव कातब्बो, न अञ्ञमञ्ञस्स सन्तिकं आगन्तब्बं" ति वत्वा विहरिंसु। तेसं समणधम्मं कत्वा पच्चूससमये पचलायन्तानं एको ब्यग्घो आगन्त्वा
20 एकेकं भिक्खुं गहेत्वा गच्छति। न कोचि "मं ब्यग्घो गण्ही" ति वाचम्पि निच्छारेसि। एवं पञ्चसु दससु भिक्खूसु खादितेसु उपोसथ-
B. 340 दिवसे "इतरे, आवुसो, कुहिं" ति पुच्छित्वा ञत्वा च "इदानि गहितेन गहितोम्ही ति वत्तब्बं" ति वत्वा विहरिंसु। अथ अञ्ञतरं दहरभिक्खुं पुरिमनयेनेव ब्यग्घो गण्हि। सो "ब्यग्घो भन्ते" ति
25 आह। भिक्खू कत्तरदण्डे च उक्कायो च गहेत्वा मोचेस्सामा ति अनुबन्धिंसु। ब्यग्घो भिक्खूनं अगतिं छिन्नतटट्ठानमारुय्ह तं भिक्खुं पादङ्गुट्ठकतो पट्ठाय खादितुं आरभि। इतरेपि "इदानि सप्पुरिस, अम्हेहि कत्तब्बं नत्थि, भिक्खूनं विसेसो नाम अवरूपे ठाने पञ्ञायती"

ति आहंसु । सो ब्यग्घमुखे निपन्नोव तं वेदनं विक्खम्भेत्वा विपस्सनं वड्ढेन्तो याव गोप्फका खादितसमये सोतापन्नो हुत्वा, याव जण्णुका खादितसमये सकदागामी, याव नाभिया खादितसमये अनागामी हुत्वा, हदयरूपे अखादितेयेव सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पत्वा इमं उदानं उदानेसि— 5

"सीलवा वतसम्पन्नो, पञ्ञवा सुसमाहितो ।
मुहुत्तं पमादमन्वाय, ब्यग्घेनोरुद्धमानसो ॥
पञ्जरस्मिं गहेत्वान, सिलाय उपरी कतो ।
कामं खादतु मं ब्यग्घो, अट्ठिया च न्हारुस्स च ।
किलेसे खेपयिस्सामि, फुसिस्सामि विमुत्तियं 10
ति ॥

अपरोपि पीतमल्लत्थेरो नाम गिहिकाले तीसु रज्जेसु पटाकं गहेत्वा तम्बपण्णिदीपं आगम्म राजानं पस्सित्वा रञ्ञा कतानुग्गहो R. 749 एकदिवसं किलञ्जकापणसालद्वारेन गच्छन्तो "रूपं, भिक्खवे, न तुम्हाकं, तं पजहथ, तं वो पहीनं दीघरत्तं हिताय सुखाय भविस्सती" 15 ति न तुम्हाकवाक्यं सुत्वा चिन्तेसि "नेव किर रूपं अत्तनो, न वेदना" ति । सो तंयेव अङ्कुसं कत्वा निक्खमित्वा महाविहारं गन्त्वा पब्बज्जं याचित्वा पब्बजितो उपसम्पन्नो द्वेमातिका पगुणा कत्वा तिंस भिक्खू गहेत्वा गबलवालियअङ्गणं[1] गन्त्वा समणधम्मं अकासि । पादेसु अवहन्तेसु जण्णुकेहि चङ्कमति । तमेनं रत्तिं एको 20 मिगलुद्दको मिगो ति मञ्ञमानो पहरि । सत्ति विनिविज्झित्वा गता । सो तं सत्तिं हरापेत्वा पहरणमुखानि तिणवट्टिया पूरापेत्वा पासाणपिट्ठियं अत्तानं निसीदापेत्वा ओकासं कारेत्वा विपस्सनं वड्ढेत्वा सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पत्वा उक्कासितसद्देन आगतानं B. 341 भिक्खूनं ब्याकरित्वा इमं उदानं उदानेसि— 25

१. गारवकारणाय अङ्गणं—रो० ।

"भासितं बुद्धसेट्ठस्स, सब्बलोकग्गवादिनो।
न तुम्हाकमिदं रूपं, तं जहेय्याथ भिक्खवो॥
अनिच्चा वत सङ्खारा, उप्पादवयधम्मिनो।
उप्पज्जित्वा निरुज्झन्ति, तेसं वूपसमो सुखो ति॥

5 एवं ताव अयं मग्गो तिस्सत्थेरादीनं विय दुक्खस्स अत्थङ्गमाय संवत्तति।

सक्को पन देवानमिन्दो अत्तनो पञ्चविधपुब्बनिमित्तं दिस्वा मरणभयसन्तज्जितो दोमनस्सजातो भगवन्तं उपसङ्कमित्वा पञ्हं R. 750 पुच्छि। सो उपेक्खापञ्हविस्सज्जनावसाने असीतिसहस्साहि देवताहि 10 सद्धिं सोतापत्तिफले पतिट्ठासि। सा चस्स उपपत्ति पुन पाकतिकाव अहोसि। सुब्रह्मापि देवपुत्तो अच्छरासहस्सपरिवुतो सग्गसम्पत्तिं अनुभोति। तत्थ पञ्चसता अच्छरायो रुक्खतो पुप्फानि ओचिनन्तियो चवित्वा निरये उप्पन्ना। सो "किं इमा चिरायन्ती" ति उपधारेन्तो तासं निरये निब्बत्तनभावं ञत्वा "कित्तकं नु खो मम आयू" ति 15 उपपरिक्खन्तो अत्तनो आयुपरिक्खयं विदित्वा चवित्वा तत्थेव निरये निब्बत्तनभावं दिस्वा भीतो अतिविय दोमनस्सजातो हुत्वा "इमं मे दोमनस्सं सत्था विनयिस्सति, न अञ्ञो" ति अवसेसा पञ्चसता अच्छरायो गहेत्वा भगवन्तं उपसङ्कमित्वा पञ्हं पुच्छि—

"निच्चं उत्रस्तमिदं चित्तं, निच्चं उब्बिग्गिदं मनो।
20 अनुप्पन्नेसु किच्छेसु, अथो उप्पतितेसु च।
सचे अत्थि अनुत्रस्तं, तं मे अक्खाहि पुच्छितो
(सं० नि० १.५१) ति॥

ततो नं भगवा आह—

"नाञ्ञत्र बोज्झा तपसा, नाञ्ञत्रिन्द्रियसंवरा।
25 नाञ्ञत्र सब्बनिस्सग्गा, सोत्थिं पस्सामि पाणिनं
(सं० नि० १.५१) ति।

सो देसनापरियोसाने पञ्चहि, अच्छरासतेहि सद्धिं सोतापत्तिफले पतिट्ठाय तं सम्पत्तिं थावरं कत्वा देवलोकमेव अगमासी ति। एवं अयं मग्गो भावितो सक्कादीनं विय दोमनस्सस्स अत्थङ्गमाय संवत्तती ति वेदितब्बो। B. 342

ञायस्स अधिगमाया (दी० नि० २.२१७) ति ञायो वुच्चति अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, तस्स अधिगमाय, पत्तिया ति वुत्तं होति। अयञ्हि पुब्बभागे लोकियो सतिपट्ठानमग्गो भावितो लोकुत्तरमग्गस्स अधिगमाय संवत्तति। तेनाह "ञायस्स अधिगमाया" ति। **निब्बानस्स सच्छिकिरियाया** ति तण्हावानविरहितत्ता निब्बानं ति लद्धनामस्स अमतस्स सच्छिकिरियाय, अत्तपच्चक्खताया ति वुत्तं होति। अयञ्हि मग्गो भावितो अनुपुब्बेन निब्बानसच्छिकिरियं साधेति। तेनाह "निब्बानस्स सच्छिकिरियाया" ति। 5 R. 751 10

तत्थ किञ्चापि "सत्तानं विसुद्धिया" ति वुत्ते सोकसमतिक्कमादीनि अत्थतो सिद्धानेव होन्ति, ठपेत्वा पन सासनयुत्तिकोविदे अञ्ञेसं न पाकटानि, न च भगवा पठमं सासनयुत्तिकोविदं जनं कत्वा पच्छा धम्मं देसेति। तेन तेसेव पन सुत्तेन तं तं अत्थं ञापेति। तस्मा इध यं यं अत्थं एकायनमग्गो साधेति, तं तं पाकटं कत्वा दस्सेन्तो "सोकपरिदेवानं समतिक्कमाया" तिआदिमाह। यस्मा[1] वा या सत्तानं विसुद्धि एकायनमग्गेन संवत्तति, सा सोकपरिदेवानं समतिक्कमेन होति। सोकपरिदेवानं समतिक्कमो दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमेन, दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमो ञायस्साधिगमेन, ञायस्सधिगमो निब्बानस्स सच्छिकिरियाय। तस्मा इमम्पि कमं दस्सेन्तो "सत्तानं विसुद्धिया" वत्वा "सोकपरिदेवानं समतिक्कमाया" तिआदिमाह। 15 20

अपिच वण्णभणनमेतं एकायनमग्गस्स। यथेव हि भगवा— "धम्मं, वो भिक्खवे, देसेस्सामि आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं 25

१. तस्मा—रो०।

परियोसानकल्याणं सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेस्सामि यदिदं छछक्कानी" (म० नि० ३.३८०) ति छछक्कदेसनाय अट्ठहि पदेहि वण्णं अभासि। यथा च अरियवंसदेसनाय "चत्तारोमे, भिक्खवे, अरियवंसा अग्गञ्ञा रत्तञ्ञा वंसञ्ञा पोराणा असंकिण्णा
B. 343 5 असंकिण्णपुब्बा न सङ्कीयन्ति न सङ्कीयिस्सन्ति, अप्पटिकुट्ठा समणेहि ब्राह्मणेहि विञ्ञूही" (अं० नि० २.६०) ति नवहि पदेहि वण्णं अभासि; एवं इमस्सापि एकायनमग्गस्स सत्तानं विसुद्धियातिआदीहि सत्तहि पदेहि वण्णं अभासि। कस्माति चे, तेसं भिक्खूनं उस्साहजननत्थं। वण्णभासनञ्हि सुत्वा ते भिक्खू "अयं किर मग्गो
R. 752 10 हदयसन्तापभूतं सोकं, वाचाविप्पलापभूतं परिदेवं, कायिकअसातभूतं दुक्खं, चेतसिकअसातभूतं दोमनस्सं ति चत्तारो उपद्दवे हनति, विसुद्धिं ञायं निब्बानं ति तयो विसेसे आवहती" ति उस्साहजाता इमं धम्मदेसनं उग्गहेतब्बं परियापुणितब्बं धारेतब्बं, वाचेतब्बं इमञ्च मग्गं भावेतब्बं मञ्ञिस्सन्ति। इति तेसं भिक्खूनं उस्साहजननत्थं वण्णं
15 अभासि। कम्बलवाणिजादयो कम्बलादीनं वण्णं विय।

यथा हि सतसहस्सग्घनिकपण्डुकम्बलवाणिजेन 'कम्बलं गण्हथा' ति उग्घोसितेपि असुककम्बलो ति न ताव मनुस्सा जानन्ति। केसकम्बलवाळकम्बलादयोपि हि दुग्गन्धा खरसम्फस्सा कम्बलात्वेव वुच्चन्ति। यदा पन तेन गन्धारको रत्तकम्बलो सुखुमो उज्जलो
20 सुखसम्फस्सो ति उग्घोसितं होति, तदा ये पहोन्ति, ते गण्हन्ति, ये नप्पहोन्ति, तेपि दस्सनकामा होन्ति; एवमेव 'एकायनो, भिक्खवे, अयं मग्गो' ति वुत्तेपि असुकमग्गो ति न ताव पाकटो होति। नानप्पकारका हि अनिय्यानिकमग्गापि मग्गात्वेव वुच्चन्ति। "सत्तानं विसुद्धिया" तिआदिम्हि पन वुत्ते "अयं किर मग्गा चत्तारो उपद्दवे
25 हनति, तयो विसेसे आवहती" ति उस्साहजाता इमं धम्मदेसनं उग्गहेतब्बं परियापुणितब्बं धारेतब्बं वाचेतब्बं, इमञ्च मग्ग भावेतब्बं मञ्ञिस्सन्ती ति वण्णं भासन्तो "सत्तानं विसुद्धिया" ति आदिमाह। यथा च सतसहस्सग्घनिकपण्डुकम्बलवाणिजूपमा; एवं

रत्तजम्बुनदसुवण्ण-उदकप्पसादक-मणिरतन-सुविसुद्ध-मुत्तरतन-पवाळा दिवाणिजूयमादयोपेत्थ आहरितब्बा।

यदिदं ति निपातो। ये इमे ति अयमस्स अत्थो। **चत्तारो** ति गणनपरिच्छेदो। तेन न ततो हेट्ठा, न उद्धं ति सतिपट्ठानपरिच्छेदं दीपेति। **सतिपट्ठाना** ति तयो सतिपट्ठाना सतिगोचरोपि तिधा पटिपन्नेसु सावकेसु सत्थुनो पटिघानुनयवीतिवत्ततापि, सतिपि। "चतुन्नं, भिक्खवे, सतिपट्ठानानं समुदयञ्च अत्थङ्गमञ्च देसेस्सामि, तं सुणाथ...पे... को च, भिक्खवे, कायस्स समुदयो। आहारसमुदया कायस्स समुदयो" (सं० नि० ४.१५९) तिआदीसु हि सतिगोचरो सतिपट्ठानं ति वुचति। तथा "कायो उपट्ठानं नो सति, सति पन उपट्ठानञ्चेव[१] सति चा" (पटि० म० ४९७) तिआदीसुपि। तस्सत्थो—पतिट्ठाति अस्मिं ति पट्ठानं। का पतिट्ठाति? सति। सतिया पट्ठानं सतिपट्ठानं, पधानं ठानं ति वा पट्ठानं। सतिया पट्ठानं सतिपट्ठानं हत्थिट्ठानअस्सट्ठानादीनि विय।

5 B. 344 R. 753 10

"तयो सतिपट्ठाना यदरियो सेवति, यदरियो सेवमानो सत्था गणमनुसासितुं अरहती" (म० नि० ३.३०२) ति एत्थ तिधा पटिपन्नेसु सावकेसु सत्थुनो पटिघानुनयवीतिवत्तता "सतिपट्ठानं" ति वुत्ता।[२] तस्सत्थो—पट्ठपेतब्बतो पट्ठानं, पवत्तयितब्बतो ति अत्थो। केन पट्ठपेतब्बतो ति? सतिया सतिया पट्ठानं सतिपट्ठानं। "चत्तारो सतिपट्ठाना भाविता बहुलीकता सत्त सम्बोज्झङ्गे परिपूरेन्ती" (म० नि० ३.१४४) तिआदीसु पन सतियेव "सतिपट्ठानं" ति वुच्चति। तस्सत्थो—पट्ठाती ति पट्ठानं, उपट्ठाति ओक्कन्दित्वा पक्खन्दित्वा पत्थरित्वा पवत्तती ति अत्थो। सतियेव सतिपट्ठानं। अथ वा सरणट्ठेन सति, उपट्ठानट्ठेन पट्ठानं। इति सति च सा पट्ठानञ्चाति पि सतिपट्ठानं। इदमिधाधिप्पेतं।

15 20 25

१. पट्ठानं च—रो०। २. वुत्तं—रो०।

यदि एवं कस्मा "सतिपट्ठाना" ति बहुवचनं ? सतिबहुत्ता। आरम्मणभेदेन हि बहुका एता सतियो। अथ मग्गो ति कस्मा एकवचनं ? मग्गट्ठेन एकत्ता। चतस्सोपि हि एता सतियो मग्गट्ठेन एकत्तं गच्छन्ति। वुत्तञ्हेतं—"मग्गो ति केनट्ठेन मग्गो ? निब्बान-
5 गमनट्ठेन। निब्बानत्थिकेहि मग्गनीयट्ठेन चा" ति। चतस्सोपि चेता अपरभागे कायादीसु आरम्मणेसु किच्चं साधयमाना निब्बानं गच्छन्ति, आदितो पट्ठाय च निब्बानत्थिकेहि मग्गियन्ति, तस्मा चतस्सोपि एको मग्गो ति वुच्चन्ति। एवञ्च सति वचनानुसन्धिना सानुसन्धिकाव देसना होति। "मारसेनप्पमद्दनं, वो भिक्खवे, मग्गं देसेस्सामि, तं
10 सुणाथ ... पे० ...। कतमो च, भिक्खवे, मारसेनप्पमद्दनो मग्गो ? यदिदं सत्त बोज्झङ्गा" (स० नि० ४.९०) तिआदीसु विय। यथा मारसेनप्पमद्दनो ति च, सत्त बोज्झङ्गा ति च अत्थतो एकं, ब्यञ्जन-
B. 345
R. 754
मेवेत्थ नानं एवं "एकायनमग्गो" ति च "चत्तारो सतिपट्ठाना" ति च अत्थतो एकं, ब्यञ्जनमेवेत्थ नानं, तस्मा मग्गट्ठेन एकत्ता एकवचनं।
15 आरम्मणभेदेन सतिबहुत्ता बहुवचनं वेदितब्बं।

कस्मा पन भगवता चत्तारोव सतिपट्ठाना वुत्ता अनूना अनधिका ति ? वेनेय्यहितत्ता। तण्हाचरितदिट्ठिचरितसमथयानिकविपस्सना-यानिकेसु हि मन्दतिक्खवसेन द्वेधा द्वेधा पवत्तेसु वेनेय्येसु मन्दस्स तण्हाचरितस्स ओळारिकं कायानुपस्सनासतिपट्ठानं विसुद्धिमग्गो,
20 तिक्खस्स सुखुमं वेदनानुपस्सनासतिपट्ठानं। दिट्ठिचरितस्सपि मन्दस्स नातिप्पभेदगतं चित्तानुपस्सनासतिपट्ठानं विसुद्धिमग्गो, तिक्खस्स अतिप्पभेदगतं धम्मानुपस्सनासतिपट्ठानं विसुद्धिमग्गो। समथयानिकस्स च मन्दस्स अकिच्छेन अधिगन्धब्बनिमित्तं पठमं सतिपट्ठानं विसुद्धि-मग्गो, तिक्खस्स ओळारिकारम्मणे असण्ठहनतो दुतियं। विपस्सना-
25 यानिकस्सपि मन्दस्स नातिप्पभेदगतारम्मणं ततियं, तिक्खस्स अतिप्पभेदगतारम्मणं चतुत्थं। इति चत्तारोव वुत्ता अनूना अनधिका ति।

सुभसुखनिच्चअत्तभावविपल्लासप्पहानत्थं वा। कायो हि असुभो, तत्थ च सुभविपल्लासविपल्लत्था सत्ता। तेसं तत्थ असुभभावदस्सनेन तस्स विपल्लासस्स पहानत्थं पठमं सतिपट्ठानं वुत्तं। सुखं निच्चं अत्ताति गहितेसुपि च वेदनादीसु वेदना दुक्खा चित्तं अनिच्चं, धम्मा अनत्ता, तेसु च सुखनिच्चअत्तविपल्लासविपल्लत्था सत्ता। तेसं तत्थ 5 दुक्खादिभावदस्सनेन तेसं विपल्लासानं पहानत्थं सेसानि तीणि वुत्तानी ति एवं सुभसुखनिच्चअत्तभावविपल्लासप्पहानत्थं वा चत्तारोव वुत्ता अनूना अनधिकाति वेदितब्बा। न केवलञ्च विपल्लासप्पहानत्थमेव, अथ खो चतुरोघयोगासवगन्थउपादानअगतिपहानत्थम्पि चतुब्बिधाहारपरिञ्ञत्थञ्च चत्तारोव वुत्ता ति वेदितब्बा। अयं ताव 10 पकरणनयो।

अट्ठकथायं पन सरणवसेन चेव एकत्तसमोसरणवसेन च एकमेव सतिपट्ठानं आरम्मणवसेन चत्तारो ति एतदेव वुत्तं। यथा हि चतुद्वारे नगरे पाचीनतो आगच्छन्ता पाचीनदिसाय उट्ठानकं भण्डं गहेत्वा पाचीनद्वारेन नगरमेव पविसन्ति, दक्खिणतो, पच्छिमतो, उत्तरतो 15 आगच्छन्ता उत्तरदिसाय उट्ठानकं भण्डं गहेत्वा उत्तरद्वारेन नगरमेव पविसन्ति; एवं सम्पदमिदं वेदितब्बं। नगरं विय हि निब्बानमहानगरं, द्वारं विय अट्ठङ्गिको लोकुत्तरमग्गो, पाचीनदिसादयो विय कायादयो। B. 346

यथा पाचीनतो आगच्छन्ता पाचीनदिसाय उट्ठानकं भण्डं गहेत्वा 20 पाचीनद्वारेन नगरमेव पविसन्ति, एवं कायानुपस्सनामुखेन आगच्छन्ता चुद्दसविधेन कायानुपस्सनं भावेत्वा कायानुपस्सनाभावनानुभावनिब्बत्तेन अरियमग्गेन एकं निब्बानमेव ओसरन्ति। यथा दक्खिणतो आगच्छन्ता दक्खिणाय दिसाय उट्ठानकं भण्डं गहेत्वा दक्खिणद्वारेन नगरमेव पविसन्ति, एवं वेदनानुपस्सनामुखेन आगच्छन्ता नवविधेन 25 वेदनानुपस्सनं भावेत्वा वेदनानुपस्सनाभावनानुभावनिब्बत्तेन अरियमग्गेन एकं निब्बानमेव ओसरन्ति। यथा पच्छिमतो आगच्छन्ता पच्छिमदिसाय उट्ठानकं भण्डं गहेत्वा पच्छिमद्वारेन नगरमेव

पविसन्ति, एवं चित्तानुपस्सनामुखेन आगच्छन्ता सोळसविधेन चित्तानुपस्सनं भावेत्वा चित्तानुपस्सनाभावनानुभावनिब्बत्तेन अरियमग्गेन एकं निब्बानमेव ओसरन्ति। यथा उत्तरतो आगच्छन्ता उत्तरदिसाय उट्ठानकं भण्डं गहेत्वा उत्तरद्वारेन नगरमेव पविसन्ति, 5 एवं धम्मानुपस्सनामुखेन आगच्छन्ता पञ्चविधेन धम्मानुपस्सनं भावेत्वा धम्मानुपस्सनाभावनानुभावनिब्बत्तेन अरियमग्गेन एकं निब्बानमेव ओसरन्ति। एवं सरणवसेन चेव एकत्तसमोसरणवसेन च एकमेव सतिपट्ठानं आरम्मणवसेन चत्तारोव वुत्ता ति वेदितब्बा।

कतमे चत्तारो ति कथेतुकम्यता पुच्छा। **इधा** ति इमस्मिं 10 सासने। **भिक्खवे** ति धम्मपटिग्गाहकपुग्गलालपनमेतं। **भिक्खू** ति पटिपत्तिसम्पादकपुग्गलनिदस्सनमेतं। अञ्ञेपि च देवमनुस्सा पटिपत्तिं सम्पादेन्तियेव, सेट्ठत्ता पन पटिपत्तिया भिक्खुभावदस्सनतो च "भिक्खू" ति आह। भगवतो हि अनुसासनिं सम्पटिच्छन्तेसु भिक्खु सेट्ठो, सब्बप्पकाराय अनुसासनिया भाजनभावतो। तस्मा सेट्ठता "भिक्खू" R. 756 15 ति आह। तस्मिं गहिते पन सेसा गहिताव होन्ति, राजगमनादीसु राजग्गहणेन सेसपरिसा विय। यो च इमं पटिपत्तिं पटिपज्जति, सो भिक्खु नाम होती ति पटिपत्तिया भिक्खुभावदस्सनतोपि "भिक्खू" ति आह। पटिपन्नको हि देवो वा होतु मनुस्सो वा, भिक्खू ति सङ्ख्यं गच्छतियेव यथाह—

B. 347 20 "अलङ्कतो चेपि समं चरेय्य,
सन्तो दन्तो नियतो ब्रह्मचारी।
सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं,
सो ब्राह्मणो सो समणो स भिक्खू"
(ध० प० ३०) ति॥

25 **काये** (दी० नि० २.२१७) ति रूपकाये। रूपकायो हि इध अङ्गपच्चङ्गानं केसादीनञ्च धम्मानं समूहट्ठेन हत्थिकायरथकायादयो विय कायो ति अधिप्पेतो। यथा च समूहट्ठेन, एवं कुच्छितानं आयट्ठेन।

कुच्छितानञ्हि परमजेगुच्छानं सो आयो ति पि कायो। आयो ति उप्पत्तिदेसो। तत्थायं वचनत्थो। आयन्ति ततो ति आयो। के आयन्ति ? कुच्छिता केसादयो। इति कुच्छितानं आयो ति कायो।

कायानुपस्सी ति काये अनुपस्सनसीलो कायं वा अनुपस्समानो। काये ति च वत्वापि पुन कायानुपस्सी ति दुतियकायग्गहणं 5 असम्मिस्सतो ववत्थानघनविनिब्भोगादिदस्सनत्थं कतं ति वेदितब्बं। तेन न काये वेदनानुपस्सी वा, चित्तधम्मानुपस्सी वा, अथ खो कायानुपस्सीयेवा ति कायसङ्खाते वत्थुस्मिं कायानुपस्सनाकारस्सेव दस्सनेन असम्मिस्सतो ववत्थानं दस्सितं होति। तथा न काये अङ्गपच्चङ्गविनिमुत्तएकधम्मानुपस्सी, नापि केसलोमादिविनिमुत्त- 10 इत्थिपुरिसानुपस्सी, योपि चेत्थ केसलोमादिको भूतुपादायसमूहसङ्खातो कायो, तत्थपि न भूतुपादायविनिमुत्तएकधम्मानुपस्सी, अथ खो रथसम्भारानुपस्सको विय अङ्गपच्चङ्गसमूहानुपस्सी, नगरावयवानु- पस्सको विय केसलोमादिसमूहानुपस्सी, कदलिक्खन्धपत्तवट्टिविनि- ब्भुजको विय रित्तमुट्ठिविनिवेठको विय च भूतुपादायसमूहानुपस्सी- 15 येवा ति नानप्पकारतो समूहवसेनेव कायसङ्खातस्स वत्थुनो दस्सनेन घनविनिब्भोगो दस्सितो होति। न हेत्थ यथावुत्तसमूहविनिमुत्तो कायो R. 757 वा इत्थी वा पुरिसो वा अञ्ञो वा कोचि धम्मो दिस्सति, यथावुत्त- धम्मसमूहमत्तेयेव पन तथा तथा सत्ता मिच्छाभिनिवेसं करोन्ति। तेनाहु पोराणा— 20

> "यं पस्सति न तं दिट्ठं, यं दिट्ठं तं न पस्सति।
> अपस्सं बज्झते मूळ्हो, बज्झमानो न मुच्चती"
>
> ति॥

घनविनिब्भोगादिदस्सनत्थं ति वुत्तं, आदिसद्देन चेत्थ अयम्पि अत्थो B. 348 वेदितब्बो। अयञ्हि एतस्मिं काये कायानुपस्सीयेव, न अञ्ञधम्मानु- 25 पस्सी ति वुत्तं होति। यथा अनुदकभूतायपि मरीचिया उदकानु- पस्सिनो होन्ति, न एवं अनिच्चदुक्खानत्तअसुभभूतयेव इमस्मिं काये

निच्चसुखअत्तसुभभावानुपस्सी, अथ खो कायानुपस्सी अनिच्चदुक्खानत्त-
असुभाकारसमूहानुपस्सीयेवा ति वुत्तं होति। अथवा य्वायं परतो
"इध, भिक्खवे, भिक्खु अरञ्ञगतो वा ... पे० ... सो सतोव
अस्ससती" ति आदिना नयेन अस्सासपस्सासादिचुण्णिकजातअट्ठिक-
5 परियोसानो कायो वुत्तो। यो च "इधेकच्चो पथवीकायं अनिच्चतो
अनुपस्सति, आपोकायं तेजोकायं वायोकायं केसकायं लोमकायं
छविकायं चम्मकायं मंसकायं रुधिरकायं न्हारुकायं अट्ठिकायं
अट्ठिमिञ्जकायं" (पटि० म० ४९७) ति पटिसम्भिदायं कायो
वुत्तो, तस्स सब्बस्स इमस्मिं येव काये अनुपस्सनतो काये कायानुपस्सी
10 एवम्पि अत्थो वेदितब्बो।

अथवा काये अहं ति वा ममं ति वा एवं गहेतब्बस्स यस्स
कस्सचि अननुपस्सनतो, तस्स तस्सेव पन केसलोमादिकस्स नाना-
धम्मसमूहस्स अनुपस्सनतो काये केसादिधम्मसमूहसङ्खातकायानुपस्सी
ति एवमत्थो दट्ठब्बो।

15 अपिच "इमस्मिं काये अनिच्चतो अनुपस्सति, नो निच्चतो"
तिआदिना अनुक्कमेन पटिसम्भिदायं आगतनयस्स सब्बस्सेव अनिच्च-
लक्खणादिनो आकारसमूहसङ्खातस्स कायस्स अनुपस्सनतोपि काये
R. 758 कायानुपस्सी ति एकम्पि अत्थो दट्ठब्बो। तथा हि अयं काये कायानु-
पस्सनापटिपदं पटिपन्नो भिक्खु इमं कायं अनिच्चानुपस्सनादीनं सत्तन्नं
20 अनुपस्सनानं वसेन अनिच्चतो अनुपस्सति, नो निच्चतो। दुक्खतो
अनुपस्सति, नो सुखतो। अनत्ततो अनुपस्सति, नो अत्ततो।
निब्बिन्धति, नो नन्दति, विरज्जति, नो रज्जति, निरोधेति, नो
समुदेति, पटिनिस्सज्जति, नो आदियति। सो तं अनिच्चतो अनु-
पस्सन्तो निच्चसञ्ञं पजहति, दुक्खतो अनुपस्सन्तो सुखसञ्ञं पजहति,
B. 349 25 अनत्ततो अनुपस्सन्तो अत्तसञ्ञं पजहति, निब्बिन्दतो नन्दिं पजहति,
विरज्जन्तो रागं पजहति, निरोधेन्तो समुदयं पजहति, पटिनिस्सज्जन्तो
आदानं पजहती ति वेदितब्बो।

विहरती ति इरियति। **आतापी** ति तीसु भवेसु किलेसे आतापेती ति आतापो, वीरियस्सेतं नामं। आतापो अस्स अत्थी ति आतापी। **सम्पजानो** ति सम्पजञ्ञसङ्खातेन ञाणेन समन्नागतो। **सतिमा** ति कायपरिग्गाहिकाय सतिया समन्नागतो। अयं पन यस्मा सतिया आरम्मणं परिग्गहेत्वा पञ्ञाय अनुपस्सति, न हि सतिविर- 5
हितस्स अनुपस्सना नाम अत्थि, तेनेवाह—"सतिञ्च ख्वाहं, भिक्खवे, सब्बत्थिकं वदामी" (सं० नि० ४.१०३) ति। तस्मा एत्थ "काये कायानुपस्सी विहरती" ति एत्तावता कायानुपस्सनासतिपट्ठानं वुत्तं होति। अथवा यस्मा अनातापिनो अन्तोसङ्खेपो अन्तरायकरो होति, असम्पजानो उपायपरिग्गहे अनुपायपरिवज्जने च सम्मुय्हति, 10
मुट्ठस्सति उपायापरिच्चागे अनुपायापरिग्गहे च असमत्थो होति, तेनस्स तं कम्मट्ठानं न सम्पज्जति। तस्मा येसं धम्मानं आनुभावेन तं सम्पज्जति, तेसं दस्सनत्थं "आतापी सम्पजानो सतिमा" ति इदं वुत्तं ति वेदितब्बं।

इति कायानुपस्सनासतिपट्ठानं सम्पयोगङ्गञ्चस्स दस्सेत्वा इदानि 15
पहानङ्गं दस्सेतुं **विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं** ति वुत्तं। तत्थ **विनेय्या** ति तदङ्गविनयेन वा विक्खम्भनविनयेन वा विनायित्वा। **लोके** ति तस्मिं येव काये। कायो हि इध लुज्जनपलुज्जनट्ठेन लोको ति अधिप्पेतो। यस्मा पनस्स न कायमत्तेयेव अभिज्झादोमनस्सं पहीयति, वेदनादीसुपि पहीयतियेव। तस्मा पञ्चपि उपादानक्खन्धा 20
लोको ति विभङ्गे वुत्तं। लोकसङ्खातत्ता वा तेसं धम्मानं R. 759
अत्थुद्धारनयेनेतं वुत्तं। यं पनाह—"तत्थ कतमो लोको? स्वेव कायो लोको" ति, अयमेवेत्थ अत्थो। तस्मिं लोके अभिज्झादोमनस्सं विनेय्या ति एवं सम्बन्धो दट्ठब्बो। यस्मा पनेत्थ अभिज्झाग्गहणेन कामच्छन्दो, दोमनस्सग्गहणेन ब्यापादो सङ्गहं गच्छति, तस्मा 25
नीवरणपरियापन्नबलवधम्मद्वयदस्सनेन नीवरणप्पहानं वुत्तं होती ति वेदितब्बं।

B. 350 विसेसेन चेत्थ अभिज्झाविनयेन कायसम्पत्तिमूलकस्स अनुरोधस्स, दोमनस्सविनयेन कायविपत्तिमूलकस्स विरोधस्स, अभिज्झाविनयेन च काये अभिरतिया, दोमनस्सविनयेन कायभावनाय अनभिरतिया, अभिज्झाविनयेन काये अभूतानं सुभसुखभावादीनं पक्खेपस्स, 5 दोमनस्सविनयेन काये भूतानं असुभासुखभावादीनं अपनयनस्स च पहानं वुत्तं। तेन योगावचरस्स योगानुभावो योगसमत्थता च दीपिता होति। योगानुभावो हि एस, यदिदं अनुरोध-विरोधविप्पमुत्तो अरतिरतिसहो अभूतपक्खेपभूतापनयनविरहितो च होति। अनुरोधविरोधविप्पमुत्तो चेस अरतिरतिसहो अभूतं 10 अपक्खिपन्तो भूतञ्च अनपनयन्तो योगसमत्थो होती ति।

अपरो नयो "काये कायानुपस्सी" ति एत्थ अनुपस्सनाय कम्मट्ठानं वुत्तं। "विहरती" ति एत्थ वुत्तविहारेन कम्मट्ठानिकस्स कायपरिहरणं। "आतापी" तिआदीसु पन आतापेन सम्मप्पधानं, सतिसम्पजञ्ञेन सब्बत्थककम्मट्ठानं, कम्मट्ठानपरिहरणूपायो वा। 15 सतिया वा कायानुपस्सनावसेन पटिलद्धसमथो, सम्पजञ्ञेन विपस्सना अभिज्झादोमनस्सविनयेन भावनाबलं वुत्तं ति वेदितब्बं।

विभङ्गे पन **अनुपस्सी** ति तत्थ "कतमा अनुपस्सना ? या पञ्ञा पजानना ... पे ... सम्मदिट्ठि, अयं वुच्चति अनुपस्सना। इमाय अनुपस्सनाय उपेतो होति समुपेतो उपगतो समुपगतो उपपन्नो 20 समन्नागतो। तेन वुच्चति अनुपस्सी ति। **विहरती** ति हरियति पवत्तति पालेति यपेति यापेति चरति विहरति, तेन वुच्चति विहरती ति। **आतापी** ति तत्थ कतमं आतापं ? यो चेतसिको वीरियारम्भो ...पे... सम्मावायामो, इदं वुच्चति आतापं। इमिना आतापेन उपेतो R. 760 होति...पे... समन्नागतो, तेन वुच्चति आतापी ति। **सम्पजानो** ति 25 तत्थ कतमं सम्पजञ्ञं ? या पञ्ञा पजानना ...पे... समादिट्ठि, इदं वुच्चति सम्पजञ्ञं। इमिना सम्पजञ्ञेन उपेतो होति ...पे... समन्नागतो, तेन वुच्चति सम्पजानो ति। **सतिमा** ति तत्थ कतमा सति ? या सति अनुस्सति...पे... सम्मासति, अयं वुच्चति सति।

इमाय सतिया उपेतो होति ... पे ... समन्नागतो, तेन वुच्चति सतिमा ति ।

विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्स ति तत्थ कतमो लोको ? स्वेव कायो लोको । पञ्चपि उपादानक्खन्धा लोको, अयं वुच्चति लोको । तत्थ कतमा अभिज्झा ? यो रागो सारागो अनुनयो अनुरोधो नन्दी 5
नन्दिरागो चित्तस्स सारागो, अयं वुच्चति अभिज्झा । तत्थ कतमं दोमनस्सं ? यं चेतसिकं असातं चेतसिकं दुक्खं चेतो सम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना, इदं वुच्चति दोमनस्सं । इति अयञ्च अभिज्झा, इदञ्च दोमनस्सं इमम्हि लोके विनीता होन्ति पटिविनीता सन्ता समिता वूपसमिता अत्थङ्गता अब्भत्थङ्गता 10
अप्पिता ब्यप्पिता सोसिता विसोसिता ब्यन्तीकता, तेन वुच्चति विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं'' (विभं० २३८-३९) ति ।

एवमेतेसं पदानं अत्थो वुत्तो । तेन सह अयं अट्ठकथानयो यथा संसन्दति, एवं वेदितब्बो । अयं ताव कायानुपस्सनासतिपट्ठानुद्देसस्स अत्थवण्णना । 15

इदानि वेदनासु, चित्ते, धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति...पे... विनेय्य लोके अभिज्झादोमनस्सं ति एत्थ **वेदनासु वेदनानुपस्सी** ति एवमादीसु वेदनादीनं पुन वचने पयोजनं कायानुपस्सनायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं । वेदनासु वेदनानुपस्सी, चित्ते चित्तानुपस्सी, धम्मेसु धम्मानुपस्सी ति एत्थ पन **वेदना** ति तिस्सो वेदना, ता च 20
लोकिया एव । चित्तम्पि लोकियं, तथा धम्मा । तेसं विभागो निद्देसवारे पाकटो भविस्सति । केवलं पनिध यथा वेदना अनुपस्सितब्बा, तथा ता अनुपस्सन्तो वेदनासु वेदनानुपस्सी'' ति वेदितब्बो । एस नयो चित्तधम्मेसुपि । कथञ्च वेदना अनुपस्सितब्बा ति ? सुखा ताव वेदना दुक्खतो, दुक्खा सल्लतो, अदुक्खमसुखा अनिच्चतो । 25
यथाह—

B. 352
R. 761

"यो सुखं दुक्खतो अद्द, दुक्खमद्दक्खि सल्लतो।
अदुक्खमसुखं सन्तं, अद्दक्खि नं अनिच्चतो।
स वे सम्मद्दसो भिक्खु, उपसन्तो चरिस्सती"
(सं॰ नि॰ ३.१८५) ति।

5 सब्बा एव चेता "दुक्खा" तिपि अनुपस्सितब्बा। वुत्तञ्हेतं— "यं किञ्चि वेदियितं, तं[1] दुक्खस्मिं ति वदामी" (सं॰ नि॰ ३.१९३) ति। सुखदुक्खतोपि च अनुपस्सितब्बा। यथाह "सुखा वेदना ठितिसुखा विपरिणामदुक्खा" (म॰ नि॰ १.३७३) ति सब्बं वित्थारेतब्बं। अपिच अनिच्चादिसत्तअनुपस्सनावसेनपि अनुपस्सितब्बा।
10 सेसं निद्देसवारेयेव पाकटं भविस्सति।

चित्तधम्मेसुपि चित्तं ताव आरम्मणाधिपतिसहजातभूमिकम्मविपाककिरियादिनानत्तभेदानं अनिच्चादिअनुपस्सनानं निद्देसवारे आगतसरागादिभेदानञ्च वसेन अनुपस्सितब्बं। धम्मा सलक्खणसामञ्ञलक्खणानं सुञ्ञतधम्मस्स अनिच्चादिसत्तानुपस्सनानं निद्देसवारे
15 आगतसन्तादिभेदानञ्च वसेन अनुपस्सितब्बा। सेसं वुत्तनयमेव। कामञ्चेत्थ यस्स कायसङ्खाते लोके अभिज्झादोमनस्सं पहीनं, तस्स वेदनादीसुपि तं पहीनमेव। नानापुग्गलवसेन पन नानाचित्तक्खणिकसतिपट्ठानभावनावसेन च सब्बत्थ वुत्तं। यतो वा एकत्थ पहीनं सेसेसुपि पहीनं होति, तेनेवस्स तत्थ पहानदस्सनत्थम्पि एतं वुत्तं ति
20 वेदितब्बं ति।

उद्देसवारकथा निट्ठिता।

२. कायानुपस्सना

(क) आनापानपब्बवण्णना

३. इदानि सेय्यथापि नाम छेको विलीवकारतो थूलकिलञ्जसण्हकिलञ्जचङ्कोटकपेळापुटादीनि उपकरणानि कत्तुकामो एकं महावेणुं

१. तं सब्बं—रो॰।

लभित्वा चतुधा भिन्दित्वा ततो एकेकं वेणुखण्डं गहेत्वा फालेत्वा तं तं उपकरणं करेय्य, एवमेव भगवा सतिपट्ठानदेसनाय सत्तानं अनेकप्पकारं विसेसाधिगमं कत्तुकामो एकमेव सम्मासतिं "चत्तारो सतिपट्ठाना। कतमे चत्तारो? इध, भिक्खवे, भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरती" तिआदिना नयेन आरम्मणवसेन चतुधा भिन्दित्वा ततो एकेकं सतिपट्ठानं गहेत्वा कायं विभजन्तो "कथञ्च भिक्खवे" ति आदिना नयेन निद्देसवारं वत्तुमारद्धो। R. 762 B. 353 5

तत्थ **कथञ्चा** (दी० नि० २.२१७) तिआदि वित्थारेतुकम्यता-पुच्छा। अयं पनेत्थ सङ्खेपत्थो—भिक्खवे, केन च पकारेन भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरती ति? एस नयो सब्बपुच्छावारेसु। **इध भिक्खवे भिक्खू** ति भिक्खवे इमस्मिं सासने भिक्खु। अयञ्हेत्थ इधसद्दो सब्बप्पकारकायानुपस्सनानिब्बत्तकस्स पुग्गलस्स सन्निस्सय-भूतसासनपरिदीपनो अञ्ञसासनस्स तथाभावपटिसेधनो च। वुत्तञ्हेतं "इधेव, भिक्खवे, समणो ... पे ... सुञ्ञा परप्पवादा समणेभि अञ्ञेही" (म० नि० १.९०) ति। तेन वुत्तं "इमस्मिं सासने भिक्खू" ति। 10 15

अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो व सुञ्ञागारगतो वा ति इदमस्स सतिपट्ठानभावनानुरूपसेनासनपरिग्गहपरिदीपनं। इमस्स हि भिक्खुनो दीघरत्तं रूपादीसु आरम्मणेसु अनुविसटंचित्तं कम्मट्ठानवीथिं ओतारितुं न इच्छति, कूटगोणयुत्तरथो विय उप्पथमेव धावति। तस्मा सेय्यथापि नाम गोपो कूटधेनुया सब्बं खीरं पिवित्वा वड्ढितं कूटवच्छं दमेतुकामो धेनुतो अपनेत्वा एकमन्ते महन्तं थम्भं निखणित्वा तत्थ योत्तेन बन्धेय्य। अथस्स सो वच्छो इतो चितो च विप्फन्दित्वा पलायितुं असक्कोन्तो तमेव थम्भं उपनिसीदेय्य वा उपनिपज्जेय्य वा, एवमेव इमिनापि भिक्खुना दीघरत्तं रूपारम्मणादिरसपानवड्ढितं दुट्ठचित्तं दमेतुकामेन रूपादिआरम्मणतो अपनेत्वा अरञ्ञं वा रुक्खमूलं वा सुञ्ञागारं वा पविसित्वा तत्थ सतिपट्ठानारम्मणत्थम्भे सतियोत्तेन बन्धितब्बं। एवमस्स तं चित्तं इतो चित्तो च 20 25 R. 763

विप्फन्दित्वापि पुब्बे आचिण्णारम्मणं अलभमानं सतियोत्तं छिन्दित्वा पलायितुं असक्कोन्तं तमेवारम्मणं उपचारप्पनावसेन उपनिसीदति चेव उपनिपज्जति च। तेनाहु पोराणा—

"यथा थम्भे निबन्धेय्य, वच्छं दमं नरो इध।
5 बन्धेय्येवं सकं चित्तं, सतियारम्मणे दळ्हं" ति॥

B. 354 एवमस्सेतं सेनासनं भावनानुरूपं होति। तेन वुत्तं "इदमस्स सतिपट्ठानभावनानुरूपसेनासनपरिग्गहपरिदीपनं" ति।

अपिच यस्मा इदं कायानुपस्सनाय मुद्धभूतं सब्बबुद्धपच्चेकबुद्ध-सावकानं विसेसाधिगमदिट्ठधम्मसुखविहारपदट्ठानं आनापानस्सति-
10 कम्मट्ठानं इत्थिपुरिसहत्थिअस्सादिसद्दसमाकुलं गामन्तं अपरिच्चजित्वा न सुकरं सम्पादेतुं, सद्दकण्डकत्ता झानस्स। अगामके पन अरञ्ञे सुकरं योगावचरेन इदं कम्मट्ठानं परिग्गहेत्वा आनापानचतुत्थज्झानं निब्बत्तेत्वा तदेव झानं पादकं कत्वा सङ्खारे सम्मसित्वा अग्गफलं अरहत्तं पापुणितुं, तस्मास्स अनुरूपसेनासनं दस्सेन्तो भगवा,
15 "अरञ्ञगतो वा" तिआदिमाह।

वत्थुविज्जाचरियो विय हि भगवा। सो यथा वत्थुविज्जाचरियो नगरभूमिं पस्सित्वा सुट्ठु उपपरिक्खित्वा "एत्थ नगरं मापेथा" ति उपदिसति, सोत्थिना च नगरे निट्ठिते राजकुलतो महासक्कारं लभति, एवमेव योगावचरस्स अनुरूपसेनासनं उपपरिक्खित्वा "एत्थ कम्मट्ठान-
20 मनुयुञ्जितब्बं' ति उपदिसति, ततो तत्थ कम्मट्ठानमनुयुञ्जन्तेन योगिना अनुक्कमेन अरहत्ते पत्ते "सम्मासम्बुद्धो वत सो भगवा" ति महन्तं सक्कारं लभति।

अयं पन भिक्खु दीपिसदिसो ति वुच्चति। यथा हि महादीपिराजा अरञ्ञे तिणगहनं वा पब्बनगहनं वा पब्बतगहनं वा निस्साय
25 निलीयित्वा वनमहिंसगोकण्णसूकरादयो मिगे गण्हाति, एवमेव अयं
R. 764 अरञ्ञादीसु कम्मट्ठानं अनुयुञ्जन्तो भिक्खु यथाक्कमेन चत्तारो मग्गे चेव चत्तारि अरियफलानि च गण्हाति। तेनाहु पोराणा—

"यथापि दीपिको नाम, निलीयित्वा गण्हती मिगे।
तथेवायं बुद्धपुत्तो, युत्तयोगो विपस्सको।
अरञ्ञं पविसित्वान, गण्हाति फलमुत्तमं" ति ॥

तेनस्स परक्कमजवयोग्गभूमिं अरञ्ञसेनासनं दस्सेन्तो भगवा "अरञ्ञगतो वा" तिआदिमाह। इतो परं इमस्मिं आनापानपब्बे यं 5 वत्तब्बं सिया, तं विसुद्धिमग्गे वुत्तमेव। **सेय्यथापि भिक्खवे दक्खो भमकारो वा** (दी० नि० २.२१८) ति इदञ्हि उपमामत्तमेव। **इति अज्झत्तं वा काये** ति इदं अप्पनामत्तमेव च तत्थ अनागतं, सेसं आगतमेव।

यं पन अनागतं, तत्थ **दक्खो** ति छेको। **दीघं वा अञ्छन्तो** ति 10 B. 355 महन्तानं भेरीपोक्खरादीनं लिखनकाले हत्थे च पादे च पसारेत्वा दीघं कड्ढन्तो। **रस्सं वा अञ्छन्तो** ति खुद्दकानं दन्तसूचिवेधकादीनं लिखनकाले मन्दमन्दं रस्सं कड्ढन्तो। **एवमेव खो** ति एवं अयम्पि भिक्खु अद्धानवसेन इत्तरवसेन च पवत्तानं अस्सासपस्सासानं वसेन दीघं वा अस्सन्तो दीघं अस्ससामी ति पजानाति...पे०...पस्ससिस्सामी 15 ति सिक्खती ति। तस्सेवं सिक्खतो अस्सासपस्सासनिमित्ते चत्तारि झानानि उप्पज्जन्ति, सो झाना वुट्ठहित्वा अस्सासपस्सासे वा परिग्गण्हाति झानङ्गानि वा।

तत्थ अस्सासपस्सासकम्मिको "इमे अस्सासपस्सासा किं निस्सिता? वत्थुनिस्सिता, वत्थु नाम करजकायो, करजकायो नाम चत्तारि महा- 20 भूतानि उपादारूपञ्चे" ति एवं रूपं परिग्गण्हाति। ततो तदारम्मणे फस्सपञ्चके नामं ति। एवं नामरूपं परिग्गहेत्वा तस्स पच्चयं परियेसन्तो अविज्जादिपटिच्चसमुप्पादं दिस्वा "पच्चयपच्चयुप्पन्नधम्ममत्तमेवेतं, अञ्ञो सत्तो वा पुग्गलो वा नत्थी" ति वितिण्णकङ्खो सप्पच्चयनामरूपे R. 765 तिलक्खणं आरोपेत्वा विपस्सनं वड्ढेन्तो अनुक्कमेन अरहत्तं पापुणाति। 25 इदं एकस्स भिक्खुनो याव अरहत्ता निय्यानमुखं।

झानकम्मिकोपि इमानि झानङ्गानि किं निस्सितानि । वत्थुनिस्सितानि । वत्थु नाम करजकायो झानङ्गानि नामं, करजकायो रूपं" ति नामरूपं ववत्थपेत्वा तस्स पच्चयं परियेसन्तो अविज्जादिपच्चयाकारं दिस्वा "पच्चयपच्चयुप्पन्नधम्ममत्तमेवेतं, अञ्ञो सत्तो वा पुग्गलो
5 वा नत्थी" ति वितिण्णकङ्खो सप्पच्चयनामरूपे तिलक्खणं आरोपेत्वा विपस्सनं वड्ढेन्तो अनुक्कमेन अरहत्तं पापुणाति । इदमेकस्स भिक्खुनो याव अरहत्ता निय्यानमुखं ।

इति **अज्झत्तं वा** ति एवं अत्तनो वा अस्सासपस्सासकाये कायानुपस्सी विहरति । **बहिद्धा वा** ति परस्स वा अस्सासपस्सास-
10 काये । **अज्झत्तबहिद्धा वा** ति कालेन अत्तनो, कालेन परस्स अस्सासपस्सासकाये । एतेनस्स पगुणकम्मट्ठानं अट्ठपेत्वा अपरापरं सञ्चरणकालो कथितो । एकस्मिं काले पन इदं उभयं न लब्भति ।

B. 356 **समुदयधम्मानुपस्सी वा** ति यथा नाम कम्मारस्स भस्तञ्च गग्गरनाळिञ्च तज्जञ्च वायामं पटिच्च वातो अपरापरं सञ्चरति, एवं
15 भिक्खुनो करजकायञ्च नासापुटञ्च चित्तञ्च पटिच्च अस्सासपस्सासकायो अपरापरं सञ्चरति । कायादयो धम्मा समुदयधम्मा, ते पस्सन्तो "समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरती" ति वुच्चति । **वयधम्मानुपस्सी वा** ति यथा भस्ताय अपनीताय गग्गरनाळिया भिन्नाय तज्जे च वायामे असति सो वातो नप्पवत्तति, एवमेव काये
20 भिन्ने नासापुटे विद्धस्ते चित्ते च निरुद्धे अस्सासपस्सासकायो नाम नप्पवत्तती ति कायादिनिरोधा अस्सासपस्सासनिरोधो ति एवं पस्सन्तो "वयधम्मानुपस्सी वा कायस्मिं विहरती" ति वुच्चति । **समुदयवयधम्मानुपस्सी वा** ति कालेन समुदयं कालेन वयं अनुपस्सन्तो । **अत्थि कायो** ति वा **पनस्सा** ति कायोव अत्थि, न
25 सत्तो, न पुग्गलो, न इत्थी, न पुरिसो, न अत्ता, न अत्तनियं नाहं, न मम, न कोचि, न कस्सची ति एवमस्स सति पच्चुपट्ठिता होति ।

R. 766 **यावदेवा** ति पयोजनपरिच्छेदववत्थापनमेतं । इदं वुत्तं होति—या सा सति पच्चुपट्ठिता होति, सा न अञ्ञदत्थाय । अथ खो यावदेव

ञाणमत्ताय अपरापरं उत्तरुत्तरि ञाणपमाणत्थाय चेव सतिपमाणत्थाय च, सतिसम्पजञ्ञानं वुड्ढत्थाया ति अत्थो। **अनिस्सितो च**[1] **विहरती** ति तण्हानिस्सयदिट्ठिनिस्सयानं वसेन अनिस्सितोव विहरति। **न च किञ्चि लोके उपादियती** ति लोकस्मिं किञ्चि रूपं वा ...पे० ... विञ्ञाणं वा "अयं मे अत्ता व अत्तनियं वा" ति न गण्हाति। 5
एवम्पी ति उपरि अत्थं उपादाय सम्पिण्डनत्थो पिकारो। इमिना पन पदेन भगवा आनापानपानपब्बदेसनं निय्यातेत्वा दस्सेति।

तत्थ अस्सासपस्सासपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं, तस्सा समुट्ठापिका पुरिमतण्हा समुदयसच्चं उभिन्नं अप्पवत्ति निरोधसच्चं, दुक्खपरिजाननो समुदयपजहनो निरोधारम्मणो अरियमग्गो मग्गसच्चं। 10
एवं चतुसच्चवसेन उस्सक्कित्वा निब्बुतिं पापुणाती ति इदमेकस्स अस्सासपस्सासवसेन अभिनिविट्ठस्स भिक्खुनो याव अरहत्ता निय्यानमुखं ति।

(ख) इरियापथपब्बवण्णना

B. 357

४. एवं अस्सासपस्सासवसेन कायानुपस्सनं विभजित्वा इदानि इरियापथवसेन विभजितुं **पुन च परं** (दी० नि० २.२१८) 15
तिआदिमाह। तत्थ कामं सोणसिङ्गालादयोपि गच्छन्ता "गच्छामा" ति जानन्ति, न पनेतं एवरूपं जाननं सन्धाय वुत्तं। एवरूपञ्हि जाननं सत्तूपलद्धिं न पजहति, अत्तसञ्ञं[2] न उग्घाटेति, कम्मट्ठानं वा सतिपट्ठानभावना वा न होति। इमस्स पन भिक्खुनो जाननं सत्तूपलद्धिं पजहति, अत्तसञ्ञं उग्घाटेति कम्मट्ठानञ्चेव सतिपट्ठानभावना च 20
होति। इदञ्हि "को गच्छति, कस्स गमनं, किं कारणा गच्छती" ति एवं सम्पजाननं सन्धाय वुत्तं। ठानादीसुपि एसेव नयो।

तत्थ को गच्छती ति ? न कोचि सत्तो वा पुग्गलो वा गच्छति। कस्स गमनं ति ? न कस्सचि सत्तस्स वा पुग्गलस्स वा गमनं। किं

१. व—रो०। २. सतसञ्ञं—रो०।

R. 767 कारणा गच्छती ति? चित्तकिरियवायोधातुविप्फारेन गच्छति। तस्मा एस एवं पजानाति—"गच्छामी" ति चित्तं उप्पज्जति, तं वायं जनेति, वायो विञ्ञत्तिं जनेति, चित्तकिरियवायोधातुविप्फारेन सकलकायस्स पुरतो अभिनीहारो गमनं ति वुच्चति। ठानादीसु पि 5 एसेव नयो।

तत्रापि हि "तिट्ठामी" ति चित्तं उप्पज्जति, तं वायं जनेति, वायो विञ्ञत्तिं जनेति, चित्तकिरियवायोधातुविप्फारेन सकलकायस्स कोटितो पट्ठाय उस्सितभावो ठानं ति वुच्चति। "निसीदामी" ति चित्तं उप्पज्जति, तं वायं जनेति, वायो विञ्ञत्तिं जनेति, 10 चित्तकिरियवायोधातुविप्फारेन हेट्ठिमकायस्स समिञ्जनं उपरिमकायस्स उस्सितभावो निसज्जा ति वुच्चति। "सयामी" ति चित्तं उप्पज्जति, तं वायं जनेति, वायो विञ्ञत्तिं जनेति, चित्तकिरियवायोधातु-विप्फारेन सकलसरीरस्स तिरियतो पसारणं सयनं ति वुच्चती ति।

तस्स एवं पजानतो एवं होति "सत्तो गच्छति, सत्तो तिट्ठती" 15 ति वुच्चति। अत्थतो[1] पन कोचि सत्तो गच्छन्तो वा ठितो वा नत्थि। यथा पन "सकटं गच्छति, सकटं तिट्ठती" ति वुच्चति, न च किञ्चि सकटं नाम गच्छन्तं वा ठितं वा अत्थि, चत्तारो पन गोणे योजेत्वा छेकम्हि सारथिम्हि पाजेन्ते "सकटं गच्छति, सकटं B. 358 तिट्ठती" ति वोहारमत्तमेव होति, एवमेव अजाननट्ठेन सकटं विय 20 कायो, गोणा विय चित्तजवाता, सारथि विय चित्तं। "गच्छामि तिट्ठामी" ति चित्ते उप्पन्ने वायोधातु विञ्ञत्तिं जनयमाना उप्पज्जति, चित्तकिरियवायोधातुविप्फारेन गमनादीनि पवत्तन्ति, ततो "सत्तो गच्छति, सत्तो तिट्ठति, अहं गच्छामि, अहं तिट्ठामी" ति वोहारमत्तं होति। तेनाह—

25 "नावा मालुतवेगेन, जियावेगेन तेजनं।
यथा याति तथा कायो, याति वाताहतो अयं॥

१. अत्थि एता--रो०।

R. 768

यन्तं सुत्तवसेनेव, चित्तसुत्तवसेनिदं ।
पयुत्तं काययन्तम्पि, याति ठाति निसीदति ।।
को नाम एत्थ सो सत्तो, यो विना हेतुपच्चये ।
अत्तनो आनुभावेन, तिट्ठे वा यदि वा वजे''ति ।।

तस्मा एवं हेतुपच्चयवसेनेव पवत्तानि गमनादीनि सल्लक्खेन्तो 5
एस ''गच्छन्तो वा गच्छामी ति पजानाति, ठितो वा, निसिन्नो वा, सयानो वा सयानोम्ही ति पजानाती'' ति वेदितब्बो ।

यथा यथा वा पनस्स कायो पणिहितो होति, तथा तथा नं पजानाती ति सब्बसङ्गाहिकवचनमेतं । इदं वुत्तं होति—येन येन वा आकारेनस्स कायो ठितो होति, तेन तेन नं पजानाति । 10
गमनाकारेन ठितं गच्छती ति पजानाति । ठाननिसज्जसयनाकारेन ठितं सयानो ति पजानाती ति ।

इति अज्झत्तं वा ति एवं अत्तनो वा चतुइरियापथपरिग्गण्हनेन काये कायानुपस्सी विहरति । **बहिद्धा वा** ति परस्स वा चतुइरिया पथपरिग्गण्हनेन । **अज्झत्तबहिद्धा वा** ति कालेन अत्तनो, कालेन 15
परस्स चतुइरियापथपरिग्गण्हनेन काये कायानुपस्सी विहरति । **समुदयधम्मानुपस्सी वा** ति आदीसु पन अविज्जासमुदया रूपसमुदयो ति आदिना नयेन पञ्चहाकारेहि रूपक्खन्धस्स समुदयो च वयो च नीहरितब्बो । तञ्हि सन्धाय इध ''समुदयधम्मानुपस्सी वा'' ति आदि वुत्तं । **अत्थि कायो ति वा पनस्सा** ति आदि 20
वुत्तसदिसमेव ।

B. 359

इधापि चतुइरियापथपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं, तस्सा समुट्ठापिका पुरिमतण्हा समुदयसच्चं, उभिन्नं अप्पवत्ति निरोधसच्चं, दुक्खपरिजाननो समुदयपजहनो निरोधारम्मणो अरियमग्गो मग्गसच्चं । एवं चतुसच्चवसेन उस्सक्कित्वा निब्बुतिं पापुणाती ति 25
इदमेकस्स चतुइरियापथपरिग्गाहकस्स भिक्खुनो याव अरहत्ता निय्यानमुखं ति ।

(ग) चतुसम्पजञ्ञपब्बवण्णना

५. एवं इरियापथवसेन कायानुपस्सनं विभजित्वा इदानि चतुसम्पजञ्ञवसेन विभजितुं **पुन चपरं** (दी० नि० २.२१८)
R. 769 तिआदिमाह । तत्थ **अभिक्कन्ते** तिआदीनि सामञ्ञफले वण्णितानि । **इति अज्झत्तं वा** ति एवं चतुसम्पजञ्ञपरिग्गण्हनेन अत्तनो वा काये,
5 परस्स वा काये, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स काये कायानुपस्सी विहरति । इधापि **समुदयवयधम्मानुपस्सी** ति-आदीसु रूपक्खन्धस्सेव समुदयो च वयो च नीहरितब्बो । सेसं वुत्तसदिसमेव ।

इध चतुसम्पजञ्ञपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं, तस्सा समुट्ठापिका पुरिमतण्हा समुदयसच्चं, उभिन्नं अप्पवत्ति निरोधसच्चं,
10 वुत्तप्पकारो अरियमग्गो मग्गसच्चं एवं चतुसच्चवसेन उस्सक्कित्वा निब्बुतिं पापुणाती ति इदमेकस्स चतुसम्पजञ्ञपरिग्गाहकस्स भिक्खुनो वसेन याव अरहत्ता निय्यानमुखं ति ।

चतुसम्पजञ्ञपब्बं निट्ठितं ।

(घ) पटिकूलमनसिकारपब्बवण्णना

एवं चतुसम्पजञ्ञवसेन कायानुपस्सनं विभजित्वा इदानि पटिकूलमनसिकारवसेन विभजितुं **पुन चपरं** (दी० निं० २.२१९)
15 तिआदिमाह । तत्थ **इममेव कायं** ति आदीसु यं वत्तब्बं सिया, तं सब्बं सब्बाकारेन वित्थारतो विसुद्धिमग्गे कायगतासतिकम्मट्ठाने वुत्तं । **उभतोमुखा** ति हेट्ठा च उपरि चा ति द्वीहि मुखेहि युत्ता । **नानाविहितस्स** ति नानाविधस्स ।

B. 360 इदं पनेत्थ ओपम्मसंसन्दनं । उभतोमुखा पुतोळि विय हि चातु-
20 महाभूतिको कायो, तत्थ मिस्सेत्वा पक्खित्तनानाविधधञ्ञं विय केसादयो द्वत्तिंसाकारा, चक्खुमा पुरिसो विय योगावचरो, तस्स तं पुतोलिं मुञ्चित्वा पच्चवेक्खतो नानाविधधञ्ञस्स पाकटकालो विय

योगिनो द्वत्तिंसाकारस्स विभूतकालो वेदितब्बो। **इति अज्झत्तं वा** ति एव केसादिपरिग्गण्हनेन अत्तनो वा काये, परस्स वा काये, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स काये कायानुपस्सी विहरति। इतो परं वुत्तनयमेव। केवलञ्हि इध द्वत्तिंसाकारपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं योजनं कत्वा निय्यानमुखं वेदितब्बं। सेसं पुरिमसदिसमेवा 5 R. 770 ति।

पटिकूलमनसिकारपब्बं निट्ठितं।

(ङ) धातुमनसिकारपब्बवण्णना

७. एवं पटिकूलमनसिकारवसेन कायानुपस्सनं विभजित्वा इदानि धातुमनसिकारवसेन विभजितुं **पुन चपरं** (दी० नि० २.२१९) तिआदिमाह। तत्थायं ओपम्मसंसन्दनेन सद्धिं अत्थवण्णना। यथा कोचि[1] गोघातको वा तस्सेव वा भत्तवेतनभतो अन्तेवासिको गाविं 10 वधित्वा विनिविज्झित्वा चतस्सो दिसा गतानं महापथानं वेमज्झट्ठान-सङ्खाते चतुमहापथे कोट्ठासं कत्वा निसिन्नो अस्स, एवमेव भिक्खु चतुन्नं इरियापथानं येन केनचि आकारेन ठितत्ता यथाठितं, यथा-ठितत्ता च यथापणिहितं कायं "अत्थि इमस्मिं काये पथवीधातु ... पे० ... वायोधातू" ति एवं पच्चवेक्खति। 15

किं वुत्तं होति—यथा गोघातकस्स गाविं पोसेन्तस्सापि आघातनं आहरन्तस्सपि आहरित्वा तत्थ बन्धित्वा ठपेन्तस्सापि वधेन्तस्सापि वधितं मतं पस्सन्तस्सापि तावदेव गावी ति सञ्ञा न अन्तरधायति, याव नं पदालेत्वा विलसो न विभजति। विभजित्वा निसिन्नस्स पनस्स गावी-ति-सञ्ञा अन्तरधायति, मंससञ्ञा पवत्तति। नास्स 20 एवं होति—"अहं गाविं विक्किणामि, इमे गाविं हरन्ती" ति। अथ B. 361 खवस्स "अहं मंसं विक्किणामि, इमे मंसं हरन्ति" च्चेव होति; एवमेव

1. एको—रो०।

इमस्सापि भिक्खुनो पुब्बे बालपुथुज्जनकाले गिहिभूतस्सापि पब्ब-
जितस्सापि तावदेव सत्तो ति वा पुग्गलो ति वा सञ्ञा न अन्तर-
धायति, याव इममेव कायं यथाठितं यथापणिहितं घनविनिब्भोगं
कत्वा धातुसो न पच्चवेक्खति । धातुसो पच्चवेक्खतो पनस्स सत्तसञ्ञा
5 अन्तरधायति, धातुवसेनेव चित्तं सन्तिट्ठति । तेनाह भगवा—
"इममेव कायं यथाठितं यथापणिहितं धातुसो पच्चवेक्खति 'अत्थि
इमस्मिं काये पथवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातू' ति ।
सेय्यथापि, भिक्खवे, दक्खो गोघातको वा... पे० ...वायोधातू" ति ।
गोघातको विय हि योगी, गावी ति—सञ्ञा विय सत्तसञ्ञा, चतु-
R. 771 10 महापथो विय चतुइरियापथो, बिलसो विभजित्वा निसिन्नभावो विय
धातुसो पच्चवेक्खणं ति अयमेत्थ पाळिवण्णना । कम्मट्ठानकथा पन
विसुद्धिमग्गे वित्थारिता । **इति अज्झत्तं वा** ति एवं चतुधातुपरि-
ग्गण्हनेन अत्तनो वा काये परस्स वा काये, कालेन वा अत्तनो, कालेन
वा परस्स काये कायानुपस्सी विहरति । इतो परं वुत्तनयमेव ।
15 केवलञ्हि इध चतुधातुपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं योजनं
कत्वा निय्यानमुखं वेदितब्बं । सेसं पुरिमसदिसमेवा ति ।

धातुमनसिकारपब्ब निट्ठितं ।

(च) नवसिवथिकपब्बवण्णना

८. एवं धातुमनसिकारवसेन कायानुपस्सनं विभजित्वा इदानि
नवहि सिवथिकपब्बेहि विभजितुं **पुन चपरं** तिआदिमाह । तत्थ
सेय्यथापि पस्सेय्या (दी० नि० २.२२०) ति यथा पस्सेय्य । **सरीरं**
20 ति मतसरीरं । **सिवथिकाय छड्डितं** ति सुसाने अपविद्धं । एकाहं
मतस्स अस्सा ति **एकाहमतं** । द्वीहं मतस्स अस्सा ति **द्वीहमतं** । तीहं
मतस्स अस्सा ति **तीहमतं** । कम्मारभस्ता विय वायुना उद्धं जीवित-
परियादाना यथानुक्कमं समुग्गतेन सूनभावेन उद्धुमातत्ता उद्धुमातं,
उद्धुमातमेव **उद्धुमातकं** । पटिकूलत्ता वा कुच्छितं उद्धुमातं ति

उद्धुमातकं। विनीलं वुच्चति विपरिभिन्नवण्णं, विनीलमेव विनीलकं। पटिकूलत्ता वा कुच्छितं विनीलं ति विनीलकं। मंसुस्सदट्ठानेसु रत्तवण्णस्स पुब्बसन्निचयट्ठानेसु सेतवण्णस्स येभुय्येन च नीलवण्णस्स नीलट्ठानेसु नीलसाटकपारुतस्सेव छवसरीरस्सेतं अधिवचनं। परिभिन्नट्ठानेहि नवहि वा वणमुखेहि विस्सन्दमानपुब्बं विपुब्बं, विपुब्बमेव विपुब्बकं। पटिकूलत्ता वा कुच्छितं विपुब्बं ति विपुब्बकं। विपुब्बकं जातं तथाभावं गतं ति **विपुब्बकजातं**। B. 362 5

सो इममेव कायं ति सो भिक्खु इमं अत्तनो कायं तेन कायेन सद्धिं ञाणेन उपसंहरति उपनेति। कथं? **अयम्पि खो कायो एवंधम्मो एवं भावी एवं अनतीतो** ति। इदं वुत्तं होति—आयु, उस्मा, विञ्ञाणं ति इमेसं तिण्णं धम्मानं अत्थिताय अयं कायो ठानगमनादिखमो होति। इमेसं पन विगमा अयम्पि खो कायो एवं धम्मो एवं पूतिकसभावोयेव। **एवं भावी** एवं उद्धुमातादिभेदो भविस्सति। **एवं अनतीतो** एवं उद्धुमातादिभावं अनतिक्कन्तो ति। इति **अज्झत्तं वा** ति एवं उद्धुमातादिपरिग्गण्हनेन अत्तना वा काये, परस्स वा काये, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स काये कायानुपस्सी विहरति। 10 R. 772 15

खज्जमानं ति उदरादीसु निसीदित्वा उदरमंसओट्ठमंसअक्खिकूटादीनि लुञ्चित्वा लुञ्चित्वा खादियमानं। **समंसलोहितं** ति सावसेसमंसलोहितयुत्तं। **निमंसलोहितमक्खितं** ति मंसे खीणेपि लोहितं न सुस्सति, तं सन्धाय वुत्तं "निमंसलोहितमक्खितं" ति। **अञ्ञेना** ति अञ्ञेन दिसाभागेन। **हत्थट्ठिकं** ति चतुसट्ठिभेदम्पि हत्थट्ठिकं पाटियेक्कं पाटियेक्कं विप्पकिण्णं। **पादट्ठिकादीसुपि** एसेव नयो। 20

तेरोवस्सिकानी ति अतिक्कन्तसंवच्छरानि। **पूतीनी** ति अब्भोकासे ठितानि वातातपवुट्ठिसम्फस्सेन तेरोवस्सिकानेव पूतीनि होन्ति, अन्तोभूमिगतानि पन चिरतरं तिट्ठन्ति। **चुण्णकजातानी** ति चुण्णं चुण्णं हुत्वा विप्पकिण्णानि। **सब्बत्थ सो इममेवा** ति वुत्तनयेन 25

खज्जमानादीनं वसेन योजना कातब्बा। इतिअज्झत्तं वा ति एवं खज्जमानादिपरिग्गण्हनेन याव चुण्णकभावा अत्तनो वा काये, परस्स वा काये कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स काये कायानुपस्सी B. 363 विहरति। इध पन ठत्वा नवसिवथिका समोधानेतब्बा। एकाहमतं 5 वा ति हि आदिना नयेन वुत्ता सब्बापि एका, काकेहि वा खज्जमानं तिआदिका एका, अट्ठिकसङ्खलिकं समंसलोहितं न्हारुसम्बन्धं ति एका निमंसलोहितमक्खितं न्हारुसम्बन्धं ति एका, अपगतमंसलोहितं न्हारुसम्बन्धं ति एका, अट्ठिकानि अपगतसम्बन्धानी ति-आदिका एका, अट्ठिकानि सेतानि सङ्खवण्णपरिभागानी ति एका, पुञ्जकितानि[1] 10 तेरोवस्सिकानी ति एका, पूतीनि चुण्णकजातानी ति एका ति।

एवं खो भिक्खवे ति इदं नवसिवथिका दस्सेत्वा कायानुपस्सनं R. 773 निट्ठपेन्तो आह। तत्थ नवसिवथिकपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं, तस्सा समुट्ठापिका पुरिमतण्हा समुदयसच्चं, उभिन्नं अप्पवत्ति निरोधसच्चं, दुक्खपरिजाननो समुदयपजहनो निरोधारम्मणो 15 अरियमग्गो मग्गसच्चं। एवं चतुसच्चवसेन उस्सक्कित्वा निब्बुतिं पापुणाती ति इदं नवसिवथिकपरिग्गाहकानं भिक्खूनं याव अरहत्ता निय्यानमुखं ति।

नवसिवथिकपब्बं निट्ठितं।

एत्तावता च आनापानपब्बं, इरियापथपब्बं, चेतुसम्पजञ्ञपब्बं, पटिकूलमनसिकारपब्बं, धातुमनसिकारपब्बं, नवसिवथिकपब्बानी ति 20 चुद्दसपब्बा कायानुपस्सना निट्ठिता होति। तत्थ आनापानपब्बं, पटिकूलमनसिकारपब्बं ति। इमानेव द्वे अप्पनाकम्मट्ठानानि सिवथिकानं पन आदीनवानुपस्सनावसेन वुत्तत्ता सेसानि द्वादसापि उपचारकम्मट्ठानानेवा ति।

कायानुपस्सना निट्ठिता।

1. पुञ्चकितानि—रो०।

३. वेदनानुपस्सनावण्णना

९. एवं भगवा चुद्दसविधेन कायानुपस्सनासतिपट्ठानं कथेत्वा इदानि नवविधेन वेदनानुपस्सनं कथेतुं **कथञ्च, भिक्खवे**—ति-आदि-माह। तत्थ **सुखं वेदनं** (दी० नि० २.२२१) ति कायिकं वा चेतसिकं वा सुखं वेदनं वेदयमाना "अहं सुखं वेदनं वेदयामी" ति पजानाती ति अत्थो। तत्थ कामं उत्तानसेय्यकापि दारका थञ्ञपिवनादिकाले 5 B. 364 सुखं वेदयमाना "सुखं वेदनं वेदयामा" ति पजानन्ति, न पनेतं एवरूपं जाननं सन्धाय वुत्तं। एवरूपञ्हि जाननं सत्तूपलद्धिं न जहति, अत्तसञ्ञं[1] न उग्घाटेति, कम्मट्ठानं वा सतिपट्ठानभावना वा न होति। इमस्स पुन भिक्खुनो जाननं सत्तूपलद्धिं जहति, अत्तसञ्ञं उग्घाटेति, कम्मट्ठानञ्चेव सतिपट्ठानभावना च होति। 10 इदञ्हि "को वेदयति, कस्स वेदना, किं कारणा वेदना" ति एवं सम्पजानवेदियनं सन्धाय वुत्तं।

तत्थ को वेदयती ति, न कोचि सत्तो वा पुग्गलो वा वेदयति। कस्स वेदना ति, न कस्सचि सत्तस्स वा पुग्गलस्स वा वेदना। किं कारणा वेदना ति, वत्थुआरम्मणाव पनस्स वेदना। तस्मा एस एवं 15 पजानाति "तं तं सुखादीनं वत्थुं आरम्मणं कत्वा वेदनाव वेदयति। तं पन वेदनाय पवत्तिं उपादाय 'अहं वेदयामी' ति वोहारमत्तं होती" R. 774 ति। एवं वत्थुं आरम्मणं कत्वा वेदनाव वेदयती ति सल्लक्खेन्तो एस "सुखं वेदनं वेदयामी ति पजानाती" ति वेदितब्बो चित्तलपब्बते अञ्ञतरत्थेरो विय। 20

थेरो किर अफासुककाले बलववेदनाय नित्थुनन्तो अपरापरं परिवत्तति। तमेको दहरो आह—"कतरं, वो भन्ते, ठानं रुज्जती" ति। आवुसो, पाटियेक्कं रुज्जनट्ठानं नाम नत्थि, वत्थुं आरम्मणं कत्वा वेदनाव वेदयती ति। एवं जाननकालतो पट्ठाय अधिवासेतुं वट्टति

१. सत्तसञ्ञं—रो०।

नो, भन्ते, ति। अधिवासेमि, आवुसो ति। अधिवासना, भन्ते, सेय्यो ति। थेरो अधिवासेसि। वातो याव हदया फालेसि[1], मञ्चके अन्तानि रासिकतानि अहेसुं। थेरो दहरस्स दस्सेसि "वट्टतावुसो, एत्तका अधिवासना" ति। दहरो तुण्ही अहोसि। थेरो विरियसमतं
5 योजेत्वा सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणित्वा समसीसी हुत्वा परिनिब्बायि।

यथा च सुखं, एवं दुक्खं...पे...निरामिसं अदुक्खमसुखं वेदनं वेदयमानो "निरामिसं अदुक्खमसुखं वेदनं वेदयामी" ति पजानाति। इति भगवा रूपकम्मट्ठानं कथेत्वा अरूपकम्मट्ठानं कथेन्तो यस्मा
10 फस्सवसेन चित्तवसेन वा कथियमानं पाकटं न होति, अन्धकारं विय खायति, वेदनानं पन उप्पत्तिपाकटताय वेदनावसेन पाकटं होति, तस्मा सक्कपञ्हे पिय इधापि वेदनावसेन अरूपकम्मट्ठानं कथेसि।
B. 365 तत्थ "दुविधञ्हि कम्मट्ठानं रूपकम्मट्ठानं अरूपकम्मट्ठानञ्चा" तिआदि कथामग्गो सक्कपञ्हे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

15 तत्थ सुखं वेदनं तिआदीसु अयं अपरोपि पजाननपरियायो, सुखं वेदनं वेदयामी ति पजानाती ति सुखवेदनाक्खणे दुक्खवेदनाय अभावतो सुखं वेदनं वेदयमानो "सुखं वेदनं येव वेदयामी" ति पजानाति। तेन
R. 775 या पुब्बे भूतपुब्बा दुक्खवेदना, तस्स इदानि अभावतो इमिस्सा च सुखाय वेदनाय इतो पठमं अभावतो वेदना नाम अनिच्चा अधुवा
20 विपरिणामधम्मा, इतिह तत्थ सम्पजानो होति। वुत्तम्पि चेतं भगवता—

"यस्मिं, अग्गिवेस्सन, समये सुखं वेदनं वेदेति, नेव तस्मिं समये दुक्खं वेदनं वेदेति, न अदुक्खमसुखं वेदनं वेदेति, सुखंयेव तस्मिं समये वेदनं वेदेति। यस्मिं, अग्गिवेस्सन, समये दुक्खं ... पे० ...
25 अदुक्खमसुखं वेदनं वेदेति, नेव तस्मिं समये सुखं वेदनं वेदेति, न

१. फालेति—रो०।

दुक्खं वेदनं वेदेति, अदुक्खमसुखंयेव तस्मिं समये वेदनं वेदेति। सुखापि, खो, अग्गिवेस्सन, वेदना अनिच्चा सङ्खता पटिच्चसमुप्पन्ना खयधम्मा वयधम्मा विरागधम्मा निरोधधम्मा। दुक्खापि, खो...पे०... अदुक्खमसुखापि, खो अग्गिवेस्सन, वेदना अनिच्चा...पे...निरोधधम्मा। एवं पस्सं, अग्गिवेस्सन, सुतवा अरियसावको सुखायपि वेदनाय निब्बिन्दति, दुक्खायपि वेदनाय निब्बिन्दति, अदुक्खमसुखायपि वेदनाय निब्बिन्दति, निब्बिन्दं विरज्जति, विरागा विमुच्चति, विमुत्तस्मिं 'विमुत्तमी' ति ञाणं होति, 'खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं, नापरं इत्थत्ताया' ति पजानाती" (म० नि० २.१९५–९६) ति।

सामिसं वा सुखं तिआदीसु **सामिसा सुखा** नाम पञ्चकामगुणामिस-सन्निस्सिता छ गेहसितसोमनस्सवेदना। **निरामिसा सुखा** नाम छ नेक्खम्मसितसोमनस्सवेदना। **सामिसा दुक्खा** नाम छ गेहसित-दोमनस्सवेदना। **निरामिसा दुक्खा** नाम छ नेक्खम्मसितदोमनस्स-वेदना। **सामिसा अदुक्खमसुखा** नाम छ गेहसितउपेक्खावेदना। **निरामिसा अदुक्खमसुखा** नाम छ नेक्खम्मसितउपेक्खावेदना। तासं विभागो सक्कपञ्हे वुत्तोयेव। B. 366

इति अज्झत्तं वा ति एवं सुखवेदनादिपरिग्गण्हनेन अत्तनो वा वेदनासु, परस्स वा वेदनासु, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति। **समुदयवयधम्मानुपस्सी वा** ति एत्थ पन अविज्जासमुदया वेदनासमुदयो ति-आदीहि पञ्चहि आकारेहि वेदनानं समुदयञ्च वयञ्च पस्सन्तो "समुदयधम्मानुपस्सी वा वेदनासु विहरति, वयधम्मानुपस्सी वा वेदनासु विहरति, कालेन समुदयधम्मा-नुपस्सी वा वेदनासु, कालेन वयधम्मानुपस्सी वा वेदनासु विहरती" ति वेदितब्बो। इतो परं कायानुपस्सनायं वुत्तनयमेव। केवलञ्हि इध वेदनापरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं योजनं कत्वा वेदना-परिग्गाहकस्स भिक्खुनो निय्यानमुखं वेदितब्बं। सेसं तादिसमेवा ति। R. 776

वेदनानुपस्सना निट्ठिता।

४. चित्तानुपस्सनावण्णना

१०. एवं नवविधेन वेदनानुपस्सनासतिपट्ठानं कथेत्वा इदानि सोळसविधेन चित्तानुपस्सनं कथेतुं **कथञ्च भिक्खवे** (दी० नि० २.२२२) ति-आदिमाह। तत्थ **सरागं** ति अट्ठविधलोभ-सहगतं। **वीतरागं** ति लोकियकुसलाब्याकतं। इदं पन यस्मा
5 सम्मसनं न धम्मसमोधानं तस्मा इध एकपदेपि लोकुत्तरं न लब्भति। सेसानि चत्तारि अकुसलचित्तानि नेव पुरिमपदं न पच्छिमपदं भजन्ति। **सदोसं** ति दुविधदोमनस्ससहगतं। **वीतदोसं** ति लोकिय-कुसलाब्याकतं। सेसानि दस अकुसलचित्तानि नेव पुरिमपदं, न पच्छिमपदं भजन्ति। **समोहं** ति विचिकिच्छासहगतञ्चेव, उद्धच्चसह-
10 गतञ्चा ति दुविधं। यस्मा पन मोहो सब्बाकुसलेसु उप्पज्जति, तस्मा सेसानिपि इध वट्टन्तियेव। इमस्मिं येव हि दुके द्वादसाकुसलचित्तानि परियादिन्नानी ति। **वीतमोहं** ति लोकियकुसलाब्याकतं। **संखित्तं** ति थिनमिद्धानुपतितं। एतञ्हि सङ्कुटितचित्तं नाम। **विक्खित्तं** ति उद्धच्चसहगतं, एतञ्हि पसटचित्तं नाम। **महग्गतं** ति रूपारूपावचरं।
15 **अमहग्गतं** ति कामावचरं। **सउत्तरं** ति कामावचरं। **अनुत्तरं** ति
B. 367 रूपावचरं अरूपावचरञ्च। तत्रापि सउत्तरं रूपावचरं, अनुत्तरं अरूपावचरमेव। **समाहितं** ति यस्स अप्पनासमाधि उपचारसमाधि वा अत्थि। **असमाहितं** ति उभयसमाधिविरहितं। **विमुत्तं** तदङ्ग-विक्खम्भनविमुत्तीहि विमुत्तं। **अविमुत्तं** ति उभयविमुत्तिविरहितं।
20 समुच्छेदपटिप्पस्सद्धिनिस्सरणविमुत्तीनं पन इध ओकासोव नत्थि।

R. 777 **इति अज्झत्तं वा** ति एवं सरागादिपरिग्गण्हनेन यस्मिं यस्मिं खणे यं यं चित्तं पवत्तति, तं तं सल्लक्खेन्तो अत्तनो वा चित्ते, परस्स वा चित्ते, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति। **समुदयवयधम्मानुपस्सी** ति एत्थ पन अविज्जासमुदया
25 विञ्ञाणसमुदयो ति एवं पञ्चहि पञ्चहि आकारेहि विञ्ञाणस्स समुदयो च वयो च नीहरितब्बो। इतो परं वुत्तनयमेव। केवलञ्हि

इध चित्तपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं पदयोजनं कत्वा चित्त-परिग्गाहकस्स भिक्खुनो निय्यानमुखं वेदितब्बं। सेसं तादिसमेवा ति।

चित्तानुपस्सना निट्ठिता।

५. धम्मानुपस्सना

(क) नीवरणपब्बवण्णना

११. एवं सोळसविधेन चित्तानुपस्सनासतिपट्ठानं कथेत्वा इदानि पञ्चविधेन धम्मानुपस्सनं कथेतुं **कतमञ्च भिक्खवे** (दी० नि० २.२२२) तिआदिमाह। अपिच भगवता कायानुपस्सनाय सुद्धरूपपरिग्गहो कथितो, वेदना चित्तानुपस्सनाहि सुद्धअरूपपरिग्गहो। इदानि रूपारूपमिस्सकपरिग्गहं कथेतुं "कथञ्च, भिक्खवे" तिआदिमाह। कायानुपस्सनाय वा रूपक्खन्धपरिग्गहोव कथितो, वेदनानुपस्सनाय वेदनाक्खन्धपरिग्गहोव, चित्तानुपस्सनाय विञ्ञाणक्खन्धपरिग्गहोव। इदानि सञ्ञासङ्खारक्खन्धपरिग्गहम्पि कथेतुं "कथञ्च, भिक्खवे" तिआदिमाह।

तत्थ **सन्तं** (दी० नि० २.२२३) ति अभिण्हसमुदाचारवसेन संविज्जमानं। **असन्तं** ति असमुदाचारवसेन वा पहीनत्ता वा असंविज्जमानं। **यथा चा** ति येन कारणेन कामच्छन्दस्स उप्पादो होति। **तञ्च पजानाती** ति तञ्च कारणं पजानाति। इति इमिना नयेन सब्बपदेसु अत्थो वेदितब्बो।

तत्थ सुभनिमित्ते अयोनिसोमनसिकारेन कामच्छन्दस्स उप्पादो होति। **सुभनिमित्तं** नाम सुभम्पि सुभनिमित्तं, सुभारम्मणम्पि सुभनिमित्तं। **अयोनिसोमनसिकारो** नाम अनुपायमनसिकारो उप्पथमनसिकारो अनिच्चे निच्चं ति वा, दुक्खे सुखं ति वा, अनत्तनि अत्ताति वा, असुभे सुभं ति वा मनसिकारो। तं तत्थ बहुलं पवत्तयतो कामच्छन्दो उप्पज्जति। तेनाह भगवा—"अत्थि, भिक्खवे सुभनिमित्तं,

तत्थ अयोनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा कामच्छन्दस्स उप्पादाय उप्पन्नस्स वा कामच्छन्दस्स भिय्योभावाय वेपुल्लाया'' (सं० नि० ४.९३) ति ।

R. 778 असुभनिमित्ते पन योनिसोमनसिकारेनस्स पहानं होति ।
5 असुभनिमित्तं नाम असुभम्पि असुभारम्मणम्पि । **योनिसोमनसिकारो** नाम उपायमनसिकारो पथमनसिकारो अनिच्चे अनिच्चं ति वा, दुक्खे दुक्खं ति वा, अनत्तनि अनत्ता ति वा, असुभे असुभं ति वा मनसिकारो । तं तत्थ बहुलं पवत्तयतो कामच्छन्दो पहीयति । तेनाह भगवा—"अत्थि, भिक्खवे, असुभनिमित्तं, तत्थ योनिसोमनसिकार-
10 बहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा कामच्छन्दस्स अनुप्पादाय उप्पन्नस्स वा कामच्छन्दस्स पहानाया" (सं० नि० ४.९५) ति ।

अपिच छ धम्मा कामच्छन्दस्स पहानाय संवत्तन्ति असुभनिमित्तस्स उग्गहो असुभभावनानुयोगो इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता भोजने मत्तञ्ञुता कल्याणमित्तता सप्पायकथा ति । दसविधञ्हि
15 असुभनिमित्तं उग्गण्हन्तस्सापि कामच्छन्दो पहीयति, भावेन्तस्सा पि इन्द्रियेसु पिहितद्वारस्सापि चतुन्नं पञ्चन्नं आलोपानं ओकासे सति उदकं पिवित्वा यापनसीलताय भोजनमत्तञ्ञुनोपि । तेनेव वुत्तं—

"चत्तारो पञ्च आलोपे, अभुत्वा उदकं पिवे ।
अलं फासुविहाराय, पहितत्तस्स भिक्खुनो"
20 (थेर० गा० ३६६) ति ।

असुभकम्मिकतिस्सत्थेरसदिसे असुभभावनारते कल्याणमित्ते सेवन्तस्सपि कामच्छन्दो पहीयति, ठाननिसज्जादीसु दसअसुभनिस्सितसप्पायकथाय पहीयति, तेन वुत्तं—"छ धम्मा कामच्छन्दस्स पहानाय संवत्तन्ती" ति । इमेहि पन छहि धम्मेहि पहीनकामच्छन्दस्स
25 अरहत्तमग्गेन आयतिं अनुप्पादो होती ति पजानाति ।

B. 369 पटिघनिमित्ते अयोनिसोमनसिकारेन पन ब्यापादस्स उप्पादो होति । तत्थ पटिघम्पि पटिघनिमित्तं, पटिघारम्मणम्पि

पटिघनिमित्तं। अयोनिसोमनसिकारो सब्बत्थ एकलक्खणोव। तं तस्मिं निमित्ते बहुलं पवत्तयतो ब्यापादो उप्पज्जति। तेनाह भगवा—"अत्थि, भिक्खवे, पटिघनिमित्तं, तत्थ अयोनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा ब्यापादस्स उप्पादाय उप्पन्नस्स वा ब्यापादस्स भिय्योभावाय वेपुल्लाया" (सं० नि० ४.९३) ति। 5

मेत्ताय पन चेतोविमुत्तिया योनिसोमनसिकारेनस्स पहानं होति। तत्थ **मेत्ता** ति वुत्ते अप्पनापि उपचारोपि वट्टति। **चेतोविमुत्ती** ति अप्पनाव। योनिसोमनसिकारो वुत्तलक्खणोव। तं तत्थ बहुलं पवत्तयतो ब्यापादो पहीयति। तेनाह भगवा—"अत्थि, भिक्खवे, 10 मेत्ता चेतोविमुत्ति, तत्थ योनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा ब्यापादस्स अनुप्पादाय उप्पन्नस्स वा ब्यापादस्स पहानाया" (सं० नि० ४.९५) ति।

अपिच छ धम्मा ब्यापादस्स पहनाय संवत्तन्ति मेत्तानिमित्तस्स उग्गहो मेत्ताभावनानुयोगो कम्मस्सकतापच्चवेक्खणा पटिसङ्खानबहुलता 15 कल्याणमित्तता सप्पायकथा ति। ओदिस्सकअनोदिस्सकदिसा-फरणानञ्हि अञ्ञतरवसेन मेत्तं उग्गण्हन्तस्सापि ब्यापादो पहीयति, ओधिसोअनोधिसोफरणवसेन मेत्तं भावेन्तस्सापि। "त्वं एतस्स कुद्धो किं करिस्ससि, किमस्स सीलादीनि विनासेतुं सक्खिस्ससि, ननु त्वं अत्तनो कम्मेन आगन्त्वा अत्तनो कम्मेनेव गमिस्ससि, 20 परस्स कुज्झनं नाम वीतच्चितङ्गार - तत्तअय - सलाकगूथादीनि गहेत्वा परं पहरितुकामतासदिसं होति। एसोपि तव कुद्धो किं करिस्सति, किं ते सीलादीनि विनासेतुं सक्खिस्सति, एस अत्तनो कम्मेन आगन्त्वा अत्तनो कम्मेनेव गमिस्सति, अप्पटिच्छितपहेणकं विय पटिवातं खित्तरजोमुट्ठि विय च एतस्सेवेस कोधो मत्थके 25 पतिस्सती" ति एवं अत्तनो च परस्स च कम्मस्सकतं पच्चवेक्खतोपि उभयकम्मस्सकतं पच्चवेक्खित्वा पटिसङ्खाने ठितस्सापि, अस्सगुत्तत्थेर-सदिसे मेत्ताभावनारते कल्याणमित्ते सेवन्तस्सापि ब्यापादो पहीयति।

ठाननिसज्जादीसु मेत्ता निस्सितसप्पायकथायपि पहीयति । तेन वुत्तं—
B. 370 "छ धम्मा ब्यापादस्स पहानाय संवत्तन्ती" ति । इमेहि पन छहि
R. 780 धम्मेहि पहीनस्स ब्यापादस्स अनागामिमग्गेन आयतिं अनुपादो होती
ति पजानाति ।

5 अरतिआदीसु अयोनिसोमनसिकारेन थिनमिद्धस्स उप्पादो होति ।
अरति नाम उक्कंठिता । तन्ती[1] नाम कायालसियता । **विजम्भिता**
नाम कायविनमना । **भत्तसम्मदो** नाम भत्तमुच्छा भत्तपरिळाहो ।
चेतसो लीनत्तं नाम चित्तस्स लीनाकारो । इमेसु अरतिआदीसु
अयोनिसोमनसिकारं बहुलं पवत्तयतो थिनमिद्धं उप्पज्जति । तेनाह—
10 "अत्थि, भिक्खवे, अरति तन्दी विजम्भिता भत्तसम्मदो चेतसो
लीनत्तं, तत्थ अयोनिसो मनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनु-
प्पन्नस्स वा थिनमिद्धस्स उप्पादाय, उप्पन्नस्स वा थिनमिद्धस्स भिय्यो-
भावाय वेपुल्लाया" (सं० नि० ४.९३) ति ।

आरम्भधातुआदीसु पन योनिसोमनसिकारेनस्स पहानं होति ।
15 **आरम्भधातु** नाम पठमारम्भवीरियं । **निक्कमधातु** नाम कोसज्जतो
निक्खन्ताय ततो बलवतरं । **परक्कमधातु** नाम परं परं ठानं अक्क-
मनतो ततोपि बलवतरं । इमस्मिं तिप्पभेदे वीरिये योनिसो-
मनसिकारं बहुलं पवत्तयतो थिनमिद्धं पहीयति । तेनाह—"अत्थि,
भिक्खवे, आरम्भधातु निक्कमधातु परक्कमधातु । तत्थ योनिसोमनसि-
20 कारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा थिनमिद्धस्स अनुप्पादाय,
उप्पन्नस्स वा थिनमिद्धस्स पहानाया" (सं० नि० ४.९४) ति ।

अपिच छ धम्मा थिनमिद्धस्स पहानाय संवत्तन्ति—अतिभोजने
निमित्तग्गाहो, इरियापथसम्परिवत्तनता, आलोकसञ्ञामनसिकारो,
अब्भोकासवासो, कल्याणमित्तता, सप्पायकथा ति । आहारहत्थक-
25 तत्रवट्टक-अलंसाटक-काकमासकभुत्त-वमितकभोजनं भुञ्जित्वा रत्तिट्ठान-

[1] तन्दी—रो० ।

दिवाट्ठाने निसिन्नस्स हि समणधम्मं करोतो थिनमिद्धं महाहत्थी विय ओत्थरन्तं आगच्छति, चतुपञ्चआलोपओकासं पन ठपेत्वा पानीयं पिवित्वा यापनसीलस्स भिक्खुनो तं न होती ति एवं अतिभोजने निमित्तं गण्हन्तस्सापि थिनमिद्धं पहीयति। यस्मिं इरियापथे थिनमिद्धं ओक्कमति, ततो अञ्ञं परिवत्तेन्तस्सापि, रत्तिं चन्दालोक- 5 R. 781
दीपालोकउक्कालोके दिवा सूरियालोकं मनसिकरोन्तस्सापि, अब्भोकासे B. 371
वसन्तस्सापि, महाकस्सपत्थेरसदिसे पहीनथिनमिद्धे कल्याणमित्ते सेवन्तस्सापि थिनमिद्धं पहीयति। ठाननिसज्जादीसु धुतङ्गनिस्सित- सप्पायकथायपि पहीयति। तेन वुत्तं—"छ धम्मा थिनमिद्धस्स पहानाय संवत्तन्ती" ति। इमेहि पन छहि धम्मेहि पहीनस्स थिन- 10
मिद्धस्स अरहत्तमग्गेन आयतिं अनुप्पादो होती ति पजानाति।

चेतसो अवूपसमे अयोनिसोमनसिकारेन उद्धच्चकुक्कुच्चस्स उप्पादो होति। अवूपसमो नाम अवूपसन्ताकारो, उद्धच्चकुक्कुच्चमेवेतं अत्थतो। तत्थ अयोनिसोमनसिकारं बहुलं पवत्तयतो उद्धच्चकुक्कुच्चं उप्पज्जति। तेनाह "अत्थि, भिक्खवे, चेतसो अवूपसमो, तत्थ अयोनिसोमनसि- 15
कारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा उद्धच्चकुक्कुच्चस्स उप्पादाय, उप्पन्नस्स वा उद्धच्चकुक्कुच्चस्स भिय्योभावाय वेपुल्लाया" ति।

समाधिसङ्खाते पन चेतसो वूपसमे योनिसोमनसिकारेनस्स पहानं होति। तेनाह "अत्थि, भिक्खवे, चेतसो वूपसमो, तत्थ योनिसो- मनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा उद्धच्चकुक्कुच्चस्स 20
अनुप्पादाय, उप्पन्नस्स वा उद्धच्चकुक्कुच्चस्स पहानाया" ति।

अपिच छ धम्मा उद्धच्चकुक्कुच्चस्स पहानाय संवत्तन्ति बहुस्सुतता परिपुच्छकता विनये पकतञ्ञुता वुद्धसेविता कल्याणमित्तता सप्पाय- कथा ति। बाहुस्सच्चेनपि हि एकं वा द्वे वा तयो वा चत्तारो वा पञ्च वा निकाये पाळिवसेन अत्थवसेन च उग्गण्हन्तस्सापि उद्धच्च- 25
कुक्कुच्चं पहीयति। कप्पियाकप्पियपरिपुच्छाबहुलस्सापि, विनय- पञ्ञत्तियं चिण्णवसिभावताय पकतञ्ञुनोपि, वुड्ढे महल्लकत्थेरे

उपसङ्कमन्तस्सापि, उपालित्थेरसदिसे विनयधरे कल्याणमित्ते सेवन्तस्सापि उद्धच्चकुक्कुच्चं पहीयति, ठाननिसज्जादीसु कप्पियाकप्पियनिस्सितसप्पायकथायपि पहीयति। तेन वुत्तं—"छ धम्मा उद्धच्चकुक्कुच्चस्स पहानाय संवत्तन्ती" ति। इमेहि पन छहि धम्मेहि पहीने

R. 782 5 उद्धच्चकुक्कुच्चे उद्धच्चस्स अरहत्तमग्गेन, कुक्कुच्चस्स अनागामिमग्गेन आयतिं अनुप्पादो होती ति पजानाति।

विचिकिच्छाठानीयेसु धम्मेसु अयोनिसोमनसिकारेन विचिकिच्छाय उप्पादो होति। **विचिकिच्छाठानीया धम्मा** नाम पुनप्पुनं विचि-

B. 372 किच्छाय कारणत्ता विचिकिच्छाव। तत्थ अयोनिसोमनसिकारं बहुलं

10 पवत्तयतो विचिकिच्छा उप्पज्जति। तेनाह "अत्थि, भिक्खवे, विचिकिच्छाठानीया धम्मा, तत्थ अयोनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नाय वा विचिकिच्छाय उप्पादाय, उप्पन्नाय वा विचिकिच्छाय भिय्यो भावाय वेपुल्लाया" (सं० नि० ४.९६) ति।

कुसलादिधम्मेसु योनिसोमनसिकारेन पनस्सा पहानं होति,

15 तेनाह "अत्थि, भिक्खवे, कुसलाकुसला धम्मा सावज्जानवज्जा धम्मा सेवितब्बासेवितब्बा धम्मा हीनपहीता धम्मा कण्हसुक्कसप्पटिभागा धम्मा। तत्थ योनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो, अनुप्पन्नाय वा विचिकिच्छाय अनुप्पादाय; उप्पन्नाय वा विचिकिच्छा पहानाया ति।

20 अपिच छ धम्मा विचिकिच्छाय पहानाय संवत्तन्ति—बहुस्सुतता, परिपुच्छकता, विनये पकतञ्ञुता, अधिमोक्खबहुलता, कल्याणमित्तता, सप्पायकथा ति। बाहुसच्चेनपि हि एकं वा ... पे ... पञ्च वा निकाये पाळिवसेन च अत्थवसेन च उग्गण्हन्तस्सापि विचिकिच्छा पहीयति, तीणि रतनानि आरब्भ परिपुच्छाबहुलस्सापि, विनये

25 चिण्णवसीभावस्सापि, तीसु रतनेसु ओकप्पनियसद्धासङ्खातअधिमोक्खबहुलस्सापि, सद्धाधिमुत्ते वक्कलित्थेरसदिसे कल्याणमित्ते सेवन्तस्सापि विचिकिच्छा पहीयति, ठाननिसज्जादीसु तिण्णं रतनानं गुणनिस्सितसप्पायकथायपि पहीयति। तेन वुत्तं "छ धम्मा

विचिकिच्छाय पहानाय संवत्तन्ती" ति। इमेहि पन छहि धम्मेहि पहीनाय विचिकिच्छाय सोतापत्तिमग्गेन आयतिं अनुप्पादो होती ति पजानाति।

इति अज्झत्तं वा ति एवं पञ्चनीवरणपरिग्गण्हनेन अत्तनो वा धम्मेसु, परस्स वा धम्मेसु, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स 5 धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति। समुदयवया पनेत्थ सुभनिमित्त-असुभनिमित्तादीसु अयोनिसोमनसिकारयोनिसोमनसिकारवसेन पञ्चसु R. 783 नीवरणेसु वुत्तायेव[1] नीहरितब्बा। इतो परं वुत्तनयमेव। केवलञ्हि इध नीवरणपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं योजनं कत्वा B. 373 नीवरणपरिग्गाहकस्स भिक्खुनो निय्यानमुखं वेदितब्बं। सेसं 10 तादिसमेवा ति।

नीवरणपब्बं निट्ठितं।

(ख) खन्धपब्बवण्णना

१२. एवं पञ्चनीवरणवसेन धम्मानुपस्सनं विभजित्वा इदानि पञ्चक्खन्धवसेन विभजितुं पुन चपरं (दी० नि० २.२२४) ति आदिमाह। तत्थ पञ्चसु उपादानक्खन्धेसू ति उपादानस्स खन्धा उपादानक्खन्धा, उपादानस्स पच्चयभूता धम्मपुञ्जा धम्मरासयो ति 15 अत्थो। अयमेत्थ सङ्खेपो। वित्थारतो पन खन्धकथा विसुद्धिमग्गे वुत्ता।

इति रूपं ति इदं रूपं, एत्तकं रूपं, न इतो परं रूपं अत्थी ति सभावतो रूपं पजानाति। वेदनादीसुपि एसेव नयो। अयमेत्थ सङ्खेपो। वित्थारेन[2] पन रूपादीनि विसुद्धिमग्गे खन्धकथायमेव 20 वुत्तानि। इति रूपस्स समुदयो ति एवं अविज्जासमुदयादिवसेन पञ्चहाकारेहि रूपस्स समुदयो। इति रूपस्स अत्थङ्गमो ति एवं

१. वुत्तनयेन—रो०। २. वित्थारो—रो०।

अविज्जानिरोधादिवसेन पञ्चहाकारेहि रूपस्स अत्थङ्गमो। वेदनादीसुपि एसेव नयो। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन विसुद्धिमग्गे उदयब्बय-ञाणकथाय वुत्तो।

इति अज्झत्तं वा ति एवं पञ्चक्खन्धपरिग्गण्हनेन अत्तनो वा
5 धम्मेसु, परस्स वा धम्मेसु, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति। समुदयवया पनेत्थ "अविज्जासमुदया रूपसमुदयो" ति-आदीनं पञ्चसु खन्धेसु वुत्तानं पञ्ञासाय लक्खणानं वसेन नीहरितब्बा। इतो परं वुत्तनयमेव। केवलञ्हि इध खन्धपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं योजनं कत्वा खन्धपरिग्गा-
10 हकस्स भिक्खुनो निय्यानमुखं वेदितब्बं। सेसं तादिसमेवा ति।

खन्धपब्बं निट्ठितं।

(ग) आयतनपब्बवण्णना

B. 374 R. 784 १३. एवं पञ्चक्खन्धवसेन धम्मानुपस्सनं विभजित्वा इदानि आयतनवसेन विभजितुं **पुन चपरं** तिआदिमाह। तत्थ **छसु अज्झत्तिकबाहिरेसु आयतनेसू** (दी० नि० २.२२४) ति चक्खुं सोतं घानं जिव्हा कायो मनो ति इमेसु छसु अज्झत्तिकेसु, रूपं सद्दो गन्धो
15 रसो फोट्ठब्बो धम्मो ति इमेसु छसु बाहिरेसु। **चक्खुञ्च पजानाती** ति चक्खुपसादं याथावसरसलक्खणवसेन पजानाति। **रूपे च पजानाती** ति बहिद्धा चतुसमुट्ठानिकरूपञ्च यथावसरसलक्खणवसेन पजानाति। **यञ्च तदुभयं पटिच्च उप्पज्जति संयोजनं** ति यञ्च तं चक्खुञ्चेवरूपे चा ति उभयं पटिच्च। कामरागसंयोजनं पटिघ-मान-
20 दिट्ठि – विचिकिच्छा–सीलब्बतपरामास–भवराग–इस्सा–मच्छरिय – अविज्जासंयोजनं ति दसविधं संयोजनं उप्पज्जति, तञ्च याथावसरस - लक्खणवसेन पजानाति।

कथं पनेतं उप्पज्जती ति ? चक्खुद्वारे ताव आपाथगतं इट्ठारम्मण कामस्सादवसेन अस्सादयतो अभिनन्दतो कामरागसंयोजनं उप्पज्जति । अनिट्ठारम्मणे कुज्झतो पटिघसंयोजनं उप्पज्जति । "ठपेत्वा मं को अञ्ञो एतं आरम्मणं विभावेतुं समत्थो अत्थी" ति मञ्ञतो मानसंयोजनं उप्पज्जति । एतं रूपारम्मणं निच्चं धुवं ति गण्हतो 5 दिट्ठिसयोजनं उप्पज्जति । "एतं रूपारम्मणं सत्तो नु खो, सत्तस्स नु खो" ति विचिकिच्छतो विचिकिच्छासंयोजनं उप्पज्जति । "सम्पत्तिभवे वत नो इदं[1] सुलभं जातं" ति भवं पत्थेन्तस्स भवरागसंयोजनं उप्पज्जति । "आयतिम्पि एवरूपं सीलब्बतं समादियित्था सक्का लद्धुं" ति सीलब्बतं समादियन्तस्स सीलब्बतपरामाससंयोजनं उप्पज्जति । 10 "अहो वत तं रूपारम्मणं अञ्ञे न लभेय्युं" ति उसूयतो इस्सासंयोजनं उप्पज्जति । अत्तना लद्धं रूपारम्मणं सञ्ञस्स[2] मच्छरायतो मच्छरियसंयोजनं उप्पज्जति । सब्बेहेव सहजातअञ्ञाणवसेन अविज्जासंयोजनं उप्पज्जति ।

यथा च अनुप्पन्नस्सा (दी० नि० २.२२५) ति येन कारणेन 15 असमुदाचारवसेन अनुप्पन्नस्स तस्स दसविधस्सापि संयोजनस्स उप्पादो होति, तञ्च कारणं पजानाति । **यथा च उप्पन्नस्सा** ति अप्पहीनट्ठेन पन समुदाचारवसेन वा उप्पन्नस्स तस्स दसविधस्सापि R. 785 संयोजनस्स येन कारणेन पहानं होति, तञ्च कारणं पजानाति । **यथा च पहीनस्सा** ति तदङ्गविक्खम्भनप्पहानवसेन पहीनस्सापि तस्स 20 दसविधस्स संयोजनस्स येन कारणेन आयतिं अनुप्पादो होति, तञ्च B. 375 पजानाति । केन कारणेन पनस्स आयतिं अनुप्पादो होति ? दिट्ठिविचिकिच्छासीलब्बतपरामासइस्सामच्छरियभेदस्स ताव पञ्चविधस्स संयोजनस्स सोतापत्तिमग्गेन आयतिं अनुप्पादो होति । कामरागपटिघसंयोजनद्वयस्स ओळारिकस्स सकदागामिमग्गेन, अणुसहगतस्स 25 अनागामिमग्गेन, मानभवरागाविज्जासंयोजनत्तयस्स अरहत्तमग्गेन

१. एवं—रो० । २. अञ्ञस्स—रो० ।

आयतिं अनुप्पादो होति। **सोतञ्च पजानाति सद्दे चा** तिआदीसु एसेव नयो। अपिचेत्थ **आयतनकथा** वित्थारतो विसुद्धिमग्गे आयतननिद्देसे वुत्तनयेनेव वेदितब्बा।

इति अज्झत्तं वा ति एवं अज्झत्तिकायतनपरिग्गण्हनेन अत्तनो
5 वा धम्मेसु बाहिरायतनपरिग्गण्हनेन परस्स वा धम्मेसु, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति। समुदयवया पनेत्थ "अविज्जासमुदया चक्खुसमुदयो" ति रूपायतनस्स[1] रूपक्खन्धे, अरूपायतनेसु मनायतनस्स विञ्ञाणक्खन्धे, धम्मायतनस्स सेसक्खन्धेसु वुत्तनयेन नीहरितब्बा। लोकुत्तरधम्मा न गहेतब्बा। इतो परं
10 वुत्तनयमेव। केवलञ्हि इध आयतनपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं योजनं कत्वा आयतनपरिग्गाहकस्स भिक्खुनो निय्यानमुखं वेदितब्बं। सेसं तादिसमेवा ति।

आयतनपब्बं निट्ठितं।

(घ) बोज्झङ्गपब्बवण्णना

१४. एवं छअज्झत्तिकबाहिरायतनवसेन धम्मानुपस्सनं विभजित्वा इदानि बोज्झङ्गवसेन विभजितुं **पुन चपरं** (दी० नि० २.२२६)
15 तिआदिमाह। तत्थ **बोज्झङ्गेसू** ति बुज्झनकसत्तस्स अङ्गेसु। **सन्तं** ति पटिलाभवसेन संविज्जमानं। **सतिसम्बोज्झङ्गं** ति सतिसङ्खातं सम्बोज्झङ्गं। एत्थ हि सम्बुज्झति आरद्धविपस्सकतो पट्ठाय योगावचरो ति **सम्बोधि**। याय वा सो सतिआदिकाय सत्तधम्मसामग्गिया
R. 786 सम्बुज्झति किलेसनिद्दातो उट्ठाति, सच्चानि वा पटिविज्झति, सा
20 धम्मसामग्गी सम्बोधि। तस्स सम्बोधिस्स, तस्सा वा सम्बोधिया अङ्गं ति **सम्बोज्झङ्गं**। तेन वुत्तं—"सतिसङ्खातं सम्बोज्झङ्गं" ति। सेससम्बोज्झङ्गेसुपि इमिनाव नयेन वचनत्थो वेदितब्बो।

1. रूपायतनादीनं—रो०।

असन्तं ति अप्पटिलाभवसेन अविज्जमानं। **यथा च अनुप्पन्नस्सा** ति आदीसु पन सतिसम्बोज्झङ्गस्स ताव "अत्थि, भिक्खवे, सतिसम्बोज्झङ्गट्ठानीया धम्मा, तत्थ योनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा सतिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय, उप्पन्नस्स वा सतिसम्बोज्झङ्गस्स भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तती" (सं० नि० ४.९४) ति एवं उप्पादो होति[1]। तत्थ सतियेव सतिसम्बोज्झङ्गट्ठानिया धम्मा। योनिसोमनसिकारो वुत्तलक्खणोयेव। तं तत्थ बहुलं पवत्तयतो सतिसम्बोज्झङ्गो उप्पज्जति।

B. 376

5

अपिच चत्तारो धम्मा सतिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति—सतिसम्पजञ्ञं मुट्ठस्सति पुग्गलपरिवज्जनता उपट्ठितस्सतिपुग्गलसेवनता तदधिमुत्तता ति। अभिक्कन्तदीसु हि सत्तसु ठानेसु सतिसम्पजञ्ञेन, भत्तनिक्खित्त काकसदिसे मुट्ठस्सतिपुग्गले परिवज्जनेन, तिस्सदत्तत्थेरअभयत्थेरसदिसे उपट्ठितस्सतिपुग्गले सेवनेन, ठाननिसज्जादीसु सतिसमुट्ठापनत्थं निन्नपोणपब्भारचित्तताय च सतिसम्बोज्झङ्गो उप्पज्जति। एवं चतूहि कारणेहि उप्पन्नस्स पनस्स अरहत्तमग्गेन भावनापारिपूरि होती ति पजानाति।

10

15

धम्मविचयसम्बोज्झङ्गस्स पन "अत्थि, भिक्खवे, कुसलाकुसला धम्मा...पे०...कण्हसुक्कसप्पटिभागा धम्मा, तत्थ योनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा धम्मविचयसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय, उप्पन्नस्स वा धम्मविचयसम्बोज्झङ्गस्स भियोभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तती" ति एवं उप्पादो होति।

20

अपिच सत्त धम्मा धम्मविचयसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति—परिपुच्छकता वत्थुविसदकिरिया इन्द्रियसमत्तपटिपादना दुप्पञ्ञपुग्गलपरिवज्जना पञ्ञवन्तपुग्गलसेवना गम्भीरञाणचरिय-

R. 787

25

1. रो० पोत्थके नत्थि।

पच्चवेक्खणा तदधिमुत्तता ति। तत्थ **परिपुच्छकता** ति खन्धधातुआय-
तनइन्द्रियबलबोज्झङ्गमग्गङ्गझानङ्गसमथविपस्सनानं अत्थसन्निस्सित-
परिपुच्छाबहुलता। **वत्थुविसदकिरिया** ति अज्झत्तिकबाहिरानं
वत्थूनं विसदभावकरणं। यदा हिस्स केसनखलोमानि दीघानि होन्ति,
5 सरीरं वा उस्सन्नदोसं चेव सेदमदमक्खितञ्च, तदा अज्झत्तिकं वत्थु
B. 377 अविसदं होति अपरिसुद्धं। यदा पन चीवरं जिण्णं किलिट्ठं दुग्गन्धं
होति, सेनासनं वा उक्लापं, तदा बाहिरवत्थु अविसदं होति
अपरिसुद्धं। तस्मा केसादिछेदापनेन उद्धंविरेचनअधोविरेचनादीहि
सरीरसल्लहुकभावकरणेन उच्छादननहापनेन च अज्झत्तिकवत्थु विसदं
10 कातब्बं। सूचिकम्मधोवनरजनपरिभण्डकरणादीहि बाहिरवत्थु विसदं
कातब्बं। एतस्मिञ्हि अज्झत्तिकबाहिरे वत्थुम्हि अविसदे उप्पन्नेसु
चित्तचेतसिकेसु ञाणम्पि अविसदं होति अपरिसुद्धं अपरिसुद्धानि
दीपकपल्लवट्टितेलानि निस्साय उप्पन्नदीपसिखाय ओभासो विय।
विसदे पन अज्झत्तिकबाहिरे वत्थुम्हि उप्पन्नेसु चित्तचेतसिकेसु
15 ञाणम्पि विसदं होति परिसुद्धानि दीपकपल्लकवट्टितेलानि निस्साय
उप्पन्नदीपसिखाय ओभासो विय। तेन वुत्तं "वत्थुविसदकिरिया
धम्मविचयसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तती" ति।

इन्द्रियसमत्तपटिपादना नाम सद्धादीनं इन्द्रियानं समभावकरणं।
सचे हिस्स सद्धिन्द्रियं बलवं होति, इतरानि मन्दानि, ततो वीरि-
20 यिन्द्रियं पग्गहकिच्चं, सतिन्द्रियं उपट्ठानकिच्चं, समाधिन्द्रियं अविक्खेप-
किच्चं, पञ्ञिन्द्रियं दस्सनकिच्चं कातुं न सक्कोति। तस्मा तं
धम्मसभावपच्चवेक्खणेन वा, यथा वा मनसिकरोतो बलवं जातं, तथा
अमनसिकारेन हापेतब्बं। वक्कलित्थेरवत्थु चेत्थ निदस्सनं। सचे
पन वीरियिन्द्रियं बलवं होति, अथ सद्धिन्द्रियं अधिमोक्खकिच्चं कातुं
R. 788 25 न सक्कोति, न इतरानि इतरकिच्चभेदं, तस्मा तं पस्सद्धादिभावनाय
हापेतब्बं। तत्रापि सोणत्थेरस्स वत्थु दस्सेतब्बं[1]। एवं सेसेसुपि

१. सोतब्बं—रो०।

एकस्स बलवभावे सति इतरेसं अत्तनो किच्चेसु असमत्थता वेदितब्बा ।

विसेसतो पनेत्थ सद्धापञ्ञानं समाधिवीरियानञ्च समतं पसंसन्ति । बलवसद्धो हि मन्दपञ्ञो मुधप्पसन्नो होति, अवत्थुस्मिं पसीदति । बलवपञ्ञो मन्दसद्धो केराटिकपक्खं भजति, भेसज्जसमुट्ठितो 5
विय रोगो अतेकिच्छो होति । चित्तुप्पादमत्तेनेव कुसलं होती ति अतिधावित्वा दानादीनि अकरोन्तो निरये उप्पज्जति । उभिन्नं समताय वत्थुस्मिं येव पसीदति । बलवसमाधिं पन मन्दवीरियं समाधिस्स कोसज्जपक्खत्ता कोसज्जं अभिभवति । बलववीरियं मन्द-
समाधिं वीरियस्स उद्धच्चपक्खत्ता उद्धच्चं अभिभवति । समाधि पन 10
वीरियेन संयोजितो कोसज्जे पतितुं न लभति, वीरियं समाधिना संयोजितं उद्धच्चे पतितुं न लभति । तस्मा तदुभयं समं कातब्बं । B. 378
उभयसमताय हि अप्पना होति ।

अपिच समाधिकम्मिकस्स बलवतीपि सद्धा वट्टति । एवं सद्दहन्तो ओकप्पेन्तो अप्पनं पापुणिस्सति । समाधिपञ्ञासु पन समाधि- 15
कम्मिकस्स एकग्गता बलवती वट्टति । एवञ्हि सो अप्पनं पापुणाति । विपस्सनाकम्मिकस्स पञ्ञा बलवती वट्टति । एवञ्हि सो लक्खण-पटिवेधं पापुणाति । उभिन्नं पन समतायपि अप्पना होतियेव । सति पन सब्बत्थ बलवती वट्टति । सति हि चित्तं उद्धच्चपक्खिकानं
सद्धावीरियपञ्ञानं वसेन उद्धच्चपाततो, कोसज्जपक्खिकेन च समाधिना 20
कोसज्जपाततो रक्खति । तस्मा सा लोणधूपनं विय सब्बब्यञ्जनेसु, सब्बकम्मिक अमच्चो विय च, सब्बराजकिच्चेसु सब्बत्थ इच्छितब्बा । तेनाह "सति च पन सब्बत्थिका वुत्ता भगवता । किं कारणा? चित्तञ्हि सतिपटिसरणं, आरक्खपच्चुपट्ठाना च सति, न विना
सतिया चित्तस्स पग्गहनिग्गहो होती" ति । दुप्पञ्ञपुग्गलपरिवज्जना 25
नाम खन्धादिभेदे अनोगाळ्हपञ्ञाणं दुम्मेधपुग्गलानं आरका परि-
वज्जनं । पञ्ञवन्तपुग्गलसेवना नाम समपञ्ञासलक्खणपरिग्गाहिकाय R. 789

उदयब्बयपञ्ञाय समन्नागतपुग्गलसेवना। गम्भीरञाणचरियपच्च-
वेक्खणा नाम गम्भीरेसु खन्धादीसु पवत्ताय गम्भीरपञ्ञाय पभेदपच्च-
वेक्खणा। तदधिमुत्तता नाम ठाननिसज्जादीसु धम्मविचयसम्बोज्झङ्ग-
समुट्ठानपनत्थं निन्नपोणपब्भारचित्तता। एवं उप्पन्नस्स पन्नस्स
5 अरहत्तमग्गेन भावनापारिपूरि होती ति पजानाति।

वीरियसम्बोज्झङ्गस्स (दी० नि० २.२२६) "अत्थि, भिक्खवे,
आरम्भधातु निक्कमधातु परक्कमधातु, तत्थ योनिसोमनसिकारबहुली-
कारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा वीरियसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय,
उप्पन्नस्स वा वीरियसम्बोज्झङ्गस्स भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय
10 पारिपूरिया संवत्तती" ति एवं उप्पादो होति।

अपिच एकादस धम्मा वीरियसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति
अपायभयपच्चवेक्खणता आनिसंसदस्साविता गमनवीथिपच्चवेक्खणता
पिण्डपातापचायनता दायज्जमहत्तपच्चवेक्खणता सत्थुमहत्तपच्चवेक्खणता
जातिमहत्तपच्चवेक्खणता सब्रह्मचारिमहत्तपच्चवेक्खणता कुसीतपुग्गल-
15 परिवज्जनता आरद्धवीरियपुग्गलसेवनता तदधिमुत्तता ति।

B. 379 तत्थ निरयेसु पञ्चविधबन्धनकम्मकारणतो पट्ठाय महादुक्खानु-
भवनकालेपि, तिरच्छानयोनियं जालखिपनकुमीनादीहि गहितकालेपि,
पाजनकण्टकादिप्पहारतुन्नस्स सकटवहनादिकालेपि, पेत्तिविसये अनेका-
निपि वस्ससहस्सानि एकं बुद्धन्तरम्पि खुप्पिपासाहि आतुरीभूत-
20 कालेपि, कालकञ्चिकअसुरेसु सट्ठिहत्थअसीतिहत्थप्पमाणेन अट्ठिचम्म-
मत्तेनेव अत्तभावेन वातातपादिदुक्खानुभवनकालेपि न सक्का वीरिय-
सम्बोज्झङ्गं उप्पादेतुं। अयमेव ते भिक्खु कालो वीरियकरणाया ति
एवं अपायभयं पच्चवेक्खन्तस्सापि वीरियसम्बोज्झङ्गो उप्पज्जति।

न सक्का कुसीतेन नवलोकुत्तरधम्मं लद्धुं, आरद्धवीरियेनेव सक्का
R. 790 25 अयमानिसंसो वीरियस्सा ति एवं आनिसंसदस्साविनोपि उप्पज्जति।
सब्बबुद्धपच्चेकबुद्धमहासावकेहि ते गतमग्गो गन्तब्बो, सो च न सक्का
कुसीतेन गन्तुं ति एवं गमनवीथिं पच्चवेक्खन्तस्सापि उप्पज्जति।

ये तं पिण्डपातादीहि रूपट्ठहन्ति, इमे ते मनुस्सा नेव ञातका, न दासकम्मकरा, नापि तं निस्साय जीविस्सामा ति पणीतानि चीवरादीनि देन्ति। अथ खो अत्तनो कारानं महप्फलतं पच्चासीसमाना देन्ति। सत्थारापि अयं इमे पच्चये परिभुञ्जित्वा कायदळ्हीबहुलो सुखं विहरिस्सती'' ति न एवं सम्पस्सता तुय्हं पच्चया अनुञ्ञाता। अथ खो "अयं[1] इमे परिभुञ्जमानो समणधम्मं कत्वा वट्टदुक्खतो मुच्चिस्सती'' ति ते पच्चया अनुञ्ञाता, सो दानि त्वं कुसीतो विहरन्तो न तं पिण्डं अपचायिस्ससि। आरद्धवीरियस्सेव हि पिण्डपातापचायनं नाम होती ति एवं पिण्डपातापचायनं पच्चवेक्खन्तस्सापि उप्पज्जति अय्यमित्तत्थेरस्स विय। 10

थेरो किर कस्सकलेणे नाम पटिवसति। तस्स च गोचरगामे एका महाउपासिका थेरं पुत्तं कत्वा पटिजग्गति। सा एकदिवसं अरञ्ञं गच्छन्ती धीतरं आह—"अम्म, असुकस्मिं ठाने पुराणतण्डुला, असुकस्मिं सप्पि, असुकस्मिं खीरं, असुकस्मिं फाणितं, तव भातिकस्स अय्यमित्तस्स आगतकाले भत्तं पचित्वा खीरसप्पिफाणितेहि 15 सद्धिं देहि, त्वञ्च भुञ्जेय्यासि। अहं पन हिय्यो पक्कपारिवासिकभत्तं कञ्जियेन भुत्ताम्ही'' ति। दिवा किं भुञ्जिस्ससि अम्मा, ति? साकपण्णं पक्खिपित्वा कणतण्डुलेहि अम्बिलयागुं पचित्वा ठपेहि अम्मा, ति।

थेरो चीवरं पारुपित्वा पत्तं नीहरन्तोव तं सद्दं सुत्वा अत्तानं 20 B. 380 ओवदि "महाउपासिका किर कञ्जियेन पारिवासिकभत्तं भुञ्जि, दिवापि कण्णपण्णम्बिलयागुं भुञ्जिस्सति, तुय्हं अत्थाय पन पुराणतण्डुलादीनि आचिक्खति, तं निस्साय खो पनेसा नेव खेत्तं न वत्थुं न भत्तं न वत्थं पच्चासीसति, तिस्सो पन सम्पत्तियो पत्थयमाना देति, त्वं एतिस्सा ता सम्पत्तियो दातुं सक्खिस्ससि न, सक्खिस्ससी ति, अयं खो 25 पन पिण्डपातो तया सरागेन सदोसेन समोहेन न सक्का गण्हितु'' ति R. 791

१. एव—रो०।

पत्तं थविकाय पक्खिपित्वा गण्ठिकं मुञ्चित्वा निवत्तित्वा कस्सकलेणमेव गन्त्वा पत्तं हेट्ठामञ्चे चीवरं चीवरवंसे ठपेत्वा "अरहत्तं अपापुणित्वा न निक्खमिस्सामी" ति वीरियं अधिट्ठहित्वा निसीदि। दीघरत्तं अप्पमत्तो हुत्वा निवुत्थभिक्खु विपस्सनं वड्ढेत्वा पुरेभत्तमेव अरहत्तं
5 पत्वा विकसमानमिव पदुमं महाखीणासवो सितं करोन्तोव निसीदि। लेणद्वारे रुक्खम्हि अधिवत्था देवता—

"नमो ते पुरिसाजञ्ञ, नमो ते पुरिसुत्तम।
यस्स ते आसवा खीणा, दक्खिणेय्योसि मारिसा" ति ॥

उदानं उदानेत्वा "भन्ते, पिण्डाय पविट्ठानं तुम्हादिसानं
10 अरहन्तानं भिक्खं दत्वा महल्लकित्थियो दुक्खा मुच्चिस्सन्ती" ति आह। थेरो उट्ठहित्वा द्वारं विवरित्वा कालं ओलोकेन्तो "पातोयेवा" ति ञत्वा पत्तचीवरमादाय गामं पाविसि।

दारिकापि भत्तं सम्पादेत्वा "इदानि मे भाता आगमिस्सति, इदानि आगमिस्सती" ति द्वारं ओलोकयमाना निसीदि। सा थेरे
15 घरद्वारं सम्पत्ते पत्तं गहेत्वा सप्पिफाणितयोजितस्स खीरपिण्डपातस्स पूरेत्वा हत्थे ठपेसि। थेरो "सुखं होतू" ति अनुमोदनं कत्वा पक्कामि। सापि तं ओलोकयमाना अट्ठासि। थेरस्स हि तदा अतिविय परिसुद्धो छविवण्णो अहोसि, विप्पसन्नानि इन्द्रियानि, मुखं बन्धना पवुत्ततालपक्कं विय अतिविय विरोचित्थ।

20 महाउपासिका अरञ्ञा आगन्त्वा "किं, अम्म, भातिको ते
B. 381 आगतो" ति पुच्छि। सा सब्बं तं आरोचेसि। उपासिका "अज्ज मम पुत्तस्स पब्बजितकिच्चं मत्थकं पत्तं" ति ञत्वा "अभिरमति ते, अम्म, भाता बुद्धसासने, न उक्कण्ठती" ति आह।

महन्तं खो पनेतं सत्थुदायज्जं यदिदं सत्त अरियधनानि नाम,
25 तं न सक्का कुसीतेन गहेतुं। यथा हि विप्पदिपन्नं पुत्तं मातापितरो
R. 792 "अयं अम्हाकं अपुत्तो" ति परिबाहिरं करोन्ति, सो तेसं अच्चयेन

दायज्जं न लभति, एवं कुसीतोपि इदं अरियधनदायज्जं न लभति आरद्धवीरियोव लभती ति दायज्जमहत्तं पच्चवेक्खतोपि उप्पज्जति ।

महा खो पन ते सत्था, सत्थुनो हि ते मातुकुच्छिस्मिं पटिसन्धि, गण्हनकालेपि अभिनिक्खमनेपि अभिसम्बोधियम्पि धम्मचक्कप्पवत्तनयमकपाटिहारियदेवोरोहनआयुसङ्खारवोस्सज्जनेसुपि परिनिब्बानकालेपि 5 दससहस्सिलोकधातु अकम्पित्थ, युत्तं नु ते एवरूपस्स सत्थु सासने पब्बजित्वा कुसीतेन भवितुं ति एवं सत्थुमहत्तं पच्चवेक्खतोपि उप्पज्जति ।

जातियापि त्वं इदानि न लामकजातिको, असम्भिन्नाय महासम्मतपवेणिया आगतउक्काकराजवंसे[1] जातोसि, सुद्धोदनमहाराजस्स 10 च महामायादेविया च नत्ता, राहुलभद्दस्स कनिट्ठो, तया नाम एवरूपेन जिनपुत्तेनहुत्वा न युत्तं कुसीतेन विहरितुं ति एवं जातिमहत्तं पच्चवेक्खतोपि उप्पज्जति ।

सारिपुत्तमहामोग्गल्लाना चेव असीति च महासावका वीरियेनेव लोकुत्तरधम्मं पटिविज्झिंसु, त्वं एतेसं सब्रह्मचारीनं मग्गं पटिपज्जसि, 15 न पटिपज्जसी ति एवं सब्रह्मचारिमहत्तं पच्चवेक्खतोपि उप्पज्जति ।

कुच्छिं पूरेत्वा ठितअजगरसदिसे विस्सट्ठकायिकचेतसिकवीरिये कुसीतपुग्गले परिवज्जन्तस्सापि आरद्धवीरिये पहितत्ते पुग्गले सेवन्तस्सापि ठाननिसज्जादीसु वीरियुप्पादनत्थं निन्नपोणपब्भारचित्तस्सापि उप्पज्जति । एवं उप्पन्नस्स पनस्स अरहत्तमग्गेन भावनापारिपूरि होती 20 ति पजानाति ।

पीतिसम्बोज्झङ्गस्स "अत्थि, भिक्खवे, पीतिसम्बोज्झङ्गट्ठानिया धम्मा, तत्थ योनिसो मनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा पीतिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय, उप्पन्नस्स वा पीतिसम्बोज्झङ्गस्स भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तती" ति एवं 25

१. ०ओक्काक०—रो० ।

B. 382 उप्पादो होति । तत्थ पीतियेव पीतिसम्बोज्झङ्गट्ठानिया धम्मा नाम । तस्सा उप्पादकमनसिकारो योनिसोमनसिकारो नाम ।

अपिच एकादस धम्मा पीतिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति
R. 793 बुद्धानुस्सति, धम्म–संघ–सील–चाग–देवतानुस्सति उपसमानुस्सति
5 लूखपुग्गलपरिवज्जनता सिनिद्धपुग्गलसेवनता पसादनीयसुत्तन्तपच्चवेक्खणता तदधिमुत्तता ति । बुद्धगुणे अनुस्सरन्तस्सापि हि याव उपचारा सकलसरीरं फरमानो पीतिसम्बोज्झङ्गो उप्पज्जति, धम्मसंघगुणे अनुस्सरन्तस्सापि, दीघरत्तं अखण्डं कत्वा रक्खितं चतुपारिसुद्धिसीलं पच्चवेक्खन्तस्सापि, गिहिनोपि दससीलं पञ्चसीलं पञ्चवेक्खन्तस्सापि,
10 दुब्भिक्खभयादीसु पणीतभोजनं सब्रह्मचारीनं दत्वा "एवं नाम अदम्हा" ति चागं पच्चवेक्खन्तस्सापि, गिहिनोपि एवरूपे काले सीलवन्तानं दिन्नदानं पच्चवेक्खन्तस्सापि, येहि गुणेहि समन्नागता देवता देवत्तं पत्ता, तथारूपानं गुणानं अत्तनि अत्थितं पच्चवेक्खन्तस्सापि, समापत्तिया विक्खम्भिता किलेसा सट्ठिपि सत्ततिपि वस्सानि न
15 समुदाचरन्ती ति पच्चवेक्खन्तस्सापि, चेतियदस्सनबोधिदस्सनथेरदस्सनेसु असक्कचकिरियाय संसूचितलूखभावे बुद्धादीसु पसादसिनेहाभावेन गद्रभपिट्ठे रजसदिसे लूखपुग्गले परिवज्जन्तस्सापि, बुद्धादीसु पसादबहुले मुदुचित्ते सिनिद्धपुग्गले सेवन्तस्सापि, रतनत्तयगुणपरिदीपके पसादनीयसुत्तन्ते पच्चवेक्खन्तस्सापि, ठाननिसज्जादीसु पीतिउप्पादनत्थं
20 निन्नपोणपब्भारचित्तस्सापि उप्पज्जति । एवं उप्पन्नस्स पनस्स अरहत्तमग्गेन भावनापारिपूरि होती ति पजानाति ।

पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गस्स "अत्थि, भिक्खवे, कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि । तत्थ योनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय, उप्पन्नस्स वा पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गस्स
25 भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तती" ति एवं उप्पादो होति ।

अपिच सत्त धम्मा पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति पणीतभोजनसेवनता उतुसुखसेवनता इरियापथसुखसेवनता मज्झत्त-पयोगता सारद्धकायपुग्गलपरिवज्जनता पस्सद्धकायपुग्गलसेवनता तदधिमुत्तता ति। पणीतञ्हि सिनिद्धं सप्पायभोजनं भुञ्जन्तस्सापि, सीतुण्हेसु च उतूसु ठानादीसु च इरियापथेसु सप्पायउतुञ्च इरियापथञ्च सेवन्तस्सापि पस्सद्धि उप्पज्जति। यो पन महापुरिसजातिको सब्बउतुइरियापथक्खमो होति, न तं सन्धायेतं वुत्तं। यस्स सभाग-विसभागता अत्थि, तस्सेव विसभागे उतुइरियापथे वज्जेत्वा सभागे सेवन्तस्स उप्पज्जति। मज्झत्तपयोगो वुच्चति अत्तनो च परस्स च कम्मस्सकतापच्चवेक्खणा। इमिना मज्झत्तपयोगेन उप्पज्जति। यो लेड्डुदण्डादीहि परं विहेठयमानो विचरति, एवरूपं सारद्धकायं पुग्गलं परिवज्जन्तस्सापि, संयतपादपाणिं पस्सद्धकायं पुग्गलं सेवन्तस्सापि, ठाननिसज्जादीसु पस्सद्धिउप्पादनत्थाय निन्नपोणपब्भारचित्तस्सापि उप्पज्जति। एवं उप्पन्नस्स पनस्स अरहत्तमग्गेन भावनापारिपूरि होती ति पजानाति।

समाधिसम्बोज्झङ्गस्स "अत्थि, भिक्खवे, समथनिमित्तं अब्यग्ग-निमित्तं, तत्थ योनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो, अनुप्पन्नस्स वा समाधिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय, उप्पन्नस्स वा समाधिसम्बोज्झ-ङ्गस्स भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तती" ति एवं उप्पादो होति। तत्थ समथोव समथनिमित्त अविक्खेपट्ठेन चा अब्यग्गनिमित्तं ति।

अपिच एकादस धम्मा समाधिसम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति —वत्थुविसदकिरियता, इन्द्रियसमत्तपटिपादनता, निमित्तकुसलता, समये चित्तस्स पग्गण्हनता, समये चित्तस्स निग्गण्हनता, समये सम्पहंसनता समये अज्झुपेक्खनता, असमाहितपुग्गलपरिवज्जनता, समाहितपुग्गलसेवनता, झानविमोक्खपच्चवेक्खणता, तदधिमुत्तता ति। तत्थ **वत्थुविसदकिरियता** च **इन्द्रियसमत्तपटिपादनता** च वुत्तनयेनेव वेदितब्बा।

निमित्तकुसलता नाम कसिणनिमित्तस्स उग्गहणकुसलता। **समये चित्तस्स पग्गण्हनता** ति यस्मिं समये अतिसिथिलवीरियतादीहि लीनं चित्तं होति, तस्मिं समये धम्मविचयवीरियपीतिसम्बोज्झङ्ग-समुट्ठापनेन तस्स पग्गण्हनं। **समये चित्तस्स पग्गण्हनता** ति यस्मिं
R. 795 5 समये आरद्धवीरियतादीहि उद्धतं चित्तं होति, तस्मिं समये पस्सद्धि-समाधिउपेक्खासम्बोज्झङ्गसमुट्ठापनेन तस्स निग्गण्हनं। **समये सम्पहंसनता** ति यस्मिं समये चित्तं पञ्ञापयोगमन्दताय वा उपसम-सुखानधिगमेन वा निरस्सादं होति, तस्मिं समये अट्ठसंवेगवत्थुपच्च-
B. 384 वेक्खणेन संवेजेति। **अट्ठसंवेगवत्थूनि** नाम जाति जरा ब्याधि मरणानि
10 चतारि, अपायदुक्खं पञ्चम, अतीते वट्टमूलकं दुक्खं, अनागते वट्टमूलकं दुक्खं, पच्चुप्पन्ने आहारपरियेट्ठिमूलकं दुक्खं ति। रतनत्तयगुणा-नुस्सरणेन च पसादं जनेति, अयं वुच्चति "समये सम्पहंसनता" ति।

समये अज्झुपेक्खनता नाम यस्मिं समये सम्मापटिपत्ति आगम्म अलीनं अनुद्धतं अनिरस्सादं आरम्मणे समप्पवत्तं समथवीथिपटिपन्नं
15 चित्तं होति, तदास्स पग्गहनिग्गहसम्पहंसनेसु न ब्यापारं[1] आपज्जति, सारथि विय आरद्धविरिय समप्पवत्तेसु अस्सेसु। अयं वुच्चति—"समये अज्झपेक्खनता" ति। **असमाहितपुग्गलपरिवज्जनता** नाम उपचारं वा अप्पनं वा अप्पत्तानं विक्खितचित्तानं पुग्गलानं आरका परिवज्जनं। **समाहितपुग्गलसेवना** नाम उपचारेन वा अप्पनाय वा समाहितचित्तानं
20 सेवना भजना पयिरूपासना। **तदधिमुत्तता** नाम ठाननिसज्जादीसु समाधिउप्पादनत्थंयेव निन्नपोणपब्भारचित्तता। एवञ्हि पटिपज्जतो एस उप्पज्जति। एवं उप्पन्नस्स पनस्स अरहत्तमग्गेन भावनापारिपूरि होती ति पजानाति।

उपेक्खासम्बोज्झङ्गस्स "अत्थि, भिक्खवे, उपेक्खासम्बोज्झङ्गट्ठा-
25 नीया धम्मा, तत्थ योनिसोमनसिकारबहुलीकारो, अयमाहारो अनुप्पन्नस्स वा उपेक्खासम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय, उप्पन्नस्स वा उपेक्खासम्बोज्झङ्गस्स भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया

संवत्तती" ति एवं उप्पादो होति। तत्थ उपेक्खाव उपेक्खा-सम्बोज्झङ्गट्ठानीया धम्मा नाम।

अपिच पञ्च धम्मा उपेक्खासम्बोज्झङ्गस्स उप्पादाय संवत्तन्ति— सत्तमज्झत्तता, सङ्खारमज्झत्तता, सत्तसङ्खारकेलायनपुग्गलपरि- R. 796 वज्जनता, सत्तसङ्खारमज्झत्तपुग्गलसेवनता, तदधिमुत्तताति। तत्थ 5 द्वीहाकारेहि **सत्तमज्झत्ततं** समुट्ठापेति "त्वं अत्तनो कम्मेन आगन्त्वा अत्तनोव कम्मेन गमिस्ससि, एसोपि अत्तनोव कम्मेन आगन्त्वा अत्तनोव कम्मेन गमिस्सति, त्वं कं केलायसी" ति एवं कम्मस्सकतापच्चवेक्खणेन, "परमत्थतो सत्तोयेव नत्थि, सो त्वं कं केलायसी" ति एवं निस्सत्त-पच्चवेक्खणेन चा ति। द्वीहेवाकारेहि **सङ्खारमज्झत्ततं** समुट्ठापेति— 10 "इदं चीवरं अनुपुब्बेन वण्णविकारतञ्चेव जिण्णभावञ्च उपगन्त्वा पादपुञ्छनचोळकं हुत्वा यट्ठिकोटिया छड्डनीयं भविस्सति, सचे पनस्स सामिको भवेय्य, नास्स एवं विनस्सितुं ददेय्या" ति एवं अस्सामिक- B. 385 भावपच्चवेक्खणेन च, "अनद्धनियं इदं तावकालिकं" ति एवं ताव-कालिकभावपच्चवेक्खणेन चा ति। यथा च चीवरे, एवं पत्तादीसुपि 15 योजना कातब्बा।

सत्तसङ्खारकेलायनपुग्गलपरिवज्जनता ति एत्थ यो पुग्गलो गिहि वा अत्तनो पुत्तधीतादिके, पब्बजितो वा अत्तनो अन्तेवासिकसमानु-पज्झायकादिके ममायति, सहत्थेनेव नेसं केसच्छेदन सूचिकम्मचीवर-धोवनरजनपत्तपचनादीनि करोति, मुहुत्तम्पि अपस्सन्तो "असुको 20 सामणेरो कुहिं, असुको दहरो कुहिं" ति भन्तमिग्गे विय इतो चितो च ओलोकेति, अञ्ञेन केसच्छेदनादीनं अत्थाय "मुहुत्तं असुकं पेसेथा" ति याचियमानोपि "अम्हेपि तं अत्तनो कम्मं न कारेम, तुम्हे नं गहेत्वा किलमेस्सथा" ति न देति, अयं सत्तकेलायनो नाम।

यो पन चीवरपत्तथालककत्तरयट्ठिआदीनि ममायति, अञ्ञस्स 25 हत्थेन परामसितुम्पि न देति, तावकालिकं याचितो "मयम्पि इदं ममायन्ता न परिभुञ्जाम, तुम्हाकं किं दस्सामा" ति वदति, अयं

सङ्खारकेलायनो नाम। यो पन तेसु द्वीसुपि वत्थूसु मज्झत्तो उदासीनो, अयं सत्तसङ्खारमज्झत्तो नाम। इति अयं उपेक्खा-सम्बोज्झङ्गो एवरूपं सत्तसङ्खारकेलायनपुग्गलं आरका परि-वज्जन्तस्सपि, सत्तसङ्खारमज्झत्तपुग्गलं सेवन्तस्सापि, ठाननिसज्जादीसु
R 797 5 तदुप्पादनत्थं निन्नपोणपब्भारचित्तस्सापि उप्पज्जति। एवं उप्पन्नस्स पनस्स अरहत्तमग्गेन भावनापारिपूरि होती ति पजानाति।

इति अज्झत्तं वा (दी० नि० २.२२७) ति एवं अत्तनो वा सत्त सम्बोज्झङ्गे परिग्गण्हित्वा, परस्स वा, कालेन वा अत्तनो, कालेन वा परस्स सम्बोज्झङ्गे परिग्गण्हित्वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति।
10 समुदयवया पनेत्थ सम्बोज्झङ्गानं निब्बत्तिनिरोधवसेन[1] वेदितब्बा। इतो परं वुत्तनयमेव। केवलञ्हि इध बोज्झङ्गपरिग्गहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं योजनं कत्वा बोज्झङ्गपरिग्गाहकस्स भिक्खुनो निय्यानमुखं वेदितब्बं। सेसं तादिसमेवा ति।

बोज्झङ्गपब्बं निट्ठितं।

B. 386

(ङ) चतुसच्चपब्बवण्णना

१५. एवं सत्तबोज्झङ्गवसेन धम्मानुपस्सनं विभजित्वा इदानि
15 चतुसच्चवसेन विभजितुं पुन चपरं (दी० नि० २.२२६) तिआदिमाह। तत्थ इदं दुक्खं ति यथाभूतं पजानाती ति ठपेत्वा तण्हं तेभूमकधम्मे "इदं दुक्खं" ति यथासभावतो पजानाति। तस्सेव खो पन दुक्खस्स जनिकं समुट्ठापिकं पुरिमतण्हं "अयं दुक्खसमुदयो" ति, उभिन्नं अप्पवत्तिनिब्बानं "अयं दुक्खनिरोधो" ति, दुक्खपरिजाननं
20 समुदयपजहनं निरोधसच्छिकरणं अरियमग्गं "अयं दुक्खनिरोधगामिनिपटिपदा" ति यथासभावतो पजानाती ति अत्थो। अवसेसा अरियसच्चकथा ठपेत्वा जातिआदीनं पदभाजनकथं विसुद्धिमग्गे वित्थारितायेव।

१. ०विरोध०—रो०।

दुक्खसच्चनिद्देसवण्णना

१६–१७. पदभाजने पन **कतमा च भिक्खवे जाती** ति भिक्खवे, या जातिपि दुक्खा ति एवं वुत्ता जाति, सा कतमा ति एवं सब्बपुच्छासु अत्थो वेदितब्बो। **या तेसं तेसं सत्तानं** ति इदं "इमेसं नामा" ति नियमाभावतो सब्बसत्तानं परियादानवचनं। **तम्हि तम्हि सत्तनिकाये** ति इदम्पि सब्बसत्तनिकायपरियादानवचनं **जननं जाति** सविकारानं पठमाभिनिब्बत्तक्खन्धानमेतं अधिवचनं। **सञ्जाती** ति इदं तस्सा एव उपसग्गमण्डितवेवचनं। सा एव अनुपविट्ठाकारेन ओक्कमनट्ठेन **ओक्कन्ति**। निब्बत्तिसङ्खातेन अभिनिब्बत्तनट्ठेन **अभिनिब्बत्ति**। इति अयं चतुब्बिधापि सम्मुतिकथा नाम। **खन्धा पातुभावो** ति अयं पन परमत्थकथा। एकवोकारभवादीसु एकचतुपञ्चभेदानं खन्धानंयेव पातुभावो, न पुग्गलस्स। तस्मिं पन सति पुग्गलो पातुभूतो ति वोहारमत्तं होति। **आयतनानं पटिलाभो** ति आयतनानि पातुभवन्तानेव पटिलद्धानि नाम होन्ति, सो तेसं पातुभावसङ्खातो पटिलाभो ति अत्थो।

१८. **जरा** ति सभावनिद्देसो। **जीरणता** ति आकारभावनिद्देसो। **खण्डिच्चं** ति आदि विकारनिद्देसो। दहरकालस्मिञ्हि दन्ता समसेता होन्ति। तेयेव परिपच्चन्ते अनुक्कमेन वण्णविकारं आपज्जित्वा तत्थ तत्थ पत्तं ति। अथ पतितञ्च ठितञ्च उपादाय खण्डितदन्ता खण्डिता नाम। खण्डितानं भावो **खण्डिच्चं** ति वुच्चति। अनुक्कमेन पण्डरभूतानि केसलोमानि पलितानि नाम। पलितानि सञ्जातानि अस्सा ति पलितो, पलितस्स भावो **पालिच्चं**। जरावातप्पहारेन सोसितमंसलोहितताय वलियो तचस्मिं अस्सा ति वलित्तचो, तस्स भावो **वलित्तचता**। एत्तावता दन्तकेसलोमतचेसु विकारदस्सनवसेन पाकटीभूता पाकटजरा दस्सिता।

यथेव हि उदकस्स वा वातस्स वा अग्गिनो वा तिणरुक्खादीनं संभग्गपलिभग्गताय वा झामताय वा गतमग्गो पाकटो होति, न च

सो गतमग्गो तानेव उदकादीनि, एवमेव जराय दन्तादीनं खण्डिच्चादि-
वसेन गतमग्गो पाकटो, चक्खुं उम्मिलेत्वापि गण्हति[1], न च
खण्डिच्चादीनेव जरा। न हि जरा चक्खुविञ्ञेय्या होति। यस्मा पन
जरं पत्तस्स आयु हायति, तस्मा जरा "आयुनो संहानी" ति फलू-
5 पचारेन वुत्ता। यस्मा दहरकाले सुप्पसन्नानि सुखुमम्पि अत्तनो विसयं
सुखेनेव च गण्हनसमत्थानि चक्खादीनि इन्द्रियानि जरं पत्तस्स
परिपक्कानि आलुलितानि अविसदानि ओळारिकम्पि अत्तनो विसयं
गहेतुं असमत्थानि होन्ति, तस्मा "इन्द्रियानं परिपाको" तिपि
फलूपचारेनेव वुत्ता।

10 १९. मरणनिद्देसे **यं** ति मरणं सन्धाय नपुंसकनिद्देसो, यं मरणं
चुती ति वुच्चति, चवनताति वुच्चती ति अयमेत्थ योजना। तत्थ **चुती**
ति सभावनिद्देसो। **चवनता** ति आकारभावनिद्देसो। मरणं पत्तस्स
खन्धा भिज्जन्ति चेव अन्तरधायन्ति च अदस्सनं गच्छन्ति, तस्मा तं
भेदो अन्तरधानं ति वुच्चति। **मच्चुमरणं** ति मच्चुमरणं, न खणिक-
15 मरणं। **काल किरिया** ति मरणकालकिरिया। अयं सब्बापि सम्मु-
तिकथाव। **खन्धानं भेदो** ति अयं पन परमत्थकथा। एकवोकारभवा-
R. 799 दीसु एकचतुपञ्चभेदानं खन्धानंयेव भेदो, न पुग्गलस्स, तस्मिं पन सति
पुग्गलो मतो ति वोहारमत्तं होति।

कळेवरस्स निक्खेपो ति अत्तभावस्स निक्खेपो। मरणं पत्तस्स
20 हि निरत्थंव कलिङ्गरं अत्त भावो पतति, तस्मा तं कळेवरस्स
निक्खेपो ति वुत्तं। जीवितिन्द्रियस्स उपच्छेदो पन सब्बाकारतो
B. 388 परमत्थतो मरणं। एतदेव सम्मुतिमरणं ति पि वुच्चति। जीवितिन्द्रियु-
पच्छेदमेव हि गहेत्वा लोकिया "तिस्सो मतो, फुस्सो मतो" ति
वदन्ति।

25 २०. **ब्यसनेना** ति ञातिब्यसनादीसु येन केनचि ब्यसनेन।
दुक्खधम्मेना ति वधबन्धादिना दुक्खकारणेन। **फुट्ठस्सा** ति

१. गय्हति—रो०।

अञ्ञोत्थरस्स अभिभूतस्स। **सोको** ति यो ञातिब्यसनादीसु वा वधबन्धनादीसु वा अञ्ञतरस्मिं सति तेन अभिभूतस्स उप्पज्जति सोचनलक्खणो सोको। **सोचितत्तं** ति सोचितभावो। यस्मा पनेस अब्भन्तरे सोसेन्तो परिसोसेन्तो उप्पज्जति, तस्मा **अन्तोसोको अन्तोपरिसोको** ति वुच्चति। 5

२१. "मय्हं धीता, मय्हं पुत्तो" ति एवं आदिस्स आदिस्स देवन्ति परिदेवन्ति एतेना ति **आदेवो**। तं तं वण्णं परिकित्तेत्वा देवन्ति एतेना ति **परिदेवो**। ततो परा द्वे तस्सेव भावनिद्देसा।

२२. **कायिकं** ति कायपसादवत्थुकं। दुक्खमनट्ठेन **दुक्खं**। **असातं** ति अमधुरं। **कायसम्फस्सजं दुक्खं** ति कायसम्फस्सतो जातं दुक्खं। **असातं वेदयितं** ति अमधुरं वेदयितं। 10

२३. **चेतसिकं** ति चित्तसम्पयुत्तं। सेसं दुक्खं वुत्तनयमेव।

२४. **आयासो** ति संसीदनविसीदनाकारप्पत्तो चित्तकिलमथो। बलवतरं आयासो **उपायासो**। ततो परा द्वे अत्तत्तनियाभावदीपका भावनिद्देसा। 15

२७. **जातिधम्मानं** (दी० नि० २.२२९) ति जातिसभावानं। **इच्छा उप्पज्जती** ति तण्हा उप्पज्जति। **अहो वता** ति पत्थना। **न खो पनेतं इच्छाया** ति एवं जातिया अनागमनं विना मग्गभावनं न इच्छाय पत्तब्बं। **इदम्पी** ति एतम्पि उपरि सेसानि उपादाय पिकारो। **यम्पिच्छं** ति येनपि धम्मेन अलब्भनेय्यवत्थुं इच्छन्तो न लभति, तं अलब्भनेय्य वत्थुम्हि इच्छनं दुक्खं। एस नयो सब्बत्थ। 20

२८. खन्धनिद्देसे रूपञ्च तं उपादानक्खन्धो चा ति **रूपुपादानक्खन्धो** एवं सब्बत्थ। B. 389

समुदयसच्चनिद्देसवण्णना

२९. **यायं तण्हा** (दी० नि० २.२३०) ति या अयं तण्हा। **पोनोब्भविका** ति पुनब्भवकरणं पुनोब्भवो, पुनोब्भवो सीलं अस्सा 25

ति **पोनोब्भविका**। नन्दीरागेन सह गता ति **नन्दीरागसहगता**। नन्दीरागेन सद्धिं अत्थतो एकत्तमेव गता ति वुत्तं होति।
R. 800 **तत्रतत्राभिनन्दिनी** ति यत्र यत्र अत्तभावो, तत्र तत्र अभिनन्दिनी। रूपादीसु वा आरम्मणेसु तत्र तत्र अभिनन्दिनी, रूपाभिनन्दिनी
5 सद्द-गन्ध-रस-फोट्ठब्ब-धम्माभिनन्दिनी ति अत्थो। **सेय्यथिदं** ति निपातो। तस्स सा कतमा चे ति अत्थो। कामे तण्हा **कामतण्हा**, पञ्चकामगुणिकरागस्सेतं नामं। भवे तण्हा **भवतण्हा**, भवपत्थनावसेन उप्पन्नस्स सस्सतदिट्ठिसहगतस्स रूपारूपभवरागस्स च झाननिकन्तिया चेतं अधिवचनं। विभवे तण्हा **विभवतण्हा**, उच्छेददिट्ठिसहगतराग-
10 स्सेतं अधिवचनं।

इदानि तस्सा तण्हाय वत्थुं वित्थारतो दस्सेतुं **सो खो पनेसा** तिआदिमाह। तत्थ **उप्पज्जती** ति जायति। **निविसती** ति पुनप्पुनं पवत्तिवसेन पतिट्ठहति। **यं लोके पियरूपं सातरूपं** ति यं लोकस्मिं पियसभावञ्चेव मधुरसभावञ्च। **चक्खु लोके** तिआदीसु
15 लोकस्मिञ्हि चक्खादीसु ममत्तेन अभिनिविट्ठा सत्ता सम्पत्तियं पतिट्ठिता अत्तनो चक्खुं आदासतलादीसु निमित्तग्गहणानुसारेन विप्पसन्नं पञ्चपसादं सुवण्णविमाने उग्घाटितमणिसीहपञ्जरं विय मञ्ञन्ति, सोतं रजतपनाळिकं विय, पामङ्गसुत्तं विय च मञ्ञन्ति, "तुङ्गनासा" ति लद्धवोहारं घानं वट्टित्वा ठपितहरितालवट्टिं विय
20 मञ्ञन्ति, जिव्हं रत्तकम्बलपटलं विय मुदुसिनिद्धमधुरसदं मञ्ञन्ति, कायं साललट्ठिं विय, सुवण्णतोरणं विय च मञ्ञन्ति, मनं अञ्ञेसं मनेन असदिसं उळारं मञ्ञन्ति। रूपं सुवण्णकणिकार-पुप्फादिवण्णं विय, सद्दं मत्तकरवीक-कोकिल-मन्दधमित-मणिवंसनिग्घोसं विय, अत्तना पटिलद्धानि चतुसमुट्ठानिकगन्धा-
25 रम्मणादीनि "कस्सञ्ञस्स एवरूपानि अत्थी" ति मञ्ञन्ति। तेसं एवं मञ्ञमानानं तानि चक्खादीनि पियरूपानि चेव सातरूपानि
B. 390 च होन्ति। अथ नेसं तत्थ अनुप्पन्ना चेव तण्हा उप्पज्जति, उप्पन्ना च तण्हा पुनप्पुनं पवत्तिवसेन निविसति। तस्मा भगवा "चक्खु

लोके पियरूपं सातरूपं, एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जती'' तिआदिमाह। तत्थ **उप्पज्जमाना** ति यदा उप्पज्जमाना होति, तदा तत्थ उप्पज्जती ति अत्थो। एस नयो सब्बत्थ।

निरोधसच्चनिद्देसवण्णना

३०. असेसविरागनिरोधोतिआदीनि सब्बानि निब्बानवेवच- नानेव। निब्बानञ्हि आगम्म तण्हा असेसा विरज्जति निरुज्झति, 5 तस्मा तं "तस्सायेव तण्हाय असेसविरागनिरोधो" ति वुच्चति। निब्बानञ्च आगम्म तण्हा चजियति पटिनिस्सज्जियति विमुच्चति न R. 801 अल्लीयति, तस्मा निब्बानं "चागो पटिनिस्सग्गो मुत्ति अनालयो" ति वुच्चति। एकमेव हि निब्बानं, नामानि पनस्स सब्बसङ्खतानं नामपटिपक्खवसेन अनेकानि होन्ति। सेय्यथिदं, असेसविरागो असेस- 10 निरोधो चागो पटिनिस्सग्गो मुत्ति अनालयो रागक्खयो दोसक्खयो मोहक्खयो तण्हक्खयो अनुप्पादो अप्पवत्तं अनिमित्तं अप्पणिहितं अनायूहनं अप्पटिसन्धि अनुपपत्ति अगति अजातं अजरं अब्याधि अमतं असोकं अपरिदेवं अनुपायासं असंकिलिट्ठं ति।

इदानि मग्गेन छिन्नाय निब्बानं आगम्म अप्पवत्तिपत्तायपि च 15 तण्हाय येसु वत्थूसु तस्सा उप्पत्ति दस्सिता, तत्थेव अभावं दस्सेतु **सा खो पनेसा** (दी० नि० २.२३१) तिआदिमाह। तत्थ यथा पुरिसो खेत्ते जातं तित्तअलाबुवल्लिं दिस्वा अग्गतो पट्ठाय मूलं परियेसित्वा छिन्देय्य, सा अनुपुब्बेन मिलायित्वा अपञ्ञत्तिं गच्छेय्य। ततो तस्मिं खेत्ते तित्तअलाबु निरुद्धा पहीना ति वुच्चेय्य, एवमेव खेत्ते 20 तित्तअलाबु विय चक्खादीसु तण्हा। सा अरियमग्गेन मूलच्छिन्ना निब्बानं आगम्म अप्पवत्तिं गच्छति। एवं गता पन तेसु वत्थूसु खेत्ते तित्तअलाबु विय न पञ्ञायति।

यथा च अटवितो चोरे आनेत्वा नगरस्स दक्खिणद्वारे घातेय्युं, ततो अटवियं चोरा मता ति वा मारिता ति वा वुच्चेय्युं, एवं 25 अटवियं चोरा विय चक्खादीसु तण्हा। सा दक्खिणद्वारे चोरा विय

निब्बानं आगम्म निरुद्धत्ता निब्बाने निरुद्धा। एवं निरुद्धा पनेतेसु वत्थूसु अटवियं चोरा विय न पञ्ञायति, तेनस्सा तत्थेव निरोधं
B. 391 दस्सेन्तो "चक्खु लोके पियरूपं सातरूपं, एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति, एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झती" तिआदिमाह।

मग्गसच्चनिद्देसवण्णना

5 ३१. अयमेवा (दी० नि० २.२३३) ति अञ्ञमग्गपटिक्खेपनत्थं नियमनं। अरियो ति तं तं मग्गवज्झेहि किलेसेहि आरकत्ता अरियभावकरत्ता च अरियो। दुक्खे ञाणं ति आदिना चतुसच्चकम्मट्ठानं दस्सितं। तत्थ पुरिमानि द्वे सच्चानि वट्टं, पच्छिमानि विवट्टं। तेसु भिक्खुनो वट्टे कम्मट्ठानाभिनिवेसो होति, विवट्टे नत्थि अभिनिवेसो।
10 पुरिमानि हि द्वे सच्चानि "पञ्चक्खन्धा दुक्खं, तण्हा समुदयो" ति एवं सङ्खेपेन च "कतमे पञ्चक्खन्धा, रूपक्खन्धो" तिआदिना नयेन वित्थारेन च आचरियस्स सन्तिके उग्गण्हित्वा वाचाय पुनप्पुनं परिवत्तेन्तो योगावचरो कम्मं करोति। इतरेसु पन द्वीसु सच्चेसु निरोधसच्चं इट्ठं कन्तं मनापं, मग्गसच्चं इट्ठं कन्तं मनापं ति एवं
R. 802 15 सवनेन कम्मं करोति। सो एवं करोन्तो चत्तारि सच्चानि एकपटिवेधेनेव पटिविज्झति एकोभिसमयेन अभिसमेति। दुक्खं परिञ्ञापटिवेधेन पटिविज्झति, समुदयं पहानपटिवेधेन, निरोधं सच्छिकिरियापटिवेधेन, मग्गं भावनापटिवेधेन पटिविज्झति। दुक्खं परिञ्ञाभिसमयेन...पे०...मग्गं भावनाभिसमयेन अभिसमेति। एवमस्स
20 पुब्बभागे द्वीसु सच्चेसु उग्गहपरिपुच्छासवनधारणसम्मसनपटिवेधो होति, द्वीसु पन सवनपटिवेधोयेव। अपरभागे तीसु किच्चतो पटिवेधो होति, निरोधे आरम्मणपटिवेधो। पच्चवेक्खणा पन पत्तसच्चस्स होति। अयञ्च आदिकम्मिको, तस्मा सा इध न वुत्ता।

इमस्स च भिक्खुनो पुब्बे परिग्गहतो "दुक्खं परिजानामि, समुदयं
25 पजहामि, निरोधं सच्छि करोमि, मग्गं भावेमी" ति आभोगसमन्नाहारमनसिकारपच्चवेक्खणा नत्थि, परिग्गहतो पट्ठाय होति। अपरभागे

पन दुक्खं परिञ्ञातमेव...पे०...मग्गो भावितोव होति। तत्थ द्वे सच्चानि दुद्दसत्ता गम्भीरानि, द्वे गम्भीरत्ता दुद्दसानि। दुक्खसच्चञ्हि उप्पत्तितो पाकटं, खाणुकण्टकपहारादीसु "अहो दुक्खं" ति वत्तब्बतम्पि आपज्जति। समुदयम्पि खादितुकामताभुञ्जितुकामतादिवसेन उप्पत्तितो पाकटं। लक्खणपटिवेधतो पन उभयम्पि गम्भीरं। इति 5 तानि दुद्दसत्ता गम्भीरानि। इतरेसं पन द्विन्नं दस्सनत्थाय पयोगो भवग्गगहणत्थं हत्थप्पसारणं विय अवीचिफुसनत्थं पादप्पसारणं विय B. 392 सतधा भिन्नस्स वालस्स कोटिया कोटिपादनं विय च होति। इति तानि गम्भीरत्ता दुद्दसानि। एवं दुद्दसत्ता गम्भीरेसु गम्भीरत्ता च दुद्दसेसु चतूसु सच्चेसु उग्गहादिवसेन पुब्बभागञाणुप्पत्तिं सन्धाय 10 **इदं दुक्खे ञाणं** ति आदि वुत्तं। पटिवेधक्खणे पन एकमेव तं ञाणं होति।

नेक्खम्मसङ्कप्पादयो कामब्यापादविहिंसाविरमणसञ्ञानं नानत्ता पुब्बभागे नाना, मग्गक्खणे पन इमेसु तीसु ठानेसु उप्पन्नस्स अकुसलसङ्कप्पस्स पदपच्छेदतो अनुप्पत्तिसाधनवसेन मग्गङ्गं पूरयमानो एकोव 15 कुसलसङ्कप्पो उप्पज्जति। अयं **सम्मासङ्कप्पो** नाम।

मुसावादावेरमणिआदयोपि मुसावादादीहि विरमणसञ्ञानं नानत्ता पुब्बभागे नाना, मग्गक्खणे पन इमेसु चतूसु ठानेसु उप्पन्नाय अकुसलदुस्सील्यचेतनाय पदपच्छेदतो अनुप्पत्तिसाधनवसेन पूरयमाना एकाव कुसलवेरमणी उप्पज्जति। अयं **सम्मावाचा** नाम। 20 R. 803

पाणातिपातावेरमणिआदयोपि पाणातिपातादीहि विरमणसञ्ञानं नानत्ता पुब्बभागे नाना, मग्गक्खणे पन इमेसु तीसु ठानेसु उप्पन्नाय अकुसलदुस्सील्यचेतनाय अकिरियतो पदपच्छेदतो अनुप्पत्तिसाधनवसेन मग्गङ्गं पूरयमाना एकाव कुसलवेरमणी उप्पज्जति, अयं **सम्माकम्मन्तो** नाम। 25

मिच्छाआजीवं ति खादनीयभोजनीयादीनं अत्थाय पवत्तितं कायवचीदुच्चरितं। **पहाया** ति वज्जेत्वा। **सम्माआजीवेना** ति बुद्धपसत्थेन आजीवेन। **जीवितं कप्पेती** ति जीवितप्पवत्तिं पवत्तेति।

सम्माआजीवोपि कुहनादीहि विरमणसञ्ञानं नानत्ता पुब्बभागे नाना, मग्गक्खणे पन इमेसुयेव सत्तसु ठानेसु उप्पन्नाय मिच्छाजीवदुस्सील्य-चेतनाय पदपच्छेदतो अनुप्पत्तिसाधनवसेन मग्गङ्गं पूरयमाना एकाव कुसलवेरमणी उप्पज्जति, अयं **सम्माआजीवो** नाम।

5 **अनुप्पन्नानं** ति एकस्मिं वा भवे तथारूपे वा आरम्मणे अत्तनो न उप्पन्नानं। परस्स पन उप्पज्जमाने दिस्वा "अहो वत मे एवरूपा पापका अकुसलधम्मा न उप्पज्जेय्युं" ति एवं अनुप्पन्नानं पापकानं

B. 393 अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाय। **छन्दं जनेती** ति तेसं अनुप्पादक-पटिपत्तिसाधकं वीरियछन्दं जनेति। **वायमती** ति वायामं करोति।

10 **वीरियं आरभती** ति वीरियं ति पवत्तेति। **चित्तं पग्गण्हाती** ति वीरियेन चित्तं पग्गहितं करोति। **पदहती** ति कामं तचो च न्हारु च अट्ठि च अवसिस्सतू ति पदहनं पवत्तेति।

उप्पन्नानं ति समुदाचारवसेन अत्तनो उप्पन्नपुब्बानं। इदानि तादिसे न उप्पादेस्सामी ति तेसं पहानाय छन्दं जनेति। **अनुप्पन्नानं**

15 **कुसलानं** ति अप्पटिलद्धानं पठमज्झानादीनं। **उप्पन्नानं** ति तेसंयेव पटिलद्धानं। **ठितिया** ति पुनप्पुनं उप्पत्तिपबन्धवसेन ठितत्थं। **असम्मोसाया** ति अविनासनत्थं। **भिय्योभावाया** ति उपरिभावाय। **वेपुल्लाया** ति विपुलभावाय। **भावनाय पारिपूरिया** ति भावनाय परिपूरणत्थं। अयम्पि सम्मावायामो अनुप्पन्नानं अकुसलानं अनुप्पाद-

20 नादिचित्तानं नानत्ता पुब्बभागे नाना, मग्गक्खणे पन इमेसुयेव चतूसु ठानेसु किच्चसाधनवसेन मग्गङ्गं पूरयमानं एकमेव कुसलवीरियं उप्पज्जति। अयं **सम्मावायामो** नाम।

सम्मासतिपि कायादिपरिग्गाहकचित्तानं नानत्ता पुब्बभागे नाना, मग्गक्खणे पन चतूसु ठानेसु किच्चसाधनवसेन मग्गङ्गं पूरयमाना

25 एकाव सति उप्पज्जति। अयं **सम्मासति** नाम।

R. 804 झानानि पुब्बभागेपि मग्गक्खणेपि नाना, पुब्बभागे समापत्ति-वसेन नाना, मग्गक्खणे नानामग्गवसेन। एकस्स हि पठममग्गो

पठमज्झानिको होति, दुतियमग्गादयोपि पठमज्झानिका वा दुतियज्झानादीसु अञ्ञतरझानिका वा। एकस्सपि पठममग्गो दुतियादीनं अञ्ञतरझानिको होति, दुतियादयोपि दुतियादीनं अञ्ञतरज्झानिका वा पठमज्झानिका वा। एवं चत्तारोपि मग्गा झानवसेन सदिसा वा असदिसा वा एकच्चसदिसा वा होन्ति। अयं पनस्स विसेसो पादकज्झाननियमेन होति 5

पादकज्झाननियमेन ताव पठमज्झानलाभिनो पठमज्झाना वुट्ठाय विपस्सन्तस्स उप्पन्नो मग्गो पठमज्झानिको होति। मग्गङ्गबोज्झङ्गानि पनेत्थ परिपुण्णानेव होन्ति। दुतियज्झानतो वुट्ठाय विपस्सन्तस्स उप्पन्नो दुतियज्झानिको होति। मग्गङ्गानि पनेत्थ सत्त 10 होन्ति। ततियज्झानतो वुट्ठाय विपस्सन्तस्स उप्पन्नो ततियज्झानिको। मग्गङ्गानि पनेत्थ सत्त, बोज्झङ्गानि छ होन्ति। एस नयो B. 394 चतुत्थज्झानतो वुट्ठाय याव नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं।

आरुप्पे चतुक्कपञ्चकज्झानं उप्पज्जति, तञ्च लोकुत्तरं, नो लोकियं ति वुत्तं, एत्थ कथं ति? एत्थापि पठमज्झानादीसु यतो वुट्ठाय 15 सोतापत्तिमग्गं पटिलभित्वा अरूपसमापत्तिं भावेत्वा सो आरुप्पे उप्पन्नो, तंझानिकावस्स तत्थ तयो मग्गा उप्पज्जन्ति। एवं पादकज्झानमेव नियमेति।

केचि पन थेरा "विपस्सनाय आरम्मणभूता खन्धा नियमेन्ती" ति वदन्ति। केचि "पुग्गलज्झासयो नियमेती" ति वदन्ति। 20 केचि "वुट्ठानगामिनिविपस्सना नियमेती" ति वदन्ति। तेसं वादविनिच्छयो विसुद्धिमग्गे वुट्ठानगामिनिविपस्सनाधिकारे वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

अयं वुच्चति, भिक्खवे, सम्मासमाधी ति अयं पुब्बभागे लोकियो अपरभागे लोकुत्तरो सम्मासमाधी ति वुच्चति। 25

३२. **इति अज्झत्तं वा** (दी० नि० २.३३४) ति एवं अत्तनो वा चत्तारि सच्चानि परिग्गण्हित्वा, **परस्स** वा, कालेन वा अत्तनो,

कालेन वा परस्स चत्तारि सच्चानि परिग्गण्हित्वा धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति। समुदयवया पनेत्थ चतुन्नं सच्चानं यथासभावतो उप्पत्ति-निवत्तिवसेन वेदितब्बा। इतो परं वुत्तनयमेव। केवलञ्हि इध R. 805 चतुसच्चपरिग्गाहिका सति दुक्खसच्चं ति एवं योजनं कत्वा 5 सच्चपरिग्गाहकस्स भिक्खुनो निय्यानमुखं वेदितब्बं। सेसं तादिसमेवा ति।

चतुसच्चपब्बं निट्ठितं।

(च) सतिपट्ठानभावनानिसंसवण्णना

३२. एत्तावता आनापानपब्बं चतुइरियापथपब्बं चतुसम्पजञ्ञ-पब्बं द्वत्तिंसाकारं चतुधातुववत्थानं नवसिवथिका वेदनानुपस्सना चित्तानुपस्सना नीवरणपरिग्गहो खन्धपरिग्गहो आयतनपरिग्गहो 10 बोज्झङ्गपरिग्गहो सच्चपरिग्गहो ति एकवीसति कम्मट्ठानानि। तेसु आनापानं द्वत्तिंसाकारं नवसिवथिका ति एकादस अप्पनाकम्मट्ठानानि होन्ति। दीघभाणकमहासीवत्थेरो पन "नवसिवथिका आदीनवा-नुपस्सनावसेन वुत्ता" ति आह। तस्मा तस्स मतेन द्वेयेव अप्पनाकम्मट्ठानानि, सेसानि उपचारकम्मट्ठानानि। किं पनेतेसु B. 395 15 सब्बेसु अभिनिवेसो जायती ति ? न जायति। इरियापथसम्पजञ्ञनी-वरणबोज्झङ्गेसु हि अभिनिवेसो न जायति, सेसेसु जायती ति। महासीवत्थेरो पनाह "एतेसुपि अभिनिवेसो जायति। अयञ्हि 'अत्थि नु खो मे चत्तारो इरियापथा उदाहु नत्थि, अत्थि नु खो मे चतुसम्पजञ्ञं उदाहु नत्थि, अत्थि नु खो मे पञ्चनीवरणा उदाहु नत्थि, 20 अत्थि नु खो मे सत्तबोज्झङ्गा उदाहु नत्थी' ति एवं परिग्गण्हाति। तस्मा सब्बत्थ अभिनिवेसो जायती" ति।

यो हि कोचि, भिक्खवे, यो हि कोचि, भिक्खवे, भिक्खु वा भिक्खुनी वा उपासको वा उपासिका वा। **एवं भावेय्या** ति आदितो पट्ठाय वुत्तेन भावनानुक्कमेन भावेय्य। **पाटिकङ्खं** ति पटिकङ्खितब्बं 25 इच्छितब्बं अवस्संभावी ति अत्थो। **अञ्ञा** ति अरहत्तं। **सति वा**

उपादिसेसे ति उपादानसेसे वा सति अपरिक्खीणे। **अनागामिता** ति अनागामिभावो।

एवं सत्तन्नं वस्सानं वसेन सासनस्स निय्यानिकभावं दस्सेत्वा पुन ततो अप्पतरेपि काले दस्सेन्तो **तिट्ठन्तु, भिक्खवे,** तिआदिमाह। सब्बम्पि चेतं मज्झिमस्स वेनेय्यपुग्गलस्स वसेन वुत्तं। तिक्खपञ्ञ 5 पन सन्धाय "पातोव अनुसिट्ठो सायं विसेसं अधिगमिस्सति, सायं R. 806 अनुसिट्ठो पातो विसेसं अधिगमिस्सती" ति वुत्तं। इति भगवा "एवं निय्यानिकं, भिक्खवे, मम सासनं" ति दस्सेत्वा एकवीसतियापि ठानेसु अरहत्तनिकूटेन देसितं देसनं निय्यातेन्तो "एकायनो अयं, भिक्खवे, मग्गो ...पे... इति यं तं वुत्तं, इदमेतं पटिच्च वुत्तं" ति 10 आह। सेसं उत्तानत्थमेवा ति। देसनापरियोसाने पन तिंस भिक्खुसहस्सानि अरहत्ते पतिट्ठहिंसू ति।

महासतिपट्ठानसुत्तवण्णना निट्ठिता।

—o—

P. 396

(१०) पायासिराजञ्ञसुत्तवण्णना

१. निदानवण्णना

१. **एवं मे सुतं** ति पायासिराजञ्ञसुत्तं। तत्रायमपुब्बपद-वण्णना। **आयस्मा** (दी० नि० २.२३६) ति पियवचनमेतं। **कुमारकस्सपो** ति तस्स नामं। कुमारकाले पब्बजितत्ता पन भगवता "कस्सपं पक्कोसथ, इदं फलं वा खादनीयं वा कस्सपस्स देथा" ति
5 वुत्ते "कतरकस्सपस्सा" ति। "कुमारकस्सपस्सा" ति एवं गहितनामत्ता ततो पट्ठाय वुड्ढकालेपि "कुमारकस्सपो" त्वेव वुच्चति। अपिच रञ्ञो पोसावनिकपुत्तत्ता पि तं कुमारकस्सपो ति सञ्जानिंसु।

अयं पनस्स पुब्बयोगतो पट्ठाय आविभावकथा—थेरो किर
10 पदुमुत्तरस्स भगवतो काले सेट्ठिपुत्तो अहोसि। अथेकदिवसं भगवन्तं चित्रकथिं एकं अत्तनो सावकं एतदग्गे ठपेन्तं दिस्वा भगवतो सत्ताहं दानं दत्वा "अहम्पि भगवा अनागते एकस्स बुद्धस्स अयं थेरो विय चित्रकथी सावको भवामी" ति पत्थनं कत्वा पुञ्ञानि करोन्तो कस्सपस्स भगवतो सासने पब्बजित्वा विसेसं निब्बत्तेतुं नासक्खि।
15 तदा किर परिनिब्बुतस्स भगवतो सासने ओसक्कन्ते पञ्च भिक्खू निस्सेणिं बन्धित्वा पब्बतं आरुय्ह समणधम्मं अकंसु। संघत्थेरो ततियदिवसे अरहत्तं पत्तो, अनुथेरो चतुत्थदिवसे अनागामी अहोसि, इतरे तयो विसेसं निब्बत्तेतुं असक्कोन्ता देवलोके निब्बत्ता।

तेसं एकं बुद्धन्तरं देवेसु च मनुस्सेसु च सम्पत्तिं अनुभवन्तानं
20 एको तक्कसिलायं राजकुले निब्बत्तित्वा पक्कुसा ति नाम राजा हुत्वा भगवन्तं उद्दिस्स पब्बजित्वा राजगहं उद्दिस्स आगच्छन्तो कुम्भकार-सालायं भगवतो धम्मदेसनं सुत्वा अनागामिफलं पत्तो। एको एकस्मिं

समुद्दपट्टने कुलघरे निब्बत्तित्वा नावं आरुय्ह भिन्ननावो दारुचीरानि[1] R. 808
निवासेत्वा लाभसम्पत्तिं पत्तो "अहं अरहा" ति चित्तं उप्पादेत्वा
"न त्वं अरहा, गच्छ, सत्थारं उपसङ्कमित्वा पञ्हं पुच्छा" ति
अत्थकामाय देवताय चोदितो तथा कत्वा अरहत्तफलं पत्तो।

एको राजगहे एकिस्सा कुलदारिकाय कुच्छिम्हि उप्पन्नो। सा च 5
पठमं मातापितरो याचित्वा पब्बज्जं अलभमाना कुलघरं गन्त्वा गब्भं
गण्हि[2]। गब्भसण्ठितम्पि[3] अजानन्ति सामिकं आराधेत्वा तेन B. 397
अनुञ्ञाता भिक्खुनीसु पब्बजिता। तस्सा गब्भनिमित्तं दिस्वा
भिक्खुनियो देवदत्तं पुच्छिंसु। सो "अस्समणी" ति आह। दसबलं
पुच्छिंसु। सत्था उपालित्थेरं सम्पटिच्छापेसि। थेरो सावत्थिनगर- 10
वासीनि कुलानि विसाखञ्च उपासिक पक्कोसापेत्वा सोधेन्तो "पुरे लद्धो
गब्भो, पब्बज्जा अरोगा" ति आह। सत्था "सुविनिच्छितं अधिकरणं"
ति थेरस्स साधुकारमदासि। सा भिक्खुनी सुवण्णबिम्बसदिसं पुत्तं
विजायि। तं गहेत्वा राजा पसेनदि कोसलो पोसापेसि[4]। "कस्सपो"
ति चस्स नामं कत्वा अपरभागे अलङ्करित्वा सत्थु सन्तिकं नेत्वा 15
पब्बाजेसि। इति नं रञ्ञो पोसावनिकपुत्तत्तापि "कुमारकस्सपो"
ति सञ्जानिंसू ति। तं एकदिवसं अन्धवने समणधम्मं करोन्तं अत्थकामा
देवता पञ्हे उग्गहापेत्वा "इमे पञ्हे भगवन्तं पुच्छा" ति आह।
थेरो पञ्हे पुच्छित्वा पञ्हविस्सज्जनावसाने अरहत्तं पापुणि। भगवापि
त चित्रकथिकानं भिक्खूनं अग्गट्ठाने ठपेसि। 20

सेतब्या ति तस्स नगरस्स नामं। **उत्तरेन सेतब्यं** ति सेतब्यतो
उत्तरदिसाय। **राजञ्ञो** ति अनभिसित्तकराजा। **दिट्ठिगतं** ति
दिट्ठियेव[5]। यथा गूथगतं मुत्तगतं ति वुत्ते न गूथादितो अञ्ञं अत्थि,
एवं दिट्ठियेव दिट्ठिगतं। **इतिपि नत्थी** ति तं तं कारणं अपदिसित्वा
एवम्पि नत्थी ति वदति। **पुरा...पे०...सञ्ञापेतो** ति याव न 25
सञ्ञापेति।

१. दारुचीरं—रो०।
२. रो० पोत्थके नत्थि।
३. गब्भपतिट्ठितं पि—रो०।
४. थोसेसि—रो०।
५. रो० पोत्थके नत्थि।

२. चन्दिमसूरियउपमावण्णना

६. **इमे भो कस्सप चन्दिमसूरिया** (दी० नि० २.२३८) ति सो किर थेरेन पुच्छितो चिन्तेसि "अयं समणो पठमं चन्दिमसूरिये
R. 809 उपमं आहरि, चन्दिमसूरियसदिसो भविस्सति पञ्ञाय, अनभिभवनीयो अञ्ञेन, सचे पनाहं 'चन्दिमसूरिया इमस्मिं लोके' ति भणिस्सामि,
5 किं निस्सिता एते, कित्तकपमाणा, कित्तकं उच्चा' तिआदीहि पलिवेठेस्सति। अहं खो पनेतं निब्बेठेतुं न सक्खिस्सामि, 'परस्मिं लोके' इच्चेवस्स कथेस्सामी'' ति। तस्मा एवमाह।

B. 398 भगवा पन ततो पुब्बे न चिरस्सेव सुधाभोजनीयजातकं कथेसि। तत्थ "चन्दे चन्दो देवपुत्तो, सूरिये सूरियो देवपुत्तो" ति आगतं।
10 भगवता च कथितं जातकं वा सुत्तन्तं वा सकलजम्बुदीपे पत्थटं होति, तेन सो "एत्थ निवासिनो देवपुत्ता नत्थी" ति न सक्का वत्तुं ति चिन्तेत्वा **देवा ते न मनुस्सा** ति आह।

७. **अत्थि पन राजञ्ञ परियायो** ति अत्थि पन कारणं ति पुच्छति। **आबाधिका** ति विसभागवेदनासङ्खातेन आबाधेन समन्ना-
15 गता। **दुक्खिता** ति दुक्खप्पत्ता। **बाळ्हगिलाना** ति अधिमत्तगिलाना। **सद्धायिका** ति अहं तुम्हे सद्दहामि, तुम्हे मय्हं सद्धायिका सद्धायितब्बवचना ति अत्थो। **पच्चयिका** ति अहं तुम्हे पतियामि, तुम्हे मय्हं पच्चयिका पत्तियायितब्बा ति अत्थो।

३. चोरादिउपमावण्णना

८. **उद्दिसित्वा** (दी० नि० २.२४०) ति तेसं अत्तनञ्च पटिसामितभण्डकञ्च दस्सेत्वा, सम्पटिच्छापेत्वा ति अत्थो। **विप्पलपन्तस्स** ति
20 "पुत्तो मे, धीता मे, धनं मे" ति विविधं पलपन्तस्स[1]। **निरयपालेसू** ति निरये कम्मकारणिकसत्तेसु। ये पन "कम्ममेव कम्मकारणं करोति, नत्थि निरयपाला' ति वदन्ति। ते "तमेनं, भिक्खवे,

1. विलपन्तस्स—री०।

निरयपाला'' ति देवदूतसुत्तं पटिबाहन्ति। मनुस्सलोके राजकुलेसु कारणिकमनुस्सा विय हि निरये निरयपाला होन्ति।

वेळुपेसिकाही ति वेळुविलीवेहि। **सुनिम्मज्जथा** ति यथा सुट्ठु निम्मज्जितं होति, एवं निम्मज्जथ, अपनेथा ति अत्थो।

असुची ति अमनापो। **असुचिसङ्खातो** ति असुचिकोट्ठासभूतो 5 असुची ति ञातो वा। **दुग्गन्धो** ति कुणपगन्धो। **जेगुच्छो** ति R 810 जिगुच्छितब्बयुत्तो। **पटिकूलो** ति दस्सनेनेव पटिघावहो। **उब्बाधती** ति दिवसस्स द्विक्खत्तुं न्हत्वा तिक्खत्तुं वत्थानि परिवत्तेत्वा अलङ्कत-पटिमण्डितानं चक्कवत्तिआदीनम्पि मनुस्सानं गन्धो योजनसते ठितानं देवतानं कण्ठे आसत्तकुणपं विय बाधति। 10

९. पुन पाणातिपातादिपञ्चसीलानि समादायवत्तेन्तानं वसेन B. 399 वदति। **तावतिंसानं** ति इदञ्च दूरे निब्बत्ता ताव मा आगच्छन्तु, इमे कस्मा न एन्ती ति वदति।

१३. **जच्चन्धूपमो मञ्ञे पटिभासी** ति जच्चन्धो विय उपट्ठासि। **अरञ्ञवनपत्थानी** ति अरञ्ञकङ्गयुत्तताय अरञ्ञानि, महावनसण्ड- 15 ताय वनपत्थानि। **पन्तानी** ति दूरानि।

१४. **कल्याणधम्मे** (दी० नि० २.२४६) ति तेनेव सीलेन सुन्दरधम्मे। **दुक्खपटिकूले** ति दुक्खं अपत्थेन्ते। **सेय्यो भविस्सती** ति परलोके सुगतिसुखं भविस्सती ति अधिप्पायो।

१५. **उपविजञ्ञा** ति उपगतविजायनकाला, परिपक्कगब्भा न 20 चिरस्सेव विजायिस्सती ति अत्थो। **ओपभोग्गो भविस्सती** ति पादपरिचारिका भविस्सति। **अनयब्यसनं** (दी० नि० २.२४६) ति महादुक्खं। अयो ति सुखं, न अयो अनयो[1], दुक्खं[2]। तदेतं सब्बसो सुखं ब्यसति विक्खिपती ति ब्यसनं। इति अनयो व ब्यसनं **अनयब्यसनं**, महादुक्खं ति अत्थो। **अयोनिसो** ति अनुपायेन। 25

१. अनयो ति कत्वा—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

अपक्कं न परिपाचेन्ती ति अपरिणतं अखीणं आयुं अन्तराव न उपच्छिन्दन्ति। **परिपाकं आगमेन्ती** ति आयुपरिपाककालं आगमेन्ति। धम्मसेनापतिना पेतं वुत्तं—

"नाभिनन्दामि मरणं, नाभिनन्दामि जीवीतं।
5 कालञ्च पटिकङ्खामि, निब्बिसं भतको यथा
(थेर० गा० ३६६) ति॥

१६. **उब्भिन्दित्वा** (दी० नि० २.२४८) ति मत्तिकालेपं भिन्दित्वा।

R. 811 १७. **रामणेय्यकं** ति रमणीयभावं। **वेलासिका** ति[1]
10 खिड्डापराधिका[1]। **कोमारिका** ति तरुणदारिका। **तुय्हं जीवं** ति सुपिनदस्सनकाले निक्खमन्तं वा पविसन्तं वा जीवं अपि नु पस्सन्ति। इध चित्ताचारं "जीवं" ति गहेत्वा आह। सो हि तत्थ जीवसञ्ञी ति।

१८. **जियाया** (दी० नि० २.२४९) धनुजियाय, गीवं वेठेत्वा
15 ति अत्थो। **पत्थिन्नतरो** ति थद्धतरो। इमिना किं दस्सेति? तुम्हे
B. 400 जीवकाले सत्तस्स पञ्चक्खन्धा ति वदन्ति, चवनकाले पन रूपक्खन्धमत्तमेव अवसिस्सति, तयो खन्धा अप्पवत्ता होन्ति, विञ्ञाणक्खन्धो गच्छति। अवसिट्ठेन रूपक्खन्धेन लहुतरेन भवितब्बं, गरुकतरो च होति। तस्मा नत्थि कोचि कुहिं गन्ता ति इममत्थं
20 दस्सेति।

१९. **निब्बुतं** ति वूपसन्ततेजं।

२०. **अनुपहच्चा** (दी० नि० २.२५०) ति अविनासेत्वा। **आमतो होती** ति अद्धमतो मरितुं आरद्धो होति। **ओधुनाथा** ति ओरतो करोथ। **सन्धुनाथा** ति परतो करोथ। **निद्धुनाथा** ति
25 अपरापरं करोथ। **तञ्चायतनं न पटिसंवेदेती** ति तेन चक्खुना तं रूपायतनं न विभावेति। एस नयो सब्बत्थ।

1–1. वेलामिका ति बालावदारिका—रो०।

२१. **सङ्खधमो** ति सङ्खधमको। **उपलापेत्वा** (दी० नि० २.२५१) ति धमित्वा।

२३. **अग्गिको** (दी० नि० २.२५३) ति अग्गिपरिचारको। **आपादेय्यं** ति निप्फादेय्यं, आयुं वा पापुणापेय्यं। **पोसेय्यं** ति भोजनादीहि भरेय्यं। **वड्ढेय्यं** ति वड्ढिं गमेय्यं। **अरणीसहितं** ति अरणीयुगळं। 5

२६. **तिरोराजानोपी** (दी० नि० २.२५७) ति तिरोरट्ठे अञ्ञस्मिम्पि जनपदे राजानो जानन्ति। **अब्यत्तो** ति अविसदो अछेको। **कोपेनपी** ति ये मं एवं वक्खन्ति, तेसु उप्पज्जनकेन कोपेनपि एतं दिट्ठिगतं हरिस्सामि परिहरिस्सामी ति गहेत्वा विचरिस्सामि। 10 **मक्खेना** ति तया वुत्तयुत्त कारणमक्खलक्खणेन मक्खेनापि। **पलासेना** ति तया सद्धिं युगग्गाहलक्खणेन पलासेनापि।

२५. **हरितकपण्णं** (दी० नि० २.२५५) ति यं किञ्चि हरितकं, R 812 अन्तमसो अल्लतिणपण्णम्पि न होती ति अत्थो। **सन्नद्धकलापं** ति सन्नद्धधनुकलापं। **आसित्तोदकानि वटुमानी** ति परिपुण्णसलिला 15 मग्गा च कन्दरा च। **योग्गानी** ति बलिबद्दे।

बहुनिक्खन्तरो ति **बहुनिक्खन्तो** चिरनिक्खन्तो ति अत्थो। **यथाभतेन भण्डेना** ति यं वो तिणकट्ठोदकभण्डकं आरोपितं, तेन यथाभतेन यथारोपितेन, यथागहितेना ति अत्थो।

अप्पसारानी ति अप्पग्घानि। **पणियानी** ति भण्डानि। 20

B. 401

४. गूथभारिकादिउपमावण्णना

२७. **मम च सूकरभत्तं** (दी० नि० २.२५८) ति मम च सूकरानं इदं भत्तं। **उग्घरन्तं** ति उपरि घरन्तं। **पग्घरन्तं** ति हेट्ठा परिस्सवन्तं। **तुम्हे ख्वेत्थ भणे** ति तुम्हे खो एत्थ भणे। अयमेव वा पाठो। **तथा हि पन मे सूकरभत्तं** ति तथा हि पन मे अयं गूथो सूकरानं भत्तं।

२९. **आगतागतं कलिं गिलती** (दी० नि० २.२५९) ति आगतागतं पराजयगुळ्हं गिलति। **पज्जोहिस्सामी** ति पज्जोहनं करिस्सामि, बलिकम्मं करिस्सामी ति अत्थो। **अक्खेहि दिब्बिस्सामा** ति गुळ्हेहि कीळिस्साम। **लित्तं परमेन तेजसा** ति परमतेजेन विसेन
5 लित्तं।

३१. **गामपट्टं** (दी० नि० २.२६०) ति वुट्ठितगामपदेसो वुच्चति। "गामपदं" तिपि पाठो, अयमेवत्थो। **साणभारं** ति साणवाकभारं। **सुसन्नद्धो** ति सुबद्धो। **त्वं पजानाही** ति त्वं जान। सचे गण्हितुकामो ति, गण्हाही ति वुत्तं होति।

10 **खोमं** ति खोमवाकं। **आयं** ति काळलोहं। **लोहं** ति तम्बलोहं।
R. 813 **सज्झं** (दी० नि० २.२६०) ति रजतं। **सुवण्णं** ति सुवण्णमासकं। **अभिनन्दिसू** ति तुस्सिसु।

३२. **अत्तमनो** (दी० नि० २.२६१) ति सकमनो तुट्ठचित्तो। **अभिरद्धो** ति अभिप्पसन्नो। **पञ्हापटिभानानी** ति पञ्हुपट्ठानाति।
15 **पच्चनीकं कतब्बं** ति पच्चनीकं पटिविरुद्धं विय कत्तब्बं अमञ्ञिस्सं, पटिलोमगाहं गहेत्वा अट्ठासिं ति अत्थो।

३३. **संघातं आपज्जन्ती** (दी० नि० २.२६२) ति संघातं विनासं मरणं आपज्जन्ति। **न महप्फलो** ति विपाकफलेन न महप्फलो होति। **न महानिसंसो** ति गुणानिसंसेन महानिसंसो न
20 होति। **न महाजुतिको** ति आनुभावजुतिया महाजुतिको न होति। **न महाविप्फारो** ति विपाकविप्फारताय महाविप्फारो न होति। **बीजनङ्गलं** ति बीजञ्च नङ्गलञ्च। **दुक्खेत्ते** ति दुट्ठुखेत्ते निस्सारखेत्ते। **दुब्भूमे** ति विसमभूमिभागे। **पतिट्ठापेय्या** ति ठपेय्य। **खण्डानी** ति छिन्नभिन्नानि। **पूतीनी** ति निस्सारानि।

B. 402 25 **वातातपहतानी** ति वातेन च आतपेन च हतानि परियादिन्नतेजानि। **असारादानी** ति तण्डुलसारादानरहितानि[1] पलालानि[2]।

१. ०विरहितानि—रो०। २. पलापानि—रो०।

असुखसयितानी ति यानि सुक्खापेत्वा कोट्ठे आकिरित्वा ठपितानि, तानि सुखसयितानि नाम। एतानि पन न तादिसानि। **अनुप्पवेच्छेय्या** ति अनुपवेसेय्य, न सम्मा वस्सेय्य, अन्वद्धमासं अनुदसाहं अनुपञ्चाहं न वस्सेय्या ति अत्थो। **अपि नु तानी** ति अपि नु एवं खेत्तबीजवुट्ठिदोसे सति तानि बीजानि अङ्कुरमूलपत्तादीहि उद्धं वुद्धिं 5 हेट्ठा विरूळ्हिं समन्ततो च वेपुल्लं आपज्जेय्युं ति। **एवरूपो खो राजञ्ञ यञ्ञो** ति एवरूपं राजञ्ञ दानं परूपघातेन उप्पादितपच्चयतोपि दायकतोपि पटिग्गाहकतोपि अविसुद्धत्ता न महप्फलं होति।

एवरूपोखो राजञ्ञ यञ्ञो ति एवरूपं राजञ्ञ-दानं अपरूप- 10 घातेन उप्पन्नपच्चयतो पि अपरूपघातिताय सीलवन्तदायकतो पि R. 814 सम्मादिट्ठिआदिगुणसम्पन्नपटिग्गाहकतो पि महप्फलं होति। सचे पन गुणातिरेकं निरोधा वुट्ठितं पटिग्गाहकं लभति, चेतना च विपुला होति, दिट्ठे व धम्मे विपाकं देती ति।

३४. इमं पन थेरस्स धम्मकथं सुत्वा पायासिराजञ्ञो थेरं 15 निमन्तेत्वा सत्ताहं थेरस्स महादानं दत्वा ततो पट्ठाय महाजनस्स दानं पट्ठपेसि। तं सन्धाय **अथ खो पायासि राजञ्ञो** (दी० नि० २.२६३) तिआदि वुत्तं। तत्थ **कणाजकं** ति सकुण्डकं उत्तण्डुलभत्तं **बिलङ्गदुतियं** ति कञ्जिकदुतियं। **चोरकानि च वत्थानी** ति थूलानि च वत्थानि। **गुळबालकानी** ति गुळदसानि, पुञ्जपुञ्जवसेन ठितमहन्त- 20 दसानी ति अत्थो। **एव अनुद्दिसती** ति एवं उपदिसति। **पादापी** ति पादेनपि।

३५. **असक्कच्चं** (दी० नि० २.२६४) ति सद्धाविरहितं अस्सद्धदानं। **असहत्था** ति न सहत्थेन। **अचित्तीकतं** ति चित्तीकारविरहितं, न चित्तीकारम्पि पच्चुपट्ठापेत्वा न पणीतचित्तं कत्वा 25 अदासि। **अपविद्धं** ति छड्डितं विप्पतितं। **सुञ्ञं सेरीसकं** ति सेरीसकं नाम एकं तुच्छं रजतविमानं उपगतो। तस्स किर द्वारे महासिरीसरुक्खो, तेन तं "सेरीसकं" ति वुच्चति।

B. 403 ३६ **आयस्मा गवंपती** (दी० नि० २.२६४) ति थेरो किर पुब्बे मनुस्सकाले गोपालदारकानं जेट्ठको हुत्वा महतो सिरीसस्स मूलं सोधेत्वा बालिकं ओकिरित्वा एकं पिण्डपातिकत्थेरं रुक्खमूले निसीदापेत्वा अत्तना लद्धं आहारं दत्वा ततो चुतो तस्सानुभावेन 5 तस्मिं रजतविमाने निब्बत्ति । सिरीसरुक्खो विमानद्वारे अट्ठासि । सो पञ्ञासाय वस्सेहि फलति, ततो पञ्ञासाय वस्सानि गतानी ति देवपुत्तो संवेगं आपज्जति । सो अपरेन समयेन अम्हाकं भगवतो काले मनुस्सेसु निब्बत्तित्वा सत्थु धम्मकथं सुत्वा अरहत्तं पत्तो । पुब्बचिण्णवसेन पन दिवाविहारत्थाय तदेव विमानं अभिण्हं गच्छति, 10 तं किरस्स उतुसुखं होति । तं सन्धाय "तेन खो पन समयेन आयस्मा गवंपती" तिआदि वुत्तं ।

R. 815 **सो सक्कच्चं दानं दत्वा** (दी० नि० २.२६५) ति सो परस्स सन्तकम्पि दानं सक्कच्चं दत्वा । **एवमारोचेसी** ति "सक्कच्चं दानं देथा" तिआदिना नयेन आरोचेसि । तञ्च पन थेरस्स आरोचनं 15 सुत्वा महाजनो सक्कच्चं दानं दत्वा देवलोके निब्बत्तो । पायासिस्स पन राजञ्ञस्स परिचारका सक्कच्चं दानं दत्वापि निकन्तिवसेन गन्त्वा तस्सेव सन्तिके निब्बत्ता । तं किर दिसाचारिकविमानं वट्टनिअटवियं अहोसि । पायासिदेवपुत्तो च एकदिवसं वाणिजकानं दस्सेत्वा अत्तनो कतकम्मं कथेसी ति ।

पायासिराजञ्ञसुत्तवण्णना निट्ठिता ।

महावग्ग-अट्ठकथा निट्ठिता ।

—०—

सुमङ्गलविलासिनी

(पाथिकवग्ग-अट्ठकथा)

(१) पाथिकसुत्तवण्णना

१. सुनक्खत्तवत्थुवण्णना

B. 1
R. 816

१. एवं मे सुतं ...पे०... मल्लेसु विहरती (दी० नि० ३.१) ति पाथिकसुत्तं। तत्रायं अपुब्बपदवण्णना। मल्लेसु विहरती ति मल्ला नाम राजपदिनो राजकुमारा, तेसं निवासो एको पि जनपदो रुळ्हीसद्देन मल्ला ति वुच्चति, तस्मिं मल्लेसु जनपदे। अनुपियं नाम मल्लानं निगमो ति अनुपियं ति एवंनामको मल्लानं जनपदस्स एको 5 निगमो। तं गोचरगामं कत्वा एकस्मिं छायूदकसम्पन्ने वनसण्डे विहरती ति अत्थो। अनोपियं ति पि पाठो। पाविसी ति पविट्ठो। भगवा पन न ताव पविट्ठो पविसिस्सामी ति निक्खन्तत्ता पन पाविसी ति वुत्तो। यथा किं, यथा गामं गामिस्सामी ति निक्खन्तो पुरिसो तं गामं अपत्तो पि कुहिं इत्थन्नामो ति वुत्ते गामं गतो ति 10 पुच्छति, एवं। एतदहोसी ति गामसमीपे ठत्वा सूरियं ओलोकेन्तस्स एतदहोसि। अतिप्पगो खो ति अतिविय पगो खो, न ताव कुलेसु यागुभत्तं निट्ठितं[1] ति। किं पन भगवा कालं अजानित्वा निक्खन्तो ति? न अजानित्वा। पच्चूसकालेयेव हि भगवा ञाणजालं पत्थरित्वा लोकं ओलोकेन्तो ञाणजालस्स[2] अन्तो पविट्ठं भग्गवगोत्तं छन्नपरि- 15 ब्बाजकं दिस्वा अज्जाहं इमस्स परिब्बाजकस्स मया पुब्बे कतकारणं

१. निट्ठाती ति—रो०। २. बुद्धञाणस्स—रो०।

B. 2 समाहरित्वा[1] धम्मं कथेस्सामि, सा धम्मकथा अस्स मयि पसादप्पटिलाभवसेन सफला भविस्सती ति ञत्वा व परिब्बाजकारामं पविसितुकामो अतिप्पगोव[2] निक्खमि। तस्मा तत्थ पविसितुकामताय एवं चित्तं उप्पादेसि।

R. 817 5 २. **एतदवोचा** ति भगवन्तं दिस्वा मानथद्धतं अकत्वा सत्थारं पच्चूग्गन्त्वा एतं एतु खो, भन्ते, ति आदिकं वचनं अवोच। **इमं परियाय** ति इमं वारं, अज्ज इमं आगमनवारं ति अत्थो। किं पन भगवा पुब्बे पि तत्थ गतपुब्बो ति ? न गतपुब्बो। लोकसमुदाचार-वसेन पन एवमाह। लोकिया हि चिरस्सं आगतम्पि अनागतपुब्बम्पि 10 मनापजातिकं आगतं दिस्वा कुतो भवं आगतो, चिरस्सं भवं आगतो, कथं ते इमागमन मग्गो[3] ञातो, किं मग्गमूळ्होसी ति आदीनि वदन्ति। तस्मा अयम्पि लोकसमुदाचारवसेन एवमाहा ति वेदितब्बो। **इदमासनं** ति अत्तनो निसिन्नासनं पप्फोटेत्वा सम्पादेत्वा ददमानो एवमाह। **सुनक्खत्तो लिच्छविपुत्तो** ति सुनक्खत्तो नाम 15 लिच्छविराजपुत्तो। सो किर तस्स गिहिसहायो होति, कालेन कालं तस्स सन्तिकं गच्छति। **पच्चक्खातो** ति पच्चक्खामि दानाहं, भन्ते, भगवन्तं न दानाहं, भन्ते, भगवन्तं उद्दिस्स विहरिस्सामी ति एवं पटिअक्खातो निस्सट्ठो परिच्चत्तो।

३. **भगवन्तं अद्दिस्सा** (दी० नि० ३.२) ति भगवा मे सत्था 20 भगवन्तो अहं ओवादं पटिकरोमी ति एवं अपदिसित्वा। **को सन्तो कं पच्चाचिक्खसी** ति याचको वा याचितकं पच्चाचिक्खेय्य याचितको वा याचकं। त्वं पन नेव याचको न याचितको। एवं सन्ते, मोघपुरिस, को सन्तो को समानो कं पच्चाचिक्खसी ति दस्सेति। **पस्स मोघपुरिसा** ति पस्स तुच्छपुरिसा। **यावञ्च ते इदं अपरद्धं** ति

१. आहरित्वा—रो०। २. अतिप्पगेव—रो०।
३. इधागतागमनमग्गो—रो०।

यत्तकं इदं तव अपरद्धं, यत्तको ते अपराधो तत्तको दोसो ति एवाहं भग्गवन्तस्स[1] दोसं आरोपेसि[2] ति दस्सेति ।

४. **उत्तरिमनुस्सधम्मा** ति पञ्चसीलदससीलसङ्खाता मनुस्सधम्मा उत्तरि । **इद्धिपाटिहारियं** ति इद्धिभूतं पाटिहारियं । **कते वा** ति कथम्हि वा । **यस्सत्थाया** ति यस्स दुक्खक्खयस्स अत्थाय । 5 **सो निय्याति तक्करस्सा** ति सो धम्मो तक्करस्स यथा मया धम्मो B. 3 देसितो तथा कारकस्स सम्मापटिपन्नस्स पुग्गलस्स सब्बवट्टदुक्खक्खयाय अमतनिब्बानसच्छिकिरियाय गच्छति, न गच्छति, संवत्तति, न R. 818 संवत्तती ति पुच्छति । **तत्र सुनक्खत्ता** ति तस्मिं अनक्खत्त मया देसिते धम्मे तक्करस्स सम्मादुक्खक्खयाय संवत्तमाने किं उत्तरि 10 मनुस्सधम्मा इद्धिपाटिहारियं कतं करिस्सति, को तेन[3] कतेन अत्थो । तस्मिम्हि कते पि अकतेपि मम सासनस्स परिहानं नत्थि, देवमनुस्सानम्हि अमतनिब्बानसम्पापनत्थाय अहं पारमियो पूरेसिं । न पाटिहारियकरणत्थायाति पाटिहारियस्स निरत्थकतं दस्सेत्वा पस्स, मोघपुरिसा, ति दुतियं दोसं आरोपेसि । 15

५. **अग्गञ्ञं** (दी० नि० ३.५) ति लोकपञ्ञत्तिं । इदं नाम लोकस्स अग्गं ति एवं जानितब्बम्पि अग्गं मरियादं न तं पञ्ञापेती ति वदति । सेसमेत्थ अनन्तरवादानुसारेनेव वेदितब्बं ।

६. **अनेकपरियायेन खो** ति इदं कस्मा आरद्धं । सुनक्खत्तो किर भगवतो गुणं मक्खेस्सामि दोसं पञ्ञापेस्सामी ति एत्तकं 20 विप्पलपित्वा भगवतो कथं सुणन्तो अप्पतिट्ठो निरवो अट्ठासि ।

अथ भगवा—सुनक्खत्त, एवं त्वं मक्खिभावे ठितो सयमेव गरहं पापुणिस्सामी ति मक्खिभावे आदीनवदस्सनत्थं **अनेकपरियायेना** ति आदिमाह । तत्थ **अनेकपरियायेना** ति अनेककारणेन ।

१. भगवन्तं—रो० । २. आरोपेमी ति—रो० ।
३. तेन ते—रो० ।

वज्जिगामे ति वज्जिराजानं गामे, वेसालीनगरे। **नो विसही** ति नासक्खि। **सो अविसहन्तो** ति सो सुनक्खत्तो यस्स पुब्बे तिण्णं रतनानं वण्णं कथेन्तस्स मुखं नप्पहोति, सो दानि तेनेव मुखेन अवण्णं कथेति[1]। अद्धा अविसहन्तो असक्कोन्तो ब्रह्मचरियं चरितुं
5 अत्तनो बालताय अवण्णं कथेत्वा **हीनायावत्तो**। बुद्धो पन सुबुद्धोव, धम्मो स्वाक्खातोव, संघो सुपटिपन्नो व। एवं तीणि रतनानि थोमेन्ता मनुस्सा तुम्हेव दोसं दस्सेस्सन्ती ति। **इति खो ते** ति एवं खो ते, सुनक्खत्त, वत्तारो भविस्सन्ति। ततो एवं दोसे उप्पन्ने सत्था अतीतानागते अप्पटिहतञाणो, मह्यं एवं दोसो उप्पज्जिस्सती
10 ति जानन्तोपि पुरेतरं न कथेसी ति वत्तुं न लब्भसी ति दस्सेति।
B. 4 **अपक्कमेवा** ति अपक्कमियेव, अपक्कन्तो वा चुतो ति अत्थो।
R. 819 **यथा तं आपायिको** ति यथा अपाये निब्बत्तनारहो सत्तो अपक्कमेय्य, एवमेव अपक्कमि ति अत्थो।

२. कोरक्खत्तियवत्थुवण्णना

७. **एकमिदाहं** (दी० नि० ३.७) ति इमिना किं दस्सेति?
15 इदं सुत्तं द्वीहि पदेहि आबद्धं इद्धिपाटिहारियं न करोती ति च अग्गञ्ञं न पञ्ञपेती ति च। तत्थ अग्गञ्ञं न पञ्ञपेती ति इदं पदं सुत्तपरियोसाने दस्सेस्सति। पाटिहारियं न करोती ति इमस्स पन पदस्स अनुसन्धिदस्सनवसेन अयं देसना आरद्धा।

तत्थ **एकमिदाहं** ति एकस्मिं अहं। **समयं** ति समये, एकस्मिं
20 काले अहं ति अत्थो। **थूलूसु** ति थूलू नाम जनपदो, तत्थ विहरामि। **उत्तरका नामा** ति इत्थिलिङ्गवसेन उत्तरका ति एवं नामको थूलूनं जनपदस्स निगमो, तं निगमं गोचरगामं कत्वा ति अत्थो। **अचेलो** ति नग्गो। **कोरक्खत्तियो** ति अन्तोवङ्कपादो खत्तियो। **कुक्कुरवत्तिको** ति समादिन्नकुक्कुरवत्तो सुनखो विय घायित्वा खादति, उद्धनन्तरे

१. कथेसि—रो०।

निपज्जति, अञ्ञम्पि सुनखकिरियेव करोति। **चतुक्कुण्डिको** ति चतुसङ्घट्टितो द्वे जानूनि द्वे च कप्परे भूमियं ठपेत्वा विचरति। **छमानिकिण्णं** ति भूमियं निकिण्णं पक्खित्तं ठपितं। **भक्खसं** ति भक्खं यं किञ्चि खादनीयं भोजनीयं। **मुखेनेवा** ति हत्थेन अपरामसित्वा खादनीयं मुखेनेव खादति, भोजनीयम्पि मुखेनव भुञ्जति। 5
साधुरूपो ति सुन्दररूपो[1]। **अयं समणो** ति अयं अरहतं समणो एको ति। तत्थ **वता** ति पत्थनत्थे निपातो। एवं किरस्स पत्थनो अहोसि इमिना समणेन सदिसो अञ्ञो समणो नाम नत्थि, अयञ्हि अप्पिच्छिताय वत्थं न[2] निवासेति, एस पपञ्चो ति मञ्ञमानो भिक्खाभाजनम्पि न परिहरति, छमानिकिण्णमेव खादति, अयं समणो 10
नाम। मयं पन किं समणा ति? एवं सब्बञ्ञुबुद्धस्स पच्छतो **चरन्तोव** इमं पापकं वितक्कं वितक्केसि।

एतदवोचा ति भगवा किर चिन्तेसि अयं सुनक्खत्तो पापज्झासयो, R. 820
किं नु इमं दिस्वा चिन्तेसी ति? अथेवं चिन्तेन्तो तस्स अज्झासयं विदित्वा अयं मोघपुरिसो मादिसस्स सब्बञ्ञुनो पच्छतो आगच्छन्तो 15 B. 5
अचेलं अरहा ति मञ्ञति, इधेव दानायं बालो निग्गहं अरहती ति अनिवत्तित्वाव एतं **त्वम्पि नामा** तिआदिवचनमवोच। तत्थ **त्वम्पि नामा** ति गरहत्थे पिकारो। गरहन्तो हि नं भगवा "त्वम्पि नामा" ति आह। "त्वम्पि नाम एवं हीनज्झासयो, अहं समणो सक्यपुत्तियो ति एवं पटिजानिस्ससी" ति अयञ्हेत्थ अधिप्पायो। **किं पन मं** 20
भन्ते ति मय्हं, भन्ते, किं गारय्हं दिस्वा भगवा "एवमाहा" ति पुच्छति। अथस्स भगवा आचिक्खन्तो "ननु ने" तिआदिमाह। **मच्छरायती** ति "मा अञ्ञस्स अरहत्तं होतू" ति किं भगवा एवं अरहत्तस्स मच्छरायती ति पुच्छति। **न खो अहं** ति अहं, मोघपुरिस, सदेवकस्स लोकस्स अरहत्तप्पटिलाभमेव पच्चासीसामि, 25
एतदत्थमेव मे बहूनि दुक्करानि करोन्तेन पारमियो पूरिता, न खो

१. सुवण्णरूपो—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

अहं, मोघपुरिस, अरहत्तस्स मच्छरायामि। **पापकं दिट्ठिगतं** ति न अरहन्तं अरहा ति, अरहन्ते च अनरहन्तो ति[1] एवं तस्स दिट्ठि उप्पन्ना। तं सन्धाय "पापकं दिट्ठिगतं" ति आह। **यं खो पना** ति यं एतं अचेलं एवं मञ्ञसि। **सत्तमं दिवसं** ति सत्तमे दिवसे।
5 **अलसकेना** ति अलसकब्याधिना। **कालङ्करिस्सती** ति उद्धमातउदरो मरिस्सति।

कालकञ्चिका ति तेसं असुरानं नामं। तेसं किर तिगावुतो अत्तभावो अप्पमंसलोहितो पुराणपण्णसदिसो कक्कटकानं विय अक्खीनि निक्खमित्वा मत्थके तिट्ठन्ति, मुखं सूचिपासकसदिसं
10 मत्थकस्मिं येव होति, तेन ओणमित्वा गोचरं गण्हन्ति। **बीरणत्थम्बके** नि बीरणतिणत्थम्बो तस्मिं सुसाने अत्थि, तस्मा तं बीरणत्थम्बकं ति वुच्चति।

तेनुपसङ्कमी ति भगवति एत्तकं वत्वा तस्मिं गामे पिण्डाय चरित्वा विहारं गते विहारा निक्खमित्वा उपसङ्कमि। **येन त्वं**
R. 821 15 ति येन कारणेन त्वं। यस्मापि भगवता ब्याकतो, तस्माति अत्थो। **मत्तं मत्तं** ति पमाणयुत्तं पमाणयुत्तं। "मन्ता मन्ता" तिपि पाठो, पञ्ञाय उपपरिक्खित्वा उपपरिक्खित्वा ति अत्थो। **यथा समणस्स गोतमस्सा** ति यथा समणस्स गोतमस्स मिच्छा वचनं अस्स, तथा करेय्यासी ति आह। एवं वुत्ते अचेलो सुनखो विय उद्धनट्ठाने
20 निपन्नो सीसं उक्खिपित्वा अक्खीनि उम्मीलेत्वा ओलोकेन्तो किं
B. 6 कथेसि "समणो नाम गोतमो अम्हाकं वेरी विसभागो, समणस्स गोतमस्स उप्पन्नकालतो पट्ठाय मयं सूरिये उग्गते खज्जोपनका विय जाता। समणो गोतमो अम्हे, एवं वाचं वदेय्य अञ्ञथा वा। वेरिनो पन कथा नाम तच्छा न होति, गच्छ त्वं अहमेत्थ कत्तब्बं
25 जानिस्सामी" ति वत्वा पुनदेव निपज्जि।

१. अरहन्तो ति—रो०।

८. **एकद्वीहिकाया** (दी० नि० ३.८) ति एकं द्वे ति वत्वा गणेसि। **यथा तं** ति यथा असद्दहमानो कोचि गणेय्य, एवं गणेसि। एकदिवसञ्च तिक्खत्तुं उपसङ्कमित्वा एको दिवसो अतीतो, द्वे दिवसा अतीता ति आरोचेसि। **सत्तमं दिवसं** ति सो किर सुनक्खत्तस्स वचनं सुत्वा सत्ताहं निराहारो व अहोसि। अथस्स सत्तमे 5 दिवसे एको उपट्ठाको "अम्हाकं कुलूपकसमणस्स अज्ज सत्तमो दिवसो गेहं अनागच्छन्तस्स अफासु नु खो जातं" ति सूकरमंसं पचापेत्वा भत्तमादाय गन्त्वा पुरतो भूमियं निक्खिपि। अचेलो दिस्वा चिन्तेसि "समणस्स गोतमस्स कथा तच्छा वा अतच्छा वा होतु, आहारं पन खादित्वा सुहितस्स मे मरणम्पि सुमरणं" ति 10 द्वे हत्थे जण्णुकानि च भूमियं ठपेत्वा कुच्छिपूरं भुञ्जि। सो रत्तिभागे जीरापेतुं असक्कोन्तो अलसकेन कालमकासि। सचेपि हि सो "न भुञ्जेय्यं" ति चिन्तेय्य, तथापि तं दिवसं भुञ्जित्वा अलसकेन कालं करेय्य। अद्वेज्झवचना हि तथागता ति।

बीरणत्थम्बके ति तित्थिया किर "कालङ्कतो कोरक्खत्तियो" 15 ति सुत्वा दिवसानि गणेत्वा इदं ताव सच्चं जातं, इदानि नं अञ्ञत्थ छड्डेत्वा "मुसावादेन समणं गोतमं निग्गण्हिस्सामा" ति गन्त्वा तस्स सरीरं वल्लिया बन्धित्वा आकड्ढन्ता "एत्थ छड्डेस्साम, एत्थ छड्डेस्सामा" ति गच्छन्ति। गतगतट्ठानं अङ्गणमेव होति। ते कड्ढमाना बीरणत्थम्बकसुसानंयेव गन्त्वा सुसानभावं ञत्वा 20 "अञ्ञत्थ छड्डेस्सामा" ति आकड्ढिंसु। अथ नेसं वल्लि छिज्जित्थ, R. 822 पच्छा चालेतुं नासक्खिंसु। ते ततोव पक्कन्ता। तेन वुत्तं— "बीरणत्थम्बके सुसाने छड्डेसुं" ति।

९. **तेनुपसङ्कमी** ति कस्मा उपसङ्कमि? सो किर चिन्तेसि "अवसेसं ताव समणस्स गोतमस्स वचनं समेति, मतस्स पन उट्ठाय 25 अञ्ञेन सद्धिं कथनं नाम नत्थि, हन्दाहं गन्त्वा पुच्छामि। सचे कथेति, सुन्दरं। नो चे कथेति, समणं गोतमं मुसावादेन निग्गण्हिस्सामी" B. 7 ति इमिना कारणेन उपसङ्कमि। **आकोटेसी** ति पहरि। **जानामि**

आवुसो ति मतसरीरं उट्ठहित्वा कथेतुं समत्थं नाम नत्थि, इदं कथं कथेसी ति? बुद्धानुभावेन। भगवा किर कोरक्खत्तियं असुरयोनितो आनेत्वा सरीरे अधिमोचेत्वा कथापेसि। तमेव वा सरीरं कथापेसि, अचिन्तेय्यो हि बुद्धविसयो।

5 १०. **तथेव तं विपाकं** ति तस्स वचनस्स विपाकं तथेव, उदाहु नो ति लिङ्गविपल्लासो कतो, तथेव सो विपाको ति अत्थो। केचि पन "विपक्कं" तिपि पठन्ति[1], निब्बत्तं ति अत्थो। एत्थ ठत्वा पाटिहारियानि समानेतब्बानि। सब्बानेव हेतानि पञ्च पाटिहारियानि होन्ति। "सत्तमे दिवसे मरिस्सती" ति वुत्तं, सो तथेव मतो, 10 इदं पठमं पाटिहारियं। "अलसकेना" ति वुत्तं, अलसकेनेव मतो, इदं दुतियं। "कालकञ्चिकेसु निब्बत्तिस्सती" ति वुत्तं, तत्थेव निब्बत्तो, इदं ततियं। "बीरणत्थम्बके सुसाने छड्डेस्सन्ती" ति वुत्तं, तत्थेव छड्डितो, इदं चतुत्थं। "निब्बत्तट्ठानतो आगन्त्वा सुनक्खत्तेन सद्धिं कथेस्सती" ति वुत्तो, सो कथेसियेव, इदं पञ्चमं 15 पाटिहारियं।

३. अचेलकळारमट्टकवत्थुवण्णना

११. **कळारमट्टको** (दी० नि० ३.९) ति निक्खन्तदन्तमत्तको। नाममेव वा तस्सेतं। **लाभग्गप्पत्तो** ति लाभग्गं पत्तो, अग्गलाभं पत्तो ति वुत्तं होति। **यसग्गप्पत्तो** ति यसग्गं अग्गपरिवारं पत्तो। **वतपदानी** ति वतानियेव, वतकोट्ठासा वा। **समत्तानी** ति 20 गहितानि। **समादिन्नानी** ति तस्सेव वेवचनं। **पुरत्थिमेन वेसालिं** ति वेसालितो अविदूरे पुरत्थिमाय[2] दिसाय। **चेतियं** ति यक्खचेतियट्ठानं। एस नयो सब्बत्थ। R. 823

१२. **येन अचेलको** ति भगवतो वत्तं कत्वा येन अचेलो कळारमट्टको तेनुपसङ्कमि। **पञ्हं अपुच्छी** ति गम्भीरं तिलक्खणाहतं

१. पाठन्ति—रो०। २. पुरिमाय—रो०।

पञ्हं पुच्छि। **न सम्पायासी** ति न सम्मा ञाणगतिया पायासि, अन्धो विय विसमट्ठाने तत्थ तत्थेव पक्खलि। नेव आदिं, न परियोसानमद्दस। अथ वा "न सम्पायासी" ति न सम्पादेसि, सम्पादेत्वा कथेतुं नासक्खि। **असम्पायन्तो** ति कबरक्खीनि[1] परिवत्तेत्वा ओलोकेन्तो "असिक्खितकस्स सन्तिके वुट्ठोसि, अनोकासेपि पब्बजितो पञ्हं पुच्छन्तो विचरसि, अपेहि मा एतस्मिं ठाने अट्ठासी" ति वदन्तो। **कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पत्वाकासी** ति कुप्पनाकारं कोपं, दुस्सनाकारं दोसं, अतुट्ठाकारभूतं दोमनस्ससङ्खातं अप्पच्चयञ्च पाकटमकासि। **आसादिम्हसे** ति आसादियिम्ह घट्टयिम्ह। **मा वत नो अहोसी** ति अहो वत मे न भवेय्य। मं वत नो अहोसी ति पि पाठो। तत्थ **मं** ति सामिवचनत्थे उपयोगवचनं, अहोसि वत नु ममा ति अत्थो। एवञ्च पन चिन्तेत्वा उक्कुटिकं निसीदित्वा "खमथ मे भन्ते" ति तं खमापेसि। सो पि इतो पट्ठाय अञ्ञं किञ्चि पञ्हं नाम न पुच्छिस्ससी ति। आम न पुच्छिस्सामी ति। यदि एवं गच्छ, खमामि ते ति तं उय्योजेसि।

१४. **परिहितो** (दी० नि० ३.१०) ति परिदहितो निवत्थवत्थो। **सानुचारिको** ति अनुचारिका वुच्चति भरिया, सह अनुचारिकाय सानुचारिको, तं तं ब्रह्मचरियं पहाय सभरियो ति अत्थो। **ओदनकुम्मासं** ति सुरामंसतो अतिरेकं ओदनम्पि कुम्मासम्पि भुञ्जमानो। **यसा निहीनो** ति यं लाभग्गयसग्गं पत्तो, ततो परिहीनो हुत्वा। "कतं होति उत्तरि मनुस्सधम्मा इद्धिपाटिहारियं" ति इध सत्तवतपदातिक्कमवसेन सत्त पटिहारियानि वेदितब्बानि।

४. अचेलपाथिकपुत्तवत्थुवण्णना

१५. **पाथिकपुत्तो** (दी० नि० ३.११) ति पाथिकस्स पुत्तो। **ञाणवादेना** ति ञाणवादेन सद्धिं। **उपड्ढपथं** ति योजनं चे, नो अन्तरे भवेय्य, गोतमो अड्ढयोजनं, अहं अड्ढयोजनं। एस नयो

१. ०विय—रो०।

अड्ढयोजनादीसु। एकपदवारम्पि अतिक्कम्म गच्छतो जयो भविस्सति, अनागच्छतो पराजयो ति। **ते तत्था** ति ते मयं तत्थ समागतट्ठाने। **तद्दिगुणं तद्दिगुणाहं** ति ततो दिगुणं दिगुणं अहं करिस्सामि, भगवता सद्धिं पाटिहारियं कातुं असमत्थभावं जानन्तोपि "उत्तमपुरिसेन 5 सद्धिं पट्ठपेत्वा असक्कुणन्तस्सापि पासंसो होती" ति ञत्वा एवमाह। B. 9 नगरवासिनोपि तं सुत्वा "असमत्थो नाम एवं न वज्जति[1], अद्धा अयम्पि अरहा भविस्सती" ति तस्स महन्तं सक्कारमकंसु।

१६. **येनाहं तेनुपसङ्कमी** ति "सुनक्खत्तो किर पाथिकपुत्तो एवं वदती" ति अस्सोसि। अथस्स हीनज्झासयत्ता हीनदस्सनाय चित्तं 10 उदपादि।

सो भगवतो वत्तं कत्वा भगवति गन्धकुटिं पविट्ठे पाथिकपुत्तस्स सन्तिकं गन्त्वा पुच्छि "तुम्हे किर एवरूपिं कथं कथेथा" ति? आम, कथेमा ति। यदि एवं मा भायित्थ विस्सत्था पुनप्पुनं एवं वदथ, अहं समणस्स गोतमस्स उपट्ठाको, तस्स विसयं विजानामि[2], तुम्हेहि सद्धिं 15 पाटिहारियं कातुं न सक्खिस्सति, अहं समणस्स गोतमस्स कथेत्वा भयं उप्पादेत्वा तं अञ्ञतो गहेत्वा गमिस्सामि, तुम्हे मा भायित्था" ति तं अस्सासेत्वा भगवतो सन्तिकं गतो। तेन वुत्तं "येनाहं तेनुपसङ्कमी" ति। **तं वाचं** ति आदीसु "अहं अबुद्धोव समानो बुद्धोम्ही ति विचरिं, अभूतं मे कथितं नाहं बुद्धो" ति वदन्तो तं वाचं पजहति 20 नाम। रहो निसीदित्वा चिन्तयमानो "अहं 'एत्तकं कालं अबुद्धोव समानो बुद्धोम्ही' ति विचरिं, इतो दानि पट्ठाय नाहं बुद्धो" ति चिन्तयन्तो तं चित्तं पजहति नाम। "अहं 'एत्तकं कालं अबुद्धोव समानो बुद्धोम्ही' ति पापकं दिट्ठिं गहेत्वा विचरिं, इतो दानि पट्ठाय इमं दिट्ठिं पजहामी" ति पजहन्तो तं दिट्ठिं पटिनिस्सज्जति नाम। 25 एवं अकरोन्तो पन तं वाचं अप्पहाय तं चित्तं अप्पहाय तं दिट्ठिं अप्पटिनिस्सज्जित्वा ति वुच्चति। **विपतेय्या** ति बन्धना मुत्ततालपक्कं विय गीवतो पतेय्य, सत्तधा वा पन फलेय्य।

१. गच्छति—रो०। २. जानामि—रो०।

१७. **रक्खतेतं** (दी० नि० ३.१२) ति रक्खतु एतं। **एकसेना** ति निप्परियायेन। **ओधारिता** ति भासिता। **अचेलो च भन्ते पाथिकपुत्तो** ति एवं एकंसेन भगवतो वाचाय ओधारिताय सचे अचेलो पाथिकपुत्तो। **विरूपरूपेना** ति विगतरूपेन विगच्छितसभावेन[1] रूपेन अत्तनो रूपं पहाय अदिस्समानेन कायेन। सीहब्यग्घादिवसेन वा विविधरूपेन सम्मुखीभावं आगच्छेय्य। **तदस्स भगवतो मुसा** ति एवं सन्ते भगवतो तं वचनं मुसा भवेय्या ति मुसावादेन निग्गण्हाति। ठपेत्वा किर एतं न अञ्ञेन भगवा मुसावादेन निग्गहितपुब्बो ति।

R. 825 — 5

१८. **द्वयगामिनी** ति सरूपेन अत्थिभावं, अत्थेन नत्थिभावं ति एवं द्वयगामिनी। अलिकतुच्छनिप्फलवाचाय एतं अधिवचनं।

B. 10 — 10

१९. **अजितोपि नाम लिच्छवीनं सेनापती** (दी० नि० ३.१३) ति सो किर भगवतो उपट्ठाको अहोसि, सो कालमकासि। अथस्स सरीरकिच्चं कत्वा मनुस्सा पाथिकपुत्तं पुच्छिसु "कुहिं निब्बत्तो सेनापती" ति? सो आह—"महानिरये निब्बत्तो" ति। इदञ्च पन वत्वा पुन आह "तुम्हाकं सेनापति मम सन्तिकं आगम्म अहं तुम्हाकं वचनमकत्वा समणस्स गोतमस्स वादं पतिट्ठपेत्वा निरये निब्बत्तोम्ही[2]" ति परोदित्था ति। **तेनुपसङ्कमि दिवाविहाराया** ति एत्थ "पाटिहारियकरणत्थाया" ति कस्मा न वदति? अभावा। सम्मुखीभावो पि हिस्स तेन सद्धिं नत्थि, कुतो पटिहारियकरणं, तस्मा तथा अवत्वा "दिवाविहाराया" ति आह।

15 — 20

५. इद्धिपाटिहारियकथावण्णना

२०. **गहपतिनेचयिका** (दी० नि० ३.१४) ति गहपतिमहासाला। तेसञ्हि महाधनधञ्ञनिचयो, तस्मा "नेचयिका" ति वुच्चन्ति। **अनेकसहस्सा** ति सहस्सेहिपि अपरिमाणगणना। एवं महतिं

१. विभच्छितसभावेन—रो०। २. निब्बत्तो ति—रो०।

किर परिसं ठपेत्वा सुनक्खत्तं अञ्ञो सन्निपातेतुं समत्थो नत्थि। तेनेव भगवा एत्तकं कालं सुनक्खत्तं गहेत्वा विचरि।

R. 826 २१. **भयं** ति चित्तत्रासभयं। **छम्भितत्तं** ति सकलसरीरचलनं। **लोमहंसो** ति लोमानं उद्धग्गभावो। सो किर चिन्तेसि— 'अहं 5 अतिमहन्तं कथं कथेत्वा सदेवके लोके अग्गपुग्गलेन सद्धिं पटिविरुद्धो, मय्हं खो पनब्भन्तरे अरहत्तं वा पाटिहारियकरणहेतु वा नत्थि, समणो पन गोतमो पाटिहारियं करिस्सति। अथस्स पाटिहारियं दिस्वा महाजनो 'त्वं दानि पाटिहारियं कातुं असक्कोन्तो कस्मा अत्तनो पमाणमजानित्वा लोके अग्गपुग्गलेन सद्धिं पटिमल्लो हुत्वा 10 गज्जसी' ति कट्ठलेड्डुदण्डादीहि विहेठेस्सती'' ति। तेनस्स महाजनसन्निपातञ्चेव तेन भगवतो च आगमनं सुत्वा भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा उदपादि। सो ततो दुक्खा मुचितुकामो तिन्दुकखाणुकपरिब्बाजकारामं अगमासि। तमत्थं दस्सेतुं **अथ खो** भगवातिआदि- B. 11 माह। तत्थ **उपसङ्कमी** ति न केवलं उपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा पन 15 दूरं अड्ढयोजनन्तरं परिब्बाजकारामं पविट्ठो। तत्थपि चित्तस्सादं अलभमानो अन्तन्तेन आविज्झित्वा आरामपच्चन्ते एकं गहनट्ठानं उपधारेत्वा पासाणफलके निसीदि। अथ भगवा चिन्तेसि—''सचे अयं बालो कस्सचिदेव कथं गहेत्वा इधागच्छेय्य, मा नस्सतु बालो' ति ''निसिन्नपासाणफलकं तस्स सरीरे अल्लीनं होतू'' ति अधिट्ठासि। 20 सह अधिट्ठानचित्तेन तं तस्स सरीरे अल्लीयि। सो महा अन्दुबन्धनबद्धो विय छिन्नपादो विय च अहोसि।

अस्सोसी ति इतो चितो च पाथिकपुत्तं परियेसमाना परिसा तस्स अनुपदं गन्त्वा निसिन्नट्ठानं च पाथिकपुत्तं परियेसमाना परिसा तस्स अनुपदं गन्त्वा निसिन्नट्ठानं ञत्वा आगतेन अञ्ञतरेन पुरिसेन 25 ''तुम्हे कं परियेसथा'' ति वुत्ते पाथिकपुत्तं ति। सो ''तिन्दुकखाणुकपरिब्बाजकारामे निसिन्नो'' ति वुत्तवचनेन अस्सोसि।

२२. **संसप्पती** (दी० नि० ३.१६) ति ओसीदति । तत्थेव सञ्चरति । **पावळा** वुच्चति आनिसदट्ठिका ।

२३. **पराभूतरूपो** ति पराजितरूपो, विनट्ठरूपो वा ।

२५. **गोयुगेही** (दी० नि० ३.१८) ति गोयुत्तेहि सतमत्तेहि वा सहस्समत्तेहि वा युगेहि । **आविञ्जेय्यामा** ति आकड्ढेय्याम । 5
छिज्जेय्युं ति छिन्देय्युं । पाथिकपुत्तो वा वन्धट्ठाने छिज्जेय्य । R 827

२६. **दारुपत्तिकन्तेवासी** ति दारुपत्तिकस्स अन्तेवासी । तस्स किर एतदहोसि "तिट्ठतु ताव पाटिहारियं, समणो गोतमो 'अचेलो पथिकपुत्तो आसनापि न वुट्ठहिस्सती' ति आह । हन्दाहं गन्त्वा येन केनचि उपायेन तं आसना वुट्ठापेमि । एत्तावता च समणस्स गोतमस्स 10
पराजयो भविस्सती" ति । तस्मा एवमाह ।

२७. **सीहस्सा** (दी० नि० ३.१९) ति चत्तारो सीहा तिणसीहो च काळसीहो च पण्डुसीहो च केसरसीहो च । तेसं चतुन्नं सीहानं केसरसीहो अग्गतं गतो, सो इधाधिप्पेतो । **मिगरञ्ञो** ति सब्बचतुप्पदानं रञ्ञो । **आसयं** ति निवासं । **सीहनादं** ति अभीतनादं । 15
गोचराय पक्कमेय्यं ति आहारत्थाय पक्कमेय्यं । **वरं वरं** ति B. 12
उत्तमुत्तमं, थूलं थूलं ति अत्थो । **मुदुमंसानी** ति मुदूनि मंसानि । "मधुमंसानी" तिपि पाठो, मधुरमंसानी ति अत्थो । **अज्झुपेय्यं** ति उपगच्छेय्यं । **सीहनादं नदित्वा** ति ये दुब्बला पाणा, ते पलायन्तू ति अत्तनो सूरभावसन्निस्सितेन कारुञ्ञेन नदित्वा । 20

२८. **विघाससंवड्ढो** (दी० नि० ३.२०) ति विघासेन संवड्ढो, विघासं भक्खित्वा तिरित्तमंसं खादित्वा वड्ढितो । **दित्तो** ति दप्पितो थूलसरीरो । **बलवा** ति बलसम्पन्नो । **एतदहोसी** ति कस्मा अहोसि ? अस्मिमानदोसेन[1] ।

१. ०दोसा—रो० ।

तत्रायं अनुपुब्बिकथा — एकदिवसं किर सो सीहो गोचरतो निवत्तमानो तं सिगालं भयेन पलायमानं दिस्वा कारुञ्ञजातो हुत्वा "वयस, मा भायि, तिट्ठ को नाम त्वं" ति आह। जम्बुको नामाहं सामी ति। वयस, जम्बुक, इतो पट्ठाय मं उपट्ठातुं सक्खिस्सती ति ?
5 उपट्ठहिस्सामी ति। सो ततो पट्ठाय उपट्ठाति। सीहो गोचरतो आगच्छन्तो महन्तं मंसखण्डं आहरति। सो तं खादित्वा अविदूरे पासाणपिट्ठे वसति। सो कतिपाहच्चयेनेव थूलसरीरो महाखन्धो जातो। अथ नं सीहो अवोच "वयस, जम्बुक, मम विजम्भनकाले अविदूरे ठत्वा 'विरोच सामी" ति वत्तुं सक्खिस्ससी" ति। सक्कोमि[1]
R. 828 10 सामी ति। सो तस्स विजम्भनकाले तथा करोति। तेन सीहस्स अतिरेको अस्मिमानो होति।

अथेकदिवसं जरसिगालो उदकसोण्डियं पानीयं पिवन्तो अत्तनो छायं ओलोकेन्तो अद्दस अत्तनो थूलसरीरतञ्चेव महाक्खन्धतञ्च। दिस्वा 'जरसिगालोस्मी' ति मनं अकत्वा "अहम्पि सीहो जातो"
15 ति मञ्ञि। ततो अत्तनाव अत्तानं एतदवोच "वयस, जम्बुक, युत्तं नाम तव इमिना अत्तभावेन परस्स उच्छिट्ठमंसं खादितुं, किं त्वं पुरिसो न होसि, सीहस्सापि चत्तारो पादा द्वे दाठा द्वे कण्णा एकं नङ्गुट्ठं, तवपि सब्बं तथेव, केवलं तव केसरभारमत्तमेव नत्थी" ति। तस्सेवं चिन्तयतो अस्मिमानो वड्ढि। अथस्स तेन अस्मिमानदोसेन
20 एतं "को चाहं" तिआदि मञ्ञितमहोसि। तत्थ **को चाहं** ति अहं
B. 13 को, सीहो मिगराजा को, न मे ञाति, न सामिको, किमहं तस्स निपच्चकारं करोमी ति अधिप्पायो। **सिङ्गालकंयेवा** ति सिङ्गालरवमेव। **भेरण्डकंयेवा** ति अप्पियअमनापसद्दमेव। **के च छवे सिङ्गाले** ति को च लामको सिङ्गालो। **के पन सीहनादे** ति को पन सीहनादो
25 सिङ्गालस्स च सीहनादस्स च[2] को सम्बन्धो ति अधिप्पायो। **सुगतापदानेस्सू** ति सुगतलक्खणेसु। सुगतस्स सासनसम्भूतासु तीसु

१. सक्खिस्सं—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

सिक्खासु। कथं पनेस तत्थ जीवति? एतस्स हि चत्तारो पच्चये ददमाना सीलादिगुणसम्पन्नानं सम्बुद्धानं देमा ति देन्ति, तेन[1] एस अबुद्धो समानो बुद्धानं नियमितपच्चये परिभुञ्जन्तो सुगतापदानेसु जीवति नाम। **सुगतातिरित्तानी** ति तेसं किर भोजनानि ददमाना बुद्धानञ्च बुद्धसावकानञ्च दत्वा पच्छा अवसेसं सायन्हसमये देन्ति। 5 एवमेस सुगतातिरित्तानि भुञ्जति नाम। **तथागते** तथागतं अरहन्तं सम्मासम्बुद्धं आसादेतब्बं घट्टयितब्बं। अथ वा "तथागते" तिआदीनि उपयोगबहुवचनानेव। **आसादेतब्बं** ति इदम्पि बहुवचनमेव एकवचनं विय वुत्तं। **आसादना** ति अहं बुद्धेन सद्धिं पाटिहारियं करिस्सामी ति घट्टना। 10

२९. **समेक्खियाना** ति समेक्खित्वा, मञ्ञित्वा ति अत्थो। **अमञ्ञी** ति पुन अमञ्ञित्था कोत्थू ति सिङ्गालो। R. 829

३०. **अत्तानं विघासे समेक्खिया** (दी० नि० ३.२१) ति सोण्डियं उच्छिट्ठोदके थूलं अत्तभावं दिस्वा। **याव अत्तानं न पस्सती** ति याव अहं सीहविघाससंवड्ढितको जरसिङ्गालो ति एवं यथाभूतं अत्तानं 15 न पस्सति। **ब्यग्घो** ति **मञ्ञती** ति सीहोहमस्मी ति मञ्ञति, सीहेन वा समानबलो ब्यग्घोयेव अहं ति मञ्ञति।

३१. **भुत्वान भेके** ति आवाटमण्डूके खादित्वा। **खलमूसिकायो** ति खलेसु मुसिकायो च खादित्वा। **कटसीसु खित्तानि च कोणपानी** ति सुसानेसु छड्डितकुणपानि च खादित्वा। **महावने** ति महन्ते 20 वनस्मिं। **सुञ्ञवने** ति तुच्छवने। **विवड्ढो** ति वड्ढितो। **तथेव सो सिङ्गालकं अनदी** ति एवं संवड्ढोपि मिगराजाहमस्मी ति मञ्ञित्वापि यथा पुब्बे दुब्बलसिङ्गालकाले, तथेव सो सिङ्गालरवंयेव अरवी ति। B. 14 इमायपि गाथाय भेकादीनि भुत्वा वड्ढितसिङ्गालो विय लाभसक्कार- गिद्धो त्वं ति पाथिकपुत्तमेव घट्टेसि। 25

[1] तेसं—रो०।

नागेही ति हत्थीहि। **महाबन्धना** ति महता किलेसबन्धना मोचेत्वा। **महाविदुग्गा** ति महाविदुग्गं नाम चत्तारो ओघा। ततो उद्धरित्वा निब्बानथले पतिट्ठपेत्वा।

६. अग्गञ्ञपञ्ञत्तिकथावण्णना

३६. इति "भगवा एत्तकेन कथामग्गेन पटिहारियं न करोती
5 ति पदस्स अनुसन्धि दस्सेत्वा इदानि "न अग्गञ्ञं पञ्ञापेती" ति इमस्स अनुसन्धि दस्सेन्तो **अग्गञ्ञञ्चाहं** (दी० नि० ३.२३) ति देसनं आरभि। तत्थ **अग्गञ्ञञ्चाहं** ति अहं, भग्गव, अग्गञ्ञञ्च पजानामि लोकुप्पत्तिचरियवंसञ्च। **तञ्च पजानामी** ति न केवलं अग्गञ्ञमेव, तञ्च अग्गञ्ञं पजानामि। ततो च उत्तरितरं
10 सीलसमाधितो पट्ठाय याव सब्बञ्ञुतञ्ञाणा पजानामि। **तञ्च पजानं न परामसामी** ति तञ्च पजानन्तोपि अहं इदं नाम पजानामी ति तण्हादिट्ठि मानवसेन न परामसामि। नत्थि तथागतस्स
R. 830 परामासो ति दीपेति। **पच्चत्तञ्ञेव निब्बुति विदिता** ति अत्तनायेव अत्तनि किलेसनिब्बानं विदितं। **यदभिजानं तथागतो** ति यं
15 किलेसनिब्बानं जानन्तो तथागतो। **नो अनयं आपज्जती** ति अविदितनिब्बाना तित्थिया विय अनयं दुक्खं ब्यसनं नापज्जति।

३७. इदानि यं तं तित्थिया अग्गञ्ञं पञ्ञपेन्ति, तं दस्सेन्तो **सन्ति भग्गवा** तिआदिमाह। तत्थ **इस्सरकुत्तं ब्रह्मकुत्तं** ति इस्सरकतं ब्रह्मकतं, इस्सरनिम्मितं ब्रह्मनिम्मितं ति अत्थो। ब्रह्मा एव हि
20 एत्थ आधिपच्चभावेन इस्सरो ति वेदितब्बो। **आचरियकं** ति आचरियभावं आचरियवादं। तत्थ आचरियवादो अग्गञ्ञं। अग्गञ्ञं पन एत्थ देसितं ति कत्वा सो अग्गञ्ञन्त्वेव वुत्तो। **कथं विहितकं** ति केन विहितं किन्ति विहितं। सेसं ब्रह्मजाले वित्थारितनयेनेव वेदितब्बं।

25 ४१. **खिड्डापदोसिकं** (दी० नि० ३.२५) ति खिड्डापदोसिकमूलं।

४७. **असता** (दी० नि० ३.२८) ति अविज्जमानेन, असंविज्जमानट्ठेना ति अत्थो। **तुच्छा** ति तुच्छेन अन्तोसारविरहितेन। **मुसा** ति मुसावादेन। **अभूतेना** ति भूतत्थविरहितेन। **अब्भाचिक्खन्ती** ति अभिआचिक्खन्ति। **विपरीतो** ति विपरीतसञ्ञो विपरीतचित्तो। **भिक्खवो चा** ति न केवलं समणो गोतमोयेव, ये च अस्स अनुसिट्ठिं करोन्ति, ते भिक्खू च विपरीता। अथ यं सन्धाय विपरीतो ति वदन्ति, त दस्सेतुं **समणो गोतमो** ति आदि वुत्तं। **सुभं विमोक्खं** ति वण्णकसिणं। **असुभन्त्वेवा** सुभञ्च असुभञ्च सब्बं असुभं ति एवं पजानाति। **सुभन्त्वेव तस्मिं** समयेति सुभं ति एव च तस्मिं समये पजानाति, न असुभं। **भिक्खवो चा** ति ये ते एवं वदन्ति, तेसं भिक्खवो च अन्तेवासिकसमणा विपरीता। **पहोती** ति समत्थो पटिबलो।

B. 15 — 5 — 10

४८. **दुक्करं खो** ति अयं परिब्बाजको **यदिदं** "एवंपसन्नो अहं, भन्ते" तिआदिमाह, तं साठेय्येन कोहञ्ञेन आह। एवं किरस्स अहोसि "समणो गोतमो मय्हं एत्तकं धम्मकथं कथेसि, तमहं सुत्वापि पब्बजितुं न सक्कोमि, मया एतस्स सासनं पटिपन्नसदिसेन भवितुं वट्टती" ति। ततो सो साठेय्येन कोहञ्ञेन एवमाह। तेनस्स भगवा मम्मं घट्टेन्तो विय "दुक्करं खो एतं, भग्गव, तया अञ्ञदिट्ठिकेना" तिआदिमाह। तं **पोट्ठपादसुत्ते** वुत्तत्थमेव। **साधुकमनुरक्खा** ति सुट्ठु अनुरक्ख।

15 R. 831 — 20

इति भगवा पसादमत्तानुरक्खणे परिब्बाजकं नियोजेसि। सोपि एवं महन्तं सुत्तन्तं सुत्वापि नासक्खि किलेसक्खयं कातुं। देसना पनस्स आयतिं वासनाय पच्चयो अहोसि। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

पाथिकसुत्तवण्णना निट्ठिता।

(२) उदुम्बरिकसुत्तवण्णना

B. 16
R. 832

१. निग्रोधपरिब्बाजकवत्थुवण्णना

१. एवं मे सुतं (दी० नि० ३.२९) ति उदुम्बरिकसुत्तं। तत्रायमपुब्बपदवण्णना। **परिब्बाजको** ति छन्नपरिब्बाजको। **उदुम्बरिकाय परिब्बाजकारामे** ति उदुम्बरिकाय देविया सन्तके परिब्बाजकारामे। **सन्धानो** ति तस्स नामं। अयं पन महानुभावो 5 परिवारेत्वा विचरन्तानं पञ्चन्नं उपासकसतानं अग्गपुरिसो अनागामी भगवता महापरिसमज्झे एवं संवण्णितो—

"छहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागतो सन्धानो गहपति तथागते निट्ठङ्गतो सद्धम्मे इरियति। कतमेहि छहि? बुद्धे अवेच्चप्पसादेन, धम्मे अवेच्चप्पसादेन, संघे अवेच्चप्पसादेन, अरियेन सीलेन, अरियेन 10 ञाणेन, अरियाय विमुत्तिया। इमेहि, खो भिक्खवे, छहि अङ्गेहि समन्नागतो सन्धानो गहपति तथागते निट्ठङ्गतो सद्धम्मे इरियती" (अं० नि० ३.१४८) ति।

सो पातोयेव उपोसथङ्गानि अधिट्ठाय पुब्बण्हसमये बुद्धप्पमुखस्स संघस्स दानं दत्वा भिक्खूसु विहारं गतेसु घरे खुद्दकमहल्लकानं 15 दारकानं सद्देन उब्बाळ्हो सत्थु सन्तिके "धम्मं सोस्सामी" ति निक्खन्तो। तेन वुत्तं **दिवा दिवस्स राजगहा निक्खमी** ति। तत्थ **दिवा दिवस्सा** ति दिवसस्स दिवा नाम मज्झन्हातिक्कमो, तस्मिं दिवसस्सापि दिवाभूते अतिक्कन्तमत्ते मज्झन्हिके निक्खमी ति अत्थो। **पटिसल्लीनो** ति ततो ततो रूपादिगोचरतो चित्तं पटिसं- 20 हरित्वा निलीनो झानरतिसेवनावसेन एकीभावं गतो। **मनोभाव- नीयानं** ति मनोवड्ढकानं। ये च आवज्जतो मनसिकरोतो चित्तं विनीवरणं होति उन्नमति वड्ढति।

२. **उन्नादिनिया** तिआदीनी पोट्ठपादसुत्ते वित्थारितनयेनेव वेदितब्बानि ।

B. 17
R. 833

यावता ति यत्तका । **अय** तेसं **अञ्ञतरो** ति अयं तेसं अब्भन्तरो एको सावको, भगवतो किर सावका गिहिअनागामिनोयेव पञ्चसता राजगहे पटिवसन्ति । येसं एकेकस्स पञ्च पञ्च उपासकसतानि परिवारा, ते सन्धाय "अयं तेसं अञ्ञतरो" ति आह । **अप्पेव नाम** ति तस्स उपसङ्कमनं पत्थयमानो आह । पत्थनाकारणं पन पोट्ठपादसुत्ते वुत्तमेव ।

४. **एतदवोचा** (दी० नि० ३.३०) ति आगच्छन्तो अन्तरामग्गेयेव तेसं कथाय सुतत्ता एतं **अञ्ञथा खो इमे** तिआदिवचनं अवोच । तत्थ **अञ्ञतित्थिया** ति दस्सनेनपि आकप्पेनपि कुत्तेनपि आचारेनपि विहारेनपि इरियापथेनपि अञ्ञे तित्थिया ति अञ्ञतित्थिया । **सङ्गम्म समागम्मा** ति सङ्गन्त्वा समागन्त्वा रासि हुत्वा निसिन्नट्ठाने । **अरञ्ञवनपत्थानी** ति अरञ्ञवनपत्थानि गामूपचारतो मुत्तानि दूरसेनासनानि । **पन्तानी** ति दूरतरानि मनुस्सूपचारविरहितानि । **अप्पसद्दानी** ति विहारूपचारेन गच्छतो अद्धिकजनस्सपि सद्देन मन्दसद्दानि । **अप्पनिग्घोसानी** ति अविभावितत्थेन निग्घोसेन मन्दनिग्घोसानि । **विजनवातानी** ति अन्तो सञ्चारिनो जनस्स वातेन विगतवातानि । **मनुस्सराहस्सेय्यकानी** ति मनुस्सानं रहस्सकरणस्स युत्तानि अनुच्छविकानि । **पटिसल्लानसारुप्पानी** ति एकीभावस्स अनुरूपानि । इति सन्धानो गहपति "अहो मम सत्था यो एवरूपानि सेनासनानि पटिसेवती" ति अञ्जलिं पग्गय्ह इत्तमङ्गे सिरस्मिं पतिट्ठपेत्वा इमं उदानं उदानेन्तो निसीदि ।

५. **एवं वुत्ते** ति एवं सन्धानेन गहपतिना उदानं उदानेन्तेन वुत्ते । निग्रोधो परिब्बाजको अयं गहपति मम सन्तिके निसिन्नो पि अत्तनो सत्थारंयेव थोमेति उक्कंसति, अम्हे पन अत्थीतिपि न मञ्ञति, एतस्मिं उप्पन्नकोपं समणस्स गोतमस्स उपरि पातेस्सामी ति सन्धानं गहपतिं एतदवोच ।

यग्घे ति चोदनत्थे निपातो। **जानेय्यासी** ति बुज्झेय्यासि पस्सेय्यासि। **केन समणो गोतमो सद्धिं सल्लपती** ति केन कारणेन,
R. 834 केन पुग्गलेन सद्धिं समणो गोतमो सल्लपति वदति भासति।
B. 18 किं वुत्तं होति "यदि किञ्चि सल्लापकारणं भवेय्य, यदि वा कोचि
5 समणस्स गोतमस्स सन्तिकं सल्लापत्थिको गच्छेय्य, सल्लपेय्य, न पन कारणं अत्थि, न तस्स सन्तिकं कोचि गच्छति, स्वायं केन समणो गोतमो सद्धिं सल्लपति, असल्लपन्तो कथं उन्नादी भविस्सती" ति।

साकच्छं ति संसन्दनं। **पञ्ञावेय्यत्तियं** ति उत्तरपच्चुत्तरनयेन
10 ञाणब्यत्तभावं। **सुञ्ञागारहतानि** सुञ्ञागारेसु नट्ठा, समणेन हि गोतमेन बोधिमूले अप्पमत्तिका पञ्ञा अधिगता, सापिस्स सुञ्ञागारेसु एककस्स निसीदतो नट्ठा। यदि पन मयं विय गणसङ्गणिकं कत्वा निसीदेय्य, नास्स पञ्ञा नस्सेय्याति दस्सेति। **अपरिसावचरो** ति अविसारदत्ता परिसं ओतरितुं न सक्कोति।
15 **नालं सल्लापाया** ति न समत्थो सल्लापं[1] कातुं। **अन्तमन्तानेवा** ति कोचि मं पञ्हं पुच्छेय्याति पञ्हाभीतो अन्तमन्तानेव पन्तसेनासनानि सेवति। **गोकाणा** ति एकक्खिहता काणगावी। सो किर परियन्तचारिनी होति, अन्तमन्तानेव सेवति। सा किर काणक्खिभावेन वनन्ताभिमुखीपि न सक्कोति भवितुं। कस्मा? यस्मा पत्तेन वा
20 साखाय वा कण्टकेन वा पहारस्स भायति। गुन्नं अभिमुखीपि न सक्कोति भवितुं। कस्मा? यस्मा सिङ्गेन वा कण्णेन वा वालेन वा पहारस्स भायति। **इङ्घा** ति चोदनत्थे निपातो। **संसादेय्यामा** ति एकपञ्हपुच्छनेनेव संसादनं विसादमापन्नं करेय्याम। **तुच्छकुम्भीव नं** ति रित्तघटं विय नं। **ओरोधेय्यामा** ति
25 विनन्धेय्याम। पूरितघटो हि इतो चितो च परिवत्तेत्वा न सुविनन्धनीयो होति। रित्तको यथारुचि परिवत्तेत्वा सक्का होति

१. अल्लापसल्लापं—रो०।

विनन्धितुं, एवमेव हतपञ्ञताय रित्तकुम्भिसदिसं समणं गोतमं वादविनन्धनेन समन्ता विनन्धिस्सामाति वदति।

इति परिब्बाजको सत्थु सुवण्णवण्णं नलाटमण्डलं अपस्सन्तो दसबलस्स परम्मुखा अत्तनो बलं दीपेन्तो असम्भिन्नं खत्तियकुमारं जातिया घट्टयन्तो चण्डालपुत्तो विय असम्भिन्नकेसरसीहं मिगराजानं थामेन घट्टेन्तो जरसिङ्गालो विय च नानप्पकारं तुच्छगज्जितं गज्जि। उपासकोपि चिन्तेसि "अयं परिब्बाजको अति विय गज्जति, अवीचिफुसनत्थाय पादं, भवग्गग्गहणत्थाय हत्थं पहारयन्तो विय निरत्थकं वायमति। सचे मे सत्था इमं ठानमागच्छेय्य, इमस्स परिब्बाजकस्स याव भवग्गा उस्सितं मानद्धजं ठानसोव ओपातेय्या" ति।

5 R. 835

10 B. 19

६. भगवापि तेसं तं कथासल्लापं अस्सोसियेव। तेन वुत्तं "अस्सोसि खो इमं कथासल्लापं" ति।

सुमागधाया ति सुमागधा नाम पोक्खरणी, यस्सा तीरे निसिन्नो अञ्ञतरो पुरिसो पदुमनाळन्तरेहि असुरभवनं पविसन्तं असुरसेनं अद्दस। **मोरनिवापो** ति निवापो वुच्चति भत्तं, यत्थ मोरानं अभयेन सद्धिं निवापो दिन्नो, तं दानं ति अत्थो। **अब्भोकासे** ति अङ्गणट्ठाने। **अस्सासपत्ता** ति तुट्ठिपत्ता सोमनस्सपत्ता। **अज्झासयं** ति उत्तमनिस्सयभूतं। **आदिब्रह्मचरियं** ति पुराणब्रह्मचरियसङ्खातं अरियमग्गं। इदं वुत्तं होति—"को नाम सो, भन्ते, धम्मो येन भगवता सावका विनीता अज्झासयादिब्रह्मचरियभूतं अरियमग्गं पूरेत्वा अरहत्ताधिगमवसेन[1] अस्सासपत्ता पटिजानन्ती" ति।

15

20

२. तपोजिगुच्छावादवण्णना

७. **विप्पकता** (दी० नि० ३.३१) ति ममागमनपच्चया अनिट्ठिताव हुत्वा ठिता, कथेहि, अहमेतं निट्ठपेत्वा मत्थकं पापेत्वा दस्सेमी ति सब्बञ्ञुपवारणं पवारेसि।

25

१. अरहन्ताधिगमवसेन—रो०।

८. **दुज्जानं खो** ति भगवा परिब्बाजकस्स वचनं सुत्वा "अयं परिब्बाजको मया सावकानं देसेतब्बं धम्मं तेहि पूरेतब्बं पटिपत्तिं पुच्छति, सचस्साहं आदितोव तं कथेस्सामि, कथितम्पि नं न जानिस्सति, अयं पन वीरियेन पापजिगुच्छनवादो, हन्दाहं एतस्सेव
5 विसये पञ्हं पुच्छापेत्वा पुथुसमणब्राह्मणानं लद्धिया निरत्थकभावं दस्सेमि। अथ पच्छा इमं पञ्हं ब्याकरिस्सामी" ति चिन्तेत्वा **दुज्जानं खो एतं** ति आदिमाह। तत्थ **सके आचरियके** ति अत्तनो आचरियवादे। **अधिजेगुच्छे** ति वीरियेन पापजिगुच्छनभावे। **कथं सन्ता** ति कथं भूता। **तपोजिगुच्छा** ति वीरियेन पापजिगुच्छा
R. 836 10 पापविवज्जना। **परिपुण्णा** ति परिसुद्धा। **कथं अपरिपुण्णा** ति कथं अपरिसुद्धा होती ति एवं पुच्छा ति। **यत्र हि नामा** ति यो नाम।

B. 20 ९. **अप्पसद्दे कत्वा** ति निरवे अप्पसद्दे कत्वा। सो किर चिन्तेसि—"समणो गोतमो एकं पञ्हम्पि न कथेति, सल्लापकथापिस्स
15 अतिबहुका नत्थि, इमे पन आदितो पट्ठाय समणं गोतमं अनुवत्तन्ति चेव पसंसन्ति च, हन्दाहं इमे निस्सद्दे कत्वा सयं कथेमी" ति। सो तथा अकासि। तेन वुत्तं "अप्पसद्दे कत्वा" ति। "तपोजिगुच्छवादा" तिआदीसु तपोजिगुच्छं वदाम, मनसापि तमेव सारतो गहेत्वा विचराम, कायेनपिम्हा तमेव अल्लीना, नानप्पकारकं
20 अत्तकिलमथानुयोगमनुयुत्ता विहरामा ति अत्थो।

३. उपक्किलेसवण्णना

१०. **तपस्सी** (दी० नि० ३.३३) ति तपनिस्सितको। "अचेलको" तिआदीनि सीहनादे वित्थारितनयेनेव वेदितब्बानि। **तपं समादियती** ति अचेलकभावादिकं तपं सम्मा आदियति, दळ्हं गण्हाति। **अत्तमनो होती** ति को अञ्ञो मया सदिसो इमस्मिं
25 तपे अत्थी ति तुट्ठमनो होति। **परिपुण्णसङ्कप्पो** ति अलमेत्तावता ति एवं परियोसितसङ्कप्पो, इदञ्च तित्थियानं वसेन आगतं। सासनावचरेनापि पन दीपेतब्बं। एकच्चो हि धुतङ्गं समादियति,

सो तेनेव धुतङ्गेन को अञ्ञो मया सदिसो धुतङ्गधरो ति अत्तमनो होति परिपुण्णसङ्कप्पो। **तपस्सिनो उपक्किलेसो होती** ति दुविधस्सापेतस्स तपस्सिनो अयं उपक्किलेसो होति। एत्तावतायं तपो उपक्किलेसो होती ति वदामि।

अत्तानुक्कंसेती ति "को मया सदिसो अत्थी" ति अत्तानं 5 उक्कंसति उक्खिपति। **परं वम्भेती** ति "अयं न मादिसो" ति परं संहारेति अवक्खिपति। **मज्जती** ति मानमदकरणेन मज्जति। **मुच्छती** ति मुच्छितो होति गधितो अज्झापन्नो। **पमादमापज्जती** ति एतदेव सारं ति पमादमापज्जति। सासने पब्बाजितोपि धुतङ्ग-सुद्धिको होति, न कम्मट्ठानसुद्धिको। धुतङ्गमेव अरहत्तं विय सारतो 10 पच्चेति।

B. 21 R. 837

११. **लाभसक्कारसिलोकं** ति एत्थ चत्तारो पच्चया लब्भन्ती ति लाभा। तेयेव सुट्ठु कत्वा पटिसङ्खरित्वा लद्धा सक्कारो, वण्णभणनं सिलोको। **अभिनिब्बत्तेती** ति अचेलकादिभावं तेरसधुतङ्गसमादानं वा निस्साय महालाभो उप्पज्जति, तस्मा "अभिनिब्बत्तेती" ति 15 वुत्तो। सेसमेत्थ पुरिमवारनयेनेव दुविधस्सापि तपस्सिनो वसेन वेदितब्बं।

वोदासं आपज्जती (दी० नि० ३.३४) ति द्वेभागं आपज्जति, द्वे भागे करोति। **खमती** ति रुच्चति। **नक्खमती** ति न रुच्चति। **सापेक्खो पजहती** ति सतण्हो पजहति। कथं? पातोव 20 खीरभत्तं भुत्तो होति। अथस्स मंसभोजनं उपनेति। तस्स एवं होति "इदानि एवरूपं कदा लभिस्साम, सचे जानेय्याम, पातोव खीरभत्तं न भुञ्जेय्याम, किं मया सक्का कातुं, गच्छ भो, त्वमेव भुञ्जा" ति जीवितं परिच्चजन्तो विय सापेक्खो पजहति। **गधितो** गेधजातो। **मुच्छितो** ति बलवतण्हाय मुच्छितो संमुट्ठस्सती हुत्वा। **अज्झापन्नो** 25 ति आमिसे अतिलग्गो, "भुञ्जिस्सथ, आवुसो" ति धम्मनिमन्तन-मत्तम्पि अकत्वा महन्ते महन्ते कबळे करोति। **अनादीनवदस्सावी**

ति आदीनवमत्तम्पि न पस्सति **अनिस्सरणपञ्ञो** ति इध मत्तञ्ञुता-
निस्सरणपच्चवेक्खणपरिभोगमत्तम्पि न करोति । **लाभसक्कारसि-
लोकनिकन्तिहेतू** ति लाभादीसु तण्हाहेतु ।

संभक्खेती (दी० नि० ३.३४) ति संखादति । **असनिविचक्कं**
5 ति विचक्कसण्ठाना असनियेव । इदं वुत्तं होति "असनिविचक्कं
इमस्स दन्तकूटं मूलबीजादीसु न किञ्चि न संभुञ्जति[1] । अथ च पन
नं समणप्पवादेन समणो ति सञ्जानन्ती[2]" ति । एवं अपसादेति
अवक्खिपति । इदं तित्थियवसेन आगतं । भिक्खुवसेन पनेत्थ अयं
योजना, अत्तना धुतङ्गधरो होति, सो अञ्ञ एवं अपसादेति "किं
10 समणा नाम इमे समणम्हाति वदन्ति, धुतङ्गमत्तम्पि नत्थि,
उद्देसभत्तादीनि परियेसन्ता पच्चयबाहुल्लिका विचरन्ती" ति ।
लूखाजीविं ति अचेलकादिवसेन वा धुतङ्गवसेन वा लुखाजीविं ।
R. 838 **इस्सामच्छरियं** ति परस्स सक्कारादिसम्पत्तिखीयनलक्खणं इस्सं,
सक्कारादिकरणअक्खलक्खणं मच्छरियञ्च ।

B. 22 15 १२. **आपाथकनिसादी होति** (दी० नि० ३. ३५) ति मनुस्सानं
आपाथे नस्सनट्ठाने निसीदति । यत्थ ते पस्सन्ति, तत्थ ठितो
वग्गुलिवत्तं चरति, पञ्चातपं तप्पति, एकपादेन तिट्ठति, सूरियं
नमस्सति । सासने पब्बजितोपि समादिन्नधुतङ्गो सब्बरत्तिं सयित्वा
मनुस्सानं चक्खुपथे तपं करोति, महासायन्हेयेव चीवरकुटिं करोति,
20 सूरिये उग्गते पटिसंहरति, मनुस्सानं आगतभावं ञत्वा घण्डिं
पहरित्वा चीवरं मत्थके ठपेत्वा चङ्कमं ओतरति, सम्मुञ्जनिं गहेत्वा
विहारङ्गणं सम्मज्जति ।

अत्तानं ति अत्तनो गुणं **अदस्सयमानो** ति एत्थ अ-कारो
निपातमत्तं, दस्सयमानोति अत्थो । **इदम्पि मे तपस्मिं** ति इदम्पि
25 कम्मं ममेव तपस्मिं, पच्चत्ते वा भुम्मं, इदम्पि मम तपो ति अत्थो ।
सो हि असुकस्मिं ठाने अचेलको अत्थि मुत्ताचारोतिआदीनि सुत्वा

१. संभज्जति—रो० । २. जानन्ती ति—रो० ।

अम्हाकं एस तपो, अम्हाकं सो अन्तेवासिको तिआदीनि भणति। असुकस्मिं वा पन ठाने पंसुकूलिको भिक्खु अत्थी ति आदीनि सुत्वा अम्हाकं एस तपो, अम्हाकं सो अन्तेवासिकोतिआदीनि भणति।

किञ्चिदेवा ति किञ्चि वज्जं दिट्ठिगतं वा। **पटिच्छन्नं सेवती** ति यथा अञ्ञे न जानन्ति, एवं सेवति। **अक्खममानं आह खमती** ति अरुच्चमानंयेव रुच्चति मेति वदति। अत्तना कतं अतिमहन्तम्पि वज्जं अप्पमत्तकं कत्वा पञ्ञपेति, परेन कतं दुक्कटमत्तं वीतिक्कमम्पि पाराजिकसदिसं कत्वा दस्सेति। **अनुञ्ञेय्यं** ति अनुजानितब्बं अनुमोदितब्बं।

कोधनो होति उपनाही ति कुज्झनलक्खणेन कोधेन, वेरअप्पटिनिस्सग्गलक्खणेन उपनाहेन च समन्नागतो। **मक्खी होति पळासी** ति परगुणमक्खनलक्खणेन मक्खेन, युगग्गाहलक्खणेन पळासेन च समन्नागतो।

इस्सुकी होति मच्छरी ति परसक्कारादीसु उसूयनलक्खणाय इस्साय, आवासकुललाभवण्णधम्मेसु मच्छरायनलक्खणेन पञ्चविधमच्छरेन च समन्नागतो होति। **सठो होति मायावी** ति केराटिकलक्खणेन साठेय्येन, कतप्पटिच्छादनलक्खणाय मायाय च समन्नागतो होति। **थद्धो होति अतिमानी** ति निस्सिनेहनिक्करुणथद्धलक्खणेन थम्भेन, अतिक्कमित्वा मञ्ञनलक्खणेन अतिमानेन च समन्नागतो होति। **पापिच्छा होती** ति असन्तसम्भावनपत्थनलक्खणाय पापिच्छताय समन्नागतो होति। **पापिकानं** ति तासंयेव लामकानं इच्छानं वसं गतो। **मिच्छादिट्ठिको** ति नत्थि दिन्नं ति आदिनयप्पवत्ताये अयाथाय दिट्ठिया उपेतो। **अन्तग्गाहिकाया** ति सायेन दिट्ठि उच्छेदन्तस्स गहितत्ता "अन्तग्गाहिका" ति वुच्चति, ताय समन्नागतो ति अत्थो। **सन्दिट्ठिपरामासी** ति आदीसु सयं दिट्ठि सन्दिट्ठि, सन्दिट्ठिमेव परामसति गहेत्वा वदती ति **सन्दिट्ठिपरामासी**। आधानं वुच्चति कळ्हं सुट्ठु ठपितं, तथा कत्वा गण्हाती ति

5 10 15 B. 23 R. 839 20 25

आधानग्गाही। अरिट्ठो विय न सक्का होति पटिनिस्सज्जापेतुं ति **दुप्पटिनिस्सग्गा**। **यदिमे** ति यदि इमे।

४. परिसुद्धपपटिकप्पत्तकथावण्णना

१३. **इध निग्रोध तपस्सी** ति एवं भगवा अञ्ञतित्थियेहि गहितलद्धिं तेसं रक्खितं तपं सब्बमेव संकिलिट्ठं ति उपक्किलेसपाळिं
5 दस्सेत्वा इदानि परिसुद्धपाळिदस्सनत्थं देसनमारभन्तो **इध निग्रोधा** ति आदिमाह। तत्थ "न अत्तमनो" तिआदीनि वुत्तविपक्खवसेनेव वेदितब्बानि। सब्बवारेसु च लूखतपस्सिनो चेव धुतङ्गधरस्स च वसेन योजना वेदितब्बा। **एवं सो तस्मिं ठाने परिसुद्धो होती** ति एवं सो तेन न अत्तमनता न परिपुण्णसङ्कप्पभावसङ्खातेन कारणेन
10 परिसुद्धो निरुपक्किलेसो होति, उत्तरि वायममानो कम्मट्ठानसुद्धिको हुत्वा अरहत्तं पापुणाति। इमिना नयेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो।

१४. **अद्धा खो भन्ते** (दी० नि० ३.३७) ति भन्ते एवं सन्ते एकंसेनेव वीरियेन पापजिगुच्छनवादो परिसुद्धो होती ति अनुजानाति।
15 इतो परञ्च अग्गभावं वा सारभावं वा अजानन्तो **अग्गप्पत्ता सारप्पत्ता चा** ति आह। अथस्स भगवा सारप्पत्तभावं पटिसेधेन्तो **न खो निग्रोधा** ति आदिमाह। **पपटिकप्पत्ता होती** ति सारवतो रुक्खस्स सारं फेग्गुं तचञ्च अतिक्कम्म बहिपपटिकसदिसा होती ति दस्सेति।

B. 24

५. परिसुद्धतचप्पत्तादिकथावण्णना

R. 840 20 १५. **अग्गं पापेतू** (दी० नि० ३.३८) ति देसनावसेन अग्गं पापेत्वा देसेतु, सारं पापेत्वा देसेतू ति दसबलं याचति। **चातुयामसंवरसंवुतो** ति चतुब्बिधेन संवरेन पिहितो। **न पाणं अतिपातेती** ति पाणं न हनति। **न भावितमासीसती** ति भावितं नाम तेसं सञ्ञाय पञ्च कामगुणा, ते न आसीसति न सेवती ति अत्थो।

अट्ठं चस्स होती ति एतञ्चस्स इदानि वुच्चमानं "सो अभिहरती" तिआदिलक्खणं। **तपस्सिताया** ति तपस्सिभावेन[1] होति। तत्थ **सो अभिहरती** ति सो तं सीलं अभिहरति, उपरूपरि वड्ढेति। सीलं मे परिपुण्णं, तपो आरद्धो, अलमेत्तावताति न वीरियं विस्सज्जेति। **नो हीनायावत्तती** ति हीनाय गिहिभावत्थाय न आवत्तति। सीलतो उत्तरि विसेसाधिगमत्थाय वीरियं करोतियेव, एवं करोन्तो सो विवित्तं सेनासनं भजति। "अरञ्ञं" ति आदीनि सामञ्ञफले वित्थारितानेव। "मेत्तासहगतेना" तिआदीनि विसुद्धिमग्गे वण्णितानि। **तचप्पत्ता** ति पपटिकतो अब्भन्तरं तचं पत्ता। **फेग्गुप्पत्ता** ति तचतो अब्भन्तरं फेग्गुं पत्ता, फेग्गुसदिसा होती ति अत्थो।

१८. "एत्तावता, खो निग्रोध, तपोजिगुच्छा अग्गप्पत्ताच होति सारप्पत्ता चा" (दी० नि० ३.३९) ति इदं भगवा तित्थियानं वसेनाह। तित्थियानञ्हि लाभसक्कारो रुक्खस्स साखापलाससदिसो। पञ्चसीलमत्तकं पपटिकसदिसं। अट्ठसमापत्तिमत्तं तचसदिसं। पुब्बेनिवासञाणावसाना अभिञ्ञा फेग्गुसदिसा। दिब्बचक्खुं पनेते अरहत्तं ति गहेत्वा विचरन्ति। तेन तेसं तं रुक्खस्स सारसदिसं। सासने पन लाभसक्कारो साखापलाससदिसो। सीलसम्पदा पपटिकसदिसा। झानसमापत्तियो तचसदिसा। लोकियाभिञ्ञा फेग्गुसदिसा। मग्गफलं सारो। इति भगवता अत्तनो सासने ओनतविनतफलभारभरितरुक्खूपमाय उपमितं। सो देसनाकुसलताय इतो तचसारसम्पत्तितो मम सासनं उत्तरितरञ्चेव पणीततरञ्च, तं तुवं कदा जानिस्ससी ति अत्तनोदेसनाय विसेसभावं दस्सेतुं "इति खो निग्रोधा" ति देसनं आरभि[2]। **ते परिब्बाजका** ति ते तस्स परिवारा तिंससतसङ्खा परिब्बाजका। **एत्थ मयं अनस्साम** ति एत्थ अचेलकपाळिआदीसु, इदं वुत्तं होति अम्हाकं

[1] तपस्सिभावे—रो०। [2] आहरति—रो०

अचेलकपाळिमत्तम्पि नत्थि[१], कुतो परिसुद्धपाळि। अम्हाकं परिसुद्ध-पाळिमत्तम्पि नत्थि, कुतो चातुयामसंवरादीनि। चातुयामसंवरोपि नत्थि, कुतो अरञ्ञवासादीनि। अरञ्ञवासोपि नत्थि, कुतो नीवरणप्पहानादीनि। निवरणप्पहानम्पि नत्थि, कुतो ब्रह्मविहारा-
5 दीनि। ब्रह्मविहारमत्तम्पि नत्थि, कुतो पुब्बेनिवासादीनि। पुब्बेनिवासञाणमत्तम्पि नत्थि, कुतो अम्हाकं दिब्बचक्खु। एत्थ मयं सआचरियका नट्ठा" ति। **इतो भिय्यो उत्तरितरं** ति इतो दिब्बचक्खुञाणाधिगमतो भिय्यो अञ्ञं उत्तरितरं[२] विसेसाधिगमं मयं सुतिवसेनापि न जानामाति वदन्ति।

६. निग्रोधस्सपज्झायनवण्णना

10 २४. **अथ निग्रोधं परिब्बाजकं** (दी॰ नि॰ ३.४१) ति एवं किरस्स अहोसि "इमे परिब्बजका इदानि भगवतो भासितं सुस्सूसन्ति, इमिना च निग्रोधेन भगवतो परम्मुखा[३] कक्खळं दुरासदवचनं वुत्तं, इदानि अयम्पि सोतुकामो जातो, कालो दानि मे इमस्स मान-द्धजं निपातेत्वा भगवतो सासनं उक्खिपितुं" ति। अथ निग्रोधं
15 परिब्बाजकं एतदवोच। अपरम्पिस्स अहोसि "अयं मयि अकथेन्ते सत्थारं न खमापेस्सति, तदस्स अनागते अहिताय दुक्खाय[४] संवत्तिस्सति, मयि पन कथिते खमापेस्सति, तदस्स भविस्सति दीघरत्तं हिताय सुखाया" ति। अथ[५] निग्रोधं परिब्बाजकं एतदवोच[५]। **अपरिसावचरं पन नं करोथा** ति एत्थ **पना** ति निपातो, अथ नं
20 अपरिसावचरं करोथा ति अत्थो। "अपरिसावचरं तं" तिपि पाठो, अपरिसावचरं वा एतं करोथ, गोकाणादीनं वा अञ्ञतरं ति अत्थो।

१. रो॰ पोत्थके नत्थि। २. उत्तरि—रो॰।
३. परम्मुखे—रो॰। ४. रो॰ पोत्थके नत्थि।
५-५ रो॰ पोत्थके नत्थि।

गोकाणं ति एत्थापि गोकाणं परियन्तचारिनिं विय[1] करोथा ति[2] अत्थो। **तुण्हीभूतो** ति तुण्हीभावं उपगतो। **मङ्कुभूतो** ति नित्तेजतं आपन्नो। **पत्तक्खन्धो** ति ओनतगीवो। **अधोमुखो** ति हेट्ठामुखो।

बुद्धो सो भगवा बोधाया (दी० नि० ३.४३) ति सयं बुद्धो सत्तानम्पि चतुसच्चबोधत्थाय धम्मं देसेति। **दन्तो** ति चक्खुतो पि दन्तो ... पे० ... मनतोपि दन्तो। **दमथाया** ति अञ्ञेसम्पि दमनत्थाय एव, न वादत्थाय। **सन्तो** ति रागसन्तताय सन्तो, दोसमोहसन्तताय सब्ब अकुसलसब्बाभिसङ्खारसन्तताय सन्तो। **समथाया** ति महाजनस्स रागादिसमनत्थाय धम्मं देसेति। **तिण्णो** ति चत्तारो ओघे तिण्णो। **तरणाया** ति महाजनस्स ओघनित्थरणत्थाय। **परिनिब्बुतो** ति किलेसपरिनिब्बानेन परिनिब्बुतो। **परिनिब्बानाया** ति महाजनस्सा पि सब्बकिलेसपरिनिब्बानत्थाय धम्मं देसेति।

5 B. 26 R. 842

10

७. ब्रह्मचरियपरियोसानादिवण्णना

२६. **अच्चयो** ति आदीनि सामञ्ञफले वुत्तानि। **उजुजातिको** ति कायवङ्कादिविरहितो उजुसभावो। **अहमनुसासामी** ति अहं तादिसं पुग्गलं अनुसासामि, धम्मं अस्स देसेमि। **सत्ताहं** ति सत्तदिवसानि, इदं सब्बम्पि भगवा दन्धपञ्ञं पुग्गलं सन्धायाह असठो पन अमायावी उजुजातिको तंमुहुत्तेनेव अरहत्तं पत्तुं सक्खिस्सति। इति भगवा "असठं" ति आदिवचनेन सठो हि वङ्कवङ्को, मयापि न सक्का अनुसासितुं ति दीपेन्तो परिब्बाजकं पादेसु[3] गहेत्वा महामेरुपादतले विय खिपित्थ। कस्मा? अयञ्हि अतिसठो, कुटिलचित्तो सत्थरि एवं कथेन्तोपि बुद्धधम्मसंघेसु नाधिमुच्चति,

15

20

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. करोथ पना ति—रो०।
३. पादे—रो०।

अधिमुच्चनत्थाय सोतं न ओदहति, कोहञ्ञे[1] ठितो सत्थारं खमापेति। तस्मा भगवा तस्सज्झासयं विदित्वा "एतु विञ्ञू पुरिसो असठो" तिआदिमाह। सठं पनाहं अनुसासितुं न सक्कोमी ति।

२७. **अन्तेवासिकम्यता** (दी० नि० ३.४४) ति अन्तेवासिकम्यताय, 5 अम्हे अन्तेवासिके इच्छन्तो। **एवमाहा** ति "एतु विञ्ञुपुरिसो" तिआदिमाह। **यो एव वो आचरियो** ति यो एव तुम्हाकं पकतिया आचरियो। **उद्देसा नो चावेतुकामो** ति अत्तनो अनुसासनिं गाहापेत्वा अम्हे अम्हाकं उद्देसतो चावेतुकामो। **सो एव वो उद्देसो होतू** ति यो तुम्हाकं पकतिया उद्देसो, सो तुम्हाकं येव होतु, मयं तुम्हाकं उद्देसेन 10 अत्थिका। **आजीवा** ति आजीवतो। **अकुसलसङ्खाता** ति अकुसलाति कोट्ठासं पत्ता। **अकुसला धम्मा** ति द्वादस अकुसलचित्तुप्पादधम्मा[2] तण्हायेव वा विसेसेन। सा हि पुनब्भवकरणतो "पोनोब्भविका" ति वुत्ता। **सदरथा** ति किलेसदरथसम्पयुत्ता। **जातिजरामरणिया** ति जातिजरामरणानं पच्चयभूता। **संकिलेसिका धम्मा** ति द्वादस अकुसल-15 चित्तुप्पादा। **वोदानिया** ति, समथविपस्सना धम्मा। ते हि सत्ते वोदापेन्ति, तस्मा "वोदानिया" ति वुच्चन्ति। **पञ्ञापारिपूरिं** ति मग्गपञ्ञापारिपूरिं। **वेपुल्लत्तञ्चा** ति फलपञ्ञावेपुल्लतं, उभो पि वा एतानि अञ्ञमञ्ञवेवचनानेव। इदं वुत्तं होति "ततो तुम्हे मग्गपञ्ञञ्चेव फलपञ्ञञ्च दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा 20 उपसम्पज्ज विहरिस्सथा" ति। एवं भगवा परिब्बाजके आरब्भ अत्तनो ओवादानुसासनिया फलं दस्सेन्तो अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठपेसि।

२८. **यथा तं मारेना** (दी० नि० ३.४५) ति यथा मारेन परियुट्ठितचित्ता निसीदं ति एवमेव तुण्हीभूता ... पे० ... अप्पटिभाना निसिन्ना।

25 मारो किर सत्था अतिविय गज्जन्तो बुद्धबलं दीपेत्वा इमेसं परिब्बाजकानं धम्मं देसेति, कदाचि धम्माभिसमयो भवेय्य, हन्दाहं

R. 843 B. 27

१. कोहं—रो०। २. द्वादस चत्तुप्पादधम्मा—रो०।

परियुट्ठामी ति सो तेसं चित्तानि परिपुट्ठासि। अप्पहीनविपल्लासानञ्हि चित्तं मारस्स यथाकामकरणीयं होति। तेपि मारेन परियुट्ठितचित्ता थद्धङ्गपचङ्गा विय तुण्ही अप्पटिभाना निसीदिंसु। अथ सत्था इमे परिब्बाजका अतिविय निरवा हुत्वा निसिन्ना, किं नु खो ति आवज्जन्तो मारेन परियुट्ठितभावं अञ्ञासि। सचे पन तेसं 5 मग्गफलुप्पत्तिहेतु भवेय्य, मारं पटिबाहित्वा पि भगवा धम्मं देसेय्य, सो पन तेसं नत्थि। "सब्बेपिमे तुच्छपुरिसा" ति अञ्ञासि। तेन वुत्तं "अथ खो भगवतो एतदहोसि सब्बेपिमे मोघपुरिसा" तिआदि।

तत्थ **फुट्ठा पापिमता** ति पापिमता मारेन फुट्ठा। **यत्र हि नामा** ति येसु नाम। **अञ्ञाणत्थम्पी** ति जाननत्थम्पि। **किं करिस्सति** 10 R. 844 **सत्ताहो** ति समणेन गोतमेन परिच्छिन्नसत्ताहो अम्हाकं किं करिस्सति। इद वुत्तं होति "समणेन गोतमेन 'सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरिस्सति सत्ताहं' ति वुत्तं, सो सत्ताहो अम्हाकं किं अप्फासुकं करिस्सति। हन्द मयं सत्ताहब्भन्तरे एतं धम्मं B. 28 सच्छिकातुं सक्का, न सक्काति अञ्ञाणत्थम्पि ब्रह्मचरियं चरिस्सामा" 15 ति। अथ वा जानाम तावस्स धम्मं ति एकदिवसे एकवारं अञ्ञाणत्थम्पि एतेसं चित्तंनुपन्नं, सत्ताहो पन एतेसं कुसीतानं किं करिस्सति, किं सक्खिस्सन्ति ते सत्ताहं पूरेतुं ति अयमेत्थ अधिप्पायो। **सीहनादं** ति परवादभिन्दनं सकवादसमुस्सापनञ्च अभीतनादं नदित्वा। **पच्चुपट्ठासी** पतिट्ठितो। **तावदेवा** ति तस्मिञ्ञेव खणे। **राजगहं** 20 **पाविसी** ति राजगहमेव पविट्ठो। तेसं पन परिब्बाजकानं किञ्चापि इदं सुत्तन्तं सुत्वा विसेसो न निब्बत्तो, आयतिं पन नेसं वासनाय पच्चयो भविस्सती ति। सेस सब्बत्थ उत्तानमेवा ति।

उदुम्बरिकसुत्तवण्णना निट्ठिता।

३. चक्कवत्तिसुत्तवण्णना

१. अत्तदीपसरणतावण्णना

B. 29
R. 845

१. **एवं मे सुतं** (दी० नि० ३.४६) ति चक्कवत्तिसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना। **मातुलायं** ति एवंनामके नगरे। तं नगरं गोचरगामं कत्वा अविदूरे वनसण्डे विहरति। "तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसी" ति एत्थ अयमनुपुब्बिकथा।

5 भगवा किर इमस्स सुत्तस्स समुट्ठानसमये पच्चूसकाले महाकरुणासमापत्तितो उट्ठाय लोकं वोलोकेन्तो इमाय अनागतवंस-दीपिकाय सुत्तन्तकथाय मातुलनगरवासीनं चतुरासीतिया पाणसहस्सानं धम्माभिसमयं दिस्वा पातोव वीसतिभिक्खुसहस्स-परिवारो मातुलनगरं सम्पत्तो। मातुलनगरवासिनो खत्तिया "भगवा 10 आगतो" ति सुत्वा पच्चुग्गम्म दसबलं निमन्तेत्वा महासक्कारेन नगरं पवेसेत्वा निसज्जट्ठानं संविधाय भगवन्तं महारहे पल्लङ्के निसीदापेत्वा बुद्धप्पमुखस्स भिक्खुसंघस्स महादानं अदंसु। भगवा भत्तकिच्चं निट्ठापेत्वा चिन्तेसि "सचाहं इमस्मिं ठाने इमेसं मनुस्सानं धम्मं देसेस्सामि, अयं पदेसो सम्बाधो, मनुस्सानं ठातुं 15 वा निसीदितुं वा ओकासो न भविस्सति, महता खो पन समागमेन भवितब्बं" ति।

अथ राजकुलानं भत्तानुमोदनं अकत्वाव पत्तं गहेत्वा नगरतो निक्खमि। मनुस्सा चिन्तयिंसु "सत्था अम्हाकं अनुमोदनम्पि अकत्वा गच्छति, अद्धा भत्तग्गं अमनापं अहोसि, बुद्धानं नाम न सक्का चित्तं 20 गहेतुं, बुद्धेहि सद्धिं विस्सासकरणं नाम समुस्सितफणं आसीविसं गीवाय गहणसदिसं होति, एथ भो, तथागतं खमापेस्सामा" ति। सकलनगरवासिनो भगवता सहेव निक्खन्ता। भगवा गच्छन्तोव मगधक्खेत्ते ठितं साखाविटपसम्पन्नं सन्दच्छायं करीसमत्तभूमिपत्थरं

एकं मातुलरुक्खं दिस्वा इमस्मिं रुक्खमूले निसीदित्वा धम्मे देसियमाने "महाजनस्स ठाननिसज्जनोकासो भविस्सती" ति । निवत्तित्वा मग्गा ओक्कम्म रुक्खमूलं उपसङ्कमित्वा धम्मभण्डागारिकं आनन्दत्थेरं ओलोकेसि । थेरो ओलोकितसञ्ञाय एव "सत्था निसीदितुकामो" ति ञत्वा सुगतमहाचीवरं पञ्ञपेत्वा अदासि । निसीदि भगवा पञ्ञत्ते आसने । अथस्स पुरतो मनुस्सा निस्सीदिंसु । उभोसु पस्सेसु पच्छतो च भिक्खुसंघो, आकासे देवता अट्ठंसु । एवं महापरिसमज्झगतो तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि ।

R. 846
B. 30

5

ते भिक्खू ति तत्र उपविट्ठा धम्मप्पटिग्गाहका भिक्खू । **अत्तदीपा** ति अत्तानं दीपं ताणं लेणं गतिं परायणं पतिट्ठं कत्वा विहरथा ति अत्थो । **अत्तसरणा** ति इदं तस्सेव वेवचनं **अनञ्ञसरणा** ति इदं अञ्ञसरणपटिक्खेपवचनं । न हि अञ्ञो अञ्ञस्स सरणं होति, अञ्ञस्स वायामेन अञ्ञस्स असुज्झनतो । वुत्तम्पि चेतं "अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परो सिया" (ध० प० ३२) ति । तेनाह "अनञ्ञसरणा" ति । को पनेत्थ अत्ता नाम, लोकियलोकुत्तरो धम्मो । तेनाह "धम्मदीपा धम्मसरणा अनञ्ञसरणा" ति । काये कायानुपस्सी' तिआदीनि महासतिपट्ठाने वित्थारितानि ।

10

15

गोचरे ति चरितुं युत्तट्ठाने । **सके** ति अत्तनो सन्तके । **पेत्तिके विसये** ति पितितो आगतविसये । **चरतं** ति चरन्तानं । "चरन्तं" तिपि पाठो, अयमेवत्थो । **न लच्छती** ति न लभिस्सति न पस्सिस्सति । **मारो** ति देवपुत्तमारोपि, मच्चुमारोपि, किलेसमारोपि । **ओतारं** ति रन्ध छिद्दं विवरं । अयं पनत्थो लेड्डुट्ठानतो निक्खम्म तोरणे निसीदित्वा बालातपं तपन्तं लापं सकुणं गहेत्वा । पक्खन्द-सेनसकुणवत्थुना दीपेतब्बो । वुत्तञ्हेतं—

20

"भूतपुब्बं, भिक्खवे, सकुणग्घि लापं सकुणं सहसा अज्झप्पत्ता अग्गहेसि । अथ खो, भिक्खवे, लापो सकुणो सकुणग्घिया हरियमानो एवं परिदेवेसि "मयमेवम्ह अलक्खिका, मयं अप्पपुञ्ञा, ये मयं

25

R. 847

अगोचरे चरिम्ह परविसये, सचेज्ज, मयं गोचरे चरेयाम सके पेत्तिके विसये, न म्यायं सकुणग्घि अलं अभविस्स यदिदं युद्धाया'' ति।
B. 31 को पन ते लाप गोचरो सको पेत्तिको विसयो ति? यदिदं नङ्गलकट्ठकरणं लेड्डुट्ठानं ति। अथ, खो भिक्खवे, सकुणग्घि सके बले
5 अपत्थद्धा सके बले असंवदमाना लापं सकुणं पमुञ्चि "गच्छ खो त्वं लाप, तत्रपि गन्त्वा न मोक्खसी'' ति।

अथ खो, भिक्खवे, लापो सकुणो नङ्गलकट्ठकरणं लेड्डुट्ठानं गन्त्वा महन्तं लेड्डुं अभिरुहित्वा सकुणग्घि वदमानो अट्ठासि "एहि खो दानि मे सकुणग्घि, एहि खो दानि मे सकुणग्घी''ति। अथ खो
10 सा, भिक्खवे, सकुणग्घि सके बले अपत्थद्धा सके बले असंवदमाना[1] उभो पक्खे सन्नय्ह लापं सकुणं सहसा अज्झप्पत्ता। यदा खो, भिक्खवे, अञ्ञासि लापो सकुणो बहुआगता खो म्यायं सकुणग्घी ति। अथ खो तस्सेव लेड्डुस्स अन्तरं पच्चुपादि। अथ खो, भिक्खवे, सकुणग्घि तत्थेव उरं पच्चताळेसि। एवं हि तं, भिक्खवे, होति यो
15 अगोचरे चरति परविसये।

तस्मातिह, भिक्खवे, मा अगोचरे चरित्थ परविसये, अगोचरे, भिक्खवे, चरतं परविसये लच्छति मारो ओतारं, लच्छति मारो आरम्मणं। को च, भिक्खवे, भिक्खुनो अगोचरो परविसयो, यदिदं पञ्च कामगुणा। कतमे पञ्च? चक्खुविञ्ञेय्या रूपा इट्ठा कन्ता
20 मनापापियरूपा कामूपसंहिता रजनीया ... पे० ... कायविञ्ञेय्या फोट्ठब्बा ... पे० ... रजनीया। अयं, भिक्खवे, भिक्खुनो अगोचरो परविसयो।

गोचरे, भिक्खवे, चरथ ... पे० ... न लच्छति मारो आरम्मणं। को च, भिक्खवे, भिक्खुनो गोचरो सको पेत्तिको विसयो, यदिदं
25 चत्तारो सतिपट्ठाना। कतमे चत्तारो? इध भिक्खवे, भिक्खु काये

१. अपदमाना—रो०।

कायानुपस्सी विहरति ... पे० ... सको पेत्तिको विसयो" (सं० नि० ४.१२६-२७) ति।

कुसलानं ति अनवज्जलक्खणानं। **समादानहेतू** ति समादाय वत्तनहेतु। **एवमिदं पुञ्ञं पवड्ढती** ति एवं इदं लोकियलोकुत्तरं पुञ्ञफलं वड्ढति। पुञ्ञफलं ति च उपरूपरि पुञ्ञम्पि पुञ्ञविपाकोपि 5 वेदितब्बो।

दळ्हनेमिचक्कवत्तिराजकथावण्णना

B. 32

R. 848

२. तत्थ **दुविधं कुसलं** वट्टगामी च विवट्टगामी च। तत्थ वट्टगामिकुसलं नाम मातापितूनं पुत्तधीतासु पुत्तधीतानञ्च मातापितूसु सिनेहवसेन मुदुमद्दवचित्तं। विवट्टगामिकुसलं नाम "चत्तारो सति-पट्ठाना" तिआदिभेदा सत्ततिंस बोधिपक्खियधम्मा। तेसु वट्टगामि- 10 पुञ्ञस्स परियोसानं मनुस्सलोके चक्कवत्तिसिरीविभवो। विवट्टगामि-कुसलस्स मग्गफलनिब्बानसम्पत्ति। तत्थ विवट्टगामिकुसलस्स विपाकं सुत्तपरियोसाने दस्सेस्सति।

इध पन वट्टगामिकुसलस्स विपाकदस्सनत्थं, भिक्खवे, यदा पुत्त-धीतरो मातापितूनं ओवादे न अट्ठंसु, तदा आयुनापि वण्णेनापि 15 इस्सरियेनापि परिहायिंसु। यदा पन अट्ठंसु, तदा वड्ढिंसू ति वत्वा वट्टगामिकुसलानुसन्धिवसेन "भूतपुब्बं, भिक्खवे" ति देसनं आरभि। तत्थ चक्कवत्ती तिआदीनि महापदाने वित्थारितानेव।

३. **ओसक्कितं** (दी० नि० ३.४६) ति ईसकम्पि अवसक्कितं। **ठाना चुतं** ति सब्बसो ठाना अपगतं। तं किर चक्करतनं अन्तेपुरद्वारे 20 अक्खाहतं विय वेहासं अट्ठासि। अथस्स उभोसु पस्सेसु द्वे खदिरत्थम्भे निखणित्वा चक्करतनमत्थके नेमिअभिमुखं एकं सुत्तकं बन्धिंसु। अधोभागेपि नेमिअभिमुखं एकं बन्धिंसु। तेसु उपरिमसुत्ततो अप्पमत्त-कम्पि ओगतं चक्करतनं ओसक्कितं नाम होति, हेट्ठा सुत्तस्स ठानं उपरिमकोटिया अतिक्कन्तगतं ठाना चुतं नाम होति, तदेतं अतिबल 25 वदोसे सति एवं होति। सुत्तमत्तम्पि एकङ्गुलद्वङ्गुलमत्तं वा भट्ठं ठाना चुतमेव होति। तं सन्धायेतं वुत्तं "ओसक्कितं ठाना चुतं" ति।

अथ मे आरोचेय्यासी ति तात, त्वं अज्ज आदिं कत्वा दिवसस्स तिक्खत्तुं चक्करतनस्स उपट्ठानं गच्छ, एवं गच्छन्तो यदा चक्करतनं इसकम्पि ओसक्कितं ठाना चुतं पस्ससि, अथ मय्हं आचिक्खेय्यासि। जीवितञ्हि मे तव हत्थे निक्खित्तं ति। **अद्दसा** ति अप्पमत्तो
5 दिवसस्स तिक्खत्तुं गन्त्वा ओलोकेन्तो एकदिवसं अद्दस।

B. 33 **अथ खो भिक्खवे** (दी० नि० ३.४७) ति भिक्खवे, अथ राजा दळ्हनेमि "चक्करतनं ओसक्कितं" ति सुत्वा उप्पन्नबलवदोमनस्सो "न दानि मया चिरं जीवितब्बं भविस्सति, अप्पावसेसं मे आयु, न
R. 849 मे दानि कामे परिभुञ्जनकालो, पब्बज्जाकालो मे इदानी" ति रोदित्वा
10 परिदेवित्वा जेट्ठपुत्तं कुमारं आमन्तापेत्वा एतदवोच। **समुद्दपरियन्तं** ति परिक्खित्तएकसमुद्दपरियन्तमेव। इदञ्हिस्स कुलसन्तकं। चक्कवाळपरियन्तं पन पुञ्ञिद्धिवसेन निब्बत्तं, न तं सक्का दातुं। कुलसन्तकं पन निय्यातेन्तो "समुद्दपरियन्तं" ति आह। **केसमस्सुं** ति तापसपब्बज्जं पब्बजन्तापि हि पठमं केसमस्सु ओहारेन्ति। ततो
15 पट्ठाय परुळ्हकेसे बन्धित्वा विचरन्ति। तेन वुत्तं—"केसमस्सुं ओहारेत्वा" ति।

कासायानी ति कसायरसपीतानि। आदितो एवं कत्वा पच्छा वक्कलानिपि धारेन्ति। **पब्बजी** ति पब्बजितो। पब्बजित्वा च अत्तनो मङ्गलवनुय्यानेयेव वसि। **राजिसिम्ही** ति राजसिम्हि। ब्राह्मण-
20 पब्बजिता हि "ब्राह्मणिसयो" ति वुच्चन्ति। सेतच्छत्तं पन पहाय राजपब्बजिता राजिसयो ति। **अन्तरधायी** ति अन्तरहितं निब्बुतदीपसिखा विय अभावं उपगतं। **पटिसंवेदेसी** ति कन्दन्तो परिदेवन्तो जानापेसि। **पेत्तिकं** ति पितितो आगतं दायज्जं न होति, न सक्का कुसीतेन हीनवीरियेन दस अकुसलकम्मपथे समादाय
25 वत्तन्तेन पापुणितुं। अत्तनो पन सुकतं कम्मं निस्साय दसविधं द्वादसविधं वा चक्कवत्तिवत्तं पूरेन्तेनेवेतं पत्तब्बं ति दीपेति। अथ नं वत्तपटिपत्तियं चोदेन्तो "इङ्घ त्वं" ति आदिमाह। तत्थ **अरिये** ति निद्दोसे। **चक्कवत्तिवत्ते** ति चक्कवत्तीनं वत्ते।

२. चक्कवत्तिअरियवत्तवण्णना

५. **धम्मं** (दी० नि० ३.४८) ति दसकुसलकम्मपथधम्मं। **निस्साया** ति तदधिट्ठानेन चेतसा तमेव निस्सयं कत्वा। **धम्मं सक्करोन्तो** ति यथा कतो सो धम्मो सुट्ठु कतो होति, एवमेतं करोन्तो। **धम्मं गरुं करोन्तो** ति तस्मिं गारवुप्पत्तिया तं गरुं करोन्तो। **धम्मं मानेन्तो** ति तमेव धम्मं पियञ्च भावनीयञ्च कत्वा 5 विहरन्तो। **धम्मं पूजेन्तो** ति तं अपदिसित्वा गन्धमालादिपूजनेनस्स पूजं करोन्तो। **धम्मं अपचायमानो** ति तस्सेव धम्मस्स अञ्जलि- R. 850 करणादीहि नीचवुत्तितं करोन्तो। **धम्मद्धजो धम्मकेतू** ति तं धम्मं B. 34 धजमिव पुरक्खत्वा केतुमिव च उक्खिपित्वा पवत्तिया धम्मद्धजो धम्मकेतु च हुत्वा ति अत्थो। **धम्माधिपतेय्यो** ति धम्माधिपतिभूतो 10 आगतभावेन धम्मवसेनेव सब्बकिरियानं करणेन धम्माधिपतेय्यो हुत्वा। **धम्मिकं रक्खावरणगुत्तिं संविदहस्सू** ति धम्मो अस्सा अत्थी ति धम्मिका, रक्खा च आवरणञ्च गुत्ति च रक्खावरणगुत्ति। तत्थ "परं रक्खन्तो अत्तानं रक्खती" (सं० नि० ४.१४५) ति वचनतो खन्तिआदयो रक्खा। वुत्तञ्हेतं "कथञ्च, भिक्खवे, परं रक्खन्तो 15 अत्तानं रक्खति। खन्तिया अविहिंसाय मेत्तचित्तता अनुद्दयता" (सं० नि० ४.१४५) ति। निवासनपारुपनगेहादीनं निवारणा आवरणं, चोरादिउपद्दवनिवारणत्थं गोपायना गुत्ति, तं सब्बम्पि सुट्ठु संविदहस्सु पवत्तय ठपेही ति अत्थो। इदानि यत्थ सा संविदहितब्बा, तं दस्सेन्तो **अन्तोजनस्मिं** तिआदिमाह। 20

तत्रायं सङ्खेपत्थो। अन्तोजनसङ्खातं तव पुत्तदारं सीलसंवरे पतिट्ठपेहि, वत्थगन्धमालादीनि चस्स देहि, सब्बोपद्दवे चस्स निवारेहि। बलकायादीसुपि एसेव नयो। अयं पन विसेसो—बलकायो कालं अनतिक्कमित्वा भत्तवेतनसम्पदानेनपि अनुग्गहेतब्बो। अभिसित्त-खत्तिया भद्र[1]स्साजानेय्यादिरतनसम्पदानेनपि उपसङ्गण्हितब्बा। 25

१. गद्रभ०—रो०।

अनुयन्तखत्तिया तेसं अनुरूपयानवाहनसम्पदानेनपि परितोसेतब्बा। ब्राह्मणा अन्नपानवत्थादिना देय्यधम्मेन। गहपतिका भत्तबीजनङ्गल-फालबलिबद्दादिसम्पदानेन। तथा निगमवासिनो नेगमा, जनपद-भासिनो च जानपदा। समितपापबाहितपापा समणब्राह्मणा
5 समणपरिक्खारसम्पदानेन सक्कातब्बा। मिगपक्खिनो अभयदानेन समस्सासेतब्बा।

विजिते ति अत्तनो आणापवत्तिट्ठाने। **अधम्मकारोति** अधम्म-किरिया। **मा पवत्तित्था** ति यथा नप्पवत्तति, तथा नं पटिपादेही
R. 851 ति अत्थो। **समणब्राह्मणा** ति समितपापबाहितपापा। **मदप्पमादा**
10 **पटिविरता** ति नवविधा मानमदा, पञ्चसु कामगुणेसु चित्तवोस्सज्जन-सङ्खाता पमादा च पटिविरता। **खन्तिसोरच्चे निविट्ठा** ति अधि-वासनखन्तियञ्च सुरतभावे च पतिट्ठिता। **एकमत्तानं** ति अत्तनो रागादीनं दमनादीहि एकमत्तानं दमेन्ति समेन्ति परिनिब्बापेन्ती ति
B. 35 वुच्चन्ति। **कालेन कालं** ति काले काले। **अभिनिवज्जेय्यासी** ति गूथं
15 विय विसं विय अग्गिं विय च सुट्ठु वज्जेय्यासि। **समादाया** ति सुरभिकुसुमदामं विय अमतं विय च सम्मा आदाय पवत्तेय्यासि[1]।

इध ठत्वा यत्तं समानेतब्बं। अन्तोजनस्मिं बलकायेपि एकं, खत्तियेसु एकं, अनुयन्तेसु एकं, ब्राह्मणगहपतिकेसु एकं, नेगमजानपदेसु एकं समणब्राह्मणेसु एकं, मिगपक्खीसु एकं, अधम्मकारप्पटिक्खेपो एकं,
20 अधनानं धनानुप्पदानं एकं समणब्राह्मणे उपसङ्कमित्वा पञ्हपुच्छनं एकं ति एवमेतं दसविधं होति। गहपतिके पन पक्खिजाते च विसुं कत्वा गणेन्तस्स द्वादसविधं होति। पुब्बे अवुत्तं वा गणेन्तेन अधम्मरागस्स च विसमलोभस्स च पहानवसेन द्वादसविधं वेदितब्बं। **इदं खो तात तं** ति इदं दसविधं द्वादसविधञ्च अरियचक्कवत्तिवत्तं
25 नाम। **वत्तमानस्सा** ति पूरेत्वा वत्तमानस्स। **तदहुपोसथे** तिआदि महासुदस्सने वुत्तं।

१ वत्तेय्यासि—रो०।

११. **समतेना** (दी० नि० ३.५१) ति अत्तनो मतिया। **सुदं** ति निपातमत्तं। **पसासती** ति अनुसासति। इदं वुत्तं होति—पोराणकं राजवंसं राजपवेणिं राजधम्मं पहाय अत्तनो मतिमत्ते ठत्वा जनपदं अनुसासती ति। एवमयं मघदेववंसस्स[1] कळारजनको विय दळ्हनेमिवंसस्स उपच्छेदको अन्तिमपुरिसो हुत्वा उप्पन्नो। **पुब्बेनापरं** ति पुब्बकालेन सदिसा हुत्वा अपरकालं। **जनपदा न पब्बन्ती** ति न वड्ढन्ति। **यथा तं पुब्बकानं** ति यथा पुब्बकानं राजूनं पुब्बे च पच्छा च सदिसायेव हुत्वा पब्बिंसु, तथा न पब्बन्ति। कत्थचि सुञ्ञा होन्ति हतविलुत्ता, तेलमधुफाणितादीसु चेव यागुभत्तादीसु च ओजापि परिहायित्था ति अत्थो।

अमच्चा पारिसज्जा ति अमच्चा चेव परिसावचरा च। **गणकमहामत्ता** ति अच्छिद्दकादिपाठगणका चेव महाअमच्चा च। **अनीकट्ठा** ति हत्थि आचरियादयो। **दोवारिका** ति द्वाररक्खिनो। **मन्तस्साजीविनो** ति मन्ता वुच्चति पञ्ञा, तं निस्सयं कत्वा ये जीवन्ति पण्डिता महामत्ता, तेसं एतं नामं।

३. आयुवण्णादिपरिहानिकथावण्णना

१२. **नो च खो अधनानं** (दी० नि० ३.५२) ति बलवलोभत्ता पन अधनानं दलिद्दमनुस्सानं धनं नानुप्पदासि। **नानुप्पदियमाने** ति अननुप्पदियमाने, अयमेव वा पाठो। **दालिद्दियं** ति दलिद्दभावो। **अत्तनो च जीवाही** ति सयञ्च जीवं यापेही ति अत्थो। **उद्धग्गिकं** ति आदीसु उपरूपरिभूमीसु फलदानवसेन उद्धमग्गमस्साति उद्धग्गिका। सग्गस्स हिता तत्रुपपत्तिजननतो ति सोवग्गिका। निब्बत्तट्ठाने सुखो विपाको अस्सा ति सुखविपाका। सुट्ठु अग्गानं दिब्बवण्णादीनं दसन्नं विसेसानं निब्बत्तनतो सग्गसंवत्तनिका। एवरूपं दक्खिणं दानं पतिट्ठपेती[2] ति अत्थो।

१. मखादेव०—रो०। २. पतिट्ठपेही ति—रो०।

R. 852 B. 36

१३. **पवड्डिस्सती** (दी० नि० ३.५३) ति वड्डिस्सति बहु भविस्सति । **सुनिसेधं निसेधेय्यं** ति सुट्ठु निसिद्धं कत्वा निसेधेय्यं । **मूलघच्चं** ति मूलहतं । **खरस्सरेना** ति फरुससद्देन । **पणवेना** ति वज्झभेरिया ।

5 १४. **सीसानि नेसं छिन्दिस्सामा** (दी० नि० ३.५४) ति येसं अन्तमसो मूलकमुट्ठिम्पि हरिस्साम, तेसं तथेव सीसानि छिन्दिस्साम, यथा कोचि हतभावम्पि न जानिस्सति, अम्हाकं दानि किमेत्थ राजापि एवं उट्ठाय परं मारेती ति अयं नेसं अधिप्पायो । **उपक्कमिंसु** ति आरभिंसु । **पन्थदुहनं** ति पन्थघातं, पन्थे ठत्वा चोरकम्मं ।

10 १५. **न हि देवा** ति सो किर चिन्तेसि "अयं राजा सच्चं देवा ति मुखपटिञ्ञाय दिन्नाय मारापेति, हन्दाहं मुसावादं करोमी" ति मरणभया "न हि देवा" ति अवोच ।

R. 853 १७. **एकिदं** ति एत्थ इदं ति निपातमत्तं, एके सत्ता ति अत्थो । **चारित्तं** ति मिच्छाचारं । **अभिज्झाब्यापादा** ति अभिज्झा च ब्यापादो

15 च । **मिच्छादिट्ठी** ति नत्थि दिन्नं तिआदिका अन्तग्गाहिका पच्चनीकदिट्ठि ।

२२. **अधम्मरागो** (दी० नि० ३.५६) ति माता मातुच्छा पितुच्छा मातुलानीतिआदिके अयुत्तट्ठाने रागो । **विसमलोभो** ति परिभोगयुत्तेसुपि ठानेसु अतिबलवलोभो । **मिच्छाधम्मो** ति पुरिसानं

20 पुरिसेसु इत्थीनञ्च इत्थीसु छन्दरागो ।

B. 37 अमत्तेय्यतातिआदीसु मातु हितो मत्तेय्यो, तस्स भावो मत्तेय्यता । मातरि सम्मा पटिपत्तिया एतं नामं । तस्सा अभावो चेव तप्पटिपक्खता च अमत्तेय्यता । **अपेत्तेय्यता** दीसुपि एसेव नयो । **न कुले जेट्ठापचायिता** ति कुले जेट्ठानं अपचितिया नीचवुत्तिया

25 अकरणभावो ।

४. दसवस्सायुकसमयवण्णना

२४. **यं इमेसं** ति यस्मिं समये इमेसं। **अलंपतेय्या** ति पतिनो दातुं युत्ता। **इमानि रसानी** ति इमानि लोके अग्गरसानि। **अतिब्यादिप्पिस्सन्ती** ति अतिविय दिप्पिस्सन्ति, अयमेव वा पाठो। **कुसलं तिपि न भविस्सती** ति कुसलं ति नामम्पि न भविस्सति, पञ्ञत्तिमत्तम्पि न पञ्ञायिस्सती ति अत्थो। **पूजा च भविस्सन्ति पासंसा चा** ति पूजारहा च भविस्सन्ति पसंसारहा च। तदा किर मनुस्सा "असुकेन नाम माता पहता, पिता पहतो, समणब्राह्मणा जीविता वोरोपिता, कुले जेट्ठानं अत्थिभावम्पि न जानाति, अहो पुरिसो" ति तमेव पूजेस्सन्ति चेव पसंसिस्सन्ति च।

न भविस्सति माता ति वा ति अयं मय्हं माता ति गरुचित्तं न भविस्सति। गेहे मातुगामं विय नानाविधं असब्भिकथं कथयमाना अगारवुपचारेन उपसङ्कमिस्सन्ति। **मातुच्छादीसुपि** एसेव नयो। एत्थ च **मातुच्छा** ति मातुभगिनी। **मातुलानी** ति मातुलभरिया। **आचरियभरिया** ति सिप्पायतनानि सिक्खापकस्स आचरियस्स भरिया। **गरूनं दारा** ति चूळपितुमहापितुआदीनं भरिया। **सम्भेदं** ति मिस्सीभाव, मरियादभेदं वा। 15 R. 854

तिब्बो आघातो पच्चुपट्ठितो भविस्सती ति बलवकोपो पुनप्पुनं उप्पत्तिवसेन पच्चुपट्ठितो भविस्सति। अपरानि द्वे एतस्सेव वेवचनानि। कोपो हि चित्तं आघातेती ति **आघातो**। अत्तनो च परस्स च हितसुखं ब्यापादेती ति **ब्यापादो**। मनोपदूसनतो **मनोपदोसो** ति वुच्चति। **तिब्बं वधकचित्तं** ति पियमानस्सापि परं मारणत्थाय वधकचित्तं। तस्स वत्थुं दस्सेतुं **मातुपि पुत्तम्ही** तिआदि वुत्तं। **मागधिकस्सा** ति मिगलुद्दकस्स। B. 38

२५. **सत्थन्तरकप्पो** (दी० नि० ३.५८) ति सत्थेन अन्तरकप्पो। संवट्टकप्पं अप्पत्वा अन्तराव लोकविनासो। अन्तरकप्पो च नामेस **दुब्भिक्खन्तरकप्पो रोगन्तरकप्पो सत्थन्तरकप्पो** ति

तिविधो। तत्थ लोभुस्सदाय पजाय दुब्भिक्खन्तरकप्पो होति। मोहुस्सदाय रोगन्तरकप्पो। दोसुस्सदाय सत्थन्तरकप्पो। तत्थ दुब्भिक्खन्तरकप्पेन नट्ठा येभुय्येन पेत्तिविसये उपपज्जन्ति। कस्मा? आहारनिकन्तिया बलवत्ता। रोगन्तरकप्पेन नट्ठा येभुय्येन सग्गे
5 निब्बत्तन्ति? तेसञ्हि "अहो वतञ्ञेसं सत्तानं एवरूपो रोगो न भवेय्या" ति मेत्तचित्तं उप्पज्जती ति। सत्थन्तरकप्पेन नट्ठा येभुय्येन निरय उपपज्जन्ति। कस्मा? अञ्ञमञ्ञं बलवाघातताय।

मिगसञ्ञं ति "अयं मिगो, अयं मिगो" ति सञ्ञं। **तिण्हानि सत्थानि हत्थेसु पातुभविस्सन्ती** ति तेसं किर हत्थेन फुट्ठमत्तं यंकिञ्चि
10 अन्तमसो तिणपण्णं उपादाय आवुधमेव भविस्सति। **मा च मयं कञ्ची** ति मयं कञ्चि एकपुरिसम्पि जीविता मा वोरोपयिम्ह। **मा च अम्हे कोची** ति अम्हेपि कोचि एकपुरिसो जीविता मा वोरोपयित्थ। **यंनून मयं** ति अयं लोकविनासो पच्चुपट्ठितो, न सक्का द्वीहि एकट्ठाने ठितेहि जीवितं लद्धुं ति मञ्ञमाना एवं चिन्तयिंसु।
15 **वनगहनं** ति वनसङ्खातेहि तिणगुम्बलतादीहि गहनं दुप्पवेसट्ठानं[1]।
R. 855 **रुक्खगहणं** ति रुक्खेहि गहणं दुप्पवेसट्ठानं। **नदीविदुग्गं** ति नदीनं अन्तरदीपादीसु दुग्गमनट्ठानं। **पब्बतविसमं** ति पब्बतेहि विसमं, पब्बतेसुपि वा विसमट्ठानं। **सभागायिस्सन्ती** ति यथा अहं जीवामि दिट्ठा भो सत्ता, त्वम्पि तथा जीवसी ति एवं सम्मोदनकथाय[2] अत्तना
20 सभागे करिस्सन्ति।

५. आयुवण्णादिवड्ढनकथावण्णना

२७. **आयतं** (दी० नि० ३.५८) ति महन्तं। **पाणातिपाता विरमेय्यामा** ति पाणातिपाततो ओसक्केय्याम। पाणातिपातं विरमेय्यामातिपि सज्झायन्ति, तत्थ पाणातिपातं पजहेय्यामा ति
B. 39 अत्थो। **वीसतिवस्सायुका** ति मातापितरो पाणातिपाता पटिविरता,

१ गहणट्ठानं—रो०। २. सम्मोदमानकथाय—रो०।

पुत्ता कस्मा वीसतिवस्सायुका अहेसुं ति खेत्तविसुद्धिया। तेसञ्हि मातापितरो सीलवन्तो जाता। इति सीलगब्भे वड्ढितत्ता इमाय खेत्तविसुद्धिया दीघायुका अहेसुं। ये पनेत्थ कालं कत्वा तत्थेव निब्बत्ता, ते अत्तनोव सीलसम्पत्तिया दीघायुका अहेसुं।

अस्साम ति भवेय्याम। **चत्तारीसवस्सायुका**तिआदयो कोट्ठासा 5 अदिन्नादानादीहि पटिविरतानं वसेन वेदितब्बा।

६. सङ्खराजउप्पत्तिवण्णना

२९. **इच्छा** (दी० नि० ३.५९) ति मय्हं भत्तं देथा ति एवं उप्पज्जनकतण्हा। **अनसनं** ति न असनं अविप्फारिकभावो कायालसियं, भत्तं भुत्तानं भत्तसम्मदपच्चया निपज्जितुकामताजनको कायदुब्बलभावो ति अत्थो। **जरा** ति पाकटजरा। **कुक्कुटसम्पातिका** 10 ति एकगामस्स छदनपिट्ठतो उप्पतित्वा इतरगामस्स छदनपिट्ठे पतनसङ्खातो कुक्कुटसम्पातो। एतासु अत्थी ति कुक्कुटसम्पातिका। "कुक्कुटसम्पादिका" तिपि पाठो। गामन्तरतो गामन्तरं कुक्कुटानं पदसा गमनसङ्खातो कुक्कुटसम्पादो। एतासु अत्थी ति अत्थो। उभयम्पेतं घननिवासनंयेव दीपेति। **अवीचि मञ्ञे फुटो** 15 **भविस्सती** ति अवीचिमहानिरयो विय निरन्तरपूरितो भविस्सति।

३०. "असीतिवस्ससहस्सायुकेसु, भिक्खवे, मनुस्सेसु **मेत्तेय्यो** नाम भगवा लोके उप्पज्जिस्सती" ति न वड्ढमानकवसेन वुत्तं। न हि बुद्धा वड्ढमाने आयुम्हि निब्बत्तन्ति, हायमाने[1] पन निब्बत्तन्ति। तस्मा यदा तं आयुं वड्ढित्वा असङ्ख्येय्यतं पत्वा पुन हायमानं[2] 20 R. 856 असीतिवस्ससहस्सकाले ठस्सति, तदा उप्पज्जिस्सती ति अत्थो। **परिहरिस्सती** ति इदं पन[3] परिवारेत्वा विचरन्तानं वसेन वुत्तं। **यूपो** ति पासादो। **रञ्ञा महापनादेन कारापितो** ति रञ्ञा

१. भस्समाने—रो०। २. भस्समानं—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि।

हेतुभूतेन तस्सत्थाय सक्केन देवराजेन विस्सकम्मदेवपुत्तं पेसेत्वा कारापितो। पुब्बे किर द्वे पितापुत्ता नळकारा पच्चेकबुद्धस्स नळेहि च उदुम्बरेहि च पण्णसालं कारापेत्वा तं तत्थ वासापेत्वा चतूहि पच्चयेहि उपट्ठहिंसु। ते कालं कत्वा देवलोके निब्बत्ता। तेसु पिता देवलोकेयेव अट्ठासि। पुत्तो देवलोका चवित्वा सुरुचिस्स रञ्ञो देविया सुमेधाय कुच्छिस्मिं निब्बत्तो। महापनादो नाम कुमारो अहोसि। सो अपरभागे छत्तं उस्सापेत्वा महापनादो नाम राजा जातो। अथस्स पुञ्ञानुभावेन सक्को देवराजा विस्सकम्मदेवपुत्तं रञ्ञो पासादं करोही ति पहिणि सो तस्स पासादं निम्मिनि पञ्चवीसतियोजनुब्बेधं सत्तरतनमयं सतभूमकं। यं सन्धाय जातके वुत्तं—

"पनादो नाम सो राजा, यस्स यूपो सुवण्णयो।
तिरियं सोळसुब्बेधो[1], उद्धमाहु[2] सहस्सधा।
सहस्सकण्डो सतगेण्डु[3], धजालु हरितामयो।
अनच्चुं तत्थ गन्धब्बा, छ सहस्सानि सत्तधा।
एवमेतं तदा आदि, यथा भाससि भद्दजि।
सक्को अहं तदा आसिं, वेय्यावच्चकरो तव"

(जा० १.७१) ति।

सो राजा तत्थ यावतायुकं वसित्वा कालं[4] कत्वा[4] देवलोके निब्बत्ति। तस्मिं देवलोके निब्बत्ते सो पासादो महागङ्गाय अनुसोतं पति। तस्स धुरसोपानसम्मुखट्ठाने पयागपतिट्ठानं नाम नगरं मापितं। थुपिकासम्मुखट्ठाने कोटिगामो नाम। अपरभागे अम्हाकं भगवतो काले सो नळकारदेवपुत्तो देवलोकतो चवित्वा मनुस्सपथे भद्दजिसेट्ठि नाम हुत्वा सत्थु सन्तिके पब्बजित्वा अरहत्तं पापुणि। सो नावाय गङ्गातरणदिवसे भिक्खुसंघस्स तं पासादं दस्सेती ति

१. सोळसपब्बेधो—रो०। २. उब्भमाहु—रो०।
३. सतभेण्डु—रो०। ४-४. रो० पोत्थके नत्थि।

वत्थु वित्थारेतब्बं। कस्मा पनेस पासादो न अन्तरहितो ति? इतरस्स आनुभावा। तेन सद्धिं पुञ्ञं कत्वा देवलोके निब्बत्तकुलपुत्तो अनागते सङ्खो नाम राजा भविस्सति। तस्स परिभोगत्थाय सो पासादो उट्ठहिस्सति, तस्मा न अन्तरहितो ति। R. 857

३१. **उस्सापेत्वा** (दी० नि० ३.६०) ति तं पासादं उट्ठापेत्वा। **अज्झावसित्वा** ति तत्थ वसित्वा। **तं दत्वा विस्सज्जित्वा** ति तं पासादं दानवसेन दत्वा निरपेक्खो परिच्चागवसेन च विस्सज्जित्वा। कस्स च एवं दत्वा ति? समणादीनं। तेनाह—"समणब्राह्मण-कपणद्धिकवनिब्बकयाचकानं दानं दत्वा" ति। कथं पन सो एकं पासादं बहूनं दस्सती ति? एवं किरस्स चित्तं उप्पज्जिस्सति "अयं पासादो विप्पकिरियतू" ति। सो खण्डखण्डसो विप्पकिरिस्सति। सो तं अलग्गमानोव हुत्वा "यो यत्तकं इच्छति, सो तत्तकं गण्हतू" ति दानवसेन विस्सज्जिस्सति। तेन वुत्तं—"दानं दत्वा मेत्तेय्यस्स भगवतो...पे... विहरिस्सती" ति। एत्तकेन भगवा वट्टगामिकुसलस्स अनुसन्धिं दस्सेति[१]। 5 B. 41 10 15

३२. इदानि विवट्टगामिकुसलस्स अनुसन्धिं दस्सेन्तो पुन **अत्तदीपा भिक्खवे विहरथा** (दी० नि० ३.६१) तिआदिमाह।

७. भिक्खुनो आयुवण्णादिवड्ढनकथावण्णना

३३. **इदं खो भिक्खवे,** (दी० नि० ३.६२) **भिक्खुनो आयुस्मिं** ति भिक्खवे यं वो अहं आयुनापि वड्ढिस्सथा ति अवोचं, तत्थ इदं भिक्खुनो आयुस्मिं इदं[२] आयुकारणं ति अत्थो। तस्मा तुम्हेहि आयुना वड्ढितुकामेहि इमे चत्तारो इद्धिपादा भावेतब्बा ति दस्सेति। 20

वण्णस्मिं ति यं वो अहं वण्णेनपि वड्ढिस्सथा ति अवोचं, इदं तत्थ वण्णकारणं। सीलवतो हि अविप्पटिसारादीनं वसेन

१. दस्सेसि—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

सरीरवण्णोपि कित्तिवसेन गुणवण्णोपि वड्ढति । तस्मा तुम्हेहि वण्णेन वड्ढितुकामेहि सीलसम्पन्नेहि भवितब्बं ति दस्सेति ।

सुखस्मि ति यं वो अहं सुखेनपि वड्ढिस्सथा ति अवोचं, इदं तत्थ विवेकजं पीतिसुखादिनानप्पकारकं झानसुखं । तस्मा तुम्हेहि सुखेन
5 वड्ढितुकामेहि इमानि चत्तारि झानानि भावेतब्बानि ।

भोगस्मि ति यं वो अहं भोगेनपि वड्ढिस्सथा ति अवोचं, अयं सो अप्पमाणानं सत्तानं अप्पटिकूलतावहो सुखसयनादि एकादसानिसंसो सब्बदिसाविप्फारितब्रह्मविहारभोगो । तुम्हेहि भोगेन वड्ढितुकामेहि इमे ब्रह्मविहारा भावेतब्बा ।

B. 42 10 **बलस्मि** ति यं वो अहं बलेनपि वड्ढिस्सथा ति अवोचं,
R. 858 इदं[1] आसवक्खयपरियोसाने उप्पन्नं अरहत्तफलसङ्खातं बलं । तस्मा तुम्हेहि बलेन वड्ढितुकामेहि अरहत्तप्पत्तिया योगो करणीयो ।

यथयिदं, भिक्खवे, मारबलं ति यथा इदं देवपुत्तमारमच्चुमारकिलेसमारानं बलं दुप्पसहं दुरभिसम्भवं एवं[2] अञ्ञं लोके एकबलम्पि
15 न समनुपस्सामि । तम्पि बलं इदमेव अरहत्तफलं पसहति अभिभवति अज्झोत्थरति । तस्मा एत्थेव योगो करणीयो ति दस्सेति ।

एवमिदं पुञ्ञं ति एवं इदं लोकुत्तरपुञ्ञम्पि याव आसवक्खया पवड्ढती ति विवट्टगामिकुसलानुसन्धिं निट्ठपेन्तो अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठपेसि । सुत्तपरियोसाने वीसति भिक्खुसहस्सानि अरहत्तं
20 पापुणिंसु । चतुरासी ति पाणसहस्सानि अमतपानं पिविंसू ति ।

चक्कवत्तिसुत्तवण्णना निट्ठिता ।

१. इदं तं—रो० । २. रो० पोत्थके नत्थि ।

४. अग्गञ्ञसुत्तवण्णना

१. वासेट्ठभारद्वाजवण्णना

१. एवं मे सुतं (दी० नि० ३.६३) ति अग्गञ्ञसुत्तं। B. 43 R. 859
तत्रायमनुत्तानपदवण्णना। **पुब्बारामे मिगारमातुपासादे** ति एत्थ अयं अनुपुब्बिकथा। अतीते सतसहस्सकप्पमत्थके एका उपासिका पदुमुत्तरं भगवन्तं निमन्तेत्वा बुद्धप्पमुखस्स भिक्खुसतसहस्सस्स दानं दत्वा भगवतो पादमूले निपज्जित्वा "अनागते तुम्हादिसस्स बुद्धस्स 5 अग्गुपट्ठायिका होमी" ति पत्थनं अकासि। सा कप्पसतसहस्सं देवेसु चेव मनुस्सेसु च संसरित्वा अम्हाकं भगवतो काले भद्दियनगरे मेण्डकसेट्ठिपुत्तस्स धनञ्जयसेट्ठिनो गेहे सुमनदेविया कुच्छिम्हि पटिसन्धिं गण्हि। जातकाले तस्सा विसाखाति नामं अकंसु। सा यदा भगवा भद्दियनगरं अगमासि, तदा पञ्चदासिसतेहि[१] सद्धिं 10 भगवतो पच्चुग्गमनं कत्वा पठमदस्सनम्हियेव सोतापन्ना अहोसि।

अपरभागे सावत्थियं मिगारसेट्ठिपुत्तस्स पुण्णवड्ढनकुमारस्स गेहं गता। तत्थ नं मिगारसेट्ठि मातुट्ठाने ठपेसि। तस्मा **मिगारमाता** ति वुच्चति। पतिकुलं गच्छन्तिया चस्सा पिता महालतापिळन्धनं नाम कारापेसि। तस्मिं पिळन्धने चतस्सो वजिरनाळियो, उपयोगं 15 अगमंसु, मुत्तानं एकादस नाळियो, पवाळस्स द्वावीसति नाळियो, मणीनं तेत्तिंस नाळियो। इति एतेहि च अञ्ञेहि च सत्तहि[२] रतनेहि निट्ठानं अगमासि। तं सीसे पटिमुक्कं याव पादपिट्ठिया भस्सति। पञ्चन्नं हत्थीनं बलं धारयमानाव नं इत्थी धारेतुं सक्कोति। सा अपरभागे दसबलस्स अग्गुपट्ठायिका हुत्वा तं पनाधनं विस्सज्जेत्वा 20 नवहि कोटीहि भगवतो विहारं कारयमाना करीसमत्ते भूमिभागे पासादं कारेसि। तस्स उपरिभूमियं पञ्च गब्भसतानि होन्ति, R. 860

१. पञ्चहि दारिकासतेहि—रो०। २. सत्त वण्णेहि वररतनेहि—रो०।

हेट्ठिमभूमियं पञ्च[1] ति गब्भसहस्सप्पटिमण्डितो अहोसि। सा "सुद्धपासादोव न सोभती" ति तं परिवारेत्वा पञ्च दुवड्ढगेहसतानि, पञ्च चूळपासादसतानि, पञ्च दीघसालसतानि च कारापेसि। विहारमहो चतूहि मासेहि निट्ठानं अगमासि।

B. 44 5 मातुगामत्तभावे ठिताय विसाखाय विय अञ्ञिस्सा बुद्धसासने धनपरिच्चागो नाम नत्थि, पुरिसत्तभावे ठितस्स अनाथपिण्डकस्स[2] अञ्ञस्साति। सो हि चतुपण्णासकोटियो विस्सज्जेत्वा सावत्थिया दक्खिणभागे अनुराधपुरस्स महाविहारसदिसे ठाने जेतवनमहाविहारं नाम कारेसि। विसाखा सावत्थिया पाचीनभागे उत्तरदेविया[3] 10 विहारसदिसे ठाने पुब्बारामं नाम कारेसि। भगवा इमेसं द्विन्नं कुलानं अनुकम्पाय सावत्थिं निस्साय विहरन्तो इमेसु द्वीसु विहारेसु निबद्धवासं वसि। एकं अन्तोवस्सं जेतवने वसति, एकं पुब्बरामे। तस्मिं समये पन भगवा पुब्बारामे विहरति। तेन वुत्तं "पुब्बारामे मिगारमातुपासादे" ति।

15 **वासेट्ठभारद्वाजा** ति वासेट्ठो च सामणेरो भारद्वाजो च। **भिक्खूसु परिवसन्ती** ति ते नेव तित्थियपरिवासं वसन्ति, न आपत्ति परिवासं। अपरिपुण्णवस्सत्ता पन भिक्खु भावं पत्थयमाना वसन्ति। तेनेवाह "भिक्खुभावं आकङ्खमाना" ति। उभोपि हेते उदिच्च ब्राह्मणमहासाल-कुले निब्बत्ता, चत्तालीस कोटिविभवा तिण्णंवेदानं पारगू मज्झिम-20 निकाये **वासेट्ठसुत्तं** सुत्वा सरणं गता, **तेविज्जसुत्तं** सुत्वा पब्बजित्वा इमस्मिं काले भिक्खुभावं आकङ्खमाना परिवसन्ति। **अब्भोकासे चङ्कमती** ति उत्तर-दक्खिणेन आयतस्स पासादस्स पुरत्थिमदिसाभागे पासादच्छायायं यन्तरज्जूहि आकड्ढियमानं रतनसतुब्बेधं सुवण्णअग्घिकं विय अनिलपथे विधावन्तीहि छब्बण्णाहि बुद्धरस्मीहि सोभमानो 25 अपरापरं चङ्कमति।

१. पञ्चसतानि—रो०। २. ०विय—रो०।
३ उत्तमादेविया—रो०।

३. **अनुचङ्कमिंसू** ति अञ्जलिं पग्गय्ह ओनतसरीरा हुत्वा अनुवत्तमाना चङ्कमिंसु। **वासेट्ठं आमन्तेसी** ति सो तेसं पण्डिततरो गहेतब्बं विस्सज्जेतब्बञ्च जानाति, तस्मा तं आमन्तेसि। **तुम्हे ख्वत्था** ति तुम्हे खो अत्थ। **ब्राह्मणजच्चा** ति, ब्राह्मणजातिका। **ब्राह्मण-कुलीना** ति ब्राह्मणेसु कुलीना कुलसम्पन्ना। **ब्राह्मणकुला** ति ब्राह्मण- 5 R. 861 कुलतो, भोगादिसम्पन्नं ब्राह्मणकुलं पहाया ति अत्थो। **न अक्कोसन्ती** ति दसविधेन अक्कोसवत्थूना न अक्कोसन्ति। **न परिभासन्ती** ति नानाविधाय पनिभवकथाय न परिभासन्ती[1] ति अत्थो। इति भगवा B. 45 "ब्राह्मणा इमे सामणेरे अक्कोसन्ति परिभासन्ती" ति जानमानोव पुच्छति। कस्मा? इमे मया अपुच्छिता पठमतरं न कथेस्सन्ति, 10 अकथिते कथा न समुट्ठाती ति कथासमुट्ठापनत्थाय। **तग्घा** ति एकंसवचने निपातो। एकंसेनेव नो, भन्ते, ब्राह्मणा अक्कोसन्ति परिभासन्ती ति वुत्तं होति। **अत्तरूपाया** ति अत्तनो अनुरूपाय **परिपुण्णाया** ति यथारुचि पदब्यञ्जनानिआरोपेत्वा ओरोपेत्वा परि-पूरिताय। **नो अपरिपुण्णाया** ति अन्तरा अट्ठपिताय निरन्तरं 15 पवत्ताय।

कस्मा पन ब्राह्मणा इमे सामणेरे अक्कोसन्ती ति? अप्पतिट्ठताय। इमे हि सामणेरा अग्गब्राह्मणानं पुत्ता तिण्णं बेदानं पारगू जम्बुदीपे ब्राह्मणानं अन्तरे पाकटा सम्भाविता तेसं पब्बजितत्ता अञ्ञे ब्राह्मण-पुत्ता पब्बजिंसु। अथ खो ब्राह्मणा "अपतिट्ठा मयं जाता" ति इमाय 20 अप्पतिट्ठताय गामद्वारेपि अन्तोगामेपि ते दिस्वा "तुम्हेहि ब्राह्मणसमयो भिन्नो, मुण्डसमणकस्स पच्छतो पच्छतो रसगिद्धा हुत्वा विचरथा" तिआदीनि चेव पाळियं आगतानि "ब्राह्मणोव सेट्ठो वण्णो" तिआदीनि च वत्वा अक्कोसन्ति। सामणेरा तेसु अक्कोसन्तेसुपि कोपं वा आघातं वा अकत्वा केवलं भगवता पुट्ठा "तग्घ नो, भन्ते, ब्राह्मणा अक्कोसन्ति 25 परिभासन्ती" ति आरोचेसुं। अथ ने भगवा अक्कोसनाकारं पुच्छन्तो

[1] गरहन्ती ति—रो०।

यथा कथं पन वो ति पुच्छति। ते आचिक्खन्ता **ब्राह्मणा** भन्ते, ति आदिमाहंसु।

तत्थ **सेट्ठो वण्णो** ति जातिगोत्तादीनं पञ्ञापनट्ठाने ब्राह्मणोव सेट्ठो ति दस्सेन्ति। **हीना अञ्ञे वण्णो** ति इतरे तयो वण्णा हीना 5 लामका ति वदन्ति। **सुक्को** ति पण्डरो। **कण्हो** ति काळको। **सुज्झन्ती** ति जातिगोत्तादीनं पञ्ञापनट्ठाने सुज्झन्ति। **ब्रह्मुनो पुत्ता** ति महाब्रह्मुनो पुत्ता। **ओरसा मुखतो जाता** ति उरे वसित्वा मुखतो R. 862 निक्खन्ता, उरे कत्वा संवड्ढिता ति वा ओरसा। **ब्रह्मजा** ति ब्रह्मतो निब्बत्तो। **ब्रह्मनिम्मिता** ति ब्रह्मुना निम्मिता। **ब्रह्मदायादा** ति 10 ब्रह्मुनो दायादा। **हीनमत्थ वण्णं अज्झुपगता** ति हीनं वण्णं अज्झु- B. 46 पगतत्थ। **मुण्डके समणके** ति निन्दन्ता जीगुच्छन्ता वदन्ति, न मुण्डकमत्तञ्चेव समणमत्तञ्च सन्धाय। **इब्भे** ति गहपतिके। **कण्हे** ति काळके। **बन्धू** ति मारस्स बन्धुभूते मारपक्खिके **पादापच्चे** (दी० नि० ३.६४) ति महाब्रह्मुनो पादानं अपच्चभूते पादतो जाते ति 15 अधिप्पायो।

४. "तग्घ वो, वासेट्ठ, ब्राह्मणा पोराणं अस्सरन्ता एवमाहंसु" ति एत्थ **वो** ति निपातमत्तं, सामिवचनं वा, तुम्हाकं ब्राह्मणा ति अत्थो। **पोराणं** ति पोराणकं अग्गञ्ञं लोकुप्पत्तिचरियवंसं। **अस्सरन्ता** ति अस्सरमाना। इदं वुत्तं होति, एकंसेन वो, वासेट्ठ, 20 ब्राह्मणा पोराणं लोकुप्पत्तिं अननुस्सरन्ता अजानन्ता एवं वदन्ती ति। "दिस्सन्ति खो पना" ति एवमादि तेसं लद्धिभिन्दनत्थाय वुत्तं। तत्थ **ब्राह्मणियो** ति ब्राह्मणानं पुत्तप्पटिलाभत्थाय आवाहविवाहवसेन कुलं आनीता ब्राह्मणियो दिस्सन्ति। ता खो पनेता, अपरेन समयेन उतुनियोपि होन्ति, सञ्जातपुप्फा ति अत्थो। **गब्भिनियो** ति 25 सञ्जातगब्भा। **विजायमाना** ति पुत्तधीतरो जनयमाना। **पाययमाना** ति दारके थञ्ञं पायन्तियो। **योनिजाव समाना** ति ब्राह्मणीनं पस्साव-मग्गेन जाता समाना। **एवमाहंसू** ति एवं वदन्ति। कथं? "ब्राह्मणोव

सेट्ठो वण्णो ...पे०... ब्रह्मदायादा" ति। यदि पन नेसं तं[1] सच्चवचनं सिया, ब्राह्मणीनं कुच्छि महाब्रह्मस्स उरो भवेय्य, ब्राह्मणीनं पस्सावमग्गो महाब्रह्मुनो मुखं भवेय्य, न खो पनेतं एवं दट्ठब्बं[2]। तेनाह "ते च ब्रह्मानञ्चेव अब्भाचिक्खन्ती" तिआदि।

२. चतुवण्णसुद्धिवण्णना

५. एत्तावता "मयं महाब्रह्मुनो उरे वसित्वा मुखतो निक्खन्ता 5
ति वत्तुं मा लभन्तू" ति इमं मुखच्छेदकवादं वत्वा पुन चत्तारोपि
वण्णा कुसले धम्मे समादाय वत्तन्ताव सुज्झन्ती ति दस्सनत्थं R. 863
चत्तारोमे वासेट्ठ वण्णा तिआदिमाह। **अकुसलसङ्खाता** ति अकुसला
ति सङ्खाता अकुसलकोट्ठासभूता वा[3]। एस नयो सब्बत्थ। **न
अलमरिया** ति अरियभावे असमत्था। **कण्हा** ति पकतिकाळका। 10
कण्हविपाका ति विपाकोपि नेसं कण्हो दुक्खोति अत्थो। **खत्तियेपि** B. 47
ते ति खत्तियम्हिपि ते। **एकच्चे** ति एकस्मिं। एस नयो सब्बत्थ।

सुक्का ति निक्किलेसभावेन पण्डरा। **सुक्कविपाका** ति विपाकोपि नेसं सुक्को सुखोति अत्थो।

६. **उभयवोकिण्णेसु वत्तमानेसू** (दी० नि० ३.६५) ति उभयेसु 15
वोकिण्णेसु मिस्सीभूतेसु हुत्वा वत्तमानेसु। कतमेसु उभयेसू ति?
कण्हसुक्केसु धम्मेसु विञ्ञुगरहितेसु चेव विञ्ञुप्पसत्थेसु च। **यदेत्थ
ब्राह्मणा एवमाहंसू** ति एत्थ एतेसु कण्हसुक्कधम्मेसु वत्तमानापि ब्राह्मणा
यदेतं एवं वदन्ति "ब्राह्मणोव सेट्ठो वण्णो" तिआदि। **तं नेसं
विञ्ञू नानुजानन्ती** ति ये लोके पण्डिता, ते नानुमोदन्ति, न 20
पसंसन्ती ति अत्थो। तं किस्स हेतु? **इमेसञ्हि वासेट्ठा** तिआदिम्हि
अयं सङ्खेपत्थो। यं वुत्तं नानुजानन्तीति, तं कस्मा ति चे। यस्मा

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. ति वा—रो०।

इमेसं चतुन्नं वण्णानं यो भिक्खु अरहं...पे...सम्मदञ्ञा विमुत्तो, सो तेसं अग्गमक्खायति, ते च[1] न एवरूपा। तस्मा नेसं विञ्ञू नानुजानन्ति।

अरहं तिआदिपदेसु चेत्थ किलेसानं आरकत्तादीहि कारणेहि 5 **अरहं**। आसवानं खीणत्ता **खीणासवो**। सत्त सेक्खा पुथुज्जनकल्याणका च ब्रह्मचरियवासं वसन्ति नाम। अयं पन वुत्थवासो ति **वुसितवा**। चतूहि मग्गेहि चतूसु सच्चेसु परिजाननादिकरणीयं कतं अस्सा ति **कतकरणीयो**। किलेसभारो च खन्धभारो च ओहितो अस्सा ति **ओहितभारो**। ओहितो ति ओतारितो। सुन्दरो अत्थो, सको वा 10 अत्थो सदत्थो, अनुप्पत्तो सदत्थो एतेना ति **अनुप्पत्तसदत्थो**। भवसंयोजनं वुच्चति तण्हा, सा परिक्खीणा अस्सा ति **परिक्खीणभव-संयोजनो**। **सम्मदञ्ञा विमुत्तो** ति सम्मा हेतुना कारणेन जानित्वा विमुत्तो। जनेतस्मिं ति जने एतस्मिं, इमस्मिं लोके ति अत्थो। **दिट्ठे चेव धम्मे अभिसम्परायञ्चा** ति इधत्तभावे च परत्तभावे च।

B. 48 15 ७. **अनन्तरा** ति अन्तरविरहिता, अत्तनो कुलेन सदिसा ति अत्थो। **अनुयुत्ता** ति वसवत्तिनो। **निपच्चकारं** ति महल्लकतरा निपच्चकारं दस्सेन्ति। दहरतरा अभिवादनादीनि करोन्ति। तत्थ **सामीचिकम्मं** ति तंतंवत्तकरणादि अनुच्छविककम्मं।

८. **निविट्ठा** (दी० नि० ३.६६) अभिनिविट्ठा अचलट्ठिता। 20 कस्स पन एवरूपा सद्धा होती ति ? सोतापन्नस्स। सो हि निविट्ठसद्धो असिना सीसे छेज्जमानेपि बुद्धो अबुद्धो ति वा, धम्मो अधम्मो ति वा, संघो असंघो ति वा न वदति। पतिट्ठितसद्धो होति सूरम्बट्ठो विय।

सो किर सत्थु धम्मदेसनं सुत्वा सोतापन्नो हुत्वा गेहं अगमासि। 25 अथ मारो द्वत्तिंसवरलक्खणप्पटिमण्डितं बुद्धरूपं मापेत्वा तस्स घरद्वारे ठत्वा "सत्था आगतो" ति सासनं पहिणि। सूरम्बट्ठो

[1] रो० पोत्थके नत्थि।

चिन्तेसि "अहं इदानेव सत्थु सन्तिके धम्मं सुत्वा आगतो, किं नु खो भविस्सती" ति उपसङ्कमित्वा सत्थुसञ्ञाय वन्दित्वा अट्ठासि। मारो आह—"अम्बट्ठ, यं ते मया 'रूपं अनिच्चं ...पे... विञ्ञाणं अनिच्चं ति कथितं, तं दुक्कथितं। अनुपधारेत्वाव हि मया एवं वुत्तं। तस्मा त्वं 'रूपं निच्चं...पे...विञ्ञाणं निच्चं' ति गण्हाही" 5
ति। सो[1] चिन्तेसि—"अट्ठानमेतं यं बुद्धा अनुपधारेत्वा अपच्चक्खं कत्वा किञ्चि कथेय्युं, अद्धा अयं मय्हं विच्छिन्दजननत्थं मारो आगतो" ति। ततो नं "त्वं मारोसी" ति आह। सो मुसावादं कातुं नासक्खि। "आम मारोस्मी" ति पटिजानाति। "कस्मा आगतोसी" ति? तव सद्धाचालनत्थं ति आह। "कण्ह पापिम, 10
त्वं ताव एको तिट्ठ, तादिसानं मारानं सतम्पि सहस्सम्पि सतसहस्सम्पि मम सद्धं चालेतुं असमत्थं, मग्गेन आगतसद्धा नाम थिरा[2] सिलापथवियं पतिट्ठितसिनेरु विय अचला होति, किं त्वं एत्था" ति अच्छरं पहरि। सो ठातुं असक्कोन्तो तत्थेव अन्तरधायि। एवरूपं सद्धं सन्धायेतं वुत्त "निविट्ठा" ति। 15

मूलजाता पतिट्ठिता ति मग्गमूलस्स सञ्जातत्ता तेन मग्गमूलेन पतिट्ठिता। **दळ्हा** ति थिरा। **असंहारिया** ति सुनिखातइन्दखीलो R. 865
विय केनचि चालेतुं असक्कुणेय्या। **तस्सेतं कल्लं वचनाया** ति तस्स अरियसावकस्स युत्तमेतं वत्तुं। किं ति? "भगवतोम्हि पुत्तो ओरसो" ति एवमादि। सो हि भगवन्तं निस्साय अरियभूमियं 20 B. 49
जातो ति **भगवतो पुत्तो**। उरे वसित्वा मुखतो निक्खन्तधम्मघोसवसेन मग्गफलेसु पतिट्ठितत्ता **ओरसो मुखतो जातो**। अरियधम्मतो जातत्ता अरियधम्मेन च निम्मितत्ता **धम्मजो धम्मनिम्मितो**। नवलोकुत्तरधम्मदायज्जं अरहती ति **धम्मदायादो**। **तं किस्स हेतू** ति यदेतं "भगवतोम्हि पुत्तो" ति वत्वा "धम्मजो धम्मनिम्मितो" 25
ति वुत्तं, तं कस्मा ति च? इदानिस्स अत्थं दस्सेन्तो **तथागतस्स**

१. सूरो—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

हेतं तिआदिमाह। तत्थ "धम्मकायो इतिपी" ति कस्मा तथागतो "धम्मकायो" ति वुत्तो? तथागतो हि तेपिटकं बुद्धवचनं हदयेन चिन्तेत्वा वाचाय अभिनीहरि। तेनस्स कायो धम्ममयत्ता धम्मोव। इति धम्मो कायो अस्सा ति **धम्मकायो**। धम्मकायत्ता एव
5 **ब्रह्मकायो**। धम्मो हि सेट्ठट्ठेन ब्रह्मा ति वुच्चति। **धम्मभूतो** ति धम्मसभावो। ब्रह्मभूतत्ता एव **ब्रह्मभूतो**।

९. एत्तावता भगवा सेट्ठच्छेदकवादं दस्सेत्वा इदानि अपरेनपि नयेन सेट्ठच्छेदकवादमेव दस्सेतुं **होति खो सो वासेट्ठ, समयो** तिआदिमाह। तत्थ संवट्टविवट्टकथा **ब्रह्मजाले** वित्थारिताव। **इत्थत्तं**
10 **आगच्छन्ती** ति इत्थभावं मनुस्सत्तं आगच्छन्ति। ते च होन्ति **मनोमया** ति ते इध मनुस्सलोके निब्बत्तमानापि ओपपातिका हुत्वा मनेनेव निब्बत्ता ति मनोमया। ब्रह्मलोके विय इधापि नेसं पीतियेव आहारकिच्चं साधेती ति **पीतिभक्खा**। एतेनेव नयेन **सयंपभादीनिपि** वेदितब्बानी ति।

३. रसपथविपातुभाववण्णना

15 १०. **एकोदकीभूतं** (दी० नि० ३.६७) ति सब्बं चक्कवाळं एकोदकमेव भूतं। **अन्धकारो** ति तमो। **अन्धकारतिमिसा** ति चक्खुविञ्ञाणुप्पत्तिनिवारणेन। अन्धभावकरणं बहलतमं। **समतानी**
R. 866 ति पतिट्ठहि समन्ततो पत्थरि। **पयसो तत्तस्सा** ति तत्तस्स खीरस्स। **वण्णसम्पन्ना** ति वण्णेन सम्पन्ना। कणिकारपुप्फसदिसो हिस्सा
20 वण्णो अहोसि। **गन्धसम्पन्ना** ति गन्धेन सम्पन्ना दिब्बगन्धं वायति।
B. 50 **रससम्पन्ना** ति रसेन सम्पन्ना पक्खित्तदिब्बोजा विय होति। **खुद्दमधुं** ति खुद्दकमक्खिकाहि कतमधुं। **अनेळकं** ति निद्दोसं मक्खिकण्डकविरहितं। **लोलजातिको** ति लोलसभावो। अतीतानन्तरेपि कप्पे लोलोयेव। **अम्भो** ति अच्छरियजातो आह। **किमेविदं भविस्सती**
25 ति वण्णोपिस्सा मनापो गन्धोपि, रसो पनस्सा कीदिसो भविस्सती ति अत्थो। यो तत्थ उप्पन्नलोभो, सो रसपथविं अङ्गुलिया सायि अङ्गुलिया गहेत्वा जिव्हग्गे ठपेसि।

अच्छादेसी ति जिव्हग्गे ठपितमत्ता सत्त रसहरणीसहस्सानि फरित्वा मनापा हुत्वा तिट्ठति। **तण्हा चस्स ओक्कमी** ति तत्थ चस्स तण्हा उप्पज्जि।

४. चन्दिमसूरियादिपातुभाववण्णना

११. **आलुम्पकारणं उपक्कमिंसु परिभुञ्जितुं** ति आलोपं कत्वा पिण्डे पिण्डे छिन्दित्वा परिभुञ्जितुं आरभिंसु। **चन्दिमसूरिया** ति चन्दिमा च सूरियो च। **पातुरहेसुं** ति पातुभविंसु। 5

को पन तेसं पठमं पातुभवि[1], को कस्मिं वसति, कस्स किं पमाणं, को उपरि, को सीघं[2] गच्छति, कति नेसं वीथियो, कथं चरन्ति, कित्तके ठाने आलोकं करोन्ती ति? उभो न एकतो पातुभवन्ति। सूरितो पठमतरं पञ्ञायति। तेसञ्हि सत्तानं सयंपभाय 10 अन्तरहिताय अन्धकारो अहोसि। ते भीततसिता "भद्दकं वतस्स सचे आलोको पातुभवेय्या" ति चिन्तयिंसु। ततो महाजनस्स सूरभावं जनयमानं सूरियमण्डलं उट्ठहि। तेनेवस्स सूरियो ति नामं अहोसि। तस्मिं दिवसं आलोकं कत्वा अत्थङ्गते पुन अन्धकारो अहोसि। ते "भद्दकं वतस्स सचे अञ्ञो आलोको उप्पज्जेय्या" ति 15 चिन्तयिंसु। अथ नेसं छन्दं ञत्वाव चन्दमण्डलं उट्ठहि। तेनेवस्स चन्दो ति नामं अहोसि।

R. 867 तेसु चन्दो अन्तोमणिविमाने वसति। तं बहि रजतेन परिक्खित्तं। उभयम्पि सीतलमेव अहोसि। सूरियो अन्तोकनकविमाने वसति। तं 20 बाहिरं फलिकापरिक्खित्तं होति। उभयम्पि उण्हमेव।

B. 51 पमाणतो चन्दो उजुकं एकूनपञ्ञासयोजनो। परिमण्डलतो तीहि योजनेहि ऊनदियड्ढसतयोजनो। सूरियो उजुकं पञ्ञासयोजनो, परिमण्डलतो दियड्ढसतयोजनो।

१. पातुभवति—रो०। २. सीसं—रो०।

चन्दो हेट्ठा, सूरियो उपरि, अन्तरं नेसं योजनं होति। चन्दस्स हेट्ठिमन्ततो सूरियस्स उपरिमन्ततो योजनसतं होति।

चन्दो उजुकं सणिकं गच्छति, तिरियं सीघं। द्वीसु पस्सेसु नक्खत्ततारका गच्छन्ति। चन्दो धेनु विय वच्छं तं तं नक्खत्तं 5 उपसङ्कमति। नक्खत्तानि पन अत्तनो ठानं न विजहन्ति। सूरियस्स उजुकं गमनं सीघं, तिरियं गमनं दन्धं। सो काळपक्खउपोसथतो पाटिपददिवसे योजनानं सतसहस्सं चन्दमण्डलं ओहाय गच्छति। अथ चन्दो लेखा विय पञ्ञायति। पक्खस्स दुतियाय सतसहस्सं ति एवं याव उपोसथदिवसा सतसहस्सं सतसहस्सं ओहाय गच्छति। अथ चन्दो 10 अनुक्कमेन वड्ढित्वा उपोसथदिवसे परिपुण्णो होति। पुन पाटिपददिवसे योजनानं सतसहस्सं सतसहस्सं धावित्वा गण्हाति। दुतियाय सतसहस्सं ति एवं याव उपोसथदिवसा सतसहस्सं धावित्वा गण्हाति। अथ चन्दो अनुक्कमेन हायित्वा उपोसथदिवसे सब्बसो न पञ्ञायति। चन्दं हेट्ठा कत्वा सूरियो उपरि होति। महतिया पातिया खुद्दकभाजनं 15 विय चन्दमण्डलं पिधीयति[1]। मज्झन्हिके गेहच्छाया विय चन्दस्स छाया न पञ्ञायति। सो छायाय अपञ्ञायमानाय दूरे ठितानं दिवा पदीपो विय सयम्पि न पञ्ञायति।

कति नेसं वीथियोति एत्थ पन अजवीथि, नागवीथि, गोवीथी ति तिस्सो वीथियो होन्ति। तत्थ अजानं उदकं पटिकूलं होति, 20 हत्थिनागानं मनापं। गुन्नं सीतुण्हसमताय फासु[2] होति। तस्मा यं कालं चन्दिमसूरिया अजवीथिं आरुहन्ति, तदा देवो एकबिन्दुम्पि न वस्सति। यदा नागवीथिं आरोहन्ति, तदा भिन्नं विय नभं पग्घरति। यदा गोवीथिं आरोहन्ति, तदा उतुसमता सम्पज्जति। चन्दिमसूरिया छमासे सिनेरुतो बहि निक्खमन्ति, छमासे अन्तो विचरन्ति। ते हि 25 आसाळ्हमासे सिनेरुसमीपेन विचरन्ति। ततो परे[3] द्वे मासे निक्खमित्वा

१. पिधीयति—रो०। २. फासुकं—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि।

बहि विचरन्ता पठमकत्तिकमासे मज्झेन गच्छन्ति । ततो चक्कवाळाभिमुखा गन्त्वा तयो मासे चक्कवाळसमीपेन चरित्वा पुन निक्खमित्वा चित्रमासे मज्झेन गन्त्वा ततो[1] द्वे मासे सिनेरुभिमुखा पक्खन्दित्वा पुन आसाळ्हे सिनेरुसमीपेन चरन्ति ।

R. 368
B. 52

कित्तके ठाने आलोकं करोन्ती ति ? एकप्पहारेन तीसु दीपेसु आलोकं करोन्ति । कथं ? इमस्मिञ्हि दीपे सूरियुग्गमनकालो पुब्बविदेहे मज्झन्हिको होति, उत्तरकुरूसु अत्थङ्गमनकालो, अपरगोयाने मज्झिमयामो । पुब्बविदेहम्हि उग्गमनकालो उत्तरकुरूसु मज्झन्हिको, अपरगोयाने अत्थङ्गमनकालो, इध मज्झिमयामो । उत्तरकुरूसु उग्गमनकालो अपरगोयाने मज्झन्हिको[2], इध अत्थङ्गमनकालो, पुब्बविदेहे मज्झिमयामो । अपरगोयानदीपे उग्गमनकालो इध मज्झन्हिको, पुब्बविदेहे अत्थङ्गमनकालो, उत्तरकुरूसु मज्झिमयामो ति ।

नक्खत्तानि तारकरूपानी ति कत्तिकादिनक्खत्तानि चेव सेसतारकरूपानि च चन्दिमसूरियेहि सद्धिं येव पातुरहेसुं । **रत्तिन्दिवा** ति ततो सूरियत्थङ्गमनतो याव अरुणुग्गमना रत्ति, अरुणुग्गमनतो याव सूरियत्थङ्गमना दिवा ति एवं रत्तिन्दिवा पञ्ञायिंसु । अथ पञ्चदस रत्तियो अड्ढमासो, द्वे अड्ढमासा मासो ति एवं मासड्ढमासा पञ्ञायिंसु । अथ चत्तारो मासा उतु, तयो उतू संवच्छरो ति एवं उतुसंवच्छरा पञ्ञायिंसु ।

१२. **वण्णवेवण्णता चा** (दी० नि० ३.६८) ति वण्णस्स विवण्णभावो । तेसं **वण्णातिमानपच्चया** ति तेसं वण्णं आरब्भ उप्पन्नअतिमानपच्चया । **मानातिमानजातिकानं** ति पुनप्पुनं उप्पज्जमानातिमानसभावानं । **रसाय पथविया** ति सम्पन्नरसत्ता रसा ति लद्धनामाय पथविया । **अनत्थुनिंसू** ति अनुभासिंसु । **अहो रसं** ति अहो अम्हाकं मधुररसं अन्तरहितं । **अग्गञ्ञं अक्खरं** ति लोकुप्पत्तिवंसकथं । **अनुसरन्ती** ति अनुगच्छन्ति ।

[1] ततो परे—रो० ।   [2] मज्झन्तिको—रो० ।

५. भूमिपप्पटकपातुभावादिवण्णना

१३. **एवमेव पातुरहोसी** ति एदिसो हुत्वा उट्ठहि, अन्तोवापियं उदके छिन्ने सुक्खकललपटलं विय च उट्ठहि ।

१४. **पदालता** ति एका मधुररसा भद्दालता । **कलम्बुका** ति नाळिका । **अहु वत नो** ति मधुररसा वत नो पदालता[1] अहोसि । **अहायि वत नो** ति सा नो एतरहि अन्तरहिता ति ।

R. 869

5

B. 53

१५. **अकट्ठपाको** ति अकट्ठेयेव भूमिभागे उप्पन्नो । **अकणो** ति निक्कुण्डको । **अथुसो** ति नित्थुसो । **सुगन्धो** ति दिब्बगन्धं वायति । **तण्डुलप्फलो** ति सुपरिसुद्धं[2] पण्डरं तण्डुलमेव फलति । **पक्कं पटिविरूळ्हं** ति सायं गहितट्ठानं पातो पक्कं होति, पुन विरूळ्हं पटिपाकतिकमेव गहितट्ठानं न पञ्ञायति । **नापदानं पञ्ञायती** ति अलायितं[3] हुत्वा अनूनमेव पञ्ञायति ।

10

६. इत्थिपुरिसलिङ्गादिपातुभाववण्णना

१६. **इत्थिया चा** (दी० नि० ३.६९) ति या पुब्बे मनुस्सकाले इत्थी, तस्स इत्थिलिङ्गं पातुभवति, पुब्बे पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं । मातुगामो नाम हि पुरिसत्तभावं लभन्तो अनुपुब्बेन पुरिसत्तपच्चये धम्मे पूरेत्वा लभति । पुरिसो इत्थत्तभावं लभन्तो कामेसुमिच्छाचारं निस्साय लभति । तदा पन पकतिया मातुगामस्स इत्थिलिङ्गं, पुरिसस्स पुरिसलिङ्गं पातुरहोसि । **उपनिज्झायतं** ति उपनिज्झायन्तानं ओलोकेन्तानं । **परिळाहो** ति रागपरिळाहो । **सेट्ठिं** ति छारिकं । **निब्बुय्हमानाया** ति निय्यमानाय ।

15

१७. **अधम्मसम्मतं** (दी० नि० ३.७०) ति तं[4] पंसुखिपनादि अधम्मो ति सम्मतं । **तदेतरहि धम्मसम्मतं** ति तं इदानि धम्मो ति

20

१. बदालता—रो० ।
२. परिसुद्धं—रो० ।
३. अलायिकं—रो० ।
४. तं पन—रो० ।

सम्मतं, धम्मो ति तं गहेत्वा विचरन्ति। तथा[1] हि एकच्चेसु जनपदेसु कलहं कुरुमाना इत्थियो "त्वं कस्मा कथेसि ? या गोमय-पिण्डमत्तम्पि नालत्था" ति वदन्ति। **पातब्यतं** ति सेवितब्बतं। **सन्निधिकारकं** ति सन्निधिं कत्वा। **अपदानं पञ्ञायित्था** ति छिन्नट्ठानं ऊनमेव हुत्वा पञ्ञायित्थ[2]। **सण्डसण्डा** ति एकेकस्मिं ठाने 5 कलापबन्धा विय गुम्बगुम्बा हुत्वा।

१८. **मरियादं ठपेय्यामा** (दी० नि० ३.७२) ति सीमं R. 870 ठपेय्याम। **यत्र हि नामा** ति यो हि नाम। **पाणिना पहरिंसू** ति तयो वारे वचनं अगण्हन्तं पाणिना पहरिंसु। **तदग्गे खो** ति तं अग्गं कत्वा। 10

७. महासम्मतराजवण्णना

२०. **खीयितब्बं खीयेय्या** ति पकासेतब्बं पकासेय्य खिपितब्बं खिपेय्य, हारेतब्बं हारेय्या ति वुत्तं होति। **यो नेसं सत्तो** ति यो तेसं सत्तो। को पन सो ति ? अम्हाकं बोधिसत्तो। **सालीनं भागं अनुपदस्सामा** B. 54 ति मयं एकेकस्स खेत्ततो[3] अम्बणम्बणं आहरित्वा तुय्हं सालिभागं दस्साम, तया किञ्चि कम्मं न कातब्बं, त्वं अम्हाकं जेट्ठकट्ठाने[4] 15 तिट्ठाति।

२१. **अक्खरं उपनिब्बत्तं** ति सङ्खा समञ्ञा पञ्ञत्ति वोहारो उप्पन्नो। **खत्तियो खत्तियोत्वेव दुतियं अक्खरं** ति न केवलं अक्खर-मेव, ते पनस्स खेत्तसामिनो तीहि सङ्खेहि अभिसेकम्पि अकंसु। **परेसं रञ्जेती** ति सुखेति पीणेति। **अग्गञ्ञेना** ति अग्गं ति 20 ञातेन, अग्गे वा ञातेन लोकुप्पत्तिसमये उप्पन्नेन अभिनिब्बत्ति अहोसी ति।

१. तदा—रो०। २. पञ्ञायि—रो०।
३. खत्ततो—रो०। ४. ०सेट्ठट्ठाने—रो०।

८. ब्राह्मणमण्डलादिवण्णना

२२. **वीतङ्गारा वीतधूमा** (दी० नि० ३.७३) ति पचित्वा खादितब्बाभावतो विगतधूमङ्गारा। **पन्नमुसला** ति कोट्टेत्वा पचितब्बाभावतो पतितमुसला। **घासमेसमाना** ति भिक्खाचरिय-वसेन यागुभत्तं परियेसन्ता। **तमेनं मनुस्सा दिस्वा** ति ते एते
5 मनुस्सा पस्सित्वा। **अनभिसम्भुणमाना** ति असहमाना असक्कोन्ता। **गन्थे करोन्ता** ति तयो वेदे अभिसङ्खरोन्ता चेव वाचेन्ता च। **अच्छन्ती** ति वसन्ति, "अच्छेन्ती" तिपि पाठो। एसेवत्थो। **हीनसम्मतं** ति "मन्ते धारेन्ति मन्ते वाचेन्ती" ति खो, वासेट्ठ, इदं तेन समयेन हीनसम्मतं। **तदेतरहि सेट्ठसम्मतं** ति तं इदानि "एत्तके
10 मन्ते धारेन्ति एत्तके मन्ते वाचेन्ती" ति सेट्ठसम्मतं जातं। **ब्राह्मणमण्डलस्सा** ति ब्राह्मणगणस्स।

२३. **मेथुनं धम्मं समादाया** (दी० नि० ३.७४) ति मेथुनधम्मं
R. 871 समादियित्वा। **विसुकम्मन्ते पयोजेसुं** ति गोरक्ख[१]-वाणिजकम्मादिके विस्सुते उग्गते कम्मन्ते पयोजेसुं।

B. 55 15 २४. **सुद्दा सुद्दा** ति तेन लुद्दाचारकम्मखुद्दाचारकम्मुना सुदं सुदं लहुं लहुं कुच्छितं गच्छन्ति, विनस्सन्ती ति अत्थो। **अहु खो** ति होति खो।

२५. **सकं धम्मं गरहमानो** (दी० नि० ३.७५) ति न सेतच्छत्त-उस्सापनमत्तेन सुज्झितुं सक्का ति एवं अत्तनो खत्तियधम्मं निन्दमानो।
20 एस नयो सब्बत्थ। "इमेहि खो, वासेट्ठ, चतूहि मण्डलेही" ति इमिना इमं[२] दस्सेति "समणमण्डलं नाम विसुं नत्थि, यस्मा न सक्का जातिया सुज्झितुं, अत्तनो अत्तनो[३] सम्मापटिपत्तिया विसुद्धि होति। तस्मा इमेहि चतूहि मण्डलेहि समणमण्डलस्स अभिनिब्बत्ति होति।

१. गोपकम्म—रो०।
२. रो० पोत्थके नत्थि।
३. इदं—रो०।

इमानि मण्डलानि समणमण्डलं अनुवत्तन्ति, अनुवत्तन्तानि च धम्मेनेव अनुवत्तन्ति, नो अधम्मेन। समणमण्डलञ्हि आगम्म सम्मापटिपत्तिं पूरेत्वा सुद्धिं पापुणन्ती" ति।

९. दुच्चरितादिकथावण्णना

२६. इदानि यथाजातिया न सक्का सुज्झितुं, सम्मापटिपत्तियाव सुज्झन्ति, तमत्थं पाकटं करोन्तो **खत्तियोपि खो वा सेट्ठा** ति देसनं आरभि। तत्थ **मिच्छादिट्ठिकम्मसमादानहेतू** ति मिच्छादिट्ठिवसेन समादिन्नकम्महेतु, मिच्छादिट्ठिकम्मस्स वा समादानहेतु। 5

२७. **द्वयकारी** ति कालेन कुसलं करोति, कालेन अकुसलं ति एवं उभयकारी। **सुखदुक्खप्पटिसंवेदी होती** ति एकक्खणे उभयविपाकदानट्ठानं नाम नत्थि। येन पन अकुसलं बहुं कतं होति, 10 कुसलं मन्दं, सो तं कुसलं निस्साय खत्तियकुले वा ब्राह्मणकुले वा निब्बत्तति। अथ नं अकुसलकम्मं काणम्पि करोति खुज्जम्पि पीठसप्पिम्पि। सो रज्जस्स वा अनरहो होति, अभिसित्तकाले वा एवंभूतो भोगे परिभुञ्जितुं न सक्कोति। अपरस्स मरणकाले द्वे बलवमल्ला विय तेद्वेपि कुसलाकुसलकम्मानि उपट्ठहन्ति। तेसु 15 अकुसलं बलवतरं होति, तं कुसलं पटिबहित्वा तिरच्छानयोनियं निब्बत्तापेति। कुसलकम्मम्पि पवत्तिवेदनीयं होति। तमेनं मङ्गलहत्थिं वा करोन्ति मङ्गलअस्सं वा मङ्गलउसभं वा। सो सम्पत्तिं अनुभवति। इदं सन्धाय वुत्तं "सुखदुक्खप्पटिसंवेदी होती" ति। R. 872

१०. बोधिपक्खियभावनावण्णना

२८. **सत्तन्नं बोधिपक्खियानं** (दी० नि० ३.७६) ति "चत्तारो 20 सतिपट्ठाना" ति आदिकोट्ठासवसेन सत्तन्नं, पटिपाटिया पन सत्ततिंसाय बोधिपक्खियानं धम्मानं। **भावनमन्वाया** ति भावनं अनुगन्त्वा, पटिपज्जित्वा ति अत्थो। **परिनिब्बायती** ति किलेसपरिनिब्बानेन परिनिब्बायति। इति भगवा चत्तारो वण्णे दस्सेत्वा B. 56

विनिवत्तेत्वा[१] पटिविद्धचतुसच्चं खीणासवमेव देवमनुस्सेसु सेट्ठं कत्वा दस्सेसि ।

२९. इदानि तमेवत्थं लोकसम्मतस्स ब्रह्मुनोपि वचनदस्सनानुसारेन दळ्हं कत्वा दस्सेन्तो इमेसं हि वासेट्ठ चतुन्नं वण्णानं तिआदिमाह । "ब्रह्मुनापेसा" तिआदि अम्बट्ठसुत्ते वित्थारितं । इति भगवा एत्तकेन इमिना कथामग्गेन सेट्ठच्छेदकवादमेव दस्सेत्वा सुत्तन्तं विनिवत्तेत्वा[२] अरहत्तनिकूटेन देसनं निट्ठापेसि । अत्तमना वासेट्ठभारद्वाजा ति वासेट्ठभारद्वाज सामणेरा पि हि सकमना तुट्ठमना "साधु, साधु" ति भगवतो भासितं अभिनन्दिंसु । इदमेव सुत्तन्तं आवज्जन्ता अनुमज्जन्ता सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणिंसू ति ।

अग्गञ्ञसुत्तवण्णना निट्ठिता ।

१. रो० पोत्थके नत्थि । २. विनिवट्टेत्वा—रो० ।

(५) सम्पसादनीयसुत्तवण्णना

१. सारिपुत्तसीहनादवण्णना

B. 57
R. 873

१. **एवं मे सुतं** (दी० नि० ३.७७) ति सम्पसादनीयसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना। **नाळन्दायं** ति नाळन्दा ति एवंनामके नगरे, तं नगरं गोचरगामं कत्वा। **पावारिकम्बवने** ति दुस्सपावारिकसेट्ठिनो अम्बवने। तं किर तस्स उय्यानं अहोसि। सो भगवतो धम्मदेसनं सुत्वा भगवति पसन्नो तस्मिं उय्याने कुटिलेणमण्डपादि- 5 पटिमण्डितं भगवतो विहारं कत्वा निय्यातेसि। सो विहारोजीवकम्बवनं विय "पावारिकम्बवनं" त्वेव सङ्ख्यं गतो। तस्मिं पावारिकम्बवने विहरती ति अत्थो। भगवन्तं एतदवोच—एवं पसन्नो अहं, भन्ते, भगवती" ति। कस्मा एवं अवोच? अत्तनो उप्पन्नसोमनस्सपवेदनत्थं। 10

तत्रायमनुपुब्बिकथा। थेरो किर तंदिवसं कालस्सेव सरीरप्पटिजग्गनं कत्वा सुनिवत्थनिवासनो पत्तचीवरमादाय पासादिकेहि अभिक्कन्तादीहि देवमनुस्सानं पसादं आवहन्तो नाळन्दवासीनं हितसुखमनुब्रूहयन्तो पिण्डाय पविसित्वा पच्छाभत्तं पिण्डपातपटिक्कन्तो विहारं गन्त्वा सत्थु वत्तं दस्सेत्वा सत्थरि गन्धकुटिं पविट्ठे सत्थारं 15 वन्दित्वा अत्तनो दिवाट्ठानं अगमासि। तत्थ सद्धिविहारिकन्तेवासिकेसु वत्तं दस्सेत्वा पटिक्कन्तेसु दिवाट्ठानं सम्मज्जित्वा चम्मक्खण्डं पञ्ञपेत्वा उदकतुम्बतो[१] उदकेन हत्थपादे सीतले कत्वा तिसन्धिपल्लङ्कं आभुजित्वा कालपरिच्छेदं कत्वा फलसमापत्तिं समापज्जि।

सो यथापरिच्छिन्नकालवसेन समापत्तितो वुट्ठाय अत्तनो गुणे 20 अनुस्सरितुमारद्धो। अथस्स गुणे अनुस्सरतो सीलं आपाथमागतं।

१. उदककुम्भतो—रो०।

ततो पटिपाटिया व[1] समाधि पञ्ञा विमुत्ति विमुत्तिञाणदस्सनं
R. 874 पठमं झानं...पे०...आकासानञ्चायतनसमापत्ति...पे०...नेवसञ्ञाना-
सञ्ञायतनसमापत्ति विपस्सनाञाणं ..पे०...दिब्बचक्खुञाणं ..पे०...
सोतापत्तिमग्गो सोतापत्तिफलं ... पे० ... अरहत्तमग्गो अरहत्तफलं
5 अत्थपटिसम्भिदा धम्मपटिसम्भिदा निरुत्तिपटिसम्भिदा पटिभान-
पटिसम्भिदा सावकपारमीञाणं। इतो पट्ठाय कप्पसतसहस्साधिकस्स
असङ्ख्येय्यस्स उपरि अनोमदस्सीबुद्धस्स पादमूले कतं अभिनीहारं
आदिं कत्वा अत्तनो गुणे अनुस्सरतो याव निसिन्नपल्लङ्का गुणा
उपट्ठहिंसु।

B. 58 10 एवं थेरो अत्तनो गुणे अनुस्सरमानो गुणानं पमाणं वा परिच्छेदं
वा दट्ठुं नासक्खि। सो चिन्तेसि "मय्हं ताव पदेसञाणे ठितस्स
सावकस्स गुणानं पमाणं वा परिच्छेदो वा नत्थि। अहं पन यं
सत्थारं उद्दिस्स पब्बजितो, कीदिसा नु खो तस्स गुणा" ति
दसबलस्स गुणे अनुस्सरितुं आरद्धो। सो भगवतो सीलं निस्साय,
15 समाधिं पञ्ञं विमुत्तिं विमुत्तिञाणदस्सनं निस्साय, चत्तारो सति-
पट्ठाने निस्साय, चत्तारो सम्मप्पधाने चत्तारो इद्धिपादे चत्तारो मग्गे
चत्तारि फलानि चतस्सो पटिसम्भिदा चतुयोनिपरिच्छेदकञाणं
चत्तारो अरियवंसे निस्साय दसबलस्स गुणे अनुस्सरितुमारद्धो।

तथा[2] पञ्च पधानियङ्गानि, पञ्चङ्गिकं सम्मासमाधिं, पञ्चिन्द्रि-
20 यानि, पञ्च बलानि, पञ्च निस्सरणिया धातुयो, पञ्च विमुत्तायतनानि,
पञ्च विमुत्तिपरिपाचनिया पञ्ञा, छ सारणीये[3] धम्मे, छ अनुस्सति-
ट्ठानानि, छ गारवे, छ निस्सरणिया धातुयो, छ सत्तविहारे, छ
अनुत्तरियानि, छ निब्बेधभागिया पञ्ञा, छ अभिञ्ञा, छ
असाधारणञाणानि, सत्त अपरिहानिये धम्मे, सत्त अरियधनानि,
25 सत्त बोज्झङ्गे, सत्त सप्पुरिसधम्मे, निज्जरवत्थुनि, सत्त पञ्ञा,
सत्त दक्खिणेय्यपुग्गले, सत्त खीणासवबलानि, अट्ठ पञ्ञापटिलाभहेतु,

१. च—रो०। २. तदा—रो०।
३. निस्सारणीये—रो०।

अट्ठ सम्मत्तानि, अट्ठ लोकधम्मातिक्कमे, अट्ठ आरम्भवत्थूनि, अट्ठ अक्खणदेसना, अट्ठ महापुरिसवितक्के, अट्ठ अभिभायतनानि, अट्ठ विमोक्खे, नव योनिसोमनसिकारमूलके धम्मे, नव पारिसुद्धि-पधानियङ्गानि, नव सत्तावासदेसना, नव आघातप्पटिविनये, नव सञ्ञा, नव नानत्तानि, नव अनुपुब्बविहारे, दस नाथकरणे धम्मे, 5 दस कसिणायतनानि, दस कुसलकम्मपथे, दस तथागतबलानि, दस सम्मत्तानि, दस अरियवासे, दस असेक्खधम्मे, एकादस मेत्तानिसंसे, द्वादस धम्मचक्काकारे, तेरस धुतङ्गगुणे, चुद्दस बुद्धञाणानि, R. 875 पञ्चदस विमुत्तिपरिपाचनिये धम्मे, सोळसविधं आनापानस्सतिं, अट्ठारस बुद्धधम्मे, एकुनवीसति पच्चवेक्खणञाणानि, चतुचत्तालिस 10 ञाणवत्थूनि, परोपण्णास कुसलधम्मे, सत्तसत्तति ञाणवत्थूनि, चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससमापत्तिसञ्चारमहावजिरञाणं निस्साय दसबलस्स गुणे अनुस्सरितुं आरभि।

तस्मिं येव च दिवाट्ठाने निसिन्नोयेव उपरि "अपरं पन, भन्ते, B. 59 एतदानुत्तरियं" ति आगमिस्सन्ति सोळस अपरम्परियधम्मा, तेपि 15 निस्साय अनुस्सरितुं आरभि। सो "कुसलपञ्ञत्तियं अनुत्तरो मय्हं सत्था, आयतनपञ्ञत्तियं अनुत्तरो, गब्भावक्कन्तियं अनुत्तरो, आदेसनाविधासु अनुत्तरो, दस्सनसमापत्तियं अनुत्तरो, पुग्गल-पञ्ञत्तियं अनुत्तरो, पधाने अनुत्तरो, पटिपदासु अनुत्तरो, भस्स-समाचारे, अनुत्तरो, पुरिससीलसमाचारे अनुत्तरो, अनुसासनीविधासु 20 अनुत्तरो, परपुग्गलविमुत्तिञाणे अनुत्तरो, सस्सतवादेसु[1] अनुत्तरो, पुब्बेनिवासञाणे अनुत्तरो, दिब्बचक्खुञाणे अनुत्तरो, इद्धिविधे अनुत्तरो, इमिना च इमिना च अनुत्तरो" ति एवं दसबलस्स गुणे अनुस्सरन्तो भगवतो गुणनं नेव अन्तं, न पमाणं पस्सि। थेरो अत्तनोपि ताव गुणानं अन्तं वा पमाणं वा नाद्दस, भगवतो गुणानं 25 किं पस्सिस्सति? यस्स यस्स हि पञ्ञा महती ञाणं विसदं,

1. सस्सतवादे—रो०।

सो सो बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति । लोकियमहाजनो उक्कासित्वापि खिपित्वापि "नमो बुद्धानं" ति अत्तनो अत्तनो उपनिस्सये ठत्वा बुद्धानं गुणे अनुस्सरति[1]। सब्बलोकियमहाजनतो[2] एको सोतापन्नो बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति । सोतापन्नानं सततोपि
5 सहस्सतोपि एको सकदागामी । सकदागामीनं सततोपि सहस्सतोपि एको अनागामी । अनागामीनं सततोपि सहस्सतोपि एको अरहा बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति । अवसेस अरहन्तेहि असीति महाथेरा बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहन्ति । असीतिमहाथेरेहि चत्तारो महाथेरा । चतूहि महाथेरेहि द्वे अग्गसावका । तेसुपि सारिपुत्तत्थेरो, सारि-
10 पुत्तत्थेरतोपि एको पच्चेकबुद्धो बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति । सचे पन
R. 876 सकलचक्कवाळगब्भे सङ्घाटिकण्णेन सङ्घाटिकण्णं पहरियमाना[3] निसिन्ना पच्चेकबुद्धा बुद्धगुणे अनुस्सरेय्युं, तेहि सब्बेहिपि एको सब्बञ्ञुबुद्धोव बुद्धगुणे महन्ततो सद्दहति ।

सेय्यथापि नाम महाजनो "महासमुद्दो गम्भीरो उत्तानो" ति
15 जाननत्थं योत्तानि वट्टेय्य, तत्थ कोचि ब्यामप्पमाणं योत्तं वट्टेय्य, कोचि द्वे ब्यामं, कोचि नवब्यामं, कोचि दसब्यामं, कोचि वीसतिब्यामं, कोचि
B. 60 तिंसब्यामं, कोचि चत्तालीसब्यामं, कोचि पञ्ञासब्यामं, कोचि सतब्यामं, कोचि सहस्सब्यामं, कोचि चतुरासीतिब्यामसहस्सं । ते नावं आरुय्ह, समुद्दमज्झे उग्गतपब्बतादिम्हि वा ठत्वा अत्तनो अत्तनो
20 योत्तं ओतारेय्युं, तेसु यस्स योत्तं ब्याममत्तं, सो ब्याममत्तट्ठानेयेव उदकं जानाति...पे... यस्स चतुरासीतिब्यामसहस्सं, सो चतुरासीति-ब्यामसहस्सट्ठानेयेव उदकं जानाति । परतो उदकं एत्तकं ति न जानाति । महासमुद्दे पन न तत्तकंयेव उदकं, अथ खो अनन्तं अपरिमाणं । चतुरासीतियोजनसहस्सं गम्भीरो हि महासमुद्दो,
25 एवमेव एकब्यामयोत्ततो पट्ठाय नवब्यामयोत्तेन ञातउदकं विय लोकियमहाजनेन दिट्ठबुद्धगुणा वेदितब्बा । दसब्यामयोत्तेन

१. सरति—रो० । २. ०जनस्स—रो० ।
३. पहरमाना—रो० ।

दसब्यामट्ठाने ञातउदकं विय सोतापन्नेन दिट्ठबुद्धगुणा। वीसति-ब्यामयोत्तेन वीसतिब्यामट्ठाने ञातउदकं विय सकदागामिना दिट्ठबुद्धगुणा। तिंसब्यामयोत्तेन तिंसब्यामट्ठाने ञातउदकं विय अनागामिना दिट्ठबुद्धगुणा। चत्तालीसब्यामयोत्तेन चत्तालीसब्याम-ट्ठाने ञातउदकं विय अरहता दिट्ठबुद्धगुणा। पञ्ञासब्यामयोत्तेन 5 पञ्ञासब्यामट्ठाने ञातउदकं विय असीतिमहाथेरेहि दिट्ठबुद्धगुणा। सतब्यामयोत्तेन सतब्यामट्ठाने ञातउदकं विय चतूहि महाथेरेहि दिट्ठबुद्धगुणा। सहस्सब्यामयोत्तेन सहस्सब्यामट्ठाने ञातउदकं विय महामोग्गल्लानत्थेरेन दिट्ठबुद्धगुणा। चतुरासीतिब्यामसहस्सयोत्तेन चतुरासीतिब्यामसहस्सट्ठाने ञातउदकं विय धम्मसेनापतिना 10 सारिपुत्तत्थेरेन दिट्ठबुद्धगुणा। तत्थ यथा सो पुरिसो महासमुद्दे उदकं नाम न एत्तकंयेव, अनन्तमपरिमाणं ति गण्हाति, एवमेव आयस्मा सारिपुत्तो धम्मन्वयेन धम्म अन्वयबुद्धिया अनुमानेन नयग्गाहेन सावकपारमीञाणे ठत्वा दसबलस्स गुणे अनुस्सरन्तो "बुद्धगुणा अनन्ता R. 877 अपरिमाणा" ति सद्दहि। 15

थेरेन हि दिट्ठबुद्धगुणेहि धम्मन्वयेन गहेतब्बबुद्धगुणायेव बहुतरा। यथा कथं विय? यथा इतो नव इतो नवा ति अट्ठारस योजनानि अवत्थरित्वा गच्छन्तिया चन्दभागाय महानदिसा पुरिसो सूचिपासेन उदकं गण्हेय्य, सूचिपासेन गहितउदकतो अग्गहितमेव बहु होति। यथा वा पन पुरिसो महापथवितो अङ्गुलिया पंसुं गण्हेय्य, 20 अङ्गुलिया गहितपंसुतो अवसेसपंसुयेव बहु होति। यथा वा पन पुरिसो महासमुद्दाभिमुखिं अङ्गुलिं करेय्य, अङ्गुलिअभिमुखउदकतो B. 61 अवसेसं उदकं येव बहु होति। यथा च पुरिसो आकासाभिमुखिं अङ्गुलिं करेय्य, अङ्गुलिअभिमुखआकासतो सेसआकासप्पदेसोव बहु होति। एवं थेरेन दिट्ठबुद्धगुणेहि अदिट्ठा गुणा व बहू ति वेदितब्बा। वुत्तम्पि 25 चेतं—

"बुद्धोपि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं,
कप्पम्पि चे अञ्ञमभासमानो।

खीयेथ कप्पो चिरदीघमन्तरे,
वण्णो[1] न खीयेथ तथागतस्सा" ति ॥

एवं थेरस्स अत्तनो च सत्थु च गुणे अनुस्सरतो यमकमहानदी-
महोघो विय अब्भन्तरे पीतिसोमनस्सं अवत्थरमानं वातो विय भस्तं,
5 उब्भिज्जित्वा उग्गतउदकं विय महारहदं सकलसरीरं पूरेति[2]। ततो
थेरस्स[3] "सुपत्थिता वत मे पत्थना, सुलद्धा मे पब्बज्जा य्वाहं
एवंविधस्स सत्थु सन्तिके पब्बजितो" ति आवज्जन्तस्स[4] बलवतरं
पीतिसोमनस्सं उप्पज्जि ।

अथ थेरो "कस्साहं इमं पीतिसोमनस्सं आरोचेय्यं" ति
10 चिन्तेन्तो अञ्ञो कोचि समणो वा ब्राह्मणो वा देवो वा मारो वा
ब्रह्मा वा मम इमं पसादं अनुच्छविकं कत्वा पटिग्गहेतुं न
सक्खिस्सति, अहं इमं सोमनस्सं सत्थुनोयेव पवेदेय्यामि[5], सत्था व[6]
से पटिग्गण्हितुं सक्खिस्सति, सो हि तिट्ठतु मम पीतिसोमनस्सं,
मादिसस्स समणसतस्स वा समणसहस्सस्स वा समणसतसहस्सस्स
R 878 15 वा सोमनस्सं पवेदेन्तस्स सब्बेसं मनं गण्हन्तो पटिग्गहेतुं सक्कोति ।
सेय्यथापि नाम अट्ठारस योजनानि अवत्थरमानं गच्छन्तिं चन्दभाग-
महानदिं कुसुम्भा[7] वा कन्दरा वा सम्पटिच्छितुं[8] न सक्कोन्ति,
महासमुद्दो व तं सम्पटिच्छति । महासमुद्दो हि तिट्ठतु चन्दभागा,
एवरूपानं नदीनं सतम्पि सहस्सम्पि सतसहस्सम्पि सम्पटिच्छति, न
20 चस्स तेन ऊनत्तं वा पूरत्तं वा पञ्ञायति, एवमेव सत्था मादिसस्स
समणसतस्स समणसहस्सस्स समणसतसहस्सस्स वा पीति[9]सोमनस्सं
पवेदेन्तस्स सब्बेसं मनं गण्हन्तो पटिग्गहेतुं सक्कोति । सेसा समण-
ब्राह्मणादयो चन्दभागं कुसुम्भकन्दरा विय मम सोमनस्सं सम्पटिच्छितुं

१. वण्णे—रो० ।
२. पूरेसि—रो० ।
३. थेरो—रो० ।
४. आवज्जि—रो० ।
५. पवेदेस्सामि—रो० ।
६. च—रो० ।
७. कुस्सुब्भो—रो० ।
८. पटिच्छितुं—रो० ।
९. रो० पोत्थके नत्थि ।

न सक्कोन्ति। हन्दाहं मम पीतिसोमनस्सं सत्थुनोव आरोचेमी ति पल्लङ्कं विनिब्भजित्वा चम्मक्खण्डं पप्फोटेत्वा आदाय सायन्हसमये पुप्फानं वण्टतो छिज्जित्वा पग्घरणकाले सत्थारं उपसङ्कमित्वा अत्तनो सोमनस्सं पवेदेन्तो **एवंपसन्नो अहं भन्ते** तिआदिमाह। तत्थ **एवंपसन्नो** ति एवं उप्पन्नसद्धो, एवं सद्दहामी ति अत्थो। **भिय्योभिञ्ञतरो** ति भिय्यतरो अभिञ्ञातो, भिय्यतराभिञ्ञो वा, उत्तरितरञाणोति अत्थो। **सम्बोधियं** ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणे अरहत्तमग्गञाणे वा, अरहत्तमग्गेनेव हि बुद्धगुणा निप्पदेसा गहिता होन्ति। द्वे हि अग्गसावका अरहत्तमग्गेनेव सावकप्परमीञाणं पटिलभन्ति। पच्चेकबुद्धा पच्चेकबोधिञाणं। बुद्धा सब्बञ्जुतञ्ञाणञ्चेव सकले च बुद्धगुणे। सब्बञ्हि नेसं अरहत्तमग्गेनेव इज्झति। तस्मा अरहत्तमग्गञाणं सम्बोधि नाम होति। तेन उत्तरितरो भगवता नत्थि। तेनाह "भगवता भिय्योभिञ्ञतरो यदिदं सम्बोधियं" ति।

B. 62 5 10

२. **उळारा** (दी० नि० ३.७७) ति सेट्ठा। अयञ्हि उळारसद्दो "उळारानि खादनीयानि खादन्ती" (म० नि० १.२९२) तिआदीसु मधुरे आगच्छति। "उळाराय खलु भवं, वच्छायनो, समणं गोतमं पसंसाय पसंसती" (म० नि० १.२७६) तिआदीसु सेट्ठे। "अप्पमाणो उळारो ओभासो" (दी० नि० २.१४) तिआदीसु विपुले। स्वायमिध सेट्ठे आगतो। तेन वुत्तं—"उळारा ति सेट्ठा" ति। **आसभी** ति उसभस्स वाचासदिसी अचला असम्पवेधी। **एकंसो गहितो** ति अनुस्सवेन वा आचरियपरम्पराय वा इतिकिराय वा पिटकसम्पदानेन वा आकारपरिवितक्केन वा दिट्ठिनिज्झानक्खन्तिया वा तक्कहेतु वा नयहेतु वा अकथेत्वा पच्चक्खतो ञाणेन पटिविज्झित्वा विय एकंसो गहितो, सन्निट्ठानकथा व कथिता ति अत्थो।

15 20 R. 879 25

सीहनादो ति सेट्ठनादो, नेव दन्धायन्तेन न गग्गरायन्तेन सीहेन विय उत्तमनादो नदितो ति अत्थो। **किं ते सारिपुत्ता** ति इमं देसनं

कस्मा आरभी ति ? अनुयोगदापनत्थं। एकच्चो हि सीहनादं नदित्वा अत्तनो सीहनादे अनुयोगं दातुं न सक्कोति, निघंसनं नक्खमति, लेपे पतितमक्कटो विय होति। यथा धममानं अपरिसुद्धलोहं
B. 63 झायित्वा झामअङ्गारो[१] होति, एवं झामङ्गारो विय होति। एको
5 सीहनादे अनुयोगं दापियमानो दातुं सक्कोति, निघंसनं खमति, धममानं निद्दोसजातरूपं विय अधिकतरं सोभति, तादिसो थेरो। तेन नं भगवा "अनुयोगक्खमो अयं" ति ञत्वा सीहनादे अनुयोगदापनत्थं इमम्पि देसनं आरभि।

तत्थ **सब्बे तेहि** सब्बे ते तया। **एवंसीला** तिआदीसु
10 लोकियलोकुत्तरवसेन सीलादीनि पुच्छति। तेसं वित्थारकथा महापदाने कथिताव।

किं पन ते सारिपुत्त ये ते भविस्सन्ती ति अतीता च ताव निरुद्धा, अपण्णत्तिकभावं गता दीपसिखा विय निब्बुता, एवं निरुद्धे अपण्णत्तिकभावं गते त्वं कथं जानिस्ससि, अनागतबुद्धानं पन गुणा
15 किन्ति तया अत्तनो चित्तेन परिच्छिन्दित्वा विदिता ति पुच्छन्तो एवमाह। **किं पन ते सारिपुत्त अहं एतरही** ति अनागतापि बुद्धा अजाता अनिब्बत्ता अनुप्पन्ना, तेपि कथं त्वं जानिस्ससि ? तेसञ्हि जाननं अपदे आकासे पददस्सनं विय होति। इदानि मया सद्धिं एकविहारे वसति[२], एकतो भिक्खाय चरसि, धम्मदेसनाकाले
20 दक्खिणपस्से निसीदसि, किं पन मय्हं गुणा अत्तनो चेतसा परिच्छिन्दित्वा विदिता तया ति अनुयुञ्जन्तो एवमाह।

थेरो पन पुच्छिते पुच्छिते "नो हेतं भन्ते" ति पटिक्खिपति। थेरस्स च विदितम्पि अत्थि अविदितम्पि अत्थि[३], किं सो अत्तनो विदितट्ठाने पटिक्खेपं करोति, अविदितट्ठाने ति ? विदितट्ठाने न
25 करोति, अविदितट्ठानेयेव करोती ति। थेरो किर अनुयोगे आरद्धेयेव

१. अंगारो—रो०। २. वससि—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि।

अञ्ञासि। न[1] न अयं अनुयोगो सावकपारमीञाणे, सब्बञ्ञुतञ्ञाणे अयं अनुयोगो ति अत्तनो सावकपारमीञाणे पटिक्खेपं अकत्वा अविदितट्ठानं सब्बञ्ञुतञ्ञाणे पटिक्खेपं करोति। तेन इदम्पि दीपेति "भगवा मय्हं अतीतानागतपच्चुप्पन्नानं बुद्धानं सीलसमाधिपञ्ञाविमुत्तिकारणजाननसमत्थं सब्बञ्ञुतञ्ञाणं नत्थी'' ति। R. 880 5

एत्था ति एतेसु अतीतादिभेदेसु बुद्धेसु। **अथ किञ्चरही** ति अथ कस्मा एवं ञाणे असति तथा एव कथितं ति वदति।

३. **धम्मन्वयो** (दी० नि० ३.७८) ति धम्मस्स पच्चक्खतो ञाणस्स अनुयोगं अनुगन्त्वा उप्पन्नं अनुमानञाणं नयग्गाहो विदितो। सावकपारमीञाणे ठत्वाव इमिनाव आकारेन जानामि भगवा ति वदति। थेरस्स हि नयग्गाहो अप्पमाणो अपरियन्तो। यथा सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स पमाणं वा परियन्तो वा नत्थि, एवं धम्मसेनापतिनो नयग्गाहस्स। तेन सो "इमिना एवविधो, इमिना अनुत्तरो सत्था[2]'' ति जानाति। थेरस्स हि नयग्गाहो सब्बञ्ञुतञ्ञाणगतिको एव। इदानि तं नयग्गाहं पाकटं कातुं उपमाय[3] दस्सेन्तो **सेय्यथापि भन्ते** तिआदिमाह। तत्थ यस्मा मज्झिमपदेसे नगरस्स[4] उद्धापपाकारादीनि[5] थिरानि वा होन्तु, दुब्बलानि वा, सब्बसो वा पन मा होन्तु, चोरासङ्का न होति, तस्मा तं अग्गहेत्वा पच्चन्तिमनगरं ति आह। **दळ्हुद्धापं** ति थिरपाकारपादं। **दळ्हपाकारतोरणं** ति थिरपाकारञ्चेव थिरपिट्ठसङ्घाटञ्च। **एकद्वारं** ति कस्मा आह? बहुद्वारे हि[6] नगरे बहूहि पण्डितदोवारिकेहि भवितब्बं। एकद्वारे एकोव वट्टति। थेरस्स च पञ्ञाय सदिसो अञ्ञो नत्थि। तस्मा अत्तनो पण्डितभावस्स ओपम्मत्थं एकंयेव दोवारिकं दस्सेतुं एकद्वारं" ति आह। **पण्डितो** ति पण्डिच्चेन समन्नागतो। **ब्यत्तो** ति वेय्यत्तियेन 10 B. 64 15 20

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. सति—रो०।
३. उपमं—रो०। ४. रो० पोत्थके नत्थि।
५. उद्दापादानि—रो०। ६. रो० पोत्थके नत्थि।

समन्नागतो विसदञाणो। **मेधावी** ति ठानुप्पत्तिकपञ्ञासङ्खाताय मेधाय समन्नागतो। **अनुपरियायपथं** ति अनुपरियायनामकं पाकारमग्गं। **पाकारसन्धिं** ति छिन्नं इट्ठकानं अपगतट्ठानं। **पाकारविवरं** ति पाकारस्स छिन्नट्ठानं **चेतसो उपक्किलेसे** ति पञ्च नीवरणानि चित्तं उपक्किलेसेन्ति
5 किलिट्ठं करोन्ति उपतापेन्ति विबाधेन्ति[१], तस्मा "चेतसो उपक्किलेसा" ति वुच्चन्ति। **पञ्ञाय दुब्बलीकरणे** ति नीवरणा उप्पज्जमाना अनुप्पन्नाय पञ्ञाय उप्पज्जितुं न देन्ति, उप्पन्नाय पञ्ञाय वड्ढितुं न देन्ति, तस्मा "पञ्ञाय दुब्बलीकरणा" ति वुच्चन्ति। **सुप्पतिट्ठितचित्ता** ति चतूसु सतिपट्ठानेसु सुट्ठु ठपितचित्ता हुत्वा। **सत्त बोज्झङ्गे यथाभूतं** ति सत्त
10 बोज्झङ्गे यथासभावेन भावेत्वा। **अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं** ति अरहत्तं सब्बञ्ञुतञ्ञाणं वा पटिविज्झिंसू ति दस्सेति।

अपिचेत्थ सतिपट्ठाना ति विपस्सना। सम्बोज्झङ्गा मग्गो। अनुत्तरासम्मासम्बोधि अरहत्तं। सतिपट्ठाना ति वा मग्गा ति वा बोज्झङ्गमिस्सका। सम्मासम्बोधि अरहत्तमेव। दीघभाणकमहासीव-
B. 65 15 त्थेरो पनाह "सतिपट्ठाने विपस्सना ति गहेत्वा बोज्झङ्गे मग्गे च सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्चा ति गहिते[२] सुन्दरो पञ्हो भवेय्य, न पनेवं गहितं" ति। इति थेरो सब्बञ्ञुबुद्धानं नीवरणप्पहाने सतिपट्ठान-भावनाय सम्बोधियञ्च मज्झे भिन्नसुवण्णरजतानं विय नानत्ताभावं दस्सेति।

20 इध ठत्वा उपमा संसन्देतब्बा—आयस्मा हि सारिपुत्तो पच्चन्त-नगरं दस्सेसि, पाकारं दस्सेसि, परियायपथं दस्सेसि, द्वारं दस्सेसि, पण्डितदोवारिकं दस्सेसि, नगरं पवेसनकनिक्खमनके ओळारिके पाणे दस्सेसि, पण्डितदोवारिकस्स तेसं पाणानं पाकटभावञ्च दस्सेसि। तत्थ किं केन सदिसं ति चे। नगरं विय हि निब्बानं, पाकारो विय सीलं,
25 परियायपथो विय हिरी[३], द्वारं विय अरियमग्गो, पण्डितदोवारिको

१. विहेठेन्ति—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. समथो—रो०।

विय धम्मसेनापति, नगरप्पविसनकनिक्खमनकओळारिकपाणा विय अतीतानागतपच्चुप्पन्ना बुद्धा, दोवारिकस्स तेसं पाणानं पाकटभावो विय आयस्मतो सारिपुत्तस्स अतीतानागतपच्चुप्पन्नबुद्धानं सीलसमथादीहि पाकटभावो। एत्तावता थेरेन भगवा एवमहं सावकपारमीञाणे ठत्वा धम्मन्वयेन नयग्गाहेन जानामी ति अत्तनो सीहनादस्स अनुयोगो 5 दिन्नो होति।

४. **इधाहं भन्ते येन भगवा** (दी० नि० ३.७८) ति इमं देसनं कस्मा आरभि? सावकपारमीञाणस्स निप्फत्तिदस्सनत्थं। अयञ्हेत्थ R. 882 अधिप्पायो, भगवा अहं सावकपारमीञाणं पटिलभन्तो पञ्चनवुतिपासण्डेसु न अञ्ञं एकम्पि समणं वा ब्राह्मणं वा उपसङ्कमित्वा 10 सावकपारमीञाणम्पि[1] पटिलभिं, तुम्हेयेव उपसङ्कमित्वा तुम्हे पयिरुपासन्तो पटिलभिं ति। तत्थ **इधा** ति निपातमत्तं। **उपसङ्कमिं धम्मसवनाया** ति तुम्हे उपसङ्कमन्तो पनाहं[2] न चीवरादिहेतु उपसङ्कमन्तो, धम्मसवनत्थाय उपसङ्कमन्तो। एवं उपसङ्कमित्वा सावकपारमीञाणं पटिलभिं। कदा पन थेरो धम्मसवनत्थाय उपसङ्कमन्तो ति। 15 सूकरखतलेणे भागिनेय्यदीघनखपरिब्बाजकस्स वेदनापरिग्गहसुत्तन्तकथनदिवसे उपसङ्कमन्तो, तदायेव सावकपारमीञाणं पटिलभी ति। तंदिवसञ्हि थेरो तालवण्टं गहेत्वा भगवन्तं बीजमानो ठितो तं देसनं B. 66 सुत्वा तत्थेव सावकपारमीञाणं हत्थगतं अकासि। **उत्तरुत्तरं पणीतपणीतं** ति उत्तरुत्तरञ्चेव पणीतपणीतञ्च कत्वा देसेसि। **कण्हसुक्कसप्पटि-** 20 **भागं** ति कण्हञ्चेव सुक्कञ्च तञ्च खो सप्पटिभागं सविपक्खं कत्वा। कण्हं पटिबाहित्वा सुक्कं, सुक्कं पटिबाहित्वा कण्हं ति एवं सप्पटिभागं कत्वा कण्हसुक्कं देसेसि, कण्हं देसेन्तोपि च सउस्साहं सविपाकं देसेसि, सुक्कं देसेन्तोपि सउस्साहं सविपाकं देसेसि।

तस्मिं धम्मं अभिञ्ञा इधेकच्चं धम्मं धम्मेसु निट्ठमगमं ति तस्मिं 25 देसिते धम्मे एकच्चं धम्मं नाम सावकपारमीञाणं सञ्जानित्वा[3] धम्मेसु

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. चाहं—रो०।
३. जानित्वा—रो०।

निट्ठमगमं। कतमेसु धम्मेसू ति? चतुसच्चधम्मेसु। एत्थायं थेरसल्लापो, काळवल्लवासी सुमत्थेरो ताव वदति "चतुसच्चधम्मेसु इदानि निट्ठगमनकारणं नत्थि। अस्सजिमहासावकस्स हि दिट्ठदिवसेयेव सो पठममग्गेन चतुसच्चधम्मेसु निट्ठं गतो, अपरभागे सूकरखतलेणद्वारे
R. 883 5 उपरि तीहि मग्गेहि चतुसच्च धम्मेसु निट्ठं गतो, इमस्मिं पन ठाने 'धम्मेसू' ति बुद्धगुणेसु निट्ठं गतो" ति। लोकन्तरवासी[१] चूळसीवत्थेरो पन सब्बं तथेव वत्वा इमस्मिं पन ठाने 'धम्मेसू' ति अरहत्ते निट्ठं गतो" ति आह। दीघभाणक-तिपिटकमहासीवत्थेरो पन "तदेव पुरिमवादं वत्वा इमस्मिं पन ठाने 'धम्मेसु' ति सावकपारमीञाणे निट्ठं
10 गतो" ति वत्वा "बुद्धगुणा पन नयतो आगता" ति आह।

सत्थरि पसीदि ति एवं सावकपारमीञाणधम्मेसु निट्ठं गन्त्वा भिय्योसो मत्ताय "सम्मासम्बुद्धो वत सो भगवा" ति सत्थरि पसीदिं। **स्वाक्खातो भगवता धम्मो** ति सुट्ठु अक्खातो सुकथितो निय्यानिको मग्गो फलत्थाय निय्याति रागदोसमोहनिम्मदनसमत्थो।

15 **सुप्पटिपन्नो संघो** ति बुद्धस्स भगवतो सावकसंघो पि वङ्कादिदोसविरहितं सम्मापटिपदं पटिपन्नत्ता सुप्पटिपन्नो ति पसन्नोम्हि भगवती ति दस्सेति।

२. कुसलधम्मदेसनावण्णना

५. इदानि दिवाट्ठाने निसीदित्वा समापज्जिते सोळस अपरापरियधम्मे दस्सेतुं **अपरं पन भन्ते एतदानुत्तरियं**
B. 67 20 (दी० नि० ३.७९) ति देसनं आरभि। तत्थ **अनुत्तरियं** ति अनुत्तरभावो। **यथा भगवा धम्मं देसेती** ति यथा येनाकारेन याय देसनाय भगवा धम्मं देसेति, सा तुम्हाकं देसना अनुत्तरा ति वदति। **कुसलेसु धम्मेसू** ति ताय देसनाय देसितेसु कुसलेसु धम्मेसुपि भगवा व अनुत्तरो ति दीपेति। या वा सा देसना, तस्सा भूमिं

१. लोकुत्तरवासी—रो०।

दस्सेन्तोपि "कुसलेसु धम्मेसू" ति आह। **तत्रिमे कुसला धम्मा** ति तत्र कुसलेसु धम्मेसू ति वुत्तपदे इमे कुसला[1] धम्मा नामा ति वेदितब्बा। तत्थ आरोग्यट्ठेन, अनवज्जट्ठेन, कोसल्लसम्भूतट्ठेन, निद्दरथट्ठेन, सुखविपाकट्ठेनाति पञ्चधा कुसलं वेदितब्बं। तेसु जातकपरियायं पत्वा आरोग्यट्ठेन कुसलं वट्टति[2]। सुत्तन्तपरियायं पत्वा अनवज्जट्ठेन। अभिधम्मपरियायं पत्वा कोसल्लसम्भूतनिद्दरथसुखविपाकट्ठेन। इमस्मिं पन ठाने बाहियसुत्तन्तपरियायेन अनवज्जट्ठेन कुसलं दट्ठब्बं। 5

चत्तारो सतिपट्ठाना ति चुद्दसविधेन कायानुपस्सनासतिपट्ठानं, नवविधेन वेदनानुपस्सनासतिपट्ठानं, सोळसविधेन चित्तानुपस्सनासतिपट्ठानं, पञ्चविधेन धम्मानुपस्सनासतिपट्ठानं ति एवं नानानयेहि विभजित्वा समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरमिस्सका चत्तारो सतिपट्ठाना देसिता। फलसतिपट्ठानं पन इध अनधिप्पेतं। **चत्तारो सम्मप्पधाना** ति पग्गहट्ठेन एकलक्खणा, किच्चवसेन नानाकिच्चा। "इध भिक्खु अनुप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाया" तिआदिना नयेन समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरमिस्सकाव चत्तारो सम्मप्पधाना देसिता। **चत्तारो इद्धिपादा** ति इज्झनट्ठेन एकसङ्गहा, छन्दादिवसेन नानासभावा। "इध भिक्खु छन्दसमाधिपधानसङ्खारसमन्नागतं इद्धिपादं भावेती" तिआदिना नयेन समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरमिस्सकाव चत्तारो इद्धिपादा देसिता। 10 R. 884 15 20

पञ्चिन्द्रियानी ति आधिपतेय्यट्ठेन एकलक्खणानि, अधिमोक्खादिसभाववसेन नानासभावानि। समथविपस्सनामग्गवसेनेव च[3] लोकियलोकुत्तरमिस्सकानि सद्धादीनि पञ्चिन्द्रियानि देसितानि। **पञ्च बलानी** ति उपत्थम्भनट्ठेन अकम्पियट्ठेन वा एकसङ्गहानि, 25

१. कुसले—रो०। २. वट्टति—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि।

B. 68 सलक्खणेन नानासभावानि। समथविपस्सनामग्गवसेनेव लोकियलो-
कुत्तरमिस्सकानि सद्धादीनि पञ्च बलानि देसितानि। **सत्त बोज्झङ्गा**
ति निय्यानट्ठेन एकसङ्गहा, उपट्ठानादिना सलक्खणेन नानासभावा।
समथविपस्सना मग्गवसेनेव लोकियलोकुत्तरमिस्सका सत्त बोज्झङ्गा
5 देसिता।

अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो ति हेतुट्ठेन एकसङ्गहो, दस्सनादिना
सलक्खणेन नानासभावो। समथविपस्सनामग्गवसेनेव लोकियलोकुत्तर-
मिस्सको अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो देसितो ति अत्थो।

इध भन्ते भिक्खु आसवानं खया ति इदं किमत्थं आरद्धं?
10 सासनस्स परियोसानदस्सनत्थं। सासनस्स हि न केवलं मग्गेनेव
परियोसानं होति, अरहत्तफलेन पन होति। तस्मा तं दस्सेतुं
इदमारद्धं ति वेदितब्बं। **एतदानुत्तरियं भन्ते कुसलेसु धम्मेसू** ति
R. 885 भन्ते या अयं कुसलेसु धम्मेसु एवंदेसना, एतदानुत्तरियं। **तं भगवा**
ति तं देसनं भगवा असेसं सकलं अभिजानाति। **तं भगवतो** ति
15 तं देसनं भगवतो असेसं अभिजानतो। **उत्तरि अभिञ्ञेय्यं नत्थी**
ति तदुत्तरिं[1] अभिजानितब्बं नत्थि, अयं नाम इतो अञ्ञो धम्मो वा
पुग्गलो वा यं भगवा न जानाती ति इदं नत्थि। **यदभिजानं**
अञ्ञो समणो वाति यं तुम्हेहि अनभिञ्ञातं, तं अञ्ञो समणो वा
ब्राह्मणो वा अभिजानन्तो भगवता भिय्योभिञ्ञतरो अस्स,
20 अधिकतरपञ्ञो भवेय्य। **यदिदं कुसलेसु धम्मेसू** ति एत्थ **यदिदं**
ति निपातमत्तं, कुसलेसु धम्मेसु भगवता उत्तरितरो नत्थी ति
अयमेत्थत्थो। इति भगवाव कुसलेसु धम्मेसु अनुत्तरोति दस्सेन्तो
"इमिनापि कारणेन एवंपसन्नो अहं, भन्ते, भगवती" ति दीपेति।
इतो परेसु **अपरं पना** तिआदीसु विसेसमत्तमेव वण्णयिस्साम।
25 पुरिमवारसदिसं पन वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

१. उत्तरिं—रो०।

३. आयतनपण्णत्तिदेसनावण्णना

६. **आयतनपण्णत्तीसू** ति आयतनपञ्ञापनासु। इदानि ता आयतनपञ्ञत्तियो दस्सेन्तो **छयिमानि भन्ते** तिआदिमाह। आयतनकथा पनेसा विसुद्धिमग्गे वित्थारेन कथिता, तेन न तं वित्थारयिस्साम[1], तस्मा तत्थ वुत्तनयेनेव सा[2] वित्थारतो वेदितब्बा। 5

एतदानुत्तरियं भन्ते आयतनपण्णत्तीसू ति यायं आयतनपण्णत्तीसु[3] अज्झत्तिकबाहिरववत्थानादिवसेन एवं देसना, एतदानुत्तरियं। सेसं वुत्तनयमेव। B. 69

४. गब्भावक्कन्तिदेसनावण्णना

७. **गब्भावक्कन्तीसू** ति गब्भोक्कमनेसु। ता गब्भावक्कन्तियो दस्सेन्तो **चतस्सो इमा भन्ते** तिआदिमाह। तत्थ **असम्पजानो** ति 10 अजानन्तो सम्मूळ्हो हुत्वा। **मातुकुच्छिं ओक्कमती** ति पटिसन्धिवसेन पविसति। **ठाती** ति वसति। **निक्खमती** ति निक्खमन्तोपि असम्पजानो सम्मूळ्हो निक्खमति। **अयं पठमा** ति अयं पकतिलोकियमनुस्सानं पठमा गब्भावक्कन्ति।

सम्पजानो मातुकुच्छिं ओक्कमती ति ओक्कमन्तो सम्पजानो 15 असम्मूळ्हो हुत्वा ओक्कमति।

अयं दुतिया ति अयं असीतिमहाथेरानं सावकानं दुतिया गब्भावक्कन्ति। ते हि पविसन्ताव जानन्ति[4], वसन्ता च निक्खमन्ता च न जानन्ति। R. 886

अयं ततिया ति अयं द्विन्नञ्च अग्गसावकानं पच्चेकबोधिसत्तानञ्च 20 ततिया गब्भावक्कन्ति। ते किर कम्मजेहि वातेहि अधोसिरा उद्धंपादा

१. वित्थारयाम—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. आयतनपञ्ञत्तीसु—रो०। ४. पजानन्ति—रो०।

अनेकसतपोरिसे पपाते विय योनिमुखेन खित्ता ताळच्छिग्गळेन हत्थी विय सम्बाधेन योनिमुखेन निक्खममाना अनन्तं दुक्खं पापुणन्ति। तेन नेसं "मयं निक्खम्हा ति सम्पजानता न होति। एवं पूरितपारमीनम्पि च सत्तानं एवरूपे ठाने महन्तं दुक्खं उप्पज्जती
5 ति अलमेव गब्भावासे निब्बिन्दितुं अलं विरज्जितुं।

अयं चतुत्था ति अयं सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं वसेन चतुत्था गब्भावक्कन्ति। सब्बञ्ञुबोधिसत्ता हि मातुकुच्छिस्मिं पटिसन्धिं गण्हन्तापि जानन्ति, तत्थ वसन्तापि जानन्ति, निक्खमन्तापि जानन्ति, निक्खमनकालेपि च ते कम्मजवाता उद्धंपादे अधोसिरे कत्वा
10 खिपितुं न सक्कोन्ति, द्वे हत्थे पसारेत्वा अक्खीनि उम्मीलेत्वा ठितकाव निक्खमन्ति। भवग्गं उपादाय अवीचिअन्तरे अञ्ञो तीसु कालेसु सम्पजानो नाम नत्थि ठपेत्वा सब्बञ्ञुबोधिसत्ते। तेनेव नेसं
B. 70 मातुकुच्छि ओक्कमनकाले च निक्खमनकाले च दससहस्सिलोकधातु कम्पती ति। सेसमेत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

५. आदेसनविधादेसनावण्णना

15 ८. **आदेसनविधासू** (दी० नि० ३.८०) ति आदेसनकोट्ठासेसु। इदानि ता आदेसनविधा दस्सेन्तो **चतस्सो इमा** तिआदिमाह। **निमित्तेन आदिसती** ति आगतनिमित्तेन गतनिमित्तेन ठितनिमित्तेन वा इदं नाम भविस्सती ति कथेति। तत्रिदं वत्थु। एको राजा तिस्सो मुत्ता गहेत्वा पुरोहितं पुच्छि "किं मे, आचरिय, हत्थे" ति?
20 सो इतो चितो च ओलोकेसि। तेन च समयेन एका सरबू "मक्खिकं गहेस्सामी" ति पक्खन्दि, गहणकाले मक्खिका पलाता, सो मक्खिकाय मुत्तत्ता "मुत्ता महाराजा" ति आह। मुत्ता ताव होतु, कति मुत्ता ति? सो पुन निमित्तं ओलोकेसि। अथ अविदूरे कुक्कुटो तिक्खत्तुं सद्दं निच्छारेसि। ब्राह्मणो "तिस्सो महाराजा" ति आह।

एवं एकच्चो आगतनिमित्तेन कथेति । एतनुपायेन गतठितनि[1]मित्तेहिपि कथनं वेदितब्बं ।

अमनुस्सानं ति यक्खपिसाचादीनं । **देवतानं** ति चातुमहाराजि-कादीनं । **सद्दं सुत्वा** ति अञ्ञस्स चित्तं ञत्वा कथेन्तानं सद्दं[2] सुत्वा । R. 887
वितक्कविप्फारसद्दं ति वितक्कविप्फारवसेन उप्पन्नं विप्पलपन्तानं 5
सुत्तपमत्तादीनं सद्दं । **सुत्वा** ति तं सद्दं[3] सुत्वा । यं[4] वितक्कयतो तस्स सो सद्दो उप्पन्नो, तस्स वसेन "एवम्पि ते मनो" ति आदिसति । **मनोसङ्खारा पणिहिता** ति चित्तसङ्खारा सुट्ठपिता । **वितक्केस्सती** ति वितक्कयिस्सति पवत्तेस्सती ति पजानाति । जानन्तो च आगमनेन जानाति, पुब्बभागेन जानाति, अन्तोसमापत्तियं चित्तं ओलोकेत्वा[5] 10
जानाति । **आगमनेन जानाति** नाम कसिणपरिकम्मकालेयेव येनाकारेन एस कसिणभावनं आरद्धो पठमज्झानं वा ...पे०... चतुत्थज्झानं वा अट्ठसमापत्तियो वा निब्बत्तेस्सती ति जानाति । **पुब्बभागेन जानाति** नाम समथविपस्सनाय आरद्धायेव जानाति, येनाकारेन एस विपस्सनं आरद्धो सोतापत्तिमग्गं वा निब्बत्तेस्सति...पे०...अरहत्तमग्गं वा 15
निब्बत्तेस्सती जानाति । **अन्तोसमापत्तियं चित्तं ओलोकेत्वा जानाति** नाम येनाकारेन इमस्स मनोसङ्खारा सुट्ठपिता, इमस्स नाम चित्तस्स अनन्तरा इमं नाम वितक्कं वितक्केस्सति । इतो वुट्ठितस्स एतस्स B. 71
हानभागियो वा समाधि भविस्सति, ठितिभागियो वा विसेसभागियो वा निब्बेधभागियो वा अभिञ्ञायो वा निब्बत्तेस्सती ति जानाति । 20

तत्थ पुथुज्जनो चेतोपरियञाणलाभी पुथुज्जनानंयेव चित्तं जानाति, न अरियानं । अरियेसुपि हेट्ठिमो हेट्ठिमो उपरिमस्स उपरिमस्स चित्तं न जानाति, उपरिमो पन हेट्ठिमस्स जानाति । एतेसु च सोतापन्नो सोतापत्तिफलसमापत्तिं समापज्जति । सकदागामी, अनागामी, अरहा,

१. गतिठिति०—रो० । २. रो० पोत्थके नत्थि । ३. रो० पोत्थके नत्थि । ४. रो० पोत्थके नत्थि । ५. अपलोकेत्वा—रो० ।

अरहत्तफलसमापत्तिं समापज्जति । उपरिमो हेट्ठिमं न समापज्जति । तेसञ्हि हेट्ठिमा हेट्ठिमा समापत्ति तत्रुपपत्तियेव होति । तथेव तं होतो ति इदं एकंसेन तथेव होति । चेतोपरियञाणवसेन ञातञ्हि अञ्ञथाभावी नाम नत्थि । सेसं पुरिमनयेनेव योजेतब्बं ।

६. दस्सनसमापत्तिदेसनावण्णना

5 ९. **आतप्पमन्वाय** (दी० नि० ३.८१) तिआदि ब्रह्मजाले R. 888 वित्थारितमेव । अयं पनेत्थ सङ्खेपो, आतप्पं ति वीरियं । तदेव पदहितब्बतो पधानं । अनुयुञ्जितब्बतो अनुयोगो । **अप्पमादं** ति सतिअविप्पवासं । **सम्मामनसिकारं** ति अनिच्चे अनिच्चन्तिआदिवसेन पवत्तं उपायमनसिकारं । **चेतोसमाधिं** ति पठमज्झानसमाधिं । **अयं** 10 **पठमा दस्सनसमापत्ती** ति अयं द्वत्तिंसाकारं पटिकूलतो मनसिकत्वा पटिकूलदस्सनवसेन उप्पादिता पठमज्झानसमापत्ति पठमा दस्सन-समापत्ति नाम, सचे पन तं झानं पादकं कत्वा सोतापन्नो होति, अयं निप्परियायेनेव पठमा दस्सनसमापत्ति ।

अतिक्कम्म चा ति अतिक्कमित्वा च । **छविमंसलोहितं** ति छविञ्च 15 मंसञ्च लोहितञ्च । **अट्ठि पच्चवेक्खती** ति अट्ठि अट्ठी ति पच्चवेक्खति । अट्ठि अट्ठी ति पच्चवेक्खित्वा उप्पादिता अट्ठिआरम्मणा दिब्बचक्खु-पादकज्झानसमापत्ति दुतिया दस्सनसमापत्ति नाम । सचे पन तं झानं पादकं कत्वा सकदागामिमग्गं निब्बत्तेति । अयं निप्परियायेन दुतिया दस्सनसमापत्ति । काळवल्लवासी[1] सुमत्थेरो पन "याव 20 ततियमग्गा वट्टती" ति आह ।

B. 72 **विञ्ञाणसोतं** ति विञ्ञाणमेव । **उभयतो अब्बोच्छिन्नं** ति द्वीहिपि भागेहि अच्छिन्नं । **इध लोके पतिट्ठितञ्चा** ति छन्दरागवसेन इमस्मिञ्च लोके पतिट्ठितं । दुतियपदेपि एसेव नयो । कम्मं वा कम्मतो उपगच्छन्तं इध लोके पतिट्ठितं नाम । कम्मभवं ओकड्ढन्तं परलोके

१. काळहालकवासी—रो० ।

पतिट्ठितं नाम। इमिना किं कथितं? सेक्खपुथुज्जनानं चेतोपरियञाणं कथितं। सेक्खपुथुज्जनानञ्हि चेतोपरियञाणं ततिया दस्सनसमापत्ति नाम।

इध लोके अप्पतिट्ठितञ्चा ति निच्छन्दरागत्ता इधलोके च अप्पतिट्ठितं। दुतियपदेपि एसेव नयो। कम्मं वा कम्मतो न उपगच्छन्तं 5 इध लोके अप्पतिट्ठितं नाम। कम्मभवं अनाकड्ढन्तं परलोके अप्पतिट्ठितं नाम। इमिना किं कथितं? खीणासवस्स चेतोपरियञाणं कथितं। खीणासवस्स हि चेतोपरियञाणं चतुत्था दस्सनसमापत्ति नाम।

अपिच द्वत्तिंसाकारे आरद्धविपस्सनापि पठमा दस्सनसमापत्ति। 10 R. 889 अट्ठिआरम्मणे आरद्धविपस्सना दुतिया दस्सनसमापत्ति। सेक्खपुथुज्जनानं चेतोपरियञाणं खीणासवस्स चेतोपरियञाणं ति इदं[1] पदद्वयं निच्चलमेव। अपरो नयो पठमज्झानं पठमा दस्सनसमापत्ति, दुतियज्झानं दुतिया, ततियज्झानं ततिया, चतुत्थज्झानं चतुत्था दस्सनसमापत्ति[2]; तथा पठममग्गो पठमा दस्सनसमापत्ति, दुतियमग्गो 15 दुतिया, ततियमग्गो ततिया, चतुत्थमग्गो चतुत्था दस्सनसमापत्ती ति। सेसमेत्थ पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

७. पुग्गलपण्णत्तिदेसनावण्णना

१०. पुग्गलपण्णत्तीसू (दी० नि० ३.८२) ति लोकवोहारवसेन "सत्तो पुग्गलो नरो पोसो" ति एवं पञ्ञापेतब्बासु लोकपञ्ञत्तीसु। बुद्धानञ्हि द्वे कथा सम्मुतिकथा, परमत्थकथा ति पोट्ठपादसुत्ते 20 वित्थारिता।

तत्थ पुग्गलपञ्ञत्तीसु ति अयं सम्मुतिकथा। इदानि ये पुग्गले पञ्ञपेन्तो पुग्गलपण्णत्तीसु भगवा अनुत्तरो होति, ते दस्सेन्तो सत्तिमे

१. इदं पन—रो०। २–२. रो० पोत्थके नत्थि।

भन्ते पुग्गला । उभतोभागविमुत्तो तिआदिमाह । तत्थ उभतोभाग-
B. 73 विमुत्तो ति द्वीहि भागेहि विमुत्तो, अरूपसमापत्तिया रूपकायतो
विमुत्तो, मग्गेन नामकायतो । सो चतुन्नं अरूपसमापत्तीनं एकेकतो
वुट्ठाय सङ्खारे सम्मसित्वा अरहत्तप्पत्तानं, चतुन्नं, निरोधा वुट्ठाय
5 अरहत्तप्पत्तअनागामिनो च वसेन पञ्चविधो होति ।

पाळि पनेत्थ "कतमो च पुग्गलो उभतोभागविमुत्तो ? इधेकच्चो
पुग्गलो अट्ठविमोक्खे कायेन फुसित्वा विहरति, पञ्ञाय चस्स दिस्वा
आसवा परिक्खीणा होन्ती" (पु० प० २३) ति एवं अट्ठविमोक्ख-
लाभिनो वसेन आगता । पञ्ञाय विमुत्तो ति पञ्ञाविमुत्तो । सो
10 सुक्खविपस्सको च, चतूहि झानेहि वुट्ठाय अरहत्तं पत्ता चत्तारो चा
ति इमेसं वसेन पञ्चविधोव होति ।

पाळि पनेत्थ अट्ठविमोक्खपटिक्खेपवसेनेव आगता । यथाह
"न हेव खो अट्ठ विमोक्खे कायेन फुसित्वा विहरति, पञ्ञाय चस्स
दिस्वा आसवा परिक्खीणा होन्ति । अयं वुच्चति पुग्गलो पञ्ञा-
15 विमुत्तो" (पु० प० २३) ति ।

फुट्ठन्तं सच्छि करोती ति कायसक्खि । सो[१] झानफस्सं पठमं
फुसति, पच्छा निरोधं निब्बानं सच्छिकरोति, सो सोतापत्तिफलट्ठं
R. 890 आदिं कत्वा याव अरहत्तमग्गट्ठा छब्बिधो होती ति वेदितब्बो ।
तेनेवाह "इधेकच्चो पुग्गलो अट्ठविमोक्खे कायेन फुसित्वा विहरति,
20 पञ्ञाय चस्स दिस्वा एकच्चे आसवा परिक्खीणा होन्ति । अयं
वुच्चति पुग्गलो कायसक्खी" (पु० प० २४) ति ।

दिट्ठन्तं पत्तो ति दिट्ठिप्पत्तो । तत्रिदं सङ्खेपलक्खणं-दुक्खा सङ्खारा
सुखो निरोधो ति ञातं[२] होति दिट्ठं विदितं सच्छि कतं पस्सितं
पञ्ञायति दिट्ठिप्पत्तो । वित्थारतो पनेसोपि कायसक्खि विय
25 छब्बिधो होति । तेनेवाह—"इधेकच्चो पुग्गलो इदं दुक्खं ति यथा-
भूतं पजानाति...पे०...अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा ति यथाभूतं

१. यो काये—रो० । २. ञाणं—रो० ।

पजानाति, तथागतप्पवेदिता चस्स धम्मा पञ्ञाय वोदिट्ठा होन्ति वोचारिता, पञ्ञाय चस्स[1] दिस्वा एकच्चे आसवा परिक्खीणा होन्ति[1]। अयं वुच्चति पुग्गलो दिट्ठिप्पत्तो" (पु० प० २४) ति।

सद्धाय विमुत्तो ति **सद्धाविमुत्तो**। सोपि वुत्तनयेनेव छब्बिधो होति। तेनेवाह—"इधेकच्चो पुग्गलो इदं दुक्खं ति ...पे०... अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा ति यथाभूतं पजानाति, तथागतप्पवेदिता चस्स धम्मा पञ्ञाय वोदिट्ठा होन्ति वोचरिता, पञ्ञाय चस्स दिस्वा एकच्चे आसवा परिक्खीणा होन्ति नो च खो यथा दिट्ठिप्पत्तस्स। अयं[2] वुच्चति पुग्गलो सद्धाविमुत्तो" (पु० प० २४) ति[2]। एतेसु हि सद्धाविमुत्तस्स पुब्बभागमग्गक्खणे सद्दहन्तस्स विय, ओकप्पेन्तस्स विय, अधिमुच्चन्तस्स विय च किलेसक्खयो होति। दिट्ठिप्पत्तस्स पुब्बभागमग्गक्खणे किलेसच्छेदकं ञाणं अदन्धं तिखिणं सूरं हुत्वा वहति। तस्मा यथा नाम नातितिखिणेन असिना कदलिं छिन्दन्तस्स छिन्नट्ठानं न मट्ठं होति, असि न सीघं वहति, सद्दो सूयति, बलवतरो वायामो कातब्बो होति, एवरूपा सद्धाविमुत्तस्स पुब्बभागमग्गभावना। यथा पन अतिनिसितेन असिना कदलिं छिन्दन्तस्स छिन्नट्ठानं मट्ठं होति, असि सीघं वहति, सद्दो न सुय्यति, बलवतरं वायामकिच्चं न होति, एवरूपा पञ्ञाविमुत्तस्स पुब्बभागमग्गभावना वेदितब्बा।

धम्मं अनुस्सरती ति **धम्मानुसारी**। धम्मो ति पञ्ञा, पञ्ञापुब्बङ्गमं मग्गं भावेती ति अत्थो। **सद्धानुसारिम्हिपि** एसेव नयो। उभोपेते सोतापत्तिमग्गट्ठायेव। वुत्तम्पि चेतं "यस्स पुग्गलस्स सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्नस्स पञ्ञिन्द्रियं अधिमत्तं होति, पञ्ञावाहिं पञ्ञापुब्बङ्गमं अरियमग्गं भावेति। अयं वुच्चति पुग्गलो धम्मानुसारी" ति।

तथा "यस्स पुग्गलस्स सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्नस्स सद्धिन्द्रियं अधिमत्तं होति, सद्धावाहिं सद्धापुब्बङ्गमं अरियमग्गं

[Margin: B. 74; line numbers 5, 10, 15, 20, 25; R. 891]

१-१. रो० पोत्थके नत्थि। २-२. रो० पोत्थके नत्थि।

भावेति। अयं वुच्चति पुग्गलो सद्धानुसारी" ति। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारतो पनेसा उभतोभागविमुत्तादिकथा विसुद्धिमग्गे पञ्ञाभावनाधिकारे वुत्ता। तस्मा तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

८. पधानदेसनावण्णना

5 ११. **पधानेसू** (दी० नि० ३·८२) ति इध पदहनवसेन "सत्त बोज्झङ्गा पधाना" ति वुत्ता। तेसं वित्थारकथा महासतिपट्ठाने वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

B. 75

९. पटिपदादेसनावण्णना

१२. **दुक्खपटिपदा** दीसु अयं वित्थारनयो—"तत्थ कतमा दुक्ख पटिपदा दन्धाभिञ्ञा पञ्ञा ? दुक्खेन कसिरेन समाधिं उप्पादेन्तस्स 15 दन्धं तं ठानं अभिजानन्तस्स या पञ्ञा पजानना ...पे०... अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि, अयं वुच्चति दुक्खपटिपदा दन्धाभिञ्ञा पञ्ञा। तत्थ कतमा दुक्खपटिपदा खिप्पाभिञ्ञा पञ्ञा ? दुक्खेन कसिरेन समाधिं उप्पादेन्तस्स खिप्पं तं ठानं अभिजानन्तस्स या पञ्ञा पजानना ...पे०... सम्मादिट्ठि, अयं वुच्चति दुक्खपटिपदा खिप्पाभिञ्ञा 20 पञ्ञा। तत्थ कतमा सुखपटिपदा दन्धा भिञ्ञा पञ्ञा ? अकिच्छेन अकसिरेन समाधिं उप्पादेन्तस्स दन्धं तं ठानं अभिजानन्तस्स या पञ्ञा पजानना ...पे०... सम्मादिट्ठि, अयं वुच्चति सुखपटिपदा दन्धाभिञ्ञा पञ्ञा। तत्थ कतमा सुखपटिपदा खिप्पाभिञ्ञा पञ्ञा ? अकिच्छेन अकसिरेन समाधिं उप्पादेन्तस्स खिप्पं तं ठानं अभिजानन्तस्स या 25 पञ्ञा पजानना ...पे०...सम्मादिट्ठि, अयं वुच्चति सुखपटिपदा खिप्पाभिञ्ञा पञ्ञा" (विभं० ३९४) ति। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन विसुद्धिमग्गे वुत्तो। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१०. भस्ससमाचारादिवण्णना

१३. **न चेव मुसावादूपसञ्हितं** (दी० नि० ३.८३) ति भस्ससमाचारे ठितो पि कथामग्गं अनुपच्छिन्दित्वा कथेन्तोपि इधेकच्चो भिक्खु न चेव मुसावादुपसञ्हितं भासति। अट्ठ अनरियवोहारे वज्जेत्वा अट्ठ अरिय[1]वोहारयुत्तमेव भासति। **न च वेभूतियं** ति भस्ससमाचारे ठितोपि भेदकरवाचं न भासति। **न च पेसुणीयं** ति तस्सायेवेतं वेवचनं। वेभूतियवाचा हि पियभावस्स सुञ्ञकरणतो "पेसुणियं" ति वुच्चति। नाममेवस्सा एतं ति महासीवत्थेरो अवोच। **न च सारम्भजं** ति सारम्भजा च या वाचा, तञ्च न भासति। "त्वं दुस्सीलो" ति वुत्ते, "त्वं दुस्सीलो तवाचरियो दुस्सीलो" ति वा, "तुम्हं आपत्ती" ति वुत्ते, "अहं पिण्डाय चरित्वा पाटलिपुत्तं गतो" ति आदिना नयेन बहिद्धा विक्खेपकथापवत्तं वा करणुत्तरियवाचं न भासति। **जयापेक्खो** ति जयपुरेक्खारो हुत्वा, यथा हत्थको सक्यपुत्तो तित्थिया नाम धम्मेनपि अधम्मेनपि जेतब्बा ति सच्चालिकं यंकिञ्चि भासति, एवं जयापेक्खो जयपुरेक्खारो हुत्वा न भासती ति अत्थो। **मन्ता मन्ता च वाचं भासती** ति एत्थ मन्ता ति वुच्चति पञ्ञा, मन्ताय पञ्ञाय। पुन मन्ता ति उपपरिक्खित्वा। इदं वुत्तं होति, भस्ससमाचारे ठितो दिवसभागम्पि कथेन्तो पञ्ञाय उपपरिक्खित्वा युत्तकथमेव कथेती ति। **निधानवतिं** ति हदयेपि निदहितब्बयुत्तं[2]। **कालेना** ति युत्तपत्तकालेन[3]।

एवं भासिता हि वाचा अमुसा चेव होति अपिसुणा च अफरूसा च असठा च असम्फप्पलापा च। एवरूपा च अयं वाचा चतुसच्चनिस्सितातिपि सिक्खत्तयनिस्सितातिपि दसकथावत्थुनिस्सितातिपि तेरसधुतङ्गनिस्सितातिपि सत्ततिंसबोधिपक्खियधम्मनिस्सितातिपि मग्गनिस्सितातिपि वुच्चति। तेनाह **एतदानुत्तरियं भन्ते भस्ससमाचारे** ति तं पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१. अनरिय०—रो०। २. ठपेतब्बयुत्तं—रो०।
३. युत्तकाले न—रो०।

सच्चो चस्स सद्धो चा ति सीलाचारे ठितो भिक्खु सच्चो च भवेय्य सच्चकथो सद्धो च सद्धासम्पन्नो। ननु हेट्ठा सच्चं कथितमेव, इध कस्मा पुन वुत्तं ति ? हेट्ठा वाचासच्चं कथितं। सीलाचारे ठितो पन भिक्खु अन्तमसो हसनकथायपि[1] मुसावादं न करोती ति दस्सेतुं 5 इध वुत्तं। इदानि सो धम्मेन समेन जीवितं[2] कप्पेती ति दस्सनत्थं **न च कुहको** ति आदि वुत्तं। तत्थ "कुहको" तिआदीनि ब्रह्मजाले वित्थारितानि।

इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो, भोजने मत्तञ्ञू ति छसु इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो R. 893 भोजनेपि पमाणञ्ञू। **समकारी** ति समचारी, कायेन वाचाय मनसा च 10 कायवङ्कादीनि पहाय समं चरती ति अत्थो। **जागरियानुयोगमनुयुत्तो** ति रत्तिन्दिवं छ कोट्ठासे कत्वा दिवसं चङ्कमेन निसज्जाया" ति वुत्तनयेनेव जागरियानुयोगं युत्तप्पयुत्तो विहरति। **अतन्दितो** ति नित्तन्दी कायालसियविरहितो। **आरद्धवीरियो** ति कायिकवीरियेनापि आरद्धवीरियो होति, गणसङ्गणिकं विनोदेत्वा चतूसु इरिया- 15 पथेसु अट्ठआरम्भवत्थुवसेन एकविहारी। चेतसिकवीरियेनापि आरद्धवीरियो होति, किलेससङ्गणिकं पहाय[3] विनोदेत्वा अट्ठसमापत्ति- वसेन एकविहारी। अपिच यथा तथा किलेसुप्पत्तिं निवारेन्तो चेतसिकवीरियेन आरद्धवीरियो होति। **झायी** ति आरम्मणलक्खणू- B. 77 पनिज्झानवसेन झायी। **सतिमा** ति चिरकतादिअनुस्सरणसमत्थाय 20 सतिया समन्नागतो।

कल्याणपटिभानो ति वाक्करणसम्पन्नो चेव होति पटिभानसम्पन्नो च युत्तपटिभानो खो पन होति नो मुत्तपटिभानो। सीलसमाचारस्मिं हि ठितभिक्खु मुत्तपटिभानो न[4] होति, युत्तपटिभानो पन होति वङ्गीसत्थेरो विय। **गतिमा** ति गमनसमत्थाय पञ्ञाय समन्नागतो। 25 **धितिमा** ति धारणसमत्थाय पञ्ञाय समन्नागतो। **मतिमा** ति एत्थ

१. ०दवकथाय पि—रो०। २. जीविकं—रो०।
१. रो० पोत्थके नत्थि। ४. रो० पोत्थके नत्थि।

पन मती[1] ति पञ्ञाय नाममेव, तस्मा पञ्ञवा ति अत्थो। इति तीहिपि इमेहि पदेहि पञ्ञाव कथिता। तत्थ हेट्ठा समणधम्मकरण-वीरियं कथितं, इध बुद्धवचनगण्हवीरियं। तथा हेट्ठा विपस्सनापञ्ञा कथिता, इध बुद्धवचनगण्हनपञ्ञा। **न च कामेसु गिद्धो** ति वत्थुकाम-किलेसकामेसु अगिद्धो। **सतो च निपको चा** ति अभिक्कन्तपटिक्कन्ता- 5
दीसु सत्तसु ठानेसु सतिया चेव ञाणेन च समन्नागतो चरती ति अत्थो। **नेपक्कं** ति पञ्ञा, ताय समन्नागतत्ता निपको ति वुत्तो। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

११. अनुसासनविधादिवण्णना

१४. **पच्चत्तं योनिसोमनसिकारा** (दी० नि० ३.८३) ति अत्तनो उपायमनसिकारेन। **यथानुसिट्ठं तथा पटिपज्जमानो** ति यथा मया 10
अनुसिट्ठं अनुसासनी दिन्ना, तथा पटिपज्जमानो। **तिण्णं संयोजनानं** R. 894
परिक्खया तिआदि वुत्तत्थमेव। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१५. **परपुग्गलविमुत्तिञाणे** (दी० नि० ३.८४) ति सोतापन्ना-दीनं परपुग्गलानं तेन तेन मग्गेन किलेसविमुत्तिञाणे सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१६. **अमुत्रासिं एवंनामो** ति एको पुब्बेनिवासं अनुस्सरन्तो 15
नामगोत्तं परियादियमानो गच्छति। एको सुद्धखन्धेयेव अनुस्सरति, एको हि सक्कोति, एको न सक्कोति। तत्थ यो सक्कोति, तस्स वसेन अग्गहेत्वा असक्कोन्तस्स वसेन गहितं। असक्कोन्तो पन किं करोति? सुद्धखन्धेयेव अनुस्सरन्तो गन्त्वा अनेकजातिसतसहस्समत्थके ठत्वा नामगोत्तं परियादियमानो ओतरति। तं दस्सेन्तो **एवंनामो** तिआदि- 20 B. 78
माह। **सो एवमाहा** ति सो दिट्ठिगतिको एवमाह। तत्थ किञ्चापि सस्सतो ति वत्वा "ते च सत्ता संसरन्ती" ति वदन्तस्स वचनं पुब्बापरविरुद्धं होति। दिट्ठिगतिकत्ता पनेस एतं न सल्लक्खेसि[2]।

१. मुती ति—रो०। २. सल्लक्खेति—रो०।

दिट्ठिगतिकस्स हि ठानं वा नियमो वा नत्थि। इमं गहेत्वा इमं विस्सज्जेति, इमं विस्सज्जेत्वा इमं गण्हाती ति ब्रह्मजाले वित्थारितमेवेतं। **अयं ततियो सस्सतवादो** ति थेरो लाभिस्सेव वसेन तयो सस्सतवादे आह। भगवता पन तक्कीवादम्पि गहेत्वा ब्रह्मजाले चत्तारो
5 वुत्ता। एतेसं पन तिण्णं वादानं वित्थारकथा ब्रह्मजाले वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव वित्थारेतब्बं।

१७. **गणनाय वा** (दी० नि० ३.८६) ति पिण्डगणनाय। **सङ्खानेना** ति अच्छिद्दकवसेन मनोगणनाय। उभयथापि पिण्डगणनमेव दस्सेति। इदं वुत्तं होति, वस्सानं सतवसेन सहस्सवसेन सतसहस्स-
10 वसेन कोटिवसेन पिण्डं कत्वापि एत्तकानि वस्ससतानी ति वा एत्तका वस्सकोटियो ति वा एवं सङ्खातुं न सक्का। तुम्हे पन अत्तनो दस्सन्नं पारमीनं पूरितत्ता सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स सुप्पटिविद्धत्ता यस्मा वो अनावरणञाणं सूरं वहति। तस्मा देसनाञाणकुसलतं पुरक्खत्वा वस्सगणनायपि परियन्तिकं कत्वा कप्पगणनायपि परिच्छिन्दित्वा
R. 895 15 एत्तकं ति दस्सेथा ति दीपेति। पाळियत्थो पनेत्थ वुत्तनयोयेव। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१८. **एतदानुत्तरियं भन्ते सत्तानं चुतूपपातञाणे** (दी० नि० ३.८६) ति भन्ते यापि अयं सत्तानं चुतिपटिसन्धिवसेन ञाणदेसना, सापि तुम्हाकंयेव अनुत्तरा। अतीतबुद्धापि एवमेव
20 देसेसुं। अनागतापि एवमेव देसेस्सन्ति। तुम्हे तेसं अतीतानागतबुद्धानं ञाणेन संसन्दित्वाव देसयित्थ। "इमिनापि कारणेन एवंपसन्नो अहं भन्ते भगवती" ति दीपेति। पाळियत्थो पनेत्थ वित्थारितोयेव।

१९. **सासवा सउपधिका** (दी० नि० ३.८७) ति सदोसा सउपारम्भणे **नो अरिया ति वुच्चती** ति अरियिद्धीति न वुच्चति।
25 **अनासवा अनुपधिका** ति निद्दोसा अनुपारम्भा। **अरियाति वुच्चती** ति
B. 79 अरियिद्धीति वुच्चति। **अप्पटिकूलसञ्ञी तत्थ विहरती** ति कथं अप्पटिकूलसञ्ञी तत्थ विहरती ति? पटिकूले सत्ते मेत्तं फरति सङ्खारे धातुसञ्ञं उपसंहरति। यथाह "कथं पटिकूले अप्पटिकूलसञ्ञी विहरती

(पटि० ४७५) ? अनिट्ठस्मिं वत्थुस्मिं मेत्ताय वा फरति, धातुतो वा उपसंहरती'' ति । पटिकूलसञ्ञी तत्थ विहरती अप्पटिकूले सत्ते असुभसञ्ञं फरति, सङ्खारे अनिच्चसञ्ञं उपसंहरति । यथाह ''कथं अप्पटिकूले पटिकूलसञ्ञी विहरति (पटि० ४७५) ? इट्ठस्मिं वत्थुस्मिं असुभाय वा फरति, अनिच्चतो वा उपसंहरती'' ति । एवं सेसपदेसुपि 5 अत्थो वेदितब्बो ।

उपेक्खको तत्थ विहरती ति इट्ठे अरज्जन्तो अनिट्ठे अदुस्सन्तो यथा अञ्ञे असमपेक्खनेन मोहं उप्पादेन्ति, एवं अनुप्पादेन्तो छसु आरम्मणेसु छळङ्गुपेक्खाय उपेक्खको विहरति । **एतदानुत्तरियं भन्ते इद्धिविधासू** ति भन्ते, या अयं द्वीसु इद्धीसु एवंदेसना, एतदानुत्तरियं । 10 **तं भगवा** ति तं देसनं भगवा असेसं सकलं अभिजानाति । **तं भगवतो** ति तं देसनं भगवतो असेसं अभिजानतो । **उत्तरि अभिञ्ञेय्यं नत्थी** ति उत्तरिं अभिजानितब्बं नत्थि । अयं नाम इतो अञ्ञो धम्मो वा पुग्गलो वा यं भगवा न जानाति इदं नत्थि । **यदभिजानं अञ्ञो समणो वा ब्राह्मणो वा** ति यं तुम्हेहि अनभिञ्ञातं अञ्ञो 15 समणो वा ब्राह्मणो वा अभिजानन्तो भगवता भिय्योभिञ्ञतरो अस्स, R. 896 अधिकतरपञ्ञो भवेय्य । **यदिदं इद्धिविधासू** ति एत्थ **यदिदं** ति निपातमत्तं । इद्धिविधासु भगवता उत्तरितरो नत्थि । अतीतबुद्धापि हि इमा द्वे इद्धियो देसेसुं, अनागतापि इमाव देसेस्सन्ति । तुम्हेपि तेसं ञाणेन संसन्दित्वा इमाव देसयित्थ । इति भगवा इद्धिविधासु 20 अनुत्तरो ति दस्सेन्तो ''इमिनापि कारणेन एवंपसन्नो अहं, भन्ते, भगवती'' ति दीपेति । एत्तावता ये धम्मसेनापति दिवाट्ठाने निसीदित्वा सोळस अपरम्परियधम्मे सम्मसि, ते व[1] दस्सिता होन्ति ।

१२. अञ्ञथासत्थुगुणदस्सनादिवण्णना

२०. इदानि अपरेनपि आकारेन भगवतो गुणे दस्सेन्तो **यं तं** 25 **भन्ते** (दी० नि० ३.८८) तिआदिमाह । तत्थ **सद्धेन कुलपुत्तेना** ति

१. तेनेन–रो० ।

B. 80 सद्धा कुलपुत्ता नाम अतीतानागतपच्चुप्पन्ना बोधिसत्ता । तस्मा यं सब्बञ्ञुबोधिसत्तेन पत्तब्बं ति वुत्तं होति । किं पन तेन पत्तब्बं ? नव लोकुत्तरधम्मा । **आरद्धवीरियेना** तिआदीसु "वीरियं थामो" तिआदीनि सब्बानेव वीरियवेवचनानि । तत्थ **आरद्धवीरियेना** ति 5 पग्गहितवीरियेन । **थामवता** ति थामसम्पन्नेन थिरवीरियेन । **पुरिसथामेना** ति तेन थामवता यं पुरिसथामेन पत्तब्बं ति वुत्तं होति । अनन्तरं पदद्वयेपि एसेव नयो । **पुरिसधोरय्हेना** ति या असमधुरेहि बुद्धेहि वहितब्बा धुरा, तं धुरं वहनसमत्थेन महापुरिसेना । **अनुप्पत्तं तं भगवता** ति तं सब्बं अतीतानागतबुद्धेहि पत्तब्बं, सब्बमेव 10 अनुप्पत्तं, भगवतो एकगुणोपि ऊनो नत्थी ति दस्सेति । **कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगं** ति वत्थु कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगं । यथा अञ्ञे केणियजटिलादयो समणब्राह्मणा "को जानाति परलोकं । सुखो इमिस्सा परिब्बाजिकाय मुदुकाय लोमसाय[1] बाहाय सम्फस्सो" ति मोळिबन्धाहि परिब्बाजिकाहि परिचारेन्ति[2] सम्पत्तं[3] सम्पत्तं[3] 15 रूपादिआरम्मणं अनुभवमाना कामसुखमनुयुत्ता, न एवमनुयुत्तो ति दस्सेति ।

हीनं ति लामकं । **गम्मं** ति गामवासीनं धम्मं । **पोथुज्जनिकं** ति पुथुज्जनेहि सेवितब्बं । **अनरियं** ति न निद्दोसं । न वा अरियेहि R. 897 सेवितब्बं । **अनत्थसञ्हितं** ति अनत्थसंयुत्तं । **अत्तकिलमथानुयोगं** 20 ति अत्तनो आतापनपरितापनानुयोगं । **दुक्खं** ति दुक्खयुत्तं, दुक्खमं वा । यथा एके समणब्राह्मणा कामसुखल्लिकानुयोगं परिवज्जेस्सामा ति कायकिलमथं अनुधावन्ति, ततो मुच्चिस्सामाति कामसुखं अनुधावन्ति, न एवं भगवा । भगवा पन उभो एते अन्ते वज्जेत्वा या सा "अत्थि, भिक्खवे, मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा 25 चक्खुकरणी" ति एवं वुत्ता सम्मापटिपत्ति, तमेवपटिपन्नो । तस्मा "न अत्तकिलमथानुयोगं" तिआदिमाह ।

१ लोमहाय—रो० । २. परिवारेन्ति—रो० ।
३-३. सम्पत्तसत्तं—रो० ।

आभिचेतसिकानं ति अभिचेतसिकानं, कामावचरचित्तानि अतिक्कमित्वा ठितानं ति अत्थो। दिट्ठधम्मसुखविहारानं ति इमस्मिं येव अत्तभावे सुखविहारानं। पोट्ठपादसुत्तन्तस्मिञ्हि सप्पीतिकदुतियज्झानफलसमापत्ति कथिता। पासादिकसुत्तन्ते सह मग्गेन विपस्सनापादकज्झानं। दसुत्तरसुत्तन्ते चतुत्थज्झानिकफल- 5 B. 81 समापत्ति। इमस्मिं सम्पसादनीये दिट्ठधम्मसुखविहारज्झानानि कथितानि। निकामलाभी ति यथाकामलाभी। अकिच्छलाभी ति अदुक्खलाभी। अकसिरलाभी ति विपुललाभी।

१३. अनुयोगदानप्पकारवण्णना

२१. एकिस्सा लोकधातुया (दी० नि० ३.८९) ति दससहस्सि-लोकधातुया। तीणि हि खेत्तानि[1]—जातिखेत्तं आणाखेत्तं विसयखेत्तं। 10 तत्थ जातिखेत्तं नाम दससहस्सी लोकधातु। सा हि तथागतस्स मातुकुच्छि ओक्कमनकाले निक्खमनकाले सम्बोधिकाले धम्मचक्कप्प-वत्तने आयुसङ्खारोस्सज्जने परिनिब्बाने च कम्पति। कोटिसतसहस्स-चक्कवाळं पन आणाखेत्तं नाम। आटानाटियमोरपरित्तधजग्गपरित्त-रतनपरित्तादीनञ्हि एत्थ आणा वत्तति। विसयखेत्तस्स पन परिमाणं 15 नत्थि, बुद्धानञ्हि "यावतकं ञाणं, तावतकं ञेय्यं, यावतकं ञेय्यं तावतकं ञाणं, ञाणपरियन्तिकं ञेय्यं, ञेय्यपरियन्तिकं ञाणं" (म० निद्दे० १५०) ति वचनतो अविसयो नाम नत्थि।

इमेसु पन तीसु खेत्तेसु ठपेत्वा इमं चक्कवाळं अञ्ञस्मिं चक्कवाळे बुद्धा उप्पज्जन्ती ति सुत्तं नत्थि, नुप्पज्जन्ती ति पन अत्थि। तीणि 20 R. 898 पिटकानि विनयपिटकं, सुत्तन्तपिटकं अभिधम्मपिटकं। तिस्सो सङ्गीतियो महाकस्सपत्थेरस्स सङ्गीति, यसत्थेरस्स सङ्गीति, मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरस्स सङ्गीती ति। इमा तिस्सो सङ्गीतियो आरुळ्हे तेपिटके बुद्धवचने "इमं चक्कवाळं मुञ्चित्वा अञ्ञत्थ बुद्धा उप्पज्जन्ती" ति सुत्तं नत्थि, नुप्पज्जन्ती ति पन अत्थि। 25

१. लोकखेत्तानि—रो०।

अपुब्बं अचरिमं ति अपुरे अपच्छा एकतो नुप्पज्जन्ती, पुरे वा पच्छा वा उप्पज्जन्ती ति वुत्तं होति। तत्थ बोधिपल्लङ्के "बोधिं अपत्वा न उट्ठहिस्सामी" ति निसिन्नकालतो पट्ठाय याव मातुकुच्छिस्मिं पटिसन्धिग्गहणं, ताव पुब्बे ति न वेदितब्बं। बोधिसत्तस्स हि पटिसन्धिग्गहणे दससहस्सचक्कवाळकम्पनेनेव खेत्तपरिग्गहो कतो। अञ्ञस्स बुद्धस्स उप्पत्तिपि निवारिता होति। परिनिब्बानतो पट्ठाय च याव सासपमत्तापि धातुयो तिट्ठन्ति, ताव पच्छाति न वेदितब्बं। धातूसु हि ठितासु बुद्धापि ठिताव होन्ति। तस्मा एत्थन्तरे अञ्ञस्स बुद्धस्स उप्पत्ति निवारिताव होति। धातुपरिनिब्बाने पन जाते अञ्ञस्स बुद्धस्स उप्पत्ति न निवारिता।

१४. तिपिटकअन्तरधानकथा

तीणि अन्तरधानानि नाम परियत्तिअन्तरधानं, पटिवेधअन्तरधानं, पटिपत्तिअन्तरधानं ति। तत्थ **परियत्ती** ति तीणि पिटकानि। **पटिवेधो** ति सच्चप्पटिवेधो। **पटिपत्ती** ति पटिपदा। तत्थ पटिवेधो च पटिपत्ति च होति पि न होति पि। एकस्मिञ्हि काले पटिवेधकरा भिक्खू बहू होन्ति, एस भिक्खु पुथुज्जनो ति अङ्गुलिं पसारेत्वा दस्सेतब्बा होति। इमस्मिं येव दीपे एकवारं पुथुज्जनभिक्खु नाम नाहोसि। पटिपत्तिपूरकापि कदाचि बहू होन्ति, कदाचि अप्पा। इति पटिवेधो च पटिपत्ति च होति पि न होति पि। सासनट्ठितिया पन परियत्ति पमाणं। पण्डितो हि तेपिटकं सुत्वा द्वेपि पूरेति।

यथा अम्हाकं बोधिसत्तो आळारस्स सन्तिके पञ्चाभिञ्ञा सत्त च समापत्तियो निब्बत्तेत्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्तिया परिकम्मं पुच्छि। सो न जानामी ति आह। ततो उदकस्स सन्तिकं गन्त्वा अधिगतविसेसं संसन्दित्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनस्स परिकम्मं पुच्छि। सो आचिक्खि। तस्स वचनसमनन्तरमेव महासत्तो तं झानं[1]

१. रो॰ पोत्थके नत्थि।

सम्पादेसि। एवमेव पञ्ञवा भिक्खु परियत्तिं सुत्वा द्वेपि पूरेति। तस्मा परियत्तिया ठिताय सासनं ठितं होति। यदा पन सा अन्तरधायति, तदा पठमं अभिधम्मपिटकं नस्सति। तत्थ पट्ठानं सब्बपठमं अन्तरधायति। अनुक्कमेन पच्छा धम्मसङ्गहो। तस्मिं अन्तरहिते इतरेसु द्वीसु पिटकेसु ठितेसुपि सासनं ठितमेव होति। R. 899 5

तत्थ सुत्तन्तपिटके अन्तरधायमाने पठमं अङ्गुत्तरनिकायो एकादसकतो पट्ठाय याव एकका अन्तरधायति। तदनन्तरं संयुत्तनिकायो चक्कपेय्यालतो पट्ठाय याव ओघतरणा अन्तरधायति। तदनन्तरं मज्झिमनिकायो इन्द्रियभावनतो पट्ठाय याव मूलपरियाया अन्तरधायति। तदनन्तरं दीघनिकायो दसुत्तरतो पट्ठाय याव ब्रह्मजाला अन्तरधायति। एकिस्सापि द्विन्नम्पि गाथानं पुच्छा अद्धानं गच्छति, सासनं धारेतुं न सक्कोति, सभियपुच्छा आळवकपुच्छा विय च। एता किर कस्सपबुद्धकालिका अन्तरा सासनं धारेतुं नासक्खिंसु। 10 B. 83

द्वीसु पन पिटकेसु अन्तरहितेसुपि विनयपिटके ठिते सासनं तिट्ठति। परिवारक्खन्धकेसु अन्तरहितेसु उभतोविभङ्गे ठिते ठितमेव होति। उभतोविभङ्गे अन्तरहिते मातिकायपि ठिताय ठितमेव होति। मातिकाय अन्तरहिताय पातिमोक्खपब्बज्जाउपसम्पदासु ठितासु[1] सासनं तिट्ठति। लिङ्गं अद्धानं गच्छति। सेतवत्थसमणवंसो पन कस्सपबुद्धकालतो पट्ठाय सासनं धारेतुं नासक्खि। पटिसम्भिदापत्तेहि वस्ससहस्सं अट्ठासि। छळभिञ्ञेहि वस्ससहस्सं। तेविज्जेहि वस्ससहस्सं। सुक्खविपस्सकेहि वस्ससहस्सं। पातिमोक्खेहि वस्ससहस्सं अट्ठासि। पच्छिमकस्स पन सच्चप्पटिवेधतो पच्छिमकस्स सीलभेदतो पट्ठाय सासनं ओसक्कितं नाम होति। ततो पट्ठाय अञ्ञस्स बुद्धस्स उप्पत्ति न निवारिता।[2] 15 20 25

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. वारिता—रो०।

१५. सासनअन्तरहितवण्णना

तीणि परिनिब्बानानि नाम किलेसपरिनिब्बानं खन्धपरिनिब्बानं धातुपरिनिब्बानं ति। तत्थ किलेसपरिनिब्बानं बोधिपल्लङ्के अहोसि। खन्धपरिनिब्बानं कुसिनारायं। धातुपरिनिब्बानं अनागते भविस्सति। सासनस्स किर ओसक्कनकाले इमस्मिं तम्बपण्णिदीपे धातुयो
5 सन्निपतित्वा महाचेतियं गमिस्सन्ति। महाचेतियतो नागदीपे राजायतनचेतियं। ततो महाबोधिपल्लङ्कं गमिस्सन्ति। नागभवनतोपि देवलोकतो पि ब्रह्मलोकतोपि धातुयो महाबोधिपल्लङ्कमेव गमिस्सन्ति। सासपमत्तापि धातुयो न अन्तरा[1] नस्सिस्सन्ति[2]। सब्बधातुयो महाबोधिपल्लङ्के रासिभूता सुवण्णक्खन्धो विय एकग्घना
10 हुत्वा छब्बण्णरस्मियो विस्सज्जेस्सन्ति।

R. 900 ता दससहस्सिलोकधातुं फरिस्सन्ति। ततो दससहस्सचक्कवाळदेवता सन्निपतित्वा "अज्ज सत्था परिनिब्बाति, अज्ज सासनं ओसक्कति, पच्छिमदस्सनं दानि इदं अम्हाकं" ति दसबलस्स परिनिब्बुतदिवसतो
B. 84 महन्ततरं कारुञ्ञं करिस्सन्ति। ठपेत्वा अनागामिखीणासवे अवसेसा
15 सकभावेन[3] सन्धारेतुं[4] न सक्खिस्सन्ति। धातूसु तेजोधातु उट्ठहित्वा याव ब्रह्मलोका उग्गच्छिस्सति। सासपमत्तायपि धातुया सति एकजाला[5] भविस्सति। धातूसु परियादानं गतासु उपच्छिज्जिस्सति। एवं महन्तं आनुभावं दस्सेत्वा धातूसु अन्तरहितासु सासनं अन्तरहितं नाम होति।

20 याव न एवं अन्तरधायति, ताव अचरिमं नाम होति। एवं अपुब्बं अचरिमं उप्पज्जेय्युं, नेतं ठानं विज्जति। कस्मा पन अपुब्बं अचरिमं नुप्पज्जन्ती ति? अनच्छरियत्ता। बुद्धा हि अच्छरियमनुस्सा। यथाह — "एकपुग्गलो, भिक्खवे, लोके उप्पज्जमानो उप्पज्जति

१. अन्तरायं—रो०। २. नसिस्सति—रो०।
३. सभावेन—रो०। ४. सण्ठातुं—रो०।
५. एकजालो—रो०।

अच्छरियमनुस्सो। कतमो एकपुग्गलो? तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो" (अं० नि० १.२२) ति। यदि च द्वे वा चत्तारो वा अट्ठ वा सोळस वा एकतो उप्पज्जेय्युं, अनच्छरिया भवेय्युं। एकस्मिञ्हि विहारे द्विन्नं चेतियानम्पि लाभसक्कारो उळारो न होति। भिक्खूपि बहुताय न अच्छरिया जाता, एवं बुद्धापि भवेय्युं, तस्मा नुप्पज्जन्ति। 5 देसनाय च विसेसाभावतो। यञ्हि सतिपट्ठानादिभेदं धम्मं एको देसेति। अञ्ञेन उप्पज्जित्वापि सोव देसेतब्बो सिया, ततो अनच्छरियो सिया। एकस्मिं पन धम्मं देसेन्ते देसनापि अच्छरिया होति, विवादाभावतो च। बहूसु हि बुद्धेसु उप्पन्नेसु बहूनं आचरियानं अन्तेवासिका विय अम्हाकं बुद्धो पासादिको, अम्हाकं 10 बुद्धो मधुरस्सरो लाभी पुञ्ञवा ति विवदेय्युं। तस्मापि एवं नुप्पज्जन्ति। अपि चेतं कारणं मिलिन्दरञ्ञापि पुट्ठेन नागसेनत्थेरेन वित्थारितमेव। वुत्तञ्हि तत्थ—

भन्ते, नागसेन, भासितम्पि हेतं भगवता "अट्ठानमेतं, भिक्खवे, अनवकासो, यं एकिस्सा लोकधातुया द्वे अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा 15 अपुब्बं अचरिमं उप्पज्जेय्युं, नेतं ठानं विज्जती" ति। देसयन्ता[१] च, भन्ते नागसेन, सब्बेपि तथागता सत्ततिंस बोधिपक्खिये धम्मे R. 901 देसेन्ति, कथयमाना च चत्तारि अरियसच्चानि कथेन्ति, सिक्खापेन्ता च तीसु सिक्खासु सिक्खापेन्ति, अनुसासमाना च अप्पमादप्पटिपत्तियं अनुसासन्ति। यदि, भन्ते नागसेन, सब्बेसम्पि तथागतानं एका 20 B. 85 देसना[२] एका कथा एकसिक्खा[३] एकानुसासनी[४], केन कारणेन द्वे तथागता एकक्खणे नुप्पज्जन्ति। एकेनपि ताव बुद्धुप्पादेन अयं लोको ओभासजातो, यदि दुतियो बुद्धो भवेय्य, द्विन्नं पभाय अयं लोको भिय्योसोमत्ताय ओभासजातो भवेय्य, ओवदमाना[५] च द्वे तथागता सुखं ओवदेय्युं, अनुसासमाना च सुखं अनुसासेय्युं, तत्थ मे कारणं 25 देसेहि, यथाहं निस्संसयो भवेय्यं" ति।

१. देसेन्ता—रो०। २. एको उद्देसो—रो०।
३. एकसिक्खापदं—रो०। ४. एकानुसत्थि—रो०।
५ ओवदन्ता—रो०।

अयं, महाराज, दससहस्सी लोकधातु एकबुद्धधारणी, एकस्सेव तथागतस्स गुणं धारेति, यदि दुतियो बुद्धो उप्पज्जेय्य, नायं दससहस्सी लोकधातु धारेय्य, चलेय्य कम्पेय्य नमेय्य ओणमेय्य विनमेय्य विकिरेय्य विधमेय्य विद्धंसेय्य, न ठानमुपगच्छेय्य।

5 यथा, महाराज, नावा एकपुरिससन्धारणी[1] भवेय्य, एकपुरिसे अभिरूळ्हे सा नावा[2] समुपादिका भवेय्य, अथ दुतियो पुरिसो आगच्छेय्य तादिसो आयुना वण्णेन वयेन पमाणेन किसथूलेन सब्बङ्गपच्चङ्गेन, सो तं नावं अभिरूहेय्य, अपि नु सा, महाराज नावा द्विन्नम्पि धारेय्या ति ? न हि, भन्ते, चलेय्य कम्पेय्य नमेय्य ओणमेय्य 10 विनमेय्य विकिरेय्य विधमेय्य, विद्धंसेय्य, न ठानमुपगच्छेय्य ओसीदेय्य उदके ति। एवमेव, खो महाराज, अयं दससहस्सी लोकधातु एकबुद्धधारणी, एकस्सेव तथागतस्स गुणं धारेति, यदि दुतियो बुद्धो उप्पज्जेय्य, नायं दससहस्सी लोकधातु धारेय्य ... पे० ... न ठानमुपगच्छेय्य।

15 यथा वा पन महाराज पुरिसो यावदत्थं भोजनं भुञ्जेय्य छादेन्तं याव कण्ठमभिपूरयित्वा, सो धातो पीणितो परिपुण्णो निरन्तरो तन्दीकतो अनोणमितदण्डजातो पुनदेव तावतकं भोजनं भुञ्जेय्य, अपि नु खो सो, महाराज, पुरिसो सुखितो[3] भवेय्या ति ? न हि, B. 86 भन्ते। सकिं भुत्तोव मरेय्या ति; एवमेव, खो महाराज, अयं R. 902 20 दससहस्सी लोकधातु एकबुद्धधारणी...पे०...न ठानमुपगच्छेय्या ति।

किं नु खो, भन्ते नागसेन, अतिधम्मभारेन पथवी चलती ति ? इध, महाराज, द्वे सकटा रतनपूरिता भवेय्युं याव मुखसमा, एकस्मा सकटतो रतनं गहेत्वा एकस्मिं सकटे आकिरेय्युं, अपि नु खो तं महाराज सकटं द्विन्नम्पि सकटानं रतनं धारेय्या ति ? न हि,

१. ० सन्तारणी—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. सुखो—रो०।

भन्ते, नाभिपि तस्स फलेय्य, अरापि तस्स भिज्जेय्युं, नेमिपि[1] तस्स ओपतेय्य[1], अक्खोपि तस्स भिज्जेय्या ति। किं नु खो, महाराज, अतिरतनभारेन सकटं भिज्जती ति? आम, भन्ते, ति। एवमेव, खो महाराज, अतिधम्मभारेन पथवी चलति।

अपिच, महाराज, इमं कारणं बुद्धबलपरिदीपनाय ओसारितं 5 अञ्ञम्पि तत्थ अतिरूपं[2] कारणं सुणोहि, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे नुप्पज्जन्ति। यदि, महाराज[3], द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, तेसं[4] परिसाय विवादो उप्पज्जेय्य 'तुम्हाकं[5] बुद्धो अम्हाकं बुद्धो" ति, उभतो पक्खजाता भवेय्युं। यथा, महाराज, द्विन्नं बलवामच्चानं परिसाय विवादो उप्पज्जेय्य[6] "तुम्हाकं अमच्चो 10 अम्हाकं अमच्चो" ति, उभतो पक्खजाता होन्ति, एवमेव, खो महाराज, यदि द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, तेसं[7] परिसाय विवादो उप्पज्जेय्य "तुम्हाकं बुद्धो, अम्हाकं बुद्धो" ति, उभतो पक्खजाता भवेय्युं। इदं[8] ताव, महाराज, एकं कारणं[8], येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे नुप्पज्जन्ति। अपरम्पि, महाराज, उत्तरिं 15 कारणं सुणोहि, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे नुप्पज्जन्ति। यदि, महाराज, द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे उप्पज्जेय्युं, "अग्गो बुद्धो" ति यं वचनं, तं मिच्छा भवेय्य, "जेट्ठो बुद्धो" ति, सेट्ठो बुद्धो ति, विसिट्ठो बुद्धो ति, उत्तमो बुद्धो ति, पवरो बुद्धो ति, असमो B. 87 बुद्धो ति, असमसमो बुद्धो ति, अप्पटिमो बुद्धो ति, अप्पटिभागो बुद्धो 20 ति, अप्पटिपुग्गलो बुद्धो ति यं वचनं, तं मिच्छा भवेय्य। इमम्पि R. 903 खो त्वं, महाराज, कारणं अत्थतो सम्पटिच्छ, येन कारणेन द्वे सम्मासम्बुद्धा एकक्खणे नुप्पज्जन्ति।

१-१. रो० पोत्थके नत्थि। २. अभिरूपं—रो०
३. रो० पोत्थके नत्थि। ४. रो० पोत्थके नत्थि।
५. अम्हाकं—रो०। ६. उप्पज्जति—रो०।
७. रो० पोत्थके नत्थि। ८-८. इदं पठमं कारणं सुणोहि—रो०।

अपिच खो, महाराज, बुद्धानं भगवन्तानं[1] सभावपकति एसा, यं एकोयेव बुद्धो लोके उप्पज्जति। कस्मा कारणा? महन्तताय सब्बञ्ञुबुद्धगुणानं, यं अञ्ञम्पि[2] महाराज महन्तं होति, तं एकंयेव होति। पथवी, महाराज, महन्ती, सा एकायेव। सागरो महन्तो, सो एकोयेव। सिनेरु गिरिराजा[3] महन्तो, सो एकोयेव। आकासो महन्तो, सो एकोयेव। सक्को महन्तो, सो एकोयेव। मारो[4] महन्तो, सो एकोयेव[4]। महाब्रह्मा महन्तो, सो एकोयेव। तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो महन्तो, सो एकोयेव लोकस्मिं[5]। यत्थ ते उप्पज्जन्ति, तत्थ अञ्ञेसं ओकासो न होति। तस्मा, महाराज,[6] तथागतो अरहं सम्मासम्बुद्धो एकोयेव लोके उप्पज्जती ति। सुकथितो, भन्ते नागसेन, पञ्हो ओपम्मेहि कारणेही ति।

धम्मस्स चानुधम्मं ति नवविधस्स लोकुत्तरधम्मस्स अनुधम्मं पुब्बभागप्पटिपदं। **सहधम्मिको** ति सकारणो। **वादानुवादो** ति वादोयेव।

१६. अच्छरियअब्भुतवण्णना

२२. **आयस्मा उदायी** ति तयो थेरा उदायी नाम—लाळुदायी, काळुदायी, महाउदायी ति। इध महाउदायी अधिप्पेतो। तस्स किर इमं सुत्तं आदितो पट्ठाय याव परियोसाना सुणन्तस्स अब्भन्तरे पञ्चवण्णा पीति उप्पज्जित्वा पादपिट्ठितो सीसमत्थकं गच्छति, सीसमत्थकतो पादपिट्ठिं आगच्छति, उभतो पट्ठाय मज्झं ओतरति, मज्झतो पट्ठाय उभतो गच्छति। सो निरन्तरं पीतिया फुटसरीरो[7] बलवसोमनस्सेन दसबलस्स गुणं कथेन्तो **अच्छरियं भन्ते** तिआदिमाह। **अप्पिच्छता** ति नित्तण्हता। **सन्तुट्ठिता** ति चतूसु

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. सेट्ठो—रो०। ४-४. रो० पोत्थके नत्थि।
५. रो० पोत्थके नत्थि। ६. रो० पोत्थके नत्थि।
७. ०फुटवा—रो०।

पच्चयेसु तीहाकारेहि सन्तोसो। **सल्लेखता** ति सब्बकिलेसानं सल्लिखितभावो। **यत्र हि नाम** ति यो नाम। **न अत्तानं पातुकरिस्सती** ति अत्तनो गुणे न आवि करिस्सति। **पटाकं परिहरेय्यु** ति "को अम्हेहि सदिसो अत्थी" ति वदन्ता पटाकं उक्खिपित्वा नाळन्दं विचरेय्युं। B. 88 5

पस्स खो त्वं उदायि तथागतस्स अप्पिच्छता ति पस्स उदायि यादिसी तथागतस्स अप्पिच्छता ति थेरस्स वचनं सम्पटिच्छन्तो[1] आह। किं पन भगवा नेव अत्तानं पातुकरोति, न अत्तनो गुणं कथेती ति चे ? न, न कथेति। अप्पिच्छतादीहि कथेतब्बं, चीवरादिहेतुं न कथेति। तेनेवाह—"पस्स खो त्वं, उदायि, तथागतस्स[2] अप्पिच्छता" ति आदि। बुज्झनकसत्तं पन आगम्म वेनेय्यवसेन कथेति। यथाह— R. 904 10

"न मे आचरियो अत्थि, सदिसो मे न विज्जति।
सदेवकस्मिं लोकस्मिं, नत्थि मे पटिपुग्गलो"
(म० व० १२) ति॥ 15

एवं तथागतस्स गुणदीपिका बहू गाथापि सुत्तन्तापि वित्थारेतब्बा।

२३. **अभिक्खणं भासेय्यासी** (दी० नि० ३.९०) ति पुनप्पुनं भासेय्यासि। पुब्बण्हसमये[3] मे कथितं ति मा मज्झन्हिकादीसु न कथयित्थ। अज्ज वा मे कथितं ति मा परदिवसादीसु न कथयित्था ति अत्थो। **पवेदेसी** ति कथेसि। **इमस्स वेय्याकरणस्सा** ति निग्गाथकत्ता इदं सुत्तं "वेय्याकरणं" ति वुत्तं। **अधिवचनं** ति नामं। इदं पन "इति हिदं" ति पट्ठाय पदं सङ्गीतिकारेहि ठपितं। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति। 20

सम्पसादनीयसुत्तवण्णना निट्ठिता।

१. पटिच्छन्तो—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. पुब्बण्हे—रो०।

(६) पासादिकसुत्तवण्णना

१. निगण्ठनाटपुत्तकालङ्किरियवण्णना

B. 89
R. 905

१. **एवं मे सुतं** (दी० नि० ३.९१) ति पासादिकसुत्तं। तत्राय-मनुत्तानपदवण्णना। **वेधञ्ञा नाम सक्या** ति धनुम्हि कतसिक्खा वेधञ्ञनामका एके[1] सक्या। **तेसं अम्बवने पासादे** ति तेसं अम्बवने सिप्पं उग्गण्हत्थाय कतो दीघपासादो अत्थि, तत्थ विहरति।
5 **अधुना कालङ्कतो** ति सम्पति कालङ्कतो। **द्वेधिकजाता** ति द्वेज्झजाता, द्वेभागा जाता। **भण्डनादीसु** भण्डनं पुब्बभागकलहो, तं[2] दण्डादानादिवसेन[3] पण्णत्तिवीतिक्कमवसेन[4] च वड्ढितं **कलहो**। "न त्वं इमं धम्मविनयं आजानासी" तिआदिना नयेन विरुद्धवचनं **विवादो**। **वितुदन्ता** ति विज्झन्ता। **सहितं मे** ति मम वचनं अत्थसञ्हितं।
10 **अधिचिण्णं ते विपरावत्तं** ति यं तव अधिचिण्णं चिरकालासेवनवसेन पगुणं, तं मम वादं आगम्म निवत्तं। **आरोपितो ते वादो** ति तुय्हं उपरि मया दोसो आरोपितो। **चर वादप्पमोक्खाया** ति भत्तपुटं आदाय तं तं उपसङ्कमित्वा वादप्पमोक्खत्थाय उत्तरि परियेसमानो विचर। **निब्बेठेहि वा** ति अथ वा मया आरोपितदोसतो अत्तानं मोचेहि।
15 **सचे पहोसी** ति सचे सक्कोसि। **वधोयेवा** ति मरणमेव। **नाटपुत्तियेसू** ति नाटपुत्तस्स अन्तेवासिकेसु। **निब्बिन्नरूपा** ति उक्कण्ठितसभावा
R. 906 अभिवादनादीनिपि न करोन्ति। **विरत्तरूपा** ति विगतपेमा। **पटिवानरूपा** ति तेसं सक्कच्चकिरियतो निवत्तनसभावा। **यथा तं** ति तथा दुरक्खातादिसभावे धम्मविनये निब्बिन्नविरत्तप्पटिवानरूपेहि
20 भवितब्बं, तथेव जाता ति अत्थो। **दुरक्खाते** ति दुक्कथिते। **दुप्पवेदिते** ति दुविञ्ञापिते। **अनुपसमसंवत्तनिके** ति रागादीनं उपसमं कातुं

१. एते—रो०।
२. रो० पोत्थके नत्थि।
३. आदिवसेन—रो०।
४. पञ्ञत्ति०—रो०।

असमत्थे। **भिन्नथूपे** ति भिन्दप्पतिट्ठे। एत्थ हि नाटपुत्तोव नेसं पतिट्ठट्ठेन थूपो। सो पन भिन्नो मतो। तेन वुत्तं "भिन्नथूपे" ति। **अप्पटिसरणे** ति तस्सेव अभावेन पटिसरणविरहिते।

ननु चायं नाटपुत्तो नाळन्दवासिको, सो कस्मा पावायं कालङ्कतो ति? सो किर उपालिना गहपतिना पटिविद्धसच्चेन 5 दसहि गाथाहि भासिते बुद्धगुणे सुत्वा उण्हं लोहितं छड्डेसि। अथ नं B. 90 अफासुकं गहेत्वा पावं अगमंसु। सो तत्थ कालमकासि। कालं कुरुमानो च चिन्तेसि "मम लद्धि अनिय्यानिका सारविरहिता, मयं ताव नट्ठा, अवसेसजनोपि मा अपायपूरको अहोसि, सचे पनाहं 'मम सासनं अनिय्यानिकं' ति वक्खामि, न सद्दहिस्सन्ति, यंनूनाहं 10 द्वेपि जने न एकनीहारेन उग्गण्हापेय्यं, ते ममच्चयेन अञ्ञमञ्ञं विवदिस्सन्ति, सत्था तं विवादं पटिच्च एकं धम्मकथं कथेस्सति, ततो ते सासनस्स महन्तभावं जानिस्सन्ती" ति।

अथ नं एको अन्तेवासिको उपसङ्कमित्वा आह "भन्ते तुम्हे दुब्बला, मय्हम्पि इमस्मिं धम्मे सारं आचिक्खथ, आचरियप्पमाणं" 15 ति। "आवुसो, त्वं ममच्चयेन सस्सतं ति गण्हेय्यासी" ति। अपरोपि उपसङ्कमि, तं उच्छेदं गण्हापेसि। एवं द्वेपि जने एकलद्धिके अकत्वा बहू नानानीहारेन उग्गण्हापेत्वा कालमकासि। ते तस्स सरीरकिच्चं कत्वा सन्निपतित्वा अञ्ञमञ्ञं पुच्छिंसु "कस्सावुसो, आचरियो सारं आचिक्खी" ति? एको उट्ठहित्वा मय्हं ति आह। किं आचिक्खी 20 ति? सस्सतं ति। अपरो तं पटिबाहित्वा "मय्हं सारं आचिक्खी" ति आह। एवं सब्बे "मय्हं सारं आचिक्खि, अहं जेट्ठको" ति अञ्ञमञ्ञं विवादं बड्ढेत्वा अक्कोसे चेव परिभासे च हत्थपादप्प- R. 907 हारादीनि च पवत्तेत्वा एकमग्गेन द्वे अगच्छन्ता नानादिसासु पक्कमिंसु। 25

२. **अथ खो चुन्दो समणुद्देसो** ति अयं थेरो धम्मसेनापतिस्स कनिट्ठभातिको। तं भिक्खू अनुपसम्पन्नकाले "चुन्दो समणुद्देसो" ति

समुदाचरित्वा थेरकालेपि तथेव समुदाचरिंसु। तेन वुत्तं—"चुन्दो समणुद्देसो" ति।

"पावायं वस्संवुट्ठो येन सामगामो, येनायस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमी" ति कस्मा उपसङ्कमि? नाटपुत्ते किर कालङ्कते 5 जम्बुदीपे मनुस्सा तत्थ तत्थ कथं पवत्तयिंसु "निगण्ठो नाटपुत्तो एको सत्था ति पञ्ञायित्थ, तस्स कालं किरियाय सावकानं एवरूपो विवादो जातो। समणो पन गोतमो जम्बुदीपे चन्दो विय सूरियो विय च पाकटो, सावकापिस्स पाकटायेव। कीदिसो नु खो समणे B. 91 गोतमे परिनिब्बुते सावकानं विवादो भविस्सती" ति। थेरो तं कथं 10 सुत्वा चिन्तेसि "इमं कथं गहेत्वा दसबलस्स आरोचेस्सामि, सत्था एतं अट्ठुप्पत्तिं कत्वा एकं देसनं कथेस्सती" ति। सो निक्खमित्वा येन सामगामो, येनायस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमि।

सामगामो ति सामकानं उस्सन्नत्ता तस्स गामस्स नामं। **येनायस्मा आनन्दो** ति उजुमेव भगवतो सन्तिकं अगन्त्वा येनस्स 15 उपज्झायो आयस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमि।

बुद्धकाले किर सारिपुत्तत्थेरो च आनन्दत्थेरो च अञ्ञमञ्ञं ममायिंसु। सारिपुत्तत्थेरो "मया कातब्बं सत्थु उपट्ठानं करोती" ति आनन्दत्थेरं ममायि। आनन्दत्थेरो "भगवतो सावकानं अग्गो" ति सारिपुत्तत्थेरं ममायि। कुलदारके च[1] पब्बाजेत्वा सारिपुत्तत्थेरस्स 20 सन्तिके उपज्झं गण्हापेसि। सारिपुत्तत्थेरोपि तथेव अकासि। एवं एकमेकेन अत्तनो पत्तचीवरं दत्वा पब्बाजेत्वा उपज्झं गण्हापितानि पञ्च पञ्च भिक्खुसतानि अहेसुं। आयस्मा आनन्दो पणीतानि चीवरादीनिपि लभित्वा थेरस्स अदासि[2]।

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. देति—रो०।

२. धम्मरतनपूजा

एको किर ब्राह्मणो चिन्तेसि "बुद्धरतनस्स च संघरतनस्स च पूजा[1] पञ्ञायति, कथं नु खो धम्मरतनं पूजितं होती" ति ? सो भगवन्तं उपसङ्कमित्वा एतमत्थं[2] पुच्छि। भगवा आह "सचेपि ब्राह्मण धम्मरतनं पूजेतुकामो, एकं बहुस्सुतं पूजेही" ति। बहुस्सुतं, भन्ते, आचिक्खथा ति। भिक्खुसंघं पुच्छा ति। सो भिक्खुसंघ उपसङ्कमित्वा "बहुस्सुतं, भन्ते, आचिक्खथा" ति आह। आनन्दत्थेरो ब्राह्मणा ति। ब्राह्मणो थेरं सहस्सग्घनिकेन[3] तिचीवरेन पूजेसि। थेरो तं गहेत्वा भगवतो सन्तिकं अगमासि। भगवा "कुतो, आनन्द, लद्धं" ति आह ? एकेन, भन्ते, ब्राह्मणेन दिन्नं। इदं पनाहं आयस्मतो सारिपुत्तस्स दातुकामो ति। देहि आनन्दा ति। चारिकं पक्कन्तो भन्ते ति। आगतकाले देही ति, सिक्खापदं भन्ते, पञ्ञत्तं ति। कदा पन सारिपुत्तो आगमिस्सती ति ? दसाहमत्तेन भन्ते ति। "अनुजानामि, आनन्द, दसाहपरमं अतिरेकचीवरं निक्खिपितुं" ति सिक्खापदं पञ्ञापेसि।

R. 908 · 5 · 10

सारिपुत्तत्थेरोपि तथेव यं किञ्चि मनापं लभति, तं आनन्दत्थेरस्स देति। सो इमम्पि अत्तनो कनिट्ठभातिकं थेरस्सेव सद्धिविहारिकं अदासि। तेन वुत्तं "येनस्स उपज्झायो आयस्मा आनन्दो तेनुपसङ्कमी" ति। एवं किरस्स अहोसि "उपज्झायो मे महापञ्ञो, सो इमं कथं सत्थु आरोचेस्सति, अथ सत्था तदनुरूपं धम्मं देसेस्सती" ति। **कथापाभतं** ति कथाय मूलं। मूलञ्हि "पाभतं" ति वुच्चति। यथाह—

15 B. 92 · 20

"अप्पकेनापि मेधावी, पाभतेन विचक्खणो।
समुट्ठापेति अत्तानं, अणुं अग्गिं व सन्धमं"
(जा० १.४) ति॥

१. पीया—रो०। २. तं—रो०।
३. सहस्सग्घनकेन—रो०।

भगवन्तं दस्सनाया ति भगवन्तं दस्सनत्थाय। किं पनानेन[1] भगवा न दिट्ठपुब्बो ति? नो न दिट्ठपुब्बो। अयञ्हि आयस्मा दिवा नव वारे, रत्तिं नव वारे ति एकाहं अट्ठारस वारे उपट्ठानमेव गच्छति। दिवसस्स पन सत्तवारं वा सहस्सवारं वा गन्तुकामो समानोपि न 5 अकारणा गच्छति, एकं पञ्हद्धारं गहेत्वा व गच्छति। सो तं दिवसं तेन कथापाभतेन गन्तुकामो एवमाह।

३. असम्मासम्बुद्धप्पवेदितधम्मविनयवण्णना

३. **एवं हेतं चुन्द होती** (दी० नि० ३.९२) ति भगवा आनन्दत्थेरेन आरोचितेपि यस्मा न आनन्दत्थेरो[2] इमिस्सा कथाय सामिको, चुन्दत्थेरो पन सामिको। सोव तस्सा आदिमज्झपरियोसानं 10 जानाति। तस्मा भगवा तेन सद्धिं कथेन्तो "एवं हेतं, चुन्द, होती" R. 909 तिआदिमाह। तस्सत्थो—चुन्द एवञ्हेतं होति दुरक्खातादिसभावे धम्मविनये सावका द्वेधिकजाता भण्डनादीनि कत्वा मुखसत्तीहि पितुदन्ता विहरन्ति।

इदानि यस्मा अनिय्यानिकसासनेनेव निय्यानिकसासनं पाकटं 15 होति, तस्मा आदितो अनिय्यानिकसासनमेव दस्सेन्तो **इध चुन्द सत्था च होति असम्मासम्बुद्धो** तिआदिमाह। तत्थ **वोक्कम्म च तम्हा धम्मा वत्तती** ति न निरन्तरं पूरेति, ओक्कमित्वा ओक्कमित्वा अन्तरन्तरं कत्वा वत्तती ति अत्थो। **तस्स ते आवुसो लाभा** ति तस्स B. 93 तुय्हं एते धम्मानुधम्मप्पटिपत्तिआदयो लाभा। **सुलद्धं** ति 20 मनुस्सत्तम्पि ते सुलद्धं। **तथा पटिपज्जतू** ति एवं पटिपज्जतु। **यथा ते सत्थारा धम्मो देसितो** ति येन आकारेन सत्थारा धम्मो कथितो। **यो च समादपेती** ति यो च आचरियो समादपेति। **यञ्च समादपेती** ति यं अन्तेवासिं समादपेति। **यो च समादपितो** ति यो च एवं समादपितो अन्तेवासिको। यथा आचरियेन समादपितं, तथत्थाय 25 पटिपज्जति। **सब्बे ते** हि तयोपि ते। एत्थ हि आचरियो समादपितत्ता

१. तेन—रो०। २. थेरो—रो०।

अपुञ्ञं पसवति, समादिन्नन्तेवासिको समादिन्नत्ता, पटिपन्नको पटिपन्नत्ता। तेन वुत्तं — "सब्बे ते बहुं अपुञ्ञं पसवन्ती" ति। एतेनुपायेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो।

अपिचेत्थ **ञायप्पटिपन्नो** ति कारणप्पटिपन्नो। **ञायमाराधेस्सती** ति कारणं निप्फादेस्सति। **वीरियं आरभती** ति अत्तनो दुक्ख- 5
निब्बत्तकं वीरियं करोति। वुत्तञ्हेतं "दुरक्खाते, भिक्खवे, धम्मविनये यो आरद्धवीरियो, सो दुक्खं विहरति। यो कुसीतो, सो सुखं विहरती" (अं० नि० १.३४) ति।

४. सम्मासम्बुद्धप्पवेदितधम्मविनयादिवण्णना

४. एवं अनिय्यानिकसासनं दस्सेत्वा इदानि निय्यानिकसासनं दस्सेन्तो **इध पन चुन्द सत्था च होति सम्मासम्बुद्धो**तिआदिमाह। 10
तत्थ **निय्यानिको** ति मग्गत्थाय फलत्थाय च निय्याति।

५. **वीरियं आरभती** (दी० नि० ३.९३) ति अत्तनो सुख-निप्फादकं वीरियं आरभति। वुत्तञ्हेतं "स्वाक्खाते, भिक्खवे, धम्मविनये यो कुसीतो, सो दुक्खं विहरति। यो आरद्धवीरियो, सो सुखं विहरती" (अं० नि० ३४) ति। 15

६. इति भगवा निय्यानिकसासने सम्मापटिपन्नस्स कुलपुत्तस्स पसंसं दस्सेत्वा पुन देसनं वड्ढेन्तो **इध चुन्द सत्था च लोके उदपादी** तिआदिमाह। तत्थ **अविञ्ञापितत्था** ति अबोधितत्था। **सब्बसङ्गाह-पदकतं** ति सब्बसङ्गहपदेहि कतं, सब्बसङ्गाहिकं कतं न होती ति अत्थो। "सब्बसङ्गाहपदगतं" तिपि पाठो, न सब्बसङ्गाहपदेसु 20
गतं, न एकसङ्गहजातं ति अत्थो। **सप्पाटिहीरकतं** ति निय्यानिकं। **याव देवमनुस्सेही** ति देवलोकतो याव मनुस्सलोका सुप्पकासितं। **अनुतप्पो होती** ति अनुतापकरो होति। **सत्था च नो लोके** ति इदं तेसं अनुतापकारदस्सनत्थं वुत्तं। **नानुतप्पो होती** ति सत्थारं आगम्म सावकेहि यं पत्तब्बं, तस्स पत्तत्ता अनुतापकरो न होति। 25

R. 910 B. 94

९. **थेरो** ति थिरो थेरकारकेहि धम्मेहि समन्नागतो। "रत्तञ्ञू" तिआदीनि वुत्तत्थानेव। **एतेहि चे पी** (दी० नि० ३.९५) ति एतेहि हेट्ठा वुत्तेहि।

१०. **पत्तयोगक्खेमा** ति चतूहि योगेहि खेमत्ता अरहत्तं इध 5 योगक्खेमं नाम, तं पत्ताति अत्थो। **अलं समक्खातुं सद्धम्मस्सा** ति सम्मुखा गहितत्ता अस्स सद्धम्मं सम्मा आचिक्खितुं समत्था।

११. **ब्रह्मचारिनो** (दी० नि० ३.९६) ति ब्रह्मचरियवास वसमाना अरियसावका। **कामभोगिनो** ति गिहिसोतापन्ना। "इद्धञ्चेवा" तिआदीनि महापरिनिब्बाने वित्थारितानेव। **लाभग्गय-** 10 **सग्गपत्तं** ति लाभग्गञ्चेव यसग्गञ्च पत्तं।

१२. **सन्ति खो पन मे चुन्द एतरहि थेरा भिक्खू सावका** (दी० नि० ३.९७) ति सारिपुत्तमोग्गल्लानादयो थेरा। **भिक्खुनियो** ति खेमाथेरीउप्पलवण्णथेरीआदयो। **उपासका सावका गिही ओदातवत्थवसना ब्रह्मचारिनो** ति चित्तगहपतिहत्थकआळवकादयो। 15 **कामभोगिनो** चूळअनाथपिण्डिकमहाअनाथपिण्डिकादयो। **ब्रह्म-चारिनियो** ति नन्दमातादयो। **कामभोगिनियो** ति खुज्जुत्तरादयो।

१३. **सब्बाकारसम्पन्नं** (दी०नि० ३.९८) ति सब्बकारणसम्पन्नं। R. 911 **इदमेव तं** ति इदमेव ब्रह्मचरियं, इममेव धम्मं सम्मा हेतुना नयेन वदमानो वदेय्य। **उदकोस्सुदं** ति उदको सुदं। **पस्सं न पस्सती** ति 20 पस्सन्तो न पस्सति। सो किर इमं पञ्हं महाजनं पुच्छि। तेहि "न जानाम, आचरिय, कथेहि नो" ति वुत्तो सो आह "गम्भीरो अयं पञ्हो आहारसप्पाये सति थोकं चिन्तेत्वा सक्का कथेतुं" ति। B. 95 ततो तेहि चत्तारो मासे महासक्कारे कते तं पञ्हं कथेन्तो **किञ्च पस्सं न पस्सती** तिआदिमाह। तत्थ **साधुनिसितस्सा** ति सुट्ठुनिसि-25 तस्स तिखिणस्स, सुनिसितखुरस्स किर तलं पञ्ञायति, धारा न **पञ्ञायती** ति अयमेत्थ अत्थो।

५. सङ्गायितब्बधम्मादिवण्णना

१४. **सङ्गम्म समागम्मा** ति सङ्गन्त्वा समागन्त्वा। **अत्थेन अत्थं, ब्यञ्जनेन ब्यञ्जनं** ति अत्थेन सह अत्थं, ब्यञ्जनेनपि सह ब्यञ्जनं समानेन्तेही ति अत्थो। **सङ्गायितब्बं** ति वाचेतब्बं सज्झायितब्बं। **यथयिदं ब्रह्मचरियं** ति यथा इदं सकलं सासन-ब्रह्मचरियं। 5

१५. **तत्र चे** (दी० नि० ३.९९) ति तत्र संघमज्झे, तस्स वा भासिते। **अत्थञ्चेव मिच्छा गण्हाति, ब्यञ्जनानि च मिच्छा रोपेती** ति "चत्तारो सतिपट्ठाना" ति एत्थ आरम्मणं "सतिपट्ठानं" ति अत्थं गण्हाति। "सतिपट्ठानानी" ति ब्यञ्जनं रोपेति। **इमस्स नु खो आवुसो अत्थस्सा** ति "सतियेव सतिपट्ठानं" ति। अत्थस्स 10 "चत्तारो सतिपट्ठाना" ति किं नु खो इमानि ब्यञ्जनानि, उदाहु "चत्तारि सतिपट्ठानानी" ति एतानि, वा ब्यञ्जनानि। **कतमानि ओपायिकत-रानी** ति इमस्स अत्थस्स कतमानि ब्यञ्जनानि उपपन्नतरानि अल्लीनतरानि। **इमेसञ्च ब्यञ्जनानं** ति "चत्तारो सतिपट्ठाना" ति ब्यञ्जनानं "सतियेव सतिपट्ठानं" ति किं नु खो अयं अत्थो, उदाहु 15 "आरम्मणं सतिपट्ठानं" ति एसो अत्थो ति? **इमस्स खो आवुसो अत्थस्सा** ति "आरम्मणं सतिपट्ठानं" ति इमस्स अत्थस्स। **या चेव एतानी** ति यानि चेव एतानि मया वुत्तानि। **यो चेव एसो** ति यो चेव एस मया वुत्तो। **सो नेव उस्सादेतब्बो** ति तुम्हेहि ताव सम्मा अत्थे च सम्मा ब्यञ्जने च ठातब्बं। सो पन नेव उस्सादेतब्बो, 20 R.912 न अपसादेतब्बो। **सञ्ञापेतब्बो** ति जानापेतब्बो। **तस्स च अत्थस्सा** ति "सतियेव सतिपट्ठानं" ति अत्थस्स च। **तेसञ्च ब्यञ्जनानं** ति "सतिपट्ठाना" ति ब्यञ्जनानं। **निसन्तिया** ति निसामनत्थं धारणत्थं। इमिना नयेन सब्बवारेसु अत्थो वेदितब्बो।

तादिसं ति तुम्हादिसं। **अत्थुपेतं** ति अत्थेन उपेतं अत्थस्स 25 विञ्ञातारं। **ब्यञ्जनुपेतं** ति ब्यञ्जनेहि उपेतं ब्यञ्जनानं विञ्ञातारं।

B. 96 एवं एतं भिक्खुं पसंसथ। एसो हि भिक्खु न तुम्हाकं सावको नाम, बुद्धो नाम एस चुन्दा ति। इति भगवा बहुस्सुतं भिक्खुं अत्तनो ठाने ठपेसि[१]।

६. पच्चयानुञ्ञातकारणादिवण्णना

१८. इदानि ततोपि उत्तरितरं देसनं वड्ढेन्तो **न वो अहं चुन्दा** 5 (दी० नि० ३.१००) तिआदिमाह। तत्थ दिट्ठधम्मिका आसवा नाम इधलोके पच्चयहेतु उप्पज्जनका आसवा। सम्परायिका आसवा नाम परलोके भण्डनहेतु उप्पज्जनका आसवा। **संवराया** ति यथा ते न पविसन्ति, एवं पिदहनाय। **पटिघाताया** ति मूलघातेन पटिहननाय। **अलं वो तं यावदेव सीतस्स पटिघाताया** ति तं तुम्हाकं सीतस्स 10 पटिघाताय समत्थं। इदं वुत्तं होति, यं वो मया चीवरं अनुञ्ञातं, तं पारुपित्वा दप्पं वा मानं वा कुरुमाना विहरिस्सथा ति न अनुञ्ञातं, तं पारुपित्वा सीतप्पटिघातादीनि कत्वा सुखं समणधम्मं योनिसो मनसिकारं करिस्सथा ति अनुञ्ञातं। यथा च चीवरं, एवं पिण्डपातादयोपि। अनुपदसंवण्णना पनेत्थ विसुद्धिमग्गे वुत्तनयेनेव 15 वेदितब्बा।

७. सुखल्लिकानुयोगादिवण्णना

१९. **सुखल्लिकानुयोगं** (दी० नि० ३.१०१) ति सुखल्लियनानुयोगं, सुखसेवनाधिमुत्तं ति अत्थो। **सुखेती** ति सुखितं करोति। **पीणेती** ति पीणितं थूलं करोति।

२३. **अट्ठितधम्मा** (दी० नि० ३.१०३) ति नट्ठितसभावा। 20 जिव्हा नो अत्थी ति यं यं इच्छन्ति, तं तं कथेन्ति, कदाचि मग्गं कथेन्ति, कदाचि फलं कदाचि निब्बानं ति अधिप्पायो। **जानता** ति सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन जानन्तेन। **पस्सता** ति पञ्चहि चक्खूहि R. 913 पस्सन्तेन। **गम्भीरनेमो** ति गम्भीरभूमिं अनुपविट्ठो। **सुनिखातो** ति

१. ठपेति—रो०।

सुट्ठु निखातो। **एवमेव खो आवुसो** ति एवं खीणासवो अभब्बो नव ठानानि अज्झाचरितुं। तस्मिं अनज्झाचारो[1] अचलो[2] असम्पवेधी[3]। तत्थ सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपनादीसु सोतापन्नादयोपि अभब्बा। **सन्निधिकारकं कामे परिभुञ्जितुं** ति वत्थुकामे च किलेसकामे च सन्निधिं कत्वा परिभुञ्जितुं। **सेय्यथापि पुब्बे अगारिकभूतो** ति यथा पुब्बे गिहिभूतो परिभुञ्जति, एवं परिभुञ्जितुं अभुब्बो। B. 97 5

८. पञ्हब्याकरणवण्णना

२४. अगारमज्झे वसन्ता हि सोतापन्नादयो यावजीवं गिहिब्यञ्जनेन तिट्ठन्ति। खीणासवो पन अरहत्तं पत्वाव मनुस्सभूतो परिनिब्बाति वा पब्बजति वा। चातुमहाराजिकादीसु कामावचरदेवेसु मुहुत्तम्पि न तिट्ठति। कस्मा? विवेकट्ठानस्स अभावा। भुम्मदेवत्तभावे पन ठितो अरहत्तं पत्वापि तिट्ठति। तस्स वसेन अयं पञ्हो आगतो। भिन्नदोसत्ता पनस्स भिक्खुभावो वेदितब्बो। **अतीरकं** ति अतीरं अपरिच्छेदं महन्तं। **नो च खो अनागतं** ति अनागतं पन अद्धानं आरब्भ एवं न[4] पञ्ञपेति, अतीतमेव मञ्ञे समणो गोतमो जानाति, न अनागतं। तथा हिस्स अतीते अट्ठच्छट्ठसतजातकानुस्सरणं पञ्ञायति। अनागते एवं बहुं अनुस्सरणं न पञ्ञायती ति इममत्थं मञ्ञमाना एवं वदेय्युं। **तयिदं किंसू** ति अनागते अपञ्ञापनं किं नु खो? **कथंसू** ति केन नु खो कारणेन अजानन्तोयेव नु खो अनागतं नानुस्सरति, अननुस्सरितुकामताय नानुस्सरती ति। **अञ्ञविहितकेन ञाणदस्सनेना** ति पच्चक्खं विय कत्वा दस्सनसमत्थताय दस्सनभूतेन ञाणेन अञ्ञत्थविहितकेन ञाणेन अञ्ञं आरब्भ पवत्तेन, अञ्ञविहितकं अञ्ञं आरब्भ पवत्तमानं ञाणदस्सनं सङ्गाहेतब्बं पञ्ञापेतब्बं मञ्ञन्ति। ते हि चरतो च तिट्ठतो च सुत्तस्स 10 15 20

१. अज्झाचारो—रो०। २. अचेलो—रो०।
३. असम्पवेरी—रो०। ४. रो० पोत्थके नत्थि।

च जागरस्स च सततं समितं ञाणदस्सनं पच्चुपट्ठितं मञ्ञन्ति, तादिसं च ञाणं नाम नत्थि। तस्मा यथरिव बाला अब्यत्ता, एवं मञ्ञन्ती ति वेदितब्बो।

R. 914 **सतानुसारी** ति पुब्बेनिवासानुस्सतिसम्पयुत्तकं। **यावतकं**
5 **आकङ्खती** ति यत्तकं ञातुं इच्छति, तत्तकं जानिस्सामी ति ञाणं पेसेसि[1]। अथस्स दुब्बलपत्तपुटे पक्खन्दनाराचो विय अप्पटिहतं अनिवारितं ञाणं गच्छति, तेन यावतकं आकङ्खति तावतकं अनुस्सरति। **बोधिजं** ति बोधिमूले जातं। **ञाणं उप्पज्जती** ति
B. 98 चतुमग्गञाणं उप्पज्जति। **अयमन्तिमा जाती** ति तेन ञाणेन जाति-
10 मूलस्स पहीनत्ता पुन अयमन्तिमा जाति। **नत्थि दानि पुनब्भवो** ति अपरम्पि ञाणं उप्पज्जति। **अनत्थसंहितं** ति न इधलोकत्थं वा परलोकत्थं वा निस्सितं। **न तं तथागतो ब्याकरोती** ति तं भारत-युद्धसीताहरणसदिसं अनिय्यानिककथं तथागतो तं कथेति। **भूतं तच्छं अनत्थसंहितं** ति राजकथादितिरच्छानकथं। **कालञ्ञू तथागतो**
15 **होती** ति कालं जानाति। सहेतुकं सकारणं कत्वा युत्तपत्तकालेयेव कथेति।

२५. **कस्मा तथागतो ति वुचती** ति यथा यथा गदितब्बं, तथा तथेव गदनतो दकारस्स तकारं कत्वा तथागतो ति वुचती ति अत्थो। **दिट्ठं** ति रूपायतनं। **सुतं** (दी० नि० ३.१०४) ति
20 सद्दायतनं। **मुतं** ति मुत्वा पत्वा गहेतब्बतो गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं। **विञ्ञातं** ति सुखदुक्खादिधम्मायतनं। **पत्तं** ति परियेसित्वा वा अपरियेसित्वा वा पत्तं। **परियेसितं** ति पत्तं वा अपत्तं वा परियेसितं। **अनुविचरितं मनसा** ति चित्तेन अनुसञ्चरितं। "तथागतेन अभिसम्बुद्धं" ति इमिना एतं दस्सेति, यञ्हि अपरि-
25 माणासु लोकधातूसु इमस्स सदेवकस्स लोकस्स नीलं पीतकं तिआदि रूपारम्मणं चक्खुद्वारे आपाथमागच्छति, "अयं सत्तो इमस्मिं खणे

१. पेसेति—रो०।

इमं नाम रूपारम्मणं दिस्वा सुमनो वा दुम्मनो वा मज्झत्तो वा जातो" ति सब्बं तं तथागतस्स एवं अभिसम्बुद्धं। तथा यं अपरिमाणासु लोकधातूसु इमस्स सदेवकस्स लोकस्स भेरिसद्दो मुदिङ्गसद्दोतिआदि सद्दारम्मणं सोतद्वारे आपाथमागच्छति। मूलगन्धो तचगन्धोतिआदि गन्धारम्मणं घानद्वारे आपाथं आगच्छति। मूलरसो खन्धरसोतिआदि रसारम्मणं जिव्हाद्वारे आपाथमागच्छति।कक्खळं मुदुकं तिआदि पथवीधातुतेजोधातुवायोधातुभेदं फोट्ठब्बारम्मणं कायद्वारे आपाथमागच्छति"। "अयं सत्तो इमस्मिं खणे इमं नाम फोट्ठब्बारम्मणं फुसित्वा सुमनो वा दुम्मनो वा मज्झत्तो वा जातो" ति सब्बं तं तथागतस्स एवं अभिसम्बुद्धं। तथा यं अपरिमाणासु लोकधातूसु इमस्स सदेवकस्स लोकस्स सुखदुक्खादिभेदं धम्मारम्मणं मनोद्वारस्स आपाथमागच्छति, "अयं सत्तो इमस्मिं खणे इमं नाम धम्मारम्मणं विजानित्वा सुमनो वा दुम्मनो वा मज्झत्तो वा जातो" ति सब्बं तं तथागतस्स एवं अभिसम्बुद्धं।

यञ्हि, चुन्द, इमेसं सत्तानं दिट्ठं सुतं मुतं विञ्ञातं तत्थ तथागतेन अदिट्ठं वा असुतं वा अमुतं वा अविञ्ञातं वा नत्थि। इमस्स महाजनस्स परियेसित्वा पत्तम्पि अत्थि, परियोसित्वा अप्पत्तम्पि अत्थि। अपरियेसित्वा पत्तम्पि अत्थि, अपरियेसित्वा अप्पत्तम्पि अत्थि। सब्बम्पि तं तथागतस्स अप्पत्तं नाम नत्थि, ञाणेन असच्छिकतं नाम। तस्मा तथागतो ति वुच्चती" ति। यं यथा लोकेन गतं तस्स तथेव गतत्ता "तथागतो" ति वुच्चति। पाळियं पन अभिसम्बुद्धं ति वुत्तं, गतसद्देन एकत्थं। इमिना नयेन सब्बवारेसु "तथागतो" ति निगमनस्स अत्थो वेदितब्बो, तस्स युत्ति ब्रह्मजाले तथागतसद्दवित्थारे वुत्तायेव।

९. अब्याकतट्ठानवण्णना

२६. एवं अत्तनो असमतं अनुत्तरतं सब्बञ्ञुतं धम्मराजभावं कथेत्वा इदानि "पुथुसमणब्राह्मणानं लद्धीसु मया अञ्ञातं अदिट्ठं

नाम नत्थि, सब्बं मम ञाणस्स अन्तोयेव परिवत्तती" ति सीहनादं नदन्तो **ठानं खो पनेतं चुन्द विज्जतीति**आदिमाह। तत्थ **तथागतो** (दी० नि० ३.१०५) ति सत्तो। **न हेतं आवुसो अत्तसंहितं** ति इधलोकपरलोक अत्थसंहितं न होति। **न च धम्मसंहितं** ति
R. 916 5 नवलोकुत्तरधम्मनिस्सितं न होति। **न आदिब्रह्मचरियकं** ति सिक्खत्तयसङ्गहितस्स सकलसासनब्रह्मचरियस्स आदिभूतं न होति।

२७. **इदं दुक्खं ति खो** (दी० नि० ३.१०६) तिआदीसु तण्हं ठपेत्वा अवसेसा तेभुम्मका धम्मा इदं दुक्खं ति ब्याकतं। तस्सेव दुक्खस्स पभाविका जनिका तण्हा **दुक्खसमुदयो** ति ब्याकतं। उभिन्नं
10 अप्पवत्ति **दुक्खनिरोधो** ति ब्याकतं। दुक्खपरिजाननो समुदयपजहनो निरोधसच्छिकरणो अरियमग्गो **दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा** ति ब्याकतं। "एतञ्हि, आवुसो, अत्थसंहितं" तिआदीसु एतं इधलोकपरलोकअत्थनिस्सितं नवलोकुत्तरधम्मनिस्सितं सकलसासन-ब्रह्मचरियस्स आदि पट्ठानं पुब्बङ्गमं ति अयमत्थो।

१०. पुब्बन्तसहगतदिट्ठिनिस्सयवण्णना

15 २८. इदानि यं तं मया न[1] ब्याकतं, तं अजानन्तेन[2] न ब्याकतं ति मा एवं सञ्ञमकंसु। जानन्तोव अहं एवं "एतस्मिं ब्याकतेपि
B. 100 अत्थो नत्थी" ति न ब्याकरिं। यं पन यथा ब्याकातब्बं, तं मया ब्याकतमेवा ति सीहनादं नदन्तो पुन **येपि ते चुन्दा** तिआदिमाह। तत्थ दिट्ठियोव **दिट्ठिनिस्सया**, दिट्ठिनिस्सितका दिट्ठिगतिका ति
20 अत्थो। **इदमेव सच्चं** ति इदमेव दस्सनं सच्चं। **मोघमञ्ञं** ति अञ्ञेसं वचनं मोघं। **असयंकारो** ति असयं कतो।

२९. **तत्रा** (दी० नि० १०७) ति तेसु समणब्राह्मणेसु। **अत्थि नु खो इदं आवुसो वुच्चती** ति आवुसो यं तुम्हेहि सस्सतो अत्ता च लोको चा ति वुचति, इदमत्थि नु खो इदाहु नत्थी ति एवमहं ते

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. अजानन्तो—रो०।

पुच्छामी ति अत्थो। **यञ्च खो तं एवमाहंसू** ति यं पन ते "इदमेव सच्चं मोघमञ्ञं" ति वदन्ति, तं तेसं नानुजानामि। **पञ्ञत्तिया** ति दिट्ठिपञ्ञत्तिया। **समसमं** ति समेन ञाणेन समं। **यदिदं अधिपञ्ञत्ती** ति या अयं अधिपञ्ञत्ति नाम। एत्थ अहमेव भिय्यो उत्तरितरो न मया समो अत्थि। तत्थ यञ्च वुत्तं "पञ्ञत्तिया ति यञ्च अधिपञ्ञत्ती" 5
ति उभयमेतं अत्थतो एकं। भेदतो हि पञ्ञत्ति अधिपञ्ञत्ती ति द्वयं होति। तत्थ पञ्ञत्ति नाम दिट्ठिपञ्ञत्ति। अधिपञ्ञत्ति नाम खन्धपञ्ञत्ति धातुपञ्ञत्ति आयतनपञ्ञत्ति इन्द्रियपञ्ञत्ति सच्चपञ्ञत्ति पुग्गलपञ्ञत्ती ति एवं वुत्ता छ पञ्ञत्तियो। इध पन पञ्ञत्तिया ति R.917
एत्थापि पञ्ञत्ति चेव अधिपञ्ञत्ति च अधिप्पेता, अधिपञ्ञत्ती ति 10
एत्थापि। भगवा हि पञ्ञत्तियापि अनुत्तरो, अधिपञ्ञत्तियापि अनुत्तरो। तेनाह "अहमेव तत्थ भिय्यो यदिदं अधिपञ्ञत्ती" ति।

३३. **पहानाय** (दी० नि० ३.१०८) ति पजहनत्थं। **समतिक्कमाय** ति तस्सेव वेवचनं। **देसिता** ति कथिता। **पञ्ञत्ता** ति ठपिता। सतिपट्ठानभावनाय हि धनविनिब्भोगं कत्वा सब्बधम्मेसु 15
याथावतो दिट्ठेसु "सुद्धसङ्खारपुञ्जोयं नयिध सत्तूपलब्भती" ति सन्निट्ठानतो सब्बदिट्ठिनिस्सयानं पहानं होती ति। तेन वुत्तं दिट्ठिनिस्सयानं पहानाय समतिक्कमाय एवं मया इमे[1] चत्तारो सतिपट्ठाना देसिता पञ्ञत्ता" ति। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति।

पासादिकसुत्तवण्णना निट्ठिता।

१. रो० पोत्थके नत्थि।

(७) लक्खणसुत्तवण्णना

१. द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणवण्णना

B. 101
R. 918

१. एवं मे सुतं (दी० नि० ३.११०) ति लक्खणसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदवण्णना। **द्वत्तिंसिमानी** ति द्वत्तिंस इमानि। **महापुरिसलक्खणानी** ति महापुरिसब्यञ्जनानि महापुरिसनिमित्तानि "अयं महापुरिसो" ति सञ्जाननकारणानि। "येहि समन्नागतस्स
5 महापुरिसस्सा" तिआदि महापदाने वित्थारितनयेनेव वेदितब्बं।

"बाहिरकापि इसयो धारेन्ति, नो च खो जानन्ति 'इमस्स कम्मस्स कतत्ता इमं लक्खणं पटिलभती' ति" कस्मा आह? अट्ठुप्पत्तिया अनुरूपता। इदञ्हि सुत्तं सअट्ठुप्पत्तिकं। सा पनस्स अट्ठुप्पत्ति कत्थ समुट्ठिता? अन्तोगामे मनुस्सानं अन्तरे। तदा किर
10 सावत्थिवासिनो अत्तनो अत्तनो गेहेसु च गेहद्वारेसु च सन्थागारादीसु च निसीदित्वा कथं समुट्ठापेसुं — "भगवतो असीतिअनुब्यञ्जनानि ब्यामप्पभाद्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि, येहि च भगवतो कायो, सब्बफालिफुल्लो विय पारिच्छत्तको, विकसितमिव कमलवनं, नाना-रतनविचित्तं विय सुवण्णतोरणं, तारामरिचिविरोचमिव गगनतलं, इतो
15 चितो च विधवमाना विप्फन्दमाना छब्बण्णरस्मियो मुञ्चन्तो[१] अतिविय सोभति। भगवतो च इमिना नाम कम्मेन इदं लक्खणं निब्बत्तं ति कथितं नत्थि, यागुउळुङ्कमत्तम्पि पन कटच्छुभत्तमत्तं वा पुब्बे दिन्न-पच्चया एवं उप्पज्जती ति भगवता वुत्तं। किं नु खो सत्था कम्मं अकासि येनस्स इमानि लक्खणानि निब्बत्तन्ती[२]" ति।

20 अथायस्मा आनन्दो अन्तोगामे चरन्तो इमं कथासल्लापं सुत्वा कतभत्तकिच्चो विहारं आगन्त्वा सत्थु वत्तं कत्वा वन्दित्वा ठितो

१. विस्सज्जन्तो—रो०। २. निब्बत्तानी ति—रो०।

"मया, भन्ते, अन्तोगामे एका कथा सुता" ति आह। ततो भगवता "किं ते, आनन्द, सुतं" ति वुत्ते सब्बं आरोचेसि। सत्था थेरस्स वचनं सुत्वा परिवारेत्वा निसिन्ने भिक्खू आमन्तेत्वा "द्वत्तिंसिमानि, भिक्खवे, महापुरिसस्स महापुरिसलक्खणानी" ति पटिपाटिया लक्खणानि दस्सेत्वा येन कम्मेन यं निब्बत्तं, तस्स[1] दस्सनत्थं एवमाह। R. 919 5

२. सुप्पतिट्ठितपादतालक्खणवण्णना

४. **पुरिमं जातिं** तिआदीसु पुब्बे निवुत्तक्खन्धा जातवसेन "जाती" ति वुत्ता। तथा भवनवसेन "भवो" ति, निवुत्थवसेन आलयट्ठेन वा "निकेतो" ति। तिण्णम्पि पदानं पुब्बे निवुत्थक्खन्धसन्ताने ठितो ति अत्थो। इदानि यस्मा तं खन्धसन्तानं देवलोकादीसुपि वत्तति। लक्खणनिब्बत्तनसमत्थं पन कुसलकम्मं तत्थ न सुकरं, मनुस्सभूतस्सेव सुकरं। तस्मा यथाभूतेन यं कम्मं कतं, तं दस्सेन्तो **पुब्बे मनुस्सभूतो समानो** ति आह। अकारणं वा एतं। हत्थिअस्समिगमहिंसवानरादिभूतोपि महापुरिसो पारमियो पूरेतियेव। यस्मा पन एवरूपे अत्तभावे ठितेन कतकम्मं न सक्का सुखेन दीपेतुं, मनुस्सभावे ठितेन कतकम्मं पन सक्का सुखेन दीपेतुं; तस्मा "पुब्बे मनुस्सभूतो समानो" ति आह। B. 102 10 15

दळ्हसमादानो ति थिरगहणो। **कुसलेसु धम्मेसू** ति दसकुसलकम्मपथेसु। **अवत्थितसमादाना** ति निच्चलगहणो अनिवत्तितगहणो। महासत्तस्स हि अकुसलकम्मतो अग्गिं पत्वा कुक्कुटपत्तं विय चित्तं पटिकुटति, कुसलं पत्वा वितानं विय पसारियति। तस्मा दळ्हसमादानो होति अवत्थितसमादानो। न सक्का केनचि समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा कुसलसमादानं विस्सज्जापेतुं। 20

१. तस्स च—रो०।

तत्रिमानि वत्थूनि। पुब्बे किर महापुरिसो कलन्दकयोनियं निब्बत्ति[१]। अथ देवे वुट्ठे[२] ओघो[३] आगन्त्वा कुलावकं गहेत्वा समुद्दमेव पवेसेसि। महापुरिसो "पुत्तके नीहरिस्सामी" ति नङ्गुट्ठं तेमेत्वा तेमेत्वा समुद्दतो उदकं बहि खिपि[४]। सत्तमे दिवसे सक्को आवज्जित्वा
5 तत्थ आगम्म "किं करोसी" ति पुच्छि? सो तस्स आरोचेसि। सक्को
R. 920 महासमुद्दतो उदकस्स दुन्नीहरणीयभावं कथेसि। बोधिसत्तो तादिसेन कुसीतेन सद्धिं कथेतुम्पि न वट्टति। "मा इध तिट्ठा" ति अपसादेसि। सक्को "अनोमपुरिसेन गहितगहणं न सक्का विस्सज्जापेतुं" ति तुट्ठो तस्स पुत्तके आनेत्वा अदासि। महाजनककालेपि महासमुद्दं तरमानो
15 "कस्मा महासमुद्दं तरसी" ति देवताय पुट्ठो "पारं गन्त्वा कुलसन्तके रट्ठे रज्जं गहेत्वा दानं दातुं तरामी" ति आह। ततो देवताय
B. 103 "अयं महासमुद्दो गम्भीरो चेव पुथुलो च, कदा नं तरिस्सती" ति वुत्ते सो आह "तवेसो महासमुद्दसदिसो, मय्हं पन अज्झासयं आगम्म खुद्दकमातिका विय खायति। त्वंयेव मं[५] दक्खिस्ससि समुद्दं तरित्वा
20 समुद्दपारतो धनं आहरित्वा कुलसन्तकं[६] रज्जं[७] गहेत्वा दानं ददमानं" ति। देवता "अनोमपुरिसेन गहितगहणं न सक्का विस्सज्जापेतुं" ति बोधिसत्तं आलिङ्गित्वा हरित्वा उय्याने निपज्जापेसि। सो छत्तं उस्सापेत्वा दिवसे दिवसे पञ्चसतसहस्सपरिच्चागं कत्वा अपरभागे निक्खम्म पब्बजितो। एवं महासत्तो न सक्का केनचि
25 समणेन वा ... पे० ... ब्रह्मुना वा कुसलसमादानं विस्सज्जापेतुं। तेन वुत्तं—"दळ्हसमादानो अहोसि कुसलेसु धम्मेसु अवत्थितसमादानो" ति।

इदानि येसु कुसलेसु धम्मेसु अवत्थितसमादानो अहोसि, ते दस्सेतुं कायसुचरिते तिआदिमाह। दानसंविभागे ति एत्थ च दानमेव

१. निवत्तत्ति—रो०। २. वद्धे—रो०।
३. महोघो—रो०। ४. खिपति—रो०।
५. मयि—रो०। ६. कुलसन्तके—रो०।
७. रट्ठे—रो०।

दिय्यनवसेन दानं, संविभागकरणवसेन संविभागो। **सीलसमादाने** ति पञ्चसीलदससीलचतुपारिसुद्धिसीलपूरणकाले। **उपोसथूपवासे** ति चातुद्दसिकादिभेदस्स उपोसथस्स उपवसनकाले। **मत्तेय्यताया** ति मातुकातब्बवत्ते। सेसपदेसुपि एसेव नयो। **अञ्ञतरञ्ञतरेसु चा** ति अञ्ञेसु च एवरूपेसु। **अधिकुसलेसू** ति एत्थ अत्थि कुसला, अत्थि अधिकुसला। सब्बेपि कामावचरा कुसला कुसला[1] नाम, रूपावचरा अधिकुसला। उभोपि ते कुसला नाम, अरूपावचरा अधिकुसला। सब्बेपि ते कुसला नाम, सावकपारमीपटिलाभपच्चया कुसला अधिकुसला नाम। तेपि कुसला नाम, पच्चेकबोधिपटिलाभपच्चया कुसला अधिकुसला। तेपि कुसला नाम, सब्बञ्ञुतञ्ञाणप्पटिलाभ-पच्चया पन कुसला इध "अधिकुसला" ति अधिप्पेता। तेसु अधिकुसलेसु धम्मेसु दळ्हसमादानो अहोसि अवत्थितसमादानो।

R. 921

कटत्ता उपचितत्ता ति एत्थ सकिम्पि कतं कतमेव, अभिण्हकरणेन पन उपचितं होति। **उस्सन्नत्ता** ति पिण्डकतं रासीकतं कम्मं उस्सन्नं ति वुच्चति। तस्मा "उस्सन्नत्ता" ति वदन्तो मया कतकम्मस्स चक्कवाळं अतिसम्बाधं, भवग्गं अतिनीचं, एवं मे उस्सन्नं कम्मं ति दस्सेति। **विपुलत्ता** ति अप्पमाणत्ता। इमिना "अनन्तं अपरिमाणं मया कतं कम्मं" ति दस्सेति। **अधिग्गण्हाती** ति अधिभवति[2], अञ्ञेहि देवेहि अतिरेकं लभती ति अत्थो। **पटिलभती** ति अधिगच्छति।

B. 104

सब्बावन्तेहि पादतलेही ति इदं "समं पादं भूमियं निक्खिपती" ति एतस्स वित्थारवचनं। तत्थ **सब्बावन्तेही** ति सब्बपदेसवन्तेहि, न एकेन पदेसेन पठमं फुसति, न एकेन पच्छा, सब्बेहेव पादतलेहि समं फुसति, समं उद्धरति। सचेपि हि तथागतो "अनेकसतपोरिसं नरकं अक्कमिस्सामी" ति पादं अभिनीहरति। तावदेव निन्नट्ठानं

[1] रो॰ पोत्थके नत्थि।
[2] अधिगच्छति—रो॰।

वातपूरिता विय कम्मारभस्ता उन्नमित्वा पथविसमं होति । उन्नत-
ट्ठानम्पि अन्तो पविसति । "दूरे अक्कमिस्सामी" ति अभिनीहरन्तस्स
सिनेरुप्पमाणोपि पब्बतो सुसेदितवेत्तङ्कुरो विय ओनमित्वा पादसमीपं
आगच्छति । तथा हिस्स यमकपाटिहारियं कत्वा युगन्धरपब्बतं
5 अक्कमिस्सामी" ति पादे अभिनीहटे पब्बतो ओनमित्वा पादसमीपं
आगतो । सोपि तं अक्कमित्वा दुतियपादेन तावतिंसभवनं अक्कमि ।
न हि चक्कलक्खणेन पतिट्ठातब्बट्ठानं विसमं भवितुं सक्कोति । खाणु
वा कण्टको वा सक्खरा वा कथला वा उच्चारपस्सावखेळसिङ्घाणिका-
दीनि वा पुरिमतरं वा अपगच्छन्ति, तत्थ तत्थेव वा पथविं
10 पविसन्ति । तथागतस्स हि सीलतेजेन पुञ्ञतेजेन धम्मतेजेन दसन्नं
R. 922 पारमीनं आनुभावेन अयं महापथवी समा मुदुपुप्फाभिकिण्णा होति ।

५. **सागरपरियन्तं** (दी० नि० ३.११२) ति सागरसीमं । न हि
तस्स रज्जं करोन्तस्स अन्तरा रुक्खो वा पब्बतो वा नदी वा सीमा
होति महासमुद्दोव सीमा । तेन वुत्तं 'सागरपरियन्तं" ति ।
15 **अखिलमनिमित्तमकण्टकं** ति निच्चोरं । चोरा हि खरसम्फस्सट्ठेन
खिला, उपद्दवपच्चयट्ठेन निमित्ता, विज्झनट्ठेन कण्टका ति वुच्चन्ति ।
इद्धं ति समिद्धं । **फीतं** ति सब्बसम्पत्तिफालिफुल्लं । **खेमं** ति निब्भयं ।
सिवं ति निरुपद्दवं । **निरब्बुद** ति अब्बुदविरहितं, गुम्बं गुम्बं हुत्वा
चरन्तेहि चोरेहि विरहितं ति अत्थो । **अक्खम्भियो** ति अविक्खम्भनीयो ।
20 न नं कोचि ठानतो चालेतुं सक्कोति । **पच्चत्थिकेना** ति पटिपक्खं
इच्छन्तेन । **पच्चामित्तेना** ति पटिविरुद्धेन अमित्तेन । उभयम्पेतं
सपत्तवेवचनं । **अब्भन्तरेही** ति अन्तो उट्ठितेहि रागादीहि ।

B. 105 **बाहिरेही** ति समणादीहि । तथा हि नं बाहिरा देवदत्तकोकालि-
कादयो समणापि सोणदण्डकूटदन्तादयो ब्राह्मणापि सक्कसदिसा
25 देवतापि सत्त वस्सानि अनुबन्धमानो मारोपि बकादयो ब्रह्मानोपि
विक्खम्भेतुं नासक्खिंसु ।

एत्तावता भगवता कम्मञ्च कम्मसरिक्खकञ्च लक्खणञ्च लक्खणा-
निसंसो च वुत्तो होति । कम्मं नाम सतसहस्सकप्पाधिकानि चत्तारि

असङ्ख्येय्यानि दळ्हवीरियेन हुत्वा कतं कम्मं। **कम्मसरिक्खकं** नाम दळ्हेन हुत्वा कतभावं सदेवको[1] लोको[1] जानातू ति सुप्पतिट्ठितपाद-महापुरिसलक्खणं। **लक्खणं** नाम सुप्पतिट्ठितपादता[2]। **लक्खणा-निसंसो** नामपच्चत्थिकेहि अविक्खम्भनीयता। 5

६. **तत्थेतं वुच्चती** (दी० नि० ३.११३) ति तत्थ वुत्ते कम्मादिभेदे अपरम्पि इदं वुचति, गाथाबन्धं सन्धाय वुत्तं। एता पन गाथा पोराणकत्थेरा "आनन्दत्थेरेन ठपिता वण्णनागाथा" ति वत्वा गता। अपरभागे थेरा "एकपदिको अत्थुद्धारो" ति आहंसु।

तत्थ **सच्चे** ति वचीसच्चे। **धम्मे** ति दसकुसलकम्मपथधम्मे। R. 923
दमे ति इन्द्रियदमने। **संयमे** ति सीलसंयमे। "**सोचेय्यसीलालयु-** 10
पोसथेसु चा" ति एत्थ कायसोचेय्यादि तिविध **सोचेय्यं**। आलयभूतं सीलमेव **सीलालयो**। उपोसथकम्मं **उपोसथो**। **अहिंसाया** ति अवि-हिंसाय। **समत्तमाचरी** ति सकलं अचरि।

अन्वभी ति अनुभवि। **वेय्यञ्जनिका** ति लक्खणपाठका।
पराभिभू ति परे अभिभवनसमत्थो। **सत्तुभी** ति सपत्तेहि अक्खम्भियो 15
होति।

न सो गच्छति जातु खम्भनं ति सो एकं सेनेव अग्गपुग्गलो विक्खम्भेतब्बतं न गच्छति। **एसा हि तस्स धम्मता** ति तस्स हि एसा धम्मता अयं सभावो।

३. पादतलचक्कलक्खणवण्णना

७. **उब्बेगउत्तासभयं** (दी० नि० ३.११४) ति उब्बेगभयञ्चेव 20
उत्तासभयञ्च। तत्थ चोरतो वा राजतो वा पच्चत्थिकतो वा विलोपन-बन्धनादिनिस्सयं भयं **उब्बेगो** नाम, तंमुहुत्तिकं चण्डहत्थिअस्सादीनि वा अहियक्खादयो वा पटिच्च लोमहंसनकरं भयं **उत्तासभयं** नाम।

१. सदेवके लोके—रो०। २. सुपतिट्ठितपादतलता—रो०।

B. 106 तं सब्बं अपनुदिता वूपसमेता। **संविधाता** ति संविदहिता। कथं संविदहति ? अटवियं सासङ्कट्ठानेसु दानसालं कारेत्वा तत्थ आगते भोजेत्वा मनुस्से दत्वा अतिवाहेति, तं ठानं पविसितुं असक्को-न्तानं मनुस्से पेसेत्वा पवेसेति। नगरादीसुपि तेसु तेसु ठानेसु आरक्खं
5 ठपेति, एवं संविदहति। **सपरिवारञ्च दानं अदासी** ति अन्नं पानं ति दसविधं दानवत्थुं।

तत्थ **अन्नं** ति यागुभत्तं। तं ददन्तो न द्वारे ठपेत्वा अदासि, अथ खो अन्तोनिवेसने हरितुपलित्तट्ठाने लाजा चेव पुप्फानि च विकिरित्वा आसनं पञ्ञपेत्वा वितानं बन्धित्वा गन्धधूमादीहि सक्कारं कत्वा
10 भिक्खुसंघं निसीदापेत्वा यागुं अदासि। यागुं देन्तो च सब्यञ्जनं अदासि। यागुपानावसाने पादे धोवित्वा तेलेन मक्खेत्वा नानप्पकारकं अनन्तं[1] खज्जकं[1] दत्वा परियोसाने अनेकसूपं अनेकब्यञ्जनं पणीत-
R. 924 भोजनं अदासि। पानं देन्तो अम्बपानादिअट्ठविधं पानं अदासि, तम्पि यागुभत्तं दत्वा। वत्थं देन्तो न सुद्धवत्थमेव अदासि, एकपट्टदुपट्टा-
15 दिपहोनकं पन दत्वा सुचिम्पि अदासि, सुत्तम्पि अदासि, सुत्तं वट्टेसि[2], सूचिकम्मकरणट्ठाने भिक्खूनं आसनानि, यागुभत्तं, पादमक्खनं, पिट्ठिमक्खनं, रजनं[3], पण्डुपलासं, रजनदोणिकं, अन्तमसो चीवर-रजनकं कप्पियकारकम्पि अदासि।

यानं ति उपाहनं। तं ददन्तोपि[4] उपाहनत्थविकं उपाहनदण्डकं
20 मक्खनतेलं हेट्ठा वुत्तानि च अन्नादीनि तस्सेव परिवारं कत्वा अदासि। **मालं** देन्तोपि न सुद्धमालमेव[5] अदासि, अथ खो नं गन्धेहि मिस्सेत्वा हेट्ठिमानि चत्तारि तस्सेव परिवारं कत्वा अदासि। बोधिचेतिय-आसनपोत्थकादिपूजनत्थाय चेव चेतियघरधूपनत्थाय च **गन्धं** देन्तोपि न सुद्धगन्धमेव अदासि, गन्धपिसनकनिसदाय चेव पक्खिपनकभाजनेन

१-१. अन्तरखज्जं—रो०। २. वड्ढेसि—रो०।
३. रजत—रो०। ४. देन्तो पि—रो०।
५. सुमनमालादि—रो०।

च सद्धिं हेट्ठिमानि पञ्च तस्स परिवारं कत्वा अदासि। चेतियपूजादीनं अत्थाय हरितालमनोसिलाचीनपिट्ठादि **विलेपनं** देन्तोपि न सुद्धविलेपनमेव अदासि, विलेपनभाजनेन सद्धिं हेट्ठिमानि छ तस्स परिवारं कत्वा अदासि। **सेय्या** ति मञ्चपीठं। तं देन्तोपि न सुद्धकमेव अदासि, कोजवकम्बलपच्चत्थरणमञ्चप्पटिपादकेहि सद्धिं अन्तमसो मङ्गुलसोधनदण्डकं[1] हेट्ठिमानि च सत्त तस्स परिवारं कत्वा अदासि। 5

आवसथं देन्तो पि न गेहमत्तमेव अदासि, अथ खो नं मालाकम्मलताकम्मपटिमण्डितं सुपञ्ञत्तं मञ्चपीठं कारेत्वा हेट्ठिमानि अट्ठ तस्स परिवारं कत्वा अदासि। **पदीपेय्यं** ति पदीपतेलं। तं देन्तो चेतियङ्गणे बोधियङ्गने धम्मस्सवनगेहे पोत्थकवाचनट्ठाने इमिना दीपं जालापेथा ति न सुद्धतेलमेव अदासि, वट्टि कपल्लकतेलभाजनादीहि सद्धिं हेट्ठिमानि नव तस्स परिवारं कत्वा अदासि। **सुविभत्तन्तरानी** ति सुविभत्तअन्तरानि। B. 107 10

राजानो ति अभिसित्ता। **भोगिया** ति भोजका **कुमारा** ति राजकुमारा। इध **कम्मं** नाम सपरिवारं दानं। **कम्मसरिक्खकं** नाम सपरिवारं कत्वा दानं अदासी ति इमिना[2] कारणेन सदेवको लोको जानातू ति निब्बत्तं चक्कलक्खणं। **लक्खणं** नाम तदेव चक्कलक्खणं। **आनिसंसो** महापरिवारता। 15 R. 925

८. **तत्थेतं वुच्चती** (दी० नि० ३.११४) ति इमा तदत्थपरिदीपना गाथा वुच्चति। दुविधा हि गाथा होन्ति — तदत्थपरिदीपना च विसेसत्थपरिदीपना च। तत्थ पाळिआगतमेव अत्थं परिदीपना **तदत्थपरिदीपना** नाम। पाळियं अनागतं परिदीपना **विसेसत्थपरिदीपना** नाम। इमा पन तदत्थपरिदीपना। तत्थ **पुरे** ति पुब्बे। **पुरत्था** ति तस्सेव वेवचनं। **पुरिमासु जातीसू** ति इमिस्सा जातिया पुब्बेकतकम्मपटिक्खेपदीपनं। **उब्बेगउत्तासभयापनूदनो** ति उब्बेगभयस्स च उत्तासभयस्स च अपनूदनो। **उस्सुको** ति अधिमुत्तो। 20 25

१. मकुल०—रो०। २. तं—रो०।

सतपुञ्ञलक्खणं ति सतेन सतेन पुञ्ञकम्मेन[1] निब्बत्तं एकेकं लक्खनं। एवं सन्ते यो कोचि बुद्धो भवेय्या ति न रोचयिंसु, अनन्तेसु पन चक्कवाळेसु सब्बे सत्ता एकेकं कम्मं सतक्खत्तुं करेय्युं, एत्तकेहि जनेहि कतं कम्मं बोधिसत्तो एकोव एकेकं सतगुणं कत्वा निब्बत्तो। 5 तस्मा "सतपुञ्ञलक्खणो" ति इममत्थं रोचयिंसु। **मनुस्सासुर-सक्करक्खसा** ति मनुस्सा च असुरा च सक्का[2] च रक्खसा च।

४. आयतपण्हितादितिलक्खणवण्णना

९. अन्तरा (दी० नि० ३.११५) ति पटिसन्धितो सरसचुतिया अन्तरे। इध **कम्मं** नाम पाणातिपाता विरति। **कम्मसरिक्खकं** B. 108 नाम पाणातिपातं करोन्तो पदसद्दसवनभया अग्गपादेहि अक्कमन्ता 10 गन्त्वा परं पातेन्ति[3]। अथ ते इमिना कारणेन तेसं तं कम्मं जनो जानातू ति अन्तवङ्कपादा वा बहिवङ्कपादा वा उक्कुटिकपादा वा अग्गकोण्डा[4] वा पण्हिकोण्डा वा भवन्ति। अग्गपादेहि गन्त्वा परस्स अमारितभावं पन तथागतस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन R. 926 जानातू ति **आयतपण्हि** महापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। तथा परं 15 घातेन्ता उन्नतकायेन गच्छन्ता अञ्ञे पस्सिस्सन्ती ति ओनता गन्त्वा परं घातेन्ति। अथ ते एवमिमे गन्त्वा परं घातयिंसू ति नेसं तं कम्मं इमिना कारणेन परो जानातू ति खुज्जा वा वामना वा पीठसप्पि वा भवन्ति। तथागतस्स पन एवं गन्त्वा परेसं अघातित-भावं इमिना कारणेन सदेवको लोको जानातू ति **ब्रह्मुज्जुगत्त** 20 महापुरिसलक्खण निब्बत्तति। तथा परं घातेन्ता आवुधं वा मुग्गरं वा गण्हित्वा मुट्ठिकतहत्था परं घातेन्ति। ते एवं तेसं परस्स घातितभावं इमिना कारणेन जनो जानातू ति रस्सङ्गुली वा रस्सहत्था वा वङ्कङ्गुली वा फणहत्थका वा भवन्ति। तथागतस्स

१. पुञ्ञकम्मानं—रो०। २. सत्ता—रो०।
३. घातेन्ति—रो०। ४. कोणट्ठा—रो०।

पन एवं परेसं अघातितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति दीघङ्गुलिमहापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। इदमेत्थ **कम्मसरिक्खकं**। इदमेव पन लक्खणतयं **लक्खणं** नाम। दीघायुकभावो **लक्खणानिसंसो**।

५ १०. **मरणवधभयत्तनो** (दी० नि० ३.११६) ति एत्थ मरणसङ्खातो वधो मरणवधो, मरणवधतो भयं **मरणवधभयं**, तं अत्तनो जानित्वा। **पटिविरतो परंमारणाया** ति यथा मय्हं मरणतो भयं मम जीवितं पियं, एवं परेसम्पी ति ञत्वा परं मारणतो पटिविरतो अहोसि। **सुचरितेना** ति सुचिण्णेन। **सग्गमगमा** ति सग्गं गतो। १०

चविय पुनरिधागतो चवित्वा पुन इधागतो। **दीघपासाण्हिको** ति दीघपण्हिको। **ब्रह्मवि सुजू** ति ब्रह्मा विय सुट्ठु उजु।

सुभुजो ति सुन्दरभुजो। **सुसु** ति महल्लककालेपि तरुणरूपो। **सुसण्ठितो** ति सुसण्ठान[1]सम्पन्नो। **मुदुतलुनङ्गुलियस्सा** ति मुदू च तलुना च अङ्गुलियो अस्स मुदुतलुनाङ्गुलि। **तीभी** ति तीहि। १५ **पुरिसवरग्गलक्खणेही** ति पुरिसवरस्स अग्गलक्खणेहि। **चिरयपनाया** ति चिरं यापनाय, दीघायुकभावाय। B. 109

चिरं यपेती ति चिरं यापेति। **चिरतरं पब्बजति यदि ततो** ति ततो चिरतरं यापेति, यदि पब्बजती ति अत्थो। **यापयति च वसिद्धिभावनाया** ति वसिप्पत्तो हुत्वा इद्धिभावनाय यापेति। R. 927 २०

५. सत्तुस्सदतालक्खणवण्णना

११. **रसितानं** ति रससम्पन्नानं। "खादनीयानं" ति आदीसु **खादनीयानि** नाम पिट्ठखज्जकादीनि। **भोजनीयानी** ति पञ्च भोजनानि। **सायनीयानी** ति सायितब्बानि सप्पिनवनीतादीनि।

[1] सण्ठान०—रो०।

लेहनीयानी ति निल्लेहितब्बानि पिट्ठपायासादीनि। **पानानी** ति अट्ठ पानकानि।

इध **कम्मं** नाम कप्पसतसहस्साधिकानि चत्तारि असङ्ख्येय्यानि दिन्नं इदं पणीतभोजनदानं। **कम्मसरिक्खकं** नाम लूखभोजने कुच्छिगते लोहितं सुस्सति, मंसं मिलायति। तस्मा लूखदायका सत्ता इमिना कारणेन नेसं लूखभोजनस्स दिन्नभावं जनो जानातू ति अप्पमंसा अप्पलोहिता मनुस्सपेता विय दुल्लभन्नपाना भवन्ति। पणीतभोजने पन कुच्छिगते मंसलोहितं वड्ढति, परिपुण्णकाया पासादिका अभिरूपदस्सना होन्ति। तस्मा तथागतस्स दीघरत्तं पणीतभोजनदायकत्तं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति सत्तुस्सदमहापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम सत्तुस्सद-लक्खणमेव। पणीतलाभिता आनिसंसो।

१२. **खज्जभोज्जमथलेय्यसायितं** (दी० नि० ३.११७) ति खज्जकञ्च भोजनञ्च लेहनीयञ्च सायनीयञ्च। **उत्तमग्गरसदायको** ति उत्तमो अग्गरसदायको, उत्तमानं वा अग्गरसानं दायको।

सत्त चुस्सदे ति सत्त च उस्सदे। **तदत्थजोतकं** ति खज्जभोज्जादि-जोतकं, तेसं लाभसंवत्तनिकं ति अत्थो। **पब्बजम्पि चा** ति पब्ब-जमानोपि च। **तदाधिगच्छती** ति तं अधिगच्छति। **लाभिरुत्तमं** ति लाभि उत्तमं।

B. 110

६. करचरणादिलक्खणवण्णना

१३. **दानेना** (दी० नि० ३.११८) तिआदीसु एकच्चो दानेनेव सङ्गण्हितब्बो होति, तं दानेन सङ्गहेसि। पब्बजितानं पब्बजित-परिक्खारं, गिहीनं गिहिपरिक्खारं अदासि।

पेय्यवज्जेना ति एकच्चो हि "अयं दातब्बं नाम देति, एकेन पन वचनेन सब्बं मक्खेत्वा नासेति, किं एतस्स दानं" ति वत्ता होति। एकच्चो "अयं किञ्चापि दानं न देति, कथेन्तो पन तेलेन

विय मक्खेति । एसो देतु वा मा वा, वचनमेव तस्स सहस्सं अग्घती'' R. 928
ति वत्ता होति । एवरूपो पुग्गलो दानं न पच्चासिंसति, पियवचनेमेव
पच्चासिंसति । तं पियवचनेन सङ्गहेसि ।

अत्थचरियाया ति अत्थसंवड्ढनकथाय । एकच्चो हि नेव दानं,
न पियवचनं पच्चासिंसति । अत्तनो हितकथं वड्ढितकथमेव पच्चा- 5
सिंसति । एवरूपं पुग्गलं "इदं ते कातब्बं, इदं ते न कातब्बं ।
एवरूपो पुग्गलो सेवितब्बो, एवरूपो पुग्गलो न सेवितब्बो'' ति एवं
अत्थचरियाय सङ्गहेसि ।

समानत्तताया ति समानसुखदुक्खभावेन । एकच्चो हि दानादीसु
एकम्पि न पच्चासिंसति, एकासने निसज्जं[1], एकपल्लङ्के सयनं, 10
एकतो भोजनं ति एवं समानसुखदुक्खतं पच्चासिंसति । तत्थ जातिया
हीनो भोगेन अधिको दुस्सङ्गहो होति । न हि सक्का तेन सद्धिं
एकपरिभोगो कातुं, तथा अकरियमाने च सो कुज्झति । भोगेन
हीनो जातिया अधिकोपि दुस्सङ्गहो होति । सो हि "अहं जातिमा''
ति भोगसम्पन्नेन सद्धिं एकपरिभोगं न[2] इच्छति, तस्मिं अकरियमाने 15
कुज्झति । उभोहिपि हीनो पन सुसङ्गहो होति । न हि सो इतरेन
सद्धिं एकपरिभोगं इच्छति, न अकरियमाने च कुज्झति । उभोहि
सदिसोपि सुसङ्गहोयेव । भिक्खूसु दुस्सीलो दुस्सङ्गहो होति । न हि
सक्का तेन सद्धिं एकपरिभोगो कातुं, तथा अकरियमाने च कुज्झति ।
सीलवा सुसङ्गहो[3] होति । सीलवा हि अदीयमानेपि अकरियमानेपि 20
न कुज्झति । अञ्ञं अत्तना सद्धिं परिभोगं अकरोन्तम्पि न पापकेन B. 111
चित्तेन पस्सति । परिभोगोपि तेन सद्धिं सुकरो होति । तस्मा
एवरूपं पुग्गलं एवं समानत्तताय सङ्गहेसि ।

सुसङ्गहितास्स होन्ती ति सुसङ्गहिता अस्स होन्ति । देतु वा मा
वा देतु, करोतु वा मा वा करोतु, सुसङ्गहिताव होन्ति, न 25

१. निपज्जं—रो० । २. रो० पोत्थके नत्थि ।
३. दुसङ्गहो—रो० ।

भिज्जन्ति। "यदास्स दातब्बं होति, तदा देति। इदानि मञ्ञे नत्थि, तेन न देति। किं मयं ददमानमेव उपट्ठहाम? अदेन्तं अकरोन्तं न उपट्ठहामा" ति एवं चिन्तेन्ति।

इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं कतं दानादिसङ्गहकम्मं। **कम्मसरिक्खकं** नाम यो एवं असङ्गाहको होति, सो इमिना कारणेनस्स असङ्गाहकभावं जनो जानातू ति थद्धहत्थपादो[1] चेव होति, विसमट्ठितावयवलक्खणो[2] च। तथागतस्स पन दीघरत्तं सङ्गाहकभावं सदेवको लोको R. 929 इमिना कारणेन जानातू ति इमानि द्वे लक्खणानि निब्बत्तन्ति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। सुसङ्गहितपरिजनता **आनिसंसो**।

१४. **करिया** (दी० नि० ३·११८) ति करित्वा। **चरिया** ति चरित्वा। **अनवमतेना** ति अनवञ्ञातेन। "अनपमोदेना[3]" तिपि पाठो, न अप्पमोदेन[4], न दीनेन[5] न गब्भितेना ति[6] अत्थो।

चविया ति चवित्वा। **अतिरुचिरं सुवग्गु दस्सनेय्यं** ति अतिरुचिरञ्च सुपासादिकं सुवग्गुं च सुट्ठु छेकं दस्सनेय्यञ्च दट्ठब्बयुत्तं। **सुसुकुमारो** ति सुट्ठु सुकुमारो।

परिजनस्सवो ति परिजनो अस्सवो वचनकरो। **विधेय्यो** ति कत्तब्बाकत्तब्बेसु यथारुचि विधातब्बो। **महिमं** ति महिं इमं। **पियवदू हितसुखतं जिगीसमानो** ति पियवदो हुत्वा हितञ्च सुखञ्च परियेसमानो। **वचनपटिकरस्सा भिप्पसन्ना** ति वचनपटिकरा अस्स अभिप्पसन्ना। **धम्मानुधम्मं** ति धम्मञ्च अनुधम्मञ्च।

B. 112

७. उस्सङ्खपादादिलक्खणवण्णना

१५. **अत्थूपसंहितं** (दी० नि० ३·११९) ति इधलोकपरलोकत्थनिस्सितं। **धम्मूपसंहितं** ति दसकुसलकम्मपथनिस्सितं। **बहुजनं**

१. छद्दहत्थपादो—रो०। २ विसमट्ठितास्सेवलक्खणो—रो०।
३. अनपमदेन—रो०। ४. अपमदेन—रो०।
५. दीतेन—रो०। ६. गब्बितेना ति—रो०।

निदंसेसी ति बहुजनस्स निदंसनकथं कथेसि । **पाणीनं** ति सत्तानं । "अग्गो" तिआदीनि सब्बानि अञ्ञमञ्ञवेवचनानि । इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं भासिता उद्धङ्गमनीया अत्थूपसंहिता वाचा । **कम्म-सरिक्खकं** नाम यो एवरूपं उग्गतवाचं न भासति, सो इमिना[1] कारणेन उग्गतवाचाय अभासनं जनो जानातू ति अधोसङ्खपादो[2] च होति अधोनतलोमो[3] च । तथागतस्स पन दीघरत्तं एवरूपाय उग्गत-वाचाय भासितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन[4] जानातू ति **उस्सङ्खपादलक्खणञ्च उद्धग्गलोमलक्खणञ्च** निब्बत्तति । **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं । उत्तमभावो **आनिसंसो** ।

१६. **एरयं** ति भणन्तो । **बहुजनं निदंसयी** ति बहुजनस्स दस्सेति[5] । **धम्मयागं** ति धम्मदानयञ्ञं ।

उब्भमुप्पतितलोमवा ससो ति सो एस उद्धग्गतलोमवा होति । **पादगण्ठिरहू** ति पादगोप्फका अहेसुं । **साधुसण्ठिता** सुट्ठु सण्ठिता । **मंसलोहिताचिता** ति मंसेन च लोहितेन च आचिता । **तचोत्थता** ति तचेन परियोनद्धा निगुळ्हा । **वजती** ति गच्छति । **अनोमनिक्कमो** ति अनोमविहारो सेट्ठविहारी ।

८. एणिजङ्घलक्खणवण्णना

१७. **सिप्पं वा** (दी० नि० ३.१२०) तिआदीसु सिप्पं नाम द्वे सिप्पानि — हीनञ्च सिप्पं, उक्कट्ठञ्च सिप्पं । हीनं नाम सिप्पं नळकारसिप्पं, कुम्भकारसिप्पं पेसकारसिप्पं नहापितसिप्प । उक्कट्ठं नाम सिप्पं लेखा मुद्दा गणना । **विज्जा** ति अहिविज्जादिअनेकविधा । **चरणं** ति पञ्चसीलं दससीलं पातिमोक्खसंवरसीलं । **कम्मं** ति कम्मस्सकताजाननपञ्ञा । **किलिस्सेय्युं** ति किलमेय्युं । अन्ते-वासिकवत्तं नाम दुक्खं, तं नेसं मा चिरमहोसी ति चिन्तेसि ।

१. ०अस्स—रो० ।
२. अधोगत०—रो० ।
३. अधोगत०—रो० ।
४. लक्खणेन—रो० ।
५. हितं दस्सेसि—रो० ।

राजारहानी ति रञ्ञो अनुरूपानि हत्थिअस्सादीनि, तानियेव रञ्ञो सेनाय अङ्गभूतत्ता[1] **राजङ्गानी** ति वुच्चन्ति। **राजूपभोगानी** ति रञ्ञो उपभोगपरिभोगभण्डानि, तानि चेव सत्तरतनानि च। **राजानुच्छविकानी** ति रञ्ञो अनुच्छविकानि। तेसंयेव सब्बेसं इदं गहणं। **समणारहानी** ति समणानं अनुरूपानि चीवरादीनि। **समणङ्गानी** ति समणानं कोट्ठासभूता चतस्सो परिसा। **समणूपभोगानी** ति समणानं उपभोगपरिक्खारा। **समणानुच्छविकानी** ति तेसंयेव अधिवचनं।

B. 113 · 5

इध पन[2] **कम्मं** नाम दीघरत्तं सक्कच्चं सिप्पादिवाचनं। **कम्मसरिक्खकं** नाम को[3] एवं सक्कच्चं सिप्पं अवाचेन्तो अन्तेवासिके उक्कुटिकासनजङ्घपेसनिकादीहि किलमेति, तस्स जङ्घमंसं लिखित्वा पातितं[4] विय होति। तथागतस्स पन सक्कच्चं वाचितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति अनुपुब्बउग्गतवट्टितं **एणिजङ्घलक्खणं** निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। अनुच्छविकलाभिता **आनिसंसो**।

10 · R. 931 · 15

८. **यदूपघाताया** (दी० नि० ३.१२१) ति यं सिप्पं कस्सचि उपघाताय न होति। **किलिस्सती** ति किलमिस्सति[5]। **सुखुमत्तचोत्थता** ति सुखुमत्तचेव परियोनद्धा। किं पन अञ्ञेन कम्मेन अञ्ञं लक्खणं निब्बत्तती ति? न निब्बतति। यं पन[6] निब्बत्तति, तं अनुब्यञ्जनं होति, तस्मा इध[7] वुत्तं।

20

९. सुखुमच्छविलक्खणवण्णना

१९. **समणं वा** (दी० नि० ३.१२१) ति समितपापट्ठेन समणं। **ब्राह्मणं वा** ति बाहित पापट्ठेन ब्राह्मणं।

१. अग्ग० — रो०।
२. रो० पोत्थके नत्थि।
३. यो — रो०।
४. पातिकं—रो०।
५. किलमति—रो०।
६. न — रो०।
७. इदं — रो०।

महापञ्ञो तिआदीसु महापञ्ञादीहि समन्नागतो होती ति अत्थो। तत्रिदं महापञ्ञादीनं नानत्तं।

तत्थ कतमा **महापञ्ञा**? महन्ते सीलक्खन्धे परिग्गण्हाती ति **महापञ्ञा**, महन्ते समाधिक्खन्धे पञ्ञाक्खन्धे विमुत्तिक्खन्धे विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धे परिग्गण्हाती ति महापञ्ञा। महन्तानि ठानाठानानि[1] महन्ता[2] विहारसमापत्तियो महन्तानि अरियसच्चानि महन्तं सतिपट्ठाने सम्मप्पधाने इद्धिपादे महन्तानि इन्द्रियानि बलानि महन्ते बोज्झङ्गे महन्ते अरियमग्गे महन्तानि सामञ्ञफलानि महन्ता अभिञ्ञायो महन्तं परमत्थं निब्बानं परिग्गण्हाती ति महापञ्ञा।

कतमा **पुथुपञ्ञा**? पुथुनानाखन्धेसु ञाणं पवत्तती ति **पुथुपञ्ञा**। पुथुनानाधातूसु पुथुनानाआयतनेसु पुथुनानापटिच्चसमुप्पादेसु पुथुनानासुञ्ञतमनुपलब्भेसु पुथुनानाअत्थेसु धम्मेसु निरुत्तीसु पटिभानेसु। पुथुनानासीलक्खन्धेसु पुथुनानासमाधिपञ्ञाविमुत्तिविमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धेसु पुथुनानाठानाठानेसु पुथुनानाविहारसमापत्तीसु पुथुनानाअरियसच्चेसु पुथुनानासतिपट्ठानेसु सम्मप्पधानेसु इद्धिपादेसु इन्द्रियेसु बलेसु बोज्झङ्गेसु पुथुनानाअरियमग्गेसु सामञ्ञफलेसु अभिञ्ञासु पुथुज्जनसाधारणे धम्मे समतिक्कम्म परमत्थे निब्बाने ञाणं पवत्तती ति **पुथुपञ्ञा**।

कतमा **हासपञ्ञा**? इधेकच्चो हासुबहुलो वेदबहुलो तुट्ठिबहुलो पामोज्जबहुलो सीलं परिपुरेति इन्द्रियसंवरं परिपूरेति भोजने मत्तञ्ञुतं जागरियानुयोगं सीलक्खन्धं समाधिक्खन्धं पञ्ञाक्खन्धं विमुत्तिक्खन्धं विमुत्तिञाणदस्सनक्खन्धं परिपूरेती ति हासपञ्ञा। हासबहुलो ...पे०...पामोज्जबहुलो ठानाठानं पटिविज्झती ति हासपञ्ञा। हासबहुलो विहारसमापत्तियो परिपूरेती ति हासपञ्ञा। हासबहुलो अरियसच्चानि पटिविज्झती ति हासपञ्ञा। सतिपट्ठाने सम्मप्पधाने

5 10 B. 114 15 20 R. 932

१. ठानानि—रो०। २. महा—रो०।

इद्धिपादे इन्द्रियानि बलानि बोज्झङ्गे अरियमग्गं भावेती ति हास-पञ्ञा। हासबहुलो सामञ्ञफलानि सच्छिकरोती ति हासपञ्ञा। अभिञ्ञायो पटिविज्झती ति हासपञ्ञा। हासबहुलो वेदतुट्ठिपामोज्ज-बहुलो परमत्थं निब्बानं सच्छिकरोती ति हासपञ्ञा।

5 कतमा जवनपञ्ञा? यंकिञ्चि रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं यं दूरे सन्तिके वा, सब्बं तं[1] रूपं अनिच्चतो खिप्पं जवती ति जवनपञ्ञा। दुक्खतो खिप्पं अनत्ततो खिप्पं जवती ति जवनपञ्ञा। या काचि वेदना...पे०...यंकिञ्चि विञ्ञाणं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं, सब्ब तं विञ्ञाणं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो खिप्पं जवती ति जवनपञ्ञा। 10 चक्खु...पे०...जरामरणं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो खिप्पं जवती ति जवनपञ्ञा। रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अनिच्चं खयट्ठेन दुक्खं भयट्ठेन अनत्ता असारकट्ठेनाति तुलयित्वा तीरयित्वा विभावयित्वा विभूतं कत्वा रूपनिरोधे निब्बाने खिप्पं जवती ति जवनपञ्ञा। वेदना सञ्ञा सङ्खारा विञ्ञाणं चक्खु 15 ...पे०...जरामरणं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अनिच्चं खयट्ठेन...पे०... विभूतं कत्वा जरामरणनिरोधे निब्बाने खिप्पं जवती ति जवनपञ्ञा। B. 115 रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं। चक्खु ... पे० ... जरामरणं अनिच्चं सङ्खतं पटिच्चसमुप्पन्नं खयधम्मं वयधम्मं विरागधम्मं निरोधधम्मं ति तुलयित्वा तीरयित्वा विभावयित्वा विभूतं कत्वा जरामरणनिरोधे 20 निब्बाने खिप्पं जवती ति जवनपञ्ञा।

कतमा तिक्खपञ्ञा। खिप्पं किलेसे छिन्दती ति तिक्खपञ्ञा। उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेति, उप्पन्नं ब्यापादवितक्कं, उप्पन्नं विहिंसावितक्कं, उप्पन्नुप्पन्ने पापके अकुसले धम्मे उप्पन्नं रागं दोसं मोहं कोधं उपनाहं मक्खं पळासं इस्सं मच्छरियं मायं साठेय्यं थम्भं R. 933 25 सारम्भं मानं अतिमानं[2] मदं पमादं सब्बे किलेसे सब्बे दुच्चरिते सब्बे अभिसङ्खारे सब्बे भवगामिकम्मे नाधिवासेति पजहति विनोदेति

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. रो० पोत्थके नत्थि।

बयन्ती करोति अनभावं गमेती ति तिक्खपञ्ञा। एकस्मिं आसने चत्तारो अरियमग्गा चत्तारि सामञ्ञफलानि चतस्सो पटिसम्भिदायो छ अभिञ्ञायो अधिगता होन्ति सच्छिकता फस्सिता पञ्ञायाति तिक्खपञ्ञा।

कतमा निब्बेधिकपञ्ञा। इधेकच्चो सब्बसङ्खारेसु उब्बेगबहुलो 5 होति उत्तासबहुलो उक्कण्ठनबहुलो अरतिबहुलो[1] अनभिरतिबहुलो बहिमुखो न रमति सब्बसङ्खारेसु, अनिब्बिद्धपुब्बं अपदालितपुब्बं लोभक्खन्धं निब्बिज्झति पदालेती ति निब्बेधिकपञ्ञा। अनिब्बिद्धपुब्बं अपदालितपुब्बं दोसक्खन्धं मोहक्खन्धं कोधं उपनाहं... पे० ... सब्बे भवगामिकम्मे निब्बिज्झति पदालेती ति निब्बेधिकपञ्ञा 10 (पटि० ४५१) ति।

२०. **पब्बजितं उपासिता** (दी० नि० ३.१२२) ति पण्डितं पब्बजितं उपसङ्कमित्वा पयिरुपासिता। **अत्थन्तरो** ति यथा एके रन्धगवेसिनो उपारम्भचित्तताय दोसं अब्भन्तरं करित्वा निसामयन्ति, एवं अनिसामेत्वा अत्थं अब्भन्तरं कत्वा अत्थयुत्तं कथं निसामयि 15 उपधारयि।

पटिलाभगतेना ति पटिलाभत्थाय गतेन। **उप्पादनिमित्तकोविदा** ति उप्पादे च निमित्ते च छेका। **अवेच्च दक्खिती** ति ञत्वा पस्सिस्सति।

अत्थानुसिट्ठीसु परिग्गहेसु चा ति ये अत्थानुसासनेसु परिग्गहा 20 अत्थानत्थं परिग्गाहकानि ञाणानि, तेसूति अत्थो।

१०. सुवण्णवण्णलक्खणवण्णना B. 116

२१. **अक्कोधनो** (दी० नि० ३.१२३) ति न अनागामिमग्गेन कोधस्स पहीनत्ता, अथ[2] खो सचेपि मे कोधो उप्पज्जेय्य, खिप्पमेव

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. तत्थ—रो०।

नं पटिविनोदेय्यं ति एवं अक्कोधवसिकत्ता[१]। **नाभिसज्जी** ति कुटिल-
कण्टको विय तत्थ तत्थ मम्मं[२] तुदन्तो विय न लग्गि। **न कुप्पि न
ब्यापज्जी** तिआदीसु पुब्बुप्पत्तिको **कोपो**। ततो बलवतरो **ब्यापादो**।
ततो बलवतरा **पतित्थियना**। तं सब्बं अकरोन्तो न कुप्पि न
5 ब्यापज्जि न पतित्थियि। **अप्पच्चयं** ति दोमनस्सं। **न पात्वाकासी** ति
न कायविकारेन वा वचीविकारेन वा पाकटमकासि।

R. 934 इध कम्मं नाम दीघरत्तं अक्कोधनता चेव सुखुमत्थरणादिदानञ्च।
कम्मसरिक्खकं नाम कोधनस्स छविवण्णो आविलो होति मुखं दुद्दसियं
वत्थच्छादनसदिसञ्च मण्डनं नाम नत्थि। तस्मा यो कोधनो चेव
10 वत्थच्छादनानञ्च अदाता, सो इमिना कारणेनस्सजनो कोधनादिभावं
जानातू ति दुब्बण्णो होति दुस्सण्ठानो। अक्कोधनस्स पन मुखं विरोचति,
छविवण्णो विप्पसीदति। सत्ता हि चतूहि कारणेहि पासादिका होन्ति
आमिसदानेन वा वत्थदानेन वा सम्मज्जनेन वा अक्कोधनताय वा।
इमानि चत्तारिपि कारणानि दीघरत्तं तथागतेन कतानेव। तेनस्स
15 इमेसं कतभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति सुवण्णवण्णं
महापुरिसलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं।
सुखुमत्थरणादिलाभिता **आनिसंसो**।

२२. **अभिविस्सजी** ति अभिविस्सज्जेसि। **महिमिव सुरो
अभिवस्स** ति सुरो वुच्चति देवो, महापथविं अभिवस्सन्तो देवो
20 विय। **सुरवरतरोरिव इन्दो** ति सुरानं वरतरो इन्दो विय। **अपब्बज्ज-
मिच्छं** ति अपब्बज्जं गिहिभावं इच्छन्तो। **महतिमहिं** ति महन्ति
पथविं।

अच्छादनवत्थमोक्खपापुरणानं ति अच्छादनानञ्चेव वत्थानञ्च
उत्तमपापुरणानञ्च। **पनासो** ति विनासो।

१. ०वसिकतं—रो०। २. चम्मं—रो०।

११. कोसोहितवत्थगुय्हलक्खणवण्णना

B. 117

२३. **मातरम्पि पुत्तेन समानेता अहोसी** (दी० नि० ३.१२४) ति इमं कम्मं रज्जे पतिट्ठितेन[1] सक्का कातुं। तस्मा बोधिसत्तोपि रज्जं कारयमानो अन्तोनगरे चतुक्कादीसु चतूसु नगरद्वारेसु बहिनगरे चतूसु दिसासु इमं कम्मं करोथा ति मनुस्से ठपेसि। ते मातरं कुहिं मे पुत्तो पुत्तं न पस्सामी ति विलपन्तिं परियेसमानं दिस्वा एहि, 5 अम्म, पुत्तं दक्खसी ति तं आदाय गन्त्वा नहापेत्वा भोजेत्वा पुत्तमस्सा परियेसित्वा दस्सेन्ति। एस नयो सब्बत्थ।

इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं ञातीनं समङ्गिभावकरणं। **कम्मसरिक्खकं** नाम ञातयो हि समङ्गीभूता अञ्ञमञ्ञस्स वज्जं पटिच्छादेन्ति। किञ्चापि हि ते कलहकाले कलहं करोन्ति, एकस्स पन 10 दोसे उप्पन्ने अञ्ञं जानापेतुं न इच्छन्ति। अयं नाम एतस्स दोसो ति वुत्ते सब्बे उट्ठहित्वा केन दिट्ठं केन सुतं, अम्हाकं ञातीसु एवरूपं कत्ता R. 935 नाम नत्थी ति। तथागतेन च तं[2] ञातिसङ्गहं करोन्तेन दीघरत्तं इदं पज्जप्पटिच्छादनकम्मं नाम कतं होति। अथस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन एवरूपस्स कम्मस्स कतभावं जानातू ति कोसोहित- 15 वत्थगुय्हलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। पहूतपुत्तता आनिसंसो।

२४. **वत्थछादियं** ति वत्थेन छादेतब्बं वत्थगुय्हं। **अमित्ततापना** ति अमित्तानं पतापना। **गिहिस्स पीतिं जनना** ति गिहिभूतस्स सतो पीतिजनना। 20

१२. परिमण्डलादिलक्खणवण्णना

२५. **समं जानाती** ति "अयं तारुक्खसमो अयं पोक्खरसातिसमो" ति एवं तेन तेन समं जानाति। **सामं जानाती** ति सयं जानाति। **पुरिसं जानाती** ति "अयं सेट्ठसम्मतो" ति पुरिसं

१. ठितेन—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

जानाति। **पुरिसविसेसं जानाती** ति मुग्गं मासेन समंअकत्वा गुणविसिट्ठस्स विसेसं जानाति। **अयमिदमरहती** ति अयं पुरिसो

B. 118 इदं नाम दानसक्कारं[1] अरहति। **पुरिसविसेसकरो अहोसी** ति पुरिसविसेसं ञत्वा कारको अहोसि। यो यं अरहति, तस्सेव तं

5 अदासि। यो हि कहापणारहस्स अत्थं देति, सो परस्स अत्थं नासेति। यो द्वे कहापणे देति, सो अत्तनो कहापणं नासेति। तस्मा इदं उभयम्पि अकत्वा यो यं अरहति, तस्स तदेव अदासि। **सद्धाधनं** तिआदीसु सम्पत्तिपटिलाभट्ठेन सद्धादीनं धनभावो वेदितब्बो।

इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं पुरिसविसेसं ञत्वा कतं सङ्गहकम्मं।

10 **कम्मसरिक्खकं** नाम तदस्स कम्मं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति इमानि द्वे लक्खणानि निब्बत्तन्ति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। धनसम्पत्ति **आनिसंसो**।

२६. **तुलिया** (दी० नि० ३.१२६) ति तुलयित्वा। **पटिविचया** ति पटिविचिनित्वा। **महाजनङ्गाहकं** ति महाजनसङ्गहणं।

R. 936 15 **समेक्खमानो** ति समं पेक्खमानो। **अतिनिपुणा मनुजा** नि अतिनिपुणा सुखुमपञ्ञा लक्खणपाठकमनुस्सा। **बहुविविधा गिहीनं अरहानी** ति बहू विविधानि गिहीनं अनुच्छविकानि पटिलभति। **दहरो सुसु कुमारो** "अयं दहरो कुमारो पटिलभिस्सती" ति **ब्याकंसु महीपतिस्सा** ति रञ्ञो।

१३. सीहपुब्बद्धकायादिलक्खणवण्णना

20 २७. **योगक्खेमकामो** ति योगतो खेमकामो। **पञ्ञाया** ति कम्मस्सकतपञ्ञाय। इध **कम्मं** नाम महाजनस्स अत्थकामता। **कम्मसरिक्खकं** नाम तं महाजनस्स अत्थकामताय वड्ढिमेव पच्चासिं-सितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति इमानि समन्तपरिपूरानि अपरिहीनानि तीणि लक्खणानि निब्बत्तन्ति।

१. दानमानं—रो०।

लक्खणं नाम इदमेव लक्खणत्तयं। धनादीहि चेव सद्धादीहि च अपरिहानि आनिसंसो।

२८. **सद्धाया** (दी० नि० ३.१२७) ति ओकप्पनसद्धाय पसादसद्धाय। **सीलेना** ति पञ्चसीलेन दससीलेन। **सुतेना** ति परियत्तिसवनेन। **बुद्धिया** ति एतेसं बुद्धिया, "किन्ति एतेहि वड्ढेय्युं" ति 5 B. 119 एवं चिन्तेसी ति अत्थो। **धम्मेना** ति लोकियधम्मेन। **बहूहि साधूही** ति अञ्ञेहिपि बहूहि उत्तमगुणेहि। **असहानधम्मतं** ति अपरिहीनधम्मं।

१४. रसग्गसग्गितालक्खणवण्णना

२९. **समाभिवाहिनियो** (दी० नि० ३.१२८) ति यथा तिलफलमत्तम्पि जिव्हग्गे सब्बत्थ फरति, एवं समा हुत्वा वहन्ति। 10 इध **कम्मं** नाम अविहेठनकम्मं। **कम्मसरिक्खकं** नाम पाणिआदीहि पहारं लद्धस्स तत्थ तत्थ लोहितं सण्ठाति, गण्ठि गण्ठि हुत्वा अन्तोव पुब्बं गण्हाति, अन्तोव भिज्जति, एवं सो बहुरोगो होति। तथागतेन पन दीघरत्तं इमं आरोग्यकरणकम्मं कतं। तदस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति आरोग्यकरं रसग्गसग्गिलक्खणं 15 निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणं। अप्पाबाधता **आनिसंसो**।

३०. **मरणवधेना** (दी० नि० ३.१२८) ति "एतं मारेथ एतं घातेथा" ति आणत्तेन मरणवधेन। **उब्बाधनाया** ति बन्धनागारप्पवेसनेन। R. 937 **पजसा** ति उजुका।

१५. अभिनीलनेत्तादिलक्खणवण्णना

३१. **न च विसटं** (दी० नि० ३.१२९) ति कक्कटको विय 20 अक्खीनि नीहरित्वा न कोधवसेन पेक्खिता अहोसि। **न च विसाची** ति वङ्कक्खिकोटिया पेक्खितापि नाहोसि। **न च पन विचेय्य पेक्खिता** ति विचेय्य पेक्खिता नाम यो कुज्झित्वा यदा नं परो ओलोकेति, तदा निम्मीलेति न ओलोकेति, पुन गच्छन्तं कुज्झित्वा ओलोकेति,

एवरूपो नाहोसि। "विनेय्यपेक्खिता" तिपि पाठो, अयमेवत्थो। उजुं तथा पसटमुजुमनो ति उजुमनो हुत्वा उजु पेक्खिता होति, यथा च उजुं, तथा पसटं विपुलं वित्थतं पेक्खिता होति। पियदस्सनो ति पियायमानेहि पस्सितब्बो।

5 इध कम्मं नाम दीवरत्तं महाजनस्स पियचक्खुना ओलोकनकम्मं। कम्मसरिक्खकं नाम कुज्झित्वा ओलोकेन्तो काणो विय काकक्खि विय होति, वङ्कक्खि पन आविलक्खि च होतियेव। पसन्नचित्तस्स पन B. 120 ओलोकयतो अक्खीनं पञ्चवण्णो पसादो पञ्ञायति। तथागतो च तथा ओलोकेसि। अथस्स तं दीवरत्तं पियचक्खुना ओलोकितभावं 10 सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति इमानि नेत्तसम्पत्तिकरानि द्वे महापुरिसलक्खणानि निब्बत्तन्ति। लक्खणं नाम इदमेव लक्खण-द्वयं। पियदस्सनता आनिसंसो। अभियोगिनो ति लक्खणसत्थे युत्ता।

१६. उण्हीससीसलक्खणवण्णना

३३. बहुजनपुब्बङ्गमो अहोसी (दी० नि० ३·१३०) ति बहु-15 जनस्स पुब्बङ्गमो अहोसि गणजेट्ठको। तस्स दिट्ठानुगतिं अञ्ञे आपज्जिंसु। इध कम्मं नाम पुब्बङ्गमता। कम्मसरिक्खकं नाम यो पुब्बङ्गमो हुत्वा दानादीनि कुसलकम्मानि करोति, सो अमङ्कुभुतो सीसं उक्खिपित्वा पीतिपामोज्जेन परिपुण्णसीसो विचरति, महापुरिसो च होति। तथागतो च तथा अकासि। अथस्स सदेवको लोको इमिना 20 कारणेन इदं पुब्बङ्गमकम्मं जानातू ति उण्हीससीसलक्खणं निब्बत्तति। लक्खणं नाम इदमेव लक्खणं। महाजनानुवत्तनता[1] आनिसंसो।

३४. बहुजनं हेस्सती ति बहुजनस्स भविस्सति। पटिभोगिया R. 938 (दी० नि० ३·१३१) ति वेय्यावच्चकरा, एतस्स बहू वेय्यावच्चकरा भविस्सन्ती ति अत्थो। अभिहरन्ति तदाहि दहरकालेयेव तदा एवं 25 ब्याकरोन्ति। पटिहारकं ति वेय्यावच्चकरभावं। चिणवसी ति चिण्णवसी।

१. महापरिवारता—रो०।

१७. एकेकलोमतादिलक्खणवण्णना

३५. **उपवत्तती** ति अज्झासयं अनुवत्तति, इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं सच्चकथनं। **कम्मसरिक्खकं** नाम दीघरत्तं अद्वेज्झकथाय परिसुद्धकथाय कथितभावमस्स सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति एकेक-लोमलक्खणञ्च उण्णालक्खणञ्च निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। महाजनस्स अज्झासयानुकूलेन अनुवत्तनता **आनिसंसो**। 5
एकेकलोमूपचितङ्गवा ति एकेकेहि लोमेहि उपचितसरीरो।

१८. चत्तालीसादिलक्खणवण्णना

B. 121

३७. **अभेज्जपरिसो** (दी० नि० ३.१३२) ति अभिन्दितब्ब-परिसो। इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं अपिसुणवाचाय कथनं। **कम्म-सरिक्खकं** नाम पिसुणवाचस्स किर समग्गभावं भिन्दनतो दन्ता अपरि-पुण्णा चेव होन्ति विरळा[1] च। तथागतस्स पन दीघरत्तं अपिसुणवाचतं 10
सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति इदं लक्खणद्वयं निब्बत्तति[2]। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। अभेज्जपरिसता **आनिसंसो**। **चतुरो दसा** ति चत्तारो दस चत्तालीसं।

१९. पहूतजिव्हादिलक्खणवण्णना

३९. **आदेय्यवाचो होती** (दी० नि० ३.१३३) ति गहेतब्ब-वचनो होति। इध **कम्मं** नाम दीघरत्तं अफरुसवादिता। **कम्मसरिक्खकं** 15
नाम ये फरुसवाचा होन्ति, ते इमिना कारणेन नेसं जिव्हं परिवत्तेत्वा परिवत्तेत्वा फरुसवाचाय कथितभावं जनो जानातू ति बद्धजिव्हा वा होन्ति, गूळ्हजिव्हा वा द्विजिव्हा वा मम्मना वा। ये पन जिव्हं परिवत्तेत्वा परिवत्तेत्वा फरुसवाचं न वदन्ति, ते बद्धजिव्हा गूळ्ह-जिव्हा द्विजिव्हा न होन्ति। मुदु नेसं जिव्हा होति रत्तकम्बलवण्णा। 20
तस्मा तथागतस्स दीघरत्तं जिव्हं परिवत्तेत्वा फरुसाय वाचाय

१. विरत च—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

अकथितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति पहूतजिव्हा-
लक्खणं निब्बत्तति। फरुसवाचं कथेन्तानञ्च सद्दो भिज्जति। ते सद्दभेदं
R. 939 कत्वा फरुसवाचाय कथितभावं जनो जानातू ति छिन्नस्सरा वा होन्ति
भिन्नस्सरा वा काकस्सरा वा। ये पन सरभेदकरं फरुसवाचं न
5 कथेन्ति, तेसं सद्दो मधुरो च होति पेमनीयो। तस्मा तथागतस्स
दीघरत्तं सरभेदकराय फरुसवाचाय अकथितभावं सदेवको लोको
इमिना कारणेन जानातू ति ब्रह्मस्सरलक्खणं निब्बत्तति। लक्खणं
नाम इदमेव लक्खणद्वयं। आदेय्यवचनता आनिसंसो।

४०. **उब्बाधिकं** (दी० नि० ३.१३४) ति अक्कोसयुत्तत्ता
10 आबाधकरिं **बहुजनप्पमद्दनं** ति बहुजनानं पमद्दनिं **अबाळ्हं गिरं सो
न भणि फरुसं** ति एत्थ अकारो परतो भणिसद्देन योजेतब्बो। **बाळ्हं**
ति बलवं अतिफरुसं। **बाळ्हं गिरं सो न अभणी** ति अयमेत्थ
B. 122 अत्थो। **सुसंहितं** ति सुट्ठु पेमसञ्हितं। **सखिलं** ति मुदुकं। **वाचा**
ति वाचायो। **कण्णसुखा** ति कण्णसुखायो। "कण्णसुखं" तिपि
15 पाठो, यथा कण्णानं सुखं होति, एवं एरयती ति अत्थो। **वेदयथा**
ति वेदयित्थ। **ब्रह्मस्सरत्तं** ति ब्रह्मस्सरतं। **बहुनो बहुं** ति बहुजनस्स
बहुं। "बहूनं बहुं ति" पि पाठो, बहुजनानं बहुं ति अत्थो।

२०. सीहहनुलक्खणवण्णना

४१. **अप्पधंसिको होती** (दी० नि० ३.१३५) ति गुणतो वा
ठानतो वा पधंसेतुं चावेतुं असक्कुणेय्यो। इध **कम्मं** नाम पलाप-
20 कथाय अकथनं। **कम्मसरिक्खकं** नाम ये तं कथेन्ति, ते इमिना
कारणेन नेसं हनुकं चालेत्वा चालेत्वा पलापकथाय कथितभावं जनो
जानातू ति अन्तोपविट्ठहनुका वा वङ्कहनुका वा पब्भारहनुका वा
होन्ति। तथागतो पन तथा न कथेसि। तेनस्स हनुकं चालेत्वा
चालेत्वा दीघरत्तं पलापकथाय अकथितभावं सदेवको लोको इमिना
25 कारणेन जानातू ति सीहहनुलक्खणं निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव
लक्खणं। अप्पधंसिकता **आनिसंसो**।

४२. **अविकिण्णवचनब्यप्पथो चाति** अविकिण्णवचनानं विय पुरिमबोधिसत्तानं वचनपथो अस्सा ति अविकिण्णवचनब्यप्पथो। **द्विदुगमवरतरहनुत्तमलत्था** ति द्वीहि द्वीहि गच्छती ति द्विदुगमो, द्वीहि द्वीहि ति चतूहि, चतुप्पदानं वरतरस्स सीहस्सेव हनुभावं अलत्थाति अत्थो। **मनुजाधिपती** ति मनुजानं अधिपति। **तथत्तो** ति तथसभावो। R. 940 5

२१. समदन्तादिलक्खणवण्णना

४३. **सुचिपरिवारो** (दी० नि० ३.१३६) ति परिसुद्धपरिवारो। इध **कम्मं** नाम सम्माजीवता। **कम्मसरिक्खकं** नाम यो विसमेन संकिलिट्ठाजीवेन जीवितं कप्पेति, तस्स दन्तापि विसमा होन्ति दाठापि किलिट्ठा। तथागतस्स पन समेन सुद्धाजीवेन जीवितं कप्पितभावं सदेवको लोको इमिना कारणेन जानातू ति समदन्तलक्खणञ्च सुसुक्कदाठालक्खणञ्च निब्बत्तति। **लक्खणं** नाम इदमेव लक्खणद्वयं। सुचिपरिवारता **आनिसंसो**। 10

४४. **अवस्सजी** (दी० नि० ३.१३७) ति पहासि **तिदिवपुरवरसमो** ति तिदिवपुरवरेन सक्केन समो। **लपनजं** ति मुखजं, दन्तं ति अत्थो। **दिजसमसुक्कसुचिसोभनदन्तो** ति द्वे वारे जातत्ता दिजनामका सुक्का सुचि सोभना च दन्ता अस्सा ति दिजसमसुक्कसुचिसोभनदन्तो। **न च जनपदतुदनं** ति यो तस्स चक्कवाळपरिच्छिन्नो जनपदो, तस्स अञ्ञेन तुदनं पीळा वा आबाधो वा नत्थि। **हितमपि च बहुजन-सुखञ्च चरन्ती** ति बहुजनाय मानसुखदुक्खा हुत्वा तस्मिं जनपदे अञ्ञमञ्ञस्स हितञ्चेव सुखञ्च चरन्ति। **विपापो** ति विगतपापो। **विगतदरथकिलमथो** ति विगतकायिकदरथकिलमथो। **मलखिलकलिकिलेसे पनुदेहो** ति रागादिमलानञ्चेव रागादिखिलानञ्च दोसकलीनञ्च सब्बकिलेसानञ्च अपनुदेहि। सेसं सब्बत्थ उत्तानत्थमेवा ति। B. 123 15 20

लक्खणसुत्तवण्णना निट्ठिता।

(८) सिङ्गालसुत्तवण्णना

B. 124
R. 941

१. निदानवण्णना

१. एवं मे सुतं (दी० नि० ३.१३९) ति सिङ्गालसुत्तं। तत्रायमनुत्तानपदपदवण्णना। वेळुवने कलन्दकनिवापे ति वेळुवनं ति तस्स उय्यानस्स नामं। तं किर वेळूहि परिक्खित्तं अहोसि अट्ठारसहत्थेन च पाकारेन गोपुरट्टालकयुत्तं नीलोभासं मनोरमं, तेन वेळुवनं ति वुच्चति। 5 कलन्दकानञ्चेत्थ निवापं अदंसु, तेन कलन्दकनिवापो ति वुच्चति।

पुब्बे किर अञ्ञतरो राजा तत्थ उय्यानकीळनत्थं आगतो सुरामदेन मत्तो दिवा निद्दं ओक्कमि। परिजनोपिस्स "सुत्तो राजा" ति पुप्फफलादीहि पलोभियमानो इतो चितो च पक्कामि। अथ सुरागन्धेन अञ्ञतरस्मा सुसिररुक्खा कण्हसप्पो निक्खमित्वा रञ्ञो अभिमुखो 10 आगच्छति। तं दिस्वा रुक्खदेवता "रञ्ञो जीवितं दम्मी" ति काळकवेसेन आगन्त्वा कण्णमूले सद्दमकासि। राजा पटिबुज्झि। कण्हसप्पो निवत्तो। सो तं दिस्वा "इमाय काळकाय मम जीवितं दिन्नं" ति काळकानं तत्थ निवापं पट्ठपेसि, अभयघोसञ्च घोसापेसि। तस्मा तं ततो पभुति "कलन्दकनिवापो" ति सङ्ख्यं गतं। कलन्दका 15 ति हि काळकानं एतं नामं।

तेन खो पन समयेना ति यस्मिं समये भगवा राजगहं गोचरगामं कत्वा वेळुवने कलन्दकनिवापे विहरति, तेन समयेन। सिङ्गालको गहपतिपुत्तो ति सिङ्गालको ति तस्स नामं। गहपतिपुत्तो ति गहपतिस्स पुत्तो गहपतिपुत्तो। तस्स किर पिता गहपतिमहासालो, R. 942 20 निदहित्वा ठपिता चस्स गेहे चत्तालीस धनकोटियो अत्थि। सो भगवति निट्ठङ्गतो उपासको सोतापन्नो, भरियापिस्स सोतापन्नायेव। पुत्तो पनस्स अस्सद्धो अप्पसन्नो। अथ नं मातापितरो अभिक्खणं एवं ओवदन्ति "तात सत्थारं उपसङ्कम, धम्मसेनापतिं महामोग्गल्लानं

महाकस्सपं असीतिमहासावके उपसङ्कमा" ति। सो एवमाह "नत्थि मम तुम्हाकं समणानं उपसङ्कमनकिच्चं, समणानं सन्तिकं गन्त्वा वन्दितब्बं होति, ओनमित्वा वन्दन्तस्स पिट्ठि रुज्जति, जाणुकानि खरानि होन्ति, भूमियं निसीदितब्बं होति, तत्थ निसिन्नस्स वत्थानि B. 125 किलिस्सन्ति जीरन्ति, समीपे निसिन्नकालतो पट्ठाय कथासल्लापो 5 होति, तस्मिं सति विस्सासो उप्पज्जति, ततो निमन्तेत्वा चीवरपिण्डपातादीनि दातब्बानि होन्ति। एवं सन्ते अत्थो परिहायति, नत्थि मय्हं तुम्हाकं समणानं उपसङ्कमनकिच्चं" ति। इति नं यावजीवं ओवदन्तापि मातापितरो सासने उपनेतुं नासक्खिंसु।

अथस्स पिता मरणमञ्चे निपन्नो "मम पुत्तस्स ओवादं दातुं 10 वट्टती" ति चिन्तेत्वा पुन चिन्तेसि—"दिसा तात नमस्साही" ति एवमस्स ओवादं दस्सामि, सो अत्थं अजानन्तो दिसा नमस्सिस्सति। अथ नं सत्था वा सावका वा पस्सित्वा "किं करोसी" ति पुच्छिस्सन्ति। ततो "मय्हं पिता दिसा नमस्सनं करोही ति मं ओवदी" ति वक्खति। अथस्स ते "न तुय्हं पिता एता दिसा नमस्सा- 15 पेति, इमा पन दिसा नमस्सापेती" ति धम्मं देसेस्सन्ति। सो बुद्धसासने गुणं ञत्वा 'पुञ्ञकम्मं करिस्सती" ति। अथ नं आमन्तापेत्वा "तात, पातोव उट्ठाय छ दिसा नमस्सेय्यासी" ति आह। मरणमञ्चे निपन्नस्स कथा नाम यावजीवं अनुस्सरणीया होति। तस्मा सो गहपतिपुत्तो तं पितुवचनं अनुस्सरन्तो तथा 20 अकासि। तस्मा "कालस्सेव वुट्ठाय राजगहा निक्खमित्वा" तिआदि वुत्तं।

२. पुथुदिसा ति बहुदिसा। इदानि ता दस्सेन्तो पुरत्थिमं दिसं तिआदिमाह। पाविसी ति न ताव पविट्ठो, पविसिस्सामी ति निक्खन्तत्ता पन अन्तरामग्गे वत्तमानोपि एवं वुच्चति। अद्दसा खो 25 भगवा ति न इदानेव अद्दस, पच्चूससमयेपि बुद्धचक्खुना लोकं ओलोकेन्तो एतं दिसा नमस्समानं दिस्वा "अज्ज अहं सिङ्गालस्स

गहपतिपुत्तस्स गिहिविनयं सिङ्गालसुत्तन्तं[1] कथेस्सामि, महाजनस्स
R. 943 सा कथा सफला भविस्सति, गन्तब्बं मया एत्था" ति। तस्मा पातोव
निक्खमित्वा राजगहं पिण्डाय पाविसि, पविसन्तो च नं तथेव अद्दस।
तेन वुत्तं "अद्दसा खो भगवा" ति। एतदवोचा ति सो किर अविदूरे
5 ठितम्पि सत्थारं न पस्सति, दिसायेव नमस्सति। अथ नं भगवा
सूरियरस्मिसम्पस्सेन विकसमानं महापदुमं विय मुखं विवरित्वा
"किं नु खो त्वं, गहपतिपुत्ता", तिआदिकं एतदवोच।

B. 126

२. छद्दिसादिवण्णना

३. **यथा कथं पन भन्ते** ति सो किर तं भगवतो वचनं सुत्वाव
चिन्तेसि "या किर मम पितरा छ दिसा नमस्सितब्बा" ति वुत्ता,
10 न किर ता एता, सञ्ञा किर अरियसावकेन छ दिसा नमस्सितब्बा।
हन्दाहं अरियसावकेन नमस्सितब्बा दिसायेव पुच्छित्वा नमस्सामी
ति। सो ता पुच्छन्तो **यथा कथं पन भन्ते** तिआदिमाह। तत्थ **यथा**
ति निपातमत्तं। **कथं पना** ति इदमेव पुच्छापदं। **कम्मकिलेसा** ति
तेहि कम्मेहि सत्ता किलिस्सन्ति, तस्मा कम्मकिलेसा ति वुच्चन्ति।
15 **ठानेही** ति कारणेहि। **अपायमुखानी** ति विनासमुखानि। **सो** ति
सो सोतापन्नो अरियसावको। **चुद्दस पापकापगतो** ति एतेहि चुद्दसहि
पापकेहि लामकेहि अपगतो। **छद्दिसापटिच्छादी** ति छ दिसा
पटिच्छादेन्तो। **उभोलोकविजयाया** ति उभिन्नं इधलोकपरलोकानं
विजिननत्थाय। **अयञ्चेव लोको आरद्धो होती** ति एवरूपस्स हि
20 इध लोके पञ्च वेरानि न होन्ति, तेनस्स अयञ्चेव लोको आरद्धो
होति परितोसितो चेव निप्फादितो च। परलोकेपि पञ्च वेरानि
न होन्ति, तेनस्स परो च लोको आराधितो होति। तस्मा सो
कायस्स भेदा परम्मरणा सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति।

४, इति भगवा सङ्खेपेन मातिकं ठपेत्वा इदानि तमेव
25 वित्थारेन्तो **कतमस्स चत्तारो कम्मकिलेसा** (दी० नि० ३.१४०)

१. सिगालोवादसुत्तन्तं—रो०।

तिआदिमाह। **कम्मकिलेसो** ति कम्मञ्च तं किलेससम्पयुत्तत्ता किलेसो चाति कम्मकिलेसो। सकिलेसोयेव हि पाणं हनति, निक्किलेसो न हनति, तस्मा पाणातिपातो 'कम्मकिलेसो" ति वुत्तो। **अदिन्नादानादीसुपि** एसेव नयो। **अथापरं** ति अपरम्पि एतदत्थपरिदीपकमेव गाथाबन्धं अवोचा ति अत्थो। 5

३. चतुठानादिवण्णना

५. **पापकम्मं करोती** ति इदं भगवा यस्मा कारके[1] दस्सिते अकारको पाकटो होति, तस्मा "पापकम्मं न करोती" ति मातिकं ठपेत्वापि देसनाकुसलताय पठमतरं कारकं दस्सेन्तो आह। तत्थ **छन्दागतिं गच्छन्तो** ति छन्देन पेमेन अगतिं गच्छन्तो अकत्तब्बं करोन्तो। परपदेसुपि एसेव नयो। तत्थ यो "अयं मे मित्तो वा सम्भत्ता वा सन्दिट्ठो वा ञातको वा लञ्चं वा पन मे देती" ति छन्दवसेन अस्सामिकं सामिकं करोति, अयं छन्दागतिं गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम। यो "अयं मे वेरी" ति पकतिवेर वसेन तङ्खणुप्पन्नकोधवसेन वा सामिकं अस्सामिकं करोति, अयं दोसागतिं गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम। यो पन मन्दत्ता मोमूहत्ता यं वा तं वा वत्वा अस्सामिकं सामिकं करोति, अयं मोहागतिं गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम। यो पन "अयं राजवल्लभो वा विसमनिस्सितो वा अनत्थम्पि मे करेय्या" ति भीतो अस्सामिकं सामिकं करोति, अयं भयागतिं गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम। यो पन यंकिञ्चि भाजेन्तो "अयं मे सन्दिट्ठो वा सम्भत्तो वा" ति पेमवसेन अतिरेकं देति, "अयं मे वेरी" ति दोसवसेन ऊनकं देति, मोमूहत्ता दिन्नादिन्नं अजानमानो कस्सचि ऊनं कस्सचि अधिकं देति, "अयं इमस्मिं[2] अदिय्यमाने[2] मय्हं अनत्थम्पि करेय्या" ति भीतो कस्सचि अतिरेकं देति, सो चतुब्बिधोपि यथानुक्कमेन छन्दागतिआदीनि गच्छन्तो पापकम्मं करोति नाम।

R. 944 B. 127 10 15 20 25

१. रागकारको—रो०। २-२. रो० पोत्थके नत्थि।

अरियसावको पन जीवितक्खयं पापुणन्तोपि छन्दागतिआदीनि न गच्छति। तेन वुत्तं "इमेहि चतूहि ठानेहि पापकम्मं न करोती" ति।

निहीयति यसो तस्सा ति तस्स अगतिगामिनो कित्तियसोपि 5 परिवारयसोपि निहीयति परिहायति।

४. छअपायमुखादिवण्णना

६. **सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठानानुयोगो** (दी० नि० ३.१४१) ति एत्थ **सुरा** ति पिट्ठसुरा पूवसुरा ओदनसुरा किण्णपक्खित्ता[1] सम्भार-संयुत्ता ति पञ्च सुरा। **मेरयं** ति पुप्फासवो फलासवो मध्वासवो गुळासवो सम्भारसंयुत्तो ति पञ्च आसवा। तं सब्बम्पि मदकरणवसेन 10 **मज्जं**। **पमादट्ठानं** ति पमादकारणं। याय चेतनाय तं मज्जं पिवति, तस्स एतं अधिवचनं। **अनुयोगो** ति तस्स सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठानस्स अनुअनुयोगो पुनप्पुनं करणं। यस्मा पन एतं अनुयुत्तस्स उप्पन्ना चेव R. 945 भोगा परिहायन्ति, अनुप्पन्ना च नुप्पज्जन्ति, तस्मा "भोगानं B. 128 अपायमुखं" ति वुत्तं। **विकालविसिखाचरियानुयोगो** ति अवेलाय 15 विसिखासु चरियानुयुत्तता।

समज्जाभिचरणं ति नच्चादिदस्सनवसेन समज्जागमनं। **आलस्या-नुयोगो** ति कायालसियताय युत्तप्पयुत्तता।

५. सुरामेरयस्स छआदीनवादिवण्णना

७. एवं छन्नं अपायमुखानं मातिकं ठपेत्वा इदानि तानि विभ-जन्तो **छ खो मे गहपतिपुत्त** (दी० नि० ३.१४१) आदीनवाति-20 आदिमाह। तत्थ **सन्दिट्ठिका** ति सामं पस्सितब्बा, इधलोकभाविनी। **धनजानी**ति धनहानि। **कलहप्पवड्ढनी** ति वाचाकलहस्स चेव हत्थपरामासादिकायकलहस्स च वड्ढनी। **रोगानं आयतनं**

१. किण्णसंयुत्ता — रो०।

ति तेसं तेसं अक्खिरोगादीनं खेत्तं। **अकित्तिसञ्जननी** ति सुरं पिवित्वा हि मातरम्पि पहरन्ति पितरम्पि, अञ्ञं बहुम्पि, अवत्तब्बं वदन्ति, अकत्तब्बं करोन्ति। तेन गरहम्पि दण्डम्पि हत्थपादादि-छेदम्पि पापुणन्ति, इधलोकेपि परलोकेपि अकित्तिं पापुणन्ति। इति तेसं सा सुरा अकित्तिसञ्जननी नाम होति। **कोपीननिदंसनी** ति 5 गुय्हट्ठानञ्हि विवरियमानं हिरिं कोपेति विनासेति, तस्मा "कोपीनं" ति वुच्चति, सुरामदमत्ता च तं तं अङ्गं विवरित्वा विचरन्ति, तेन नेसं सा सुरा कोपीनस्स निदंसनतो "कोपीननिदंसनी" ति वुच्चति। **पञ्ञाय दुब्बलिकरणी** ति सागतत्थेरस्स विय कम्मस्सकतपञ्ञं दुब्बलं करोति, तस्मा "पञ्ञाय दुब्बलिकरणी" ति वुच्चति। मग्गपञ्ञं 10 पन दुब्बलं कातुं न सक्कोति। अधिगतमग्गानञ्हि सा अन्तोमुखमेव न पविसति। **छट्ठं पदं** ति छट्ठं कारणं।

२४९. **अत्तापिस्स अगुत्तो अरक्खितो होती** ति अवेलाय चरन्तो हि खाणुकण्टकादीनिपि अक्कमति, अहिनापि यक्खादीहिपि समागच्छति, तं तं ठानं गच्छती ति ञत्वा वेरिनोपि नं निलीयित्वा 15 गण्हन्ति वा हनन्ति वा। एवं अत्तापिस्स अगुत्तो होति अरक्खितो। पुत्तदारोपि "अम्हाकं पिता अम्हाकं सामि रत्तिं विचरति, किमङ्गं पन मयं" ति इतिस्स पुत्तधीतरोपि भरियापि बहि पत्थनं कत्वा रत्तिं R. 946 चरन्ता अनयब्यसनं पापुणन्ति। एवं **पुत्तदारोपिस्स अगुत्तो अरक्खितो सापतेय्यं** ति तस्स पुत्तदारपरिजनस्स रत्तिं चरणकभावं ञत्वा चोरा 20 B. 129 सुञ्ञं गेहं पविसित्वा यं इच्छन्ति, तं हरन्ति। एवं **सापतेय्यम्पिस्स अगुत्तं अरक्खितं** होति। **सङ्कियो च होती** ति अञ्ञेहि कतपाप-कम्मेसुपि "इमिना कतं भविस्सती" ति सङ्कितब्बो होति। यस्स यस्स घरद्वारेन याति, तत्थ यं अञ्ञेन चोरकम्मं परदारिककम्मं वा कतं, तं "इमिना कतं" ति वुत्ते अभूतं असन्तम्पि तस्मिं रुहति 25 पतिट्ठाति। **बहूनञ्च दुक्खधम्मानं** ति एत्तकं दुक्खं, एत्तकं दोमनस्सं ति वत्तुं न सक्का, अञ्ञस्मिं पुग्गले असति सब्बं विकालचारिम्हि आहरितब्बं होति, इति सो बहूनं दुक्खधम्मानं पुरक्खतो पुरेगामी होति।

९. क्व नच्चं ति "कस्मिं ठाने नटनाटकादिनच्चं अत्थी" ति पुच्छित्वा यस्मिं गामे वा निगमे वा तं अत्थि, तत्थ गन्तब्बं होति, तस्स "स्वे नच्चदस्सनं गमिस्सामी" ति अज्ज वत्थगन्धमालादीनि पटियादेन्तस्सेव सकलदिवसम्पि कम्मच्छेदो होति, नच्चदस्सनेन एकाहम्पि
5 द्वीहम्पि तीहम्पि तत्थेव होति। अथ वुट्ठिसम्पत्तियादीनि लभित्वापि वप्पादिकाले वप्पादीनि अकरोन्तस्स अनुप्पन्ना भोगा नुप्पज्जन्ति, तस्स बहि गतभावं ञत्वा अनारक्खे गेहे चोरा यं इच्छन्ति, तं करोन्ति, तेनस्स उप्पन्नापि भोगा विनस्सन्ति। क्व गीतं तिआदीसुपि एसेव नयो। तेसं नानाकरणं ब्रह्मजाले वुत्तमेव।

10 १०. जयं वेरं ति "चितं मया" ति परिसमज्झे परस्स साटकं वा वेटनं वा गण्हाति, सो "परिसमज्झे मे अवमानं करोसि, होतु, सिक्खापेस्सामि नं" ति तत्थ वेरं बन्धति, एवं जिनन्तो सयं[1] वेरं पसवति। जिनो ति अञ्ञेन जितो समानो यं तेन तस्स वेठनं वा साटको वा अयं वा पन हिरञ्ञसुवण्णादिवित्तं गहितं, तं अनुसोचति
15 "अहोसि वत मे, तं तं वत मे नत्थी" ति तप्पच्चया सोचति। एवं सो[2] जिनो वित्तं अनुसोचति। समागतस्स वचनं न रूहती ति विनिच्छयट्ठाने सक्खिपुट्ठस्स सतो वचनं न[3] रूहति[3], न पतिट्ठाति, "अयं अक्खसोण्डो जूतकरो, मा तस्स वचनं गण्हित्था" ति वत्तारो
R. 947 भवन्ति। मित्तामच्चानं परभूतो होती ति तञ्हि मित्तामच्चा एवं
20 वदन्ति "सम्म, त्वम्पि नाम कुलपुत्तो जूतकरो छिन्नभिन्नको हुत्वा विचरसि, न ते इदं जातिगोत्तानं अनुरूपं, इतो पट्ठाय मा एवं करेय्यासी" ति। सो एवं वुत्तोपि तेसं वचनं न करोति। ततो तेन
B. 130 सद्धिं एकतो न तिट्ठन्ति न निसीदन्ति। तस्स कारणा सक्खिपुट्ठापि न कथेन्ति। एवं मित्तामच्चानं परिभूतो होति।

१. रो॰ पोत्थके नत्थि। २. रो॰ पोत्थके नत्थि।

३-३. रो॰ पोत्थके नत्थि।

आवाहविवाहकानं ति आवाहका नाम ये तस्स घरतो दारिकं गहेतुकामा। विवाहका नाम ये तस्स गेहे दारिकं दातुकामा। अपत्थितो होती ति अनिच्छितो होति। नालं दारभरणाया ति दारभरणाय न समत्थो। एतस्स गेहे दारिका दिन्नापि एतस्स गेहतो आगतापि अम्हेहि एव पोसितब्बा भविस्सतियेव। 5

६. पापमित्तताय छआदीनवादिवण्णना

११. धुत्ता (दी० नि० ३.१४२) ति अक्खधुत्ता। सोण्डा ति इत्थिसोण्डा भत्तसोण्डा पुवसोण्डा मूलकसोण्डा[1]। पिपासा ति पानसोण्डा। नेकतिका ति पतिरूपकेन वञ्चनका। वञ्चनिका ति सम्मुखावञ्चनाहि वञ्चनिका[2]। साहसिका ति एकागारिकादिसाहसिक-कम्मकारिनो। त्यास्स मित्ता होन्ती ति ते अस्स मित्ता होन्ति। 10 अञ्ञेहि सप्पुरिसेहि सद्धिं न रमति गन्धमालादीहि अलङ्करित्वा वरसयनं आरोपितसूकरो गूथकूपमिव, ते पापमित्तेयेव उपसङ्कमति। तस्मा दिट्ठे चेव धम्मे सम्परायञ्च बहुं अनत्थं निगच्छति।

१२. अतिसीतं ति कम्मं न करोती (दी० नि० ३.१४२) ति अनुस्सेहि कालस्सेव वुट्ठाय "एथ भो कम्मन्तं गच्छामा" ति वुत्तो 15 "अतिसीतं ताव, अट्ठीनि भिज्जन्ति विय, गच्छथ तुम्हे पच्छा जानिस्सामी" ति अग्गिं तपन्तो निसीदति। ते गन्त्वा कम्मं करोन्ति। इतरस्स कम्मं परिहायति। अतिउण्हं तिआदीसुपि एसेव नयो। होति पानसखा नामा ति एकच्चो पानट्ठाने सुरागेहेयेव सहायो होति। "पन्नसखा" तिपि पाठो, अयमेवत्थो सम्मियसम्मियो ति सम्म 20 सम्मा ति वदन्तो सम्मुखेयेव सहायो होति, परम्मुखे वेरीसदिसो ओतारमेव गवेसति। अत्थेसु जातेसू ति तथारूपेसु किच्चेसु समुप्पन्नेसु। वेरप्पसवो ति वेरबहुलता। अनत्थता ति अनत्थकारिता। R. 948

१. मूलसोण्डा—रो०। २. वञ्चनका—रो०।

B. 131 **सुकदरियता** ति सुट्ठु कदरियता थद्धमच्छरियभावो। **उदकमिव इणं विगाहती** ति पासाणो उदकं विय संसीदन्तो इणं विगाहति।

रत्तिनुट्ठानदस्सिना ति रत्तिं अनुट्ठानसीलेन। **अतिसायमिदं अहू** ति इदं अतिसायं जातं ति ये एवं वत्वा कम्मं न करोन्ति। **इति**
5 **विस्सट्ठकम्मन्ते** ति एवं वत्वा परिचत्तकम्मन्ते। **अत्था अच्चेन्ति माणवे** ति एवरूपे पुग्गले अत्था अतिक्कमन्ति, तेसु न तिट्ठन्ति।

तिणा भिय्यो ति तिणतोपि उत्तरि। **सो सुखं न विहायती** ति सो पुरिसो सुखं न जहाति, सुखसमङ्गीयेव होति। इमिना कथामग्गेन इममत्थं दस्सेति "गिहिभूतेन सत्ता एत्तकं कम्मं न कातब्बं, करोन्तस्स
10 वड्ढि नाम नत्थि। इधलोके परलोके गरहमेव पापुणती" ति।

७. मित्तपतिरूपकादिवण्णना

१३. इदानि यो एवं करोतो अनत्थो उप्पज्जति, अञ्ञानि वा पन यानि कानिचि भयानि येकेचि उपद्दवा येकेचि उपसग्गा, सब्बे ते बालं निस्साय उप्पज्जन्ति। तस्मा "एवरूपा बाला न सेवितब्बा" ति बाले मित्तपतिरूपके अमित्ते दस्सेतुं **चत्तारोमे गहपतिपुत्त अमित्ता**
15 (दी० नि० ३.१४३) तिआदिमाह। तत्थ **अञ्ञदत्थुहरो** ति सयं तुच्छहत्थो आगन्त्वा एकंसेन यंकिञ्चि हरतियेव। **वचीपरमो** ति वचनपरमो वचनमत्तेनेव दायको कारको विय होति। **अनुप्पियभाणी** ति अनुप्पियं भणति। **अपायसहायो** ति भोगानं अपायेसु सहायो होति।

20 १४. एवं चत्तारो अमित्ते दस्सेत्वा पुन तत्थ एकेकं चतूहि कारणेहि विभजन्तो **चतूहि खो गहपतिपुत्ता** तिआदिमाह। तत्थ **अञ्ञदत्थुहरो होती** ति एकंसेन हारकोयेव होति। सहायस्स गेहं रित्तहत्थो आगन्त्वा निवत्थसाटकादीनं[1] वण्णं भासति, सो "अतिविय त्वं सम्म इमस्स वण्णं भाससी" ति अञ्ञं निवासेत्वा तं देति।

१. निवत्थसालाकादीनं—रो०।

अप्पेन बहुमिच्छती ति यंकिञ्चि अप्पकं दत्वा तस्स सन्तिका बहुं पत्थेति। **भयस्स किच्चं करोती** ति अत्तनो भये उप्पन्ने तस्स दासो विय हुत्वा तं तं किच्चं करोति, अयं सब्बदा न करोति, भये उप्पन्ने करोति, न पेमेना ति अमित्तो नाम जातो। **सेवति अत्थकारणा** ति मित्तसन्थववसेन न सेवति, अत्तनो अत्थमेव पच्चासीसन्तो सेवति। 5

R. 949 B. 132

१५. **अतीतेन पटिसन्थरती** (दी० नि० ३.१४४) ति सहाये आगते "हिय्यो वा परे वा न आगतोसि, अम्हाकं इमस्मिं वारे सस्सं अतिविय निप्फन्नं, बहूनि सालियवबीजादीनि ठपेत्वा मग्गं ओलोकेन्ता निसीदिम्ह, अज्ज पन सब्बं खीणं" ति एवं अतीतेन सङ्गण्हाति। **अनागतेना** ति "इमस्मिं वारे अम्हाकं सस्सं मनापं भविस्सति, 10 फलभारभरिता सालिआदयो, सस्ससङ्गहे कते तुम्हाकं सङ्गहं कातुं समत्था भविस्सामा" ति एवं अनागतेन सङ्गण्हाति। **निरत्थकेना** ति हत्थिक्खन्धे वा अस्सपिट्ठे वा निसिन्नो सहायं दिस्वा "एहि भो इध निसीदा" ति वदति। मनापं साटकं निवासेत्वा "सहायकस्स वत मे अनुच्छविको अञ्ञो पन मय्हं नत्थी" ति वदति, एवं निरत्थकेन 15 सङ्गण्हाति नाम। **पच्चुप्पन्नेसु मिच्चेसु ब्यसनं दस्सेती** ति "सकटेन मे अत्थो" ति वुत्ते "चक्कमस्स भिन्नं, अक्खो छिन्नो" तिआदीनि वदति।

१६. **पापकम्पिस्स अनुजानाती** ति पाणातिपातादीसु यंकिञ्चि करोमाति वुत्ते "साधु सम्म करोमा" ति अनुजानाति। कल्याणेपि 20 एसेव नयो। **सहायो होती** ति "असुकट्ठाने सुरं पिवन्ति, एहि तत्थ गच्छामा" ति वुत्ते साधू ति गच्छति। एस नयो सब्बत्थ। **इति विञ्ञाया** ति "मित्तपतिरूपका एते" ति एवं जानित्वा।

८. सुहदमित्तादिवण्णना

१९. एवं न सेवितब्बे पापमित्ते दस्सेत्वा इदानि सेवितब्बे कल्याणमित्ते दस्सेन्तो पुन **चत्तारोमे गहपति पुत्ता** (दी०नि० ३.१४४) 25 तिआदिमाह। तत्थ **सुहदाति** सुन्दरहदया।

२०. **पमत्तं रक्खती** ति मज्जं पिवित्वा गाममज्झे वा गामद्वारे वा मग्गे वा निपन्नं दिस्वा "एवंनिपन्नस्स कोचिदेव निवासनपारुपनम्पि हरेय्या" ति समीपे निसीदित्वा पबुद्धकाले गहेत्वा गच्छति। **पमत्तस्स सापतेय्यं** ति सहायो बहिगतो वा होति सुरं पिवित्वा वा पमत्तो[१], गेहं अनारक्खं "कोचिदेव यंकिञ्चि[२] हरेय्या" ति गेहं पविसित्वा तस्स धनं रक्खति। **भीतस्सा** ति किस्मिञ्चिदेव भये उप्पन्ने "मा भायि, मादिसे सहाये ठिते किं भायसी" ति तं भयं हरन्तो पटिसरणं होति। **तद्दिगुणं भोगं** ति किच्चकरणीये उप्पन्ने सहायं अत्तनो सन्तिकं आगतं दिस्वा वदति "कस्मा आगतोसी" ति? राजकुले कम्मं अत्थी ति। किं लद्धुं वट्टती ति? एको कहापणो ति। "नगरे कम्मं नाम न एककहापणेन निप्फज्जति, द्वे गण्हाही" ति एवं यत्तकं वदति, ततो दिगुणं देति।

R. 950 B. 133

२१. **गुय्हमस्स आचिक्खती** (दी० नि० ३.१४५) ति अत्तनो गुय्हं निगूहितुं युत्तकथं अञ्ञस्स अकथेत्वा तस्सेव आचिक्खति। **गुय्हमस्स परिगूहती** ति तेन कथितं गुय्हं यथा अञ्ञो न जानाति, एवं रक्खति। **आपदासु न विजहती** ति उप्पन्ने भये न परिच्चजति। **जीवितम्पिस्स अत्थाया** ति अत्तनो जीवितम्पि तस्स सहायस्स अत्थाय परिच्चत्तमेव होति, अत्तनो[३] जीवितं अगणेत्वापि तस्स कम्मं[४] करोतियेव।

२२. **पापा निवारेती** (दी० नि० ३.१४१) ति अम्हेसु पस्सन्तेसु पस्सन्तेसु त्वं एवं कातुं न लभसि, पञ्च वेरानि दन अकुसलकम्मपथे मा करोही ति निवारेति।

कल्याणे निवेसेती ति कल्याणकम्मे तीसु सरणेसु पञ्चसीलेसु दसकुसलकम्मपथेसु वत्तस्सु, दानं देहि[५] पुञ्ञं[६] करोहि धम्मं सुणाही

१. मत्तो—रो०।
२. ०वित्तं—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि।
४. किच्चं—रो०।
५. देति—रो०।
६. पुञ्ञकम्मं—रो०।

ति एवं कल्याणे नियोजेति। **अस्सुतं सावेती** ति अस्सुतपुब्बं सुखुमं निपुणं कारणं सावेति। **सग्गस्स मग्गं** ति इदं कम्मं कत्वा सग्गे निब्बत्तन्ती ति एवं सग्गस्स मग्गं आचिक्खति।

२३. **अभवेनस्स न नन्दती** ति तस्स अभवेन अवुड्ढिया पुत्तदारस्स वा परिजनस्स वा तथारूपं पारिजुञ्ञं दिस्वा वा सुत्वा वा न नन्दति, अनत्तमनो होति। **भवेना** ति वुड्ढिया तथारूपस्स सम्पत्ति वा इस्सरियप्पटिलाभं वा दिस्वा वा सुत्वा वा नन्दति, अत्तमनो होति। **अवण्णं भणमानं निवारेती** ति "असुको विरूपो न पासादिको दुज्जातिको दुस्सीलो" ति वा वुत्ते "एवं मा भणि, रूपवा च सो पासादिको च सुजातो च सीलसम्पन्नो चा" तिआदीहि वचनेहि परं अत्तनो सहायस्स अवण्णं भणमानं निवारेति। **वण्णं भणमानं पसंसती** ति "असुको रूपवा पासादिको सुजातो सीलसम्पन्नो" ति वुत्ते "अहो सुट्ठु वदसि, सुभासितं तया, एवमेतं, एस पुरिसो रूपवा पासादिको सुजातो सीलसम्पन्नो" ति एवं अत्तनो सहायकस्स परं वण्णं भणमानं पसंसति।

5 R. 951 10 B. 134 15

२४. **जलं अग्गीव भासती** ति रत्तिं पब्बतमत्थके जलमानो अग्गि विय विरोचति।

भोगे संहरमानस्सा ति अत्तानम्पि परम्पि अपीळेत्वा धम्मेन समेन भोगे सम्पिण्डेतस्स[1] रासिं करोन्तस्स। **भमरस्सेव इरीयतो** ति यथा भमरो पुप्फानं वण्णगन्धं अपोथयं[2] तुण्डेनपि पक्खेहिपि रसं[3] आहरित्वा अनुपुब्बेन चक्कप्पमाणं मधुपटलं करोति, एवं अनुपुब्बेन महन्तं भोगरासिं करोन्तस्स। **भोगा सन्निचयं यन्ती** ति तस्स भोगा निचयं गच्छन्ति। कथं? अनुपुब्बेन उपचिकाहि संवड्ढियमानो वम्मिको विय। तेनाह "वम्मिकोवुपचीयती" ति। यथा वम्मिको उपचियति, एवं निचयं यन्ती ति अत्थो।

20 25

१ संवड्ढेन्तस्स—रो०। २. अहेठयं—रो०।
३. रजं—रो०।

समाहत्वा ति समाहरित्वा। **अलमत्थो** ति युत्तसभावो समत्थो वा परियत्तरूपो घरावासं सण्ठापेतुं। इदानि यथा वा घरावासो सण्ठपेतब्बो, तथा ओवदन्तो **चतुधा विभजे भोगे** तिआदिमाह। तत्थ **स वे मित्तानि गन्थती** ति सो एवं विभजन्तो मित्तानि गन्थति नाम 5 अभेज्जमानानि ठपेति। यस्स हि भोगा सन्ति, सो एव मित्ते ठपेतुं सक्कोति, न इतरो।

एकेन भोगे भुञ्जेय्या ति एकेन कोट्ठासेन भोगे भुञ्जेय्य। **द्वीहि कम्मं पयोजये** ति द्वीहि कोट्ठासेहि कसिवाणिज्जादिकम्मं पयोजेय्य। **चतुत्थञ्च निधापेय्या** ति चतुत्थं कोट्ठासं निधापेत्वा ठपेय्य। **आपदासु** 10 **भविस्सती** ति कुलानञ्हि न सब्बकालं एकसदिसं वत्तति, कदाचि R. 952 राजादिवसेन आपदापि उप्पज्जन्ति, तस्मा एवं आपदासु उप्पन्नासु B. 135 भविस्सती ति "एकं कोट्ठासं निधापेय्या" ति आह। इमेसु पन चतूसु कोट्ठासेसु कतरकोट्ठासं गहेत्वा कुसलं कातब्बं ति? "भोगे भुञ्जेय्या" ति वुत्तकोट्ठासं। ततो गण्हित्वा[1] भिक्खूनम्पि 15 कपणद्धिकादीनम्पि दानब्बं[2], पेसकारन्हापितादीनम्पि वेतनं दातब्बं।

९. छद्दिसापटिच्छादनकण्डवण्णना

२५. इति भगवा एत्तकेन कथामग्गेन एवं गहपतिपुत्तस्स अरियसावको चतूहि कारणेहि अकुसलं पहाय छहि कारणेहि भोगानं अपायमुखं वज्जेत्वा सोळस मित्तानि सेवन्तो घरावासं सण्ठपेत्वा दारभरणं करोन्तो धम्मिकेन आजीवेन जीवति, देवमनुस्सानञ्च अन्तरे 20 अग्गिक्खन्धो विय विरोचती ति वज्जनीयधम्मवज्जनत्थं सेवितब्बधम्मसेवनत्थञ्च ओवादं दत्वा इदानि नमस्सितब्बा छ दिसा दस्सेन्तो **कथञ्च गहपतिपुत्ता** तिआदिमाह।

तत्थ **छद्दिसापटिच्छादी** ति यथा छहि दिसाहि आगमनभयं न आगच्छति, खेमं होति निब्भयं एवं विहरन्तो "छद्दिसापटिच्छादी

१. गहेत्वा—रो०। २. दानं०—रो०।

ति वुच्चति। "पुरत्थिमा दिसा मातापितरो वेदितब्बा" तिआदीसु **मातापितरो** पुब्बुपकारिताय **पुरत्थिमा दिसा** ति वेदितब्बा। आचरिया दक्खिणेय्यताय **दक्खिणा दिसा** ति। पुत्तदारा पिट्ठितो अनुबन्धनवसेन **पच्छिमा दिसा** ति। **मित्तामच्चा** यस्मा सो मित्तामच्चे निस्साय ते ते दुक्खविसेसे उत्तरति, तस्मा **उत्तरा दिसा** ति। 5
दासकम्मकरा पादमूले पतिट्ठानवसेन **हेट्ठिमा दिसा** ति। **समणब्राह्मणा** गुणेहि उपरि ठितभावेन **उपरिमा दिसा** ति वेदितब्बा।

२६. **भतो ने भरिस्सामी** (दी० नि० ३.१४६) ति अहं मातापितूहि थञ्ञं पायेत्वा हत्थपादे वड्ढेत्वा मुखेन सिङ्घाणिकं अपनेत्वा नहापेत्वा मण्डेत्वा भतो भरितो जग्गितो, स्वाहं अज्ज ते महल्लके 10
पादधोवनन्हापनयागुभत्तदानादीहि भरिस्सामि।

किच्चं नेसं करिस्सामी ति अत्तनो कम्मं ठपेत्वा मातापितूनं राजकुलादीसु उप्पन्नं किच्चं गन्त्वा करिस्सामि। **कुलवंसं सण्ठपेस्सामी** ति मातापितूनं सन्तकं खेत्तवत्थुहिरञ्ञसुवण्णादिं अविनासेत्वा रक्खन्तोपि कुलवंसं सण्ठपेति[1] नाम। मातापितरो अधम्मिकवंसतो 15 R. 953
हारेत्वा धम्मिकवंसे ठपेन्तोपि, कुलवंसेन आगतानि सलाकभत्तादीनि B. 136
अनुपच्छिन्दित्वा पवत्तेन्तोपि कुलवंसं सण्ठपेति नाम। इदं सन्धाय वुत्तं—"कुलवंसं सण्ठपेस्सामी" ति।

दायज्जं पटिपज्जामी ति मातापितरो अत्तनो ओवादे अवत्तमाने मिच्छापटिपन्ने दारके विनिच्छयं पत्वा अपुत्ते करोन्ति, ते दायज्जारहा 20
न होन्ति। ओवादे वत्तमाने पन कुलसन्तकस्स सामिके करोन्ति, अहं एव वत्तिस्सामी ति अधिप्पायेन दायज्जं पटिपज्जामी" ति वुत्तं।

दक्खिणं अनुप्पदस्सामी ति तेसं पत्तिदानं कत्वा ततियदिवसतो पट्ठाय दानं अनुप्पदस्सामि। **पापा निवारेन्ती** ति पाणातिपातादीनं दिट्ठधम्मिकसम्परायिकं आदीनवं वत्वा, "तात, मा एवरूपं करि" ति 25

१. ठपेति—रो०।

निवारेन्ति, कतम्पि गरहन्ति । **कल्याणे निवासेन्ती** ति अनाथपिण्डिको विय लञ्जं[1] दत्वापि सीलसमादानादीसु निवेसेन्ति । **सिप्पं सिक्खापेन्ती** ति अत्तनो ओवादे ठितभावं ञत्वा वंसानुगतं मुद्दागणनादिसिप्पं सिक्खापेन्ति । **पतिरूपेना** ति कुलसीलरूपादीहि 5 अनुरूपेन ।

समये दायज्जं निय्यादेन्ती ति समये धनं देन्ति । तत्थ निच्च समयो कालसमयो ति द्वे समया । **निच्चसमये** देन्ति नाम "उट्ठाय समुट्ठाय इमं गण्हितब्बं[2] गण्ह, अयं ते परिब्बयो होतु, इमिना कुसलं करोही" ति देन्ति । **कालसमये** देन्ति नाम सिखापठनआवाह- 10 विवाहादिसमये देन्ति । अपिच पच्छिमे काले मरणमञ्चे निपन्नस्स "इमिना कुसलं करोही" ति देन्तापि समये देन्ति नाम । **पटिच्छन्ना होती** ति यं पुरत्थिमदिसतो भयं आगच्छेय्य, यथा तं नागच्छति, एवं पिहिता होति । सचे हि पुत्ता विप्पटिपन्ना, अस्सु, मातापितरो दहरकालतो पट्ठाय जग्गनादीहि सम्मा पटिपन्ना, एते दारका, माता 15 पितून्नं अप्पतिरूपा ति एतं भयं आगच्छेय्य । पुत्ता सम्मा पटिपन्ना, मातापितरो विप्पटिपन्ना, मातापितरो पुत्तानं नानुरूपा ति एतं भयं R. 954 आगच्छेय्य । उभोसु विप्पटिपन्नेसु दुविधम्पि तं भयं होति । सम्मा पटिपन्नेसु सब्बं न होति[3] । तेन वुत्तं "पटिच्छन्ना होति खेमा अप्पटिभया" ति ।

20 एवञ्च पन वत्वा भगवा सिङ्गालकं एतदवोच "न खो ते, गहपतिपुत्त, पिता लोकसम्मतं पुरत्थिमं दिसं नमस्सापेति । B. 137 मातापितरो पन पुरत्थिमदिसासदिसे कत्वा नमस्सापेति । अयञ्हि ते पितरा पुरत्थिमा दिसा अक्खाता, नो अञ्ञा" ति ।

१. लद्धं च—रो० । २. रो० पोत्थके नत्थि ।
३. होसि— रो० ।

२७. **उट्ठानेना** (दी० नि० ३.१४६) ति आसना उट्ठानेन। अन्तेवासिकेन आचरियं दूरतोव आगच्छन्तं दिस्वा आसना वुट्ठाय पच्चुग्गमनं कत्वा हत्थतो भण्डकं गहेत्वा आसनं पञ्ञपेत्वा निसीदापेत्वा बीजनपादधोवनपादमक्खनानि कातब्बानि। तं सन्धाय वुत्तं "उट्ठानेना" ति। **उपट्ठानेना** ति दिवसस्स तिक्खत्तुं उपट्ठानगमनेन। सिप्पुग्गहणकाले पन अवस्सकमेव गन्तब्बं होति। **सुस्सूसाया** ति सद्दहित्वा[1] सवनेन। असद्दहित्वा सुणन्तो हि विसेसं नाधिगच्छति। **पारिचरियाया** ति अवसेसखुद्दकपारिचरियाय। अन्तेवासिकेन हि आचरियस्स पातोव उट्ठाय मुखोदकदन्तकट्ठं दत्वा भत्तकिच्चकालेपि पानीयं गहेत्वा पच्चुपट्ठानादीनि कत्वा वन्दित्वा गन्तब्बं। किलिट्ठवत्थादीनि धोवितब्बानि, सायं नहानोदकं पच्चुपट्ठपेतब्बं। अफासुकाले उपट्ठातब्बं। पब्बजितेनपि सब्बं अन्तेवासिकवत्तं कातब्बं। इदं सन्धाय वुत्तं "पारिचरियाया" ति। **सक्कच्चं सिप्पपटिग्गहणेना** ति सक्कच्चं पटिग्गहणं नाम थोकं गहेत्वा बहुवारे सज्झायकरणं, एकपदम्पि विसुद्धमेव गहेतब्बं।

सुविनीतं विनेन्ती ति "एवं ते निसीदितब्बं, एवं ठातब्बं, एवं खादितब्बं, एवं भुञ्जितब्बं, पापमित्ता वज्जेतब्बा, कल्याणमित्ता सेवितब्बा" ति एवं आचारं सिक्खापेन्ति विनेन्ति। **सुग्गहितं गाहापेन्ती** ति यथा सुग्गहितं गण्हाति, एवं अत्थञ्च ब्यञ्जनञ्च सोधेत्वा पयोगं दस्सेत्वा गण्हापेन्ति। **मित्तामच्चेसु पटियादेन्ती** ति "अयं अम्हाकं अन्तेवासिको ब्यत्तो बहुस्सुतो मया समसमो, एतं सल्लक्खेय्याथा" ति एवं गुणं कथेत्वा मित्तामच्चेसु पतिट्ठपेन्ति।

दिसासु परित्ताणं करोन्ती ति सिप्पसिक्खापनेनेवस्स सब्बदिसासु रक्खं करोन्ति। उग्गहितसिप्पो हि यं यं दिसं गन्त्वा सिप्पं दस्सेति, तत्थ तत्थस्स लाभसक्कारो उप्पज्जति। सो आचरियेन कतो नाम होति, गुणं कथेन्तोपिस्स महाजनो आचरियपादे धोवित्वा

१. असद्दहित्वा—रो०।

B. 138 वसितअन्तेवासिको वत अयं ति पठमं आचरियस्सेव गुणं कथेन्ति, ब्रह्मलोकप्पमाणोपिस्स लाभो उप्पज्जमानो आचरियसन्तकोव होति। अपिच यं विज्जं परिजप्पित्वा गच्छन्तं अटवियं चोरा न पस्सन्ति, अमनुस्सा वा दीघजातिआदयो वा न विहेठेन्ति, तं सिक्खापेन्तापि 5 दिसासु परित्ताणं करोन्ति। यं वा सो दिसं गतो होति, ततो कङ्खं उप्पादेत्वा अत्तनो सन्तिकं आगतमनुस्से "एतिस्सं दिसायं अम्हाकं अन्तेवासिको वसति, तस्स च मय्हञ्च इमस्मिं सिप्पे नानाकरणं नत्थि, गच्छथ तमेव पुच्छथा" ति एवं अन्तेवासिकं पग्गण्हन्तापि तस्स तत्थ लाभसक्कारुप्पत्तिया परित्ताणं करोन्ति नाम, पतिट्ठं 10 करोन्ती ति अत्थो। सेसमेत्थ पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

२८. ततियदिसावारे **सम्माननाया** ति देवमानेति तिस्समातेति[1] एवं सम्भावितकथाकथनेन। **अनवमाननाया** ति यथा दासकम्म-करादयो पोथेत्वा विहेठेत्वा कथेन्ति, एवं हीळेत्वा विमानेत्वा अकथनेन। **अनतिचरियाया** ति तं अतिक्कमित्वा बहि अञ्ञाय 15 इत्थिया सद्धिं परिचरन्तो तं अतिचरति नाम, तथा अकरणेन। **इस्सरियवोस्सग्गेना** ति इत्थियो हि महालतासदिसम्पि आभरणं लभित्वा भत्तं विचारेतुं अलभमाना कुज्झन्ति, कटच्छुं हत्थे ठपेत्वा तव रुचिया करोही ति भत्तगेहे विस्सट्ठे सब्बं इस्सरियं विस्सट्ठं नाम होति, एवं करणेना ति अत्थो। **अलङ्कारानुप्पदानेना** ति 20 अत्तनो विभवानुरूपेन अलङ्कारदानेन। **सुसंविहितकम्मन्ता** (दी०नि० ३.१४७) ति यागुभत्तपचनकालादीनि अनतिक्कमित्वा तस्स तस्स साधुकं करणेन सुट्ठु संविहितकम्मन्ता। **सङ्गहितपरिजना** ति सम्माननादीहि चेव पहेणकपेसनादीहि च सङ्गहितपरिजना। इध परिजनो नाम सामिकस्स चेव अत्तनो च ञातिजनो। 25 **अनतिचारिनी** ति सामिकं मुञ्चित्वा अञ्ञं मनसापि न पत्थेति। R. 956 **सम्भतं** ति कसिवाणिज्जादीनि कत्वा आभतधनं। **दक्खा च होती** ति यागुभत्तसम्पादनादीसु छेका निपुणा होति। **अनलसा** ति

१. दिसा मानेति—रो०।

निक्कोसज्जा। यथा अञ्ञा कुसीता निसिन्नट्ठाने निसिन्नाव होन्ति ठितट्ठाने ठिताव, एवं अहुत्वा विप्फारितेन चित्तेन सब्बकिच्चानि निप्फादेति। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

२९. चतुत्थदिसावारे **अविसंवादनताया** ति यस्स यस्स नामं गण्हाति, तं तं अविसंवादेत्वा इदम्पि अम्हाकं गेहे अत्थि, इदम्पि अत्थि, गहेत्वा गच्छाही ति एवं अविसंवादेत्वा दानेन। **अपरपजा चस्स पटिपूजेन्ती** ति सहायस्स पुत्तधीतरो पजा नाम, तेसं पन पुत्तधीतरो च नत्तुपनत्तका च अपरपजा नाम। ते पटिपूजेन्ति केळायन्ति ममायन्ति मङ्गलकालादीसु तेसं मङ्गलादीनि करोन्ति। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव वेदितब्बं। B. 139 5 10

३०. **यथाबलं कम्मन्तसंविधानेना** ति दहरेहि कातब्बं महल्लकेहि, महल्लकेहि वा कातब्बं दहरेहि, इत्थीहि कातब्बं पुरिसेहि, पुरिसेहि वा कातब्बं इत्थीहि अकारेत्वा तस्स तस्स बलानुरूपेनेव कम्मन्तसंविधानेन। **भत्तवेतनानुप्पदानेना** ति अयं खुद्दकपुत्तो, अयं एकविहारी ति तस्स तस्स अनुरूपं सल्लक्खेत्वा भत्तदानेन चेव परिब्बयदानेन च। **गिलानुपट्ठानेना** ति अफासुककाले कम्मं अकारेत्वा सप्पायभेसज्जादीनि दत्वा पटिजग्गनेन। **अच्छरियानं रसानं संविभागेना** ति अच्छरिये मधुररसे लभित्वा सयमेव अखादित्वा तेसम्पि ततो संविभागकरणेन। **समये वोस्सग्गेना** ति निच्चसमये च कालसमये च वोस्सज्जनेन। **निच्चसमये** वोस्सज्जनं नाम सकलदिवसं कम्मं करोन्ता किलमन्ति। तस्मा यथा न किलमन्ति, एवं वेलं ञत्वा विस्सज्जनं। **कालसमये** वोस्सग्गो नाम छनक्खत्तकीळादीसु अलङ्कारभण्डखादनीयभोनीयादीनि दत्वा विस्सज्जनं। **दिन्नादायिनो** ति चोरिकाय किञ्चि अगहेत्वा सामिकेहि दिन्नस्सेव आदायिनो। **सुकतकम्मकरा** ति "किं एतस्स कम्मेन कतेन, न मयं किञ्चि लभामा" ति अनुज्झायित्वा तुट्ठहदया यथा तं कम्मं सुकतं होति, एवं कारका। **कित्तिवण्णहरा** ति परिसमज्झे कथाय सम्पत्ताय "को अम्हाकं सामिकेहि 15 20 25 R. 957

सदिसो अत्थि, मयं अत्तनो दासभावम्पि न जानाम, तेसं सामिकभावम्पि न जानाम, एवं नो अनुकम्पन्ती" ति गुणकथाहारका। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

३१. **मेत्तेन कायकम्मेना** (दी० नि० ३.१४८) तिआदीसु
5 मेत्तचित्तं पच्चुपट्ठपेत्वा कतानि कायकम्मादीनि मेत्तानि नाम वुच्चन्ति।
B. 140 तत्थ भिक्खू निमन्तेस्सामी ति विहारगमनं, धमकरणं गहेत्वा उदकपरिस्सावनं, पिट्ठिपरिकम्मपादपरिकम्मादिकरणञ्च मेत्तं कायकम्मं नाम। भिक्खू पिण्डाय पविट्ठे दिस्वा "सक्कच्चं यागुं देथ, भत्तं देथा" तिआदिवचनञ्चेव, साधुकारं दत्वा धम्मसवनं च सक्कच्चं पटिसन्थार-
10 करणादीनि च मेत्तं वचीकम्मं नाम। 'अम्हाकं कुलुपकत्थेरा अवेरा होन्तु अब्यापज्जा" ति एवं चिन्तनं मेत्तं मनोकम्मं नाम। **अनावट्टद्वारताया** ति अपिहितद्वारताय। तत्थ सब्बद्वारानि विवरित्वापि सीलवन्तानं अदायको अकारको पिहितद्वारोयेव[1]। सब्बद्वारानि पन पिदहित्वापि तेसं दायको कारको दिवट्टद्वारोयेव।
15 इति सीलवन्तेसु गेहद्वारं आगतेसु सन्तञ्ञेव नत्थी ति अवत्वा दातब्बं। एवं अनावटद्वारता नाम होति।

आमिसानुप्पदानेना ति पुरेभत्तं परिभुञ्जितब्बकं आमिसं नाम, तस्मा सीलवन्तानं यागुभत्तसम्पदानेना ति अत्थो। **कल्याणेन मनसा अनुकम्पन्ती** ति "सब्बे सत्ता सुखिता[2] होन्तु अवेरा[3] अरोगा
20 अब्यापज्जा" ति एवं हितफरणेन। अपिच उपट्ठाकानं गेहं अञ्ञे सीलवन्ते सब्रह्मचारी गहेत्वा पविसन्तापि कल्याणेन चेतसा अनुकम्पन्ति नाम। **सुतं परियोदापेन्ती** ति यं तेसं पकतिया सुतं[4] अत्थि, तस्स अत्थं कथेत्वा कङ्खं विनोदेन्ति, तथत्ताय वा पटिपज्जापेन्ति। सेसमिधापि पुरिमनयेनेव योजेतब्बं।

१. पिहितदारको—रो०। २. सुखी—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि। ४. सतं—रो०।

३२. **अलमत्तो** (दी० नि० ३.१४८) ति पुत्तदारभरणं कत्वा अगारं अज्झावसनसमत्थो। **पण्डितो** ति दिसानमस्सनट्ठाने पण्डितो हुत्वा। **सण्हो** ति सुखुमत्थदस्सनेन सण्हवाचाभणनेन वा सण्हो हुत्वा। R. 958 **पटिभानवा** ति दिसानमस्सनट्ठाने पटिभानवा हुत्वा **निवातवुत्ती** ति नीचवुत्ति। **अत्थद्धो** ति थम्भरहितो। **उट्ठानको** ति उट्ठानवीरिय- 5 सम्पन्नो। **अनलसो** ति निक्कोसज्जो। **अच्छिन्नवुत्ती** ति निरन्तरकरण- वसेन अखण्डवुत्ति। **मेधावी** ति ठानुप्पत्तिया[1] पञ्ञाय समन्नागतो।

सङ्गाहको ति **चतूहि** सङ्गहवत्थूहि सङ्गहकरो। **मित्तकरो** ति मित्तगवेसनो **वदञ्ञू** पुब्बकारिना, वुत्तवचनं जानाति। सहायकस्स घरं गतकाले "मय्हं सहायकस्स वेठनं देथ, साटकं देथ, मनुस्सानं भत्तवेतनं 10 देथा" ति वुत्तवचनमनुस्सरन्तो तस्स अत्तनो गेहं आगतस्स तत्तकं वा B. 141 ततो अतिरेकं वा पटिकत्ता ति अत्थो। अपिच सहायकस्स घरं गन्त्वा इमं[2] नाम गण्हिस्सामी ति आगतं सहायकं लज्जाय गण्हितुं[3] असक्कोन्तं अनिच्छारितम्पि तस्स वाचं ञत्वा येन अत्थेन सो आगतो, तं निप्फादेन्तो वदञ्ञू नाम। येन येन वा पन सहायकस्स ऊनं होति, 15 ओलोकेत्वा तं तं देन्तो पि वदञ्ञूयेव। **नेता** ति तं तं अत्थं दस्सेन्तो पञ्ञाय नेता। विविधानि कारणानि दस्सेन्तो नेती ति **विनेता**। पुनप्पुनं नेती ति **अनुनेता**।

तत्थ तत्था ति तस्मिं तस्मिं पुग्गले। **रथस्साणीव यायतो** ति यथा आणिया सतियेव रथो याति, असति न याति, एवं इमेसु सङ्गहेसु 20 सतियेव लोको वत्तति, असति न वत्तति। तेन वुत्तं "एते खो सङ्गहा लोके, रथस्साणीव यायतो" ति।

न माता पुत्तकारणा ति यदि माता एते सङ्गहे पुत्तस्स न करेय्य, पुत्तकारणा मानं वा पूजं वा न लभेय्य।

१. ० पत्तिया—रो०। २. इदं—रो०।
३. वदितुं—रो०।

सङ्गहा एते ति उपयोगवचने पच्चत्तं। "सङ्गहे एते" ति वा पाठो। **सम्मपेक्खन्तीति** सम्मा पेक्खन्ति। **पासंसा च भवन्ती** ति पसंसनीया च भवन्ति।

इति भगवा या दिसा सन्धाय ते गहपतिपुत्त पिता आह "दिसा 5 नमस्सेय्यासी" ति, इमा ता छ दिसा। यदि त्वं पितु वचनं करोसि, इमा दिसा नमस्साति दस्सेन्तो सिङ्गालस्स पुच्छाय ठत्वा देसनं R. 959 मत्थकं पापेत्वा राजगहं पिण्डाय पाविसि। सिङ्गालकोपि सरणेसु पतिट्ठाय चत्तालीसकोटिधनं बुद्धसासने विकिरित्वा पुञ्ञकम्मं कत्वा सग्गपरायणो अहोसि। इमस्मिं च पन सुत्ते यं[1] गिहीहि कत्तब्बं कम्मं 10 नाम, त अकथितं नत्थि, गिहिविनयो नामायं सुत्तन्तो। तस्मा इमं सुत्वा यथानुसिट्ठं[2] पटिपज्जमानस्स वुद्धियेव पाटिकङ्खा, नो परिहानी ति।

सिङ्गालसुत्तवण्णना निट्ठिता।

१. यं किञ्चि—रो०। २. ०तथा—रो०।

(९) आटानाटियसुत्तवण्णना

१. पठमभाणवारवण्णना

R. 960 B. 142

१. **एवं मे सुतं** (दी० नि० ३.१५०) ति आटानाटियसुत्तं। तत्रायमपुब्बपदवण्णना। **चतुद्दिसं रक्खं ठपेत्वा** ति असुरसेनाय निवारणत्थं सक्कस्स देवानमिन्दस्स चतूसु दिसासु आरक्खं ठपेत्वा। **गुम्बं ठपेत्वा** ति बलगुम्बं ठपेत्वा। **ओवरणं ठपेत्वा** ति चतूसु दिसासु आरक्खके[1] ठपेत्वा। एवं सक्कस्स देवानमिन्दस्स[2] आरक्खं सुसंविहितं 5
कत्वा आटानाटनगरे निसिन्ना सत्त बुद्धे आरब्भ इमं परित्तं बन्धित्वा "ये सत्थु धम्मआणं अम्हाकञ्च राजआणं न सुणन्ति, तेसं इदञ्चिदञ्च करिस्सामा" ति सावनं कत्वा अत्तनोपि चतूसु दिसासु महतिया च यक्खसेनायातिआदीहि चतूहि सेनाहि आरक्खं संविदहित्वा अभिक्कन्ताय रत्तिया...पे०...एकमन्तं निसीदिंसु। 10

अभिक्कन्ताय रत्तिया ति एत्थ अभिक्कन्तसद्दो खयसुन्दराभिरूप-अब्भनुमोदनादीसु दिस्सति। तत्थ "अभिक्कन्ता, भन्ते रत्ति, निक्खन्तो पठमो यामो, चिरनिसिन्नो भिक्खुसंघो उद्दिसतु, भन्ते, भगवा भिक्खूनं पातिमोक्खं" (अं० नि० ३.३१२) ति एवमादीसु खये दिस्सति। "अयं इमेसं चतुन्नं पुग्गलानं अभिक्कन्ततरो पणीततरो चा" 15
(अं० नि० २.१०६) ति एवमादीसु सुन्दरे।

R. 961

"को मे वन्दति पादानि, इद्धिया यससा जलं।
अभिक्कन्तेन वण्णेन, सब्बे ओभासयं दिसा"
(नि० व० ७७) ति॥

एवमादीसु अभिरूपे। "अभिक्कन्तं, भो गोतम, (पारा० ८) ति 20
एवमादीसु अब्भनुमोदने। इध पन खये। तेन अभिक्कन्ताय रत्तिया, परिक्खीणाय रत्तिया ति वुत्तं होति।

१. दिसारक्खके—रो०। २. देवराजस्स—रो०।

अभिक्कन्तवण्णा ति इध अभिक्कन्तसद्दो अभिरूपे। वण्णसद्दो पन छवित्थुतिकुलवग्गकारणसण्ठानपमाणरूपायतनादीसु दिस्सति। तत्थ "सुवण्णवण्णोसि भगवा" (म० नि० २.४००) ति एवमादीसु छवियं। "कदा सञ्ञूळ्हा पन ते, गहपति, इमे समणस्स गोतमस्स वण्णा" (म० नि० २.६०) ति एवमादीसु थुतियं। "चत्तारोमे, भो गोतम, वण्णा" (दी० नि० १.८०) ति एवमादीसु कुलवग्गे। "अथ केन नु वण्णेन गन्धथेनोति वुच्चती" (सं नि० १.२०५) तिआदीसु कारणे। "महन्तं हत्थिराजवण्णं अभिनिम्मिनित्वा" (सं० नि० १.१०४) ति एवमादीसु सण्ठाने। "तयो पत्तस्स वण्णा" (पारा० ३४६) ति एवमादीसु पमाणे। "वण्णो गन्धो रसो ओजा" एवमादीसु रूपायतने। सो इध छवियं दट्ठब्बो। तेन "अभिक्कन्तवण्णा अभिरूपच्छवी" ति वुत्तं होति।

केवलकप्पं ति एत्थ केवलसद्दो अनवसेसयेभुय्यअब्यामिस्सानतिरेकदळ्हत्थविसंयोगादिअनेकत्थो। तथा हिस्स केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं" (पारा० ३) ति एवमादीसु अनवसेसता अत्थो। "केवलकप्पा च अङ्गमागधा पहूतं खादनीयं भोजनीयं आदाय अभिक्कमितुकामा होन्ती" (म० व० ३६) ति एवमादीसु येभुय्यता। "केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होती" (म० व० ३) ति एवमादीसु अब्यामिस्सा। "केवलं सद्धामत्तकं नून आयमायस्मा" (अं० नि० ३.८७) ति एवमादीसु अनतिरेकता। "आयस्मतो, भन्ते, अनुरुद्धस्स बाहिको नाम सद्धिविहारिको केवलकप्पं संघभेदाय ठितो" (अं० नि० २.२५४) ति एवमादीसु दळ्हत्थता। "केवली[1] वुसितवा उत्तमपुरिसो ति वुच्चती" (अं० नि० ३.१११) ति एवमादीसु विसंयोगो। इध पनस्स अनवसेसत्थो अधिप्पेतो।

१. केवल—दो०।

कप्पसद्दो पनायं अभिसद्दहनवोहारकालपञ्ञत्तिछेदनविकप्पलेस-समन्तभावादिअनेकत्थो। तथा हिस्स "ओकप्पनियमेतं भोतो गोतमस्स। यथा तं अरहतो सम्मासम्बुद्धस्सा" (म० नि० १.३०७) ति एवमादीसु अभिसद्दहनमत्थो। "अनुजानामि, भिक्खवे, पञ्चहि समणकप्पेहि फलं परिभुञ्जितुं" (चु० व० १९८) ति एवमादीसु 5 R. 962 वोहारो। "येन सुदं निच्चकप्पं विहरामी" (म० नि० १.३०७) ति एवमादीसु कालो। "इच्चायस्मा कप्पो" (सु० नि० ४३३) ति एवमादीसु पञ्ञत्ति। "अलङ्कतो कप्पितकेसमस्सू" (वि० व० १०४) ति एवमादीसु छेदनं। "कप्पति द्वङ्गुलकप्पो" (चु० व० ४१६) ति एवमादीसु विकप्पो, अत्थि कप्पो निपज्जितुं" (अं० नि० ३.४१६) 10 ति एवमादीसु लेसो। "केवलकप्पं वेळुवनं ओभासेत्वा" (सं० नि० १.४९) ति एवमादीसु समन्तभावो। इध पन[1] समन्तभावो B. 144 अत्थो अधिप्पेतो। तस्मा "केवलकप्पं गिज्झकूटं" ति एत्थ अनवसेसं समन्ततो गिज्झकूटं ति एवमत्थो दट्ठब्बो।

ओभासेत्वा ति वत्थमालालङ्कारसरीरसमुट्ठिताय आभाय 15 फरित्वा, चन्दिमा विय सूरियो विय च एकोभासं एकपज्जोतं करित्वा ति अत्थो। **एकमन्तं निसीदिंसू** ति देवतानं दसबलस्स सन्तिके निसिन्नट्ठानं नाम न[2] बहु, इमस्मिं पन सुत्ते परित्तगारववसेन निसीदिंसु।

२. **वेस्सवणो** ति किञ्चापि चत्तारो महाराजानो आगता, 20 वेस्सवणो पन दसबलस्स विस्सासिको कथापवत्तने ब्यत्तो सुसिक्खितो, तस्मा वेस्सवणो महाराजा भगवन्तं एतदवोच। **उळारा** ति महेसक्खानुभावसम्पन्ना। **पाणातिपाता वेरमणिया** ति पाणातिपाते दिट्ठधम्मिकसम्परायिकं आदीनवं दस्सेत्वा ततो वेरमणिया धम्मं देसेति। सेसेसुपि एसेव नयो। **तत्थ सन्ति उळारा यक्खा निवासिनो** 25 ति तेसु सेनासनेसु सन्ति उळारा यक्खा निबद्धवासिनो। **आटानाटियं**

१. पनस्स—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

ति आटानाटननगरे उद्धत्ता एवंनामं । किं पन भगवतो अपच्चक्खधम्मो नाम अत्थी ति, नत्थि । अथ कस्मा वेस्सवणो "उग्गण्हातु, भन्ते, भगवा" तिआदिमाह ? ओकासकरणत्थं । सो हि भगवन्तं इमं परित्तं सावेतुं ओकासं कारेन्तो एवमाह । सत्थु कथिते इमं परित्तं गरु
5 भविस्सती तिपि आह । **फासुविहाराया** ति गमनट्ठानादीसु चतूसु इरियापथेसु सुखविहाराय ।

३. **चक्खुमन्तस्सा** (दी० नि० ३.१५१) ति न विपस्सीयेव चक्खुमा, सत्तपि बुद्धाचक्खुमन्तो, तस्मा एकेकस्स बुद्धस्स एतानि सत्त सत्त नामानि होन्ति । सब्बेपि बुद्धा चक्खुमन्तो, सब्बे सब्बभूतानु-
R. 963 10 कम्पिनो, सब्बे न्हातकिलेसत्ता न्हातका । सब्बे मारसेनापमद्दिनो, सब्बे वुसितवन्तो, सब्बे विमुत्ता, सब्बे अङ्गतो रस्मीनं निक्खन्तत्ता अङ्गीरसा । न केवलञ्च बुद्धानं एतानेव सत्त नामानि, असङ्ख्येय्यानि नामानि सगुणेन महेसिनोति वुत्तं ।

वेस्सवणो पन अत्तनो पाकटनामवसेन एवमाह । **ते जना** ति इध
15 खीणासवा जनाति अधिप्पेता । **अपिसुणाथा** ति देसनासीसमत्तमेतं,
B. 145 अमुसा अपिसुणा अफरुसा मन्तभाणिनो ति अत्थो । **महत्ता** ति महन्तभावं पत्ता । "महन्ता" तिपि पाठो, महन्ता ति अत्थो । **वीतसारदा** ति निसारदा विगतलोमहंसा ।

हितं ति मेत्ताफरणेन हितं । **यं नमस्सन्तो** ति एत्थ यं ति
20 निपातमत्तं । **महत्तं** ति महन्तं । अयमेव वा पाठो, इदं वुत्तं होति 'ये चापि[1] लोके किलेसनिब्बानेन निब्बुता यथाभूतं विपस्सिसु, विज्जादिगुणसम्पन्नञ्च हितं देवमनुस्सानं गोतमं नमस्सन्ति, ते जना अपिसुणा, तेसम्पि नमत्थू" ति । अट्ठकथायं पन ते जना अपिसुणा ति ते बुद्धा अपिसुणा ति एवं[2] पठमगाथाय बुद्धानंयेव वण्णो कथितो,
25 तस्मा पठमगाथा सत्तन्नं बुद्धानं वसेन वुत्ता । दुतियगाथाय "गोतमं"

१ वापि — रो० । २. ताव—रो० ।

ति देसनामुखमत्तमेतं। अयम्पि हि सत्तन्नं येव वसेन वुत्ता ति वेदितब्बा। अयञ्हेत्थ अत्थो—लोके पण्डिता देवमनुस्सा यं नमस्सन्ति गोतमं, तस्स च ततो पुरिमानञ्च बुद्धानं नमत्थू ति।

४. **यतो उग्गच्छती** ति यतो ठानतो उदेति। **अदिच्चो** ति अदितिया पुत्ता, वेवचनमत्तं वा एतं सुरियसद्दस्स। महन्तं मण्डलं 5 अस्सा ति **मण्डलीमहा**। **यस्स चुग्गच्छमानस्सा** ति यम्हि उग्गच्छमाने। **संवरीपि निरुज्झती** ति रत्ति अन्तरधायति। **यस्स चुग्गते** ति यस्मिं उग्गते।

रहदो ति उदकरहदो। **तत्था** ति यतो उग्गच्छति सुरियो, तस्मिं ठाने। **समुद्दो** ति यो सो रहदो ति वुत्तो, सो न अञ्ञो, अथ 10 खो समुद्दो। **सरितोदको** ति विसटोदको, सरिता नानप्पकारा नदियो अस्स उदके पविट्ठा ति वा **सरितोदको**। **एवं तं तत्थ जानन्ती** ति तं रहदं तत्थ एवं जानन्ति। किं ति जानन्ति? समुद्दो R. 964 सारितोदको ति एवं जानन्ति।

इतो ति सिनेरुतो वा तेसं निसिन्नट्ठानतो वा। **जनो** ति अयं 15 महाजनो। **एकनामा** ति इन्दनामेन एकनामा। सब्बेसं किर तेसं सक्कस्स देवरञ्ञो नाममेव नामकंसु। **असी** ति **दस एको चा** ति एकनवुतिजना। **इन्दनामा** ति इन्दो ति एवंनामा। **बुद्धं आदिच्चबन्धुनं** ति किलेसनिद्दापगमनेनापि बुद्धं। आदिच्चेन समानगोत्तताय पि आदिच्चबन्धुनं **कुसलेन समेक्खसी** ति अनवज्जेन 20 निपुणेन वा सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन महाजनं ओलोकेसि। **अमनुस्सापि तं वन्दन्ती** ति अमनुस्सापि तं "सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन महाजनं ओलोकेसी" B. 146 ति वत्वा वन्दन्ति। **सुतं नेतं अभिण्हसो** ति एतं अम्हेहि अभिक्खणं सुतं। **जिनं वन्दाम गोतमं** ति अम्हेहि पुट्ठा जिनं वन्दाम गोतमं ति वदन्ति। 25

५. **येन पेता पवुच्चन्ती** ति पेता नाम कालङ्कता, ते येन दिसाभागेन नीहरियन्तू ति वुच्चन्ति। **पिसुणा पिट्ठिमंसिका**

(दी० नि० ३.१५२) ति पिसुणावाचा चेव पिट्ठिमंसं खादन्ता विय परम्मुखा गरहका च। एते च येन नीहरियन्तू ति वुच्चन्ति, सब्बेपि हेते दक्खिणद्वारेन नीहरित्वा दक्खिणतो नगरस्स डय्हन्तु वा छिज्जन्तु वा हञ्ञन्तु वा ति एवं वुच्चन्ति। **इतो सा दक्खिणा दिसा** ति येन दिसाभागेन ते पेता च पिसुणादिका च नीहरियन्तू ति वुच्चन्ति, इतो सा दक्खिणादिसा। **इतो** ति सिनेरुतो वा तेसं निसिन्नट्ठानतो वा। **कुम्भण्डानं** ति ते किर देवा महोदरा होन्ति, रहस्सङ्गम्पि च नेसं कुम्भो विय महन्तं होति। तस्मा कुम्भण्डा ति वुच्चन्ति।

६. **यत्थ चोग्गच्छति सूरियो** (दी० नि० ३.१५३) ति यस्मिं दिसाभागे सूरियो अत्थं गच्छति।

७. **येना** ति येन दिसाभागेन। **महानेरू** ति महासिनेरु पब्बतराजा। **सुदस्सनो** ति सोवण्णमयत्ता सुन्दरदस्सनो। सिनेरुस्स हि पाचीनपस्सं रजतमयं, दक्खिणपस्सं मणिमयं, पच्छिमपस्सं फलिकमयं, उत्तरपस्सं सोवण्णमयं, तं मनुञ्ञदस्सनं होति। तस्मा येन दिसाभागेन सिनेरु सुदस्सनोति अयमेत्थत्थो। **मनुस्सा तत्थ जायन्ती** ति तत्थ उत्तरकुरुम्हि मनुस्सा जायन्ति। **अममा** ति वत्थाभरणपानभोजनादीसुपि ममत्तविरहिता। **अपरिग्गहा** ति इत्थिपरिग्गहेन अपरिग्गहा। तेसं किर "अयं मय्हं भरिया" ति ममत्तं न होति, मातरं वा भगिनिं वा दिस्वा छन्दरागो नुप्पज्जति।

नपि नीयन्ति नङ्गला ति नङ्गलानिपि तत्थ "कसिकम्मं करिस्सामा" ति न खेत्तं नीयन्ति। **अकट्ठपाकिमं** ति अकट्ठे भूमिभागे अरञ्ञे सयमेव जातं। **तण्डुलप्फलं** ति तण्डुलाव तस्स फलं होति।

तुण्डिकीरे पचित्वाना ति उक्खलियं आकिरित्वा निद्धुमङ्गारेन अग्गिना पचित्वा। तत्थ किर जोतिकपासाणा[1] नाम होन्ति। अथ

[1]. जोतिपासाणा—रो०।

खो ते तयो पासाणे ठपेत्वा तं उक्खलिं आरोपेन्ति। पासाणेहि तेजो समुट्ठहित्वा तं पचति। **ततो भुञ्जन्ति भोजनं** ति ततो उक्खलितो भोजनमेव भुञ्जन्ति, अञ्ञो सूपो वा ब्यञ्जनं वा न होति, भुञ्जन्तानं चित्तानुकूलोयेवस्स रसो होति। ते तं ठानं सम्पत्तानं देन्तियेव, मच्छरियचित्तं नाम न होति। ये बुद्धपच्चेकबुद्धादयोपि महिद्धिका तत्थ गन्त्वा पिण्डपातं गण्हन्ति। B. 147 5

गाविं एकखुरं कत्वा गाविं गहेत्वा एकखुरं वाहनमेव कत्वा। तं अभिरुय्ह वेस्सवणस्स परिचारका यक्खा। **अनुयन्ति दिसोदिसं** ति ताय ताय दिसाय चरन्ति। **पसुं एकखुरं कत्वा** ति ठपेत्वा गाविं अवसेसचतुप्पदजातिकं पसुं एकखुरं वाहनमेव कत्वा दिसोदिसं अनुयन्ति। 10

इत्थिं वा वाहनं कत्वा ति येभुय्येन गब्भिनिं मातुगामं वाहनं करित्वा। तस्सा पिट्ठिया निसीदित्वा चरन्ति। तस्सा किर पिट्ठि ओनमितुं सहति। इतरो पन इत्थियो याने योजेन्ति। **पुरिसं वाहनं कत्वा** ति पुरिसे गहेत्वा याने योजेन्ति। गण्हन्ता च सम्मादिट्ठिके गहेतुं न सक्कोन्ति। येभुय्येन पच्चन्तिममिलक्खुवासिके गण्हन्ति। अञ्ञतरो किरेत्थ जानपदो एकस्स थेरस्स समीपे निसीदित्वा निद्दायति। थेरो "उपासक अतिविय निद्दायसी" ति पुच्छि। "अज्ज, भन्ते, सब्बरत्तिं वेस्सवणदासेहि किलमितोम्ही" ति आह। 15 R. 966

कुमारिं वाहनं कत्वा ति कुमारियो गहेत्वा एकखुरं वाहनं कत्वा रथे योजेन्ति। **कुमारवाहनेपि** एसेव नयो। **पचारा तस्स राजिनो** ति तस्स रञ्ञो परिचारिका। **हत्थियानं अस्सयानं** ति न केवलं गोयानादीनियेव, हत्थिअस्सयानादीनिपि अभिरुहित्वा विचरन्ति। **दिब्बं यानं** ति अञ्ञम्पि नेसं बहुविधं दिब्बयानं उपट्ठितमेव होति, एतानि ताव नेसं उपकप्पनयानानि। ते पन पासादे वरसयनम्हि निपन्नापि पीठसिविकादीसु च निसिन्नापि विचरन्ति। तेन वुत्तं "पासादा सिविका चेवा" ति। **महाराजस्स** 20 25

यसस्सिनो ति एवं आनुभावसम्पन्नस्स यसस्सिनो महाराजस्स एतानि यानानि निब्बत्तं ति ।

B. 148 **तस्स च नगरा अहु अन्तलिक्खे सुमापिता** ति तस्स रञ्ञो आकासे सुट्ठु मापिता एते आटानाटादिका नगरा अहेसुं, नगरानि 5 भविंसू ति अत्थो । एकं हिस्स नगरं आटानाटा नाम आसि, एकं कुसिनाटा नाम, एकं परकुसिनाटा नाम, एकं नाटपूरिया नाम, एकं परकुसिटनाटा नाम ।

उत्तरेन कसिवन्तो ति तस्मिं ठत्वा उजुं उत्तरदिसाय कसिवन्तो नाम अञ्ञं नगरं । **जनोघमपरेन च** ति एतस्स अपरभागे जनोघं 10 नाम अञ्ञं नगरं । **नवनवतियो** ति अञ्ञम्पि नवनवतियो नाम एकं नगरं । अपरं अम्बरअम्बरवतियो नाम । **आळकमन्दा** ति अपरम्पि[1] आळकमन्दा नाम राजधानी ।

तस्मा कुवेरो महाराजा ति अयं किर अनुप्पन्ने बुद्धे कुवेरो नाम ब्राह्मणो हुत्वा उच्छुवप्पं कारेत्वा सत्त यन्तानि योजेसि । एकिस्साय[2] 15 यन्तसालाय[3] उट्ठितं अयं आगतागतस्स महाजनस्स दत्वा पुञ्ञं अकासि । अवसेससालाहि तत्थेव बहुतरो आयो उट्ठासि । सो तेन पसीदित्वा अवसेससालासुपि उप्पज्जनकं गहेत्वा वीसति वस्ससहस्सानि दानं अदासि । सो कालं कत्वा चातुमहाराजिकेसु कुवेरो नाम देवपुत्तो जातो । अपरभागे विसाणाय राजधानिया रज्जं कारेसि । ततो 20 पट्ठाय वेस्सवणो ति वुच्चति ।

पच्चेसन्तो पकासेन्ती ति पटिएसन्तो विसुं विसुं अत्थे R. 967 उपपरिक्खमाना अनुसासमाना अञ्ञे द्वादस यक्खरट्ठिका पकासेन्ति । ते किर यक्खरट्ठिका सासनं गहेत्वा द्वादसन्नं यक्खदोवारिकानं निवेदेन्ति । यक्खदोवारिका[4] तं सासनं महाराजस्स निवेदेन्ति । 25 इदानि तेसं यक्खरट्ठिकानं नामं दस्सेन्तो **ततोला** तिआदिमाह । तेसु

१. रो० पोत्थके नत्थि । २. एकिस्सा पन—रो० ।
३. सालायं—रो० । ४. यक्खदोवारिकानं—रो० ।

किर एको ततोला नाम, एको तत्तला नाम, एको तत्तोतला नाम, एको ओजसि नाम, एको तेजसि नाम, एको ततोजसी नाम। **सूरो राजा** ति एको सूरो नाम, एको राजा नाम, एको सूरोराजा नाम। **अरिट्ठो नेमी** ति एको अरिट्ठो नाम, एको नेमि नाम, एको अरिट्ठनेमि नाम। 5

रहदोपि तत्थ धरणी नामा ति तत्थ पनेको नामेन धरणी नाम उदकरहदो अत्थि, पण्णासयोजना महापोक्खरणी अत्थी ति वुत्तं होति। **यतो मेघा पवस्सन्ती** ति यतो पोक्खरणितो उदकं गहेत्वा मेघा पवस्सन्ति। **वस्सा यतो पतायन्ती** ति यतो वुट्ठियो अवत्थरमाना निगच्छन्ति। मेघेसु किर उट्ठितेसु ततो पोक्खरणितो पुराणउदकं 10 भस्सति। उपरि मेघो उट्ठहित्वा तं पोक्खरणिं नवोदकेन पूरेति। पुराणोदकं हेट्ठिमं हुत्वा निक्खमति। परिपुण्णाय पोक्खरणिया वलाहका विगच्छन्ति[1]। **सभापी** ति सभा[2]। तस्सा किर पोक्खरणिया तीरे सालवतिया नाम लताय परिक्खित्तो द्वादसयोजनिको रतनमण्डपो अत्थि, तं सन्धायेतं वुत्तं। 15

B. 149

पयिरुपासन्ती ति निसीदन्ति। **तत्थ निच्चफला रुक्खा** ति तस्मिं ठाने तं मण्डपं परिवारेत्वा सदा फलिता अम्बजम्बुआदयो रुक्खा निच्चपुप्फिता च चम्पकसालादयो ति दस्सेति। **नानादिजगणायुता** ति विविधपक्खिसङ्घसमाकुला। **मयूरकोञ्चाभिरुदा** ति मयूरेहि कोञ्चसकुणेहि च अभिरुदा उपगीता। 20

जीवञ्जीवकसद्देत्था ति "जीव जीवा" ति एव विरवन्तानं जीवञ्जीवकसकुणानंपि एत्थ सद्दो अत्थि। **ओट्ठवचित्तका** ति "उट्ठेहि, चित्त[3], उट्ठेहि चित्ता[4]" ति एवं वस्समाना उट्ठवचित्तकसकुणापि तत्थ विचरन्ति। **कुक्कुटका** ति वनकुक्कुटका। **कुळीरका** ति सुवण्णकक्कटका। **वने** ति पदुमवने। **पोक्खरसातका** ति पोक्खरसातका नाम सकुणा। 25

R. 968

१. वियच्छन्ति—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. चित्ते—रो०। ४. चित्ते—रो०।

सुकसाळिकसद्देत्था ति सुकानञ्च साळिकानञ्च सद्दो एत्थ। **दण्डमाणवकानि चा** ति मनुस्समुखसकुणा। ते किर द्वीहि हत्थेहि सुवण्णदण्डं गहेत्वा एकं पोक्खरपत्तं अक्कमित्वा अनन्तरे पोक्खरपत्ते सुवण्णदण्डं निक्खिपन्ता विचरन्ति। **सोभति सब्बकालं सा** ति सा
5 पोक्खरणी सब्बकालं सोभति। **कुवेरनळिनी** ति कुवेरस्स नळिनी पदुमसरभूता, सा धरणी नाम पोक्खरणी सदा निरन्तरं सोभति।

८. **यस्स कस्सची** (दी० नि० ३.१५५) ति इदं वेस्सवणो आटानाटियं रक्खं निट्ठपेत्वा तस्सा परिकम्मं दस्सेन्तो आह। तत्थ **सुग्गहिता** ति अत्थञ्च ब्यञ्जनञ्च परिसोधेत्वा सट्ठु उग्गहिता। **समत्ता**
B. 150 10 **परियापुता** ति पदब्यञ्जनानि अहापेत्वा परिपुण्णं उग्गहिता। अत्थम्पि पाळिम्पि विसंवादेत्वा सब्बसो वा पन अप्पगुणं[1] कत्वा भणन्तस्स हि परित्तं तेजवन्तं न होति, सब्बसो पगुणं कत्वा भणन्तस्सेव तेजवन्तं होति। लाभहेतु उग्गहेत्वा भणन्तस्सापि अत्थं न साधेति, निस्सरणपक्खे ठत्वा मेत्तं पुरेचारिकं कत्वा भणन्तस्सेव अत्थाय होती
15 ति दस्सेति। **यक्खपचारो** ति यक्खपरिचारको।

वत्थुं वा ति घरवत्थुं वा। **वासं वा** ति तत्थ निबद्धवासं वा। **समितिं** ति समागमं। **अनुवय्हं** ति न आवाहयुत्तं। **अविवय्हं** ति न विवाहयुत्तं। तेन सह आवाहविवाहं न करेय्युं ति अत्थो। **अत्ताहिपि परिपुण्णाही** ति "कळारक्खि कळारदन्ता" ति एवं एतेसं अत्तभावं
20 उपनेत्वा वुत्ताहि परिपुण्णब्यञ्जनाहि परिभासाहि परिभासेय्युं यक्खअक्कोसेहि नाम अक्कोसेय्युं ति अत्थो। **रित्तम्पिस्स पत्तं** ति भिक्खूनं पत्तसदिसमेव लोहपत्तं होति। तं सीसे निक्कुज्जितं याव गलवाटका भस्सति। अथ नं मज्झे अयोखीलेन आकोटेन्ति।

R. 969 **चण्डा** ति कोधना। **रुद्धा** ति विरुद्धा। **रभसा** ति करणुत्तरिया।
25 **नेव महाराजानं आदियन्ती** ति वचनं न गण्हन्ति, आणं न करोन्ति। **महाराजानं पुरिसकानं** ति अट्ठवीसतियक्खसेनापतीनं। **पुरिसकानं**

१. अपगुणं—रो०।

ति यक्खसेनापतीनं ये मनुस्सा तेसं। **अवरुद्धा नामा** ति पच्चामित्ता वेरिनो। **उज्झापेतब्बं** ति परित्तं वत्वा अमनुस्से पटिक्कमापेतुं असक्कोन्तेन एतेसं यक्खानं उज्झापेतब्बं, एते जानापेतब्बा ति अत्थो।

२. परित्तपरिकम्मकथा

९. इध पन ठत्वा[1] परित्तस्स परिकम्मं कथेतब्बं। पठममेव हि 5 आटानाटियसुत्तं न भणितब्बं, मेत्तसुत्तं धजग्गसुत्तं रतनसुत्तं ति इमानि सत्ताहं भणितब्बानि। सचे मुञ्चति, सुन्दरं। नो चे मुञ्चति, आटानाटियसुत्तं भणितब्बं, तं भणन्तेन भिक्खुना पिट्ठं वा मंसं वा न खादितब्बं, सुसाने न वसितब्बं। कस्मा अमनुस्सा ओकासं[2] लभन्ति। परित्तकरणट्ठानं हरितुपलित्तं[3] कारेत्वा तत्थ परिसुद्धं आसनं 10 पञ्चपेत्वा निसीदितब्बं।

परित्तकारको भिक्खु विहारतो घरं नेन्तेहि[4] फलकावुधेहि B. 151 परिवारेत्वा नेतब्बो। अब्भोकासे निसीदित्वा न वत्तब्बं द्वारवातपानानि पिदहित्वा निसिन्नेन आवुधहत्थेहि संपरिवारितेन मेत्तचित्तं पुरेचारिकं कत्वा वत्तब्बं। पठमं सिक्खापदानि गाहापेत्वा सीले 15 पतिट्ठितस्स परित्तं कातब्बं। एवम्पि मोचेतुं असक्कोन्तेन विहारं आनेत्वा[5] चेतियङ्गणे निपज्जापेत्वा आसनपूजं कारेत्वा दीपे जालापेत्वा चेतियङ्गणं सम्मज्जित्वा मङ्गलकथा वत्तब्बा। सब्बसन्निपातो घोसेतब्बो। विहारस्स उपवने जेट्ठकरुक्खो नाम होति, तत्थ भिक्खुसंघो तुम्हाकं आगमनं पटिमानेती ति पहिणितब्बं। सब्बसन्निपातट्ठाने 20 अनागन्तुं नाम न लब्भति। ततो अमनुस्सगहितको "त्वं को नामा" ति पुच्छितब्बो। नामे कथिते नामेनेव आलपितब्बो। इत्थन्नाम तुय्हं

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. ओतारं—रो०।
३. हरितुपत्तं—रो०। ४. नेतेहि—रो०।
५. नेत्वा—रो०।

मालागन्धादीसु पत्ति आसनपूजाय पत्ति पिण्डपाते पत्ति, भिक्खुसंघेन तुम्हं पण्णाकारत्थाय महामङ्गलकथा वुत्ता भिक्खुसंघे गारवेन एतं मुञ्चाही ति मोचेतब्बो। सचे न[1] मुञ्चति, देवतानं आरोचेतब्बं" तुम्हे जानाथ, अयं अमनुस्सो अम्हाकं वचनं न करोति, मयं बुद्धआणं करिस्सामा" ति परित्तं कातब्बं। एतं ताव गिहीनं परिकम्मं। सचे पन भिक्खु अमनुस्सेन गहितो होति, आसनानि धोवित्वा सब्बसन्निपातं घोसापेत्वा गन्धमालादीसु पत्तिं दत्वा परित्तं भणितब्बं। इदं भिक्खूनं परिकम्मं।

निक्कन्दितब्बं (दी० नि० ३.१५७) ति सब्बसन्निपातं घोसापेत्वा[2] अट्ठवीसति यक्खसेनापतयो कन्दितब्बा। **विरवितब्बं** ति "अयं यक्खो गण्हाती" तिआदीनि भणन्तेन तेहि सद्धिं कथेतब्बं। तत्थ **गण्हाती** ति सरीरे अधिमुच्चति। **आविसती** ति तस्सेव वेवचनं। अथ वा लग्गति न अपेती ति वुत्तं होति। **हेठेती** ति उप्पन्नं रोगं वड्ढेन्तो बाधति। **विहेठेती** ति तस्सेव वेवचनं। **हिंसती** ति अप्पमंसलोहितं करोन्तो दुक्खापेति। **विहिंसती** ति तस्सेव वेवचनं। **न मुञ्चती** ति अप्पमादगाहो हुत्वा मुञ्चितुं न इच्छति, एवं एतेसं विरवितब्बं।

इदानि येसं एवं विरवितब्बं, ते दस्सेतुं **कतमेसं यक्खानं** तिआदीमाह। तत्थ **इन्दो सोमो** तिआदीनि तेसं नामानि। तेसु **वेस्सामित्तो** (दी० नि० ३.१५७) ति वेस्सामित्तपब्बतवासी एको यक्खो। **युगन्धरोपि** युगन्धरपब्बतवासीयेव। **हिरि नेत्ति च मन्दियो** ति हिरि च नेत्ति च मन्दियो च। **मणि माणि वरो दीघो** ति मणि च माणि च वरो[3] च दीघो च। **अथोसेरीसको सहा** ति तेहि सह अञ्ञो सेरीसको नाम। "इमेसं यक्खानं...पे०...उज्झापेतब्ब" ति

१. पन न—रो०। २. घोसेत्वा—रो०।
३. चरो—रो०।

अयं यक्खो इमं[१] हेठेति विहेठेति न मुञ्चती ति एवं एतेसं यक्खसेना-
पतीनं आरोचेतब्बं। ततो ते भिक्खु संघो अत्तनो धम्मआणं करोति,
मयम्पि अम्हाकं यक्खराजआणं करोमा ति उस्सुक्कं करिस्सन्ति।
एवं अमनुस्सानं ओकासो न भविस्सति, बुद्धसावकानं फासुविहारो
च भविस्सती ति दस्सेन्तो "अयं खो सा, मारिस, आटानाटिया 5
रक्खा" तिआदिमाह। तं सब्बं, ततो परञ्च उत्तानत्थमेवा ति।

आटानाटियसुत्तवण्णना निट्ठिता।

१. रो० पोत्थके नत्थि।

(१०) सङ्गीतिसुत्तवण्णना

१. निदानवण्णना

B. 153
R. 971

१. एवं मे सुतं ति सङ्गीतिसुत्तं। तत्रायमपुब्बपदवण्णना। चारिकं चरमानो (दी० नि० ३.१६६) ति निबद्धचारिकं चरमानो। तदा किर सत्था दससहस्सचक्कवाळे ञाणजालं पत्थरित्वा लोकं ओलोकयमानो पावानगरवासिनो मल्लराजानो[1] दिस्वा इमे राजानो
5 मय्हं सब्बञ्ञुतञ्ञाणजालस्स अन्तो पञ्ञायन्ति, किं नु खो ति आवज्जन्तो "राजानो एकं सन्धागारं कारेसुं, मयि गते मङ्गलं भणापेस्सन्ति, अहं तेसं मङ्गलं वत्वा उय्योजेत्वा 'भिक्खुसंघस्स धम्मकथं कथेही' ति सारिपुत्तं वक्खामि, सारिपुत्तो तीहि पिटकेहि सम्मसित्वा चुद्दसपञ्हाधिकेन पञ्हसहस्सेन पटिमण्डेत्वा भिक्खुसंघस्स
10 सङ्गीतिसुत्तं नाम कथेस्सति, सुत्तन्तं आवज्जेत्वा पञ्च भिक्खुसतानि सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणिस्सन्ती" ति इममत्थं दिस्वा चारिकं पक्कन्तो। तेन वुत्तं "मल्लेसु चारिकं चरमानो" ति।

२. उब्भतकनवसन्धागारवण्णना

२. उब्भतकं ति तस्स नामं। उच्चत्ता वा एवं वुत्तं। सन्धागारं ति नगरमज्झे सन्धागारसाला[2]। समणेन वा ति एत्थ यस्मा
15 घरवत्थुपरिग्गहकालेयेव देवता अत्तनो वसनट्ठानं गण्हन्ति। तस्मा देवेन वा ति अवत्वा "समणेन वा ब्राह्मणेन वा केनचि वा मनुस्सभूतेना" ति वुत्तं। येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसू ति भगवतो आगमनं सुत्वा "अम्हेहि गन्त्वापि न भगवा आनीतो, दूतं पेमेत्वापि न पक्कोसापितो, सयमेव पन महाभिक्खुसंघपरिवारो अम्हाकं वसनट्ठानं

१. राजे—रो०। २. सन्थागारसाला—रो०।

सम्पत्तो, अम्हेहि च सन्धागारसाला कारिता, एत्थ मयं दसबलं आनेत्वा मङ्गलं भणापेस्सामा'' ति चिन्तेत्वा उपसङ्कमिंसु ।

३. **येन सन्धागारं तेनुपसङ्कमिंसू** ति तं दिवसं किर सन्धागारे चित्तकम्मं निट्ठपेत्वा अट्टका मुत्तमत्ता होन्ति, बुद्धा च नाम अरञ्ञज्झासया अरञ्ञारामा, अन्तोगामे वसेय्युं वा नो वा । तस्मा भगवतो मनं जानित्वाव पटिजग्गिस्सामा ति चिन्तेत्वा ते भगवन्तं उपसङ्कमिंसु । इदानि पन मनं लभित्वा पटिजग्गितुकामा येन सन्धागारं तेनुपसङ्कमिंसु । **सब्बसन्थरिं** ति यथा सब्बं सन्थतं होति, एवं **येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसू** ति एत्थ पन ते मल्लराजानो सन्धागारं पटिजग्गित्वा नगरवीथियोपि सम्मज्जापेत्वा धजे उस्सापेत्वा गेहद्वारेसु पुण्णघटे च कदलियो च ठपापेत्वा सकलनगरं दीपमालादीहि विप्पकिण्णतारकं विय कत्वा खीरपायके दारके खीरं पाय्येथ, दहरे कुमारे लहुं लहुं भोजापेत्वा सयापेथ, उच्चासद्दं मा करित्थ, अज्ज एकरत्तिं सत्था अन्तोगामे वसिस्सति, बुद्धा नाम अप्पसद्दकामा होन्ती ति भेरिं चरापेत्वा सयं दण्डदीपिकं आदाय येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु ।

R. 972 · 5 · B. 154 · 10 · 15

४. **भगवन्तंयेव पुरक्खत्वा** (दी० नि० ३.१६७) ति भगवन्तं पुरतो कत्वा । तत्थ भगवा भिक्खूनञ्चेव उपासकानञ्च मज्झे निसिन्नो अतिविय विरोचति, समन्तपासादिको सुवण्णवण्णो अभिरूपो दस्सनीयो । पुरिमकायतो[1] सुवण्णवण्णा रस्मि उट्ठहित्वा असीतिहत्थं ठानं गण्हाति । पच्छिमकायतो, दक्खिणहत्थतो, वामहत्थतो सुवण्णवण्णा रस्मि उट्ठहित्वा असीतिहत्थं ठानं गण्हाति । उपरि केसन्ततो पट्ठाय सब्बकेसावट्टेहि मोरगीववण्णा रस्मि उट्ठहित्वा गगनतले असीतिहत्थं ठानं गण्हाति । हेट्ठा पादतलेहि पवाळवण्णा रस्मि उट्ठहित्वा घनपथविं असीतिहत्थं ठानं गण्हाति । एवं समन्ता असीति हत्थमत्तं ठानं छब्बण्णा बुद्धरस्मियो विज्जोतमाना विप्फन्दमाना

20 · 25

१. पुरत्थिमकायतो—रो० ।

विधावन्ति । सब्बे दिसाभागा सुवण्णचम्पकपुप्फेहि विकिरियमाना विय सुवण्णघटतो निक्खन्तसुवण्णरसधाराहि सिञ्चमाना विय पसारितसुवण्णपटपरिक्खित्ता विय वेरम्भवातसमुट्ठितकिंसुककणिकारपुप्फचुण्णसमाकिण्णा विय च विप्पकासन्ति ।

5 भगवतो पि असीतिअनुब्यञ्जनब्यामप्पभाद्वत्तिंसवरलक्खणसमुज्जलं R. 973 सरीरं समुग्गततारकं विय गगनतलं, विकसितमिव पदुमवनं, सब्बपालिफुल्लो विय योजनसतिको परिच्छत्तको पटिपाटिया ठपितानं द्वत्तिंसचन्दानं द्वत्तिंससूरियानं द्वत्तिंसचक्कवत्तिराजानं द्वत्तिंसदेवराजानं द्वत्तिंसमहाब्रह्मानं सिरिया सिरिं अभिभवमानं विय विरोचति । 10 परिवारेत्वा निसिन्ना भिक्खूपि सब्बेव अप्पिच्छा सन्तुट्ठा पविवित्ता असंसट्ठा आरद्धवीरिया वत्तारो वचनक्खमा चोदका पापगरहिनो B. 155 सीलसम्पन्ना समाधिसम्पन्ना पञ्ञाविमुत्ति...विमुत्तिञाणदस्सनसम्पन्ना । तेहि परिवारितो भगवा रत्तकम्बलपरिक्खित्तो विय सुवण्णक्खन्धो, रत्तपदुमवनसण्डमज्झगता विय सुवण्णनावा, पवाळवेदिकापरिक्खित्तो 15 विय सुवण्णपासादो विरोचित्थ ।

असीतिमहाथेरापि नं मेघवण्णं पंसुकूलं पारुपित्वा मणिवम्मिता विय महानागा परिवारयिंसु वन्तरागा भिन्नकिलेसा विजटितजटा छिन्नबन्धना कुले वा गणे वा अलग्गा । इति भगवा सयं वीतरागो वीतरागेहि, वीतदोसो वीतदोसेहि, वीतमोहो वीतमोहेहि, नित्तण्हो 20 नित्तण्हेहि, निक्किलेसो निक्किलेसेहि, सयं बुद्धो बहुस्सुतबुद्धेहि परिवारितो पत्तपरिवारितं विय केसरं, केसरपरिवारता विय कण्णिका, अट्ठनागसहस्सपरिवारितो विय छद्दन्तो नागराजा, नवुतिहंससहस्सपरिवारितो विय धतरट्ठो हंसराजा, सेनङ्गपरिवारितो विय चक्कवत्तिराजा, मरुगणपरिवारितो विय सक्को देवराजा, ब्रह्मगण25 परिवारितो विय हारितो महाब्रह्मा, असमेन बुद्धवेसेन अपरिमाणेन बुद्धविलासेन तस्सं परिसति निसिन्नो पावेय्यके मल्ले बहुदेव रत्तिं धम्मिया कथाय सन्दस्सेत्वा उय्योजेसि ।

एथ च धम्मिकथा नाम सन्धागारअनुमोदनप्पटिसंयुत्ता पकिण्णककथा वेदितब्बा। तदा हि भगवा आकासगङ्गं ओतारेन्तो विय पथवोजं[1] आकड्ढन्तो विय महाजम्बुं मत्थके गहेत्वा चालेन्तो विय योजनियमधुगण्डं चक्कयन्तेन पीळेत्वा मधुपानं पायमानो विय च पावेय्यकानं मल्लानं हितसुखावहं पकिण्णककथं कथेसि। 5

५. तुण्हीभूतं तुण्हीभूतं (दी० नि० ३.१६७) ति यं दिसं अनुविलोकेति, तत्थ तत्थ तुण्हीभूतमेव। अनुविलोकेत्वा ति मंसचक्खुना दिब्बचक्खुना ति द्वीहि चक्खूहि ततो ततो विलोकेत्वा। मंसचक्खुना हि नेसं बहिद्धा इरियापथं परिग्गहेसि। तत्थ[2] एकभिक्खुस्सापि नेव हत्थकुक्कुच्चं न पादकुक्कुच्चं अहोसि, न कोचि सीसमुक्खिपि, न कथं कथेसि, न निद्दायन्तो निसीदि। सब्बेपि तीहि सिक्खाहि सिक्खिता निवाते पदीपसिखा विय निच्चला निसीदिंसु। इति नेसं इमं इरियापथं मंसचक्खुना परिग्गहेसि। आलोकं पन वड्ढयित्वा दिब्बचक्खुना हदयरूपं दिस्वा अब्भन्तरगतं सीलं ओलोकेसि। सो[3] अनेकसतानं भिक्खूनं अन्तोकुम्भियं जलमानं पदीपं विय अरहत्तुपगं सीलं अद्दस। आरद्धविपस्सका हि ते भिक्खू। इति नेसं सीलं दिस्वा "इमेपि भिक्खू मय्हं अनुच्छविका, अहम्पि इमेसं अनुच्छविको" ति चक्खुतलेसु निमित्तं ठपेत्वा भिक्खुसंघं ओलोकेत्वा आयस्मन्तं सारिपुत्तं आमन्तेसि "पिट्ठि मे आगिलायती" ति। कस्मा आगिलायति? भगवतो हि छब्बस्सानि महापधानं पदहन्तस्स महन्तं कायदुक्खं अहोसि। अथस्स अपरभागे महल्लककाले पिट्ठिवातो उप्पज्जि।

R. 974 — 10 — B. 156 — 15 — 20

सङ्घाटिं पञ्ञापेत्वा ति सन्धागारस्स किर एकपस्से ते राजानो कप्पियमञ्चकं पञ्ञपेसुं" अप्पेव नाम सत्था निपज्जेय्या" ति। सत्थापि चतूहि इरियापथेहि परिभुत्तं इमेसं महप्फलं भविस्सती ति तत्थ सङ्घाटिं पञ्ञापेत्वा निपज्जि। 25

१. पठवोजं—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. रो० पोत्थके नत्थि।

३. भिन्न निगण्ठवत्थुवण्णना

६. **तस्स** कालङ्किरियायातिआदीसु यं वतब्बं, तं सब्बं हेट्ठा वुत्तमेव ।

७. **आमन्तेसी** (दी० नि० ३·१६८) ति भण्डनादिवूपसमकरं स्वाख्यातं धम्मं देसेतुकामो आमन्तेसि ।

४. एककवण्णना

5 ८. **तत्था** (दी० नि० ३·१६८) ति तस्मिं धम्मे । **सङ्गायितब्बं** ति समग्गेहि गायितब्बं, एकवचनेहि अविरुद्धवचनेहि भणितब्बं[1] । **न विवदितब्बं** ति अत्थे वा ब्यञ्जने वा विवादो न कातब्बो । **एको धम्मो** ति एककदुकतिकादिवसेन बहुधा समग्गिरसं दस्सेतुकामो पठमं ताव "एको धम्मो" ति आह । **सब्बे सत्ता** ति कामभवादीसु सञ्ञाभवादीसु 10 एकवोकारभवादीसु[2] च सब्बभवेसु सब्बे सत्ता । **आहारट्ठितिका** ति आहारतो ठिति एतेसं ति आहारट्ठितिका । इति सब्बसत्तानं ठिति R. 975 हेतु आहारो नाम एको धम्मो अम्हाकं सत्थारा याथावतो ञत्वा सम्मदक्खातो आवुसो ति दीपेति ।

B. 157 ननु च एवं सन्ते यं वुत्तं "असञ्ञसत्ता देवा अहेतुका अनाहारा 15 अफस्सका[3]" (विभं० ५००) तिआदि, तं वचनं विरुज्झती ति, न[4] विरुज्झति । तेसञ्हि झानं आहारो होति । एवं सन्तेपि "चत्तारोमे, भिक्खवे, आहारा भूतानं वा सत्तानं ठितिया सम्भवेसीनं वा अनुग्गहाय । कतमे चत्तारो ? कबळीकारो आहारो ओळारिको वा सुखुमो वा, फस्सो दुतियो, मनोसञ्चेतना ततिया, विञ्ञाणं चतुत्थं" 20 (सं० नि० २·१२) ति इदम्पि विरुज्झतीति, इदम्पि न विरुज्झति । एतस्मिञ्हि सुत्ते निप्परियायेन आहारलक्खणाव धम्मा आहारा ति वुत्ता । इध पन परियायेन पच्चयो आहारो ति वुत्तो । सब्बधम्मानञ्हि

१. भवितब्बं—रो० ।
२. एकवोहारभवादीसु—रो० ।
३. अत्थस्सका—रो० ।
४. इदं पि न—रो० ।

पच्चयो लद्धुं वट्टति। सो च यं यं फलं जनेति, तं तं आहरति नाम, तस्मा आहारो ति वुच्चति। तेनेवाह "अविज्जम्पाहं, भिक्खवे, साहारं वदामि, नो अनाहारं। को च, भिक्खवे आविज्जाय आहारो? पञ्चनीवरणातिस्स वचनीयं। पञ्चनीवरणेपाहं, भिक्खवे, साहारे वदामि, नो अनाहारे। को च, भिक्खवे, पञ्चनं नीवरणानं आहारो? 5 अयोनिसोमनसिकारोतिस्स वचनीयं" (अं० नि० ४.१८९) ति। अयं इध अधिप्पेतो।

एतस्मिञ्हि पच्चयाहारे गहिते परियायाहारोपि निप्परियायाहारोपि सब्बो गहितोव होति। तत्थ असञ्ञभवे पच्चयाहारो लब्भति। अनुप्पन्ने हि बुद्धे तित्थायतने पब्बजिता वायोकसिणे 10 परिकम्मं कत्वा चतुत्थज्झानं निब्बत्तेत्वा ततो वुट्ठाय धी[1] चित्तं, धिब्बतेत चित्तं चित्तस्स नाम अभावोयेव साधु, चित्तञ्हि निस्सायेव वधबन्धादिपच्चयं दुक्खं उप्पज्जति। चित्ते असति नत्थेतं ति खन्ति रुचिं उप्पादेत्वा अपरिहीनज्झाना कालङ्कत्वा असञ्ञभवे निब्बत्तन्ति। यो यस्स इरियापथो मनुस्सलोके पणिहितो अहोसि, सो तेन इरिया- 15 पथेन निब्बत्तित्वा पञ्च कप्पसतानि ठितो वा निसिन्नो वा निपन्नो वा होति। एवरूपानम्पि सत्तानं पच्चयाहारो लब्भति। ते हि यं झानं भावेत्वा निब्बत्ता, तदेव नेसं पच्चयो होति। यथा जियावेगेन खित्तसरो याव जियावेगो अत्थि, ताव गच्छति, एवं याव झानपच्चयो अत्थि, ताव तिट्ठन्ति। तस्मिं निट्ठिते खीणवेगो सरो विय पतन्ति। 20 ये पन ते नेरयिका नेव उट्ठानफलूपजीवी न पुञ्ञफलूपजीविति वुत्ता, तेसं को आहारो ति? तेसं कम्ममेव आहारो। किं पञ्च आहारा B. 158 R. 976 अत्थी ति चे। पञ्च, न पञ्चा ति इदं न वत्तब्बं। ननु पच्चयो आहारो ति वुत्तमेतं। तस्मा येन कम्मेन ते निरये निब्बत्ता, तदेव तेसं ठितिपच्चयत्ता आहारो होति। यं सन्धाय इदं वुत्तं "न च ताव कालं 25 करोति, याव न तं पापकम्मं ब्यन्ती होती" (म० नि० ३.२३७) ति।

१. अधिचित्तं—रो०।

कबळीकारं आहारं आरब्भ चेत्थ विवादो न कातब्बो। सुखे उप्पन्नो खेळोपि हि तेसं आहारकिच्चं साधेति। खेळोपि हि निरये दुक्खवेदनियो हुत्वा पच्चयो होति, सग्गे सुखवेदनियो। इति कामभवे निप्परियायेन चत्तारो आहारा। रूपारूपभवेसु ठपेत्वा असञ्ञं सेसानं 5 तयो। असञ्ञानञ्चेव अवसेसानञ्च पच्चयाहारोति इमिना आहारेन "सब्बे सत्ता आहारट्ठितिका" ति एतं पञ्हं कथेत्वा "अयं खो आवुसो" ति एवं निय्यातनम्पि "अत्थि खो आवुसो" ति पुन उद्धरणम्पि अकत्वा "सब्बे सत्ता सङ्खारट्ठितिका" ति दुतियपञ्हं विस्सज्जेसि।

कस्मा पन न निय्यातेसि न उद्धरित्थ? तत्थ तत्थ निय्यातिय-10 मानेपि उद्धरियमानेपि परियापुणितुं वाचेतुं दुक्खं होति, तस्मा द्वे एकाबद्धे कत्वा विस्सज्जेसि। इमस्मिम्पि विस्सज्जने हेट्ठा वुत्तपच्चयोव अत्तनो फलस्स सङ्खरणतो[1] सङ्खारोति वुत्तो। इति हेट्ठा आहारपच्चयो कथितो, इध सङ्खारपच्चयोति अयमेत्थ हेट्ठिमतो विसेसो। ',हेट्ठा निप्परियायाहारो गहितो, इध परियायाहारोति एवं गहिते विसेसो 15 पाकटो भवेय्य, नो च गण्हिंसू" ति महासीवत्थेरो आह। इन्द्रियबद्धस्सपि हि अनिन्द्रियबद्धस्सपि पच्चयो लद्धुं वट्टति। विना पच्चयेन धम्मो नाम नत्थि। तत्थ अनिन्द्रियबद्धस्स तिणरुक्खलतादिनो पथवीरसो आपोरसो च पच्चयो होति। देवे अवस्सन्ते हि तिणादीनि मिलायन्ति, वस्सन्ते च पन हरितानि होन्ति। इति तेसं पथवीरसो 20 आपोरसो च पच्चयो होति। इन्द्रियबद्धस्स अविज्जा तण्हा कम्मं आहारो ति एवमादयो पच्चया, इति हेट्ठा पच्चयोयेव आहारो ति कथितो, इध सङ्खारो ति। अयमेवेत्थ विसेसो।

B. 159 **अयं खो आवुसो** ति आवुसो अम्हाकं सत्थारा महाबोधिमण्डे निसीदित्वा सयं सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन सच्छिकत्वा अयं एकधम्मो 25 देसितो। तत्थ एकधम्मे तुम्हेहि सब्बेहेव सङ्गायितब्बं न विवदितब्बं। **यथयिदं ब्रह्मचरियं** ति यथा सङ्गायमानानं तुम्हाकं इदं

१. करणतो सङ्खरणतो—रो०।

सासनब्रह्मचरियं अद्धनियं अस्स। एकेन हि भिक्खुना "अत्थि, खो R. 977
आवुसो, एको धम्मो सम्मदक्खातो। कतमो एको धम्मो ? सब्बे सत्ता
आहारट्ठितिका सब्बे सत्ता सङ्खारट्ठितिका" ति कथिते तस्स कथं
सुत्वा अञ्ञो कथेस्सति। तस्सपि अञ्ञो ति एवं परम्परकथानियमेन
इदं ब्रह्मचरियं चिरं तिट्ठमानं सदेवकस्स लोकस्स अत्थाय हिताय 5
भविस्सती ति एककवसेन धम्मसेनापति सारिपुत्तत्थेरो सामग्गिरसं
दस्सेसी ति।

५. दुकवण्णना

इति एककवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि दुकवसेन दस्सेतुं
पुन देसनं आरभि। तत्थ नामरूपदुके **नामं** (दी० नि० ३.१६९)
ति चत्तारो अरूपिनो खन्धा निब्बानञ्च। तत्थ चत्तारो खन्धा 10
नामनट्ठेन नामं। नामनट्ठेना ति नामकरणट्ठेन। यथा हि
महाजनसम्मतत्ता महासम्मतस्स "महासम्मतो" ति नामं अहोसि,
यथा मातापितरो "अयं तिस्सो नाम होतु, फुस्सो नाम होतू" ति
एवं पुत्तस्स कित्तिमनामं करोन्ति, यथा वा "धम्मकथिको विनयधरो"
ति गुणतो नामं आगच्छति, न एवं वेदनादीनं। वेदनादयो हि 15
महापथवीआदयो विय अत्तनो नामं करोन्ताव उप्पज्जन्ति। तेसु
उप्पन्नेसु तेसं नामं उप्पन्नमेव होति। न हि वेदनं उप्पन्नं "त्वं वेदना
नाम होही" ति, कोचि भणति, न चस्सा येन केनचि कारणेन
नामग्गहणकिच्चं अत्थि, यथा पथविया उप्पन्नाय "त्वं पथवी नाम
होही" ति नामग्गहणकिच्चं नत्थि, चक्कवाळसिनेरुम्हि चन्दिम- 20
सूरियनक्खत्तेसु उप्पन्नेसु "त्वं चक्कवाळं नाम, त्वं नक्खत्तं नाम होही"
ति नामग्गहणकिच्चं नत्थि, नामं उप्पन्नमेव होति, ओपपातिका
पञ्ञत्ति निपतति, एवं वेदनाय उप्पन्नाय "त्वं वेदना नाम होही"
ति नामग्गहणकिच्चं नत्थि, ताय उप्पन्नाय वेदना ति नामं उप्पन्नमेव B. 160
होति। सञ्ञादीसुपि एसेव नयो अतीतेपि हि वेदना वेदनायेव। 25
सञ्ञा, सङ्खारा, विञ्ञाणं विञ्ञाणमेव। अनागतेपि, पच्चुप्पन्नेपि,
निब्बानं पन सदापि निब्बानमेवा ति। इति नामनट्ठेन नामं।

नमनट्ठेनापि चेत्थ चत्तारो खन्धा नामं। ते हि आरम्मणाभिमुखं[1] नमन्ति। नामनट्ठेन सब्बम्पि[2] नामं। चत्तारो हि खन्धा आरम्मणे R. 978 अञ्ञमञ्ञं नामेन्ति, निब्बानं आरम्मणाधिपतिपच्चयताय अत्तनि अनवज्जधम्मे नामेति।

5 **रूपं** ति चत्तारो च महाभूता चतुन्नञ्च महाभूतानं उपादाय रूपं, तं सब्बम्पि रुप्पनट्ठेन **रूपं**। तस्स वित्थारकथा विसुद्धिमग्गे वुत्तनयेनेव वेदितब्बा।

अविज्जा ति दुक्खादीसु अञ्ञाणं। अयम्पि वित्थारतो विसुद्धिमग्गे कथितायेव। **भवतण्हा** ति भवपत्थना। यथाह ''तत्थ 10 कतमा भवतण्हा? यो भवेसु भवच्छन्दो'' (ध० सं० २८५) तिआदि।

भवदिट्ठी ति भवो वुच्चति सस्सतं, सस्सतवसेन उप्पज्जनकदिट्ठि। सा "तत्थ कतमा भवदिट्ठि? 'भविस्सति अत्ता च लोको चा' (ध० सं० २८५) ति या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं'' तिआदिना नयेन 15 अभिधम्मे वित्थारिता। **विभवदिट्ठी** ति विभवो वुच्चति उच्छेदं, उच्छेदवसेन उप्पज्जनकदिट्ठि। सापि "तत्थ कतमा विभवदिट्ठि? 'न भविस्सति अत्ता च लोको चा' (ध० सं० २८५) ति। या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं'' तिआदिना नयेन तत्थेव वित्थारिता।

अहिरिकं ति "यं न हिरीयति[3] हिरीयितब्बेना'' (ध० सं० २८६) 20 ति एवं वित्थारिता निल्लज्जता। **अनोत्तप्पं** ति "यं न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेना'' (ध० सं० २८६) ति एवं वित्थारितो अभायनक-आकारो।

हिरी च ओत्तप्पञ्चा ति "यं हिरीयति हिरीयितब्बेन, ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेना'' (ध० सं० २८६) ति एवं वित्थारितानि

१. आरम्मणाभिमुखा—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. रो० पोत्थके नत्थि।

हिरिओत्तप्पानि। अपि चेत्थ अज्झत्तसमुट्ठाना **हिरी**, बहिद्धासमुट्ठानं **ओत्तप्पं**। अत्ताधिपतेय्या हिरी, लोकाधिपतेय्यं ओत्तप्पं। लज्जासभावसण्ठिता हिरी, भयसभावसण्ठितं ओत्तप्पं। वित्थारकथा पनेत्थ सब्बाकारेव विसुद्धिमग्गे वुत्ता।

दोवचस्सता ति दुक्खं वचो एतस्मिं विप्पटिकूलगाहिम्हि विपच्चनीकसाते अनादरे पुग्गले ति दुब्बचो, तस्स कम्मं दोवचस्स, तस्स भावो **दोवचस्सता**। वित्थारतो पनेसा "तत्थ कतमा दोवचस्सता? सहधाम्मिके वुच्चमाने दोवचस्सायं" (ध० सं० २८६) ति अभिधम्मे आगता। सा अत्थतो सङ्खारक्खन्धो होति। 'चतुन्नञ्च खन्धानं एतेनाकारेन पवत्तानं एतं अभिवचनं" ति वदन्ति। **पापमित्तता** ति पापा अस्सद्धादयो पुग्गला एतस्स मित्ता ति पापमित्तो, तस्स भावो पापमित्तता। वित्थारतो पनेसा—"तत्थ कतमा पापमित्तता? ये ते पुग्गला अस्सद्धा दुस्सीला अप्पस्सुता मच्छरिनो दुप्पञ्ञा[1]। या तेसं सेवना निसेवना संसेवना भजना संभजना भत्ति संभत्ति तंसम्पवङ्कता" (ध० सं० २८६) ति एवं आगता। सापि अत्थतो दोवचस्सता विय दट्ठब्बा।

5 R. 161

10 R. 979

15

सोवचस्सता च **कल्याणमित्तता** च वुत्तप्पटिपक्खनयेन वेदितब्बा। उभोपि पनेता इध लोकियलोकुत्तरमिस्सका कथिता।

आपत्तिकुसलता ति "पञ्चपि आपत्तिक्खन्धा आपत्तियो, सत्तपि आपत्तिक्खन्धा आपत्तियो। या तासं आपत्तीनं आपत्तिकुसलता पञ्ञा पजानना" (ध० सं० २८६) ति एवं वुत्तो आपत्तिकुसलभावो।

20

आपत्तिवुट्ठानकुसलता ति "या ताहि आपत्तीहि वुट्ठानकुसलता पञ्ञा पजानना" (ध० सं० २८७) ति एवं वुत्ता सह कम्मवाचाय आपत्तीहि वुट्ठानपरिच्छेदजानना पञ्ञा।

समापत्तिकुसलता ति "अत्थि सवितक्कसविचारा समापत्ति, अत्थि अवितक्कविचारमत्ता समापत्ति, अत्थि अवितक्कअविचारा

25

१. कदरिया०—रो०।

समापत्ति। या तासं समापत्तीनं[1] कुसलता पञ्ञा पजानना'' (ध० सं० २८७) ति एवं वुत्ता सह परिकम्मेन अप्पनापरिच्छेदजानना पञ्ञा। **समापत्तिवुट्ठानकुसलता** ति ''या ताहि समापत्तीहि वुट्ठानकुसलता पञ्ञा पजानना'' (ध० सं० २८७) ति एवं वुत्ता 5 यथापरिच्छिन्नसमयवसेनेव समापत्तितो वुट्ठानसमत्था ''एत्तकं गते सूरिये उट्ठहिस्सामी'' ति वुट्ठानकालपरिच्छेदका पञ्ञा।

धातुकुसलता ति ''अट्ठारस धातुयो चक्खुधातु ... पे० ... मनोविञ्ञाणधातु। या तासं धातूनं कुसलता पञ्ञा पजानना'' B. 162 (ध० सं० २८७) ति एवं वुत्ता अट्ठारसन्नं धातूनं सभावपरिच्छेदका 10 सवनधारणसम्मसनपटिवेधपञ्ञा। **मनसिकारकुसलता** ति ''या तासं धातूनं मनसिकारकुसलता पञ्ञा पजानना'' (ध० सं० २८८) ति एवं वुत्ता तासंयेव धातूनं सम्मसनपटिवेधपच्चवेक्खणपञ्ञा।

आयतनकुसलता ति ''द्वादसायतनानि चक्खायतनं...पे०... धम्मायतनं। या तेसं आयतनानं आयतनकुसलता पञ्ञा पजानना'' 15 (ध० सं० २८८) ति एवं वुत्ता द्वादसन्नं आयतनानं उग्गहमनसिकरपजानना पञ्ञा। अपिच धातुकुसलतापि उग्गहमनसिकारसवन- R. 980 सम्मसनपटिवेधपच्चवेक्खणेसु वत्तति मनसिकारकुसलतापि आयतनकुसलतापि। अयं पनेत्थ विसेसो, सवनउग्गहपच्चवेक्खणा लोकिया, पटिवेधो लोकुत्तरो, सम्मसनमनसिकारा लोकियलोकुत्तर- 20 मिस्सका। **पटिच्चसमुप्पादकुसलता** ति ''अविज्जापच्चया सङ्खारा ... पे० ... समुदयो होती ति या तत्थ पञ्ञा पजानना'' (ध० सं० २८८) ति एवं वुत्ता द्वादसन्नं पच्चयाकारानं उग्गहादिवसेन पवत्ता पञ्ञा।

ठानकुसलता ति ''ये ये धम्मा येसं येसं धम्मानं हेतुपच्चया 25 उप्पादाय तं तं ठानं (ध० सं० २८८) ति या तत्थ पञ्ञा पजानना'' ति एवं वुत्ता ''चक्खुं वत्थुं कत्वा रूपं आरम्मणं कत्वा उप्पन्नस्स

१. ०समापत्ति—रो०।

चक्खुविञ्ञाणस्स चक्खुरूपं ठानञ्चेव कारणञ्चा'' ति एवं ठानपरि-
च्छिन्दनसमत्था पञ्ञा। **अट्ठानकुसलता** ति ''ये ये धम्मा येसं येसं
धम्मानं न हेतू न पच्चया उप्पादाय तं तं अट्ठानं ति या तत्थ पञ्ञा
पजानना'' (ध० सं० २८८) ति एवं वुत्ता ''चक्खुं वत्थुं कत्वा
रूपं आरम्मणं कत्वा सोतविञ्ञाणादीनि नुप्पज्जन्ति, तस्मा तेसं 5
चक्खुरूपं न ठानं न कारणं'' ति एवं अट्ठानपरिच्छिन्दनसमत्था पञ्ञा
अपिच एतस्मिं दुके ''कित्तावता पन, भन्ते, ठानाठानकुसलो भिक्खू
ति अलं वचनाया ति। इधानन्द, भिक्खु, अट्ठानमेतं अनवकासो,
य दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो कञ्चि सङ्खारं निच्चतो उपगच्छेय्य, नेतं ठानं
विज्जती ति पजानाति। ठानञ्च खो एतं विज्जति, यं पुथुज्जनो कञ्चि 10
सङ्खारं निच्चतो उपगच्छेय्या'' (म० नि० ३.१२६) ति इमिनापि
सुत्तेन अत्थो वेदितब्बो।

अज्जवं ति गोमुत्तवङ्कता चन्दवङ्कता नङ्गलकोटिवङ्कता ति B. 163
तयो अनज्जवा। एकच्चो हि भिक्खु पठमवये एकवीसतिया अनेसनासु
छसु च अगोचरेसु चरति, मज्झिमपच्छिमवयेसु लज्जी कुक्कुच्चको 15
सिक्खाकामो होति, अयं गोमुत्तवङ्कता नाम। एको पठमवयेपि
पच्छिमवयेपि चतुपारिसुद्धिसीलं पूरेति, लज्जी कुक्कुच्चको सिक्खाकामो
होति, मज्झिमवये पुरिमसदिसो, अयं चन्दवङ्कता नाम। एको
पठमवयेपि मज्झिमवयेपि चतुपारिसुद्धिसीलं पूरेति, लज्जी कुक्कुच्चको
सिक्खाकामो होति, पच्छिमवये पुरिमसदिसो अयं नङ्गलकोटिवङ्कता 20
नाम। एको सब्बमेतं वङ्कतं पहाय तीसुपि वयेसु पेसलो लज्जी R. 981
कुक्कुच्चको सिक्खाकामो होति। तस्स यो सो उजुभावो, इदं अज्जवं
नाम। अभिधम्मे पि वुत्तं—''तत्थ कतमो अज्जवो। या अज्जवता
अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता, अयं वुच्चति अज्जवो'' (ध०सं०२८९)
ति। **लज्जवं** ति ''तत्थ कतमो लज्जवो ? यो हिरीयति हिरीयितब्बेन 25
हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया। अयं वुच्चति
लज्जवो'' ति एवं वुत्तो लज्जीभावो[1]।

१. लज्ज-भावो—रो०।

खन्ती ति "तत्थ कतमा खन्ति। या खन्ति खमनता अधिवासनता अचण्डिक्कं अनस्सुरोपो अत्तमनता चित्तस्सा" (ध० सं० २८९) ति एवं वुत्ता अधिवासनखन्ति। **सोरच्चं** ति "तत्थ कतमं सोरच्चं। यो कायिको अवितिक्कमो, वाचसिको अवीतिक्कमो, 5 कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो, इदं वुच्चति सोरच्चं। सब्बोपि सीलसंवरो सोरच्चं" (ध० सं० २८९) ति एवं वुत्तो सुरतभावो।

सारवल्यं ति "तत्थ कतमं सारवल्यं? या सा वाचा अण्डका कक्कसा[1] परकटुका पराभिसज्जनी कोधासामन्ता असमाधिसंवत्तनिका, तथारूपिं वाचं पहाय या सा वाचा नेळा कण्णसुखा पेमनीया 10 हदयङ्गमा पोरी बहु जनकन्ता बहुजनमनापा, तथारूपिं वाचं भासिता होति। या तत्थ सण्हवाचता सखिलवाचता अफरुसवाचता। इदं वुच्चति साखल्यं" (ध० सं० २८९) ति एवं वुत्तो सम्मोदकमुदुकभावो। **पटिसन्थारो** ति अयं लोकसन्निवासो आमिसेन धम्मेन चाति द्वीहि छिद्दो, तस्स तं छिद्दं यथा न पञ्ञायति, एवं पीठस्स विय पच्चत्थरणेन 15 आमिसेन धम्मेन च पटिसन्थरणं[2]। अभिधम्मेपि वुत्तं "तत्थ कतमो B. 164 पटिसन्थारो। आमिसपटिसन्थारो च धम्मपटिसन्थारो च। इधेकच्चो पटिसन्थारको होति आमिसपटिसन्थारेन वा धम्मपटिसन्थारेन वा। अयं वुच्चति पटिसन्थारो" (ध० सं० २८९) ति। एत्थ च आमिसेन सङ्गहो आमिसपटिसन्थारो नाम। तं करोन्तेन मातापितूनं भिक्खु- 20 गतिकस्स वेय्यावच्चकरस्स रञ्ञो चोरानञ्च अग्गं अग्गहेत्वापि दातुं वट्टति। आमसित्वा दिन्ने हि राजानो च चोरा च अनत्थम्पि करोन्ति जीवितक्खयम्पि पापेन्ति, अनामसित्वा दिन्ने अत्तमना होन्ति। चोरनागवत्थुआदीनि चेत्थ वत्थूनि कथेतब्बानि। तानि समन्त- R. 982 पासादिकाय विनयट्ठकथायं वित्थारितानि। सक्कच्चं उद्देसदानं 25 पाळिवण्णना धम्मकथाकथनं ति एवं धम्मेन सङ्गहो धम्मपटिसन्थारो नाम।

१. ०फरुसा—रो०। २. पटिसन्थरं—रो०।

अविहिंसा ति करुणापि करुणापुब्बभागोपि। वुत्तम्पि चेतं "तत्थ कतमा अविहिंसा? या सत्तेसु करुणा करुणायना करुणायितत्तं करुणाचेतोविमुत्ति, अयं वुच्चति अविहिंसा" (ध० सं० २८९) ति। **सोचेय्यं** ति मेत्ताय च मेत्ता पुब्बभागस्स च वसेन सुचिभावो। वुत्तम्पि चेतं "तत्थ कतमं सोचेय्यं। सा सत्तेसु मेत्ति मेत्तायना 5 मेत्तायितत्तं मेत्ताचेतोविमुत्ति, इदं वुच्चति सोचेय्यं" ति।

मुट्ठस्सच्चं ति सतिविप्पवासो, यथाह "तत्थ कतमं मुट्ठस्सच्चं? या असति अननुस्सति अप्पटिस्सति अस्सरणता अधारणता अपिलापनता सम्मुस्सनता, इदं वुच्चति मुट्ठस्सच्चं" (ध० सं० २९१)। **असम्पजञ्ञं**, ति "तत्थ कतमं असम्पजञ्ञं यं अञ्ञाणं अदस्सनं 10 अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं" ति एवं वुत्ता अविज्जायेव। **सति** सतियेव। **सम्पजञ्ञं** ञाणं।

इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता ति "तत्थ कतमा इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता? इधेकच्चो चक्खुना रूपं दिस्वा निमित्तग्गाही होती" (ध० सं० २८९) ति आदिना नयेन वित्थारितो इन्द्रियसंवरभेदो। **भोजने अमत्तञ्ञुता** 15 ति "तत्थ कतमा भोजने अमत्तञ्ञुता? इधेकच्चो अप्पटिसङ्खा अयोनिसो आहारं आहारेति दवाय मदाय मण्डनाय विभूसनाय। या तत्थ असन्तुट्ठिता अमत्तञ्ञुता अप्पटिसङ्खा भोजने" ति एवं आगतो भोजने अमत्तञ्ञुभावो। अनन्तरदुको वुत्तप्पटिपक्खनयेन वेदितब्बो। 20

पटिसङ्खानबलं ति "तत्थ कतमं पटिसङ्खानबलं। या पञ्ञा B. 165 पजानना" ति एवं वित्थारितं अप्पटिसङ्खाय अकम्पनञाणं। **भावनाबलं** ति भावेन्तस्स उप्पन्नं बलं। अत्थतो वीरियसम्बोज्झङ्ग सीसेन सत्त बोज्झङ्गा होन्ति। वुत्तम्पि चेतं–"तत्थ कतमं भावनाबलं? या कुसलानं धम्मानं आसेवना भावना बहुलीकम्मं, इदं वुच्चति 25 भावनाबलं। सत्तबोज्झङ्गा भावनाबलं" ति।

सतिबलं ति अस्सतिया अकम्पनवसेन सतियेव। **समाधिबलं** ति

R. 983 उद्धच्चे अकम्पनवसेन समाधियेव। **समथो** समाधि। **विपस्सना** पञ्ञा। समथोव तं आकारं गहेत्वा पुन पवत्तेतब्बस्स समथस्स निमित्तवसेन **समथनिमित्तं पग्गहनिमित्तेपि** एसेव नयो। **पग्गाहो**

5 वीरियं। **अविक्खेपो** एकग्गता। इमेहि पन सति च सम्पजञ्ञञ्च पटिसङ्खानबलञ्च भावनाबलञ्च सतिबलञ्च समाधिबलञ्च समथो च विप्पस्सना च समथनिमित्तञ्च पग्गाहनिमित्तञ्च[1] पग्गाहो[2] च अक्खिेपो चाति छहि दुकेहि परतो सीलदिट्ठिसम्पदादुकेन च लोकियलोकुत्तर-मिस्सका धम्मा कथिता।

10 **सीलविपत्ती** ति "तत्थ कतमा सीलविपत्ति? कायिको वीतिक्कमो ... पे० ... सब्बम्पि दुस्सील्यं सीलविपत्ती" ति एवं वुत्तो सीलविनासको असंवरो[3]। **दिट्ठिविपत्ती** ति "तत्थ कतमा दिट्ठिविपत्ति? नत्थि दिन्नं नत्थि यिट्ठं" ति एवं आगता सम्मादिट्ठि-विनासिका मिच्छादिट्ठि।

15 **सीलसम्पदा** ति "तत्थ कतमा सीलसम्पदा? कायिको अवीतिक्कमो" ति एवं पुब्बे पुत्तसोरच्चमेव सीलस्स सम्पादनतो परिपूरणतो "सीलसम्पदा" ति वुत्तं। एत्थ च "सब्बोपि सीलसंवरो सीलसम्पदा" ति इदं मानसिकपरियादानत्थं वुत्तं। **दिट्ठिसम्पदा** ति "तत्थ[4] कतमा दिट्ठिसम्पदा? अत्थि दिन्नं अत्थि यिट्ठं ...पे०...

20 सच्छिकत्वा पवेदेन्ती ति या एवरूपा पञ्ञा पजानना" ति एवं आगतं दिट्ठिपारिपूरिभूतं ञाणं।

सीलविसुद्धी ति विसुद्धिं पापेतुं समत्थं सीलं। अभिधम्मे पनायं "तत्थ कतमा सीलविसुद्धि? कायिको अवीतिक्कमो वाचसिको अवीतिक्कमो कायिकवाचसिको अवीतिक्कमो, अयं वुचति सीलविसुद्धी"

25 ति एवं विभत्ता। **दिट्ठिविसुद्धी** ति विसुद्धिं पापेतुं समत्थं दस्सनं।

१. पग्गह०—रो०। २. पग्गहो—रो०।
३. असंचरो—रो०। ४. तत्थे—रो०।

अभिधम्मे पनायं "तत्थ कतमा दिट्ठिविसुद्धि? कम्मस्सकतञ्ञाणं सच्चानुलोमिकञाणं मग्गसमङ्गिस्सञाणं फलसमङ्गिस्सञाणं" ति एवं वुत्ता। एत्थ च तिविधं दुच्चरितं अत्तना कतम्पि परेन कतम्पि सकं नाम न होति अत्थभञ्जनतो। सुचरितं सकं नाम अत्थभञ्जनतो ति एवं जाननं कम्मस्सकतञाणं नाम। तस्मिं ठत्वा बहुं वट्टगामिकम्मं आयूहित्वा सुखतो सुखेनेव अरहत्तं पत्ता[1] गणनपथं वीतिवत्ता। **विपस्सनाञाणं** पन वचीसच्चञ्च अनुलोमेति, परमत्थसच्चञ्च न विलोमेती ति सच्चानुलोमिकं ञाणं ति वुत्तं।

B. 166

5 R. 984

"दिट्ठिविसुद्धि खो पन यथादिट्ठिस्स च पधानं" ति एत्थ **दिट्ठिविसुद्धी** ति ञाणदस्सनं कथितं। **यथादिट्ठिस्स च पधानं** ति तंसम्पयुत्तमेव वीरियं। अपिच पुरिमपदेन चतुमग्गञाणं। पच्छिमपदेन तंसम्पयुत्तं वीरियं। **अभिधम्मे** पन "दिट्ठिविसुद्धि खो पना ति या पञ्ञा पजानना अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि। यथादिट्ठिस्स च पधानं ति यो चेतसिको वीरियारम्भो सम्मावायामो" ति एवं अयं दुको विभत्तो।

10

15

"संवेगो च संवेजनीयेसु[2] ठानेसू" ति एत्थ "**संवेगो** ति जातिभयं जराभयं ब्याधिभयं मरणभयं" ति एवं जातिआदीनि भयतो दस्सनञाणं। संवेजनीयं ठानं ति जातिजराब्याधिमरणं। एतानि हि चत्तारि जाति-दुक्खा, जरा-दुक्खा, ब्याधि-दुक्खो, मरणं-दुक्खं ति एवं संवेगुप्पत्तिकारणत्ता **संवेजनीयं ठानं** ति वुत्तानि। **संविग्गस्स च योनिसो पधानं** ति एवं संवेगजातस्स उपायपधानं। "इध भिक्खु अनुप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाय छन्दं जनेती" ति एवं आगतवीरियस्सेतं अधिवचनं।

20

असन्तुट्ठिता च कुसलेसु धम्मेसु ति या कुसलानं धम्मानं भावनाय असन्तुट्ठस्स भिय्योकम्यता, ताय हि समङ्गीभूतो पुग्गलो सीलं पूरेत्वा

25

१. पत्तानं—रो०।

१. संवेगनीयेसु—रो०।

झानं उप्पादेति । झानं लभित्वा विपस्सनं आरभति । आरद्धविपस्सको अरहत्तं अगहेत्वा[१] अन्तरा वोसानं नापज्जति । **अप्पटिवानिता च पधानस्मि** ति "कुसलानं धम्मानं भावनाय सक्कच्चकिरियता सातच्चकिरियता अट्ठितकिरियता अनोलीनवुत्तिता अनिक्खित्तछन्दता 5 अनिक्खित्तधुरता आसेवना भावना बहुलीकम्मं" ति एवं वुत्ता रत्तिन्दिवं छ कोट्ठासे कत्वा जागरियानुयोगवसेन आरद्धे पधानस्मि अरहत्तं अपत्वा अनिवत्तनता ।

B. 167 **विज्जा** ति तिस्सो विज्जा । **विमुत्ती** ति द्वे विमुत्तियो, चित्तस्स च अधिमुत्ति, निब्बानञ्च । एत्थ च अट्ठ समापत्तियो नीवरणादीहि R. 985 10 सुट्ठु मुत्तता अधिमुत्ति नाम । निब्बानं सब्बसङ्खततो मुत्तत्ता विमुत्ती ति वेदितब्बं ।

खये ञाणं ति किलेसक्खयकरे अरियमग्गे ञाणं । **अनुप्पादे ञाणं** ति पटिसन्धिवसेन अनुप्पादभूते तंतंमग्गवज्झकिलेसानं वा अनुप्पाद-परियोसाने उप्पन्ने अरियफले ञाणं । तेनेवाह "खये ञाणं ति 15 मग्गसमङ्गिस्स ञाणं । अनुप्पादे ञाणं ति फलसमङ्गिस्स ञाणं" ति । **इमे खो आवुसो** तिआदि एकके वुत्तनयेनेव योजेतब्बं । इति पञ्चत्तिंसाय दुकानं वसेन थेरो सामग्गिरसं दस्सेती ति ।

६. तिकवण्णना

१०. इति दुकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि तिकवसेन दस्सेतुं पुन[२] आरभि । तत्थ लुब्भती ति **लोभो** (दी० नि० ३.१७०)। 20 अकुसलञ्च तं मूलञ्च, अकुसलानं वा मूलं ति **अकुसलमूलं** । दुस्सती ति **दोसो** । मुय्हती ति **मोहो** । तेसं पटिपक्खनयेन[३] अलोभादयो वेदितब्बा ।

१. गहेत्वा—रो० । २. ०देसनं—रो० ।
३. पटिपक्खवसेन—रो० ।

दुट्ठु चरितानि, विरूपानि वा चरितानीति **दुच्चरितानि**। कायेन दुचरितं, कायतो वा पवत्तं दुचरितं ति **कायदुच्चरितं**। सेसेसुपि एसेव नयो। सुट्ठु चरितानि, सुन्दरानि वा चरितानी ति **सुचरितानि**। द्वेपि चेते तिका पण्णत्तिया वा कम्मपथेहि वा कथेतब्बा। पञ्ञत्तिया ताव कायद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदस्स वीतिक्कमो 5 **कायदुच्चरितं**, अवीतिक्कमो **कायसुचरितं**। वचीद्वारे पञ्ञत्तसिक्खापदस्स वीतिक्कमो **वचीदुच्चरितं**, अवीतिक्कमो **वचीसुचरितं**। उभयत्थ पञ्ञत्तस्स सिक्खापदस्स वीतिक्कमोव **मनोदुच्चरितं**, अवीतिक्कमो **मनोसुचरितं**। अयं पण्णत्तिकथा। पाणातिपातादयो पन तिस्सो चेतना कायद्वारेपि वचीद्वारेपि उप्पन्ना **कायदुच्चरितं**। 10 चतस्सो मुसावादादिचेतना **वचीदुच्चरितं**। अभिज्झा ब्यापादो मिच्छादिट्ठी ति तयो चेतनासम्पयुत्तधम्मा **मनोदुच्चरितं**। पाणातिपातादीहि विरमन्तस्स उप्पन्ना तिस्सो चेतनापि विरतियोपि B. 168 कायसुचरितं। मुसावादादीहि विरमन्तस्स चतस्सो चेतनापि विरतियोपि वचीसुचरितं। अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठी ति 15 तयो चेतनासम्पयुत्तधम्मा मनोसुचरितं ति अयं कम्मपथकथा। R. 986

कामपटिसंयुत्तो वितक्को **कामवितक्को**। ब्यापादपटिसंयुत्तो वितक्को **ब्यापादवितक्को**। विहिंसापटिसंयुत्तो वितक्को **विहिंसावितक्को**। तेसु द्वे सत्तेसुपि सङ्खारेसुपि उप्पज्जन्ति। कामवितक्को ति पिये मनापे सत्ते वा सङ्खारे वा वितक्केन्तस्स उप्पज्जति। ब्यापाद- 20 वितक्को अप्पिये अमनापे सत्ते वा सङ्खारे वा कुज्झित्वा ओलोकनकालतो पट्ठाय याव विनासा उप्पज्जति। विहिंसावितक्को सङ्खारेसु नुप्पज्जति। सङ्खारो हि दुक्खापेतब्बा नाम नत्थि। इमे सत्ता हञ्ञन्तु वा उच्छिज्जन्तु वा विनस्सन्तु वा मा वा अहेसुं ति चिन्तनकाले पन सत्तेसु उप्पज्जति। 25

नेक्खम्मपटिसंयुत्तो वितक्को **नेक्खम्मवितक्को**। सो असुभपुब्बभागे कामावचरो होति। असुभज्झाने रूपावचरो। तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो। अब्यापादपटिसंयुत्तो वितक्को

अब्यापादवितक्को। सो मेत्तापुब्बभागे कामावचरो होति। मेत्ताझाने रूपावचरो। तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो। अविहिंसापटिसंयुत्तो वितक्को **अविहिंसावितक्को**। सो करुणापुब्बभागे कामावचरो। करुणाझाने रूपावचरो। तं झानं पादकं कत्वा उप्पन्नमग्गफलकाले लोकुत्तरो। यदा अलोभो सीसं होति, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्ति। यदा मेत्ता सीसं होति, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्ति। यदा[1] करुणा सीसं होति, तदा इतरे द्वे तदन्वायिका भवन्ती ति[1]। कामसङ्कप्पादयो युत्तनयेनेव वेदितब्बा। देसनामत्तमेव हेतं। अत्थतो पन कामवितक्कादीनञ्च कामसङ्कप्पादीनञ्च नानाकरणं नत्थि।

कामपटिसंयुत्ता सञ्ञा **कामसञ्ञा**। ब्यापादपटिसंयुत्ता सञ्ञा **ब्यापादसञ्ञा**। विहिंसापटिसंयुत्ता सञ्ञा **विहिंसासञ्ञा**। तासम्पि कामवितक्कादीनं विय उप्पज्जनाकारो वेदितब्बो। तंसम्पयुत्तायेव हि एत्ता। **नेक्खम्मसञ्ञादयो** पि नेक्खम्मवितक्कादिसम्पयुत्तायेव। तस्मा तासम्पि तथेव कामावचरादिभावो वेदितब्बो।

कामधातुआदीसु "कामपटिसंयुत्तो तक्को वितक्को मिच्छासङ्कप्पो। अयं वुचति कामधातु। सब्बेपि अकुसला धम्मा कामधातु" ति अयं **कामधातु**। ब्यापादपटिसंयुत्तो तक्को वितक्को मिच्छासङ्कप्पो। अयं वुच्चति ब्यापादधातु। दससु आघातवत्थूसु चित्तस्स आघातो पटिघातो अनत्तमनता चित्तस्सा" ति अयं **ब्यापादधातु**। "विहिंसा पटिसंयुत्तो तक्को वितक्को मिच्छासङ्कप्पो। अयं वुच्चति विहिंसाधातु। इधेकच्चो पाणिना वा लेड्डुना वा दण्डेन वा सत्थेन वा रज्जुया वा अञ्ञतरञ्ञतरेन वा सत्ते विहेठेती" ति अयं **विहिंसाधातु**। तत्थ द्वे कथा सब्बसङ्गाहिका च असम्भिन्ना च। तत्थ कामधातुया गहिताय इतरा द्वे गहिताव होन्ति, ततो पन नीहरित्वा अयं ब्यापादधातु अयं विहिंसाधातु ति दस्सेती ति अयं सब्बसङ्गाहिककथा नाम। कामधातुं

१-१. रो० पोत्थके नत्थि।

कथेन्तो पन भगवा ब्यापादधातुं ब्यापादधातुट्ठाने, विहिंसाधातुं विहिंसाधातुट्ठाने ठपेत्वा अवसेसं कामधातु नामा ति कथेसी ति अयं असम्भिन्नकथा नाम।

नेक्खम्मधातुआदीसु "नेक्खम्मपटिसंयुत्तो तक्को वितक्को सम्मा-सङ्कप्पो। अयं वुच्चति नेक्खम्मधातु। सब्बेपि कुसला धम्मा 5 नेक्खम्मधातू" ति अयं **नेक्खम्मधातु**। "अब्यापादपटिसंयुत्तो तक्को ... पे० ... अयं वुच्चति अब्यापादधातु। या सत्तेसु मेत्ति ...पे० ... मेत्ताचेतोविमुत्ती" ति अयं **अब्यापादधातु**। "अविहिंसापटिसंयुत्तो तक्को ...पे०...अयं वुच्चति अविहिंसाधातु। या सत्तेसु करुणा ... पे० ... करुणाचेतोविमुत्ती" ति अयं **अविहिंसाधातु**। इधापि वुत्तनयेनेव द्वे 10 कथा वेदितब्बा।

अपरापि तिस्सो धातुयो ति अञ्ञापि सुञ्ञतट्ठेन तिस्सो धातुयो। तासु "तत्थ कतमा कामधातु? हेट्ठतो अवीचिनिरयं परियन्तं करित्वा" ति एवं वित्थारितो कामभवो **कामधातु** नाम। "हेट्ठतो ब्रह्मलोकं परियन्तं करित्वा आकासानञ्चायतनुपगे देवे परियन्तं 15 करित्वा" ति एवं वित्थारिता पन रूपारूपभवा इतरा द्वे धातुयो। धातुया आगतट्ठानम्हि हि भवेन परिच्छिन्दितब्बा। भवस्स आगतट्ठाने धातुया परिच्छिन्दितब्बा। इध भवेन परिच्छेदो कथितो। रूपधातु- B. 170 आदीसु रूपारूपधातुयो रूपारूपभवायेव। निरोधधातुया निब्बानं कथितं। 20

हीनादीसु हीना धातू ति द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा। अवसेसा तेभूमक धम्मा **मज्झिमधातु**। नव लोकुत्तरधम्मा **पणीतधातु**। R. 988

कामतण्हा ति पञ्चकामगुणिको रागो। रूपारूपभवेसु पन रागो झाननिकन्तिसस्सतदिट्ठिसहगतो रागो भववसेन पत्थना **भवतण्हा**। उच्छेददिट्ठिसहगतो रागो **विभवतण्हा**। अपिच ठपेत्वा पच्छिमं 25 तण्हाद्वयं सेसतण्हा कामतण्हा नाम। यथाह "तत्थ कतमा भवतण्हा?

भवदिट्ठिसहगतो रागो सारागो[1] चित्तस्स सारागो, अयं वुच्चति भवतण्हा। तत्थ कतमा विभवतण्हा? उच्छेददिट्ठिसहगतो रागो सारागो चित्तस्स सारागो, अयं वुच्चति विभवतण्हा। अवसेसा तण्हा कामतण्हा'' ति। पुन कामतण्हादीसु पञ्चकामगुणिको रागो काम-
5 तण्हा। रूपारूपभवेसु छन्दरागो इतरा द्वे तण्हा। अभिधम्मे पनेता "कामधातुपटिसंयुत्तो ... पे० ... अरूपधातुपटिसंयुत्तो'' ति एवं वित्थारिता। इमिना वारेन किं दस्सेति? सब्बेपि तेभूमका धम्मा रजनीयट्ठेन तण्हावत्थुका ति सब्बतण्हा कामतण्हाय परियादियित्वा ततो नीहरित्वा इतरा द्वे तण्हा दस्सेति[2]। रूपतण्हादीसु रूपभवे
10 छन्दरागो **रूपतण्हा**। अरूपभवे छन्दरागो **अरूपतण्हा**। उच्छेददिट्ठि-सहगतो रागो **निरोधतण्हा**।

संयोजनत्तिके वट्टस्मिं संयोजयन्ति[3] बन्धन्ती ति **संयोजनानि**। सति रूपादिभेदे काये दिट्ठि, विज्जमाना वा काये दिट्ठी ति **सक्कायदिट्ठि**। विचिनन्तो एताय किच्छति, न सक्कोति सन्निट्ठानं
15 कातुं ति **विचिकिच्छा**। सीलञ्च वतञ्च परामसती ति **सीलब्बत-परामासो**। अत्थतो पन "रूपं अत्ततो समनुपस्सती'' ति आदिना नयेन आगता वीसतिवत्थुका दिट्ठि **सक्कायदिट्ठि** नाम। "सत्थरि कङ्खती'' ति तादिना नयेन आगता अट्ठवत्थुका विमति **विचिकिच्छा** नाम। 'इधेकच्चो सीलेन सुद्धि वतेन सुद्धि सीलब्बतेन सुद्धी ति सीलं
20 परामसति, वतं परामसति, सीलब्बतं परामसति। या एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं'' तिआदिना नयेन आगतो विपरियेसग्गाहो **सीलब्बतपरामासो** नाम।

B. 171 **तयो आसवा** ति एत्थ चिरपारिवासियट्ठेन वा आसवनट्ठेन वा **आसवा**। तत्थ "पुरिमा, भिक्खवे, कोटि न पञ्ञायति अविज्जाय,
R. 989 25 इतो पुब्बे अविज्जा नाहोसि, अथ पच्छा समभवी'' ति, "पुरिमा,

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. दस्सेसि—रो०।
३. योजयन्ति—रो०।

भिक्खवे, कोटि न पञ्ञायति भवतण्हाय भवदिट्ठिया, इतो पुब्बे भवदिट्ठि नाहोसि, अथ पच्छा समभवी'' ति एवं ताव चिरपारिवासियट्ठेन आसवा वेदितब्बा। चक्खुतो रूपे सवति आसवति सन्दति पवत्तति। सोततो सद्दे, घानतो गन्धे, जिव्हातो रसे, कायतो फोट्ठब्बे, मनतो धम्मे सवति आसवति[1] सन्दति पवत्तती ति एवं आसवनट्ठेन[2] आसवा ति वेदितब्बा।

पाळियं पन कत्थचि द्वे आसवा आगता "दिट्ठधम्मिका च आसवा सम्परायिका च आसवा" ति, कत्थचि "तयोमे, भिक्खवे, आसवा। कामासवो भवासवो अविज्जासवो" ति तयो। अभिधम्मे ते येव दिट्ठासवेन सद्धिं चत्तारो। निब्बेधिकपरियाये "अत्थि, भिक्खवे, आसवा निरयगामिनिया, अत्थि आसवा तिरच्छानयोनिगामिनिया, अत्थि आसवा पेत्तिविसयगामिनिया, अत्थि आसवा मनुस्सलोकगामिनिया" अत्थि आसवा देवलोकगामिनिया" ति एवं पञ्च। छक्कनिपाते आहुनेय्यसुत्ते "अत्थि, भिक्खवे, आसवा संवरा पहातब्बा, अत्थि आसवा पटिसेवना पहातब्बा, अत्थि आसवा परिवज्जना पहातब्बा, अत्थि आसवा अधिवासना पहातब्बा, अत्थि आसवा विनोदना पहातब्बा, अत्थि आसवा भावना पहातब्बा'' ति एव छ। सब्बासवपरियाये तेयेव दस्सनापहातब्बेहि सद्धिं सत्त। इमस्मिं पन सङ्गीतिसुत्ते तयो। तत्थ 'यो कामेसु कामच्छन्दो" ति एवं वुत्तो पञ्चकामगुणिको रागो कामासवो नाम। "यो भवेसु भवच्छन्दो" ति एवं वुत्तो सस्सतदिट्ठिसहगतो रागो, भववसेन वा पत्थना भवासवो नाम। "दुक्खे अञ्ञाणं" तिआदिना नयेन आगता अविज्जा अविज्जासवो नामाति। कामभवादयो कामधातुआदिवसेन वुत्तायेव।

कामेसनादीसु "तत्थ कतमा कामेसना ? यो कामेसु कामच्छन्दो कामज्झोसनं, अयं वुच्चति कामेसना'' ति एवं वुत्तो कामगवेसनरागो

१. अस्सवति—रो०। २. अस्सवनट्ठेन—रो०।

B. 172 कामेसना नाम। तत्थ कतमा भवेसना? यो भवेसु भवच्छन्दो भवज्झोसानं, अयं वुच्चति भवेसना" ति एवं वुत्तो भवगवेसनरागो भवेसना नाम। "तत्थ कतमा ब्रह्मचरियेसना? सस्सतो लोको ति वा...पे०...नेव होति न नहोति तथागतो परम्मरणाति वा, या
R. 990 5 एवरूपा दिट्ठि दिट्ठिगतं विपरियेसग्गाहो, अयं वुच्चति ब्रह्मचरियेसना" ति एवं वुत्ता दिट्ठिगतिकसम्मतस्स ब्रह्मचरियस्स गवेसनदिट्ठि ब्रह्मचरियेसना नाम। न केवलञ्च भवरागदिट्ठियोव, तदेकट्ठं कम्मम्पि एसनायेव। वुत्तञ्हेतं "तत्थ कतमा कामेसना? कामरागो तदेकट्ठं अकुसलं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं, अयं वुच्चति कामेसना। तत्थ
10 कतमा भवेसना? भवरागो तदेकट्ठं अकुसलं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं, अयं वुच्चति भवेसना। तत्थ कतमा ब्रह्मचरियेसना? अन्तग्गाहिका दिट्ठि तदेकट्ठं अकुसलं कायकम्मं वचीकम्मं मनोकम्मं, अयं वुच्चति ब्रह्मचरियेसना" ति।

विधासु "कथंविधं सीलवन्तं वदन्ति, कथंविधं पञ्ञवन्तं
15 वदन्ती" (सं० नि० १.५०) तिआदीसु आकारसण्ठानं विधा नाम। "एकविधेन ञाणवत्थु दुविधेन ञाणवत्थू" (विभं० ३६६) तिआदीसु कोट्ठासो। सेय्योहमस्मी ति विधा" (विभं० ४३८) तिआदीसु मानो विधा नाम। इध सो अधिप्पेतो। मानो हि सेय्यादिवसेन विदहनतो विधा ति वुच्चति। सेय्योहमस्मी ति इमिना सेय्यसदिसहीनानं वसेन
20 तयो माना वुत्ता। सदिसहीनेसुपि एसेव नयो।

अयञ्हि मानो नाम सेय्यस्स तिविधो, सदिसस्स तिविधो, हीनस्स तिविधो ति नवविधो होति। तत्थ "सेय्यस्स सेय्योहमस्मी" ति माना राजूनञ्चेव पब्बजितानञ्च उप्पज्जति।

राजा हि रट्ठेन वा धनवाहनेहि वा "को मया सदिसो अत्थी"
25 ति एतं मानं करोति। पब्बजितोपि सीलधुतङ्गादीहि "को मया सदिसो अत्थी" ति एतं मानं करोति। "सेय्यस्स सदिसोहमस्मी" ति मानोपि एतेसंयेव उप्पज्जति। राजा हि रट्ठेन वा धनवाहनेहि वा

अञ्ञराजूहि सद्धिं मय्हं किं नानाकरणं ति एतं मानं करोति। पब्बजितोपि सीलधुतङ्गादीहिपि अञ्ञेन भिक्खुना मय्हं किं नानाकरणं ति एतं मानं करोति। "सेय्यस्स हीनोहमस्मी" ति मानोपि एतेसंयेव उप्पज्जति। यस्स हि रञ्ञो रट्ठं वा धनवाहनादीनि वा नातिसम्पन्नानि होन्ति, सो मय्हं राजा ति वोहारसुखमत्तमेव, किं राजा नाम अहं ति एतं मानं करोति। पब्बजितोपि अप्पलाभसक्कारो अहं धम्मकथिको बहुस्सुतो महाथेरो ति कथामत्तकमेव, किं धम्मकथिको नामाहं किं बहुस्सुतो किं महाथेरो यस्स मे लाभसक्कारो नत्थीति एतं मानं करोति।

B. 173 5 R. 991

"सदिसस्स सेय्योहमस्मी" ति मानादयो अमच्चादीनं उप्पज्जन्ति। अमच्चो वा हि रट्ठियो वा भोगयानवाहनादीहि को मया सदिसो अञ्ञो राजपुरिसो अत्थी ति वा मय्हं अञ्ञेहि सद्धिं किं नानाकरणं ति वा अमच्चो ति नाममेव मय्हं, घासच्छादनमत्तम्पि मे नत्थि, किं अमच्चो नामाहं ति वा एते माने करोति।

10

"हीनस्स सेय्योहमस्मी" ति मानादयो दासादीनं उप्पज्जन्ति। दासो हि मातितो[१] वा पितितो[२] वा को मया सदिसो अञ्ञो दासो नाम अत्थि, अञ्ञे जीवितुं असक्कोन्ता कुच्छिहेतु दासा जाता, अहं[३] पन पवेणीआगतत्ता सेय्यो ति वा पवेणीआगतभावेन उभतोसुद्धिक-दासत्तेन असुकदासेन नाम सद्धिं किं मय्हं नानाकरणं ति वा कुच्छिवसेनाहं दासब्य उपगतो, मातापितुकोटिया पन मे दासट्ठानं नत्थि, किं दासो नाम अहं ति वा एते माने करोति। यथा च दासो, एवं पुक्कुसचण्डालादयोपि एते माने करोन्तियेव।

15 20

एत्थ च सेय्यस्स सेय्योहमस्मी ति च सदिसस्स सदिसोहमस्मी ति च हीनस्स हीनोहमस्मी ति च इमे तयो माना याथावमाना नाम अरहत्तमग्गवज्झा। सेसा छ माना अयाथावमाना नाम पठममग्गवज्झा।

25

१. मातिको—रो०। २. पितिको—रो०।

३. रो० पोत्थके नत्थि।

तयो अद्धा ति ततो काला। **अतीतो अद्धा** तिआदीसु द्वेपरियाया सुत्तन्तपरियायो च अभिधम्मपरियायो च। सुत्तन्तपरियायेन पटिसन्धितो पुब्बे **अतीतो अद्धा** नाम। चुतितो पच्छा **अनागतो अद्धा** नाम। सह चुतिपटिसन्धीहि तदन्तरं **पच्चुप्पन्नो अद्धा** नाम।
5 अभिधम्मपरियायेन तीसु खणेसु भङ्गतो उद्धं **अतीतो अद्धा** नाम। उप्पादतो पुब्बे **अनागतो अद्धा** नाम। खणत्तये **पच्चुप्पन्नो अद्धा** नाम। अतीतादिभेदो[1] च नाम अयं धम्मानं होति, न कालस्स।
B. 174 अतीतादिभेदे पन धम्मे उपादाय इध परमत्थतो अविज्जमानोपि कालो तेनेव वोहारेन वुत्तो ति वेदितब्बो।

10 **तयो अन्ता** ति तयो कोट्ठासा। "कायबन्धनस्स अन्तो जीरती" (चु० व० २२६) तिआदीसु हि अन्तोयेव अन्तो। "एसेवन्तो दुक्खस्सा" (सं० नि० २.७२) तिआदीसु परभागो अन्तो। "अन्तमिदं, भिक्खवे, जीविकानं" (सं० नि० २.३१७) ति एत्थ लामकभावो अन्तो। "सक्कायो खो, आवुसो, पठमो अन्तो"
15 (अं० नि० ३.१०७) ति आदीसु कोट्ठासो अन्तो। इध कोट्ठासो
R. 992 अधिप्पेतो। **सक्कायो** ति पञ्चुपादानक्खन्धा। **सक्कायसमुदयो** ति तेसं निब्बत्तिका पुरिमतण्हा। **सक्कायनिरोधो** ति उभिन्नं अप्पवत्तिभूतं निब्बानं। मग्गो पन निरोधाधिगमस्स उपायत्ता निरोधे गहिते गहितोवाति वेदितब्बो।

20 **दुक्खदुक्खता** ति दुक्खभूता दुक्खता। दुक्खवेदनायेतं नामं। **सङ्खारदुक्खता** ति सङ्खारभावेन दुक्खता। अदुक्खमसुखावेदनायेतं नामं। सा हि सङ्खतत्ता उप्पादजराभङ्गपीळिता, तस्मा अञ्ञदुक्ख-सभावविरहतो सङ्खारदुक्खता ति वुत्ता। **विपरिणामदुक्खता** ति विपरिणामे दुक्खता। सुखवेदनायेतं नामं, सुखस्स हि विपरिणामे
25 दुक्खं उप्पज्जति, तस्मा सुखं विपरिणामदुक्खता ति वुत्तं। अपिच ठपेत्वा दुक्खवेदनं सुखवेदनञ्च सब्बेपि तेभूमका धम्मा "सब्बे सङ्खारा दुक्खा" ति वचनतो सङ्खारदुक्खता ति वेदितब्बा।

१. अतीतादिभेदे—रो०।

मिच्छत्तनियतो ति मिच्छासभावो हुत्वा नियतो। नियतमिच्छा-दिट्ठिया सद्धिं आनन्तरियकम्मस्सेतं नामं। सम्माभावे नियतो सम्मत्तनियतो। चतुन्नं अरियमग्गानमेतं नामं। न नियतो ति अनियतो। अवसेसानं धम्मानमेतं नामं।

तयो तमा ति "तमन्धकारो सम्मोहो अविज्जोघो महाभयो" ति वचनतो अविज्जा तमो नाम। इध पन अविज्जासीसेन विचिकिच्छा वुत्ता। आरब्भा ति आगम्म। कङ्खती ति कङ्खं उप्पादेति। विचिकिच्छती ति विचिनन्तो किच्छं आपज्जति, सन्निट्ठातुं न सक्कोति। नाधिमुच्छती ति तत्थ अधिमुच्छितुं न सक्कोति। न सम्पसीदती ति तं आरब्भ पसादं आरोपेतुं न सक्कोति। 5 10

अरक्खेय्यानी ति न रक्खितब्बानि। तीसु द्वारेसु पच्चेकं रक्खण-किच्चं नत्थि, सब्बानि सतिया एव रक्खितानि ति दीपेति। नत्थि तथागतस्सा "इदं नाम मे सहसा उप्पन्नं कायदुच्चरितं, इमाहं यथा मे परो न जानाति, तथा रक्खामि, पटिच्छादेमी" ति एवं रक्खितब्बं नत्थि तथागतस्स कायदुच्चरितं। सेसेसुपि एसेव नयो। किं पन सेसखीणासवानं कायसमाचारादयो अपरिसुद्धा ति ? नो अपरिसुद्धा। न पन तथागतस्स विय परिसुद्धा। अप्पस्सुतखीणासवो हि किञ्चापि लोकवज्जं नापज्जति, पण्णत्तियं पन अकोविदत्ता विहारकारं कुटिकारं सहगारं सहसेय्यं ति एवरूपा कायद्वारे आपत्तियो आपज्जति। सञ्चरित्तं पदसोधम्मं उत्तरिछप्पञ्चवाचं भूतारोचनं ति एवरूपा वचीद्वारे आपत्तियो आपज्जति। उपनिक्खित्तसादियनवसेन मनोद्वारे रूपियप्प-टिग्गहणापत्तिं आपज्जति, धम्मसेनापति सदिसस्सापि हि खीणसवस्स मनोद्वारे सउपारम्भवसेन मनोदुच्चरितं उप्पज्जति एव। B. 175 R. 993 15 20

चातुमवत्थुस्मिञ्हि पञ्चहि भिक्खुसतेहि सद्धिं सारिपुत्तमोग्गल्ला-नानं पणामितकाले तेसं अत्थाय चातुमेय्यकेहि सक्येहि भगवति खमापिते थेरो भगवता "किन्ति ते सारिपुत्त अहोसि मया भिक्खुसंघ पणामिते" ति पुट्ठो अहं परिसाय अब्यत्तभावेन सत्थारा पणामितो। 25

इतो दानि पट्ठाय परं न ओवदिस्सामी ति चित्तं उप्पादेत्वा आह "एवं खो मे, भन्ते, अहोसि भगवता भिक्खुसंघो पणामितो, अप्पोस्सुक्को दानि भगवा दिट्ठधम्मसुखविहारं अनुयुत्तो विहरिस्सति, मयम्पि दानि अप्पोस्सुक्का दिट्ठधम्मसुखविहारं अनुयुत्ता विहरिस्सामा'' ति।

5 अथस्स तस्मिं मनोदुच्चरिते 'उपारम्भं आरोपेन्तो सत्था आह "आगमेहि त्वं, सारिपुत्त, न खो ते सारिपुत्त पुनपि एवरूपं चित्तं उप्पादेतब्बं" ति। एवं परं न ओवादिस्सामि नानुसासिस्सामी ति वितक्कितमत्तम्पि थेरस्स मनोदुच्चरितं नाम जातं। भगवतो पन एत्तकं नाम नत्थि, अनच्छरियञ्चेतं। सब्बञ्ञुतं पत्तस्स दुच्चरितं 10 न भवेय्य। बोधिसत्तभूमियं ठितस्स छब्बस्सानि पधानं अनुयुञ्जन्तस्सापि पनस्स नाहोसि। उदरच्छवियापिट्ठिकण्टकं अल्लीनाय "कालंकतो समणो गोतमो'' ति देवतानं विमतिया उप्पज्जमानायपि "सिद्धत्थ B. 176 कस्मा किलमसि? सक्का भोगे च भुञ्जितुं पुञ्ञानि च कातुं'' ति मारेन पापिमता वुच्चमानस्स "भोगे भुञ्जिस्सामी'' ति वितक्कमत्तम्पि 15 नुप्पज्जति। अथ नं मारो बोधिसत्तकाले छब्बस्सानि बुद्धकाले एकं R. 994 वस्सं अनुबन्धित्वा किञ्चि वज्जं अपस्सित्वा इदं वत्वा पक्कामि—

"सत्तवस्सानि भगवन्तं, अनुबन्धिं पदापदं।
ओतारं नाधिगच्छिस्सं, सम्बुद्धस्स सतिमतो''
(सु० नि० ३३२) ति॥

20 अपिच अट्ठारसन्नं बुद्धधम्मानं वसेनापि भगवतो दुच्चरिताभावो वेदितब्बो। **अट्ठारस बुद्धधम्मा** नाम नत्थि तथागतस्स कायदुच्चरितं, नत्थि वचीदुच्चरितं, नत्थि मनोदुच्चरितं, अतीते बुद्धस्स अप्पटिहतञाणं, अनागते, पच्चुप्पन्ने बुद्धस्स अप्पटिहतञाणं, सब्बं कायकम्मं बुद्धस्स भगवतो ञाणानुपरिवत्ति, सब्बं वचीकम्मं, सब्बं मनोकम्मं बुद्धस्स 25 भगवतो ञाणानुपरिवत्ति, नत्थि छन्दस्स हानि, नत्थि वीरियस्स

हानि, नत्थि सतिया हानि, नत्थि दवा, नत्थि रवा, नत्थि चलितं[1], नत्थि सहसा, नत्थि अब्यावटो मनो, नत्थि अकुसलचित्तं ति ।

किञ्चना ति पलिबोधा । **रागो किञ्चनं** ति रागो उप्पज्जमानो सत्ते बन्धति पलिबुन्धति[2] तस्मा किञ्चनं ति वुच्चति । इतरेसुपि द्वीसु एसेव नयो । 5

अग्गी ति अनुदहनट्ठेन **अग्गि** । **रागग्गी** ति रागो उप्पज्जमानो सत्ते अनुदहति झापेति, तस्मा अग्गी ति वुच्चति । इतरेसुपि एसेव नयो । तत्थ वत्थूनि—एका दहरभिक्खुनी चित्तलपब्बतविहारे उपोसथागारं गन्त्वा द्वारपालरूपकं ओलोकयमाना ठिता । अथस्सा अन्तो रागो उप्पन्नो । सा तेनेव झायित्वा कालमकासि । भिक्खुनियो 10 गच्छमाना "अयं दहरा ठिता, पक्कोसथ, नं" ति आहंसु । एका गन्त्वा कस्मा ठितासी ति हत्थे गण्हि । गहितमत्ता परिवत्तित्वा पपता । इदं ताव रागस्स अनुदहनताय वत्थु । दोसस्स पन अनुदहनताय **मनोपदोसिका** देवा । मोहस्स अनुदहनताय **खिड्डापदोसिका** देवा दट्ठब्बा । मोहवसेन हि तासं[3] सतिसम्मोसो[4] होति । तस्मा खिड्डावसेन 15 आहारकालं अतिवत्तित्वा कालंकरोन्ति ।

आहुनेय्यग्गी ति आदीसु आहुनं वुच्चति सक्कारो, आहुनं अरहन्ती ति **आहुनेय्या** । मातापितरो हि पुत्तानं बहूपकारताय आहुनं अरहन्ति । तेसु विप्पटिपज्जमाना पुत्ता निरयादीसु निब्बत्तन्ति । तस्मा किञ्चापि मातापितरो नानुदहन्ति, अनुदहनस्स पन पच्चया 20 होन्ति । इति अनुदहनट्ठेन आहुनेय्यग्गी ति वुच्चति । स्वायमत्थो मित्तविन्दकवत्थुना दीपेतब्बो— B. 177 R. 995

मित्तविन्दको हि मातरा "तात, अज्ज उपोसथिको हुत्वा विहारे सब्बरत्तिं धम्मस्सवनं सुण, सहस्सं ते दस्सामी" ति वुत्तो धनलोभेन उपोसथं समादाय विहारं गन्त्वा इदं ठानं अकुतोभयं ति सल्लक्खेत्वा 25

१. वलितं—रो० । २. पलिबुद्धति—रो० ।
३. तेसं—रो० । ४. सम्मोहो—रो० ।

धम्मासनस्स हेट्ठा निप्पन्नो सब्बरत्तिं निद्दायित्वा घरं अगमासि। माता पातोव यागुं पचित्वा उपनामेसि। सो सहस्सं गहेत्वाव पिवि। अथस्स एतदहोसि "धनं सहरिस्सामी" ति। सो नावाय समुद्दं पक्खन्दितुकामो अहोसि। अथ नं माता "तात इमस्मिं कुले 5 चत्तालीसकोटिधनं अत्थि, अलं गमनेना" ति निवारेसि[1]। सो तस्सा वचनं अनादियित्वा गच्छति एव। माता पुरतो अट्ठासि। अथ नं कुज्झित्वा "अथ मय्हं पुरतो तिट्ठती" ति पादेन पहरित्वा पतितं अन्तरं कत्वा अगमासि।

माता उट्ठहित्वा "मादिसाय मातरि एवरूपं कम्मं कत्वा गतस्स 10 ते गतट्ठाने सुखं भविस्सती ति एवंसञ्ञी नाम त्वं पुत्ता" ति आह। तस्स नावं आरुय्ह गच्छतो सत्तमे दिवसेनावा अट्ठासि। अथ ते मनुस्सा "अद्धा एत्थ पापपुरिसो अत्थि, सलाकं देथा" ति आहंसु[2]। सलाका दिय्यमाना तस्सेव तिक्खत्तुं पापुणाति। ते तस्स उळुम्पं दत्वा तं समुद्दे पक्खिपिंसु। सो एकं दीपं गन्त्वा विमानपेतीहि सद्धिं 15 सम्पत्तिं अनुभवन्तो ताहि "पुरतो पुरतो मा अगमासी" ति वुच्चमानोपि तद्दिगुणं सम्पत्तिं पस्सन्तो अनुपुब्बेन खुरचक्कधरं एकं अद्दस। तस्स तं चक्कं पदुमपुप्फं विय उपट्ठासि। सो तं आह "अम्भो, इदं तया पिळन्धितं पदुमं मय्हं देही" ति। "न इदं सामि पदुमं, खुरचक्कं एतं" ति। सो "वञ्चेसि मं, त्वं किं मया पदुमं अदिट्ठपुब्बं" ति 20 वत्वा त्वं लोहितचन्दनं विलिम्पित्वा पिळन्धनं पदुमपुप्फं मय्हं न दातुकामो ति आह। सो चिन्तेसि "अयम्पि मया कतसदिसं कम्मं B. 178 कत्वा तस्स फलं अनुभवितुकामो" ति। अथ नं "हन्द रे[3]" ति वत्वा तस्स मत्थके चक्कं पक्खिपि तेन वुत्तं—

R. 996 "चतुब्भि अट्ठज्झगमा, अट्ठाहिपि च सोळस।
25 सोळसाहि च बत्तिंस, अत्रिच्छं चक्कमासदो।
इच्छाहतस्स पोसस्स, चक्कं भमति मत्थके"
(जात० २४) ति॥

१. वारेसि—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. वारेही ति—रो०।

गहपती ति पन गेहसामिको वुच्चति। सो मातुगामस्स सयन-वत्थालङ्कारादिअनुप्पदानेन बहूपकारो। तं अतिचरन्तो मातुगामो निरयादीसु निब्बत्तति, तस्मा सोपि पुरिमनयेनेव अनुदहनट्ठेन गहपतग्गी ति वुत्तो।

तत्थ वत्थु[1]। कस्सपबुद्धस्स काले सोतापन्नस्स उपासकस्स भरिया अतिचारिनी अहोसि। सो तं पच्चक्खतो दिस्वा "कस्मा त्वं एवं करोसी" ति आह? सा "सचाहं एवरूपं करोमि, अयं मे सुनखो विलुप्पमानो खादतू" ति वत्वा कालं कत्वा कण्णमुण्डकदहे वेमानिकपेती हुत्वा निब्बत्ता। दिवा सम्पत्तिं अनुभवति, रत्तिं दुक्खं। तदा बाराणसीराजा मिगवं चरन्तो अरञ्ञं पविसित्वा अनुपुब्बेन कण्ण-मुण्डकदहं सम्पत्तो ताय सद्धिं सम्पत्तिं अनुभवति। सा तं वञ्चेत्वा रत्तिं दुक्खं अनुभवति। सो ञत्वा "कत्थ नु खो गच्छती" ति पिट्ठितो पिट्ठितो गन्त्वा अविदूरे ठितो कण्णमुण्डकदहतो निक्खमित्वा तं "पटपटं" ति खादमानं एकं सुनखं दिस्वा असिना द्विधा छिन्दि। द्वे अहेसुं। पुन[2] छिन्ने चत्तारो, पुन छिन्ने अट्ठ, पुन छिन्ने सोळस अहेसुं। सा "किं करोसि सामी" ति आह? सो "किं इदं" ति आह? सा "एवं अकत्वा खेळपिण्डं भूमियं निट्ठुभित्वा[3] पादेन घंसाही" ति आह। सो तथा अकासि। सुनखा अन्तरधायिंसु। तं दिवसं तस्सा कम्मं खीणं। राजा विप्पटिसारी हुत्वा गन्तुं आरद्धो। सा "मय्हं सामि कम्मं खीणं मा अगमा[4]" ति आह। राजा असुत्वा व गतो।

दक्खिणेय्यग्गी ति एत्थ पन **दक्खिणा** ति चत्तारो पच्चया, भिक्खु-संघो दक्खिणेय्यो। सो गिहीनं तीसु सरणेसु पञ्चसु सीलेसु दससु[5] सीलेसु[5] मातापितुउपट्ठाने धम्मिकसमणब्राह्मणउपट्ठानेति एवमादीसु कल्याणधम्मेसु नियोजनेन बहुपकारो, तस्मिं मिच्छापटिपन्ना गिही

१. वत्थुं—रो०। २. पुन पि—रो०।
३. निट्ठुहित्वा—रो०। ४. अगमासी ति—रो०।
५-५. रो० पोत्थकेसु नत्थि।

B. 179 भिक्खुसंघं अक्कोसित्वा परिभासित्वा निरयादीसु निब्बत्तन्ति, तस्मा
R. 997 सोपि पुरिमनयेनेव अनुदहनुट्ठेन दक्खिणेय्यग्गी ति वुत्तो। इमस्स पनत्थस्स विभावनत्थं विमानवत्थुस्मिं रेवतीवत्थु वित्थारेतब्बं।

"तिविधेन रूपसङ्गहो" ति एत्थ **तिविधेना** ति तीहि कोट्ठासेहि।
5 **सङ्गहो** ति जातिसञ्जातिकिरियगणनवसेन चतुब्बिधो सङ्गहो। तत्थ सब्बे खत्तिया आगच्छन्तूति आदिको जातिसङ्गहो। सब्बे कोसलका ति आदिको सञ्जातिसङ्गहो। सब्बे हत्थारोहा ति आदिको किरियसङ्गहो। चक्खायतनं कतमं खन्धगणनं गच्छती ति? चक्खायतनं रूपक्खन्धगणनं गच्छती ति। हञ्चि चक्खायतनं रूपक्खन्धेन
10 सङ्गहितं ति अयं गणनसङ्गहो, सो इध अधिप्पेतो। तस्मा तिविधेन रूपसङ्गहोति तीहि कोट्ठासेति रूपगणनाति अत्थो।

सनिदस्सनादीसु अत्तानं आरब्भ पवत्तेन चक्खुविञ्ञाणसङ्खातेन सह निदस्सनेना ति **सनिदस्सनं**। चक्खुपटिहननसमत्थतो सह पटिघेना ति **सप्पटिघं**। तं अत्थतो रूपायातनमेव। चक्खुविञ्ञाण-
15 सङ्खातं नास्स निदस्सनन्ति **अनिदस्सनं**। सोतादिपटिहननसमत्थतो सह पटिघेना ति **सप्पटिघं**। तं अत्थतो चक्खायतनादीनि नव आयतनानि। वुत्तप्पकारं नास्स निदस्सनं ति **अनिदस्सनं**। नास्स पटिघो ति **अप्पटिघं**। तं अत्थतो ठपेत्वा दसायतनानि अवसेसं सुखुमरूपं।

20 **तयो सङ्खारा** ति सहजातधम्मे चेव सम्पराये फलधम्मे च सङ्खरोन्ति रासी करोन्ती ति सङ्खारा। **अभिसङ्खारोती** ति अभिसङ्खारो। पुञ्ञा अभिसङ्खारो **पुञ्ञाभिसङ्खारो**।

"तत्थ कतमो पुञ्ञाभिङ्खारो? कुसला चेतना कामावचरा रूपावचरा दानमया सीलमया भावनामया" ति एवं वुत्तानं अट्ठन्नं
25 कामावचरकुसलमहाचित्तचेतनानं पञ्चन्नं रूपावचरकुसलचेतनानञ्चेतं अधिवचनं। एत्थ च दानसीलमया अट्ठेव चेतना होन्ति। भावनामया तेरसापि। यथा हि पगुणं धम्मं सज्झायमानो एकं द्वे अनुसन्धि

गतोपि न जानाति, पच्छा आवज्जन्तो जानाति, एवमेव कसिणपरिकम्मं करोन्तस्स पगुणज्झानं पच्चवेक्खन्तस्स ञाणविप्पयुत्तापि भावना होति। तेन वुत्तं "भावनामया तेरसापी" ति। B. 180

तत्थ दानमयादीसु "दानं आरब्भ दानमधिकिच्च या उप्पज्जति चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं, अयं वुच्चति दानमयो पुञ्ञाभिसङ्खारो। सीलं आरब्भ, भावनं आरब्भ भावनमधिकिच्च या उप्पज्जति चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं, अयं वुच्चति भावनामयो पुञ्ञाभिसङ्खारो" ति अयं सङ्खेपदेसना। R. 998 5

चीवरादीसु पन चतूसु पच्चयेसु रूपादीसु वा छसु आरम्मणेसु अन्नादीसु वा दससु दानवत्थूसु तं तं देन्तस्स तेसं उप्पादनतो पट्ठाय पुब्बभागे, परिच्चागकाले, पच्छा सोमनस्सचित्तेन अनुस्सरणे चा ति तीसु कालेसु पवत्ता चेतना दानमया नाम। सीलपूरणत्थाय पन पब्बजिस्सामी ति विहारं गच्छन्तस्स, पब्बजन्तस्स मनोरथं मत्थकं पापेत्वा पब्बजितो वतम्हि साधु साधू ति आवज्जन्तस्स, पातिमोक्खं संवरन्तस्स, चीवरादयो पच्चये पच्चवेक्खस्स, आपाथगतेसु रूपादीसु चक्खुद्वारादीनि संवरन्तस्स, आजीवं सोधेन्तस्स च पवत्ता चेतना सीलमया नाम। 10 15

पटिसम्भिदायं वुत्तेन विपस्सनामग्गेन "चक्खुं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो भावेन्तस्स...पे०...मनं, रूपे, धम्मे, चक्खुविञ्ञाणं...पे०... मनोविञ्ञाणं, चक्खुसम्फस्सं...पे०...मनोसम्फस्सं, चक्खुसम्फस्सजं वेदनं...पे०...मनोसम्फस्सजं वेदनं, रूपसञ्ञं जरामरणं अनिच्चतो दुक्खतो अनत्ततो भावेन्तस्स पवत्ता चेतना भावनामया नामा" ति अयं वित्थारकथा। 20

अपुञ्ञो च सो अभिसङ्खारो चा ति अपुञ्ञाभिसङ्खारो। द्वादस अकुसलचित्तसम्पयुत्तानं चेतनानं एतं अधिवचनं। वुत्तम्पि चेतं "तत्थ कतमो अपुञ्ञाभिसङ्खारो? अकुसलचेतना कामावचरा, अयं वुच्चति अपुञ्ञाभिसङ्खारो" ति। आनेञ्जं निच्चलं सन्तं 25

विपाकभूतं अरूपमेव अभिसङ्खरोती ति **अनेञ्जाभिसङ्खारो**। चतुन्नं अरूपावचरकुसलचेतनानं एतं अधिवचनं। यथाह "तत्थ कतमो आनेञ्जाभिसङ्खारो? कुसलचेतना अरूपावचरा, अयं वुच्चति आनेञ्जाभिसङ्खारो" ति।

B. 181 5 **पुग्गलत्तिके** सत्तविधो पुरिसपुग्गलो, तिस्सो सिक्खा सिक्खती ति **सेक्खो**। खीणासवो सिक्खितसिक्खत्ता पुन न सिक्खिस्सती ति[1] **असेक्खो**। पुथुज्जनो सिक्खाहि परिबाहियत्ता **नेवसेक्खो नासेक्खो**।

R. 999 **थेरत्तिके** जातिमहल्लको गिही **जातित्थेरो** नाम। "चत्तारोमे, भिक्खवे, थेरकरणा धम्मा। इध, भिक्खवे, थेरो सीलवा होति, 10 बहुस्सुतो होति, चतुन्नं झानानं लाभी होति, आसवानं खया...पे०... उपसम्पज्ज विहरति। इमे खो, भिक्खवे, चत्तारो थेरकरणा[2] धम्मा" (अं० नि० २.२५) ति। एवं वुत्तेसु धम्मेसु एकेन वा अनेकेहि[3] वा समन्नागतो **धम्मथेरो** नाम। अञ्ञतरो थेरनामको भिक्खू ति एवं थेरनामको वा, यं वा पन महल्लककाले पब्बजितं सामणेरादयो[4] 15 दिस्वा थेरो थेरो ति[5] वदन्ति, अयं **सम्मुतिथेरो** नाम।

पुञ्ञकिरियवत्थूसु दानमेव **दानमयं**। पुञ्ञकिरिया च सा तेसं तेसं आनिसंसानं वत्थु चा ति **पुञ्ञकिरियवत्थु**। इतरेसुपि द्वीसु एसेव नयो। अत्थतो पन पुब्बे वुत्तदानमयचेतनादिवसेनेव सद्धिं पुब्बभागअपरभागचेतनाहि इमानि तीणि पुञ्ञकिरियवत्थूनि 20 वेदितब्बानि। एकमेकञ्चेत्थ पुब्बभागतो पट्ठाय कायेन करोन्तस्स कायकम्मं होति। तदत्थं वाचं निच्छारेन्तस्स वचीकम्मं। कायङ्ग-वाचङ्गं अचोपेत्वा मनसा चिन्तेन्तस्स मनोकम्मं। अन्नादीनि देन्तस्स चापि अन्नदानादीनि देमीति वा दानपारमिं आवज्जेत्वा वा दानकाले

१. सिक्खती ति—रो०।
२. थेरकरणीया—रो०।
३. अनेकेन—रो०।
४. सामणेरा—रो०।
५. रो० पोत्थके नत्थि।

दानमयं पुञ्ञकिरियवत्थु होति। वत्तसीसे ठत्वा ददतो सीलमयं। खयतो वयतो सम्मसनं पट्ठपेत्वा ददतो भावनामयं पुञ्ञकिरियवत्थु होति।

अपरानिपि सत्त पुञ्ञकिरियवत्थूनि अपचितिसहगतं पुञ्ञकिरियवत्थु, वेय्यावच्चसहगतं, पत्तानुप्पदानं, पत्तब्भनुमोदनं, देसनामयं, सवनमयं, दिट्ठिजुगतं पुञ्ञकिरियवत्थू ति। तत्थ महल्लकं दिस्वा पच्चुग्गमन-पत्तचीवरप्पटिग्गहण-अभिवादनमग्गसम्पदानादिवसेन अपचितिसहगतं वेदितब्बं। वुड्ढतरानं वत्तप्पटिपत्तिकरणवसेन, गामं पिण्डाय पविट्ठं भिक्खुं दिस्वा वत्तं गहेत्वा गामे भिक्खं समादपेत्वा उपसंहरणवसेन, "गच्छ भिक्खूनं पत्तं आहरा" ति सुत्वा वेगेन गन्त्वा पत्ताहरणादिवसेन च वेय्यावच्चसहगतं वेदितब्बं। चत्तारो पच्चये दत्वा सब्बसत्तानं पत्ति होतू ति पवत्तनवसेन पत्तानुप्पदानं वेदितब्बं। परेहि दिन्नाय पत्तिया साधु सुट्ठू ति अनुमोदनावसेन पत्तब्भनुमोदनं वेदितब्बं। एको "एवं मं[१] 'धम्मकथिको' ति जानिस्सन्ती" ति इच्छाय ठत्वा लाभगरुको हुत्वा देसेति, तं न महप्फलं। एको अत्तनो पगुणधम्मं अपच्चासीसमानो[२] परेसं देसेति, इदं देसनामयं पुञ्ञकिरियवत्थु नाम। एको सुणन्तो "इति मं 'सद्धो' ति जानिस्सन्ती" ति सुणाति, तं न महप्फलं। एको "एवं मे महप्फलं भविस्सती" ति हितप्फरणेन मुदुचित्तेन धम्मं सुणाति, इदं सवनमयं पुञ्ञकिरियवत्थु। दिट्ठिजुगतं पन सब्बेसं नियमलक्खणं। यं किञ्चि पुञ्ञं करोन्तस्स हि दिट्ठिया उजुभावेनेव महप्फलं होति।

इति इमेसं सत्तन्नं पुञ्ञकिरियवत्थूनं पुरिमेहेव तीह सङ्गहो वेदितब्बो। एत्थ हि अपचितिवेय्यावच्चानि सीलमये। पत्तिदान[३] पत्तब्भनुमोदनानि दानमये। देसनासवनानि भावनामये। दिट्ठिजुगतं तीसुपि सङ्गहं गच्छति।

१. नं—रो०। २. अपच्चासिसमानो—रो०।
३. पत्तिपत्तब्भनुमोदनानि—रो०।

चोदनावत्थूनी ति चोदनाकारणानि। **दिट्ठेना** ति मंसचक्खुना वा दिब्बचक्खुना वा वीतिक्कमं दिस्वा चोदेति। **सुतेना** ति पकतिसोतेन वा दिब्बसोतेन वा परस्स सद्दं सुत्वा चोदेति। **परिसङ्काय वा** ति दिट्ठपरिसङ्कितेन वा सुतपरिसङ्कितेन वा मुतपरिसङ्कितेन वा
5 चोदेति। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन समन्तपासादिकायं वुत्तनयेनेव वेदितब्बो।

कामूपपत्तियो ति कामूपसेवना कामप्पटिलाभा वा। **पच्चुपट्ठितकामा** ति निवद्धकामा[1] निबद्धारम्मणा[2]। **सेय्यथापि मनुस्सा** ति यथा मनुस्सा। मनुस्सा हि निबद्धेयेव वत्थुस्मिं वसं वत्तेन्ति। यत्थ
10 पटिबद्धचित्ता होन्ति, सतम्पि सहस्सम्पि दत्वा मातुगामं अनेत्वा निबद्धभोगं भुञ्जन्ति। **एकच्चे देवा** नाम चतुदेवलोकवासिनो। तेपि निबद्धवत्थुस्मिं येव वसं वत्तेन्ति। **एकच्चो विनिपातिका** नाम नेरयिके ठपेत्वा अवसेसा मच्छकच्छपादयोपि हि निबद्धवत्थुस्मिं येव
B. 183 वसं वत्तेन्ति, मच्छो अत्तनो मच्छिया[3] कच्छपो कच्छपिया[4] ति।
15 R. 1001 **निम्मिनित्वा निम्मिनित्वा** ति नीलपीतादिवसेन यादिसं अत्तनो रूपं इच्छन्ति, तादिसं तादिसं निम्मिनित्वा आयस्मतो अनुरुद्धस्स पुरतो मनापकायिका देवता[5] विय। **निम्मानरती** ति एवं सयं निम्मिते निम्माने रति एतेसं ति निम्मानरती। **परनिम्मितकामा** ति परेहि निम्मितकामा। तेसञ्हि मनं ञत्वा परे यथारुचितं
20 कामभोगं निम्मिनन्ति, ते तत्थ वसं वत्तेन्ति। कथं परस्स मनं जानन्ती ति? पकतिसेवनवसेन। यथा हि कुसलो सूदो रञ्ञो भुञ्जन्तस्स यं यं सो बहुं गण्हाति, तं तं तस्स रुच्चती ति जानाति, एवं पकतिया अभिरुचितारम्मणं ञत्वा तादिसकंयेव निम्मिनन्ति। ते तत्थ वसं वत्तेन्ति, मेथुनं सेवन्ति केचि पन थेरा "हसितमत्तेन

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. बद्धारम्मणा—रो०।
३. मच्छिनिया—रो०। ४. कच्छपिनिया ति—रो०।
५. मनापदेवता विय—रो०।

ओलोकितमत्तेन आलिङ्गितमत्तेन च तेसं कामकिच्चं इज्झती" ति वदन्ति, तं अट्ठकथायं "एतं पन नत्थी" ति पटिक्खित्तं। न हि कायेन अफुसन्तस्स फोट्ठब्बं कामकिच्चं साधेति। छन्नम्पि हि कामावचरानं कामा पाकतिका एव। वुत्तम्पि चेतं—

"छ एते कामावचरा, सब्बकामसमिद्धिनो। 5
सब्बेसं एकसङ्खातं, आयुं भवति कित्तकं" ति ॥

सुखूपपत्तियो ति सुखप्पटिलाभा। **उप्पादेत्वा उप्पादेत्वा सुखं विहरन्ती** ति हेट्ठा पठमज्झानसुखं निब्बत्तेत्वा उपरि विपाकज्झानसुखं अनुभवन्ती ति अत्थो। **सुखेन अभिसन्ना** ति दुतियज्झानसुखेन तिन्ता। **परिसन्ना** ति समन्ततो तिन्ता। **परिपूरा** ति परिपुण्णा। 10 **परिप्फुटा** ति तस्सेव वेवचनं। इदम्पि विपाकज्झानसुखमेव सन्धाय वुत्तं। **अहोसुखं अहोसुखं** ति तेसं किर भवलोभो महा उप्पज्जति। तस्मा कदाचि करहचि एवं उदानं उदानेन्ति। **सन्तमेवा** ति पणीतमेव। **तुसिता** ति ततो उत्तरिं सुखस्स अपत्थनतो सन्तुट्ठा हुत्वा। **सुखं पटिवेदेन्ती** ति ततियज्झानसुखं अनुभवन्ति। 15

सेक्खा पञ्ञा ति सत्त अरियपञ्ञा। अरहतो **असेक्खा**। अवसेसा पञ्ञा **नेवसेक्खानासेक्खा**।

B. 184 R. 1002

चिन्तामयादीसु अयं वित्थारो — "तत्थ कतमा चिन्तामया पञ्ञा? योगविहितेसु वा कम्मायतनेसु योगविहितेसु वा सिप्पायतनेसु योगविहितेसु वा विज्जाट्ठानेसु[1] कम्मस्सकतं वा सच्चानुलोमिकं 20 वा रूपं अनिच्चं ति वा ... पे० ... विञ्ञाणं अनिच्चं ति वा यं एवरूपं अनुलोमिकं खन्ति दिट्ठिं रुचिं मुत्तिं[2] पेक्खं धम्मनिज्झानक्खन्ति परतो असुत्वा पटिलभति, अयं वुच्चति **चिन्तामया पञ्ञा** (दी० नि० ३.१७२)। तत्थ कतमा सुतमया पञ्ञा? योगविहितेसु वा कम्मायतनेसु ... पे० ... धम्मनिज्झानक्खन्तिं परतो सुत्वा 25

१. विज्जा-आयतनेसु—रो०। २. मुनिं—रो०।

पटिलभति, अयं वुच्चति **सुतमया पञ्ञा**। तत्थ कतमा भावनामया पञ्ञा? सब्बापि समापन्नस्स पञ्ञा **भावनामया** पञ्ञा" (विभं० ३८५) ति।

सुतावुधं ति सुतमेव आवुधं। तं अत्थतो तेपिटकं बुद्धवचनं।
5 तञ्हि निस्साय भिक्खु पञ्ञावुधं निस्साय सूरो योधो अविकम्पमानो महाकन्तारं विय संसारकन्तारं अतिक्कमति अविहञ्ञमानो। तेनेव वुत्तं "सुतावुधो, भिक्खवे, अरियसावको अकुसलं पजहति, कुसलं भावेति, सावज्जं पजहति, अनवज्जं भावेति, सुद्धमत्तानं परिहरती" (अं० नि० ३.२३६) ति।

10 **पविवेकावुधं** ति "कायविवेको चित्तविवेको उपधिविवेको" ति अयं तिविधोपि विवेकोव आवुधं। तस्स नानाकरणं कामविवेको विवेकट्ठकायानं[१] नेक्खम्माभिरतानं। चित्तविवेको च परिसुद्धचित्तानं परमवोदानप्पत्तानं। उपधिविवेको च निरुपधीनं पुग्गलानं। विसंखारगतानं। इमस्मिञ्हि तिविधे विवेके अभिरतो, न कुतोचि
15 भायति। तस्मा अयम्पि अवस्सयट्ठेन आवुधं ति वुत्तो। लोकियलोकुत्तरपञ्ञाव आवुधं **पञ्ञावुधं**। यस्स सा अत्थि, सो न कुतोचि भायति, न चस्स कोचि भायति। तस्मा सापि अवस्सयट्ठेनेव आवुधं ति वुत्ता।

अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं ति इतो पुब्बे अनञ्ञातं अविदितं
20 धम्मं जानिस्सामी ति पटिपन्नस्स उप्पन्नं इन्द्रियं। सोतापत्तिमग्गञाणस्सेतं अधिवचनं। **अञ्ञिन्द्रियं** ति अञ्ञाभूतं आजाननभूतं[२] इन्द्रियं। सोतापत्तिफलतो पट्ठाय छसु ठानेसु ञाणस्सेतं अधिवचनं। **अञ्ञाताविन्द्रियं** ति अञ्ञातावीसु जाननकिच्चपरियोसानप्पत्तेसु धम्मेसु इन्द्रियं। अरहत्तफलञाणस्सेतं[३] अधिवचनं।

१. च नवकट्ठकायानं—रो०। २. जाननभूतं—रो०।
३. अरहत्तफलस्सेतं—रो०।

मंसचक्खु चक्खुपसादो। **दिब्बचक्खु** आलोकनिस्सितं ञाणं। **पञ्ञाचक्खु** लोकियलोकुत्तरपञ्ञा। B. 185 R. 1003

अधिसीलसिक्खादीसु अधिसीलञ्च तं सिक्खितब्बतो सिक्खा चा ति **अधिसीलसिक्खा**। इतरस्मिं द्वये पि एसेव नयो। तत्थ सीलं अधिसीलं, चित्तं अधिचित्तं, पञ्ञा अधिपञ्ञा ति अयं पभेदो 5 वेदितब्बो—

सीलं नाम पञ्चसीलदससीलानि, पातिमोक्खसंवरो **अधिसीलं** नाम। अट्ठ समापत्तियो चित्तं, विपस्सनापादकज्झानं **अधिचित्तं**। कम्मस्सकतञाणं पञ्ञा, विपस्सनापञ्ञा **अधिपञ्ञा**। अनुप्पन्नेपि हि बुद्धुप्पादे पवत्तती ति पञ्चसीलदससीलानि सीलमेव, पातिमोक्ख- 10 संवरसीलं बुद्धुप्पादेयेव पवत्तती ति अधिसीलं। चित्तपञ्ञासुपि एसेव नयो। अपिच निब्बानं पत्थयन्तेन समादिन्नं पञ्चसीलम्पि दससीलम्पि अधिसीलमेव। समापन्ना अट्ठ समापत्तियोपि अधिचित्तमेव। सब्बं वा लोकियं सीलमेव, लोकुत्तरं अधिसीलं। चित्तपञ्ञासुपि एसेव नयो। 15

भावनासु खीणासवस्स पञ्चद्वारिककायो **कायभावना** नाम। अट्ठ समापत्तियो **चित्तभावना** नाम। अरहत्तफलपञ्ञा **पञ्ञाभावना** नाम। खीणासवस्स हि एकन्तेनेव पञ्चद्वारिककायो सुभावितो[1] होति। अट्ठ समापत्तियो चस्स न अञ्ञेसं विय दुब्बला, तस्सेव च पञ्ञा भाविता नाम होति पञ्ञावेपुल्लपत्तिया। तस्मा एवं वुत्तं। 20

अनुत्तरियेसु विपस्सना **दस्सनानुत्तरियं** मग्गो **पटिपदानुत्तरियं**। फलं **विमुत्तानुत्तरियं**। फलं वा दस्सनानुत्तरियं। मग्गो पटिपदा-नुत्तरियं। निब्बानं विमुत्तानुत्तरियं। निब्बानं वा दस्सनानुत्तरियं, ततो उत्तरिञ्हि दट्ठब्बं नाम नत्थि। मग्गो पटिपदानुत्तरियं। फलं विमुत्तानुत्तरियं। **अनुत्तरियं** ति उत्तमं जेट्ठकं। 25

१. भावितो—रो०।

समाधीसु पठमज्झानसमाधि **सवितक्कसविचारो**। पञ्चकनयेन दुतियज्झानसमाधि **अवितक्कविचारमत्तो**। सेसो **अवितक्क-अविचारो**।

सुञ्ञतादीसु तिविधा कथा आगमनतो, सगुणतो, आरम्मणतो ति। आगमनतो नाम एको भिक्खु अनत्ततो अभिनिविसित्वा अनत्ततो दिस्वा अनत्ततो वुट्ठाति, तस्स विपस्सना **सुञ्ञता** नाम होति। कस्मा? असुञ्ञतत्तकारकानं किलेसानं अभावा।

B. 186
R. 1004

विपस्सनागमनेन मग्गसमाधि सुञ्ञतो नाम होति। मग्गागमनेन फलसमाधि सुञ्ञतो नाम। अपरो अनिच्चतो अभिनिविसित्वा अनिच्चतो दिस्वा अनिच्चतो वुट्ठाति। तस्स विपस्सना अनिमित्ता नाम होति। कस्मा? निमित्तकारककिलेसाभावा। विपस्सनागमनेन मग्गसमाधि **अनिमित्तो** नाम होति। मग्गागमनेन फलं अनिमित्तं नाम। अपरो दुक्खतो अभिनिविसित्वा दुक्खतो[1] दिस्वा[1] दुक्खतो वुट्ठाति, तस्स विपस्सना **अप्पणिहिता** नाम होति। कस्मा? पणिधिकारककिलेसाभावा। विपस्सनागमनेन मग्गसमाधि अप्पणिहितो नाम[2]। मग्गागमनेन फलं अप्पणीहितं नामा ति अयं **आगमनतो** कथा। मग्गसमाधि पन रागादीहि सुञ्ञतत्ता सुञ्ञतो, राग-निमित्तादीनं[3] अभावा अनिमित्तो[3], रागपणिधिआदीनं अभावा अप्पणिहितो ति अयं **सगुणतो** कथा। निब्बानं रागादीहि सुञ्ञतत्ता रागादिनिमित्तपणिधीनञ्च अभावा सुञ्ञतञ्चेव अनिमित्तञ्च अप्पणिहितं च। तदा रम्मणो मग्गसमाधि सुञ्ञतो अनिमित्तो अप्पणिहितो। अयं **आरम्मणतो** कथा।

सोचेय्यानी ति सुचिभावकरा सोचेय्यप्पटिपदा धम्मा। वित्थारो पनेत्थ "तत्थ कतमं कायसोचेय्यं? पाणातिपाता वेरमणी" तिआदिना नयेन वुत्तानं तिण्णं सुचरितानं वसेन वेदितब्बो।

१-१. रो० पोत्थके नत्थि। २. ०होति—रो०।
३-३. रो० पोत्थके नत्थि।

मोनेय्यानी ति मुनिभावकरा मोनेय्यप्पटिपदा धम्मा। तेसं वित्थारो "तत्थ कतमं कायमोनेय्यं? तिविधकायदुचरितस्स पहानं कायमोनेय्यं, तिविध कायसुचरितं कायमोनेय्यं, कायारम्मणे ञाणं कायमोनेय्यं, कायपरिञ्ञा कायमानेय्यं, कायपरिञ्ञासहगतो मग्गो कायमोनेय्यं, कायस्मिं छन्दरागप्पहानं कायमोनेय्यं, कायसङ्खार- 5 निरोधा चतुत्थज्झानसमापत्ति कायमोनेय्यं। तत्थ कतमं वचीमोनेय्यं, चतुब्बिधवचीदुच्चरितस्स पहानं वचीमोनेय्यं, चतुब्बिधं वचीसुचरितं वचीमोनेय्यं, वाचारम्मणे ञाणं वचीमोनेय्यं वाचापरिञ्ञा वचीमोनेय्यं परिञ्ञासहगतो मग्गो, वाचाय[1] छन्दरागप्पहानं, वचीसङ्खारनिरोधा दुतियज्झानसमापत्ति वचीमोनेय्यं। तत्थ कतमं मनोमोनेय्यं? 10 तिविधमनोदुच्चरितस्स पहानं मनोमोनेय्यं, तिविधं मनोसुचरितं R. 1005 मनोमोनेय्यं, मनारम्मणे ञाणं मनोमोनेय्यं, मनोपरिञ्ञा मनोमोनेय्यं। परिञ्ञासहगतो मग्गो, मनस्मिं छन्दरागप्पहानं, चित्तसङ्खारनिरोधा B. 187 सञ्ञावेदयितनिरोधसमापत्ति मनोमोनेय्यं" (म०नि० ४९) ति।

कोसल्लेसु आयो ति वुड्ढि[2]। अपायो ति अवुड्ढि[3]। तस्स तस्स 15 कारणं उपायो। तेसं पजानना[4] कोसल्लं। वित्थारो पन विभङ्गे वुत्तोयेव।

वुत्तञ्हेतं—"तत्थ कतमं आयकोसल्लं? इमे धम्मा मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव अकुसला धम्मा नुप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च अकुसला धम्मा निरुज्झन्ति। इमे वा पन मे धम्मे मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव कुसला 20 धम्मा उप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च कुसला धम्मा भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तन्ती ति, या तत्थ पञ्ञा पजानना ..पे०... सम्मादिट्ठि। इदं वुच्चति आयकोसल्लं? तत्थ कतमं अपायकोसल्लं? इमे धम्मे मनसिकरोतो अनुप्पन्ना चेव कुसला धम्मा न उप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च कुसला धम्मा निरुज्झन्ति। इमे वा पन मे धम्मे मनसि- 25 करोतो अनुप्पन्ना चेव अकुसला धम्मा उप्पज्जन्ति, उप्पन्ना च

१. वाचस्मिं—रो०। २. वड्ढि—रो०।
३. अवड्ढि—रो०। ४. पजाननं—रो०।

अकुसला धम्मा भिय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया संवत्तन्ती ति, या तत्थ पञ्ञा पजानना ... पे० ... सम्मादिट्ठि। इदं वुच्चति अपायकोसल्लं। सब्बापि तत्रुपाया पञ्ञा उपायकोसल्लं'' (विभं० ३८६) ति। इदं पन अच्चायिककिच्चे वा भये वा भये वा उप्पन्ने तस्स[1]
5 तिकिच्छनत्थं ठानुप्पत्तिया कारणजाननवसेनेव वेदितब्बं।

मदा ति मज्जनाकारवसेन पवत्तमाना। तेसु ''अहं निरोगो सट्ठि वा सत्तति वस्सानि अतिक्कन्तानि, न मे हरीतकीखण्डम्पि खादित पुब्बं, इमे पनञ्ञे असुकं नाम ठानं रुज्जति, भेसज्जं[2] खादामा ति विचरन्ति, को अञ्ञो मादिसो निरोगो नामा'' ति एवं मानकरणं
10 **आरोग्यमदो**। ''महल्लककाले पुञ्ञं करिस्साम, दहरम्ह तावा'' ति योब्बने ठत्वा मानकरणं **योब्बनमदो**। चिरं जीविं, चिरं जीवामि, चिरं जीविस्सामि; सुखं जीविं, सुखं जीवामि, सुखं जीविस्सामी'' ति एवं मानकरणं **जीवितमदो**।

आधिपतेय्येसु अधिपतितो आगतं आधिपतेय्यं। एत्तकोम्हि सीलेन
15 समाधिना पञ्ञाय विमुत्तिया, न मे एतं पतिरूपं'' ति एवं अत्तानं
B. 188
R. 1006
अधिपतिं जेट्ठकं कत्वा पापस्स अकरणं **अत्ताधिपतेय्यं** नाम। लोकं अधिपतिं कत्वा अकरणं **लोकाधिपतेय्यं** नाम। लोकुत्तरधम्मं अधिपतिं कत्वा अकरणं **धम्माधिपतेय्यं** नाम।

कथावत्थूनी ति कथाकारणानि। **अतीतं वा अद्धानं** ति अतीतं
20 धम्मं, अतीतक्खन्धे ति अत्थो। अपिच ''यं, भिक्खवे, रूप अतीतं निरुद्धं विपरिणतं, 'अहोसी' ति तस्स सङ्खा, 'अहोसी' ति तस्स पञ्ञत्ति 'अहोसी' ति तस्स समञ्ञा, न तस्स सङ्खा 'अत्थी' ति, न तस्स सङ्खा 'भविस्सती'' (सं०नि० ३.२९९) ति एवं आगतेन निरुत्तिपथसुत्तेनपेत्थ अत्थो दीपेतब्बो।

25 **विज्जा** ति तमविज्झनट्ठेन विज्जा। विदितकरणट्ठेना पि विज्जा। पुब्बेनिवासानुस्सतिञाणञ्हि उप्पज्जमानं पुब्बेनिवासं छादेत्वा ठितं तमं

१. ०तस्स — रो०। २. ०वा—रो०।

विज्झति, पुब्बेनिवासञ्हि विदितं करोती ति विज्जा। चुतूपपातञाणं चुतिपटिसन्धिच्छादकं तमं विज्झति, तञ्च विदितं करोती ति विज्जा। आसवानं खये ञाणं चतुसच्चच्छादकं तमं विज्झति, चतुसच्चधम्मञ्च विदितं करोती ति विज्जा।

विहारेसु अट्ठ समापत्तियो दिब्बोविहारो। चतस्सो अप्पमञ्ञा ब्रह्मा-विहारो। फलसमापत्ति अरियो विहारो। 5

पटिहारियानि केवट्टसुत्ते वित्थारितानेव।

"इमे खो, आवुसो, "तिआदीसु वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति समसट्ठिया तिकानं वसेन असीतिसतपञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेस्सी ति। 10

७. चतुक्कवण्णना

११. इति तिकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि चतुक्कवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ "सतिपट्ठानचतुक्कं" पुब्बे वित्थारितमेव।

सम्मप्पधानचतुक्के छन्दं जनेती (दी० नि० ३.१७३) ति "यो छन्दो छन्दिकता कत्तुकम्यता कुसलो धम्मच्छन्दो" ति एवं वुत्तं कत्तुकम्यतं जनेति। वायमती ति वायामं करोति। वीरियं आरभती ति वीरियं जनेति। चित्तं पग्गण्हाती ति चित्तं उपत्थम्भेति। अयमेत्थ सङ्खेपो। वित्थारो पन सम्मप्पधानविभङ्गे आगतोयेव। B. 189 15 R. 1007

इद्धिपादेसु छन्दं निस्साय पवत्तो समाधि छन्दसमाधि। पधानभूता सङ्खारा पधानसङ्खारा। समन्नागतं ति तेहि धम्मेहि उपेतं। इद्धिया पादं, इद्धिभूतं वा पादं ति इद्धिपादं। सेसेसुपि एसेव नयो। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन इद्धिपादविभङ्गे आगतो एव। विसुद्धिमग्गे पनस्स अत्थो दीपितो। झानकथापि विसुद्धिमग्गे वित्थारिताव। 20

१. रो० पोत्थके नत्थि।

१२. **दिट्ठधम्मसुखविहाराया** (दी० नि० ३.१७४) ति इमस्मिं येव अत्तभावे सुखविहारत्थाय। इध फलसमापत्तिझानानि, खीणासवस्स अपरभागे निब्बत्तितझानानि च कथितानि।

आलोकसञ्ञं मनसिकरोती ति दिवा वा रत्तिं वा सूरियचन्द-
5 पज्जोतमणिआदीनं आलोकं[1] आलोके ति मनसिकरोति। **दिवासञ्ञं अधिट्ठाती** ति एवं मनसि कत्वा दिवातिसञ्ञं ठपेति। **यथा दिवा तथा रत्तिं** ति यथा दिवा दिट्ठो आलोको, तथेव तं रत्तिं मनसिकरोति। **यथा रत्तिं तथा दिवा** ति यथा रत्तिं आलोको दिट्ठो, एवमेव दिवा मनसिकरोति। **इति विवटेन चेतसा** ति एवं अपिहितेन
10 चित्तेन। **अपरियोनद्धेना** ति समन्ततो अनद्धेन। **सप्पभासं** ति सओभासं। **ञाणदस्सनपटिलाभाया** ति ञाणदस्सनपटिलाभत्थाय। इमिना किं कथितं ? मिद्धविनोदनआलोको कथितो परिकम्मआलोको वा। इमिना किं कथितं होति ? खीणासवस्स दिब्बचक्खुञाणं। तस्मिं वा आगतेपि अनागतेपि पादकज्झानसमापतिमेव सन्धाय
15 "सप्पभासं चित्तं भावेती" ति वुत्तं।

सतिसम्पजञ्ञाया ति सत्तट्ठानिकस्स सतिसम्पजञ्ञस्स अत्थाय। **विदिता वेदना उप्पज्जन्ती** तिआदीसु खीणासवस्स वत्थु विदितं होति आरम्मणं विदितं वत्थारम्मणं विदितं। वत्थारम्मणविदितताय एवं वेदना उप्पज्जन्ति, एवं तिट्ठन्ति, एवं
R. 1008 B. 190 20 निरुज्झन्ति। न केवलञ्च वेदना एव इध वुत्ता सञ्ञादयोपि, अवुत्ता चेतनादयोपि, विदिता च उप्पज्जन्ति चेव तिट्ठन्ति च निरुज्झन्ति च। अपि च वेदनाय उप्पदो विदितो होति, उपट्ठानं विदितं होति। अविज्जासमुदया वेदनासमुदयो, तण्हासमुदया कम्मसमुदयो, फस्स-समुदया वेदनायसमुदयो। निब्बत्तिलक्खणं पस्सन्तोपि वेदनाक्खन्धस्स
25 समुदयं पस्सति। एवं वेदनाय उप्पादो विदितो होति। कथं वेदनाय उपट्ठानं विदितं होति ? अनिच्चतो मनसिकरोतो खयतुपट्ठानं विदितं

१. रो० पोत्थके नत्थि।

होति। दुक्खतो मनसिकरोतो भयतूपट्ठानं विदितं होति। अनत्ततो मनसिकरोतो सुञ्ञतूपट्ठानं विदितं होति। एवं वेदनाय उपट्ठानं विदितं होति, खयतो भयतो सुञ्ञतो जानाति। कथं वेदनाय अत्थङ्गमो विदितो होति? अविज्जानिरोधा वेदनानिरोधो। एवं वेदनाय अत्थङ्गमो विदितो होति। इमिनापि नयेनेत्थ अत्थो वेदितब्बो। 5

इति रूपं तिआदि वुत्तनयमेव। **अयं आवुसो समाधिभावना** ति अयं आसवानं खयञाणस्स पादकज्झानसमाधिभावना।

१३. **अप्पमञ्ञा** (दी० नि० ३.१७५) ति पमाणं अगहेत्वा अनवसेसफरणवसेन अप्पमञ्ञाव। अनुपदवण्णना पन भावना- 10 समाधिविधानञ्च एतासं विसुद्धिमग्गे वित्थारितमेव। अरूपकथापि विसुद्धिमग्गे वित्थारिताव।

अपस्सेनानी ति अपस्सयानि। **सङ्खाया** ति ञाणेन ञत्वा[1]। **पटिसेवती** ति ञाणेन ञत्वा सेवितब्बयुत्तकमेव सेवति। तस्स च वित्थारो "पटिसङ्खा योनिसो चीवरं परिभुञ्जती" तिआदिना नयेन 15 वेदितब्बो। **सङ्खायेकं अधिवासेती** ति ञाणेन ञत्वा अधिवासेतब्ब-युत्तकमेव अधिवासेति। वित्थारो पनेत्थ "पटिसङ्खा योनिसो खमो होति सीतस्सा" तिआदिना नयेन वेदितब्बो। **परिवज्जेती** ति ञाणेन ञत्वा परिवज्जेतुं युत्तमेव परिवज्जेति। तस्स वित्थारो "पटिसङ्खा योनिसो चण्डं हत्थिं परिवज्जेती" तिआदिना नयेन वेदितब्बो। 20 **विनोदेती** ति ञाणेन ञत्वा विनोदेतब्बमेव विनोदेति, नुदति नीहरति अन्तो पविसितुं न देति। तस्स वित्थारो "उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेती" तिआदिना नयेन वेदितब्बो। R. 1009

B. 191

८. अरियवंसचतुक्कवण्णना

१४. **अरियवंसा** ति अरियानं वंसा। यथा हि खत्तियवंसो, ब्राह्मणवंसो, वेस्सवंसो, सुद्दवंसो, समणवंसो, कुलवंसो, राजवंसो, एवं 25

१. रो० पोत्थके नत्थि।

अयम्पि अट्ठमो अरियवंसो अरियतं ति अरियपवेणी नाम होति। सो खो पनायं अरियवंसो इमेसं वंसानं मूलगन्धादीनं काळानुसारितगन्धादयो विय अग्गमक्खायति। के पन ते अरिया येसं एते वंसा ति? अरिया वुच्चन्ति बुद्धा च पच्चेकबुद्धा च तथागतसावका च, एतेसं अरियानं वंसाति **अरियवंसा**। इतो पुब्बे हि सतसहस्सकप्पाधिकानं चतुन्नं असङ्ख्येय्यानं मत्थके तण्हङ्करो मेधङ्करो सरणङ्करो दीपङ्करो ति चत्तारो बुद्धा उप्पन्ना। ते अरिया, तेसं अरियानं वंसा ति अरियवंसा। तेसं बुद्धानं परिनिब्बानतो अपरभागे असङ्ख्येय्यं अतिक्कमित्वा कोण्डञ्ञो नाम बुद्धो उप्पन्नो ... पे० ... इमस्मिं कप्पे ककुसन्धो कोणागमनो, कस्सपो, अम्हाकं भगवा गोतमो ति चत्तारो बुद्धा उप्पन्ना। तेसं अरियानं वंसा ति अरियवंसो। अपिच अतीतानागतप्पच्चुप्पन्नानं सब्ब[1]बुद्धपच्चेकबुद्धसावकानं अरियानं वंसा ति अरियवंसा। ते खो पनेते **अग्गञ्ञा** अग्गा ति जानितब्बा। **रत्तञ्ञा** दीघरत्तं पवत्ता ति जानितब्बा। **वंसञ्ञा**[2] वंसा ति जानितब्बा[2]।

पोराणा ति न अधुनुप्पत्तिका। **अयंकिण्णा**[3] अविकिण्णा अनपनीता[3]। **असंकिण्णपुब्बा** अतीतबुद्धेहि न संकिण्णपुब्बा। "किं इमेही" ति न अपनीतपुब्बा? **न सङ्कीयन्ती** ति इदानिपि न अपनीयन्ति। **न सङ्कीयिस्सन्ती** ति अनागतबुद्धेहिपि न अपनीयिस्सन्ति। ये लोके विञ्ञू समणब्राह्मणा, तेहि अप्पटिकुट्ठा, समणेहि ब्राह्मणेहि विञ्ञूहि अनिन्दिता अगरहिता।

सन्तुट्ठो होती ति पच्चयसन्तोसवसेन[4] सन्तुट्ठो होति। **इतरीतरेन चीवरेना** ति थुलसुखुमलूखपणीतथिरजिण्णानं येन केनचि। अथ खो यथालद्धादीनं इतरीतरेन येन केनचि सन्तुट्ठो होती ति अत्थो। चीवरस्मिञ्हि तयो सन्तोसा—यथालाभसन्तोसो, यथाबलसन्तोसो, यथासारुप्पसन्तोसो ति। पिण्डपातादीसुपि एसेव नयो। तेसं

१. सब्बञ्ञु०—रो०। २-२. रो० पोत्थके नत्थि। ३-३. रो० पोत्थके नत्थि। ४. पच्चयसन्तो सवणेन—रो०।

वित्थारकथा सामञ्ञफले वुत्तनयेनेव वेदितब्बा। इमे[1] तयो सन्तोसे सन्धाय "सन्तुट्ठो होति[2], इतरीतरेन यथालद्धादीसु येन केनचि चीवरेन सन्तुट्ठो होती" ति वुत्तं।

B. 192

एत्थ च चीवरं जानितब्बं, चीवरक्खेत्तं जानितब्बं, पंसुकूलं जानितब्बं, चीवरसन्तोसो जानितब्बो, चीवरपटिसंयुत्तानि धुतङ्गानि 5 जानितब्बानि। तत्थ **चीवरं जानितब्बं** ति खोमादीनि छ चीवरानि दुकूलादीनि छ अनुलोमचीवरानि जानितब्बानि। इमानि द्वादस कप्पियचीवरानि। कुसचीरं वाकचीरं फलकचीरं[3] केसकम्बलं वाळ-कम्बलं पोट्ठको चम्मं उलूकपक्खं रुक्खदुस्सं लतादुस्सं एरकदुस्सं कदलिदुस्सं वेळुदुस्सं ति एवमादीनि पन[4] अकप्पियचीवरानि। 10 **चीवरक्खेत्तं** ति "संघतो वा गणतो वा ञातितो वा मित्ततो वा अत्तनो वा धनेन पंसुकूलं वा" ति एवं उप्पज्जनतो छ खेत्तानि, अट्ठन्नञ्च मातिकानं वसेन अट्ठ खेत्तानि जानितब्बानि। **पंसुकूलं** ति सोसानिकं, पापणिकं, रथियं सङ्कारकूटकं, सोत्थियं, सिनानं, तित्थं, गतपच्चागतं, अग्गिदड्ढं, गोखायितं उपचिकखायितं, उन्दूरखायितं, 15 अन्तच्छिन्नं, दसाच्छिन्नं, धजाहटं, थूपं, समणचीवरं, सामुद्दियं[5], आभिसेकियं, पन्थिकं, वाताहटं, इद्धिमयं, देवदत्तियं ति तेवीसति पंसुकूलानि वेदितब्बानि।

एत्थ च **सोत्थियं** ति गब्भमलहरणं। **गतपच्चागतं** ति मतक-सरीरं पारुपित्वा सुसानं नेत्वा आनीतचीवरं। **धजाहटं** ति धजं 20 उस्सापेत्वा ततो आनीतं। **थूपं** ति वम्मिके पूजितचीवरं। **सामुद्दियं** ति समुद्दवीचीहि थलं पापितं। **पन्थिकं** ति पन्थं गच्छन्तेहि चोरभयेन पासाणेहि कोट्टेत्वा पारुतचीवरं। **इद्धिमयं** ति एहिभिक्खुचीवरं। सेसं पाकटमेव।

१. इति०—रो०। २. होती ति वुत्तं—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि। ४. रो० पोत्थके नत्थि।
५. समुद्दयं—रो०।

चीवरसन्तोसो ति वीसति चीवरसन्तोसा, वितक्कसन्तोसो[१], गमनसन्तोसो, परियेसनसन्तोसो, पटिलाभसन्तोसो, मत्तप्पटिग्गहण-सन्तोसो, लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो, यथालाभसन्तोसो, यथाबलसन्तोसो, यथासारुप्पन्तोसो, उदकसन्तोसो, धोवनसन्तोसो, करणसन्तोसो, 5 परिमाणसन्तोसो, सुत्तसन्तोसो, सिब्बनसन्तोसो, रजनसन्तोसो, कप्पसन्तोसो, परिभोगसन्तोसो, सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो, विस्सज्जन-सन्तोसो ति।

तत्थ साटकत्थिनाभिक्खुना तेमासं निबद्धवासं वसित्वा एकमास-मत्तं वितक्केतुं वट्टति। सो हि पवारेत्वा चीवरमासे चीवरं करोति। B. 193 10 पंसुकूलिको अड्ढमासेनेव करोति। इति मासड्ढमासमत्तं वितक्कनं वितक्कसन्तोसो। वितक्कसन्तोसेन पन सन्तुट्ठेन भिक्खुना पाचीनक्खण्ड-राजिवासिकपंसुकूलिकत्थेरसदिसेन भवितब्बं।

R. 1011 थेरो किर चेतियपब्बतविहारे चेतियं वन्दिस्सामी ति आगतो चेतियं वन्दित्वा चिन्तेसि "मय्हं चीवरं जिण्णं बहूनं वसनट्ठाने 15 लभिस्सामी" ति। सो महाविहारं गन्त्वा संघत्थेरं दिस्वा वसनट्ठानं पुच्छित्वा तत्थ वुत्थो पुनदिवसे चीवरं आदाय आगन्त्वा थेरं वन्दि। थेरो किं आवुसो ति आह। गामद्वारं, भन्ते, गमिस्सामी ति। अहं पि, आवुसो, गमिस्सामी ति[२]। साधु, भन्ते, ति गच्छन्तो महाबोधि-द्वारकोट्ठके ठत्वा पुञ्ञवन्तानं वसनट्ठाने मनापं लभिस्सामी ति 20 चिन्तेत्वा अपरिसुद्धो मे वितक्को ति ततोव पटिनिवत्ति। पुनदिवसे अम्बङ्गणसमीपतो[३], पुनदिवसे महाचेतियस्स उत्तरद्वारतो, तथेव[४] पटिनिवत्तित्वा चतुत्थदिवसे थेरस्स सन्तिकं अगमासि। थेरो इमस्स भिक्खुनो वितक्को न परिसुद्धो भविस्सती ति चीवरं गहेत्वा तेन सद्धिं येव पञ्हं पुच्छमानो गामं पाविसि। तञ्च रत्तिं एको मनुस्सो 25 उच्चारपलिबुद्धो साटकेयेव वच्चं कत्वा तं सङ्कारट्ठाने छड्डेसि।

१. चीवरे०—रो०। २. आगमिस्सामी ति—रो०।
३. पपञ्हम्ब-अङ्गण समीपतो—रो०। ४. पुन दिवसे०—रो०।

पंसुकूलिकत्थेरो तं नीलमक्खिकाहि सम्परिकिण्णं दिस्वा अञ्जलिं पग्गहेसि। महाथेरो "किं, आवुसो, सङ्कारट्ठानस्स अञ्जलिं पग्गण्हासी" ति? "नाहं, भन्ते, सङ्कारट्ठानस्स[१] अञ्जलिं पग्गण्हामि, मय्हं पितु दसबलस्स पग्गण्हामि, पुण्णदासिया सरीरं पारुपित्वा छड्डितं पंसुकूलं तुम्बमत्ते पाणके विधुनित्वा सुसानतो गण्हन्तेन दुक्करं कतं, भन्ते" 5 ति। महाथेरो "परिसुद्धो वितक्को पंसुकूलिकस्सा" ति चिन्तेसि। पंसुकूलिकत्थेरोपि तस्मिं येव ठाने ठितो विपस्सनं वड्ढेत्वा तीणि फलानि पत्तो[२] तं साटकं गहेत्वा चीवरं कत्वा पारुपित्वा पाचीनवंसखण्डराजिं गन्त्वा अग्गफलं अरहत्तं पापुणि।

चीवरत्थाय गच्छन्तस्स पन "कत्थ लभिस्सामी" ति अचिन्तेत्वा 10 कम्मट्ठान सीसेनेव गमनं **गमनसन्तोसो** नाम।

परियेसन्तस्स पन येन वा तेन वा सद्धिं अपरियेसित्वा लज्जिं पेसलं भिक्खुं गहेत्वा परियेसनं **परियेसनसन्तोसो** नाम।

एवं परियेसन्तस्स आहरियमानं चीवरं दूरतो दिस्वा "एतं B. 194 मनापं भविस्सति, एतं अमनापं" ति एवं अवितक्केत्वा थूलसुखुमादीसु 15 यथालद्धेनेव सन्तुस्सनं **पटिलाभसन्तोसो** नाम। R. 1012

एवं लद्धं गण्हन्तस्सापि "एत्तकं दुपट्टस्स भविस्सति, एत्तकं एकपट्टस्सा" ति अत्तनो पहोनकमत्तेनेव सन्तुस्सनं **मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो** नाम।

चीवरं परियेसन्तस्स पन "असुकस्स घरद्वारे मनापं लभिस्सामी" 20 ति अचिन्तेत्वा द्वारपटिपाटिया चरणं **लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो** नाम।

लूखपणीतेसु येन केनचि यापेतुं सक्कोन्तस्स यथालद्धेनेव यापनं **यथालाभसन्तोसो** नाम। अत्तनो थामं जानित्वा येन यापेतुं सक्कोति, तेन यापनं **यथाबलसन्तोसो** नाम।

१. सङ्खारधानस्स—रो०। २. निपत्तो—रो०।

मनापं अञ्ञस्स दत्वा अत्तनो येन केनचि यापनं यथासारुप्प-सन्तोसो नाम।

"कत्थ उदकं मनापं, कत्थ अमनापं" ति अविचारेत्वा येन केनचि धोवनुपगेन[1] उदकेन धोवनं **उदकसन्तोसो** नाम। पण्डुमत्तिक-
5 गेरुकपूतिपण्णरसकिलिट्ठानि पन उदकानि वज्जेतुं वट्टति।

धोवन्तस्स पन मुग्गरादीहि अपहरित्वा हत्थेहि मद्दित्वा धोवनं **धोवनसन्तोसो** नाम। तथा असुज्झन्तं पण्णानि पक्खिपित्वा तापितउदकेनापि धोवितुं वट्टति।

एवं धोवित्वा करोन्तस्स इदं थूलं, इदं सुखुमं ति अकोपेत्वा
10 पहोनकनीहारेनेव करणं **करणसन्तोसो** नाम।

तिमण्डलप्पटिच्छादनमत्तस्सेव करणं **माणसन्तोसो** नाम।

चीवरकरणत्थाय पन मनापसुत्तं परियेसिस्सामी ति[2] अविचारेत्वा रथिकादीसु वा देवट्ठाने वा आहरित्वा पादमूले वा ठपितं यं किञ्चिदेव सुत्तं गहेत्वा करणं **सुत्तसन्तोसो** नाम।

B. 195 15 कुसिबन्धनकाले पन अङ्गुलमत्ते सत्तवारेन विज्झितब्बं, एवं करोन्तस्स हि यो भिक्खु सहायो न होति, तस्स वत्तभेदोपि नत्थि। तिवङ्गुलमत्ते[3] पन सत्तवारे विज्झितब्बं, एवं करोन्तस्स मग्गपटि-पन्नेनापि[4] सहायेन भवितब्बं। यो न होति, तस्स वत्तभेदो। अयं **सिब्बनसन्तोसो** नाम।

20 रजन्तेन पन काळकच्छकादीनि परियेसन्तेन न रजितब्बं[5]। सोमवक्कलादीसु यं लभति, तेन रजितब्बं। अलभन्तेन पन मनुस्सेहि अरञ्ञे वाकं गहेत्वा छड्डितरजनं वा भिक्खूहि पचित्वा छड्डितकसटं वा गहेत्वा रजितब्बं, अयं **रजनसन्तोसो** नाम।

१. धोवनपकेन—रो०।
२. परियेसामी ति—रो०।
३. द्वङ्गुल०—रो०।
४. मग्गपटिपन्नो पि—रो०।
५. चरितब्बं—रो०।

नीलकद्दमकाळसामेसु यंकिञ्चि गहेत्वा हत्थिपिट्ठे निसिन्नस्स R. 1013
पञ्ञायमानकप्पकरणं **कप्पसन्तोसो** नाम ।

हिरिकोपीनपटिच्छादनमत्तवसेन परिभुञ्जनं **परिभोगसन्तोसो** नाम ।

दुस्सं पन लभित्वा सुत्तं वा सूचिं वा कारकं वा अलभन्तेन ठपेतुं 5
वट्टति, लभन्तेन न वट्टति । कतम्पि सचे अन्तेवासिकादीनं दातुकामो
होति, ते च असन्निहिता याव आगमना ठपेतुं वट्टति । आगतमत्तेसु
दातब्बं । दातुं असक्कोन्तेन अधिट्ठातब्बं । अञ्ञस्मिं चीवरे सति
पच्चत्थरणम्पि अधिट्ठातुं वट्टति । अनधिट्ठितमेव हि सन्निधि होति ।
अधिट्ठितं न होती ति **महासीवत्थेरो** आह । अयं **सन्निधिपरिवज्जन-** 10
सन्तोसो नाम ।

विस्सज्जन्तेन पन न मुखं ओलोकेत्वा दातब्बं । सारणीयधम्मे[1]
ठत्वा विस्सज्जितब्बं ति अयं **विस्सज्जनसन्तोसो** नाम ।

चीवरपटिसंयुत्तानि धुतङ्गानि नाम पंसुकूलिकङ्गञ्चेव तेचीवरि-
कङ्गञ्च । तेसं वित्थारकथा विसुद्धिमग्गतो वेदितब्बा । इति चीवर- 15
सन्तोसमहाअरियवंसं पूरयमानो भिक्खु इमानि द्वे धुतङ्गानि
गोपेति[2] । इमानि गोपेन्तो चीवरसन्तोसमहाअरियवंसेन सन्तुट्ठो
होति ।

वण्णवादी ति एको सन्तुट्ठो होति, सन्तोसस्स वण्णं न कथेति,
एको न सन्तुट्ठो होति, सन्तोसस्स वण्णं कथेति, एको नेव सन्तुट्ठो 20 B. 196
होति, न सन्तोसस्स वण्णं कथेति, एको सन्तुट्ठो चेव होति, सन्तोसस्स
च वण्णं कथेति, तं दस्सेतुं "इतरीतरचीवरसन्तुट्ठिया च वण्णवादी"
ति वुत्तं ।

अनेसनं ति दूतेय्यपहिनगमनानुयोगप्पभेदं नानप्पकारं अनेसनं ।
अप्पतिरूपं ति अयुत्तं । **अलद्धा चा** ति अलभित्वा । यथा एकच्चो 25

१. साराणीयधम्मे—रो० । २. पूरेति गोपेति—रो० ।

"कथं नु खो चीवरं लभिस्सामी" ति। पुञ्ञवन्तेहि भिक्खूहि सद्धिं[1] एकतो[2] हुत्वा कोहञ्ञं करोन्तो उत्तसति परितसति, सन्तुट्ठो[3] भिक्खु एवं अलद्धा चीवरं न परितसति[3]।

लद्धा चा ति धम्मेन समेन लभित्वा। **अगधितो** ति विगतलोभ-
5 गिद्धो[4]। **अमुच्छितो** ति अधिमत्ततण्हाय मुच्छं अनापन्नो। **अनज्झापन्नो** ति तण्हाय अनोत्थतो अपरियोनद्धो। **आदीनवदस्सावी** ति अनेसना-पत्तियञ्च गेधितपरिभोगे[5] च आदीनवं पस्समानो। **निस्सरणपञ्ञो** ति "यावदेव सीतस्स पटिघाताया" ति वुत्तं निस्सरणमेव पजानन्तो[6]।

10 R. 1014 **इतरीतरचीवरसन्तुट्ठिया** ति येन केनचि चीवरेन सन्तुट्ठिया। **नेवत्तानुक्कंसेती** ति "अहं पंसुकूलिको यथा[7] उपसम्पदगाळ्हेयेव पंसुकूलिङ्गं गहितं, को मया सदिसो अत्थी" ति अत्तुक्कंसनं[8] न करोति। **न परं वम्भेती** ति "इमे पनञ्ञे भिक्खू न पंसुकूलिका" ति वा "पंसुकूलिकङ्गमत्तम्पि एतेसं नत्थी" ति वा एवं परं न
15 वम्भेति। **यो हि तत्थ दक्खो** ति यो तस्मिं चीवरसन्तोसे, वण्णवादादीसु वा दक्खो छेको ब्यत्तो। **अनलसो** ति सातच्चकिरियाय अलसियविरहितो। **सम्पजानो पटिस्सतो** ति सम्पजानपञ्ञाय चेव सतिया च युत्तो। **अरियवंसे ठितो** ति अरियवंसे पतिट्ठितो।

इतरीतरेन पिण्डपातेना ति येन केनचि पिण्डपातेन। एत्थापि
20 पिण्डपातो जानितब्बो। पिण्डपातक्खेत्तं जानितब्बं, पिण्डपातसन्तोसो जानितब्बो, पिण्डपातपटिसंयुत्तं धुतङ्गं जानितब्बं। तत्थ **पिण्डपातो** ति "ओदनो, कुम्मासो, सत्तु, मच्छो, मंसं, खीरं, दधि, सप्पि, नवनीतं, तेलं, मधु, फाणितं, यागु, खादनीयं, सायनीयं[9], लेहनीयं" ति सोळस पिण्डपाता।

१. सद्धं—रो०।
२. रो० पोत्थके नत्थि।
३-३. रो० पोत्थके नत्थि।
४. विगतलोभखन्धो—रो०।
५. गधितपरिभोगे—रो०।
६. जानन्तो—रो०।
७. मया—रो०।
८. अत्तुक्कंसतं—रो०।
९. रो० पोत्थके नत्थि।

पिण्डपातक्खेत्तं ति संघभत्तं, उद्देसभत्तं, निमन्तनं, सलाकभत्तं, पक्खिकं, उपोसथिकं, पाटिपदिकं आगन्तुकभत्तं, गामिकभत्तं, गिलानभत्तं, गिलानुपट्ठाकभत्तं, धुरभत्तं, कुटिभत्तं, वारभत्तं, विहारभत्तं ति पन्नरस पिण्डपातक्खेत्तानि । B. 197

पिण्डपातसन्तोसो सि पिण्डपाते वितक्कसन्तोसो, गमनसन्तोसो, परियेसनसन्तोसो पटिलाभसन्तोसो, पटिग्गहणसन्तोसो, मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो, लोलुप्पविज्जनसन्तोसो, यथालाभसन्तोसो, यथाबलसन्तोसो, यथासारुप्पसन्तोसो, उपकारसन्तोसो, परिमाणसन्तोसो, परिभोगसन्तोसो, सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो, विस्सज्जनसन्तोसो ति पन्नरस सन्तोसा । 5 10

तत्थ सादको[1] भिक्खु मुखं धोवित्वा वितक्केति । पिण्डपातिकेन पन[2] गणेन सद्धिं चरता सायं थेरूपट्ठानकाले "स्वे[3] कत्थ पिण्डाय चरिस्साम ति असुकगामे, भन्ते", ति एत्तकं चिन्तेत्वा ततो पट्ठाय न वितक्केतब्बं । एकचारिकेन वितक्कमाळके ठत्वा वितक्केतब्बं । ततो परं[4] वितक्केन्तो अरियवंसा चुतो होति परिबहिरो । अयं वितक्कसन्तोसो नाम । पिण्डाय पविसन्तेन[5] "कुहिं लभिस्सामी" ति अचिन्तेत्वा तमट्ठानसीसेन गन्तब्बं । अयं गमनसन्तोसो नाम । 15 R. 1015

परियेसन्तेन यं वा तं वा अगहेत्वा लज्जिं पेसलमेव गहेत्वा परियेसितब्बं । अयं परियेसनसन्तोसो नाम ।

दूरतोव आहरियमानं दिस्वा "एतं मनापं, एतं अमनापं" ति चित्तं न उप्पादेतब्बं । अयं पटिलाभसन्तोसो नाम । 20

"इमं[6] मनापं गण्हिस्सामि, इमं[7] अमनापं न गण्हिस्सामी" ति अचिन्तेत्वा यंकिञ्चि यापनमत्तं गहेतब्बमेव, अयं पटिग्गहणसन्तोसो नाम ।

१. दक्खो—रो० । २. रो० पोत्थके नत्थि ।
३. एव—रो० । ४. पट्ठाय—रो० ।
५. ०पन—रो० । ६. इदं—रो० ।
७. इदं—रो० ।

एत्थ पन देय्यधम्मो बहु, दायको अप्पं दातुकामो, अप्पं गहेतब्बं। देय्यधम्मो बहु, दायकोपि न बहु, दातुकामो, पमाणेनेव गहेतब्बं। देय्यधम्मो न बहु, दायकोपि अप्पं दातुकामो, अप्पं गहेतब्बं। देय्यधम्मो न बहु, दायको पन बहुं दातुकामो, अप्पं[1]
5 गहेतब्बं, देय्यधम्मो न बहु, दायको पन बहुं दातुकामो, पमाणेन गहेतब्बं।

B. 198 पटिग्गहणस्मिञ्हि मत्तं अजानन्तो मनुस्सानं पसादं मक्खेति सद्धादेय्यं विनिपातेति, सासनं न करोति, विजातमातुयापि चित्तं गहेतुं न सक्कोति। इति मत्तं जानित्वाव पटिग्गहेतब्बं ति अयं
10 मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो नाम।

अड्ढकुलानियेव अगन्त्वा द्वारप्पटिपाटिया गन्तब्बं। अयं लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो नाम। यथालाभसन्तोसादयो चीवरे वुत्तनया एव।

पिण्डपातं परिभुञ्जित्वा समणधम्मं अनुपालेस्सामी ति एवं
15 उपकारं ञत्वा परिभुञ्जनं उपकारसन्तोसो नाम।

पत्तं पूरेत्वा आनीतं न पटिग्गहेतब्बं, अनुपसम्पन्ने सति तेन गाहापेतब्बं, असति हरापेत्वा पटिग्गहणमत्तं[2] गहेतब्बं। अयं परिमाणसन्तोसो नाम।

"जिघच्छाय पटिविनोदनं इदमेत्थ निस्सरणं" ति एवं परिभुञ्जनं
20 परिभोगसन्तोसो नाम।

निदहित्वा न परिभुञ्जितब्बं ति अयं सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो नाम।

मुखं अनोलोकेत्वा सारणीयधम्मे ठितेन विस्सज्जेतब्बं। अयं विस्सज्जनसन्तोसो नाम।

१. पमाणेन—रो०। २. पटिग्गहणरूहणमत्तं—रो०।

पिण्डपातपटिसंयुत्तानि पन पञ्च धुतङ्गानि — पिण्डपातिकङ्गं, सपदानचारिकङ्गं, एकासनिकङ्गं, पत्तपिण्डिकङ्गं, खलुपच्छाभत्तिकङ्गं ति । तेसं वित्थारकथा विसुद्धिमग्गे वुत्ता । इति पिण्डपातसन्तोस-महाअरियवंसं[1] पूरयमानो[2] भिक्खु इमानि पञ्च धुतङ्गानि गोपेति[2] । इमानि[3] गोपेन्तो पिण्डपातसन्तोसमहाअरियवंसेन[3] सन्तुट्ठो होति । 5
"वण्णवादी" तिआदीनि वुत्तनयेनेव वेदितब्बानि ।

सेनासनेना ति इध सेनासनं जानितब्बं, सेनासनक्खेत्तं जानितब्बं, R. 1016
सेनासनसन्तोसो जानितब्बो, सेनासनपटिसंयुत्तं धुतङ्गं जानितब्बं । तत्थ **सेनासनं** ति मञ्चो, पीठं, भिसि, बिम्बोहनं, विहारो, अड्ढयोगो, पासादो, हम्मियं गुहा, लेणं, अट्टो, माळो, वेळुगुम्बो, रुक्खमूलं, यत्थ 10 B. 199
वा पन भिक्खू पटिक्कमन्ती ति इमानि पन्नरस सेनासनानि ।

सेनासनक्खेत्तं ति "संघतो वा गणतो वा ञातितो वा मित्ततो वा अत्तनो वा धनेन पंसुकूलं वा" ति छ खेत्तानि ।

सेनासनसन्तोसो ति सेनासने वितक्कसन्तोसादयो पन्नरस सन्तोसा । ते पिण्डपाते वुत्तनयेनेव वेदितब्बा । **सेनासनपटिसंयुत्तानि** पन पञ्च 15
धुतङ्गानि — आरञ्ञिकङ्गं, रुक्खमूलिकङ्गं, अब्भोकासिकङ्गं सोसानिकङ्गं, यथासन्ततिकङ्गं ति । तेसं वित्थारकथा विसुद्धिमग्गे वुत्ता । इति सेनासनसन्तोसमहाअरियवंसं पूरयमानो भिक्खु इमानि पञ्च धुतङ्गानि गोपेति । इमानि गोपेन्तो सेनासनसन्तोसमहाअरियवंसेन सन्तुट्ठो होति । 20

गिलानपच्चयो पन पिण्डपातेयेव पविट्ठो । तत्थ यथालाभयथाबल-यथासारुप्पसन्तोसेनेव सन्तुस्सितब्बं । नेसज्जिकङ्गं भावनारामअरियवंसं भजति । वुत्तम्पि चेतं—

"पञ्च सेनासने वुत्ता, पञ्च आहारनिस्सिता ।
एको वीरियसंयुत्तो, द्वे च चीवरनिस्सिता" ति ॥ 25

१. ०अरियवंसेन सन्तुट्ठो होति—रो० । २-२. रो० पोत्थके नत्थि ।
३-३. रो० पोत्थके नत्थि ।

इति आयस्मा धम्मसेनापति सारिपुत्तत्थेरो पथविं पत्थरमानो विय सागरकुच्छिं पूरयमानो विय आकासं वित्थारयमानो विय च पठमं चीवरसन्तोसं अरियवंसं कथेत्वा चन्दं उट्ठापेन्तो विय सूरियं उल्लङ्घेन्तो विय च दुतियं पिण्डपातसन्तोसं कथेत्वा सिनेरुं 5 उक्खिपेन्तो विय ततियं सेनासनसन्तोसं अरियवंसं कथेत्वा इदानि सहस्सनयप्पटिमण्डितं चतुत्थं भावनारामं अरियवंसं कथेतुं पुन चपरं आवुसो भिक्खु पहानारामो होती ति देसनं आरभि।

तत्थ आरमनं आरामो, अभिरती ति अत्थो। पञ्चविधे पहाने आरामो अस्सा ति पहानारामो। कामच्छन्दं पजहन्तो रमति, 10 नेक्खम्मं भावेन्तो रमति, ब्यापादं पजहन्तो ... पे० ... सब्बकिलेसे पजहन्तो रमति, अरहत्तमग्गं भावेन्तो रमती ति एवं पहाने रतो ति B. 200 R. 1017 पहानरतो। वुत्तनयेनेव भावनाय आरामो अस्सा ति[1] भावनारामो[1]। भावनाय रतो ति भावनारतो।

इमेसु पन चतूसु अरियवंसेसु पुरिमेहि तीहि तेरसन्नं धुतङ्गानं 15 चतुपच्चयसन्तोसस्स च वसेन सकलं विनयपिटकं कथितं होति। भावनारामेन अवसेसं पिटकद्वयं। इमं पन भावनारामतं अरियवंसं कथेन्तेन भिक्खुना पटिसम्भिदामग्गे नेक्खम्मपाळिया कथेतब्बो। दीघनिकाये दसुत्तरसुत्तन्तपरियायेन कथेतब्बो। मज्झिमे सतिपट्ठान-सुत्तन्तपरियायेन कथेतब्बो। अभिधम्मे निद्देसपरियायेन कथेतब्बो।

20 तत्थ पटिसम्भिदामग्गे नेक्खम्मपाळिया ति सो नेक्खम्मं भावेन्तो रमति, कामच्छन्दं पजहन्तो रमति, अब्यापादं ब्यापादं आलोकसञ्ञं, थिनमिद्धं, अविक्खेपं, उद्धच्चं, धम्मववत्थानं, विचिकिच्छं, ञाणं, अविज्जं, पामोज्जं, अरतिं, पठमं झानं पञ्च नीवरणे, दुतियं झानं, वितक्कविचारे ततियं झानं, पीतिं, चतुत्थं झानं, सुखदुक्खे, आकासा-25 नञ्चायतनसमापत्तिं भावेन्तो रमति, रूपसञ्ञं पटिघसञ्ञं नानत्तसञ्ञं

१-१. रो० पोत्थके नत्थि।

पजहन्तो रमति। विञ्ञाणञ्चायतनसमापत्तिं...पे०...नेवसञ्ञायतन-समापत्तिं भावेन्तो रमति, आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञं पजहन्तो रमति।

अनिच्चानुपस्सनं भावेन्तो रमति, निच्चसञ्ञं पजहन्तो रमति। दुक्खानुपस्सनं, सुखसञ्ञं, अनत्तानुपस्सनं, अत्तसञ्ञं, निब्बिदानुपस्सनं, नन्दिं, विरागानुपस्सनं, रागं, निरोधानुपस्सनं, समुदयं, 5 पटिनिस्सग्गानुपस्सनं, आदानं, खयानुपस्सनं, घनसञ्ञं, वयानुपस्सनं, आयूहनं, विपरिणामानुपस्सनं, धुवसञ्ञं, अनिमित्तानुपस्सनं, निमित्तं, अपणिहितानुपस्सनं, पणिधिं, सुञ्ञतानुपस्सनं अभिनिवेसं, अधिपञ्ञा धम्मविपस्सनं, सारादानाभिनिवेसं, यथाभूतञाणदस्सनं, सम्मोहा-भिनिवेसं, आदीनवानुपस्सनं, आलयाभिनिवेसं, पटिसङ्खानुपस्सनं, 10 अप्पटिसङ्खं, विवट्टानुपस्सनं, संयोगाभिनिवेसं, सोतापत्तिमग्गं, दिट्ठेकट्ठे किलेसे, सकदागामिमग्गं, ओळारिके किलेसे, अनागामिमग्गं, अणुसहगते किलेसे, अरहत्तमग्गं भावेन्तो रमति[1] सब्बकिलेसे पजहन्तो रमती ति एवं पटिसम्भीदामग्गे नेक्खम्मपाळिया R. 1018 कथेतब्बो। 15

B. 201 **दीघनिकाये दसुत्तरसुत्तन्तपरियायेना** ति एकं धम्मं भावेन्तो रमति, एकं धम्मं पजहन्तो रमति ... पे० ... दस धम्मे भावेन्तो रमति, दस धम्मे पजहन्तो रमति। कतमं एकं धम्मं भावेन्तो रमति। कायगतासतिं सातसहगतं। इमं एकं धम्मं भावेन्तो रमति। कतमं एकं धम्मं पजहन्तो रमति? अस्मिमानं। इमं एकं धम्मं 20 पजहन्तो रमति। कतमे द्वे धम्मे ...पे०...कतमे दस धम्मे भावेन्तो रमति। दस कसिणायतनानि। इमे दस धम्मे भावेन्तो रमति। कतमे दस धम्मे पजहन्तो रमति। दस मिच्छत्ते। इमे दस धम्मे पजहन्तो रमति। एवं खो भिक्खवे, भिक्खु, भावनारामो होती ति एवं दीघनिकायदसुत्तरसुत्तन्तपरियायेन कथेतब्बो। 25

मज्झिमनिकाये सतिपट्ठानसुत्तन्तपरियायेना ति एकायनो, भिक्खवे, मग्गो ... पे० ... यावदेव ञाणमत्ताय पटिस्सतिमत्ताय

अनिस्सितो च विहरति न च किञ्चि लोके उपादियति । एवम्पि, भिक्खवे, भिक्खु भावनारामो होति भावनारतो, पहानारामो होति पहानरतो । पुन चपरं, भिक्खवे, भिक्खु गच्छन्तो वा गच्छामी ति पजानाति ... पे० ... पुन चपरं भिक्खवे, भिक्खु सेय्यथापि पस्सेय्य 5 सरीरं सिवथिकाय छड्डितं ... पे० ... पूतीनि चुण्णकजातानि । सो इममेव कायं उपसंहरति, अयम्पि खो कायो एवंधम्मो एवंभावी एवंअनतीतो ति । इति अज्झत्तं वा काये कायानुपस्सी विहरति ... पे० ... एवम्पि खो, भिक्खवे, भिक्खु भावनारामो होती ति एवं मज्झिमनिकाये सतिपट्ठानसुत्तन्तपरियायेन कथेतब्बो ।

10 **अभिधम्मे निद्देसपरियायेना** ति सब्बे पि सङ्खते अनिच्चतो दुक्खतो रोगतो गण्डतो ... पे० ... संकिलेसिकधम्मतो पस्सन्तो रमति । अयं, भिक्खवे, भिक्खु भावनारामो होती ति एवं निद्देस-परियायेन कथेतब्बो ।

नेव अत्तानुक्कंसेती ति अज्ज मे सट्ठि वा सत्तति वा वस्सानि 15 अनिच्चं दुक्खं अनत्ता ति विपस्सनाय कम्मं करोन्तस्स, को मया सदिसो अत्थी ति एवं अत्तुक्कंसनं न करोति । **न परं वम्भेती** ति अनिच्चं दुक्खं ति विपस्सनामत्तकम्पि नत्थि, किं इमे विस्सट्ठकम्मट्ठाना R. 1019 चरन्ती ति एवं परं वम्भनं न करोति । सेसं वुत्तनयमेव ।

B. 202 १५. **पधानानी** (दी० नि० ३.१७६) ति उत्तमवीरियानि । 20 **संवरपधानं** ति चक्खादीनि संवरन्तस्स उप्पन्नवीरियं । **पहानपधानं** ति कामवितक्कादयो पजहन्तस्स उप्पन्नवीरियं । **भावनापधानं** ति बोज्झङ्गे भावेन्तस्स उप्पन्नवीरियं । **अनुरक्खणापधानं** ति समाधीनिमित्तं अनुरक्खन्तस्स उप्पन्नवीरियं ।

विवेकनिस्सितं तिआदीसु विवेको विरागो निरोधो ति तीणिपि 25 निब्बानस्स नामानि । निब्बानञ्हि उपधिविवेकत्ता **विवेको** । तं आगम्म रागादयो विरज्जन्ती ति **विरागो** । निरुज्झन्ती ति **निरोधो** । तस्मा "विवेकनिस्सितं" तिआदीसु आरम्मणवसेन अधिगन्तब्बवसेन

वा निब्बाननिस्सितं ति अत्थो। **वोस्सग्गपरिणामिं** ति एत्थ द्वे वोस्सग्गा परिच्चागवोस्सग्गो च पक्खन्दनवोस्सग्गो च। तत्थ विपस्सना तदङ्गवसेन किलेसे च खन्धे च परिच्चजती ति परिच्चाग-वोस्सग्गो। मग्गो आरम्मणवसेन निब्बानं पक्खन्दती ति पक्खन्दनवोस्सग्गो। तस्मा वोस्सग्गपरिणामिं ति यथा भावियमानो 5 सतिसम्बोज्झङ्गो वोस्सग्गत्थाय परिणमति, विपस्सनाभावञ्च मग्गभावञ्च पापुणाति, एवं भावेती ति अयमेत्थ अत्थो। सेसपदेसुपि एसेव नयो।

भद्रकं ति भद्दकं[1]। **समाधिनिमित्तं** वुच्चति अट्ठिकसञ्ञादिवसेन अधिगतो समाधियेव। **अनुरक्खती** ति समाधिपरिबन्धकधम्मे 10 रागदोसमोहे सोधेन्तो रक्खति। एत्थ च अट्ठिकसञ्ञादिका पञ्चेव सञ्ञा वुत्ता। इमस्मिं पन ठाने दसपि असुभानि वित्थारेत्वा कथेतब्बानि। तेसं वित्थारो विसुद्धिमग्गे वुत्तोयेव।

धम्मे ञाणं ति एकपटिवेधवसेन चतुसच्चधम्मे ञाणं चतुसच्चब्भन्तरे 15 R. 1020 निरोधसच्चे धम्मे ञाणञ्च। यथाह "तत्थ कतमं धम्मे ञाणं? चतूसु मग्गेसु चतूसु फलेसु ञाणं" (विभं० ३९०) ति। **अन्वये ञाणं** ति चत्तारि सच्चानि पच्चक्खतो दिस्वा यथा इदानि, एवं अतीतेपि अनागतेपि इमेव पञ्चक्खन्धा दुक्खसच्चं, अयमेव तण्हा समुदयसच्चं, अयमेव निरोधो निरोधसच्चं, अयमेव मग्गो मग्गसच्चं ति एवं तस्स ञाणस्स अनुगतियं ञाणं। तेनाह "सो इमिना धम्मेन ञातेन दिट्ठेन 20 पत्तेन विदितेन परियोगाळ्हेन अतीतानागतेन नयं नेती" ति। **परिये ञाणं** ति परेसं चित्तपरिच्छेदे ञाणं। यथाह "तत्थ कतमं B. 203 परिये ञाणं? इध भिक्खु परसत्तानं परपुग्गलानं चेतसा चेतो परिच्च जानाती[2]" (विभं० ३९१) ति वित्थारेतब्बं। ठपेत्वा पन इमानि तीणि ञाणानि अवसेसं **सम्मुतिञाणं** नाम। यथाह "तत्थ कतमं 25 सम्मुतिञाणं? ठपेत्वा धम्मे ञाणं ठपेत्वा अन्वये ञाणं, ठपेत्वा परिच्छेदे ञाणं, अवसेसं सम्मुतिञाणं" (विभं० ३९१) ति।

१. लट्ठकं—रो०। २. पजानाती ति—रो०।

दुक्खे ञाणादीहि अरहत्तं पापेत्वा एकस्स भिक्खुनो निग्गमनं चतुसच्चकम्मट्ठानं कथितं। तत्थ द्वे सच्चानि वट्टं, द्वे विवट्टं, वट्टे अभिनिवेसो होति, नो विवट्टे। द्वीसु सच्चेसु आचरियसन्तिके[1] परियत्तिं उग्गहेत्वा कम्मं करोति, द्वीसु सच्चेसु "निरोधसच्चं नाम 5 इट्ठं कन्तं मनापं, मग्गसच्चं नाम इट्ठं कन्तं मनापं" ति सवनवसेन कम्मं करोति। द्वीसु सच्चेसु उग्गहपरिपुच्छासवनधारणसम्मसन-पटिवेधो वट्टति, द्वीसु सवनपटिवेधो वट्टति। तीणि किच्चवसेन पटिविज्झति, एकं आरम्मणवसेन। द्वे सच्चानि दुद्दसत्ता गम्भीरानि, द्वे गम्भीरत्ता दुद्दसानि।

६. सोतापत्तियङ्गादिचतुक्कवण्णना

10 १६. **सोतापत्तियङ्गानी** ति सोतापत्तिया अङ्गानि, सोतापत्ति-मग्गस्स पटिलाभकारणानी ति अत्थो। **सप्पुरिससंसेवो** ति बुद्धादीनं सप्पुरिसानं उपसङ्कमित्वा सेवनं। **सद्धम्मस्सवनं** ति सप्पायस्स तेपिटकधम्मस्स सवनं। **योनिसोमनसिकारो** ति अनिच्चादिवसेन मनसिकारो। **धम्मानुधम्मप्पटिपत्ती** ति लोकुत्तरधम्मस्स अनुधम्म-15 भूताय पुब्बभागपटिपत्तिया पटिपज्जनं।

R. 1021 **अवेच्चप्पसादेना** ति अचलप्पसादेन। इतिपि सो भगवा तिआदीनि विसुद्धिमग्गे वित्थारितानि। फलधातुआहारचतुक्कानि उत्तानत्थानेव। अपिचेत्थ लूखपणीतवत्थुवसेन ओळारिकसुखुमता वेदितब्बा।

20 **विञ्ञाणट्ठितियो** ति विञ्ञाणं एतासु तिट्ठती ति विञ्ञाण-ट्ठितियो। आरम्मणट्ठितिवसेनेतं वुत्तं। **रूपूपायं** ति रूपं उपगतं हुत्वा पञ्चवोकारभवस्मिञ्हि अभिसङ्खारविञ्ञाणं रूपक्खन्धं निस्साय तिट्ठति। तं सन्धायेतं वुत्तं। **रूपारम्मणं** ति रूपक्खन्धगोचरं रूपपति-B. 204 ट्ठितं हुत्वा। **नन्दूपसेचनं** ति लोभसहगतं सम्पयुत्तनन्दियाव उपसित्तं

१. अरियसन्तिके—रो०।

हुत्वा। इतरं उपनिस्सयकोटिया। **बुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जती** ति सट्ठिपि सत्ततिपि वस्सानि एवं पवत्तमानं वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जति। **वेदनूपायादीसुपि** एसेव नयो। इमेहि पन तीहि पदेहि चतुवोकारभवे अभिसङ्खारविञ्ञाणं वुत्तं। तस्स यावतायुकं पवत्तनवसेन वुद्धिं विरूळ्हिं वेपुल्लं आपज्जना वेदितब्बा। चतुक्कवसेन 5 पन देसनाय आगतत्ता विञ्ञाणूपायं ति न वुत्तं। एवं वुच्चमानो च "कतमं नु खो एत्थ कम्मविञ्ञाणं, कतमं विपाकविञ्ञाणं" ति सम्मोहो भवेय्य, तस्मापि न वुत्तं। **अगतिगमनानि** वित्थारितानेव।

चीवरहेतू ति तत्थ मनापं चीवरं लभिस्सामी ति चीवरकारणा उप्पज्जति। **इति भवाभवहेतू** ति एत्थ **इती** ति निदस्सनत्थे निपातो। 10 यथा चीवरादिहेतु, एवं भवाभवहेतुपी ति अत्थो। **भवाभवो** ति चेत्थ पणीतपणीततरानि तेलमधुफाणितादीनि अधिप्पेतानि। इमेसं पन चतुन्नं तण्हुप्पादानं पहानत्थाय पटिपाटियाव चत्तारो अरियवंसा देसिता ति वेदितब्बा। **पटिपदाचतुक्कं** हेट्ठा वुत्तमेव। अक्खमादीसु पधानकरणकाले सीतादीनि न खमती ति **अक्खमा**। खमती ति 15 **खमा**। इन्द्रियदमनं **दमो**। "उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेती" तिआदिना नयेन वितक्कसमनं **समा**।

धम्मपदानी ति धम्मकोट्ठासानि[1]। अनभिज्झा धम्मपदं नाम R. 1022 अलोभो वा अलोभसीसेन अधिगतज्झानविपस्सनामग्गफल-निब्बानानि वा। अब्यापादो धम्मपदं नाम अकोपो वा मेत्तासीसेन 20 अधिगतज्झानादीनि वा। सम्मासति धम्मपदं नाम सुप्पट्ठितसति वा सतिसीसेन अधिगतज्झानादीनि वा। सम्मासमाधि धम्मपदं नाम अट्ठ समापत्ति वा अट्ठसमापत्तिवसेन अधिगतज्झानविपस्सनामग्गफल-निब्बानानि वा। दसासुभवसेन वा अधिगतज्झानादीनि अनभिज्झा धम्मपदं। चतुब्रह्मविहारवसेन अधिगतानि अब्यापादो धम्मपदं। 25

१. ०कोट्ठासा—रो०।

दसानुस्सतिआहारेपटिकूलसञ्ञावसेन अधिगतानि सम्मासति धम्मपदं। दसकसिणआनापानवसेन अधिगतानि सम्मासमाधि धम्मपदं ति।

धम्मसमादानेसु पठमं अचेलकपटिपदा। दुतियं तिब्बकिलेसस्स 5 अरहत्तं गहेतुं असक्कोन्तस्स अस्सुमुखस्सापि रुदतो परिसुद्धं ब्रह्मचरियचरणं। ततियं कामेसु पातब्यता। चतुत्थं चत्तारो पच्चये B. 205 अलभमानस्सापि झानविपस्सनावसेन सुखसमङ्गिनो सासनब्रह्मचरियं।

धम्मक्खन्धा ति एत्थ गुणट्ठो खन्धट्ठो। सीलक्खन्धो ति सीलगुणो। 10 एत्थ च फलसीलं अधिप्पेतं। सेसपदेसुपि एसेव नयो। इति चतूसुपि ठानेसु फलमेव वुत्तं।

बलानी ति उपत्थम्भनट्ठेन अकम्पियट्ठेन च बलानि। तेसं पटिपक्खेहि कोसज्जादीहि अकम्पनियता वेदितब्बा। सब्बानिपि समथविपस्सनामग्गवसेन[1] लोकियलोकुत्तरानेव कथितानि।

15 अधिट्ठानानी ति एत्थ अधी ति उपसग्गमत्तं। अत्थतो पन तेन वा तिट्ठन्ति, तत्थ वा तिट्ठन्ति, ठानमेव वा तंतंगुणाधिकानं पुरिसानं अधिट्ठानं, पञ्ञाव अधिट्ठानं पञ्ञाधिट्ठानं। एत्थ च पठमेन अग्गफलपञ्ञा। दुतियेन वचीसच्चं। ततियेन आमिसपरिच्चागो। चतुत्थेन किलेसूपसमो कथितो ति वेदितब्बो। पठमेन च 20 कम्मस्सकतपञ्ञं विपस्सनापञ्ञं वा आदिं कत्वा फलपञ्ञा कथिता। दुतियेन वचीसच्चं आदिं कत्वा परमत्थसच्चं निब्बानं। ततियेन आमिसपरिच्चागं आदिं कत्वा अग्गमग्गेन किलेसपरिच्चागो। R. 1023 चतुत्थेन समापत्तिविक्खम्भिते किलेसे आदिं कत्वा अग्गमग्गेन किलेसवूपसमो। पञ्ञाधिट्ठानेन वा एकेन अरहत्तफलपञ्ञा कथिता। 25 सेसेहि परमत्थसच्चं। सच्चाधिट्ठानेन वा एकेन परमत्थसच्चं कथितं। सेसेहि अरहत्तपञ्ञा ति[2] मूसिकाभयत्थेरो आह।

१. समाधिविपस्सना०—रो०। २. अरहत्तफलपञ्ञा—रो०।

१०. पञ्हब्याकरणादिचतुक्कवण्णना

पञ्हब्याकरणानि महापदेसकथाय वित्थारितानेव।

कण्हं (दी० नि० ३.१७९) काळकं दसअकुसलकम्मपथकम्मं। **कण्हविपाकं** ति अपाये निब्बत्तनतो काळकविपाकं। **सुक्कं** ति पण्डरं कुसलकम्मपथकम्मं। **सुक्कविपाकं** ति सग्गे निब्बत्तनतो पण्डरविपाकं। **कण्हसुक्कं** ति मिस्सककम्मं। **कण्हसुक्कविपाकं** ति सुक्खदुक्खविपाकं। 5
मिस्सककम्मञ्हि कत्वा अकुसलेन तिरच्छानयोनियं मङ्गलहत्थिट्ठानादीसु उप्पन्नो कुसलेन पवत्ते सुखं वेदयति। कुसलेन राजकुलेपि निब्बत्तो अकुसलेन पवत्ते[1] दुक्खं वेदयति। **अकण्हअसुक्कं** ति कम्मक्खयकरं चतुमग्गञाणं अधिप्पेतं।

तञ्हि यदि कण्हं भवेय्य, कण्हविपाकं ददेय्य। यदि सुक्कं 10 B.206
भवेय्य, सुक्कविपाकं ददेय्य। उभयविपाकस्स पन अदानतो अकण्हासुक्कविपाकत्ता अकण्हं असुक्कं ति अयमेत्थ अत्थो।

सच्छिकरणीया ति पच्चक्खकरणेन चेव पटिलाभेन च सच्छिकातब्बा। **चक्खुना** ति दिब्बचक्खुना। **कायेना** ति सहजातनामकायेन। **पञ्ञाया** ति अरहत्तफलञाणेन। 15

ओघा ति वट्टस्मिं सत्ते[2] ओहनन्ति[3] ओसीदापेन्ती ति ओघा। तत्थ पञ्चकामगुणिको रागो **कामोघो**। रूपारूपभवेसु छन्दरागो **भवोघो**। तथा झाननिकन्ति सस्सतदिट्ठिसहगतो च रागो। द्वासट्ठि दिट्ठियो **दिट्ठोघो**।

वट्टस्मिं योजेन्ती ति **योगा**। ते ओघा विय वेदितब्बा। 20

विसंयोजेन्ती ति **विसञ्ञोगा**। तत्थ असुभज्झानं कामयोगविसंयोगो। तं पादकं कत्वा अधिगतो अनागामिमग्गो एकन्तेनेव **कामयोगविसञ्ञोगो** नाम। अरहत्तमग्गो **भवयोगविसञ्ञोगो** नाम।

१. पवत्तेसु—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. ओघन्ति—रो०।

सोतापत्तिमग्गो **दिट्ठियोगविसञ्ञोगो** नाम। अरहत्तमग्गो अविज्जा-योगविसञ्ञोगो नाम।

R. 1024 गन्थनवसेन **गन्था**। वट्टस्मिं नामकायञ्चेव रूपकायञ्च गन्थति[1] पलिबुद्धती ति **कायगन्थो**। **इदंसच्चाभिनिवेसो** ति इदमेव सच्चं, 5 मोघमञ्ञं ति एवं पवत्तो दिट्ठाभिनिवेसो।

उपादानानी ति आदानग्गहणानि। कामो ति रागो, सोयेव गहणट्ठेन उपादानं ति **कामुपादानं**। दिट्ठी ति मिच्छादिट्ठि, सापि गहणट्ठेन उपादानं ति **दिट्ठुपादानं**। इमिना सुद्धी ति एवं सीलवतानं गहणं **सीलब्बतुपादानं**। **अत्ता** ति एतेन वदति चेव उपादियति 10 चाति **अत्तवादुपादानं**।

योनियो ति कोट्ठासा। अण्डे जाता ति **अण्डजा**। जलाबुम्हि जाता ति **जलाबुजा**। संसेदे जाता ति **संसेदजा**। सयनस्मिं पूतिमच्छादीसु च निब्बत्तानमेतं अधिवचनं। वेगेन आगन्त्वा उपपतिता विया ति **ओपपातिका**। तत्थ देवमनुस्सेसु संसेदज-B.207 15 ओपपातिकानं अयं विसेसो। संसेदजा मन्दा दहरा हुत्वा निब्बत्तन्ति। ओपपातिका सोळसवस्सुद्देसिका हुत्वा। मनुस्सेसु हि भुम्मदेवेसु च इमा चतस्सोपि योनियो लब्भन्ति। तथा तिरच्छानेसु सुपण्णनागादीसु। वुत्तञ्हेतं—"तत्थ, भिक्खवे, अण्डजा सुपण्णा अण्डजेव नागे हरन्ति[2], न जलाबुजे न संसेदजे न ओपपातिके" 20 (सं० नि० २.४६०) ति। चातुमहाराजिकतो पट्ठाय उपरिदेवा ओपपातिकायेव। तथा नेरयिका। पेतेसु चतस्सोपि लब्भन्ति। **गब्भावक्कन्तियो** सम्पसादनीये कथिता एव।

अत्तभावपटिलाभेसु (दी० नि० ३.१८०) पठमो खिड्डापदोसिक-वसेन वेदितब्बो। दुतियो ओरब्भिकादीहि घातियमानउरब्भादिवसेन। 25 ततियो मनोपदोसिकावसेन। चतुत्थो चातुमहाराजिके उपादाय

१. ०बन्धति—रो०। २. पहरन्ति—रो०।

उपरिसेसदेवतावसेन । ते[1] हि[1] देवा नेव अत्तसञ्चेतनाय रमन्ति, न परसञ्चेतनाय ।

११. दक्खिणाविसुद्धादिचतुक्कवण्णना

१८. **दक्खिणाविसुद्धियो** ति दानसङ्खाता दक्खिणा विसुज्झन्ति महप्फला होन्ति एताही ति दक्खिणाविसुद्धियो ।

दायकतो विसुज्झति, नो पटिग्गाहकतो ति यत्थ दायको सीलवा होति, धम्मेनुप्पन्नं देय्यधम्मं देति, पटिग्गाहको दुस्सीलो । अयं दक्खिणा वेस्सन्तरमहाराजस्स दक्खिणासदिसा । **पटिग्गाहकतो विसुज्झति, नो दायकतो** ति यत्थ पटिग्गाहको सीलवा होति, दायको दुस्सीलो, अधम्मेनुप्पन्नं देति, अयं दक्खिणा चोरघातकस्स दक्खिणासदिसा । **नेव दायकतो विसुज्झति, नो पटिग्गाहकतो** ति यत्थ उभोपि दुस्सीला' देय्यधम्मोपि अधम्मेन निब्बत्तो । विपरियायेन चतुत्था वेदितब्बा ।

5 R. 1025 10

सङ्गहवत्थूनी ति सङ्गहकारणानि । तानि हेट्ठा विभत्तानेव ।

अनरियवोहारा ति अनरियानं लामकानं वोहारा ।

अरियवोहारा ति अरियानं सप्पुरिसानं वोहारा । 15

दिट्ठवादिता ति दिट्ठं मया ति एवं वादिता । एत्थ च तंतंसमुट्ठापकचेतनावसेन अत्थो वेदितब्बो । B. 208

१२. अत्तन्तपादिचतुक्कवण्णना

१८. अत्तन्तपादीसु पठमो अचेलको । दुतियो ओरब्भिकादीसु अञ्ञतरो । ततियो यञ्ञयाजको । चतुत्थो सासने सम्मापटिपन्नो ।

अत्तहिताय पटिपन्नादीसु पठमो यो सयं सीलादिसम्पन्नो, परं सीलादीसु न समादपेति, आयस्मा बक्कुलत्थेरो विय । दुतियो यो 20

१-१. कोचि हि—रो० ।

अत्तना न सीलादिसम्पन्नो, परं सीलादीसु समादपेति आयस्मा उपनन्दो विय। ततियो यो नेवत्तना सीलादिसम्पन्नो, परं सीलादीसु न समादपेति देवदत्तो विय। चतुत्थो यो अत्तनो च सीलादिसम्पन्नो परञ्च सीलादीसु समादपेति आयस्मा महाकस्सपो विय।

5 **तमादीसु तमो** ति अन्धकारभूतो। **तमपरायणो** ति तममेव परं अयनं गति अस्सा ति तमपरायणो। एवं सब्बपदेसु अत्थो वेदितब्बो। एत्थ च पठमो नीचे चण्डालादिकुले दुज्जीविते हीनत्तभावे निब्बत्तित्वा तीणि दुच्चरितानि परिपूरेति। दुतियो तथाविधो हुत्वा तीणि सुचरितानि परिपूरेति। ततियो उळारे खत्तियकुले[1]
10 बहुअन्नपानेन सम्पन्नत्तभावे निब्बत्तित्वा तीणि दुच्चरितानि परिपूरेति। चतुत्थो तादिसोव हुत्वा तीणि सुचरितानि परिपूरेति।

समणमचलो ति समणअचलो। म-कारो पदसन्धिमत्तं। सो सोतापन्नो वेदितब्बो। सोतापन्नो हि चतूहि वातेहि इन्दखीलो विय परप्पवादेहि अकम्पियो। अचलसद्धाय समन्नागतो ति समणमचलो।
15 वुत्तम्पि चेतं—"कतमो च पुग्गलो समणमचलो? इधेकच्चो पुग्गलो तिण्णं संयोजनानं परिक्खया" (पु० प० ९४) ति वित्थारो।
R. 1026 रागदोसानं पन तनुभूतत्ता सकदागामी **समणपदुमो** नाम। तेनाह—"कतमो पन[2] पुग्गलो समणपदुमो? इधेकच्चो पुग्गलो सकिदेव इमं
B. 209 लोकं आगन्त्वा दुक्खस्सन्तं करोति, अयं वुच्चति पुग्गलो समणपदुमो"
20 (पु० प० ९४) ति। रागदोसानं अभावा खिप्पमेव पुप्फिस्सती ति अनागामी **समणपुण्डरीको** नाम। तेनाह—"कतमो च पुग्गलो समणपुण्डरीको? इधेकच्चो पुग्गलो पञ्चन्नं ओरम्भागियानं ...पे०... अयं वुच्चति पुग्गलो समणपुण्डरीको" (पु० प० ९४) ति। अरहा पन सब्बेसम्पि गन्थकारकिलेसानं[3] अभावा समणेसु **समणसुखुमालो**
25 नाम। तेनाह—"कतमो च पुग्गलो समणेसु समणसुखुमालो?

१. खत्तियादिकुले—रो०। २. च—रो०।
३. थद्धकार०—रो०।

इधेकच्चो आसवानं खया ... पे० ... उपसम्पज्ज विहरति । अयं वुच्चति पुग्गलो[1] समणेसु समणसुखुमालो'' ति ।

''इमे खो, आवुसो'', तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं । इति समपञ्ञासाय चतुक्कानं वसेन द्वेपञ्हसतानि कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसी ति । 5

१३. पञ्चकवण्णना

२०. इति चतुक्कवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि पञ्चकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि । तत्थ पञ्चसु खन्धेसु **रूपक्खन्धो** लोकियो । सेसा **लोकियलोकुत्तरा** । **उपादानक्खन्धा** (दी० नि० ३.१८२) लोकियाव । वित्थारतो पन खन्धकथा विसुद्धिमग्गे वुत्ता । **कामगुणा** हेट्ठा वित्थारिताव । 10

सुकतदुक्कटादीहि गन्तब्बा ति **गतियो** । **निरयो** ति निरस्सादो । सहोकासेन खन्धा कथिता । ततो परेसु तीसु निब्बत्ता खन्धाव वुत्ता । चतुत्थे ओकासोपि ।

आवासे मच्छरियं **आवासमच्छरियं** । तेन समन्नागतो भिक्खु आगन्तुकं दिस्वा ''एत्थ चेतियस्स वा संघस्स वा परिक्खारो ठपितो'' 15 तिआदीनि वत्वा संघिकम्पि आवासं निवारेति[2] । सो कालं कत्वा पेतो वा अजगरो वा हुत्वा निब्बत्तति । कुले मच्छरियं **कुलमच्छरियं** । तेन समन्नागतो भिक्खु तेहि कारणेहि अत्तनो उपट्ठाककुले अञ्ञेसं B. 210 पवेसनम्पि निवारेति । लाभे मच्छरियं **लाभमच्छरियं** । तेन समन्नागतो R. 1027 भिक्खु संघिकम्पि लाभं मच्छरायन्तो यथा अञ्ञे न लभन्ति, एवं 20 करोति । वण्णे मच्छरियं **वण्णमच्छरियं** । **वण्णो** ति चेत्थ सरीरवण्णोपि गुणवण्णोपि वेदितब्बो । परियत्तिधम्मे[3] मच्छरियं **धम्ममच्छरियं** । तेन समन्नागतो भिक्खु ''इमं धम्मं परियापुणित्वा

१. रो० पोत्थके नत्थि । २. न देति—रो० ।
३. धम्मे—रो० ।

एसो मं अभिभविस्सती'' ति अञ्ञस्स न देति। यो पन धम्मानुग्गहेन वा पुग्गलानुग्गहेन वा न देति, न तं मच्छरियं।

चित्तं निवारेन्ति परियोनन्धन्ती ति नीवरणानि। कामच्छन्दो नीवरणपत्तो अरहत्तमग्गवज्झो। कामरागानुसयो कामरागसंयोजनपत्तो 5 अनागामिमग्गवज्झो। थिनं चित्तगेलञ्ञं। मिद्धं खन्धत्तयगेलञ्ञं। उभयम्पि अरहत्तमग्गवज्झं तथा उद्धच्चं, कुक्कुच्चं अनागामिमग्गवज्झं, विचिकिच्छा पठममग्गवज्झा।

संयोजनानी ति बन्धनानि। तेहि पन बद्धेसु पुग्गलेसु रूपारूपभवे निब्बत्ता सोतापन्नसकदागामिनो अन्तोबद्धा बहिसयिता नाम। 10 तेसञ्हि कामभवे बन्धनं। कामभवे अनागामिनो बहिबद्धा अन्तोसयिता नाम। तेसञ्हि रूपारूपभवे बन्धनं। कामभवे सोतापन्नसकदागामिनो अन्तोबद्धा अन्तोसयिता नाम। रूपारूपभवे अनागामिनो बहिबद्धा बहिसयिता नाम। खीणासवो सब्बत्थ अबन्धनो।

सिक्खितब्बं पदं सिक्खापदं। सिक्खाकोट्ठासो ति अत्थो। 15 सिक्खाय वा पदं सिक्खापदं, अधिचित्तअधिपञ्ञासिक्खाय अधिगमुपायो ति अत्थो। अयमेत्थ सङ्खेपो। वित्थारतो पन सिक्खापदकथा विभङ्गप्पकरणे सिक्खापदविभङ्गेआगता एव।

१४. अभब्बट्ठानादिपञ्चकवण्णना

२१. "अभब्बो, आवुसो, खीणासवो भिक्खु सञ्चिच्च पाणं" तिआदि देसनासीसमेव। सोतापन्नादयोपि पन अभब्बा। पुथुज्जन- 20 खीणासवानं निन्दापसंसत्थम्पि एवं वुत्तं। पुथुज्जनो नाम गारय्हो, B. 211 मातुघातादीनिपि करोति। खीणासवो पन पासंसो, कुन्थकिपिल्लिकघातादीनिपि न करोती ति।

ब्यसनेसु वियस्सती ति ब्यसनं। हितसुखं खिपति विद्धंसेती ति अत्थो। ञातीनं ब्यसनं ञातिब्यसनं, चोररोगभयादीहि ञातिविनासो R. 1028 25 ति अत्थो। भोगानं ब्यसनं भोगब्यसनं, राजचोरादिवसेन भोगविनास

ति अत्थो। रोगो एव ब्यसनं रोगब्यसनं। रोगो हि आरोग्यं ब्यसति विनासेती ति ब्यसनं। सीलस्स ब्यसनं सीलब्यसनं। दुस्सील्यस्सेतं नामं। सम्मादिट्ठिं विनासयमाना उप्पन्ना दिट्ठि एव ब्यसनं दिट्ठिब्यसनं। एत्थ च ञातिब्यसनादीनि तीणि नेव अकुसलानि न तिलक्खणाहतानि। सीलदिट्ठिब्यसनद्वयं अकुसलं तिलक्खणाहतं। 5 तेनेव "नावुसो, सत्ता ञातिब्यसनहेतु वा" तिआदिमाह।

ञातिसम्पदा ति ञातीनं सम्पदा पारिपूरी बहुभावो। भोगसम्पदायपि एसेव नयो। अरोग्यस्स सम्पदा आरोग्यसम्पदा। पारिपूरी दीघरत्तं अरोगता। सीलदिट्ठिसम्पदासुपि एसेव नयो। इधापि ञातिसम्पदादयो नो कुसला, न तिलक्खणाहता। सीलदिट्ठि- 10 सम्पदा कुसला, तिलक्खणाहता। तेनेव "नावुसो सत्ता ञातिसम्पदा- [illegible]ा" तिआदिमाह।

सीलविपत्तिसीलसम्पत्तिकथा महापरिनिब्बाने वित्थारिताव।

चोदकेना (दी० नि० ३.१८४) ति वत्थुसंसन्दस्सना, आपत्तिसंसन्दस्सना, संवासप्पटिक्खेपो, सामीचिप्पटिक्खेपो ति चतूहि 15 चोदनावत्थूहि चोदयमानेन। कालेन वक्खामि नो अकालेना ति एत्थ चुदितकस्स कालो कथितो, न चोदकस्स। परं चोदेन्तेन हि परिसमज्झे वा उपोसथपवारणग्गे वा आसनसालाभोजनसालादीसु वा न चोदेतब्बं। दिवाट्ठाने निसिन्नकाले "करोतायस्मा ओकासं, अहं आयस्मन्तं वत्तुकामो" ति एवं ओकासं कारेत्वा चोदेतब्बं। 20 पुग्गलं पन उपपरिक्खित्वा यो लोलपुग्गलो अभूतं वत्वा भिक्खूनं अयसं आरोपेति, सो ओकासकम्मं विनापि चोदेतब्बो। भूतेना ति तच्छेन सभावेन। सण्हेना ति मट्ठेन मुदुकेन। अत्थसञ्हितेना ति अत्थकामताय हितकामताय उपेतेन।

१५. पधानियङ्गपञ्चकवण्णना

२२. पधानियङ्गानी ति पधानं वुच्चति पदहनं, पधानमस्स 25 B. 212 अत्थी ति पधानियो, पधानियस्स भिक्खुनो अङ्गानि पधानियङ्गानि।

सद्धो ति सद्धाय समन्नागतो। सद्धा[१] पनेसा आगमनसद्धा, अधिगमनसद्धा, ओकप्पनसद्धा, पसादसद्धा ति चतुब्बिधा। तत्थ सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं सद्धा अभिनीहारतो आगतत्ता[२] आगमनसद्धा नाम। अरियसावकानं पटिवेधेन अधिगतत्ता अधिगमनसद्धा नाम। (R. 1029) बुद्धो धम्मो संघो ति वुत्ते अचलभावेन ओकप्पनं ओकप्पनसद्धा नाम। (5) पसादुप्पत्ति पसादसद्धा नाम। इध ओकप्पनसद्धा अधिप्पेता। बोधिं ति चतुत्थमग्गञाणं। तं सुप्पटिविद्धं तथागतना ति सद्दहति। देसनासीसमेव चेतं, इमिना पन अङ्गेन तीसुपि रतनेसु सद्धा अधिप्पेता। यस्स हि बुद्धादीसु पसादो बलवा, तस्स पधानवीरियं इज्झति। (10) अप्पाबाधो ति अरोगो। अप्पातङ्को ति निद्दुक्खो। समवेपाकिनिया ति समविपाचनीया[३]। गहणिया ति कम्मजतेजोधातुया। नातिसीताय नाच्चुण्हाया ति अतिसीतगहणिको सीतभीरू होति, अच्चुण्हगहणिको उण्हभीरू होति[४], तेसं पधानं न इज्झति। मज्झिमगहणिकस्स इज्झति। तेनाह "मज्झिमाय पधानक्खमाया[५]" ति। (15) यथाभूतं अत्तानं आविकत्ता ति यथाभूतं अत्तनो अगुणं पकासेता। उदयत्थगामिनिया ति उदयञ्च अत्थङ्गमञ्च गन्तुं परिच्छिन्दितुं समत्थाय, एतेन पञ्ञासलक्खणपरिग्गाहकं उदयब्बयञाणं वुत्तं। अरियाया ति परिसुद्धाय। निब्बेधिकाया ति अनिब्बिद्धपुब्बे लोभक्खन्धादयो निब्बिज्झितुं समत्थाय। सम्मा (20) दुक्खक्खयगामिनिया ति तदङ्गवसेन किलेसानं पहीनत्ता यं यं दुक्खं खीयति, तस्स तस्स दुक्खस्स खयगामिनिया। इति सब्बेहि इमेहि पदेहि विपस्सनापञ्ञाव कथिता। दुप्पञ्ञस्स हि पधानं न इज्झति।

१६. सुद्धावासादिपञ्चकवण्णना

२३. सुद्धावासा ति सुद्धा इध आवसिंसु आवसन्ति आवसिस्सन्ति वा ति सुद्धावासा। सुद्धा ति किलेसमलरहिता

१. सा—रो०। २. पट्ठाय—रो०।
३. ०विपाकिनिया—रो०। ४. रो० पोत्थके नत्थि।
५. ०क्खमताय—रो०।

अनागामिखीणासवा। अविहा तिआदीसु यं वत्तब्बं तं महापदाने वुत्तमेव।

अनागामीसु आयुनो मज्झं अनतिक्कमित्वा अन्तराव किलेस- B. 213 परिनिब्बानं अरहत्तं पत्तो अन्तरापरिनिब्बायी नाम। मज्झं उपहच्च अतिक्कमित्वा पत्तो उपहच्चपरिनिब्बायी नाम। असङ्खारेन 5 R. 1030 अप्पयोगेन अकिलमन्तो सुखेन पत्तो असङ्खारपरिनिब्बायी नाम। ससङ्खारेन सप्पयोगेन किलमन्तो दुक्खेन पत्तो ससङ्खारपरिनिब्बयी नाम। इमे चत्तारो पञ्चसुपि सुद्धावासेसु लब्भन्ति। उद्धंसोतोअकनिट्ठगामी ति एत्थ पन चतुक्कं वेदितब्बं। यो हि अविहातो पट्ठाय चत्तारो देवलोके सोधेत्वा अकनिट्ठं गन्त्वा परिनिब्बायति, अयं 10 उद्धंसोतो अकनिट्ठगामी नाम। दुतियं वा ततियं वा चतुत्थं वा देवलोकं गन्त्वा परिनिब्बायति, अयं उद्धंसोतो न अकनिट्ठगामी नाम। यो कामभवतो अकनिट्ठेसु निब्बत्तित्वा परिनिब्बायति, अयं न उद्धंसोतो अकनिट्ठगामी नाम। यो हेट्ठा चतूसु देवलोकेसु तत्थ तत्थेव निब्बत्तित्वा परिनिब्बायति, अयं न उद्धंसोतो न अकनिट्ठगामी 15 नामा[2] ति।

१७. चेतोखिलपञ्चकवण्णना

२४. चेतोखिला ति चित्तस्स थद्धभावो। सत्थरि कङ्खती ति सत्थु सरीरे वा गुणे वा कङ्खति। सरीरे कङ्खमानो "द्वत्तिंसमहापुरिसवरलक्खणपटिमण्डितं नाम सरीरं अत्थि नु खो नत्थी" ति कङ्खति। गुणे कङ्खमानो "अतीतानागतपच्चुप्पन्नजानन- 20 समत्थं सब्बञ्ञुतञ्ञाणं अत्थि नु खो नत्थी" ति कङ्खति। आतप्पाया ति वीरियकरणत्थाय। अनुयोगाया ति पुनप्पुनं योगाय। सातच्चाया ति सततकिरियाय। पधानाया ति पदहनत्थाय। अयं पठमो चेतोखिलो ति अयं सत्थरि विचिकिच्छासङ्खातो पठमो

१. ०पट्ठाय—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।

चित्तस्स थद्धभावो। धम्मे ति परियत्तिधम्मे च पटिवेधधम्मे च। परियत्तिधम्मे कङ्खमानो "तेपिटकं बुद्धवचनं चतुरासी ति धम्मक्खन्ध-सहस्सानी ति वदन्ति, अत्थि नु खो एतं नत्थी" ति कङ्खति। पटिवेधधम्मे कङ्खमानो "विपस्सनानिस्सन्दो मग्गो नाम, मग्गनिस्सन्दो 5 फलं नाम, सब्बसङ्खारपटिनिस्सग्गो निब्बानं नामाति वदन्ति, तं अत्थि नु खो नत्थी" ति कङ्खति। संघे कङ्खती ति "उजुप्पटिपन्नो तिआदीनं पदानं वसेन एवरूपं पटिपदं पटिपन्नो चत्तारो मग्गट्ठा R1031 चत्तारो फलट्ठा ति अट्ठन्नं पुग्गलानं समूहभूतो संघो नाम, अत्थि नु खो नत्थी" ति कङ्खति। सिक्खाय कङ्खमानो "अधिसीलसिक्खा नाम, 10 B. 214 अधिचित्तअधिपञ्ञासिक्खा नामा ति वदन्ति। सा अत्थि नु खो नत्थी" ति कङ्खति। अयं पञ्चमो ति अयं सब्रह्मचारीसु कोपसङ्खातो पञ्चमो चित्तस्स थद्धभावो कचवरभावो खाणुकभावो।

१८. चेतसोविनिबन्धादिपञ्चकवण्णना

२५. चेतसोविनिबन्धा (दी० नि० ३.१८५) ति चित्तं बन्धित्वा मुट्ठियं कत्वा विय गण्हन्ती ति चेतसोविनिबन्धा। कामे ति 15 वत्थुकामेपि किलेसकामेपि। काये ति अत्तनो काये। रूपे ति बहिद्धारूपे। यावदत्थ ति यत्तकं इच्छति, तत्तकं। उदरावदेहकं ति उदरपूरं। तञ्हि उदरं अवदेहनतो "उदरावदेहकं" ति वुच्चति। सेय्यसुखं ति मञ्चपीठसुखं। पस्ससुखं ति यथा सम्परिवत्तकं सयन्तस्स दक्खिणपस्सवामपस्सानं सुखं होति, एवं उप्पन्नं सुखं। मिद्धसुखं ति 20 निद्दासुखं। अनुयुत्तो ति युत्तप्पयुत्तो विहरति। पणिधाया ति पत्थयित्वा। ब्रह्मचरियेना ति मेथुनविरतिब्रह्मचरियेन। देवो वा भविस्सामी ति महेसक्खदेवो वा भविस्सामि। देवञ्ञतरो वा ति अप्पेसक्खदेवेसु वा अञ्ञतरो।

इन्द्रियेसु पठमपञ्चके लोकियानेव कथितानि। दुतियपञ्चके 25 पठमदुतियचतुत्थानि लोकियानि, ततियपञ्चमानि लोकियलोकुत्तरानि; ततियपञ्चके समथविपस्सनामग्गवसेन लोकियलोकुत्तरानि।

१९. निस्सरणियपञ्चकवण्णना

२६. **निस्सरणिया** (दी० नि० ३.१८६) ति निस्सटा विसञ्ञुत्ता । **धातुयो** ति अत्तसुञ्ञसभावा । **कामे मनसिकरोतो** ति कामे मनसिकरोन्तस्स, असुभज्झानतो वुट्ठाय अगदं गहेत्वा विसं वीमंसन्तो विय वीमंसनत्थं कामाभिमुखं चित्तं वेस्सेन्तस्सा ति अत्थो । **न पक्खन्दती** ति न पविसति । **न पसीदती** ति पसादं नापज्जति । 5 **न सन्तिट्ठती** ति न पतिट्ठति । **न विमुच्चती** ति नाधिमुचति । यथा पन कुक्कुटपत्तं वा न्हारुदद्दुलं वा अग्गिम्हि पक्खित्तं पतिलीयति R. 1032 पतिकुटति पतिवत्तति न सम्पसारियति; एवं पतिलीयति न पसारियति । **नेक्खम्मं खो पना** ति इध नेक्खम्मं नाम दससु[1] असुभेसु पठमज्झानं, तदस्स मनसिकरोतो चित्तं पक्खन्दति । **तस्स तं चित्तं** 10 ति तस्स तं असुभज्झानचित्तं । **सुगतं** ति गोचरे गतत्ता सुट्ठु गतं । **सुभावितं** ति अहानभागियत्ता सुट्ठु भावितं । **सुवुट्ठितं** ति कामतो B. 215 सुट्ठु वुट्ठितं । **सुविमुत्तं** ति कामेहि सुट्ठु विमुत्तं । कामपच्चया आसवा नाम कामहेतुका चत्तारो आसवा । **विघाता** ति दुक्खा । **परिळाहा** ति कामरागपरिळाहा । **न सो तं वेदनं वेदेती** ति सो तं कामवेदनं 15 विघातपरिळाहवेदनञ्च न वेदयति । **इदमक्खातं कामानं निस्सरणं** ति इदं असुभज्झानं कामेहि निस्सटत्ता कामानं निस्सरणं ति अक्खातं । यो पन तं झानं पादकं कत्वा सङ्खारे सम्मसन्तो ततियं मग्गं पत्वा अनागामिफलेन निब्बानं दिस्वा पुन कामा नाम नत्थी ति जानाति, तस्स चित्तं अच्चन्तनिस्सरणमेव । सेसपदेसुपि एसेव नयो । 20

अयं पन विसेसो, दुतियवारे मेत्ताझानानि ब्यापादस्स निस्सरणं नाम । ततियवारे करुणाझानानि विहिंसाय निस्सरणं नाम । चतुत्थवारे अरूपज्झानानि रूपानं निस्सरणं नाम, अच्चन्तनिस्सरणे चेत्थ[2] अरहत्तफलं योजेतब्बं ।

१. रो० पोत्थके नत्थि । २. वेत्थ—रो० ।

पञ्चमवारे **सक्कायं मनसिकरोतो** ति सुद्धसङ्खारे परिग्गण्हित्वा अरहत्तं पत्तस्स सुक्खविपस्सकस्स फलसमापत्तितो वुट्ठाय वीमंसनत्थं पञ्चुपादानक्खन्धाभिमुखं चित्तं पेसेन्तस्स। **इदमक्खातं सक्कायनिस्सरणं** ति इदं अरहत्तमग्गेन च फलेन च निब्बानं दिस्वा 5 ठितस्स भिक्खुनो पुन सक्कायो नत्थी ति उप्पन्नं अरहत्तफल-समापत्तिचित्तं सक्कायस्स निस्सरणं ति अक्खातं।

२०. विमुत्तायतनपञ्चकवण्णना

२७. **विमुत्तायतनानी** (दी० नि० ३.१८७) ति विमुच्चन-कारणानि। **अत्थपटिसंवेदिनो** ति पाळिअत्थं जानन्तस्स। R. 1033 **धम्मपटिसंवेदिनो** ति पाळिं जानन्तस्स। **पामोज्जं** ति तरुणपीति। 10 **पीती** ति तुट्ठाकारभूता बलवपीति। **कायो** ति नामकायो पटिपस्सम्भति। **सुखं वेदयती** ति सुखं पटिलभति। **चित्तं समाधियती** ति अरहत्तफलसमाधिना समाधियति। अयञ्हि तं धम्मं सुणन्तो आगतागतट्ठाने झानविपस्सनामग्गफलानि जानाति, तस्स एवं जानतो पीति उप्पज्जति। सो तस्सा पीतिया अन्तरा ओसक्कितुं न 15 देन्तो उपचारकम्मट्ठानिको हुत्वा विपस्सनं वड्ढेत्वा अरहत्तं पापुणाति। तं सन्धाय वुत्तं—"चित्तं समाधियती" ति। सेसेसुपि B. 216 एसेव नयो। अयं पन विसेसो। **समाधिनिमित्तं** ति अट्ठतिंसाय आरम्मणेसु अञ्ञतरो समाधियेव समाधिनिमित्तं। **सुग्गहितं होती** ति आदीसु आचरियसन्तिके कम्मट्ठानं उग्गण्हन्तेन सुट्ठु गहितं होति। 20 **सुट्ठु मनसिकतं** ति सुट्ठु उपधारितं। **सुप्पटिविद्धं पञ्ञाया** ति पञ्ञाय सुट्ठु पच्चक्खं कतं। **तस्मिं धम्मे** ति तस्मिं कम्मट्ठानपाळिधम्मे।

विमुत्तिपरिपाचनीया ति विमुत्ति वुच्चति अरहत्तं, तं परिपाचेन्ती ति **विमुत्ति परिपाचनीया**। **अनिच्चसञ्ञा** ति अनिच्चानुपस्सनाञाणे 25 उप्पन्नसञ्ञा। **अनिच्चे दुक्खसञ्ञा** ति दुक्खानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा। **दुक्खे अनत्तसञ्ञा** ति अनत्तानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा।

पहानसञ्ञा ति पहानानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा। **विरागसञ्ञा** ति विरागानुपस्सनाञाणे उप्पन्नसञ्ञा।

"इमे खो आवुसो" तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति छब्बीसतिया पञ्चकानं वसेन तिंससतपञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसी ति। 5

२१. छक्कवण्णना

२८. इति पञ्चकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि छक्कवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ **अज्झत्तिकानी** (दी० नि० ३.१८८) ति अज्झत्तज्झत्तिकानि। **बाहिरानी** ति ततो अज्झत्तज्झत्ततो बहिभूतानि। वित्थारतो पन आयतनकथा विसुद्धिमग्गे कथिताव। **विञ्ञाणकाया** ति विञ्ञाणसमूहा। **चक्खुविञ्ञाणं** ति चक्खुपसादनिस्सितं कुसलाकुसलविपाकविञ्ञाणं। एस नयो सब्बत्थ। **चक्खुसम्फस्सो** ति चक्खुनिस्सितो[1] सम्फस्सो। **सोतसम्फस्सादीसुपि** एसेव नयो। **मनोसम्फस्सो** ति इमे दस सम्फस्से ठपेत्वा सेसो सब्बो मनोसम्फस्सो नाम। वेदनाछक्कम्पि[2] एतेनेव नयेन वेदितब्बं। **रूपसञ्ञा** ति रूपं आरम्मणं कत्वा उप्पन्ना सञ्ञा। एतेनुपायेन सेसापि वेदितब्बा। चेतनाछक्केपि एसेव नयो। तथा तण्हाछक्के।

R. 1034 — 10 — 15 — B. 217 — 20

२९. **अगारवो** ति गारवविरहितो। **अप्पतिस्सो** ति अप्पतिस्सयो अनीचवुत्ति। एत्थ पन यो भिक्खु सत्थरि धरमाने तीसु कालेसु उपट्ठानं न याति। सत्थरि अनुपाहने चङ्कमन्ते सउपाहनो चङ्कमति, नीचे[3] चङ्कमन्ते उच्चे[4] चङ्कमति, हेट्ठा वसन्ते उपरि वसति, सत्थुदस्सनट्ठाने उभो अंसे पारुपति, छत्तं धारेति, उपाहनं धारेति, नहायति, उच्चारं वा पस्सावं वा करोति। परिनिब्बुते पन चेतियं वन्दितुं न गच्छति, चेतियस्स पञ्ञायनट्ठाने सत्थुदस्सनट्ठाने

१. चक्खुसन्निस्सितो—रो०। २. वेदनाचक्कं०—रो०।
३. नीचे चङ्कमे—रो०। ४. उच्चे चङ्कमे—रो०।

वुत्तं सब्बं करोति, अयं **सत्थरि अगारवो** नाम। यो पन धम्मस्सवने संघुट्ठे सक्कच्चं न गच्छति, सक्कच्चं धम्मं न सुणाति, समुल्लपन्तो निसीदति, सक्कच्चं न गण्हाति, न वाचेति, अयं **धम्मे अगारवो** नाम। यो पन थेरेन भिक्खुना अनज्झिट्ठो धम्मं देसेति, निसीदति,
5 पञ्हं कथेति, वुड्ढे भिक्खू घट्टेन्तो गच्छति, तिट्ठति, निसीदति, दुस्सपल्लत्थिकं वा हत्थपल्लत्थिकं वा करोति, संघमज्झे उभो अंसे पारुपति, छत्तुपाहनं धारेति, अयं **संघे अगारवो** नाम। एकभिक्खुस्मिम्पि हि अगारवे कते संघे अगारवो कतोव होति। तिस्सो सिक्खा पन अपूरयमानोव **सिक्खाय अगारवो** नाम।
10 अप्पमादलक्खणं अननुब्रूहयमानो **अप्पमादे अगारवो** नाम। दुविधम्पि **पटिसन्थारं** अकरोन्तो **पटिसन्थारे अगारवो** नाम। छ गारवा वुत्तप्पटिपक्खवसेन वेदितब्बा।

R. 1035 **सोमनस्सूपविचारा** ति सोमनस्ससम्पयुत्ता विचारा। **सोमनस्सट्ठानियं** ति सोमनस्सकारणभूतं। **उपविचरती** ति वितक्केन
15 वितक्केत्वा विचारेन परिच्छिन्दति। एस नयो सब्बत्थ। **दोमनस्सूपविचारापि** एवमेव वेदितब्बा। तथा **उपेक्खूपविचारा**। **सारणीयधम्मा** हेट्ठा वित्थारिता। **दिट्ठिसामञ्ञगतो** ति इमिना पन पदेन कोसम्बकसुत्ते पठममग्गो कथितो, इध चत्तारोपि मग्गा।

२२. विवादमूलछक्कवण्णना

३०. **विवादमूलानी** (दी०नि०३.१९०) ति विवादस्स मूलानि।
20 **कोधनो** ति कुज्झनलक्खणेन कोधेन समन्नागतो। **उपनाही** ति वेरअप्पटिनिस्सग्गलक्खणेन उपनाहेन समन्नागतो। **अहिताय दुक्खाय देवमनुस्सानं** ति द्विन्नं भिक्खूनं विवादो कथं देवमनुस्सानं अहिताय दुक्खाय संवत्तति। कोसम्बकक्खन्धके विय द्वीसु भिक्खूसु विवादं
B. 218 आपन्नेसु तस्मिं विहारे तेसं अन्तेवासिका विवदन्ति। तेसं ओवादं
25 गण्हन्तो भिक्खुनिसंघो विवदति। ततो तेसं उपट्ठाका विवदन्ति। अथ मनुस्सानं आरक्खदेवता द्वे कोट्ठासा होन्ति। तत्थ धम्मवादीनं

आरक्खदेवता धम्मवादिनियो होन्ति अधम्मवादीनं अधम्मवादिनियो। ततो आरक्खदेवतानं मित्ता भुम्मा देवता भिज्जन्ति। एवं परम्परा याव ब्रह्मलोका ठपेत्वा अरियसावके सब्बे देवमनुस्सा द्वे कोट्ठासा होन्ति। धम्मवादीहि पन अधम्मवादिनोव[1] बहुतरा होन्ति। ततो "यं बहुकेहि गहितं, तं तच्छं[2]" ति धम्मं विस्सज्जेत्वा बहुतराव 5 अधम्मं गण्हन्ति। ते अधम्मं पुरक्खत्वा वदन्ता[3] अपायेसु निब्बत्तन्ति। एवं द्विन्नं भिक्खूनं विवादो देवमनुस्सानं अहिताय[4] दुक्खाय होति।

अज्झत्तं वा ति तुम्हाकं अब्भन्तरपरिसाय। **बहिद्धा वा** ति परेसं परिसाय।

मक्खी ति परेसं गुणमक्खनलक्खणेन मक्खेन[5] समन्नागतो। 10 **पळासी** ति युगग्गाहलक्खणेन पळासेन समन्नागतो। **इस्सुकी** ति परसक्कारादीनि इस्सायनलक्खणाय[6] इस्साय समन्नागतो। **मच्छरी** ति आवास मच्छरियादीहि समन्नागतो। **सठो** ति केराटिको। **मायावी** ति कतपापपटिच्छादको। **पापिच्छो** ति असन्तसम्भावनिच्छको R. 1036 दुस्सीलो। **मिच्छादिट्ठी** ति नत्थिकवादी अहेतुकवादी अकिरियवादी। 15 **सन्दीट्ठिपरामासी** ति सयं दिट्ठिमेव परामसति। **आधानग्गाही** ति दळ्हग्गाही। **दुप्पटिनिस्सग्गी** ति न सक्का होति गहितं विस्सज्जापेतुं।

पथवीधातू ति पतिट्ठाधातु। **आपोधातू** ति आबन्धनधातु। **तेजोधातू** ति परिपाचनधातु। **वायोधातू** ति वित्थम्भनधातु। **आकासधातू** ति असम्फुट्ठधातु। **विञ्ञाणधातू** ति विजाननधातु। 20

२३. निस्सरणियछक्कवण्णना

३१. **निस्सरणिया धातुयो** (दी०नि० ३.१९१) ति निस्सटधातुयोव। **परियादाय तिट्ठती** ति परियादियित्वा हापेत्वा तिट्ठति।

१. अधम्मवादी देवा—रो०। २. गण्हन्ति—रो०।
३. विचरन्ता—रो०। ४. अभिताय—रो०।
५. रो० पोत्थके नत्थि। ६. ०लक्खणेन—रो०।

मा हेवन्तिस्स वचनीयो ति यस्मा अभूतं ब्याकरणं ब्याकरोति, तस्मा B. 219 मा एवं भणी ति वत्तब्बो। **यदिदं मेत्ताचेतोविमुत्ती** ति या अयं मेत्ताचेतोविमुत्ति, इदं निस्सरणं ब्यापादस्स, ब्यापादतो निस्सटा ति अत्थो। यो पन मेत्ताय तिकचतुक्कज्झानतो वुट्ठितो सङ्खारे सम्मसित्वा 5 ततियमग्गं पत्वा "पुन ब्यापादो नत्थी" ति ततियफलेन निब्बानं पस्सति, तस्स चित्तं अच्चन्तं निस्सरणं ब्यापादस्स। एतेनुपायेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो।

अनिमित्ता चेतोविमुत्ती ति अरहत्तफलसमापत्ति। सा हि रागनिमित्तादीनञ्चेव रूपनिमित्तादीनञ्च निच्चनिमित्तादीनञ्च[1] अभावा 10 "अनिमित्ता" ति वुत्ता। **निमित्तानुसारी** ति वुत्तप्पभेदं निमित्तं अनुसरती ति निमित्तानुसारी[2]।

अस्मी ति अस्मिमानो। **अयमहमस्मी** ति पञ्चसु खन्धेसु अयं नाम अहं अस्मी ति एत्तावता अरहत्तं ब्याकतं होति। **विचिकिच्छाकथंकथासल्लं** ति विचिकिच्छाभूतं कथंकथासल्लं[3]। **मा हेवन्तिस्स** 15 **वचनीयो** ति सचे ते पठममग्गवज्झा विचिकिच्छा उप्पज्जति[4], अरहत्तब्याकरणं मिच्छा होति, तस्मा मा अभूतं भणी ति वारेतब्बो। **अस्मिमानसमुग्घातो** ति अरहत्तमग्गो। अरहत्तमग्गफलवसेन हि निब्बाने दिट्ठे पुन अस्मिमानो नत्थी ति अरहत्तमग्गो अस्मिमानसमुग्घातो ति वुत्तो।

२४. अनुत्तरियादिछक्कवण्णना

R. 1037 20 ३२. **अनुत्तरियानी** (दी० नि० ३.१९३) ति अनुत्तरानि जेट्ठकानि। दस्सनेसु अनुत्तरियं **दस्सनानुत्तरियं**। सेसपदेसुपि एसेव नयो। तत्थ हत्थिरतनादीनं दस्सनं न दस्सनानुत्तरियं, निविट्ठसद्धस्स पन निविट्ठपेमवसेन दसबलस्स वा भिक्खुसंघस्स वा

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. ० ति—रो०।
३. ०सल्लापं—रो०। ४. सम्पज्जति—रो०।

कसिणासुभनिमित्तादीनं वा अञ्ञतरस्स दस्सनं **दस्सनानुत्तरियं** नाम। खत्तियादीनं गुणकथासवनं न सवनानुत्तरियं, निविट्ठसद्धस्स पन निविट्ठपेमवसेन तिण्णं वा रतनानं गुणकथासवनं तेपिटकबुद्ध-वचनसवनं वा **सवनानुत्तरियं** नाम। मणिरतनादिलाभो न लाभानुत्तरियं, सत्तविधअरियधनलाभो पन **लाभानुत्तरियं** नाम। 5
हत्थिसिप्पादिसिक्खनं न सिक्खानुत्तरियं, सिक्खत्तयपूरणं[1] पन **सिक्खानुत्तरियं** नाम। खत्तियादीनं पारिचरिया न पारिचरियानुत्तरियं, तिण्णं पन रतनानं पारिचरिया **पारिचरियानुत्तरियं** नाम। खत्तियादीनं गुणानुस्सरणं नानुस्सतानुत्तरियं, तिण्णं पन रतनानं गुणानुस्सरणं **अनुस्सतानुत्तरियं** नाम। 10

अनुस्सतियोव[2] **अनुस्सतिट्ठानानि** नाम। **बुद्धानुस्सती** ति बुद्धस्स गुणानुस्सरणं। एवं अनुस्सरतो हि पीति उप्पज्जति। सो तं पीतिं खयतो वयतो[3] पट्ठपेत्वा अरहत्तं पापुणाति। उपचारकम्मट्ठानं नामेतं गिहीनम्पि लब्भति, एस नयो सब्बत्थ। वित्थारकथा पनेत्थ विसुद्धिमग्गे वुत्तनयेनेव वेदितब्बा[4]। 15

B. 220

२५. सततविहारछक्कवण्णना

३३. **सततविहारा** (दी० नि० ३.१९३) ति[5] खीणासवस्स निच्चविहारा[6]। **चक्खुना रूपं दिस्वा** ति चक्खुद्वारारम्मणे आपाथगते तं रूपं चक्खुविञ्ञाणेन दिस्वा जवनक्खणे इट्ठे अरज्जन्तो[7] **नेव सुमनो होति,** अनिट्ठे अदुस्सन्तो **न दुम्मनो**। असमपेक्खने मोहं अनुप्पादेन्तो **उपेक्खको विहरति** मज्झत्तो, सतिया युत्तत्ता **सतो,** 20
सम्पजञ्ञेन युत्तत्ता **सम्पजानो**। सेसपदेसुपि[8] एसेव नयो। इति छसुपि द्वारेसु उपेक्खको विहरती ति इमिना छळङ्गुपेक्खा कथिता।

१. सिक्खात्तयपरिपूरणं—रो०। २. अनुस्सतियो ति च—रो०।
३. ०च—रो०। ४. वेदितब्बो—रो०।
५. सत्तविहाराति—रो० सब्बत्थ। ६. निच्चविहारो—रो०।
७. आरज्जन्तो—रो०। ८. सेसपदेपि—रो०।

सम्पजानो ति वचनतो पन चत्तारि ञाणसम्पयुत्तचित्तानि लब्भन्ति। **सततविहारा** ति वचनतो अट्ठपि महाचित्तानि लब्भन्ति **अरज्जन्तो अदुस्सन्तो** ति वचनतो दसपि चित्तानि लब्भन्ति। सोमनस्सं कथं लब्भती ति चे आसेवनतो लब्भति।

२६. अभिजातिछक्कवण्णना

R. 1038 5 ३४. **अभिजातियो** ति जातियो। **कण्हाभिजातिको समानो** ति कण्हे नीचकुले जातो हुत्वा। **कण्हं धम्मं अभिजायती** ति काळकं दसदुस्सल्यधम्मं पसवति करोति। सो तं अभिजायित्वा निरये निब्बत्तति। **सुक्कं धम्मं** ति अहं पुब्बेपि पुञ्ञानं अकतत्ता नीचकुले निब्बत्तो। इदानि पुञ्ञं करोमी ति[1] पुञ्ञसङ्खातं पण्डरं धम्मं 10 अभिजायति। सो तेन सग्गे निब्बत्तति। **अकण्हं असुक्कं निब्बानं** ति निब्बानञ्हि सचे कण्हं भवेय्य, कण्हविपाकं ददेय्य। सचे सुक्कं, सुक्कविपाकं ददेय्य। द्विन्नम्पि अप्पदानतो पन "अकण्हं असुक्कं" ति वुत्तं। निब्बानञ्च नाम इमस्मिं अत्थे अरहत्तं[2] अधिप्पेतं। तञ्हि किलेसनिब्बानन्ते जातत्ता निब्बानं 15 नाम। तं एस अभिजायति पसवति करोति। **सुक्काभिजातिको समानो** ति सुक्के उच्चकुले जातो हुत्वा सेसं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

२७. निब्बेधभागियछक्कवण्णना

B. 221 **निब्बेधभागिया** ति निब्बेधो[3] वुच्चति निब्बानं, तं भजन्ति उपगच्छन्ती ति निब्बेधभागिया। अनिच्चसञ्ञादयो पञ्चके वुत्ता। निरोधानुपस्सनाञाणे[4] सञ्ञा निरोधसञ्ञा नाम।

20 "इमे खो, आवुसो", तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति द्वावीसतिया छक्कानं वसेन बत्तिंससतपञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसीति।

१. करिस्सामीति—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. नेब्बेधो—रो०। ४. ०पन—रो०।

२८. सत्तकवण्णना

३५. इति छक्कवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि सत्तकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि।

तत्थ सम्पत्तिपटिलाभट्ठेन सद्धाव[1] धनं सद्धाधनं। एस नयो सब्बत्थ। पञ्ञाधनं पनेत्थ सब्बसेट्ठं। पञ्ञाय हि ठत्वा तीणि सुचरितानि पञ्चसीलानि दससीलानि पूरेत्वा सग्गूपगा होन्ति, सावकपारमीञाणं, पच्चेकबोधिञाणं, सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्च पटिविज्झन्ति। इमासं सम्पत्तीनं पटिलाभकारणतो[2] पञ्ञा "धनं" ति वुत्ता। सत्तपि चेतानि[3] लोकियलोकुत्तरमिस्सकानेव कथितानि। बोज्झङ्गकथा कथिताव।

समाधिपरिक्खारा ति समाधिपरिवारा। सम्मादिट्ठादीनि वुत्तत्थानेव[4]। इमेपि सत्त परिक्खारा लोकियलोकुत्तराव कथिता।

असतं धम्मा असन्ता वा धम्मा लामका धम्मा ति असद्धम्मा। विपरियायेन सद्धम्मा वेदितब्बा। सेसमेत्थ उत्तानत्थमेव। सद्धम्मेसु पन सद्धादयो सब्बेपि विपस्सकस्सेव कथिता। तेसुपि पञ्ञा लोकियलोकुत्तरा। अयं विसेसो।

सप्पुरिसानं धम्मा ति सप्पुरिसधम्मा। तत्थ सुत्तगेय्यादिकं धम्मं जानाती ति धम्मञ्ञू। तस्स तस्सेव भासितस्स अत्थं जानाती ति अत्थञ्ञू। "एत्तकोम्हि सीलेन समाधिना पञ्ञाया" ति एवं अत्तानं जानाती ति अत्तञ्ञू। पटिग्गहणपरिभोगेसु मत्तं जानाती ति मत्तञ्ञू। अयं कालो उद्देसस्स[5], अयं कालो परिपुच्छाय, अयं कालो योगस्स अधिगमाया ति एवं कालं जानाती ति कालञ्ञू। एत्थ च पञ्च वस्सानि उद्देसस्स कालो। दस परिपुच्छाय। इदं अतिसम्बाधं। दस वस्सानि पन[6] उद्देसस्स कालो। वीसति परिपुच्छाय। ततो परं

5 10 R. 1039 15 20 B. 222

१. सद्धावा—रो०। २. करणतो—रो०।
३. चेतनानि—रो०। ४. वुत्तत्थानेव—रो०।
५. उद्देसाय—रो०। ६. दस पन वस्सानि—रो०।

योगे कम्मं कातब्बं। अट्ठविधं परिसं जानाती ति परिसञ्ञू। सेवितब्बा सेवितब्बं पुग्गलं जानाती ति पुग्गलञ्ञू।

३६. निद्दसवत्थूनी (दी० नि० ३.१९४) ति निद्दसादिवत्थूनि। निद्दसो भिक्खु, निब्बीसो, नित्तिंसो, निच्चत्तालीसो, निप्पञ्ञासो
5 भिक्खू ति एवं वचनकारणानि। अयं किर पञ्हो तित्थियसमये[1] उप्पन्नो। तित्थिया[2] हि दसवस्सकाले मतं निगण्ठं निद्दसो ति वदन्ति। सो किर पुन दसवस्सो न होति। न केवलञ्च दसवस्सोव[3]। नववस्सोपि ...पे०... एकवस्सोपि न होति। एतेनेव नयेन वीसति वस्सादिकालेपि मतं निब्बीसो, नित्तिंसो, निच्चत्तालीसो, निप्पञ्ञासो
10 ति वदन्ति। आयस्मा आनन्दो गामे विचरन्तो तं कथं सुत्वा विहारं गन्त्वा भगवतो आरोचेसि। भगवा आह—"नयिदं, आनन्द, तित्थियानं[4] अधिवचनं मम सासने खीणासवस्सेतं अधिवचनं। खीणासवो हि दसवस्सकाले परिनिब्बुतो पुन दसवस्सो न होति। न केवलञ्च दसवस्सोव, नववस्सोपि ...पे०... एकवस्सोपि। न
15 केवलञ्च एकवस्सोव, दसमासिकोपि ... पे० ... एकमासिकोपि, एकदिवसिकोपि; एकमूहुत्तोपि[5] न होति येव। कस्मा? पुन पटिसन्धिया अभावा। निब्बीसादीसुपि एतेव[6] नयो। इति भगवा मम सासने खीणासवस्सेतं अधिवचनं" ति—

R. 1040 वत्वा येहि कारणेहि सो निद्दसो होति, तानि दस्सेतुं सत्त
20 निद्दसवत्थूनि देसेति[7]। थेरोपि तमेव देसनं उद्धरित्वा सत्त निद्दसवत्थूनि इधावुसो भिक्खु सिक्खासमादाने ति आदिमाह। तत्थ इधा ति इमस्मिं सासने। सिक्खासमादाने तिब्बच्छन्दो होती ति सिक्खत्तयपूरणे[8] बहलच्छन्दो[9] होति। आयतिञ्च सिक्खासमादाने

१. तित्थियस्मिं एव—रो०। २. तित्थिका—रो०।
३. दसवस्सोपि—रो०। ४. तित्थिकानं—रो०।
५. एकामुहुत्तकोपि—रो०। ६. निब्बीसादिसु एसेव—रो०।
७. देसेसि—रो०। ८. सिक्खात्तयरसपूरणे—रो०।
९. बलवच्छन्दो—रो०।

अविगतपेमो ति अनागते पुनदिवसादीसुपि सिक्खापूरणे अविगतपेमेन[1] B. 223
समन्नागतो होति। धम्मनिसन्तिया ति धम्मनिसामनाय।
विपस्सनायेतं अधिवचनं। इच्छाविनये ति तण्हाविनयने। पटिसल्लाने
ति एकीभावे। वीरियारम्भे ति कायिकचेतसिकस्स वीरियस्स[2] पूरणे।
सतिनेपक्के ति सतियञ्चेव नेपक्कभावे च। दिट्ठिपटिवेधे ति 5
मग्गदस्सने। सेसं सब्बत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

सञ्ञासु असुभानुपस्सनाञाणे सञ्ञा असुभसञ्ञा। आदीनवानु-
पस्सनाञाणे सञ्ञा आदीनवसञ्ञा नाम। सेसा हेट्ठा वुत्ता एव।
बलसत्तकविञ्ञाणट्ठितिसत्तकपुग्गलसत्तकानि वुत्तनयानेव। अप्पहीनट्ठेन
अनुसयन्ती ति[3] अनुसया। थामगतो कामरागो[4] कामरागानुसयो। 10
एस नयो सब्बत्थ। संयोजनसत्तकं उत्तानत्थमेव।

२९. अधिकरणसमथसत्तकवण्णना

अधिकरणसमथेसु अधिकरणानि समेन्ति वूपसमेन्ती ति
अधिकरणसमथा (दी० नि० ३.१९५)। उप्पन्नुप्पन्नानं ति उप्पन्नानं
उप्पन्नानं। अधिकरणानं ति विवादाधिकरणं अनुवादाधिकरणं आपत्ता-
धिकरणं किच्चाधिकरणं ति इमेसं चतुन्नं। समथाय वूपसमाया ति 15
समथत्थञ्चेव वूपसमनत्थञ्च। सम्मुखाविनयो दातब्बो ...पे०...
तिणवत्थारको ति इमे सत्त समथा दातब्बा।

तत्रायं विनिच्छयनयो। अधिकरणेसु ताव धम्मो ति वा अधम्मो
ति वा अट्ठारसहि वत्थूहि विवदन्तानं भिक्खूनं यो विवादो, इदं
विवादाधिकरणं नाम। सीलविपत्तिया वा आचारदिट्ठिआजीव- 20 R. 1041
विपत्तिया वा अनुवदन्तानं अनुवादो उपवदना चेव चोदना च, इदं
अनुवादाधिकरणं नाम। मातिकाय आगता पञ्च, विभङ्गे द्वेति सत्तपि
आपत्तिक्खन्धा, इदं आपत्ताधिकरणं नाम। संघस्स अपलोकनादीनं
चतुन्नं कम्मानं करणं, इदं किच्चाधिकरणं नाम।

१. अधिगतपेमेनेव—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. अनुसेन्ति—रो०। ४. ० व—रो०।

तत्थ विवादाधिकरणं द्वीहि समथेहि सम्मति सम्मुखाविनयेन च येभुय्यसिकाय च। सम्मुखाविनयेनेव सम्ममानं यस्मिं विहारे उप्पन्नं तस्मिं येव वा अञ्ञत्थ वूपसमेतुं गच्छन्तानं अन्तरामग्गे वा यत्थ गन्त्वा संघस्स निय्यातितं तत्थ संघेन वा संघे वूपसमेतुं असक्कोन्ते
B. 224 5 तत्थेव उब्बाहिकाय सम्मतपुग्गलेहि[१] वा विनिच्छितं सम्मति। एवं सम्ममाने च पनेतस्मिं या संघसम्मुखता धम्मसम्मुखता विनयसम्मुखता पुग्गलसम्मुखता, अयं सम्मुखाविनयो नाम।

तत्थ च कारकसंघस्स संघसामग्गिवसेन सम्मुखीभावो संघसम्मुखता। समेतब्बस्स वत्थुनो भूतता धम्मसम्मुखता। यथा तं
10 समेतब्बं, तथेव सम्मनं विनयसम्मुखता। यो च विवदति, येन च विवदति, तेसं उभिन्नं अत्थपच्चत्थिकानं सम्मुखीभावो पुग्गलसम्मुखता। उब्बाहिकाय वूपसमे पनेत्थ संघसम्मुखता परिहायति। एवं ताव सम्मुखाविनयेनेव सम्मति।

सचे पनेवम्पि न सम्मति, अथ नं उब्बाहिकाय सम्मता भिक्खू
15 "न मयं सक्कोम वूपसमेतुं" ति संघस्सेव निय्यातेन्ति, ततो संघो पञ्चङ्गसमन्नागतं भिक्खुं सलाकग्गाहापकं सम्मन्नति। तेन गुळ्हकविवटकसकण्णजप्पकेसु तीसु सलाकग्गाहेसु अञ्ञतरवसेन सलाकं गाहापेत्वा[२] सन्निपतितपरिसाय धम्मवादीनं येभुय्यताय यथा ते धम्मवादिनो वदन्ति, एवं वूपसन्तं अधिकरणं सम्मुखाविनयेन च
20 येभुय्यसिकाय च वूपसन्तं होति।

तत्थ सम्मुखाविनयो वुत्तनयो एव। यं पन येभुय्यसिकाकम्मस्स करणं, अयं येभुय्यसिका नाम। एवं विवादाधिकरणं द्वीहि समथेहि
R. 1042 सम्मति। अनुवादाधिकरणं चतूहि समथेहि सम्मति—सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च अमूळ्हविनयेन च तस्सपापियसिकाय च।
25 सम्मुखाविनयेनेव सम्ममानं यो च अनुवदति, यञ्च अनुवदति, तेसं

१. सम्मतपुग्गभि—रो०। २. गहेत्वा—रो०।

वचनं सुत्वा सचे काचि आपत्ति नत्थि, उभो खमापेत्वा, सचे अत्थि, अयं नामेत्थ आपत्ती ति एवं विनिच्छितं वूपसम्मति। तत्थ सम्मुखाविनयलक्खणं वुत्तनयमेव। यदा पन खीणासवस्स भिक्खुनो अमूलिकाय सीलविपत्तिया अनुद्धंसितस्स सतिविनयं याचमानस्स संघो ञत्तिचतुत्थेन[1] कम्मेन सतिविनयं देति, तदा सम्मुखाविनयेन च सतिविनयेन च वूपसन्तं होति। दिन्ने पन सतिविनये पुन तस्मिं पुग्गले कस्सचि अनुवादो न रुहति।

यदा उम्मत्तको भिक्खु उम्मादवसेन अस्समणके अज्झाचारे "सरतायस्मा[2] एवरूपिं आपत्ति" ति भिक्खूहि चोदियमानो "उम्मत्तकेन मे, आवुसो, एतं कतं, नाहं तं सरामि" ति भणन्तोपि भिक्खूहि चोदियमानो व[3] पुन अचोदनत्थाय समूळ्हविनयं याचति, संघो चस्स ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन अमूळ्हविनयं देति तदा सम्मुखाविनयेन च अमूळ्ह विनयेन च वूपसन्तं होति। दिन्ने पन अमूळ्हविनये पुन तस्मिं पुग्गले कस्सचि तप्पच्चया अनुवादो न रुहति।

यदा पन पाराजिकेन वा पाराजिकसामन्तेन वा चोदियमानस्स अञ्ञेनञ्ञं पटिचरतो पापुस्सन्नताय[4] पापियस्स पुग्गलस्स "सचायं[5] अच्छिन्नमूलो भविस्सति, सम्मा वत्तित्वा ओसारणं लभिस्सति। सचे छिन्नमूलो अयमेवस्स नासना भविस्सती" ति मञ्ञमानो संघो ञत्तिचतुत्थेन कम्मेन तस्सपापियसिकं करोति, तदा सम्मुखाविनयेन च तस्सपापियसिकाय च वूपसन्तं होती ति। एवं अनुवादाधिकरणं चतूहि समथेहि सम्मति। आपत्ताधिकरणं तीहि समथेहि सम्मति सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च तिणवत्थारकेन च। तस्स सम्मुखाविनयेनेव वूपसमो नत्थि। यदा पन एकस्स वा भिक्खुनो सन्तिके संघगणमज्झेसु[6] वा भिक्खु लहुकं आपत्तिं देसेति, तदा आपत्ताधिकरणं सम्मुखाविनयेन च पटिञ्ञातकरणेन च वूपसम्मति।

5 R. 1043; 10 B. 225; 15; 20; 25

१. ञत्ति—रो०।
२. सत्ता यस्मि—रो०।
३. च—रो०।
४. पापुस्सनताय—रो०।
५. चायं—रो०।
६. संघगहणमज्झे—रो०।

तत्थ सम्मुखाविनये ताव यो च देसेति, यस्स च देसेति, तेसं सम्मुखीभावो पुग्गलसम्मुखता। सेसं वुत्तनयमेव।

पुग्गलस्स गणस्स च देसनाकाले संघसम्मुखता परिहायति। या
R. 1043 पनेत्थ अहं, भन्ते, इत्थन्नामं आपत्तिं आपन्नो ति च; आम, पस्सामी
5 ति च[1] पटिञ्ञा, ताय पटिञ्ञाय "आयतिं संवरेय्यासी" ति करणं, तं पटिञ्ञातकरणं नाम। संघादिसेसे हि[2] परिवासादियाचना पटिञ्ञा। परिवासादीनं दानं पटिञ्ञातकरणं नाम। द्वे पक्खजाता पन भण्डनकारका भिक्खू बहुं अस्सामणकं अज्झाचरित्वा पुन लद्धिधम्मे उप्पन्ने सचे मयं इमाहि आपत्तीहि अञ्ञमञ्ञं करिस्साम,
10 सियापि तं अधिकरणं कक्खळत्ताय संवत्तेय्या ति अञ्ञमञ्ञं आपत्तिया कारापने दोसं दिस्वा यदा तिणवत्थारककम्मं करोन्ति, तदा आपत्ताधिकरणं सम्मुखाविनयेन च तिणवत्थारकेन च सम्मति।

तत्थ हि यत्तका हत्थपासूपगता[3] "न मेतं[3] खमती" ति एवं दिट्ठाविकम्मं अकत्वा निद्दम्पि ओक्कन्ता होन्ति, सब्बेसं ठपेत्वा
B. 226 15 थुल्लवज्जञ्च गिहिपटिसंयुत्तञ्च सब्बापत्तियो वुट्ठहन्ति, एवं आपत्ताधिकरणं तीहि समथेहि सम्मति। किच्चाधिकरणं एकेन समथेन सम्मति सम्मुखाविनयेनेव। इमानि चत्तारि अधिकरणानि यथानुरूपं इमेहि सत्तहि समथेहि सम्मन्ति। तेन वुत्तं— "उप्पन्नुप्पन्नानं अधिकरणानं समथाय वूपसमाय सम्मुखाविनयो
20 दातब्बो ... पे० ... तिणवत्थारको ति अयमेत्थ विनिच्छयनयो। वित्थारो पन समथक्खन्धके आगतोयेव[4]। विनिच्छयोपिस्स समन्तपासादिकायं वुत्तो।

"इमे खो, आवुसो", तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति चुद्दसन्नं सत्तकानं वसेन अट्ठनवुति पञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं
25 दस्सेसी ति।

१. वा—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. हत्थपासूपगतानं एतं—रो०। ४. आगतनयो वा—रो०।

३०. अट्ठकवण्णना

३८. इति सत्तकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि अट्ठकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ मिच्छत्ता (दी० नि० ३.१९६) ति अयाथावा मिच्छासभावा। सम्मत्ता ति याथावा सम्मासभावा।

३९. कुसीतवत्थूनी ति कुसीतस्स अलसस्स वत्थूनि पतिट्ठा कोसज्जकारणानी ति अत्थो। कम्मं कत्तब्बं होती ति चीवर- 5 विचारणादिकम्मं कातब्बं होति। न वीरियं आरभती ति दुविधम्पि वीरियं नारभति। अप्पत्तस्सा ति झानविपस्सनामग्गफलधम्मस्स अप्पत्तस्स पत्तिया। अनधिगतस्सा ति तस्सेव अनधिगतस्स R. 1044 अधिगमत्थाय। असच्छिकतस्सा ति तस्सेव अपच्चक्खकतस्स सच्छिकरणत्थाय। इदं पठमं ति इदं हन्दाहं निपज्जामी ति एवं 10 ओसीदनं पठमं कुसीतववत्थुं। इमिना नयेन सब्बत्थ अत्थो वेदितब्बो। "मासाचितं मञ्ञे" ति एत्थ पन मासाचितं नाम तिन्तमासो। यथा तिन्तमासो गरुको होति, एवं गरुको ति अधिप्पायो। गिलाना वुट्ठितो होती ति गिलानो हुत्वा पच्छा वुट्ठितो होति।

४०. आरम्भवत्थूनी (दी० नि० ३.१९७) वीरियकारणानि। 15 तेसम्पि इमिनाव नयेन अत्थो वेदितब्बो।

४१. दानवत्थूनी (दी० नि० ३.१९९) ति दानकारणानि। B. 227 आसज्ज दानं देती ति पत्वा दानं देति। आगतं दिस्वाव मुहुत्तंयेव निसीदापेत्वा सक्कारं कत्वा दानं देति, दस्सामि[१] दस्सामी ति न किलमेति। इति एत्थ आसादनं दानकारणं नाम होति। भया दानं 20 देती ति आदीसुपि भयादीनि दानकारणानी ति वेदितब्बानि। तत्थ भयं नाम अयं अदायको अकारको ति गरहाभयं वा अपायभयं वा। अदासि मे ति मय्हं पुब्बे एस इदं नाम अदासी ति देति। दस्सति मे ति अनागते इदं नाम दस्सती[२] ति देति। साहु दानं ति दानं नाम

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. दस्सेती ति—रो०।

साधु सुन्दरं, बुद्धादीहि पण्डितेहि पसत्थं ति देति। चित्तालङ्कारचित्त-परिक्खारत्थं दानं देती ति समथविपस्सनाचित्तस्स अलङ्कारत्थञ्चेव परिवारत्थञ्च देति। दानञ्हि चित्तं मुदुकं करोति। येन लद्धं होति, सोपि लद्धं मे ति मुदुचित्तो होति, येन दिन्नं, सोपि दिन्नं मया ति 5 मुदुचित्तो होति, इति उभिन्नम्पि चित्तं मुदुकं करोति, तेनेव "अदन्तदमनं दानं" ति वुच्चति। यथाह—

> "अदन्तदमनं दानं, अदानं दन्तदूसकं।
> दानेन पियवाचाय, उन्नमन्ति नमन्ति चा[१]" ति॥

R. 1045 इमेसु पन अट्ठसु दानेसु चित्तालङ्कारदानमेव उत्तमं।

10 ४२. दानूपपत्तियो ति दानपच्चया उपपत्तियो[२]। दहती ति ठपेति। अधिट्ठातीति तस्सेव वेवचनं। भावेती ति वड्ढेति। हीने विमुत्तं ति हीनेसु पञ्चकामगुणेसु विमुत्तं। उत्तरि अभावितं ति ततो उत्तरिमग्गफलत्थाय अभावितं। तत्रूपपत्तिया संवत्तती ति यं ठानं पत्थेत्वा कुसलं कतं, तत्थ तत्थ निब्बत्तनत्थाय संवत्तति।

15 वीतरागस्सा ति मग्गेन वा समुच्छिन्नरागस्स समापत्तिया वा विक्खम्भितरागस्स। दानमत्तेनेव हि ब्रह्मलोके निब्बत्तितुं न सक्का। दानं पन समाधिविपस्सनाचित्तस्स अलङ्कारो परिवारो होति। ततो दानेन मुदुचित्तो ब्रह्मविहारे भावेत्वा ब्रह्मलोके निब्बत्तति। तेन वुत्तं "वीतरागस्स नो सरागस्सा ति।

20 खत्तियानं परिसा खत्तियपरिसा, समूहो ति अत्थो। एस नयो सब्बत्थ।

B. 228 लोकस्स धम्मा लोकधम्मा। एतेहि मुत्तो[३] नाम नत्थि, बुद्धानम्पि होन्तियेव। वुत्तम्पि चेतं—"अट्ठिमे, भिक्खवे, लोकधम्मा लोकं अनुपरिवत्तन्ति, लोको च अट्ठ लोकधम्मे अनुपरिवत्तती

१. वा—रो०। २. दानुपपत्तियो—रो०।
३. विमुत्तो—रो०।

(अं० नि० ३.२७५) ति । लाभो अलाभो ति लाभे आगते अलाभो आगतो एवा ति वेदितब्बा । यसादीसुपि एसेव नयो ।

४३. अभिभायतनविमोक्खकथा (दी० नि० ३.२००) हेट्ठा कथिता एव ।

"इमे खो, आवुसो" तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं । इति एकादसन्नं अट्ठकानं वसेन अट्ठासी ति पञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसी ति । 5

३१. नवकवण्णना

४५. इति अट्ठकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि नवकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि । तत्थ आघातवत्थूनी (दी०नि० ३.२०२) ति आघातकारणानि । आघातं बन्धती ति कोपं बन्धति करोति[1] 10 उप्पादेति ।

तं कुतेत्थ लब्भा ति तं अनत्थचरणं मा अहोसी ति एतस्मिं पुग्गले कुतो लब्भा, केन कारणेन सक्का लद्धुं ? परो नाम परस्स R. 1046 अत्तनो चित्तरुचिया अनत्थं करोती ति एवं चिन्तेत्वा अघातं पटिविनोदेति । अथ वा सचाहं पटिकोपं करेय्यं, तं कोपकरणं एत्थ 15 पुग्गले कुतो लब्भा, केन कारणेन लद्धब्बं ति अत्थो । कुतो लाभा ति पि पाठो, सचाहं एत्थ कोपं करेय्यं तस्मिं मे कोपकरणे कुतो लाभा, लाभा नाम के सियुं ति अत्थो । इमस्मिञ्च अत्थे तं ति निपातमत्तमेव होति ।

४६. सत्तावासा (दी० नि० ३.२०३) ति सत्तानं आवासा, 20 वसनट्ठानादी ति अत्थो । तत्थ सुद्धावासापि सत्तावासोव, असब्बकालिकत्ता पन न गहिता । सुद्धावासा हि बुद्धानं खन्धावारसदिसा[2]। असङ्ख्येय्यकप्पे बुद्धेसु अनिब्बत्तन्तेसु तं ठानं सुञ्ञं होती ति असब्ब- B. 229 कालिकत्ता न गहिता । सेसमेत्थ यं वत्तब्बं, तं हेट्ठा वुत्तमेव ।

१. रो० पोत्थके नत्थि । २. खन्धवारट्ठानसदिसा—रो० ।

अक्खणेसु धम्मो च देसियती ति चतुसच्चधम्मो देसियति। ओपसमिको ति किलेसूपसमकरो। परिनिब्बानिको ति किलेसपरिनिब्बानेन परिनिब्बानावहो। सम्बोधगामी ति चतुमग्गञाणपटिवेधगामी। अञ्ञतरं ति असञ्ञभवं वा अरूपभवं वा।

5 ४८. अनुपुब्बविहारा (दी० नि० ३.२०४) ति अनुपटिपाटिया समापज्जितब्बविहारा।

४९. अनुपुब्बनिरोधा (दी० नि० ३.२०५) ति अनुपटिपाटिया निरोधा।

"इमे, खो आवुसो", तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। इति छन्नं 10 नवकानं वसेन चतुपण्णास पञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसी ति।

३२. दसकवण्णना

५०. इति नवकवसेन सामग्गिरसं दस्सेत्वा इदानि दसकवसेन दस्सेतुं पुन देसनं आरभि। तत्थ नाथकरणा ति "सनाथा, भिक्खवे, विहरथ मा अनाथा, दस इमे, भिक्खवे, धम्मा नाथकरणा" 15 (सं०नि० ४.११९) ति एवं अक्खाता अत्तनो पतिट्ठाकरा धम्मा।

कल्याणमित्तो तिआदीसु सीलादिगुणसम्पन्ना कल्याणा अस्स मित्ता ति कल्याणमित्तो। ते चस्स[1] ठाननिसज्जादीसु सह अयनतो सहाया ति कल्याणसहायो। चित्तेन चेव कायेन च कल्याणमित्तेसु एव R. 1047 सम्पवङ्को ओनतो ति कल्याणसम्पवङ्को। सुवचो होती ति सुखेन 20 वत्तब्बो होति सुखेन अनुसासितब्बो। खमो ति गाळ्हेन फरुसेन कक्खळेन वुच्चमानो खमति, न कुप्पति। पदक्खिणग्गाही अनुसासनिं ति यथा एकच्चो ओवदियमानो वामतो गण्हाति, B. 230 पटिप्फरति वा असुणन्तो वा गच्छति, एवं अकत्वा "ओवदथ, भन्ते, अनुसासथ, तुम्हेसु अनोवदन्तेसु को अञ्ञो ओवदिस्सती" ति 25 पदक्खिणं गण्हाति।

१. वस्स—रो०।

उच्चावचानी ति उच्चानि[1] च अवचानि च[1]। **किं करणीयानी** ति किं करोमी ति एवं वत्वा कत्तब्बकम्मानि। तत्थ **उच्चकम्मानि** नाम चीवरस्स करणं रजनं चेतिये सुधाकम्मं उपोसथागार-चेतियघरबोधियघरेसु कत्तब्बं ति एवमादि। **अवचकम्मं** नाम पादधोवनमक्खनादिखुद्दककम्मं। **तत्रुपायाया** ति तत्रुपगमनीया। 5 **अलं कातुं** ति कातुं समत्थो होति। **अलं संविधातुं** ति विचारेतुं समत्थो।

धम्मे अस्स कामो सिनेहो ति **धम्मकामो**, तेपिटकं बुद्धवचनं पियायती ति अत्थो। **पियसमुदाहारो** ति परस्मिं कथेन्ते सक्कच्चं[2] सुणाति, सयञ्च परेसं देसेतुकामो होती ति अत्थो। "अभिधम्मे 10 अभिविनये" ति एत्थ धम्मो अभिधम्मो, विनयो अभिविनयो ति चतुक्कं वेदितब्बं। तत्थ **धम्मो** ति सुत्तन्तपिटकं। **अभिधम्मो** ति सत्त पकरणानि। **विनयो** ति उभतोविभङ्गा। **अभिविनयो** ति खन्धकपरिवारा। अथ वा सुत्तन्तपिटकम्पि अभिधम्मपिटकम्पि **धम्मा** एव। मग्गफलानि **अभिधम्मो**। सकलं विनयपिटकं **विनयो**। 15 किलेसवूपसमकारणं **अभिविनयो**। इति सब्बस्मिम्पि एत्थ धम्मे अभिधम्मे विनये अभिविनये च। **उळारपामोज्जो** ति बहुलपामोज्जो होती ति अत्थो।

कुसलेसु धम्मेसू ति कारणत्थे भुम्मं, चतुभूमक कुसलधम्मकारणा, तेसं अधिगमत्थाय अनिक्खित्तधुरो होती ति अत्थो। 20

५१. कसिणदसके सकलट्ठेन **कसिणानि**। तदारम्मणानं धम्मानं खेत्तट्ठेन वा अधिट्ठानट्ठेन वा **आयतनानि**। **उद्धं** ति उपरि गगनतलाभिमुखं। **अधो** ति हेट्ठा भूमितलाभिमुखं। **तिरियं** ति R. 1048 खेत्तमण्डलमिव समन्ता परिच्छिन्दित्वा। एकच्चो हि उद्धमेव कसिणं वड्ढेति, एकच्चो अधो, एकच्चो समन्ततो। तेन तेन वा कारणेन एवं 25

१. उच्चनीचानि—रो०। २. सच्चं—रो०।

पसारेति आलोकमिव रूपदस्सनकामो। तेन वुत्तं "पथवीकसिणमेको सञ्जानाति उद्धं अधो तिरियं" ति। अद्वयं ति इदं पन एकस्स अञ्ञभावानुपगमनत्थं वुत्तं। यथा हि उदकं पविट्ठस्स सब्बदिसासु B. 231 उदकमेव होति, न अञ्ञं, एवमेव पथवीकसिणं पथवीकसिणमेव होति, 5 नत्थि तस्स अञ्ञो कसिणसम्भेदो ति। एस नयो सब्बत्थ। अप्पमाणं ति इदं तस्स तस्स फरणअप्पमाणवसेन वुत्तं। तञ्हि चेतसा[1] फरन्तो सकलमेव फरति, न "अयमस्स आदि, इदं मज्झं" ति पमाणं गण्हाती ति। विञ्ञाणकसिणं ति चेत्थ कसिणुग्घाटिमाकासे पवत्तविञ्ञाणं। तत्थ कसिणवसेन कसिणुग्घाटिमाकासे 10 कसिणुग्घाटिकामासवसेन तत्थ पवत्तविञ्ञाणे उद्धं अधो तिरियता वेदितब्बा। अयमेत्थ सङ्खेपो। कम्मट्ठानभावनानयेन पनेतानि पथवीकसिणादीनि वित्थारतो विसुद्धिमग्गे वुत्तानेव।

३३. अकुसलकम्मपथदसकवण्णना

५२. कम्मपथेसु कम्मानेव सुगतिदुग्गतीनं पथभूतत्ता कम्मपथा नाम। तेसु पाणातिपातो अदिन्नादानं मुसावादादयो च चत्तारो 15 ब्रह्मजाले वित्थारिता एव। कामेसुमिच्छाचारो ति एत्थ पन कामेसू ति मेथुनसमाचारेसु मेथुनवत्थूसु वा। मिच्छाचारो ति एकन्तनिन्दितो लामकाचारो। लक्खणतो पन असद्धम्माधिप्पायेन कायद्वारप्पवत्ता अगमनीयट्ठानवीतिक्कमचेतना कामेसुमिच्छाचारो।

तत्थ अगमनीयट्ठानं नाम पुरिसानं ताव मातुरक्खिता, 20 पितुरक्खिता, मातापितुरक्खिता, भातुरक्खिता, भगिनिरक्खिता, ञातिरक्खिता, गोत्तरक्खिता, धम्मरक्खिता, सारक्खा, सपरिदण्डा ति मातुरक्खितादयो दस। धनक्कीता, छन्दवासिनी, भोगवासिनी, पटवासिनी, ओदपत्तकिनी, ओभतचुम्बटा, दासी च भरिया च, कम्मकारी च भरिया च, धजाहटा, मुहुत्तिका ति एता धनक्कीतादयो

१. चेतसि—रो०।

दसा ति वीसति। इत्थीसु पन द्विन्नं[1] सारक्खसपरिदण्डानं दसन्नञ्च धनक्कीतादीनं ति द्वादसन्नं इत्थीनं अञ्ञे पुरिसा। इदं अगमनीयट्ठानं नाम। सो पनेस मिच्छाचारो सीलादिगुणरहिते अगमनीयट्ठाने अप्पसावज्जो। सीलादिगुणसम्पन्ने महासावज्जो। तस्स चत्तारो सम्भारा अगमनीयवत्थु, तस्मिं सेवनचित्तं, सेवनप्पयोगो, मग्गेनमग्गप्पटिपत्तिअधिवासनं ति। एको पयोगो साहत्थिको एव। R. 1049 5

अभिज्झायती ति अभिज्झा, परभण्डाभिमुखी हुत्वा तन्निन्नताय पवत्तती ति अत्थो। सा "अहो वत इदं ममस्सा" ति एवं परभण्डाभिज्झायनलक्खणा अदिन्नादानं विय अप्पसावज्जा महासावज्जा च। तस्सा द्वे सम्भारा परभण्डं, अत्तनो परिणामनञ्च। परभण्डवत्थुके हि लोभे उप्पन्नेपि न ताव कम्मपथभेदो होति, याव "अहो वतीदं ममस्सा" ति अत्तनो न परिणामेति। 10 B. 232

हितसुखं ब्यापादयती ति ब्यापादो। सो परं विनासाय मनोपदोसलक्खणो फरुसावाचा विय अप्पसावज्जो महासावज्जो च। तस्स द्वे सम्भारा परसत्तो च, तस्स विनासचिन्ता च। परसत्तवत्थुके हि कोधे उप्पन्नेपि न ताव कम्मपथभेदो होति, याव "अहो वतायं उच्छिज्जेय्य विनस्सेय्या" ति तस्स विनासं न[2] चिन्तेति। 51

यथाभुच्चगहणाभावेन मिच्छा पस्सती ति मिच्छादिट्ठि। सा "नत्थि दिन्नं" तिआदिना नयेन विपरीतदस्सनलक्खणा। सम्फप्पलापो विय अप्पसावज्जा महासावज्जा च। अपिच अनियता अप्पसावज्जा, नियता महासावज्जा। तस्सा द्वे सम्भारा वत्थुनो च गहिताकारविपरीतता, यथा च तं गण्हाति, तथाभावेन तस्सूपट्ठानं ति। 20

इमेसं पन दसन्नं अकुसलकम्मपथानं धम्मतो कोट्ठासतो आरम्मणतो वेदनातो मूलतो ति पञ्चहाकारेहि विनिच्छयो वेदितब्बो। 25

१. रो० पोत्थके नत्थि। २. रो० पोत्थके नत्थि।

तत्थ **धम्मतो** ति एतेसु हि पटिपाटिया सत्त चेतनाधम्माव होन्ति । अभिज्झादयो तयो चेतनासम्पयुत्ता ।

कोट्ठासतो ति पटिपाटिया सत्त, मिच्छादिट्ठि चा ति इमे अट्ठ कम्मपथा एव होन्ति, नो मूलानि । अभिज्झाब्यापादा कम्मपथा चेव
5 मूलानि च । अभिज्झा हि मूलं पत्वा लोभो अकुसलमूलं होति । ब्यापादो दोसो अकुसलमूलं होति ।

आरम्मणतो ति पाणातिपातो जीवितिन्द्रियारम्मणतो सङ्खारारम्मणो होति । अदिन्नादानं सत्तारम्मणं वा सङ्खारारम्मणं वा, मिच्छाचारो फोट्ठब्बवसेन सङ्खारारम्मणो; "सत्तारम्मणो" तिपि
10 एके । मुसावादो सत्तारम्मणो वा सङ्खारारम्मणो वा, तथा पिसुणवाचा । फरुसवाचा सत्तारम्मणाव । सम्फप्पलापो दिट्ठसुतमुतविञ्ञात-
R. 1050 वसेन सत्तारम्मणो वा सङ्खारारम्मणो वा, तथा अभिज्झा । ब्यापादो सत्तारम्मणोव । मिच्छादिट्ठि तेभूमकधम्मवसेन सङ्खारारम्मणा ।

B. 233 **वेदनातो** ति पाणातिपातो दुक्खवेदनो होति । किञ्चापि हि
15 राजानो चोरं दिस्वा हसमानापि "गच्छथ नं घातेथा" ति वदन्ति, सन्निट्ठापकचेतना पन दुक्खसम्पयुत्ताव होति । अदिन्नादानं तिवेदनं । मिच्छाचारो सुखमज्झत्तवसेन द्विवेदनो । सन्निट्ठापकचित्ते पन मज्झत्तवेदनो न होति । मुसावादो तिवेदनो । तथा पिसुणावाचा । फरुसावाचा दुक्खवेदना । सम्फप्पलापो तिवेदनो । अभिज्झा
20 सुखमज्झत्तवसेन द्विवेदना तथा मिच्छादिट्ठि ब्यापादो दुक्खवेदनो । **मूलतो** ति पाणातिपातो दोसमोहवसेन द्विमूलको होति । अदिन्नादानं दोसमोहवसेन वा लोभमोहवसेन वा । मिच्छाचारो लोभमोहवसेन । मुसावादो दोसमोहवसेन वा लोभमोहवसेन वा तथा पिसुणावाचा सम्फप्पलापो च । फरुसावाचा दोसमोहवसेन ।

25 अभिज्झा मोहवसेन एकमूला तथा ब्यापादो । मिच्छादिट्ठि लोभमोहवसेन द्विमूला ति ।

३४. कुसलकम्मपथदसकवण्णना

पाणातिपाता वेरमणि-आदीनि समादानसम्पत्तसमुच्छेदविरति-वसेन वेदितब्बानि।

धम्मतो पन एतेसुपि पटिपाटिया सत्त चेतनापि वत्तन्ति विरतियोपि। अन्ते तयो चेतनासम्पयुत्ताव।

कोट्ठासतो ति पटिपाटिया सत्त कम्मपथा एव, नो मूलानि। 5 अन्ते तयो कम्मपथा चेव मूलानि च। अनभिज्झा हि मूलं[1] पत्वा अलोभो कुसलमूलं होति। अब्यापादो अदोसो कुसलमूलं। सम्मादिट्ठि अमोहो कुसलमूलं।

आरम्मणतो ति पाणातिपातादीनं आरम्मणानेव एतेसं आरम्मणानि। वीतिक्कमितब्बतोयेव हि वेरमणी नाम होति। यथा 10 पन निब्बानारम्मणो अरियमग्गो किलेसे पजहति, एवं जीवितिन्द्रियादिआरम्मणापेते[2] कम्मपथा पाणातिपातादीनि दुस्सील्यानि पजहन्ती ति वेदितब्बा।

वेदनातो ति सब्बे सुखवेदना होन्ति मज्झत्तवेदना वा। कुसलं B. 234 पत्वा हि दुक्खवेदना नाम नत्थि। 15

मूलतो ति पटिपाटिया सत्त ञाणसम्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स अलोभअदोसअमोहवसेन तिमूलानि होन्ति, ञाणविप्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स द्विमूलानि। अनभिज्झा ञाणसम्पयुत्तचित्तेन विरमन्तस्स द्विमूला[3], ञाणविप्पयुत्तचित्तेन एकमूला। अलोभो पन अत्तनाव अत्तनो मूलं न होति। अब्यापादेपि एसेव नयो। सम्मादिट्ठि अलोभादोसवसेन 20 R.1051 द्विमूला एवा ति।

१. कम्मपथं—रो०। २. जीवितिन्द्रियादिपेते—रो०।
३. ०होति—रो०।

३५. अरियवासदसकवण्णना

५३. **अरियवासा** (दी० नि० ३.२०७) ति अरिया एव वसिंसु वसन्ति वसिस्सन्ति एतेसू ति[१] अरियवासा। **पञ्चङ्गविप्पहीनो** ति पञ्चहि अङ्गेहि विप्पयुत्तोव हुत्वा खीणासवो अवसि वसति वसिस्सती ति तस्मा अयं पञ्चङ्गविप्पहीनता[२], अरियस्स वासत्ता अरियवासो ति 5 वुत्तो। एस नयो सब्बत्थ।

एवं खो आवुसो भिक्खु छळङ्गसमन्नागतो होती ति छळङ्गुपेक्खाय[३] समन्नागतो होति। छळङ्गुपेक्खा नाम[४] केति ? ञाणादयो। "ञाणं" ति वुत्ते किरियतो चत्तारि ञाणसम्पयुत्तचित्तानि लब्भन्ति। "सततविहारो" ति वुत्ते अट्ठ महाचित्तानि। "रज्जनदुस्सनं नत्थी" 10 ति वुत्ते दस चित्तानि लब्भन्ति। सोमनस्सं आसेवनवसेन लब्भति।

सतारक्खेन चेतसा ति खीणासवस्स हि तीसु द्वारेसु सब्बकालं सति आरक्खकिच्चं साधेति। तेनेवस्स "चरतो च तिट्ठतो च सुत्तस्स च जागरस्स च सततं समितं ञाणदस्सनं पच्चुपट्ठितं होती" ति वुच्चति।

15 **पुथुसमणब्राह्मणानं** ति बहूनं समणब्राह्मणानं। एत्थ च **समणा** ति पब्बज्जुपगता। **ब्राह्मणा** ति भोवादिनो। **पुथुपच्चेकसच्चानी** ति बहूनि पाटेक्कसच्चानि[५], इदमेव दस्सनं सच्चं, इदमेव दस्सनं सच्चं ति एवं पाटियेक्कं गहितानि बहूनि सच्चानी ति अत्थो। **नुन्नानी** ति निहतानि। **पणुन्नानी** ति सुट्ठु निहतानि। **चत्तानी** ति विस्सट्ठानि। B. 235 20 **वन्तानी** ति वमितानि। **मुत्तानी** ति छिन्नबन्धनानि कतानि। **पहीनानी** ति पजहितानि। **पटिनिस्सट्ठानी** ति यथा न पुन चित्तं आरोहन्ति, एवं पटिनिस्सज्जितानि[६]। सब्बानेव तानि गहितग्गहणस्स विस्सट्ठभाववेवचनानि।

१. रो० पोत्थके नत्थि।
२. ० हीनो—रो०।
३. छळुपेक्खाय—रो०।
४. ० धम्मा—रो०।
५. पाटियेकसच्चानि—रो०।
६. पटिविस्सज्जितानि—रो०।

समवयसट्ठेसनो ति एत्थ अवया ति अनूना । **सट्ठा** ति विस्सट्ठा । सम्मा अवया सट्ठा एसना अस्सा ति **समवयसट्ठेसनो** । सम्मा विस्सट्ठसब्बएसनो ति अत्थो । **रागा चित्तं विमुत्तं** तिआदीहि मग्गस्स किच्चनिप्फत्ति कथिता । **रागो मे पहीनो** तिआदीहि पच्चवेक्खणाय फलं कथितं । R. 1052 5

३६. असेक्खधम्मदसकवण्णना

५४. **असेक्खा सम्मादिट्ठी** (दी० नि० ३.२०९) तिआदयो सब्बेपि फलसम्पयुत्तधम्मा एव । एत्थ च सम्मादिट्ठि, सम्माञाणं ति द्वीसु ठानेसु पञ्ञाव कथिता । **सम्माविमुत्ती** ति इमिना[1] पदेन वुत्तावसेसा । फलसमापत्तिधम्मा सङ्गहिता ति वेदितब्बा । "इमे, खो, आवुसो" तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं । इति छन्नं दसकानं वसेन समसट्ठि पञ्हे कथेन्तो थेरो सामग्गिरसं दस्सेसी ति । 10

३७. पञ्हसमोधानवण्णना

५५. इध पन ठत्वा पञ्हा समोधानेतब्बा । इमस्मिं हि सुत्ते एककवसेन द्वे पञ्हा कथिता । दुकवसेन सत्तति, तिकवसेन असीतिसतं, चतुक्कवसेन द्वेसतानि, पञ्चकवसेन तिंससतं, छक्कवसेन बात्तिंससतं, सत्तकवसेन अट्ठनवुति, अट्ठकवसेन अट्ठासीति, नवकवसेन चतुपण्णास, दसकवसेन समसट्ठी ति एवं सहस्सं चुद्दस पञ्हा कथिता । 15

इमञ्हि सुत्तन्तं ठपेत्वा तेपिटके बुद्धवचने अञ्ञो सुत्तन्तो एवं बहुपञ्हपटिमण्डितो नत्थि । भगवा इमं सुत्तन्तं आदितो पट्ठाय सकलं सुत्वा चिन्तेसि — "धम्मसेनापति सारिपुत्तो बुद्धबलं दीपेत्वा अप्पटिवत्तियं सीहनादं नदति । सावकभासितो ति वुत्ते ओकप्पना न होति, जिनभासितो ति वुत्ते होति, तस्मा जिनभासितं कत्वा B. 236 20

[1] ० पन—रो० ।

देवमनुस्सानं ओकप्पनं इमस्मिं सुत्तन्ते उप्पादेस्सामी'' ति । ततो वुट्ठाय साधुकारं अदासि । तेन वुत्तं ''अथ खो भगवा वुट्ठहित्वा आयस्मन्तं सारिपुत्तं आमन्तेसि—''साधु, साधु, सारिपुत्त, साधु, खो त्वं सारिपुत्त, भिक्खूनं सङ्गीतिपरियायं अभासी'' ति ।

5 तत्थ सङ्गीतिपरियायं ति सामग्गिया कारणं । इदं वुत्तं होति— ''साधु, खो त्वं सारिपुत्त, मम सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन संसन्दित्वा भिक्खूनं सामग्गिरसं[1] अभासी'' ति । समनुञ्ञो सत्था अहोसी ति अनुमोदनेन समनुञ्ञो अहोसि । एत्तकेन अयं सुत्तन्तो जिनभासितो नाम जातो । देसनापरियोसाने इमं सुत्तन्तं मनसिकरोन्ता ते भिक्खू अरहत्तं 10 पापुणिंसू ति ।

सङ्गीतिसुत्तवण्णना निट्ठिता ।

—०—

१. सामग्गिकारणं—रो० ।

(११) दसुत्तरसुत्तवण्णना

B. 237

१. निदानवण्णना

R. 1053

१. एवं मे सुतं (दी० नि० ३.२१०) ति दसुत्तरसुत्तं। तत्रायं अपुब्बपदवण्णना। आवुसो भिक्खवे ति सावकानं आलपनमेतं। बुद्धा हि परिसं आमन्तयमाना 'भिक्खवे' ति वदन्ति। सावका सत्थारं उच्चट्ठाने ठपेस्सामा ति सत्थु आलपनेन अनालपित्वा आवुसो ति आलपन्ति। ते भिक्खू ति ते धम्मसेनापति परिवारेत्वा निसिन्ना 5 भिक्खू। के पन ते भिक्खू ति ? अनिबद्धवासा दिसागमनीया भिक्खू। बुद्धकाले द्वे वारे भिक्खू सन्निपतन्ति—उपकट्ठवस्सूपनायिककाले च पवारणकाले च। उपकट्ठवस्सूपनायिकाय दसपि वीसतिपि तिंसम्पि चत्तालीसम्पि पञ्ञासम्पि भिक्खू वग्गा वग्गा कम्मट्ठानत्थाय आगच्छन्ति। भगवा तेहि सद्धिं सम्मोदित्वा कस्मा, भिक्खवे, 10 उपकट्ठाय वस्सूपनायिकाय विचरथा ति पुच्छति। अथ ते "भगवा कम्मट्ठानत्थं आगतम्ह, कम्मट्ठानं नो देथा" ति याचन्ति।

सत्था तेसं चरियवसेन रागचरितस्स असुभकम्मट्ठानं देति, दोसचरितस्स मेत्ताकम्मट्ठानं, मोहचरितस्स उद्देसो परिपुच्छा— 'कालेन धम्मस्सवनं, कालेन धम्मसाकच्छा इदं तुम्हं सप्पायं' ति 15 आचिक्खति। वितक्कचरितस्स आनापानस्सतिकम्मट्ठानं देति। सद्धाचरितस्स पसादनीयसुत्तन्ते बुद्धसुबोधिं धम्मसुधम्मतं संघसुप्पटिपत्तिञ्च पकासेति। ञाणचरितस्स अनिच्चतादिपटिसंयुत्ते गम्भीरे सुत्तन्ते कथेति। ते कम्मट्ठानं गहेत्वा सचे सप्पायं होति, तत्थेव वसन्ति; नो चे होति, सप्पायं सेनासनं पुच्छित्वा गच्छन्ति। ते तत्थ 20 वसन्ता तेमासिकं पटिपदं गहेत्वा घटेत्वा[१] वायमन्ता सोतापन्नापि होन्ति सकदागामिनो पि अनागामिनो पि अरहन्तो पि।

१. रो० पोत्थके नत्थि।

ततो वुत्थवस्सा पवारेत्वा सत्थु सन्तिकं गन्त्वा "भगवा अहं तुम्हाकं सन्तिके कम्मट्ठानं गहेत्वा सोतापत्तिफलं पत्तो ... पे० ... अहं अग्गफलं अरहत्तं'' ति पटिलद्धगुणं आरोचेन्ति। तत्थ इमे भिक्खू B. 238 उपकट्ठाय वस्सूपनायिकाय आगता। एवं आगन्त्वा गच्छन्ते पन भिक्खू 5 भगवा अग्गसावकानं सन्तिकं पेसेति, यथाह "अपलोकेथ, पन भिक्खवे, सारिपुत्तमोग्गल्लाने'' ति। भिक्खू च वदन्ति "किं नु खो मयं, भन्ते, अपलोकेम सारिपुत्तमोग्गल्लाने'' ति। अथ ने भगवा तेसं दस्सने उय्योजेसि। "सेवथ, भिक्खवे, सारिपुत्तमोग्गल्लाने, भजथ, भिक्खवे, सारिपुत्तमोग्गल्लाने। पण्डिता भिक्खू अनुग्गाहका सब्रह्मचारीनं। 10 सेय्यथापि, भिक्खवे, जनेता[1] एवं सारिपुत्तो। सेय्यथापि जातस्स आपादेता एवं मोग्गल्लानो। सारिपुत्तो, भिक्खवे, सोतापत्तिफले विनेति, मोग्गल्लानो उत्तमत्थे'' (म० नि० ३.२३३) ति।

तदापि भगवा इमेहि भिक्खूहि सद्धिं पटिसन्थारं कत्वा तेसं भिक्खूनं आसयं उपपरिक्खन्तो "इमे भिक्खू सावकविनेय्या'' ति अद्दस। 15 सावकविनेय्या नाम ये बुद्धानम्पि धम्मदेसनाय बुज्झन्ति सावकानम्पि। बुद्धविनेय्या पन सावका बोधेतुं न सक्कोन्ति। सावकविनेय्यभावं पन एतेसं ञत्वा कतरस्स भिक्खुनो देसनाय बुज्झिस्सन्ती ति[2] ओलोकेन्तो सारिपुत्तस्सा ति दिस्वा थेरस्स सन्तिकं पेसेसि। थेरो ते भिक्खू पुच्छि "सत्थु सन्तिकं गतत्थ आवुसो'' ति। "आम, गतम्ह सत्थारा पन 20 अम्हे[3] तुम्हाकं सन्तिकं पेसिता'' ति। ततो थेरो "इमे भिक्खू मय्हं देसनाय बुज्झिस्सन्ति, कीदिसी नु खो तेसं देसना वट्टती'' ति चिन्तेन्तो "इमे भिक्खू समग्गारामा, सामग्गिरसस्स दीपिका नेसं देसना वट्टती'' ति सन्निट्ठानं कत्वा तथारूपं देसनं देसेतुकामो दसुत्तरं पवक्खामी तिआदिमाह। तत्थ दसधा[4] मातिकं[5] ठपेत्वा विभत्तो ति दसुत्तरो, 25 एककतो पट्ठाय याव दसका गतो ति पि दसुत्तरो, एकेकस्मिं पब्बे दस

१. जनेत्ति—रो०। २. बुज्झन्ति—रो०।
३. रो० पोत्थके नत्थि। ४. दस दस—रो०।
५. मातिका—रो०।

दस पञ्हा विसेसिता ति पि दस्सुत्तरो, तं **दस्सुत्तरं**। **पवक्खामी** ति कथेस्सामि। **धम्मं** ति सुत्तं। **निब्बानपत्तिया** ति निब्बानपटि-लाभत्थाय। **दुक्खस्सन्तकिरियाया** ति सकलस्स वट्टदुक्खस्स परियन्त-करणत्थं। **सब्बगन्थप्पमोचनं** ति अभिज्झाकायगन्थादीनं सब्बगन्थानं पमोचनं[१]। 5

इति थेरो देसनं उच्चं करोन्तो भिक्खूनं तत्थ पेमं जनेन्तो एवमेतं उग्गहेतब्बं परियापुणितब्बं धारेतब्बं वाचेतब्बं मञ्ञिस्सन्ती ति चतूहि पदेहि वण्णं कथेसि—"एकायनो अयं, भिक्खवे, मग्गो" तिआदिना नयेन तेस तेसं सुत्तानं भगवा विय। R. 1055

२. एकधम्मवण्णना

B. 239

२. तत्थ **बहुकारो** ति बहुपकारो। **भावेतब्बो** ति वड्ढेतब्बो। 10 **परिञ्ञेय्यो** ति तीहि परिञ्ञाहि परिजानितब्बो। **पहातब्बो** ति पहानानुपस्सनाय पजहितब्बो। **हानभागियो** अपायगामिपरिहानाय संवत्तनको। **विसेसभागियो** ति विसेसगामिविसेसाय संवत्तनको। **दुप्पटिविज्झा** ति दुप्पचक्खकरो। **उप्पादेतब्बो** ति निप्फादेतब्बो। **अभिञ्ञेय्यो** ति ञातपरिञ्ञाय अभिजानितब्बो। **सच्छिकातब्बो** ति 15 पच्चक्खं कातब्बो।

एवं सब्बत्थ मातिकासु अत्थो वेदितब्बो। इति आयस्मासारिपुत्तो यथा नाम दक्खो वेळुकारो सम्मुखीभूतं वेळुं[२] छेत्वा निग्गण्ठिं कत्वा दसधा खण्डे कत्वा एकमेकं खण्डं हीरं हीरं करोन्तो फालेति, एवमेव तेसं भिक्खूनं सप्पायं देसनं उपपरिक्खित्वा दसधा मातिकं ठपेत्वा 20 एकेककोट्ठासे एकेकपदं[३] विभजन्तो "कतमो एको धम्मो बहुकारो, अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसू ति" तिआदिना नयेन देसनं वित्थारेतुं आरद्धो।

१. मोचनं—रो०। २. वेळुं मूले—रो०।
३. एकेकपदे—रो०।

तत्थ **अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसू** ति सब्बत्थकं उपकारकं अप्पमादं कथेसि। अयञ्हि अप्पमादो नाम सीलपूरणे, इन्द्रियसंवरे[1], भोजने मत्तञ्ञुताय, जागरियानुयोगे, सत्तसु सद्धम्मेसु, विपस्सनागब्भं गण्हापने, अत्थपटिसम्भिदादीसु, सीलक्खन्धादिपञ्चधम्मक्खन्धेसु, 5 ठानाट्ठानेसु, महाविहारसमापत्तियं, अरियसच्चेसु, सतिपट्ठानादीसु बोधिपक्खियेसु, विपस्सनाञाणादीसु अट्ठसु विज्जासू ति सब्बेसु अनवज्जट्ठेन कुसलेसु धम्मेसु बहूपकारो।

B. 240 तेनेव नं[2] भगवा "यावता, भिक्खवे, सत्ता अपदा वा ... पे० ... तथागतो तेसं अग्गमक्खायति। एवमेव, खो भिक्खवे, ये केचि 10 कुसला धम्मा, सब्बेते अप्पमादमूलका अप्पमादसमोसरणा, अप्पमादो तेसं धम्मानं अग्गमक्खायती" (सं० नि० ४.४१) R. 1056 तिआदिना नयेन हत्थिपदादीहि ओपम्मेहि ओपमेन्तो संयुत्तनिकाये अप्पमादवग्गे नानप्पकारं थोमेति[3]। तं सब्बं एकपदेनेव सङ्गहेत्वा थेरो अप्पमादो कुसलेसु धम्मेसू ति आह। धम्मपदे अप्पमादवग्गेना- 15 पिस्स बहूपकारता दीपेतब्बा। असोकवत्थुना पि दीपेतब्बा।

असोकराजा हि निग्रोधसामणेरस्स "अप्पमादो अमतपदं" ति गाथं सुत्वा एव "तिट्ठ, तात, मय्हं तया तेपिटकं बुद्धवचनं कथितं" ति सामणेरे पसीदित्वा चतुरासीतिविहारसहस्सानि कारेसि। इति थामसम्पन्नेन भिक्खुना अप्पमादस्स बहू पकारता तीहि पिटकेहि 20 दीपेत्वा कथेतब्बा। यंकिञ्चि सुत्तं वा गाथं वा अप्पमाददीपनत्थं आहरन्तो "अट्ठाने ठत्वा आहरसि, अतित्थेन पक्खन्दो" ति न वत्तब्बो। धम्मकथिकस्सेवेत्थ थामो च बलञ्च पमाणं।

कायगतासती ति आनापानं चतुइरियापथो सतिसम्पजञ्ञं द्वत्तिंसाकारो चतुधातुववत्थानं दस असुभा नव सिवथिका चुण्णक- 25 मनसिकारो केसादीसु चत्तारि रूपज्झानानी ति एत्थ उप्पन्नसतिया

१. ० संवरेन—रो०। २. रो० पोत्थके नत्थि।
३. थोमेसि—रो०।

एतं अधिवचनं। **सातसहगता** ति ठपेत्वा चतुत्थज्झानं अञ्ञत्थ सातसहगता होति सुखसम्पयुत्ता, तं सन्धायेतं वुत्तं।

सासवो उपादानियो ति आसवानञ्चेव उपादानानञ्च पच्चयभूतो। इति तेभूमकधम्ममेव नियमेति।

अस्मिमानो ति रूपादीसु अस्मी ति मानो। 5

अयोनिसो मनसिकारो ति अनिच्चे निच्चं तिआदिना नयेन पवत्तो उप्पथमनसिकारो। विपरियायेन **योनिसो मनसिकारो** वेदितब्बो।

आनन्तरिको चेतोसमाधी ति अञ्ञत्थ मग्गानन्तरं फलं B. 241 आनन्तरिको चेतोसमाधि नाम। इध पन विपस्सनानन्तरो मग्गो विपस्सनाय वा अनन्तरत्ता अत्तनो वा अनन्तरं फलदायकत्ता 10 आनन्तरिको चेतोसमाधी ति अधिप्पेतो।

अकुप्पं ञाणं ति अञ्ञत्थ फलपञ्ञा अकुप्पञाणं नाम। इध पच्चवेक्खणपञ्ञा अधिप्पेता।

आहारट्ठितिका ति पच्चयट्ठितिका। **अयं एको धम्मो** ति येन पच्चयेन तिट्ठन्ति, अयं एको धम्मो ञातपरिञ्ञाय अभिञ्ञेय्यो। 15

अकुप्पा चेतोविमुत्ती ति अरहत्तफलविमुत्ति। इमस्मिं वारे R. 1057 अभिञ्ञाय ञातपरिञ्ञा कथिता[1]। परिञ्ञाय तीरणपरिञ्ञा। पहातब्बसच्छिकातब्बेहि पहानपरिञ्ञा। **दुप्पटिविज्झो** ति एत्थ पन मग्गो कथितो। **सच्छिकातब्बो** ति फलं कथितं, मग्गो एकस्मिं येव पदे लब्भति। फलं पन अनेकेसुपि लब्भतियेव। 20

भूता ति सभावतो विज्जमाना। **तच्छा** ति यथावा। **तथा** ति तथा वुत्ता तथासभावा। **अवितथा** ति यथा वुत्ता न तथा न होन्ति। **अनञ्ञथा** ति वुत्तप्पकारतो न अञ्ञथा। **सम्मातथागतेन अभिसम्बुद्धा** ति तथागतेन बोधिपल्लङ्के निसीदित्वा हेतुना कारणेन सयमेव

१. ठिता—रो०।

अभिसम्बुद्धा ञाता विदिता सच्छिकता। इमिना थेरो "इमे धम्मा तथागतेन अभिसम्बुद्धा, अहं पन तुम्हाकं रञ्ञो[1] लेखवाचकसदिसो" ति जिनसुत्तं दस्सेन्तो ओकप्पनं जनेसि।

३. द्वेधम्मवण्णना

B. 242 ३. इमे द्वे धम्मा बहुकारा (दी० नि० ३.२११) ति इमे द्वे
5 सतिसम्पजञ्ञा धम्मा सीलपूरणादीसु अप्पमादो विय सब्बत्थ उपकारका हितावहा।

समथो च विपस्सना चा ति इमे द्वे सङ्गीतिसुत्ते लोकियलोकुत्तरा कथिता। इमस्मिं दसुत्तरसुत्ते पुब्बभागा कथिता।

सत्तानं संकिलेसाय सत्तानं विसुद्धिया ति अयोनिसो मनसिकारो
10 हेतु चेव पच्चयो च सत्तानं संकिलेसाय, योनिसो मनसिकारो विसुद्धिया, तथा दोवचस्सता पापमित्तता संकिलेसाय; सोवचस्सता कल्याणमित्तता विसुद्धिया, तथा तीणि अकुसलमूलानि; तीणि कुसलमूलानि; चत्तारो योगा चत्तारो विसंयोगा; पञ्च चेतोखिला पञ्चिन्द्रियानि; छ अगारवा छ गारवा; सत्त असद्धम्मा सत्त सद्धम्मा; अट्ठ कुसीतवत्थूनि
15 अट्ठ आरम्भवत्थूनि; नव आघातवत्थूनि नव आघातप्पटिविनया; दस अकुसलकम्मपथा दस कुसलकम्मपथा ति एवं पभेदा इमे द्वे धम्मा दुप्पटिविज्झाति वेदितब्बा।

सङ्खता धातू ति पच्चयेहि कता पञ्चक्खन्धा। असङ्खता धातू ति पच्चयेहि अकतं निब्बानं।

20 विज्जा च विमुत्ति चा ति एत्थ विज्जा ति तिस्सो विज्जा। विमुत्ती ति अरहत्तफलं।

R. 1058 इमस्मिं वारे अभिञ्ञादीनि एककसदिसानेव, उप्पादेतब्बपदे पन मग्गो कथितो, सच्छिकातब्बपदे फलं।

१. रो० पोत्थके नत्थि।

४. तयोधम्मवण्णना

४. **कामानमेतं निस्सरणं यदिदं नेक्खम्मं** (दी० नि० ३.२१२) ति एत्थ **नेक्खम्मं** ति अनागामिमग्गो अधिप्पेतो। सो हि सब्बसो कामानं निस्सरणं। **रूपानं निस्सरणं यदिदं आरुप्पं** ति एत्थ आरुप्पेपि अरहत्तमग्गो। पुन उप्पत्तिनिवारणतो सब्बसो रूपानं निस्सरणं[1] नाम। **निरोधो तस्स निस्सरणं** ति इध अरहत्तफलं निरोधो ति अधिप्पेतं। अरहत्तफलेन हि निब्बाने दिट्ठे पुन आयतिं सब्बसङ्खारा न होन्ती ति अरहत्तं सङ्खतनिरोधस्स पच्चयत्ता निरोधो ति वुत्तं। 5 B. 243

अतीतंसे ञाणं ति अतीतंसारम्मणं ञाणं इतरेसुपि एसेव नयो।

इमस्मिम्पि वारे अभिञ्ञादयो एकसदिसाव। दुप्पटिविज्झपदे पन मग्गो कथितो, सच्छिकातब्बे फलं। 10

५. चत्तारोधम्मवण्णना

५. **चत्तारि चक्कानी** (दी० नि० ३.२१३) ति एत्थ **चक्कं** नाम दारुचक्कं, रतनचक्कं, धम्मचक्कं, इरियापथचक्कं, सम्पत्तिचक्कं ति पञ्चविधं। तत्थ "यं पनिदं सम्म, रथकार, चक्कं छहि मासेहि निट्ठितं, छारत्तूनेही" (अं० नि० १.१०२) ति इदं दारुचक्कं। "पितरा पवत्तितं चक्कं अनुप्पवत्तेती" (अं० नि० २.४०२) ति इदं रतनचक्कं। मया "पवत्तितं चक्कं" (म० नि० २.४००) ति इदं धम्मचक्कं। "चतुचक्कं नवद्वारं" (सं० नि० १.१६) ति इदं इरियापथचक्कं। "चत्तारिमानि, भिक्खवे, चक्कानि, येहि समन्नागतानं देवमनुस्सानं चतुचक्कं पवत्तती" (अं० नि० २.३५) ति इदं सम्पत्तिचक्कं। इधापि एतदेव अधिप्पेतं। 15 20

पतिरूपदेसवासो ति यत्थ चतस्सो परिसा सन्दिस्सन्ति, एवरूपे अनुच्छविके देसे वासो। **सप्पुरिसूपनिस्सयो** ति बुद्धादीनं सप्पुरिसानं अवस्सयनं सेवनं भजनं। **अत्तसम्मापणिधी** ति अत्तनो सम्मा ठपनं,

१. निवारणं—रो०।

सचे पन पुब्बे अस्सद्धादीहि समन्नागतो होति, तानि पहाय सद्धादीसु पतिट्ठापनं। पुब्बे च कतपुञ्ञता ति पुब्बे उपचितकुसलता। इदमेवेत्थ पमाणं। येन हि ञाणसम्पयुत्तचित्तेन कुसलं कतं होति, तदेव कुसलं तं पुरिसं पतिरूपदेसे उपनेति, सप्पुरिसे भजापेसि। सो
R. 1059
B. 244
5 एव च पुग्गलो अत्तानं सम्मा ठपेति। चतूसु आहारेसु पठमो लोकियोव। सेसा[1] पन तयो[2] सङ्गीतिसुत्ते लोकियलोकुत्तरमिस्सका कथिता। इध पुब्बभागे लोकिया।

कामयोगविसंयोगादयो अनागामिमग्गादिवसेन वेदितब्बा।

हानभागियादीसु पठमस्स झानस्स लाभी कामसहगता सञ्ञा-
10 मनसिकारा समुदाचरन्ति हानभागियो समाधि। तदनुधम्मता सति सन्तिट्ठति ठितिभागियो समाधि। वितक्कसहगता[3] सञ्ञा मनसिकारा समुदाचरन्ति विसेसभागियो समाधि। निब्बिदासहगता सञ्ञा-मनसिकारा समुदाचरन्ति विरागूपसञ्हितो निब्बेधभागियो समाधी ति इमिना नयेन सब्बसमापत्तियो वित्थारेत्वा अत्थो वेदितब्बो।
15 विसुद्धिमग्गे पनस्स विनिच्छयकथा कथिता व।

इमस्मिम्पि वारे अभिञ्ञादीनि[4] एककसदिसानेव[5]। अभिञ्ञापदे पनेत्थ मग्गो कथितो। सच्छिकातब्बपदे फलं।

६. पञ्चधम्मवण्णना

६. पीतिफरणतादीसु पीतिं फरमाना उप्पज्जती ति "द्वीसु झानेसु पञ्ञा पीतिफरणता नाम। सुखं फरमानं उप्पज्जती ति तीसु
20 झानेसु पञ्ञा सुखफरणता (दी० नि० ३.२१४) नाम। परेसं चेतो फरमाना उप्पज्जती ति चेतोपरियपञ्ञा चेतोफरणता नाम। आलोकफरणे उप्पज्जती ति दिब्बचक्खुपञ्ञा आलोकफरणता नाम।

१. अवसेसा—रो०।
२. तीणि—रो०।
३. अधितक्क०—रो०।
४. अभिञ्ञादयो—रो०।
५. एकसदिसाव—रो०।

पच्चवेक्खणञाणं पच्चवेक्खणनिमित्तं नाम। वुत्तम्पि चेतं "द्वीसु झानेसु पञ्ञा पीतिफरणता, तीसु झानेसु पञ्ञा सुखफरणता। परचित्ते पञ्ञा चेतोफरणता, दिब्बचक्खु आलोकफरणता। तम्हा तम्हा समाधिम्हा वुट्ठितस्स पच्चवेक्खणञाणं पच्चवेक्खणनिमित्तं" (विभं० ३९६) ति। 5

तत्थ पीतिफरणता सुखफरणता द्वे पादा विय, चेतो फरणता आलोकफरणता द्वे हत्था विय; अभिञ्ञापादकज्झानं मज्झिम-कायोविय, पच्चवेक्खणनिमित्तं सीसं[1] विय। इति आयस्मा सारिपुत्त- B. 245 त्थेरो पञ्चङ्गिकं सम्मासमाधिं अङ्गपच्चङ्गसम्पन्नं पुरिसं विय कत्वा दस्सेसि। 10

अयं समाधि पच्चुप्पन्नसुखो चे वा तिआदीसु अरहत्तफलसमाधि अधिप्पेतो। सो हि अप्पितप्पितक्खणे सुखत्ता पच्चुप्पन्नसुखो। पुरिमो पुरिमो पच्छिमस्स पच्छिमस्स समाधिसुखस्स पच्चयत्ता आयतिं R. 1060 सुखविपाको।

किलेसेहि आरकत्ता[2] अरियो। कामामिसवट्टामिसलोकामिसानं 15 अभावा निरामिसो[3]। बुद्धादीहि महापुरिसेहि सेवितत्ता पुरिससेवितो। अङ्गसन्तताय आरम्मणसन्तताय सब्बकिलेसदरथसन्तताय च सन्तो। अतप्पनीयट्ठेन पणीतो। किलेसपटिप्पस्सद्धिया लद्धत्ता किलेस-पटिप्पस्सद्धिभावं वा लद्धत्ता पटिप्पस्सद्धलद्धो। पटिप्पस्सद्धं पटिप्पस्सद्धी ति हि इदं अत्थतो एकं। पटिप्पस्सद्धकिलेसेन वा अरहता लद्धत्ता 20 पटिप्पस्सद्धलद्धो। एकोदिभावेन अधिगतत्ता एकोदिभावमेव वा अधिगतत्ता एकोदिभावाधिगतो। अप्पगुणसासवसमाधि विय ससङ्खारेन सप्पयोगेन चित्तेन पच्चनीकधम्मेनिग्गय्ह[4] किलेसे[5] वारेत्वा अनधिगतत्ता[5] नचसङ्खारनिग्गय्हवारितगतो। तञ्च समाधिं समापज्जन्तो

१. सेसं—रो०।
२. आरहत्ता—रो०।
३. ०बुद्धो—रो०।
४. गतत्ता—रो०।
५-५. रो० पोत्थके नत्थि।

ततो वा वुट्ठहन्तो सतिवेपुल्लपत्तत्ता। सतोव समापज्जति सतो वुट्ठहति। यथापरिच्छिन्नकालवसेन वा सतो समापज्जति सतो वुट्ठहति। तस्मा यदेत्थ "अयं समाधि पच्चुप्पन्नसुखो चेव आयतिञ्च सुखविपाको" ति एवं पच्चवेक्खमानस्स पच्चत्तंयेव अपरप्पच्चयं ञाणं उप्पज्जति, तं 5 एकमङ्गं। एस नयो सेसेसुपि। एवमिमेहि पञ्चहि पच्चवेक्खणञाणेहि अयं समाधि "पञ्चञाणिको सम्मासमाधी" ति वुत्तो।

इमस्मिं वारे विसेसभागियपदे मग्गो कथितो। सच्छिकातब्बपदे फलं सेसं पुरिमसदिसमेव।

७. छधम्मवण्णना

७. छक्केसु (दी० नि० ३.२१८) सब्बं अत्तानत्थमेव। 10 दुप्पटिविज्झपदे पनेत्थ मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसं।

८. सत्तधम्मवण्णना

B. 246 ८. सम्मप्पञ्ञाय सुदिट्ठा होन्ती (दी० नि० ३.२२२) ति हेतुना नयेन विपस्सनाञाणेन सुदिट्ठा होन्ति। कामा ति वत्थुकामा च किलेसकामा च, द्वेपि सपरिळाहट्ठेन अङ्गारकासु विय सुदिट्ठा होन्ति। विवेकनिन्नं ति निब्बाननिन्नं। पोणं पब्भारं ति निन्नस्सेतं 15 वेवचनं। ब्यन्तीभूतं ति नियतिभूतं[1]। नित्तण्हं ति अत्थो। कुतो? सब्बसो आसवट्ठानीयेहि धम्मेहि[2] तेभूमकधम्मेही ति अत्थो। इध भावेतब्बपदे मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसमेव।

९. अट्ठधम्मवण्णना

९. आदिब्रह्मचरियिकाय पञ्ञाय (दी० नि० ३.२२५) ति सिक्खत्तयसङ्गहस्स मग्गब्रह्मचरियस्स आदिभूताय पुब्बभागे R.1061 20 तरुणसमथविपस्सनापञ्ञाय। अट्ठङ्गिकस्स वा मग्गस्स आदिभूताय

१. विगतनियन्ति भूतं—रो०। २. ०सब्बेहि—रो०।

सम्मादिट्ठिपञ्ञाय। तिब्बं ति बलवं। हिरोत्तप्पं ति हिरी च ओत्तप्पञ्च। पेमं ति गेहस्सितपेमं। गारवो ति गरुचित्तभावो। गरुभावनीयञ्हि उपनिस्साय विहरतो किलेसा नुप्पज्जन्ति ओवादानुसासनिं लभति। तस्मा तं निस्साय विहारो पञ्ञापटिलाभस्स पच्चयो होति। 5

अक्खणेसु यस्मा पेता असुरानं आवाहनं गच्छन्ति, विवाहनं[1] गच्छन्ति[1], तस्मा पेत्तिविसयेनेव असुरकायो गहितो ति वेदितब्बो।

अप्पिच्छस्सा ति एत्थ पच्चयअप्पिच्छो, अधिगमअप्पिच्छो, परियत्तिअप्पिच्छो, धुतङ्गअप्पिच्छो ति चत्तारो अप्पिच्छा। तत्थ पच्चयअप्पिच्छो बहुं देन्ते अप्पं गण्हाति, अप्पं देन्ते अप्पतरं वा 10 गण्हाति, न वा गण्हाति, न अनवसेसगाही होति। अधिगमअप्पिच्छो मज्झन्तिकत्थेरो विय अत्तनो अधिगमं अञ्ञेसं जानितुं न देति। परियत्तिअप्पिच्छो तेपिटकोपि समानो न बहुस्सुतभावं जानापेतुकामो होति साकेततिस्सत्थेरो विय। धुतङ्गअप्पिच्छो धुतङ्गपरिहरणभावं अञ्ञेसं जानितुं न देति, द्वेभातिकत्थेरेसु जेट्ठकत्थेरो विय। वत्थु 15 विसुद्धिमग्गे कथितं। अयं धम्मो ति एवं सन्तगुणनिगूहनेन च पच्चयपटिग्गहणे मत्तञ्ञुताय च अप्पिच्छस्स पुग्गलस्स अयं B. 247 नवलोकुत्तरधम्मो सम्पज्जति, नो महिच्छस्स। एवं सब्बत्थ योजेतब्बं।

सन्तुट्ठस्सा ति चतूसु पच्चयेसु तीहि सन्तोसेहि सन्तुट्ठस्स। 20 पविवित्तस्सा ति कायचित्तउपधिविवेकेहि विवित्तस्स। तत्थ कायविवेको नाम गणसङ्गणिकं विनोदेत्वा अट्ठआरम्भवत्थुवसेन एकीभावो। एकीभावमत्तेन पन कम्मं न निप्फज्जती ति कसिणपरिकम्मं कत्वा अट्ठ समापत्तियो निब्बत्तेति, अयं चित्तविवेको नाम। समापत्तिमत्तेनेव कम्मं न निप्फज्जती ति झानं पादकं कत्वा सङ्खारे सम्मसित्वा सह 25 पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पापुणाति, अयं उपधिविवेको नाम। तेनाह

१-१. रो० पोत्थके नत्थि।

भगवा—"कायविवेको च विवेकट्ठकायानं नेक्खम्माभिरतानं। चित्तविवेको च परिसुद्धचित्तानं परमवोदानप्पत्तानं। उपधिविवेको च निरुपधीनं पुग्गलानं विसङ्खारगतानं" (म०निद्दे० ११७) ति।

R. 1062 सङ्गणिकारामस्सा ति गणसङ्गणिकाय चेव किलेससङ्गणिकाय
5 च रतस्स। आरद्धवीरियस्सा ति कायिकचेतसिकवीरियवसेन आरद्धवीरियस्स। उपट्ठितसतिस्सा ति चतुसतिपट्ठानवसेन उपट्ठितसतिस्स। समाहितस्सा ति एकग्गचित्तस्स। पञ्ञवतो ति कम्मस्सकतपञ्ञाय पञ्ञवतो। निप्पपञ्चस्सा ति विगतमानतण्हा-दिट्ठिपपञ्चस्स।

10 इध भावेतब्बपदे मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसमेव।

१०. नवधम्मवण्णना

१०. सीलविसुद्धी (दी०नि०३.२३३) ति विसुद्धिं पापेतुं समत्थं चतुपारिसुद्धिसीलं। पारिसुद्धिपधानियङ्गं ति परिसुद्धभावस्स पधानङ्गं। चित्तविसुद्धी ति विपस्सनाय पदट्ठानभूता अट्ठ पगुणसमा-पत्तियो। दिट्ठिविसुद्धी ति सपच्चयनामरूपदस्सनं। कङ्खावितरणविसुद्धी
15 ति पच्चयाकारञाणं। अद्धत्तयेपि हि पच्चयवसेनेव धम्मा पवत्तन्ती ति पस्सतो कङ्खं वितरति। मग्गामग्गञाणदस्सनविसुद्धी ति ओभासादयो न मग्गो, वीथिप्पटिपन्नं उदयब्बयञाणं मग्गोति एवं मग्गामग्गे ञाणं। पटिपदाञाणदस्सनविसुद्धी ति रथविनीते वुट्ठानगामिनि विपस्सना कथिता, इध तरुणविपस्सना। ञाणदस्सनविसुद्धी ति
20 रथविनीते मग्गो कथितो, इध वुट्ठानगामिनिविपस्सना। एता पन
B. 248 सत्तपि विसुद्धियो वित्थारेन विसुद्धिमग्गे कथिता। पञ्ञा ति अरहत्तफलपञ्ञा। विमुत्तिपि अरहत्तफलविमुत्तियेव।

धातुनानत्तं पटिच्च उप्पज्जति फस्सनानत्तं ति चक्खादिधातुनानत्तं पटिच्च चक्खुसम्फस्सादिनानत्तं उप्पज्जती ति अत्थो। फस्सनानत्तं
R.1063 25 पटिच्चा ति चक्खुसम्फस्सादिनानत्तं पटिच्च। वेदनानानत्तं ति

चक्खुसम्फस्सजादिवेदनानानत्तं । सञ्ञानानत्तं पटिच्चा ति कामसञ्ञादिनानत्तं पटिच्च । सङ्कप्पनानत्तं ति कामसङ्कप्पादिनानत्तं । सङ्कप्पनानत्तं पटिच्च उप्पज्जति छन्दनानत्तं ति सङ्कप्पनानत्तताय रूपे छन्दो सद्दे छन्दो ति एवं छन्दनानत्तं उप्पज्जति । परिळाहनानत्तं ति छन्दनानत्तताय रूपपरिळाहो सद्दपरिळाहो ति एवं परिळाहनानत्तं 5 उप्पज्जति । परियेसनानानत्तं ति परिळाहनानत्तताय रूपपरियेसनादिनानत्तं उप्पज्जति । लाभनानत्तं ति परियेसनानानत्तताय रूपपटिलाभादिनानत्तं उप्पज्जति ।

सञ्ञासु मरणसञ्ञा ति मरणानुपस्सनाञाणे सञ्ञा । आहारेपटिकूलसञ्ञा ति आहारं परिग्गण्हन्तस्स उप्पन्नसञ्ञा । 10 सब्बलोकेअनभिरतिसञ्ञा ति सब्बस्मिं वट्टे उक्कण्ठन्तस्स उप्पन्नसञ्ञा । सेसा हेट्ठा कथिता एव । इध बहुकारपदे मग्गो कथितो । सेसं पुरिमसदिसमेव ।

११. दसधम्मवण्णना

११. निज्जरवत्थूनी (दी० नि० २.२३६) ति निज्जरकारणानि । मिच्छादिट्ठि निज्जिण्णा होती ति अयं हेट्ठा विपस्सनायपि निज्जिण्णा 15 एव पहीना । कस्मा पुन गहिता ति असमुच्छिन्नता । विपस्सनाय हि किञ्चापि जिण्णा, न पन समुच्छिन्ना, मग्गो पन उप्पज्जित्वा तं समुच्छिन्दति, न पुन वुट्ठातुं देति । तस्मा पुन गहिता । एवं सब्बपदेसु नयो नेतब्बो ।

एत्थ च सम्मादिट्ठिपच्चया चतुसट्ठि धम्मा भावनापारिपूरिं 20 गच्छन्ति । कतमे चतुसट्ठि ? सोतापत्तिमग्गक्खणे अधिमोक्खट्ठेन सद्धिन्द्रियं परिपूरेति, पग्गहट्ठेन वीरियिन्द्रियं परिपूरेति, अनुस्सरणट्ठेन[1] सतिन्द्रियं परिपूरेति, अविक्खेपट्ठेन समाधिन्द्रियं परिपूरेति दस्सनट्ठेन पञ्ञिन्द्रियं परिपूरेति, विजाननट्ठेन मनिन्द्रियं, अभिनन्दनट्ठेन B. 249

१. उपट्ठानट्ठेन—रो० ।

सोमनस्सिन्द्रियं, पवत्तसन्ततिअधिपतेय्यट्ठेन जीवितिन्द्रियं परिपूरेति ...पे०...अरहत्तफलक्खणे अधिमोक्खट्ठेन सद्धिन्द्रियं, पवत्तसन्तति-
R. 1064 अधिपतेय्यट्ठेन जीवितिन्द्रियं परिपूरेती ति एवं चतूसु मग्गेसु चतूसु फलेसु अट्ठ अट्ठ हुत्वा चतुसट्ठि धम्मा पारिपूरिं गच्छन्ति। इध
5 अभिञ्ञेय्यपदे मग्गो कथितो। सेसं पुरिमसदिसमेव।

इध ठत्वा पञ्हा समोधानेतब्बा। दसके सतं पञ्हा कथिता। एकके च नवके च सतं, दुके च अट्ठके च सतं, तिके च सत्तके च सतं, चतुक्के च छक्के च सतं, पञ्चके पञ्ञासा ति अड्ढछट्ठानि पञ्हसतानि कथितानि होन्ति।

10 "इदमवोच आयस्मा सारिपुत्तो, अत्तमना ते भिक्खू आयस्मतो सारिपुत्तस्स भासितं अभिनन्दुं" ति साधु, साधू, ति अभिनन्दता सिरसा सम्पटिच्छिंसु। ताय च पन अत्तमनताय इममेव सुत्तं आवज्जमाना पञ्चसता पि ते भिक्खू सहपटिसम्भिदाहि अग्गफले अरहत्ते पतिट्ठहिंसू ति।

दसुत्तरसुत्तवण्णना निट्ठिता।

पाथिकवग्गट्ठकथा निट्ठिता।

—०—

१२. निगमनकथा

B. 250

एत्तावता च—

आयाचितो सुमङ्गल-परिवेणनिवासिना थिरगुणेन ।
दाठानागसंघत्थेरेन, थेरवंसन्वयेन ।
दीघागमवरस्स दसबल,-गुणगणपरिदीपनस्स अट्ठकथं ।
यं आरभिं सुमङ्गल, विलासिनी नाम नामेन । 5
सा हि महाट्ठकथाय, सारमादाय निट्ठिता ॥
एसा एकासीतिपमाणाय, पाळिया भाणवारेहि ।
एकूनसट्ठिमत्तो, विसुद्धिमग्गोपि भाणवारेहि ।
अत्थप्पकासनत्थाय, आगमानं कतो यस्मा ।
तस्मा तेन सहा यं, अट्ठकथा भाणवारगणनाय ॥ 10
सुपरिमितपरिच्छिन्नं, चत्तालीससतं होति ।
सब्बं चत्तालीसाधिकसत, परिमाणं भाणवारतो एवं ।
समयं पकासयन्ति, महाविहारे निवासिनं ।
मूलकट्ठकथासार,-मादाय मया इमं करोन्तेन ।
यं पुञ्ञमुपचितं तेन, होतु सब्बो सुखी लोको ति ॥ 15

परम विसुद्धसद्धाबुद्धिवीरियपटिमण्डितेन सीलाचारज्जवमद्दवा-दिगुणसमुदयसमुदितेन सकसमयसमयन्तरगहनज्झोगाहणसमत्थेन पञ्ञावेय्यत्तियसमन्नागतेन तिपिटकपरियत्तिप्पभेदे साट्ठकथे सत्थुसासने अप्पटिहतञाणप्पभावेन महावेय्याकरणेन करणसम्पत्तिजनितसुख-विनिग्गतमधुरोदारवचनलावण्णयुत्तेन युत्तमुत्तवादिना वादीवरेन 20 महाकविना पभिन्नपटिसम्भिदापरिवारे छळभिञ्ञादिप्पभेदगुणपटि-मण्डिते उत्तरिमनुस्सधम्मे सुप्पतिट्ठितबुद्धीनं थेरवंसप्पदीपानं थेरानं

महाविहारवासीनं वंसालङ्कारभूतेन विपुलविसुद्धबुद्धिना बुद्धघोसो ति गरूहि गहितनामधेय्येन थेरेन कता अयं सुमङ्गलविलासिनी नाम दीघनिकायट्ठकथा—

B. 251 ताव तिट्ठतु लोकस्मिं, लोकनित्थरणेसिनं।

5 दस्सेन्ती कुलपुत्तानं, नयं दिट्ठिविसुद्धिया॥

याव बुद्धा ति नामम्पि, सुद्धचित्तस्स तादिनो।

लोकम्हि लोकजेट्ठस्स, पवत्तति महेसिनो ति॥

सुमंगलविलासिनी नाम

दीघनिकाय-अट्ठकथा निट्ठिता।

—०—

सुमङ्गलविलासिनी

१. सद्दानुक्कमणिका

अ

अकट्ठपाको १९०
अकणो १९
अकण्हअसुक्कं ३६७
अकसिरलाभी २२३
अकसिरेन २१६
अकिच्छलाभी २२३
अकिच्छेन २१६
अकित्तिसञ्जननी २७७
अकुप्पञ्ञाणं ४०७
अकुप्पा चेतोविमुत्ती ४०७
अकुसलकम्मपथे २८२
अकुसलसङ्खाता १६२, १८३
अकुसला धम्मा ३४६
अक्खधुत्ता २७९
अक्खमा ३६५
अक्खम्भियो २५०
अक्खरं १९१
अक्खसोण्डो २७८
अक्खातो २०६
अक्खिरोगादीन खेत्तं २७७
अक्खो २२९
अखिलमनिमित्तमकण्टकं २५०
अगमनीयट्ठानं ३९६
अगारवो ३७९
अग्गकोण्डा २५४
अग्गपरिवारं १४०
अग्गप्पत्ता १५८
अग्गसावका २०१
अग्गसावकानं २०९
अग्गिको १२९
अग्गिपरिचारको १२९
अग्गिवेस्सन ८८, ८९
अग्गुपट्ठायिका १७९
अङ्कुसो ८
अङ्गीरसा २९६
अङ्गीरसी ८
अङ्गुत्तरनिकायो २२५
अचित्तीकतं १३१
अचेलको १४०, १५४
अचेलो १३९
अचेलं १३८
अच्चन्तयोगक्खेमी ४९
अच्छिन्नवुत्ती २९१
अजरं ११७
अजवीथि १८८
अजातं ११७
अजितोपि १४३
अज्जवं ३१७
अज्झापन्नो १५५
अञ्जसं ५६
अज्झत्तिकानी ३७९
अञ्ञादत्थुहरो २८०
अञ्ञाताविन्द्रियं ३४२
अञ्ञिन्द्रियं ३४२
अटवियं २५२

अट्ठि पञ्चवेक्खती २१२
अट्ठ अक्खणदेसना १९७
अट्ठ अभिभायतनानि १९७
अट्ठ आरम्भवत्थूनि १९७
अट्ठ खेत्तानि ३५१
अट्ठङ्गिको मग्गो ६३, २०८
अट्ठ पञ्ञापटिलाभहेतु १९६
अट्ठ महापुरिसवितक्के १९७
अट्ठ लोकधम्मातिक्कमे १९७
अट्ठ विमोक्खे १९७
अट्ठसमापत्तियो २११
अट्ठ सम्मत्तानि १९७
अट्ठसंवेगवत्थूनि ११०
अट्ठानकुसलता ३१७
अट्ठारस बुद्धधम्मे १९७
अट्ठिकसङ्खलिकं ८६
अट्ठिकायं ७०
अट्ठिमिञ्जकायं ७०
अड्डकरणं १२
अण्डजा ३६८
अतिउण्हं २७९
अतिधम्मभारेन २२९
अतिभोजने ९४
अतिमानी १५७
अतीतो अद्धा ३३०
अतेकिच्छो १०३
अत्तकिलमथानुयोगं २२२
अत्तञ्ञू ३८५
अत्तदीपा १६५, १७७
अत्तभावपटिलाभेसु ३६८
अत्तभावो ११६
अत्तवादुपादानं ३६८
अत्तसञ्ञं ७०, ७९, ३६१
अत्तसम्मापणिधी ४०९
अत्तसरणा १६५
अत्ता च लोको ३१४
अत्ताधिपतेय्यं ३४६
अत्तानुक्कंसेती १५५
अत्थङ्गमनकालो १८९
अत्थञ्ञू ३८५
अत्थपटिसम्भिदा १९६
अत्थपटिसंवेदिनो ३७८
अत्थसञ्हितं २३२
अत्थुपेतं २३९
अत्थुपसंहितं २५८
अथुसो १९०
अदुक्खमसुखं वेदनं १९०
अद्धा ३३०
अद्धेज्झवचना १३९
अधम्मसम्मतं १९०
अधम्मारागो १७२
अधिकरणानं ३८७
अधिकुसलेसू २४९
अधिचिण्णं २३२
अधिचित्तं ३४३
अधिजेगुच्छे १५४
अधिट्ठानानी ३६६
अधिपञ्ञाति २४५
अधिपञ्ञा ३४३
अधिमोक्खबहुलता ९६
अधिवचनं २३१
अधिसीलसिक्खा ३४३
अधिसीलं ३४३
अधोमुखो १६१
अनज्झापन्नो ३५६
अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं ३४२
अनत्थसंयुत्त २२२
अनत्ता ९२
अनत्तानुपस्सनं ३६१
अनत्तिचरियाया २८८

अनधिगतस्सा	३९१	अनुपसमसंवत्तनिके	२३२
अनभिरतिबहुलो	२६३	अनुपस्सना	७२
अनयव्यसनं	१२७	अनुपुब्बनिरोधा	३९४
अनरियवोहारा	३६९	अनुपुब्बविहारा	३९४
अनरियवोहारे	२१७	अनुप्पत्तसदत्थो	१८४
अनलसा	२८८	अनुप्पादो	११७
अनलसो	२९१	अनुप्पियभाणी	२८०
अनवज्जट्ठेन	२०७	अनुमाणञाणं	२०३
अवज्जलक्खणानं	१६७	अनुयोक्खमो	२०२
अनवमाननाय	२८८	अनुयोगो	२७६
अनागते	२२६	अनुरक्खणापधानं	३६२
अनागतो अद्धा	३३०	अनुरुद्धत्थेरो	४८
अनागामित्ता	१२३	अनुवादाधिकरणं	३८७,३८८
अनागामिफलं	१२४	अनुविचरितं	२४२
अनागामिमग्गेन	९९	अनुसन्धि	१४८
अनागामी	६१,१५०,१९८,२११	अनुसया	३८७
अनाथपिण्डकस्स	१८०	अनुसासनीविधासु	१९७
अनादीनवदस्सावी	१५५	अनुस्सतानुत्तरियं	३८३
अनायूहनं	११७	अनुस्सतिट्ठानानि	३८३
अनालयो	११७	अनेञ्जाभिसङ्खारो	३३८
अनावट्टद्वारतया	२९०	अनेसनं	३५५
अनावरणञाणं	२२०	अनोत्तप्पं	३१४
अनिच्चसञ्ञादयो	३८४	अनोमदस्सी बुद्धस्स	१९६
अनिच्चेदुक्खा	३७८	अनोमनिक्कमो	२५९
अनिमित्ता चेतोविमुत्ती	३८२	अन्तमन्तानेवा	१५२
अनिमित्तं	११७	अन्तरा	२५४
अनियतो	३३१	अन्तरापरिनिब्बायी	३७५
अनिय्यानिककथं	२४२	अन्तवङ्कपादा	२५४
अनिस्सरणपञ्ञो	१५६	अन्तोपरिसको	११५
अनिस्सितो	७९	अन्तोवापियं	१९०
अनुत्तरभावो	२०६	अन्तोसारविरहितेन	१४९
अनुत्तरियं	३४३	अन्तोसोको	११५
अनुत्तरं	९०	अन्दुबन्धनबद्धो	१४४
अनुपपत्ति	११७	अन्वये ञाणं	३६३
अनुपरियायपथं	२०४	अपचितिवेय्यावच्चानि	३३९

अपण्णत्तिकभाव २०२
अपरपजा २८९
अपरियोद्धना ३४८
अपरिसावचरो १५२
अपरिसावचरं १६०
अपविद्धं १३१
अपायदुक्खं ११०
अपायभयपच्चवेक्खणता १०४
अपायभयं १०४
अपायमुखानी २७४
अपायसहायो २८०
अपायो ३४५
अपुञ्ञाभिसङ्खारो ३३७
अप्पच्चयं २६४
अप्पटिकूलसञ्ञी २२०
अप्पटिघं ३३६
अप्पटिपुग्गलो बुद्धो २२९
अप्पटिसन्धि ११७
अप्पटिहतञाणं ३३२
अप्पणिहितो ३४४
अप्पणिहितं ११७
अप्पत्तस्सा ४९१
अप्पतिस्सो ३७९
अप्पना १०३
अप्पनिग्घोसानी १५१
अप्पनं १०३
अप्पमञ्ञा ३४९
अप्पवत्तं ११७
अप्पसद्दानी १५१
अप्पसारानी १२९
अप्पाबाधो ३७४
अबुद्धोव १४२
अब्भन्तरेही २५०
अब्भोकासवासो ९४
अब्भोकासे १५३
अब्यग्गनिमित्तं १०९
अब्याधि ११७
अब्यापज्जा २७
अब्यापादधातु ३२५
अभिक्कन्तवण्णा २९४
अभिजातियो ३८४
अभिज्झा ७३
अभिञ्ञायो २११
अभिधम्मपिटकं २२३, २२५
अभिधम्मपरियायं २०७
अभिधम्मो ३९५
अभिनिब्बत्ति ११३
अभिनिवेसो ३१, ११८
अभिविनयो ३९५
अभिसङ्खारो ३३६
अभिसित्ता २५३
अमच्चा पारिसज्जा १७१
अमतपानं १७८
अमतं ११७, १७०
अमहग्गतं ९०
अमोहो २१६
अम्बट्ठसुत्ते १९४
अम्बणम्बणं १९१
अम्बपानादिअट्ठविधं २५२
अम्बवने २३२
अम्बसण्डा ३
अम्बिलयागु १०५
अयोनिसोमनसिकारो ९१, ९३, ४०७
अरञ्ञवनपत्थानी १५१
अरञ्ञवासो १६०
अरणीसहितं १२९
अरति ९४
अरतिरतिसहो ७२
अरहत्तनिकूटेन १२३, १६२, १७८
अरहत्तप्पटिलाभमेव १३७

अरहत्तप्पत्तअनागामिनो २१४
अरहत्तफलसङ्खातं १७८
अरहत्तफलसमाधि ४११
अरहत्तफलसमापत्ति ३८२
अरहत्तफलसमापत्तिं २१२
अरहत्तफलं १७८, १९६
अरहत्तमग्गञाणे २०१
अरहत्तमग्गञाणं २०१
अरहत्तमग्गट्ठा २१४
अरहत्तमग्गवज्झा ३२९
अरहत्तमग्गेन ९५, ९६, ९९, १०१, १०४, १०७, १०९, ११०, ११२, ३७८
अरहत्तमग्गेनेव २०१
अरहत्तमग्गो १९६
अरहत्तं ३७, ३९, ४०, ५९, ६१, ८८ १०६, १२४, १४४, १९४
अरहा १९८, २११
अरहं १८४
अरिट्ठो ३०१
अरितबहुलो २६३
अरियधननानि १०६
अरियफलानि ७६
अरियमग्गो ८२, २०४, २४४
अरियमग्गं २१५, २६२
अरियवासा ४००
अरियवोहारा ३६९
अरियवंसा ३५०
अरियसावका २३८
अरियाय विमुत्तिया १५०
अरियेन ञाणेन १५०
अरियेन सीलेन १५०
अरियो ११८
अरियो विहारो ३४७
अरूपकम्मट्ठानञ्चा ८८
अरूपकम्मट्ठानं ३१, ३३
अरूपतण्हा ३२६
अरूपपरिग्गहो ३१
अरूपसमापत्तिया २१४
अरूपसमापत्तिं १२१
अलङ्कारानुप्पदानेना २८८
अलसकब्याधिना १३८
अलंपतेय्या १७३
अलं फासुविहाराय ९२
अलंसाटक ९४
अवचो ५०
अविक्खेपकिच्चं १०२
अविक्खेपो ३२०
अविचारं ३५
अविज्जा ३१४, ३६८
अविज्जासवो ३२७
अविज्जासंयोजनं ९८, ९९
अवितक्कअविचारे ४१
अवितक्कअविचारो ३४४
अवितक्कविचारमत्तो ३४४
अवितक्कं ३५
अविदितट्ठाने २०२
अविमुत्तं ९०
अविसयो २२३
अविसंवादनताया २८९
अविहिंसा ३१९
अविहिंसाधातु ३२५
अविहिंसावितक्को ३२४
अवीचिअन्तरे २१०
अवीचिफुसनत्थं ११९
अवेच्चप्पसादेना ३६४
असक्कच्चं १३१
असङ्खता धातू ४०८
असङ्खारपरिनिब्बायी ३७५
असच्छिकतस्सा ३९१

असञ्ञसत्ता ३१०
असद्धम्मा ३८५
असपत्ता २७
असम्भिकथं १७३
असमो बुद्धो २२९
असम्पजञ्ञं ३१९
असम्पजानो २०९
असहानधम्मतं २६७
असातं ११५
असीति च महासावका १०७
असीतिमहासावके २७३
असुभसञ्ञा ३८७
असुभसञ्ञादिपटिलाभो ४८
असुभनिमित्तं ९२
असुभभावनानुयोगो ९२
असुभं ९२
असुरभवने २६
असुरा २५४
असेक्खा ३४१
असेक्खो ३३८
असेसविरागनिरोधो ११७
असोकराजा ४०६
अस्सारोहानं ३०
अस्सासपत्ता १५३
अस्मिमानदोसेन १४५
अस्मिमानसमुग्घातो ३८२
अस्मिमानो ४०७
असंहारिया १८५
अहियक्खादयो २५१
अहिरिकं ३१४
अहिविज्जादिअनेकविधा २५९

आ

आकासगङ्गं ३०९
आकासधातु ३८१
आकासानञ्चायतनसमापत्ति १९६
आगतनिमित्तेन २१०
आगतमनतो ३४४
आगमनभयं २८४
आघातो १७३
आचरियभरिया १७३
आचरिया २८५
आजीवट्ठमकसीलं ४४
आटानाटनगरे २९३
आटानाटा ३००
आटानाटादिका ३००
आटानाटियसुत्तं २९३, ३०३,
आणाखेत्तं २२३
आणापवत्तिट्ठाने १७०
आतापी ७१, ७२
आदिकम्मिको ११८
आदिच्चबन्धुनं २९७
आदिब्रह्मचरियं १५३
आदीनवदस्सनत्थं १३५
आदीनवदस्सावी ३५६
आदीनवसञ्ञा ३८७
आदेवो ११५
आदेसनाविधासु १९७
आधानग्गाही १५८, ३८१
आधिपतेय्यट्ठेन एकलक्खणानि २०७
आधिपतेय्यं ३४६
आन्तरिको चेतोसमाधी ४०७
आनन्द २३५
आनन्दत्थेरो ४८, २३४, २३६
आनन्दो २३४
आनापानपब्बं ८६
आनिसंसदस्साविता १०४
आनिसंसो २५३
आपत्ताधिकरणं ३८७, ३८९
आपत्तिकुसलता ३१५
आपत्तिवुट्ठानकुसलता ३१५

आपाथकनिसादी १५६
आपाथगतं ९९
आपायिको १३६
आपोकायं ७०
आपोधातु ८४, ३८१
आपोरसो ३१२
आबाधिका १२६
आभतधनं २८८
आभिचेतसिकानं २२३
आमिसपटिसन्थारो ३१८
आयतनकथा १००
आयतनकुसलता ३१६
आयतनपञ्ञत्तियं १९७
आयतनपञ्ञापनासु २०९
आयतनपरिग्गहो १२२
आयतनपरिग्गाहिका १००
आयतनानि ३९५
आयतपण्हि २५४
आयासो ११५
आयु ८५
आयो ३४५
आरद्धवीरियपुग्गलसेवनता १०४
आरद्धवीरियेना २२२
आरद्धवीरियो २१८, २३७
आरम्भधातु ९४, १०४
आरम्मणतो ३४४, ३९८
आरोग्यकरणकम्मं २६७
आरोग्यट्ठेन २०७
आलम्बणफलकं ३९
आलोकनिस्सितं ञाणं ३४३
आलोकसञ्ञामनसिकारो ९४
आलोकसञ्ञं ३४८
आलोको १२
आवसथं २५३
आवाटमण्डूके १४७
आवासमच्छरियेन २७, २८
आवासमच्छरियं २७१
आवासिको १५, १७
आवाहका २७९
आविलक्खि २६८
आसभी २०१
आसवक्खयो ४८
आसवट्ठेन ३२६
आसवा १०६, २१४, २१५, २४०, ३२६
आसवानं खया २०८
आसादेतब्बं १४७
आसळ्हमासे १८८
आहारट्ठितिका ३१०
आहारपरियेट्ठिमूलकं ११०
आहरेपटिकुलसञ्ञा ४१५
आहुनेय्यग्गी ३३३
आहुनं ३३
आळकमन्दा ३००
आळवकपुच्छा २२५

इ

इत्थिसोण्डा २७९
इदं सच्चाभिनिवेसो ३६८
इद्धिपाटिहारियं १३६, १४१
इद्धिपादा १७७
इद्धिपादं ३४७
इद्धिभावनाय २५५
इद्धिमयं ३५१
इद्धिविधं १९७
इद्धं २५०
इद्धत्तभावे १८४
इन्दनीलमयो दण्डो ६
इन्दसालगुहायं ३, ५
इन्दसालरुक्खो ३
इन्दो ३०४
इन्द्रियसमत्तपटिपादनता १०९

इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता ३१९
इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता ९२
इन्द्रियेसु गुत्तद्वारो २१८
इब्भे १८२
इरियापथपब्बं ८६
इरियापथसम्परिवत्तनता ९४
इरियपथो ३११
इरियापथं ३०९
इस्सरकुत्तं १४८
इस्सरियवोस्सग्गेना २८८
इस्सरो १४८
इस्सुकी होति १५७

उ

उक्कट्ठञ्च सिप्पं २५९
उक्कण्ठनबहुलो २६३
उक्कायो ६०
उक्कुटिकपादा २५४
उक्खलिं २९९
उग्गतउदकं २००
उग्गहणकुसलता ११०
उच्चकम्मानि ३९५
उच्चावचानी ३९५
उच्छिट्ठमंसं १४६
उजुजातिको १६१
उट्ठानको २९१
उट्ठानफलूपजीवी ३११
उतु १८९
उतुइरियापथे १०९
उतुसप्पायं ३२
उतुसुखसेवनता १०९
उतुसुखं १३२
उतुसंवच्छरा १८९
उत्तमग्गरसदायको २५६
उत्तमो बुद्धो २२९
उत्तरका १३६
उत्तरा दिसा २८५
उत्तरिछप्पञ्चवाचं ३३१
उत्तरिमनुस्सधम्मा १३५
उत्तासबहुलो २६३
उत्तासभयं २५१
उदकरहदो २९७
उदकसन्तोसो ३५४
उदकसोण्डियं १४६
उदकास्सुदं २३८
उदकं पिवे ९२
उदयत्थगामिनिया ३७४
उदरावदेहकं ३७६
उदानं १०६
उदुम्बरिकसुत्तं १५०
उद्धग्गिकं १७१
उद्धच्चकुक्कुच्चं ९५, ९६
उद्धच्चपाततो १०३
उद्धमातउदरो १३८
उद्धुमातं ८४
उद्धंसोतोअकनिट्ठगामी ३७५
उपकारसन्तोसो ३५८
उपक्किलेसो १५५
उपचितत्ता २४९
उपज्झायो २३५
उपट्ठाको १४२
उपट्ठानकिच्चं १०२
उपट्ठानसालं १४
उपट्ठितस्सतिपुग्गले १०१
उपड्ढपथं १४१
उपधयो ४५
उपधिविवेको ३४२, ४१३, ४१४
उपनाही १५७, ३८०
उपरिमा दिसा २८५
उपविजञ्ञा १२७
उपसमानुस्सति १०८

उपहच्चपरिनिब्बायी ३७५
उपादानक्खन्धा ७१, ३७१
उपादानानी ३६८
उपायकोसल्लं ३४६
उपायासो ११५
उपालिना २३३
उपाहनत्थविकं २५२
उपाहनदण्डकं २५२
उपेक्खा ४२
उपेक्खूपविचारा ३८०
उपेक्खो २२१
उपोसथङ्गानि १५०
उपोसथदिवसे ३९
उपोसथूपवासे २४९
उपोसथो २५१
उप्पथमनसिकारो ९१
उप्पन्नुप्पन्नानं ३८७
उब्बाधनाया २६७
उब्बाधिकं २७०
उब्बेगाउत्तासभयापनूदनो २५३
उब्बेगउत्तासभयं २५१
उभतोभागविमुत्तो २१४
उभयकारी १९३
उभयविपाकदानट्ठानं १९३
उलूकपक्खं ३५१
उस्मा ८५
उस्सुको २५३
उळारपामोज्जो ३९५
उळारसद्दो २०१
उळारा २०१
उळारो ओभासो २०१

ए

एकखुरं २९९
एकछन्दा १९
एकत्तसमोसरणवसेन ६७
एकनामा २९७
एकन्तछन्दा ४९
एकन्तवादा ४९
एकन्तसीला ४९
एकपल्लङ्कं २५७
एकपादेन तिट्ठति १५६
एकपुग्गलो २२७
एकपुरिससन्धारणी २२८
एकबुद्धधारणी २२८
एकलक्खणा २०७
एकविहारी २१८
एकसङ्गहा २०७
एकसिक्खा २२७
एकसेना १४३
एकादस मेत्तानिसंसे १९७
एकानुसासनी २२७
एकायनमग्गो ५८, ६३, ६६
एकायनो ५६
एकासने २५७
एकुनवीसति पच्चवेक्खणञाणानि १९७
एकोदकीभूतं १८६
एकोदिभावाधिगते ४११
एरकदुस्सं ३५१
एवंसीला २०२
एळालुकं २६

ओ

ओकासकरणत्थं ५
ओक्कन्ति ११३
ओघा १४८, ३६७
ओजसि ३०१
ओट्ठवचित्तका ३०१
ओतारं १६५, १६६, ३३२
ओदनकुम्मासं १४१
ओपपातिका ३६८
ओभासजातो ६

ओभासेत्वा २९५
ओरसा १८२
ओराधेय्यामा १५२
ओहितभारो १८४

क

ककुसन्धो ३५०
कङ्खती ३३१
कङ्खावितरणविसुद्धि ४१४
कङ्खाविनोदको ७
कञ्जियेन १०५
कटच्छुभत्तमत्तं २४६
कणतण्डुलेहि १०५
कणाजकं १३१
कण्टको २५०
कण्ठमभिपूरयित्वा २२८
कण्णपण्णम्बिलयागु १०५
कण्णसुखा २७०
कण्णिकूपगं २२
कण्हविपाका १८३
कण्हविपाकं ३६७
कण्हसप्पो २७२
कण्हसुक्कं ३६७
कण्हो १८२
कण्हं ३६७
कतकरणीयो १८४
कतावकासा १७
कत्तरदण्डे ६०
कथला २५०
कथापाभतं २३५
कथंकथासल्लं ३८२
कदलिदुस्सं ३५१
कदलि २१५
कन्दरा २००
कप्पसन्तोसो ३५५
कप्पियकारकम्पि २५२
कबळीकारो आहारो ३१०
कबळीकारं आहारं ३१२
कमलवनं २४६
कम्बलवाणिजादयो ६४
कम्मकिलेसा २७४
कम्मकिलेसो २७५
कम्मच्छेदो २७८
कम्मजवाता २१०
कम्मजं ३१
कम्मट्ठानानि १२२
कम्मट्ठानाभिनिवेसो ११८
कम्मट्ठानं ७६
कम्मन्तसंविधानेना २८९
कम्मभवं २१२, २१३
कम्मसरिक्खकं २५१, २५३, २५५, २५६, २५८, २६४, २६६, २६८, २६९, २७०, २७१
कम्मस्सकतञ्ञाणं ३२१
कम्मस्सकतापच्चवेक्खण ९३
कम्मारभस्ता २५०
कम्मं २५३, २५४, २५६
करजकायो ३२, ७८
करजकायं ३१
करणसन्तोसो ३५४
कलन्दकनिवापो २७२
कलन्दकयोनियं २४८
कलन्दका २७२
कलहप्पवड्ढनी २७६
कलूपकसमणस्स १३९
कल्याणधम्मे १२७
कल्याणमित्तता ९२, ९३, ९४, ९५, ९६
कल्याणमित्ता २८७
कल्याणमित्ते ९२, ९६
कल्याणमित्तो ३९४
कल्याणसहायो ३९४

कसायरसपीतानि १६८
कसिकम्मं २९८
कसिणभावनं २११
कसिणानि ३९५
कसिवाणिज्जादिकम्मं २८४
कस्सककलेणमेव १०६
कस्सककलेणे १०५
कस्सपबुद्धकालिका २२५
कस्सपबुद्धस्स ३३५
कस्सपो ३५०
कहापणादिवसेन १९
कहापणारहस्स २६६
कहापणो २८२
कळारजनको १७१
कळारमट्टको १४०
काकमासकभुत्त ९४
काणगावी १५२
कामकिच्चं ३४१
कामगुणा १६६
कामछन्दो ७१, ९१, ९२
कामतण्हा ३२५, ३२६
कामधातु ३२४
कामबन्धनानि १६
कामभोगिनियो २३८
कामभोगिनो २३८
कामयोगविसञ्ञोगो ३६७
कामरागसंयोजनं ९८, ९९
कामवितक्को ३२३
कामसञ्ञा ३२४
कामसञ्ञोजनानि १६
कामसेना ३२७, ३२८
कामा ४१२
कामासवो ३२७
कामुपादानं ३६८
कामूपपत्तियो ३४०
कामेसुमिच्छाचारो ३९६
कामोघो ३६७
कायकम्मं ३३८
कायगतासती ४०६
कायगन्थो ३६८
कायदुच्चरितं ३२३, ३३२
कायपसादवत्थुकं ११५
कायपस्सद्धि १०८
कायभावना ३४३
कायमोनेय्यं ३४५
कायसम्फस्सतो ११५
कायविवेको ४१३, ४१४
कायसक्खि २१४
कायसमाचारो ४६, ५०
कायसमचारं ४४
कायसुचरिते २४८
कायसुचरितं ३२३
कायानुपस्सना ८६
कायानुपस्सनासतिपट्ठानं ८७, २०७
कायानुपस्सी ६९, ७०, ७२, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, १६७
कायालसियताय २७६
कायालसियविरहितो २१८
कायिकं ८७, ११५
कायेना ३६७
कायो ७१, ३७८
कारुञ्ञजातो १४६
कालकञ्चिकअसुरेसु १०४
कालकञ्चिका १३८
कालञ्ञू २४२, ३८५
कालम्बुका १९०
कालसमये २८९
कालसमयो २८६
कालापबन्धा १९१
काळकवेसेन २७२

काळपक्खउपोसथतो १८८
काळलोहं १३०
काळवल्लवासी २०६, २१२
काळसीहो १४५
काळुदायी २३०
किच्चसाधवसेन १२०
किच्चाधिकरणं ३८७, ३९०
कित्तिवण्णहरा २८९
किमेविदं १८६
किरियसङ्गहो ३३६
किलेसकामा ४१२
किलेसकामे १४१
किलेसनिब्बानं २४८
किलेसपरिच्चागो ३६६
किलेसपरिनिब्बानेन १६१
किलेसपरिनिब्बानं २२६
किलेसमारो १६५
किलेसविमुत्तिञाणे २१९
किलेसे ६१
कुक्कुटका ३०१
कुक्कुटो २१०
कुज्झनलक्खणेन १५७
कुटिलचित्तो १६१
कुणपगन्धो १२७
कुतोमुखा १४
कुमारकस्सपो १२४, १२५
कुमारवाहने २९९
कुम्भकारसिप्पं २५९
कुम्भण्डानं २९८
कुरुरट्ठवासीनं ५४
कुलमच्छरियेन २७, २८
कुलवंसो ३४९
कुलवंसं २८५
कुलावकं २४८
कुलूपका १४
कुवेरनळिनी ३०२
कुवेरो ३००
कुसलचीरं ३५१
कुसलपञ्ञत्तियं १९७
कुसलवेरमणी ११९, १२०
कुसलाकुसला ९६
कुसला धम्मा ३४५
कुसिनाटा ३००
कुसिनारायं २२६
कुसीतपुग्गलपरिवज्जनता १०४
कुसीतपुग्गलो १०७
कुसीतवत्थूनी ३९१
कुसुम्भा २००
कुहको २१८
कुळीरका ३०१
कूटगोणयुत्तरथो ७५
कूटधेनुया ७५
कूटवच्छं ७५
केणियजटिलादयो २२२
केराटिकपक्खं १०३
केवलकप्पं २९४
केवलपरिपुण्णं २९४
केसकम्बलं ३५१
केसच्छेदनादीनं १११
केसरभारमत्तमेव १४६
केसरसीहो १४५
केसरं ३०८
केसादिछेदापनेन १०२
कोकिल ११६
कोट्ठासतो ३९८, ३९९
कोणागमनो ३५०
कोधनो ३८०
कोधनो होति १५७
कोपीननिदंसनी २७७
कोपेनपी १२९

कोपो २६४
कोमारिका १२८
कोरक्खत्तियो १३६, १३९
कोराटिकलक्खणेन १५७
कोविळाररुक्खं २३
कोसज्जतो ९४
कोसज्जपाततो १०३
कोसज्जं १०३
कोसल्लसम्भूतट्ठेन २०७
कोसल्लं ३४५
कोसोहितवत्थगुय्हलक्खणं २६५
कोहञ्ञेन १४९
क्व नच्चं २७८

ख

खज्जकं २५२
खज्जोपनका १३८
खण्डिच्चं ११३
खत्तियकुले १९३
खत्तियधम्मं १९२
खत्तियपरिसा ३९२
खत्तियो १९१
खदिरत्थम्भे १६७
खन्ती ३१८
खन्धपरिग्गहो १२२
खन्धपरिग्गाहिका ९८
खन्धपरिनिब्बानं २२६
खलमण्डलमत्तं १८
खलमूसिकायो १४७
खाणु २५०
खिड्डापदोसिका देवा ३३३
खिड्डापदोसिकं १४८
खिप्पाभिञ्ञा २१६
खीणा जाति ८९
खीणासवस्स ४४
खीणासवा २९६
खीणासवो १८४, २४१
खीरपिण्डपातस्स १०६
खीरभत्तं १५५
खुज्जम्पि १९३
खुज्जा २५४
खुज्जुत्तरादयो २३८
खुद्दमधुं १८६
खुरचक्कधरं ३३४
खेत्तपरिग्गहो २२४
खेत्तबीजवुड्ढिदोसो १३१
खेत्तसामिनो १९१
खेत्तं १०५
खेमं २५०
खोमवाकं १३०
खोमं १३०

ग

गणकमहामत्ता १७१
गणना २५९
गतनिमित्तेन २१०
गतपच्चागतं ३५१
गतियो ३७१
गन्था ३६८
गन्धकुटिं १९५
गन्धधूपमादीहि २५२
गन्धपिसनकनिसदाय २५२
गन्धब्बकाये १४, १५
गन्धब्बकायं १४, १५
गन्धसम्पन्ना १८६
गन्धायतनं २४२
गन्धारम्मणं २४३
गन्धारको ६४
गन्धं २९
गबलवालियअङ्गणं ६१
गब्भमलहरणं ३५१
गब्भसहस्सप्पटिमण्डितो १८०

गब्भावक्कन्ति २०९
गब्भावक्कन्तियं १९७
गब्भावासे २१०
गब्भिनियो १८२
गब्भोक्कमनेसु २०९
गमनमग्गं १९
गमनवीथिपच्चवेक्खणता १०४
गलवाटका ३०२
गहपतिनेचयिका १४३
गहपतिमहासाला १४३
गहपती ३३५
गामपट्टं १३०
गामभोजको १९, २०
गारवो ४१३
गावि २९९
गावी-ति-सञ्ञा ८३
गिज्झकूटं २९५
गिलाना वुट्ठितो ३९१
गिहिभूतेन २८०
गिहिविनयो २९२
गिहिविनयं २७४
गिहिसोतापन्ना २३८
गुत्तद्वारताय ४७
गुळबालकानी १३१
गुळासवो २७६
गेधजातो १५५
गेधिचित्तो ९
गेधं ९
गेहसितउपेक्खा ४२
गेहसितउपेक्खावेदना ८९
गेहसितदोमनस्सवेदना ८९
गेहसितदोमनस्सं ३५
गोकाणं १६१
गोघातको ८३
गोचरगामे १०५
गोचरगामं १३३, १३६, १६४
गोतमगोत्तो ५२
गोतमो ३५०
गोपानसियो २२
गोपो ७५
गोमयपिण्डमत्तम्पि १९१
गोमुत्तवङ्कता ३१७
गोरक्ख-वाणिजकम्मादिके १९२
गोवीथी १८८

घ

घनविनिब्भोगं ८४

च

चक्करतनमत्थके १६७
चक्करतनं १६७
चक्कलक्खणं २५३
चक्कवत्तिवत्तं १६८
चक्कवत्तिसिरीविभवो १६७
चक्कवत्तिसुत्तं १६४
चक्कवाळं १८६, २२३, २४९
चक्खुना ३६७
चक्खुविञ्ञाणं ३७९
चक्खुसम्फस्सो ३७९
चण्डालपुत्तो १५३
चतस्सो पटिसम्भिदा १९६
चतस्सो पटिसम्भिदायो २६३
चतुइरियापथपब्बं १२२
चतुइरियापथपरिग्गण्हनेन ८१
चतुइरियापथो ८४
चतुक्कपञ्चकज्झानं १२१
चतुक्कुण्डिको १३७
चतुचत्तालिसञाणवत्थूनि १९७
चतुत्थज्झानं २११
चतुब्बिधो सङ्गहो ३३६
चतुमग्गञाणं २४२
चतुयोनिपरिच्छेदकञाणं १९६

चतुसच्चकम्मट्ठानं ३६४
चतुसट्ठि धम्मा ४१५
चतुसम्पजञ्ञावसेन ८२
चतुसम्पजञ्ञं १२२
चत्तारि चक्कानि ४०९
चत्तारि फलानि १९६
चत्तारि सामञ्ञफलानि २६३
चत्तारो अरियमग्गा २६३
चत्तारो अरियवंसे १९६
चत्तारो इद्धिपादा २०७
चत्तारो इद्धिपादे १९६
चत्तारो खन्धा ३१४
चत्तारो पच्चये १४७
चत्तारो बुद्धा ३५०
चत्तारो मग्गे १९६
चत्तारो सतिपट्ठाना २४५
चत्तारो सम्मप्पधाना २०७
चत्तारो सम्मप्पधाने १९६
चन्दभागा २००
चन्दभागाय १९९
चन्दमण्डलं १८८
चन्दवङ्कता ३१७
चन्दिमसूरिया १२६, १८८
चन्दिमा १८७
चन्दो १८, १८८
चम्मक्खण्डं १९५, २०१
चम्मं ३५१
चवनता ११४
चरणकभावं २७७
चरणं २५९
चरियवसेन ४०३
चातुयामसंवरो १६०
चारिकं २३५
चित्तक्खरं ४७
चित्तजवाता ८०
चित्तत्रासभयं १४४
चित्तधम्मानुपस्सी ६९
चित्तपस्सद्धि १०८
चित्तभावना ३४३
चित्तलतावनं ४
चित्तलपब्बतविहारे ३३३
चित्तसेवना ३१
चित्तविवेको ४१३, ४१४
चित्तविसुद्धि ४१४
चित्तवोदानं ५९
चित्तसङ्खारा २११
चित्तसंकिलेसा ५९
चित्ता २१
चित्ताचारं १२८
चित्तानुपस्सनं ९०
चित्तं ७४, ७५, ७६, ८०, २११
चित्तं पग्गण्हाती ३४७
चिन्तामया पञ्ञा ३४१
चिरपटिकाहं १२
चिरपरिवासियट्ठेन ३२६
चीवरक्खेत्तं ३५१
चीवररजनकं २५२
चीवरवंसे १०६
चीवरहेतू ३६५
चीवरं जातितब्बं ३५१
चुण्णकभावा ८६
चुण्णसमाकिण्णा ३०८
चुतिपटिसन्धिवसेन २२०
चुद्दस बुद्धञाणानि १९७
चुन्दत्थेरो २३६
चुन्दो २३४
चूळनागा ५८
चूळसीवत्थेरो २०६
चेतसिकं ८७, ११५
चेतसो उपक्किलेसा २०४

चेतसोविनिबन्धा ३७६
चेतियघरधूपनत्थाय २५२
चेतियङ्गणे २५३, ३०३
चेतियं १४०
चेतुसम्पजञ्ञापब्बं ८६
चेतोखिला ३७५
चेतोपरियञ्ञाणलाभी २११
चेतोपरियञ्ञाणवसेन २१२
चेतोपरियञ्ञाणं २१३
चेतोविमुत्ति ९३
चोदकेना ३७३
चोरकम्मं १७२
चोरतो २५१
चोरा २०, २७८
चोरादि उपद्दवनिवारणत्थं १६९
चोरे ११७

छ

छ अनुत्तरियानि १९६
छ अनुस्सतिट्ठानानि १९६
छ अभिञ्ञा १९६
छ अभिञ्ञायो २६३
छ असाधारणञ्ञाणानि १९६
छ गारवे १९६
छ चीवरानि ३५१
छद्दन्तो नागराजा ३०८
छ निब्बेधभागियापञ्ञा १९६
छ निस्सरणिया धातुयो १९६
छन्दरागवसेन २१२
छन्दरागा २९८
छन्दरागो १०
छन्दसमाधि ३४७
छन्दं जनेती ४४७
छन्नपरिब्बाजको १५०
छ पञ्ञत्तियो २४५
छमानिकिण्णं १३१
छ सत्तविहारे १९६
छ सारणीये धम्मे १९६
छविमंसलोहितं २१२
छविवण्णो १०६
छळङ्गुपेक्खा ३८३, ४००

ज

जच्चन्धूपमो १२७
जनपदेसु १९१
जनसक्केन २७
जनेतस्मि १८४
जनोघं ३००
जम्बुदीपे ३८१, २३४
जयापेक्खो २११
जरसिगालोस्मी १४६
जरसिङ्गालो १४७, १५३
जरा ११३, १७५
जराधम्मो ४५
जलाबुजा ३६८
जवनपञ्ञा २६२
जागरियानुयोगमनुयुत्तो २१८
जातवेदं ८
जातिखेत्तं २२३
जातिजरामरणिया १६२
जातित्थेरो ३३८
जातिमहत्तपच्चवेक्खणता १०४
जातिमहत्तं १०७
जातिसङ्गहो ३३६
जानपदा १७०
जियावेगेन ८०
जियावेगो ३११
जीरणता ११३
जीवञ्जीवकसदेत्था ३०१
जीवितप्पवत्ति ११९
जीवितमदो ३४६
जूतकरो २७८

जेट्ठकरुक्खो ३०३
जेट्ठो बुद्धो २२९
जेतवनमहाविहारं १८०
जोतिकपासाणा २९८

झ

झानङ्गानि ७८
झानफस्सं २१४
झानरता ७
झानलाभिनो १४
झानसुखं १७८
झामअङ्गारो २०२
झायी २१८

ञ

ञाणजालं १३३, ३०६
ञाणदस्सनविसुद्धी ४१४
ञाणदस्सनं २४१
ञाणदेसना २२०
ञाणपरियन्तिकं ञेय्यं २२३
ञाणवादेन १४१
ञाणानुपरिवत्ति ३३२
ञातका १०५
ञातिब्यसनं ३७२
ञातिसम्पदा ३७३
ञायप्पटिपन्नो २३७
ञेय्यपरियन्तिकं ञाणं ३२३

ठ

ठानकुसलता ३१६
ठितनिमित्तेन २१०
ठितिभागियो २११

त

तच्छा ४०७
तण्डुलप्फलं २९८
तण्डुलमेव १९०
तण्हङ्करो ३५०
तण्हा २४४
तण्हाक्खयो ११७
तण्हापपञ्चो ३०
तण्हावानविहितत्ता ६३
तण्हाविनिच्छयो ३०
तण्हासङ्खयविमुत्ता ५०
तण्हासङ्खयो ४९
ततोजसी ३०१
ततोला ३००, ३०१
तत्तला ३०१
तत्तोतला ३०१
तत्रट्ठक ९४
तथा ४०७
तथागतप्पवेदिता २१५
तथागतसावका ३५०
तथागतो २३०,२४२,२४३,२४४
तदत्थजोतकं २५६
तदत्थपरिदीपना २५३
तदधिमुत्तता १०४,११०,१११
तन्दी ९४
तपनिस्सितको १५४
तपस्सी १५४
तपोजिगुच्छा १५४
तमपरायणो ३७०
तम्बपणिदीपे २२६
तम्बपण्णिदीपं ६१
तम्बलोहं १३०
तयो माना ३२८
तापसपब्बज्जं १६८
तालवण्टं २०५
तावतिंसभवने २४
तावतिंसा ५
तावतिंसे १७
ताळच्छिग्गळं २१०
तिक्खपञ्ञा २६२
तिणसीहो १४५

तिण्णकङ्खतं २८
तिण्णं वेदानं पारगू १८१
तित्तअलाबु ११७
तित्थियपरिवासं १८०
तिन्दुकखाणुक १४४
तिम्बरु ८
तिरच्छानयोनिगामिनिया ३२७
तिरच्छानयोनियं १९३
तिरित्तमंसं १४५
तिरियं ३९५
तिलक्खणं ३२
तुच्छकुम्भीव १५२
तुट्ठिबहुलो २६१
तुत्ततोमर ८
तुत्ततोमरं ९
तेजनं ८०
तेजसि ३०१
तेजोकायं ७०
तेजो २९९
तेजोधातु ८४
तेजोधातू ३८१
तेभुम्मका २४४
तेरसधुतङ्गसमादानं १५५
तेविज्जसुत्तं १८०
तोमरं ८

थ

थद्धमच्छरियभावो २८०
थद्धो १५७
थम्भरहितो २९१
थामवता २२२
थिनमिद्धं ९५
थिरगहणो २४७
थूपं ३५१
थूलसरीरो १४५
थेरसल्लापो २०६

द

दक्खिणा दिसा २८५
दक्खिणाविसुद्धियो ३६९
दक्खिणेय्यग्गी ३३५
दक्खिणेय्यताय २८५
दक्खिणा ३३५
दण्डदीपिकं ३०७
दण्डबलिवसेन १९
दण्डमाणवकानि ३०२
दन्धाभिञ्ञा २१६
दब्बसम्भारकम्मे २२
दमा ३६५
दवा ३३३
दस अरियवासे १९७
दस असेक्खधम्मे १९७
दस कसिणायतनानि १९७
दस कुसलकम्मपथे १९७
दस तथागत बलानि १९७
दस नाथकरणे धम्मे १९७
दस सम्मत्तानि १९७
दससहस्सी लोकधातु २२८
दससीलं २५९
दसुत्तरसुत्तन्ते २२३
दस्सनकिच्चं १०२
दस्सनसमापत्ति २१३
दस्सनसमापत्तियं १९७
दस्सनानुत्तरियं ३४३, ३८२
दसुत्तरं ४०५
दळ्हापं २०३
दळ्हपाकारतोरणं २०३
दळ्हसमादानो २४७
दानमयं ३३८
दानवत्थूनि ३९१
दानसालं २५२
दानसंविभागे २४८

दानूपपत्तियो ३९२
दायज्जमहत्तपच्चवेक्खणता १०४
दायज्जमहत्तं १०७
दायज्जं २८५
दारभरणाया २७९
दारुमेण्डकयुद्धं ५१
दासकम्मकरा १०५, २८५
दिट्ठधम्मसुखविहारानं २२३
दिट्ठधम्मसुखविहाराया ३४८
दिट्ठबुद्धगुणा १९८, १९९
दिट्ठवादिता ३६९
दिट्ठिजुगतं ३३९
दिट्ठिपपञ्चो ३०
दिट्ठिपटिवेधे ३८७
दिट्ठिब्यसनं ३७३
दिट्ठियोगविसञ्ञोगो ३६८
दिट्ठिविनिच्छयो ३०
दिट्ठिविपत्ती ३२०
दिट्ठिविसुद्धि ३२०, ३२१
दिट्ठुपादानं ३६८
दिट्ठं २४२, २४३
दित्तो १४५
दिन्नादायिनो २८९
दिब्बगन्धं १९०
दिब्बचक्खु ३४३
दिब्बचक्खुञाणे १९७
दिब्बचक्खुञाणं १९६
दिब्बयानं २९९
दिब्बोविहारो ३४७
दिवासञ्ञं ३४८
दिसाचारिक विमानं १३२
दीघनिकायो २२५
दीघपासाण्हिको २५५
दीघपासादो २३२
दीपङ्करो ३५०
दीपसिखा २०२
दीपिको ७७
दुक्कटमत्तं १५७
दुक्खदुक्खता ३३०
दुखनिरोधगामिनी पटिपदा २१५, २४४
दुक्खनिरोधो ११२, २४४
दुक्खपटिपदा २१६
दुक्खसच्चं ८१, ८२, ८६, ९७, ९८, ११२, १२२
दुक्खसमुदयो २४४
दुक्खानुपस्सनं ३६१
दुक्खे अनत्तसञ्ञा ३७८
दुक्खं २४४
दुक्खं वेदनं ८८
दुच्चरितानि ३२३
दुतिय कायग्गहणं ६९
दुद्दिट्ठरूपं १४
दुप्पटिनिस्सग्गी ३८१
दुप्पटिविज्झा ४०५
दुप्पटिविज्झो ४०७
दुम्मेधपुग्गलानं १०३
दुरुपसङ्कमा ७
देय्यधम्मेन १७०
देवतानुस्सति १०८
देवतासन्निपातो ३
देवदत्तो ३७०
देवधीता ४०
देवपरिसं ४
देवपुत्तमारो १६५
देवपुत्तो १९
देवानमिन्दो ५१
देसनासवनानि ३३९
दोमनस्सजातो ६२
दोमनस्सं ७३, २६४
दोवचस्सता ३१५

दोवारिका १७१
दोसक्खयो ११७
दोसो १३५, ३२२
द्वत्तिसवरलक्खणप्पटिमण्डितं १८४
द्वत्तिसाकारा ८२
द्वत्तिसिमानी २४६
द्वादस धम्म चक्काकाकारे १९७
द्वारं २०४
द्वे अग्गसावका १९८
द्वे परियाया ३३०
द्वे विमुत्तियो ३२२
द्वे समया २८६
द्वे सिप्पानि २५९

ध

धजग्गसुत्तं ३०३
धतरट्ठो हंसराजा ३०८
धनञ्जासेट्ठिनो १७९
धनविनिब्भोगं २४५
धनुग्गहानं ३०
धनुजियाय १२८
धनं २९
धमकरणं २९०
धम्मआणं ३०५
धम्मकथं १४९
धम्मकामो ३९५
धम्मकायो १८६
धम्मकेतू १६९
धम्मक्खन्धा ३६६
धम्मच्छन्दो ३४७
धम्मच्छरियं ३७१
धम्मजो १८५
धम्मञ्ञू ३८५
धम्मतो ३९९
धम्मथेरो ३३८
धम्मदानयञ्ञं २५९
धम्मदायादो १८५
धम्मदेसनाकाले २०२
धम्मद्धजो १६९
धम्मनिज्झानक्खन्ति ३४१
धम्मनिम्मितो १८५
धम्मनिसन्तिया ३८७
धम्मन्वयेन २०५
धम्मन्वयो २०३
धम्मपटिग्गाहका १६५
धम्मपटिसन्थारो ३१८
धम्मपटिसम्भिदा १९६
धम्मपदानी ३६५
धम्मपदं ३६५
धम्मपुञ्जा ९७
धम्मभण्डागारिकं १६५
धम्मभूतो १८६
धम्मयागं २५९
धम्मरतनं २३५
धम्मविचयो २१६
धम्मविनये ५६
धम्मविनयं २३२
धम्मसङ्गहो २२५
धम्मसमोधानं ९०
धम्मसम्मुखता ३८८
धम्मसवनसप्पायं ३२
धम्मसवनाया २०५
धम्मसेनापति २०५, ४०३
धम्मसेनापतिं २७२
धम्मस्सवनं ३३३
धम्मा ७४
धम्माधिपतेय्यो १६९
धम्माधिपतेय्यं ३४६
धम्मानुधम्मप्पटिपत्ती ३६४
धम्मानुधम्मं २५८
धम्मानुपस्सना सतिपट्ठानं २०७

धम्मानुपस्सनं ९८, १००, ११२
धम्मानुपस्सी ९८, १००, १२२
धम्मानुसारी २१५
धम्माभितत्तहत्थी ८
धम्माभिसमयो १६२
धम्मारम्मणं २४३
धम्मूसंहितं २५८
धम्मे अगारवो ३८०
धम्मे ञाणं ३६३
धम्मो २०८, २१५
धातुकुसलता ३१६
धातुपरिनिब्बाने २२४
धातुपरिनिब्बानं २२६
धातुमनसिकारपब्बं ८६
धुतङ्गधरस्स १५८
धुतङ्गधरो १५५
धुत्तङ्गं १५४
धुत्ता २७९
धोबनसन्तोसो ३५४

न

नगरं २०४
नङ्गलकट्ठकरणं १६६
नङ्गलकाटिवङ्कता ३१७
नङ्गला २९८
नङ्गुट्ठं २४८
न च विसटं २६७
नचित्तानुपस्सनासतिपट्ठानं २०७
नटनाटकादिमच्चं २७८
नदीकीलं ५
नन्दनवनं ४
नन्दा २१
नन्दीरागसहगता ११६
नन्दूपसेचनं ३६४
नयग्गाहो २०३
नलाटमण्डलं १५३
नव अनुपुब्बविहारे १९७
नव आघातप्पटिविनये १९७
नव नानत्तानि १९७
नव पारिसुद्धिपधानियङ्गानि १९७
नव योनिसोमनसिकारमूलके धम्मे १९७
नव सञ्ञा १९७
नव सत्तावासदेसना १९७
नवसिवथिकपब्बानी ८६
नवसिथिका ८६, १२२
नहानोदकं २८७
नहापितसिप्पं २५९
नळकारदेवपुत्तो १७६
नळकारसिप्पं २५९
नळकारा १७६
नागदीपे २२६
नागवीथि १८८
नागसेनत्थेरेन २२७
नागो ८, ९
नाटपुत्तस्स २३२
नाटपुत्तो २३३, २३४
नाटपूरिया ३००
नातितिखिणेन २१५
नाथकरणा ३९४
नाधिमुच्छती ३३१
नानाकिच्चा २०७
नानासभावा २०७
नाभिपि २२९
नाभिसज्जी २६४
नामग्गहणकिच्चं ३१३
नामरूपं ७७, ७८
नावा ८०, २२८
नाळकत्थेरो ४८
नाळन्दवासिको २३३
नाळन्दा १९५
निकामलाभी २२३

निक्कमधातु ९४, १०४
किक्कुण्डको १९०
निक्कोसज्जा २८९
निक्खितदण्डसत्थो ५१
निग्रोधो परिब्बाजको १५१
निग्रोधं परिब्बाजकं १६०
निच्चलगहणे २४७
निच्चसञ्ञं ७०
निच्चसमये २८९
निच्चसमयो २८६
निच्छन्दरागत्ता २१३
नितिण्णओघं १७
निद्दरथट्ठेन २०७
निद्देसवत्थूनी ३८६
निधानवति २१७
निपच्चकारं १८४
निमित्तकुसलता १०९
निमित्तग्गाहो ९४
निमित्तानुसारी ३८२
निम्मानरती ३४०
नियमितपच्चये १४७
निबद्धचारिकं ३०६
निबद्धवासं १८०, ३०२
निब्बानगमट्ठेन ६६
निब्बानथले १४८
निब्बानपत्तिया ४०५
निब्बानं १०, ४६, ४९, ५६, ६३, ६४, ११८, २०४, २६२, ३१३, ३१४
निब्बिदानुपस्सनं ३६१
निब्बेधभागिया ३८४
निब्बेधभागियो ३८४
निब्बेधभागियो २११, ४१०
निब्बेधिकपञ्ञा २६३
निब्बेधिकपरियाये ३२७
निय्यानमुखं ७७, ७८, ७९, ८१, ८३, ८९, ९७, ११२
निय्यानिकसासनं २३६
निय्यानिको २०६, २३७
निरज्जरवत्थुनि १९६
निरयगामिनिया ३२७
निरयपाला १२७
निरयो ३७१
निरामिसो ४११
निरुत्तिपटिसम्भिदा १९६
निरोधतण्हा ३२६
निरोधधम्मा ८९
निरोध निब्बानं २१४
निरोध सच्चं ७९, ८१, ८२, ८६
निरोधसञ्ञा ३८४
निवातवुत्ती २९१
निसज्जं २५७
निस्सरणपञ्ञो ३५६
नीवरणप्पहानं ७१
नीवरणपरिग्गहो १२२
नीवरणपरिग्गाहिका ९७
नीवरणानि ३७२
नेकतिका २७९
नेक्खम्मधातु ३२५
नेक्खम्मपाळिया ३६०
नेक्खम्मसञ्ञादयो ३२४
नेक्खम्मसितउपेक्खावेदना ८९
नेक्खमसितदोमनस्सं ३६
नेक्खम्मसितसोमनस्सवेदना ८९
नेक्खम्मसिता ४२
नेगमा १७०
नेता २९१
नेपक्कं २१९
नेमि ३०१
नेमि अभिमुखं १६७

नेमिसद्दो १३
नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्ति १९६
नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं १२१
नेवसेक्खानासेक्खा ३४१
नेवसेक्खो नासेक्खो ३३८
नो हीनायवत्तती १५९
न्हारूकायं ७०
न्हारुसम्बन्धं ८६

प

पकतञ्ञुता ९५
पक्कपारिवासिकभत्तं १०५
पगुणकम्मट्ठानं ७८
पग्गहकिच्चं १०२
पग्गहो ३२०
पच्चक्खतो २०३
पच्चत्तं वेदितब्बो १६
पच्चत्थिकतो २५१
पच्चत्थिकेना २५०
पच्चमित्तेना २५०
पच्चयिका १२६
पच्चुपट्ठित कामा ३४०
पच्चुप्पन्नो अद्धा ३३०
पच्चेकबुद्धा २०१, ३५०
पच्चेकबुद्धो १९८
पच्चेकबोधि १३
पच्चेकबोधिञाणं २०१
पच्चेकबोधिपटिलाभपच्चया २४९
पच्चेकबोधिसत्तानञ्च २०९
पच्छिमा दिसा २८५
पजसा २६७
पजानना २१६
पञ्च आसवा २७६
पञ्चकामगुणा १५८
पञ्चक्खन्धपरिग्गण्हनेन ९८
पञ्चङ्गिकं सम्मासमाधि १९६
पञ्चदस विमुत्तिपरिपाचनिये धम्मे १९७
पञ्च धुतङ्गानि ३५९
पञ्च निस्सरणिया धातुयो १९६
पञ्चनीवरणवसेन ९७
पञ्चनीवरणानि २०४
पञ्च पधानियङ्गानि १९६
पञ्च बलानि १९६
पञ्च बलानी २०७
पञ्चवण्णा २३०
पञ्च विमुत्तायानानि १९६
पञ्च विमुत्तिपरिपाचनिया पञ्ञा १९६
पञ्च वेरानि २८२
पञ्चसिखो ५, ११
पञ्चसीलं १०८, २५९
पञ्चातपं तप्पति १५६
पञ्चाभिञ्ञा २२४
पञ्चिन्द्रियानि १९६
पञ्चिन्द्रियानी २०७
पञ्ञा १९६, २१६, ३४३, ४१४
पञ्ञाचक्खु ३४३
पञ्ञाधनं ३८५
पञ्ञाधिट्ठानं ३६६
पञ्ञापारिपूरिं १६२
पञ्ञा पुब्बङ्गमं २१५
पञ्ञाय दुब्बलीकरणे २०४
पञ्ञाया ३६७
पञ्ञाविमुत्तस्स २१५
पञ्ञाविमुत्तो २१४
पञ्ञावुधं ३४२
पञ्ञिन्द्रियं २१५
पटिकूलमनसिकारपब्बं ८६
पटिकूलसञ्ञी २२१
पटिघनिमित्तं ९३
पटिघसंयोजनं ९९
पटिच्चसमुप्पादकुसलता ३१६

पटिञ्ञातकरणं ३९०
पटिनिस्सग्गो ११७
पटिपत्तिअन्तरधानं २२४
पटिपदाचतुक्कं ३६५
पटिपदानुत्तरियं ३४३
पटिपदासु १९७
पटिपुग्गलो २३१
पटिप्पस्सद्धलद्धो ४११
पटिभानपटिसम्भिदा १९६
पटिमानवा २९१
पटिलाभछन्दो २९
पटिलाभसन्तोसो ३५७
पटिवेधअन्तरधानं २२४
पटिसङ्खानबलं ३१९
पटिसङ्खानबहुलता ९३
पटिसन्थरणं ३१७
पटिसन्थारे अगारवो ३८०
पटिसन्धिग्गहणं २२४
पटिसम्भिदामग्गे ३६०
पटिसल्लानसारुप्पानी १५१
पटिसल्लाने ३८७
पटिसल्लीना ७
पटिसल्लीनो १५०
पटिसन्धिवसेन २०९
पटिहारकं २६८
पटिहारियं १४८
पट्ठानं २२५
पठमज्झानसमापत्ति २१२
पठमज्झानिको १२१
पठमज्झानं २११
पठममग्गवज्झा ३२९
पठममग्गो १२१
पठमं झानं १९६
पणियानी १२९
पणीतधातु ३२५
पणीतभोजनदानं २५६
पणीतभोजनं १०८
पणीतलाभिता २५६
पणीतो ४११
पण्डरो १८२
पण्डितदोवारिको २०४
पण्डितदोवारिकेहि २०३
पण्डितदोवारिकं २०४
पण्डितो २०३
पण्डुकम्बलसिलं ४
पण्डुपलासं २५२
पण्डुसीहो १४५
पण्णसालं १७६
पण्हिकोण्डा २५४
पतित्थिय्यना २६४
पतितमक्कटो २०२
पतितमुसला १९२
पतिरूपदेसवासो ४०९
पत्तक्खन्धो १६१
पत्तचीवरमादाय १९५
पत्तचीवरं ३९, २३४
पत्तब्भनुमोदनानि ३३९
पत्तिदान ३३९
पत्तिदानं २८५
पत्ति ३०४
पत्तं २४२
पत्थितपञ्हा ५३
पत्थिन्नतरो १२८
पथवी २२९
पथवीधातु ८३, ८४
पथवीधातू ३८१
पथवीरसो ३१२
पदालता १९०
पदीपतेल २५३
पदीपेय्यं २५३

पदुमपुप्फं ३३४
पदुमवनं ३०८
पदुमुत्तरं १७९
पधानियङ्गानि ३७३
पधाने १९७
पधानं २१२
पन्थघातं १७२
पन्थदुहनं १७२
पन्थिकं ३५१
पन्नरससन्तोसा ३५७, ३५९
पपटिकप्पत्ता १५८
पब्बज्जा अरोगा १२५
पब्बज्जाकालो १६८
पब्बतकीळं ५
पब्बतमत्थके २८३
पमादट्ठानं २७६
परकामिनी ११
परकुसिनाटा ३००
परक्कमधातु ९४, १०४
परत्तभावे १८४
परपुग्गलविमुत्तिञाणे १९७
परमत्थकथा ११४,२१३
परमत्थतो १११
परमत्थं २६२
परमत्थं निब्बानं २६१
परमवित्तूपकरणं ४८
परविसये १६६
पराजयगुळं १३०
पराजयो १४२
परिचरणभावं १४
परिच्छेदे ञाणं ३६३
परिञ्ञेय्यो ४०५
परित्ताणं करोन्तो ति २८७
परिदेवो ११५
परिनिब्बुतो १६१
परिनिब्बानिको ३९४
परिनिब्बायती १९३
परिनिब्बायि ८८
परिनिम्मितकामा ३४०
परिपुच्छकता ९६, १०२
परिब्बाजकानं १६३
परिब्बाजकारामे १५०
परिब्बाजकारामं १३४, १४४
परिब्बाजको १५०
परिपुण्णसङ्कप्पो १५४
परिभोगच्छन्दो २९
परिमाणसन्तोसो ३५८
परियतिअन्तरधानं २२४
परियत्ती २२४
परियायपथे २०४
परियेसनछन्दो २९
परियेसनसन्तोसो ३५७
परियेसनानानत्तं ४१५
परियेसितं २४२
परिवज्जेती ३४९
परिसावचरा १७१
परिसुद्धसीला १४, १५
परिळाहा ३७७
परिळाहो १९०
परोपण्णास कुसलधम्मे १९७
परं वम्भेती १५५
पलिबोधा ३३३
पवत्ति वेदनीयं १९३
पवरो बुद्धो २२९
पवाळवण्णा ३०७
पवुत्ततालपक्कं १०६
पवेसनकनिक्खमनके २०४
पलिस्सजा ९
पसादमत्तानुरक्खणे १४९
पसादसद्धा ३७४

पहातब्बो ४०५
पहानपधानं ३६२
पहानसञ्ञा ३७९
पहानारामो ३६०, ३६२
पळासी १५७, ३८१
पाकटजरा ११३, १७५
पाकारविवरं २०४
पाकारसन्धि २०४
पाकारो २०४
पाटलिपुत्तं २१७
पाटिहारियं १४२, १४५
पाणातिपातं १७४
पातिमोक्खसंवरसीलं २५९
पात्वाकासी २६४
पाथिकपुत्तो १४१, १४३, १४५
पाथिकपुत्तं १४३, १४४
पाथिकसुत्तं १३३
पादकं २१२
पादधोवनकाले ३८
पादपरिचारिका १२
पादपुञ्छनचोळकं १११
पादापच्चे १८२
पादापी १३१
पानट्ठाने २७९
पानसोण्डा २७९
पानानी २५६
पापज्झासयो १३७
पापमित्तता ३१५
पापिच्छा १५७
पापिच्छो ३८१
पाभतेन २३५
पामोज्जबहुलो २६१
पामोज्जं ३७८
पायमाना १८२
पायासिदेवपुत्तो १३२
पारमियो १३७
पाराजिकसदिसं १५७
पारिचरियानुत्तरियं ३८३
पारिच्छत्तको २४६
पारिच्छत्तकं ४
पारिवासिकभत्तं १०५
पारिसुद्धिपधानियङ्गं ४१४
पावळा १४५
पावानगरवासिनो ३०६
पावारिकम्बने १९५
पालिच्चं ११३
पासाणफलके १४४
पासाणफलकं २३
पासादिकसुत्तन्ते २२३
पासादिकसुत्तं २३२
पिट्ठिमक्खनं २५२
पिण्डगणनाय २२०
पिण्डपातखेत्तं ३५७
पिण्डपातसन्तोसो ३५७
पिण्डपातापचायनता १०४
पिण्डपातापचायनं १०५
पिण्डपातिकत्थेरं १३२
पिण्डपातिका ३८
पिण्डपातो १०५
पिपासा २७९
पियधम्मसवना ५७
पियसमुदाहारो ३९५
पीठसप्पि २५४
पीठसप्पिम्पि १९३
पीतमल्लत्थेरो ६१
पीति ३७८
पीतिपामोज्जं ६०
पीतिभक्खा १८६
पीतिसम्बोज्झङ्गो १०८,
पीतिसोमनस्सं २०० २०१

पुग्गलज्झासयो १२१
पुग्गलत्तिके ३३८
पुग्गलपञ्ञत्तिय १९७
पुग्गलसप्पायं ३२
पुग्गलसम्मुखता ३८८
पुग्गलो ७९, ८४, ८७, २०८, २१४, २१५, २५७
पुञ्ञकम्मं १९, २०, २१
पुञ्ञकिरियवत्थु ३३८
पुञ्ञविपाको १६७
पुञ्ञाभिसङ्खारो ३३६, ३३७
पुण्णवड्ढनकुमारस्स १७९
पुथुदिसा २७३
पुथुपञ्ञा २६१
पुप्फासवो २७६
पुब्बकारिताय २८५
पुब्बविदेहे १८९
पुब्बारामे १७९, १८०
पुब्बेनिवासञाणे १९७
पुब्बेनिवासादीनि १६०
पुब्बेनिवासं २१९
पुरत्थिमा दिसा २८५
पुराणउदकं ३०१
पुराणतण्डुला १०५
पुरिसधोरय्हेना २२२
पुरिससीलसमाचारे १९७
पुरिससेवितो ४११
पुरोहितं २१०
पुवसोण्डा २७९
पेतो २७
पेत्तिविसयगामिनिया ३२७
पेत्तिविसये १७४
पेसकारसिप्पं २५९
पेसुञ्ञकारकोपि २१
पेसुञ्ञकारकं २०
पोक्खरणिं खणति १८
पोक्खरसातका ३०१
पोट्ठको ३५१
पोट्ठपादसुत्तन्तस्मि २२३
पोट्ठपादसुत्ते १४९,१५१,२१३
पोणं पब्भारं ४१२
पोनोब्भविका ११५, ११६
पोराणकत्थेरा ५७, २५१
पोराणा ३५०
पोराणं १८२
पोसावनिकपुत्तत्ता १२४
पंसुकूलं ३५१

फ

फणहत्थका २५४
फलकचीरं ३५१
फलभारभरिता २८१
फलसमङ्गिस्सञ्ञाणं ३२१
फलसमापत्तिविहारेन १३
फलसमापत्ति ३४७
फलसमापत्ति १३, १९५
फलासवो २७६
फलं ४४
फस्सपञ्चमका ३२
फस्सवसेन ३१
फस्सो ३१०
फारुसकवनं ४
फासुविहाराया २९६
फीतं २५०
फुल्लसालं १०
फोट्ठब्बायतनं २४२
फोट्ठब्बारम्मणं २४३
फोट्ठब्बं २९

ब

बकसकुणिका २४
बन्धू १८२

बलकायो १६९
बलवकोपो १७३
बलवतण्हाय १५५
बलवपञ्ञो १०३
बलववीरियं १०३
बलवसद्धो १०३
बलवसमाधि १०३
बलानी ३६६
बलिकम्मं १३०
बहिवङ्कपादा २५४
बहुजन पुब्बङ्गमो २६८
बहुस्सुतता ९६
बाकुलत्थेरो ४८
बाराणसीराजा ३३५
बाहित पापट्ठेन ब्राह्मणं २६०
बाहियसुत्तन्त परियायेन २०७
बाहिरानी ३७९
बाळ्हगिलानी १२६
बिलङ्गदुतियं १३१
बीजमानो २०५
बीरणत्थम्बके १३८, १३९, १४०
बुद्धगुणा २०६
बुद्धगुणे १९८
बुद्धगुणेसु २०६
बुद्धन्तरम्पि १०४
बुद्धपसत्थेन ११९
बुद्धपुत्तो ७७
बुद्धबलं १६२
बुद्धरतनस्स २३५
बुद्धरूपं १८४
बुद्धविनेय्या ४०४
बुद्धसासने १०६, १८०
बुद्धसेविता ९५
बुद्धा ३५०
बुद्धानुस्सति १०८
बुद्धुप्पादो ५
बुद्धो १४२, २४०
बेलुवपण्डुवीणं ७
बेलुवपण्डु ६
बोज्झङ्गकथा ३८५
बोज्झङ्गपरिग्गाहो १२२
बोज्झङ्गमिस्सका २०४
बोज्झङ्गवसेन १९०
बोज्झङ्गे २०४
बोधिजं २४२
बोधिपक्खियानं १९३
बोधिपलङ्के १०, २२४, २२६
बोधिमूले जातं २४२
बोधिसत्तकाले ३३२
बोधिसत्ता २२२
बोधिसत्तो १९१, २२४, २४८, २५४, २६५
ब्यग्घो ६०, ६१
ब्यत्तो २०३
ब्यन्तीभूतं ४१२
ब्यसनेना ११४
ब्याधिधम्मो ४५
ब्यापादधातु ३२४
ब्यापादवितक्को ३२३
ब्यापादो ७१, ९३, १७३, २६४, ३९७
ब्यामप्पमाणं १९८
ब्रह्मआयु ५२
ब्रह्मकायो १८६
ब्रह्मकुत्तं १४८
ब्रह्मचारियेसना ३२८
ब्रह्मचरियं १६
ब्रह्मचारिनियो २३८
ब्रह्मचारिनो २३८
ब्रह्मचारी ४९
ब्रह्मजा १८२

ब्रह्मजाले २१२, २१८, २२०, २७८
ब्रह्मदायदा १८२
ब्रह्मनिमिता १८२
ब्रह्मपुरोहितं १५, १७
ब्रह्मभूतो १८६
ब्रह्मलोका २२६
ब्रह्मलोके १५
ब्रह्मविहारा १७८
ब्रह्मविहारादीनि १६०
ब्रह्मस्सरत्तं २७०
ब्रह्मस्सरलक्खणं २७०
ब्रह्माबिहारो ३४७
ब्राह्मणकुलीना १८१
ब्राह्मणकुले १९३
ब्राह्मणगामो ३
ब्राह्मणजञ्चा १८१
ब्राह्मण समयो १८१
ब्राह्मणवंसो ३४९
ब्राह्मणा ४००
ब्राह्मणो ६८, २०८
ब्राह्मणं २६०

भ

भत्तकिच्चं १६४
भत्तपरिळाहो ९४
भत्तपुटं २३२
भत्तमुच्छा ९४
भत्तवेतनानुप्पदानेना २८९
भत्तसम्मदो ९४
भत्तानुमोदनं १६४
भद्दजिसेट्ठि १७६
भद्दालता १९०
भद्दियत्थेरो ४८
भद्दिय नगरे १७९
भत्तकिच्चकाले २८७
भत्तसोण्डा २७९
भत्तं १०५
भमकारो ७७
भवगामिकम्मे २६२
भवग्गगहणत्थं ११९
भवतण्हा ११६, ३१४, ३२५
भवदिट्ठी ३१४
भवयोगविसञ्ञोगो ३६७
भवरागसंयोजनं ९९
भवसंयोजनं १८४
भवसेना ३२८
भवाभवो ३६५
भवासवो ६८७
भरत्तं २००
भस्ससमाचारे १९७, २१७
भाजनभावतो ६८
भाजनमन्वया १९७
भारतयुद्धसीताहरणसदिसं २४२
भावनापधानं ३६२
भावना पारिपूरि १०७, १०८, ११२
भावनाबलं ७२, ३१९
भावनामया पञ्ञा ३४२
भावनामये ३३९
भावनारतो ३६०, ३६२
भावनारामो ३६०, ३६२
भावेतब्बो ४०५
भिक्खु ६८
भिसिसङ्कमो ५६
भूता ४०७
भूतारोचनं ३३१
भेदकरवाचं २१७
भेरण्डकं १८६
भेसज्जमुट्ठितो १०३
भोगसम्पदायपि ३७३
भोगिया २५३
भोजनसप्पायं ३२

भोजनीयानी २५५
भोजने अमत्तञ्ञुता ३१९
भोजनें मत्तञ्ञू २१८

म

मक्खनतेलं २५२
मक्खिभावे १३५
मक्खी ३८१
मक्खी होति १५७
मग्गफलनिब्बानसम्पत्ति १६७
मग्गफलं ४०
मग्गवसेनेव २०८
मग्गसच्चं ७९,८१,८२,८६,११८
मग्गसमङ्गिस्सञाणं ३२१
मग्गामग्गञाणदस्सविसुद्धी ४१४
मग्गो ४४, ५८, ६६
मघदेवंसस्स १७१
मघमाणवकालतो १८, २७
मघमाणवो २३
मङ्कुभूतो १६१
मङ्गलअस्सं १९३
मङ्गलउसभं १९३
मचलगामके २७
मच्चुमरणं ११४
मच्चुमारो १६५
मच्छरियसंयोजनं ९९
मच्छरियं २९, ३७२
मच्छरी १५७
मज्झिमधातु ३२५
मज्झिमपदेसे २०३
मज्झिमयामो १८९
मञ्चपीठं २५३
मणिमयं २९८
मतसरीरं ८४, १४०
मत्तकरवीक ११६
मत्तप्पटिग्गहणसन्तोसो ३५८
मत्तिकालेपं १२८
मत्तेय्यताया २४९
मधुमंसासी १४५
मधुररसे २८९
मधुररसं १८९
मध्वासवो २७६
मनसिकार कुसलता ३१६
मनुञ्ञादस्सनं २९८
मनुस्सत्तं ५५
मनुस्सलोकगामिनिया ३२७
मनुस्सभूतो समानो २४७
मनुस्सराहस्सेय्यकानी १५१
मनोकम्मं २९०, ३३८
मनोगणनाय २२०
मनोदुच्चरितं ३२३, ३३२
मनोपदोसिका देवा ३३३
मनोपदोसो १७३
मनोमोनेय्यं ३४५
मनोविञ्ञेय्यो ४९
मनोसङ्खारा २११
मनोसञ्चेतना ३१०
मनोसम्फस्सो ३७९
मन्तस्साजीविनो १७१
मन्दनिग्घोसानि १५१
मन्दलोचना ९
मन्दवीरियं १०३
मन्दसद्दानि १५१
मन्दसमाधि १०३
ममत्तविरहिता २९८
मरणधम्मो ४५
मरणवधभयत्तनो २५५
मरणवधभयं २५५
मरणवधेना २६७
मरण वधो २५५
मरणसञ्ञा ४१५

महाअजगरो	२८	महासमुद्दं	२४८
महाकस्सपत्थेरस्स सङ्गीति	२२३	महासिवत्थेरो	४०
महाकस्सपत्थेरो	४८	महासीवत्थेरो	१२२, २१६, ३५५
महाकस्सपं	२७३	महासुदस्सने	१७०
महाखीणासवो	१०६	महेसक्खो	६
महागङ्गाय	१७६	महेसिनो	४१८
महागोविन्दसुत्ते	५१	महोदरा	२९८
महाचेतियं	२२६	मातापितरो	२८५
महाजनङ्गाहकं	२६६	मातुलनगरवासिनो	१६४
महाथेरा	१९८	मातुलरुक्खं	१६५
महादानं	१६४	मातुलानी	१७३
महानेरू	२९८	मानथद्धतं	१३४
महापञ्ञा	२६१	मानद्धजं	१५३
महापञ्ञो	२३५,२६१	मानपपञ्चो	३०
महापथवितो	१९९	मानवसेन	१४८
महापथवी	२५०	मानसंयोजनं	९९
महापदाने	२०२, २४६	मानो	३२८
महापनादो	१७६	मायावी	१५७
महापवारणा	३९	मारसेनप्पमद्दनं	६६
महापुरिसलक्खणानी	२४६	मारो	१६२,१६५,१६६,२३०
महाबन्धना	१४८	मालं	२५२
महाबोधिपल्लङ्के	२२६	मिगरञ्ञो	१४५
महाब्रह्मा	२३०	मिगराजा	१४६
महामङ्गलकथा	३०४	मिगारमाता	१७९
महामायादेविया	१०७	मिगारमातुपासादे	१७९
महामोग्गल्लानत्थेरो	४८	मिगारसेट्ठिपुत्तस्स	१७९
महामोग्गलानं	२७२	मिग्गसञ्ञं	१७४
महारवं	१९	मिच्छत्तनियतो	३३१
महाविदुग्गा	१४८	मिच्छत्ता	३९१
महाविहारवासीनं	४१८	मिच्छाआजीवं	११९
महासक्कारे	२३८	मिच्छादिट्ठि	३९७
महासतिपट्ठानसुत्तं	५४	मिच्छादिट्ठिकम्मस्स	१९३
महासतिपट्ठाने	३४, २१६	मिच्छादिट्ठिवसेन	१९३
महासत्तो	२२४, २४८	मिच्छादिट्ठी	३८१
महासमुद्दो	१९८, २००	मिच्छाधम्मो	१७२

मित्तकरो. २९१
मित्तपत्तिरूपका २८१
मित्तविन्दको ३३३
मित्तामच्चा २७८, २८५
मिलिन्दरञ्ञापि २२७
मिस्सकवनं ४
मुखच्छेदकवादं १८३
मुखधोवनकाले ३८
मुखोदकदन्तकट्ठं २८७
मुट्ठस्सच्चं ३१९
मुट्ठस्सतिपुग्गले १०१
मुण्डसमणकस्स १८१
मुत्तपरिसङ्कितेन ३४०
मुतं २४२, २४३
मुत्ततालपक्कं १४२
मुत्ता २१०
मुत्वा पत्वा २४२
मुदुपुप्फाभिकिण्णा २५०
मुदुमंसानी १४५
मुद्दा २५९
मुधप्पसन्नो १०३
मुसलेन १८
मुसावादेन १३९, १४९
मुसावादं १८५
मूलकसोण्डा २७९
मूलधच्चं १७२
मूलतो ३९९
मूसिकाभयत्थेरो ३६६
मेण्डकसेट्ठिपुत्तस्स १७९
मेत्तचित्तं १७४
मेत्तसुत्तं ३०३
मेत्ता ९३
मेत्ताचेतो विमुत्ति ३८२
मेत्ताफरणेन हितं २९६
मेत्ताभावनानुयोगो ९३
मेथुनधम्मं १९२
मेधङ्करो ३५०
मेधावी २९१, २०४
मोग्गलिपुत्ततिस्सत्थेरस्स सङ्गीती २२३
मोघञ्ञं २४४, २४५
मोनेय्यप्पटिपदा ३४५
मोरगीववण्णा ३०७
मोरनिवापो १५३
मोहक्खयो ११७
मोहागतिं २७५
मोहो ३२२
मंसखण्डं १४६
मंसचक्खु ३४३
मंसचक्खुना ३०९
मंसभोजन १५५
मंसलोहिताचित्ता २५९
मंससञ्ञा ८३

य

यक्खदोवारिका ३००
यक्खपरिचारको ३०२
यक्खपिसाचादीनं २११
यक्खराजआणं ३०५
यक्खा २९५, २९९
यक्खो २७
यथाबलसन्तोसो ३५०
यथालाभसन्तोसादयो ३५८
यथालाभसन्तोसो ३५०
यथासारुप्पसन्तोसो ३५०
यन्तं ८१
यमकमहानदीमहोघो २००
यसग्गापत्तो १४०
यसत्थेरस्स सङ्गीति २२३
यागुभत्तं १९२, २५२
यानं २५२
युत्तपटिभानो २१८

यूपो १७५
योगक्खेमकायो २६६
योगक्खेमो ४९
योगविसञ्ञोगो ३६८
योगा ३६७
योगानुभावो ७२
योगावचरो ८२
योनिजाव समाना १८२
योनियो ३६८
योनिसोमनसिकारो ९३, १०१, ३६४
योब्बनमदो ३४६

र

रक्खावरणगुत्ति १६९
रजतमया तन्तियो ६
रजतमयं २९८
रजतविमाने १३२
रजनदोणिकं २५२
रजनसन्तोसो ३५४
रजनीया १६६
रजनं २५२
रट्ठपालत्थेरो ४८
रतनपूरिता २२८
रतनमण्डपो ३०१
रतनसुत्तं ३०३
रत्तकम्बलपटलं ११६
रत्तकम्बलो ६४
रथस्साणीवा २९१
रन्धगवेसिनो २६३
रमसा ३०२
रवा ३३३
रसगिद्धा १८१
रसपथविं १८६
रससम्पन्ना १८६
रससम्पन्नानं २५५
रसायतन २४२
रसारम्मणं २४३
रसं २९
राजआणं २९३
रागक्खयो ११७
रागग्गी ३३३
राजकथादितिरच्छानकथं २४२
राजगहा १५०
राजगहे १२५, १५१
राजगहं १६३, २७२
राजञ्ञादानं १३१
राजञ्ञो १२५
राजतो २५१
राजधम्मं १७१
राजपवेणि १७१
राजवंसो ३४९
राजवंसं १७१
राजसिम्हि १६८
राजानो २५३
राजापराधिका १९
राजयतनचेतियं २२६
राजिसयो १६८
रामणेय्यकं १२८
राहुलत्थेरो ४८
राहुलभद्दस्स १०७
रुक्खदुस्सं ३५१
रुक्खमूलं ७५
रुपकम्मट्ठानं ३१, ३३, ८८
रुपतण्हा ३२६
रूपपरिग्गहो ३१
रूपसञ्ञा ३७९
रूपादिगोचरतो १५०
रूपायतनं २४२
रूपारम्मणं ३६४
रूपियप्पटिग्गहणापत्ति ३३१
रूपं २९, ९७

रोगब्यसनं ३७३
रोगो १०३

ल

लक्खणद्वयं २५८
लक्खणानिसंसो २५१
लक्खणसुत्तं २४६
लक्खणं २५१,२५३
लज्जीभावो ३१७
लज्जवं ३१७
लञ्जं २८६
लतादुस्सं ३५१
लपनजं २७१
लाजा २५२
लापो सकुणो १६६
लापं सकुणं १६७
लाभग्गप्पत्तो १४०
लाभननत्तं ४१५
लाभमच्छरियेन २८
लाभसक्कारसिलोकं १५५
लाभसक्कारो २८७, ३२७
लामकजातिको १०७
लामकं २२२
लाळुदायो २३०
लिखनकाले ७७
लीनाकारो ९४
लुज्जनपलुज्जनट्ठेन ७१
लुद्धाचारकम्मखुद्दाचारकम्मुना १९२
लूखाजीवि १५६
लेखा २५९
लेखाचक्कसदिसो ४०८
लेपे २०२
लेहनीयानी २५६
लोकधम्मा ३९३
लोकन्तरवासी २०६
लोकपञ्ञत्ति १३५
लोकविनासो १७४
लोकवोहारवसेन २१३
लोकसमुदाचारवसेन १३४
लोकाधिपतेय्यं ३४६
लोकियधम्मेन २६७
लोकियलोकुत्तरपञ्ञा ३४३
लोकियलोकुत्तरा ३७१
लोकियो ३७१
लोकुत्तरधम्मा १००, २२२
लोकुत्तरमग्गो ६७
लोकुत्तरो १२१
लोकुत्तरं ९०
लोकुप्पत्तिवंसकथं १८९
लोकुप्पत्तिसमये १९१
लोको ७३
लोणधूपनं १०३
लोभो ३२२
लोमहंसनकरं २५१
लोमहंसो १४४
लोलजातिको १८६
लोलुप्पविवज्जनसन्तोसो ३५८
लोहगेहे २८
लोहितचन्दनं ३३४

व

वग्गुलिवत्तं १५६
वङ्कक्खि २६८
वङ्कादिदोसविरहितं २०६
वङ्कीसत्थेरो २१८
वचनपटिकारा २५८
वचीकम्मं २९०, ३३८
वचीदुच्चरितं ३२३, ३३२
वचीपरमो २८०
वचीमोनेय्यं ३४५
वचीसमाचारो ४६, ५०
वच्छायनो २०१

वजिरनाळियो १७९
वज्जनीधम्मवज्जनत्थं २८४
वज्जिगामे १३६
वज्झभेरिया १७२
वञ्चनिका २७९
वट्टगामी १६७
वट्टमूलकं ११०
वड्ढकी २२
पणमुखेहि ८५
वण्णकसिणं १४९
वण्णमच्छरियेन २८
वण्णमच्छरियं ३७१
वण्णवादी ३५५
वण्णसम्पन्ना १८६
वत्थुकामा ४१२
वत्थुकामे २४१
वत्थुविज्जाचरियो ७६
वत्थुविसदकिरियता १०९
वत्थुविसदकिरिया १०२
वत्थुं १०५
वत्थं १०५
वधकचित्तं १७३
वनकुक्कुटका ३०१
वमितकभोजनं ९४
वयधम्मानुपस्सी ७८, ७९
वलाहका ३०१
वलित्तचता ११३
वल्लि १३९
वाकचीर ३५१
वातपूरिता २५०
वातातपहतानी १३०
वादनसज्जं ७
वामना २५४
वामूरू ९
वायमती ३४७
वायो ८०
वायोकसिणं ३११
वायोकायं ७०
वायुधातु ८०, ३८१
वायुधातू ८४
वासिफरसुं २१
वासेट्ठ १९४
वासेट्ठभारद्वाजा १८०, १९४
वाहनं २९९
वाळकम्बलं ३५१
विकालविसिखाचरियानुयोगो २७६
विक्खित्तं ९०
विगतदरथकिलमथो २७१
विघाता ३७७
विघाससंवड्ढो १४५
विचिकिच्छछिन्नं १७
विचिकिच्छती ३३१
विचिकिच्छा ९८, ३२६
विचिकिच्छाव ९६
विचिकिच्छासंयोजनं ९९
विजनवातानी १५१
विजम्भनकाले १४६
विजम्भिता ९४
विजायमाना १८२
विज्जा ३२२, ३४६, ४०८
विञ्ञत्तिं ८०
विञ्ञाणकसिणं ३९६
विञ्ञाणकाया ३७९
विञ्ञाणधातू ३८१
विञ्ञाणसोतं २१२
विञ्ञाणं ३२, ८५, ३१०
विञ्ञातारं २३९
विञ्ञातं २४२, २४३
वितक्कविप्फारसद्दं २११
वितक्कसन्तोसा ३५७

वितक्केस्सती २११
वितिण्णकङ्खो ७७
विदितकरणट्ठेना ३४६
विदितट्ठाने २०२
विनयधरे ९६
विनयपिटके २२५
विनयपिटकं २२३, ३६०
विनयसम्मुखता ३८८
विनये पकतञ्ञुता ९६
विनासमुखानि २७४
विनीलकं ८५
विनीवरणं १५०
विपरिणामदुक्खता ३३०
विपरिणामदुक्खा ७४
विपरीतसञ्ञो १४९
विपस्सना २०४, ३२०
विपस्सना अनिमित्ता ३४४
विपस्सना अप्पणिहिता ३४४
विपस्सनाञाणं १९६, ३२१
विपस्सनापञ्ञा २१९
विपस्सनापादकज्झानं २२३
विपस्सनं ३५, ४०, ४१, ७७, १०६
विपाकं १४०
विपापो २७१
विपुब्बकं ८५
विपुलत्ता २४९
विप्पलपन्तस्सा १२६
विभवतण्हा ११६, ३२५, ३२६
विभवदिट्ठी ३१४
विमुत्तानुत्तरियं ३४३
विमुत्ति १९६, ३२२, ४१४
विमुत्तिञाणदस्सनं १९६
विमुत्ति परिपाचनीया ३७८
विमुत्ती ४०८
विमुत्तं ९०
विरज १७
विरत्तरूपा २३७
विरागसञ्ञा ३७९
विरागो ३६२
विरुद्धवचनं २३२
विलेपनं २५३
विवटेन चेतसा ३४८
विवट्टगामी १६७
विवादाधिकरणं ३८७
विवाहका २७९
विवेकनिन्नं ४१२
विवेकनिस्सितं ३६२
विवेको ३६२
विसञ्ञोगा ३६७
विसतोदको २९७
विसमलोभो १७२
विसयखेत्तं २२३
विसदी २६८
विसाखा १७९, १८०
विसिट्ठो बुद्धो २२९
विसुद्धिपवारणं ३७, ३९, ४०, ४१
विसुद्धिमग्गतो ३५५
विसुद्धिमग्गे ९७,१५९,२०९,२१६,३१४,३४३,३४९,३६९,४१०
विसुद्धिमग्गो ६६
विसेसत्थपरिदीपना २५३
विसेसभागियो २११, ४१०
विस्सकम्मदेवपुत्तं १७६
विस्सज्जनछन्दो २९
विस्सज्जनसन्तोसो ३५५, ३५७, ३५८
विस्समनसालं २१
विहिंसाधातु ३२४
विहिंसावितक्को ३२३
विहिंसासञ्ञा ३२४
वीणा ६

वीतदोसो ७
वीतदोसं ९०
वीतमोहो ७
वीतमोहं ९०
वीतरागा १७
वीतरागो ७
वीतरागं ९०
वीतसारदा २९६
वीरियछन्दा १२०
वीरियसम्बोज्झङ्गो १०४
वीरियारम्भे ३८७
वीरियं आरभती ३४७
वुसितवा १८४
वेजयन्तो २४
वेजयन्तं ४
वेठनं २७८
वेणुखण्डं ७५
वेदनातो ३९८, ३९९
वेदनानानत्तं ४१४
वेदनानुपस्सना सतिपट्ठानं २०७
वेदनानुपस्सी ६९, ८९
वेदनानुपस्सनं ८७
वेदबहुलो २६१
वेदनावसेन ३१
वेदनासीवसेन ३३
वेदियकपब्बतो ३
वेधञ्ञा २३२
वेपचित्ति २७
वेपुल्लत्तञ्च १६२
वेय्यञ्जनिका २५१
वेय्याकरणं २३१
वेय्यावच्चकरभावं २६८
वेरप्पसवो २७९
वेलासिका १२८
वेसालीनगरे १३६
वेस्सवणे २९५, २९६, ३००, ३०२
वेस्सवंसो ३४९
वेस्सामित्तपब्बतवासी ३०४
वेस्सामित्तो ३०४
वेळुदुस्सं ३५१
वेळुवनं ३७२
वोधियङ्गेन २५३
वोस्सग्गपरिणामि ३६३
वोस्सज्जनेन २८९
वोहारमत्तं ११३

स

सउत्तरं ९०
सउपधिका २२०
सकटा २२८
सकटं ८०, २२९
सकदागामिमग्गेन ९९
सकदागा मिमग्गं ५१
सकदागामी ४३, ५१, ६१, १९८, २११
सकलचक्कवाळगब्भे १९८
सकलजम्बुदीपे १२६
सक्कपञ्हसुत्तं ३
सक्कमारब्रह्मसिरियो १३
सक्का २५४
सक्कायदिट्ठि ३२६
सक्कायनिरोधो ३३०
सक्कायनिस्सरणं ३७८
सक्कायसमुदयो ३३०
सक्कायो ३३०
सक्को ४, २४, २५, ५२, २३०
सक्खरा २५०
सखिलं २७०
सगुणतो ३४४
सग्गसंवत्तनिका १७१
सग्गस्स मग्गं २८३
सङ्कप्पनानत्तं ४१५

सङ्खता धातू ४०८
सङ्घधम्मो १२९
सङ्खारकेलायनो ११२
सङ्खारदुक्खता ३३०
सङ्खारमज्झत्तता १११
सङ्खारा ३३६
सङ्गहवत्थूनी ३६९
सङ्गहितपरिजना २२८
सङ्गीतिकारेहि २३१
सङ्गीतिसुत्तं ३०६
सच्चपरिग्गहो १२२
सच्चानुलोमिकञ्ञाणं ३२१
सच्छिकरणीया ३६७
सच्छिकातब्बो ४०५, ४०७
सजा ९
सज्झायकरणं २८७
सञ्चरितं ३३१
सञ्जातिसङ्गहो ३३६
सञ्ञातपुप्फा १८२
सञ्ञानानत्तं ४१५
सञ्ञापेतब्बो २३९
सठो १५७
सण्हेना ३७३
सततविहारा ३८३, ३८४
सतधोतसप्पि ३३
सतपाळतेलं ३३
सतपुञ्ञलक्खणं २५४
सतिनेपक्के ३८७
सतिपट्ठानभावना ७९
सतिपट्ठाना ६५, २०४
सतिपट्ठानं २३९
सतिबलं ३२०
सत्तिमा २१८
सतिसम्पजञ्ञाया ३४८
सतिसम्बोज्झङ्गं १००
सत्त अपरिहानिये धम्मे १९६
सत्त अरियधनानि १९६
सत्त अरियपञ्ञा ३४१
सत्त खीणासवबलानि १९६
सत्त चुस्सदे २५६
सत्त दक्खिणेय्यपुग्गले १९६
सत्त पञ्ञा १९६
सत्तबोज्झङ्गा १२२, २०८, २१६, ३१९
सत्तबोज्झङ्गे १९६
सत्तमज्झत्तता १११
सत्तसङ्खारमज्झत्तपुग्गलसेवनता १११
सत्तसत्ति ञाणवत्थूनि १९७
सत्तसप्पुरिसधम्मे १९६
सत्तावासा ३९३
सत्ता संसरन्ती २१९
सत्तो ७९, ८०, ८१, ८४, ८७
सत्थरि अगारवो ३८०
सत्थु दायज्जं १०६
सत्थुमहत्तपच्चवेक्खणता १०४
सदण्डावचरको ५१
सदोसो ७
सद्दायतनं २४२
सद्दं २९
सद्धम्मस्सवनं ३६४
सद्धा कुलपुत्ता २२२
सद्धाधनं २६६, ३८५
सद्धानुसारिम्हिपि २१५
सद्धानुसारी २१६
सद्धापुब्बङ्गमं २१५
सद्धाविमुत्तो २१५
सद्धासम्पन्नो २१८
सद्धिन्द्रियं १०२
सद्धिविहारिकं २३५
सद्धो ३७४
सनिदस्सनं ३३६

सन्तुट्ठो होति ३५०
सन्दिट्ठिका २७६
सन्दिट्ठिपरामासी १५७
सन्दीट्ठिपरामासी ३८१
सन्धागारं ३०६
सन्धानो १५०
सन्निधिच्छन्दो २९
सन्निधिपरिवज्जनसन्तोसो ३५५, ३५८
सपजापतिका १६
सपरिळाहट्ठेन ४१२
सप्पटिघं ३३६
सप्पटिभागं २०५
सप्पायकथा ९२, ९४, ९५
सप्पाटिहीरकतं २३७
सप्पिनवनीतादीनि २५५
सप्पिफाणितयोजितस्स १०६
सप्पुरिसधम्मा ३८५
सप्पुरिससंसेवो ३६४
सप्पुरिसूपनिस्सयो ४०९
सब्बकम्मिक अमच्चो १०३
सब्बगन्थप्पमोचन ४०५
सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्चेव २०१
सब्बञ्ञुतञ्ञाणपटिलाभपच्चया २४९
सब्बञ्ञुतञ्ञाणे २०१, २०३
सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन २४०
सब्बञ्ञुतञ्ञाणं १०, २४४
सब्बञ्ञुपवारणं १५३
सब्बञ्ञुबोधिसत्तानं २१०
सब्बत्थककम्मट्ठान ७२
सब्बपरियत्तिको ५८
सब्बलोकेअनभिरतिसञ्ञा ४१५
सब्बावन्तेहि पादतलेही २४९
सब्बे सत्ता ३१०
सब्रह्मचारिमहत्तपच्चवेक्खणता १०४
सब्रह्मचारिमहत्तं १०७
सभरियो १४१
सभावपकति २३०
सभियपुच्छा २२५
समकारी २१८
समचारी २१८
समज्जागमनं २७६
समज्जाभिचरणं २७६
समणङ्गानी २६०
समणधम्मं ६०, १०५, १२४, २४०
समणपदुमो ३७०
समणपुण्डरीको ३७०
समणब्राह्मणा १७०, २८५
समणमचलो ३७०
समणमण्डलं १९२, १९३
समणवंसो ३४९
समणसुखुमालो ३७०
समणा ४००
समणानुच्छविकानी २६०
समणारहानी २६०
समणूपभोगानी २६०
समणो ६८, २०८
समणो गोतमो १५२
समणो पन गोतमो २३४
समणं २६०
समथनिमित्तं १०९
समथविपस्सना २०८
समथविपस्सनामग्गवसेन २०७
समथो ३२०
समथो च विपस्सना ४०८
समसमं २४५
समसीसी ८८
समादिन्नकम्महेतु १९३
समाधि १९६
समाधिनिमित्तं ३६३, ३७८
समाधिपरिक्खारा ३८५

समाधिबलं ३२०
समाधिभावना ३४९
समापत्तिकुसलता ३१५
समहितपुग्गलसेवना ११०
समाहितं ९०
समितपापट्ठेन समणं २६०
समुग्गततारक ३०८
समुदयधम्मानुपस्स ७८, ७९, ९०
समुदयसच्चं ७९, ८१, ८२, ८६
समुद्दपरियन्तं १६८
समोहो ७
समोहं ९०
समंसलोहितं ८५, ८६
सम्पजानो ३८३, ३८४
सम्पसादनीयसुत्तं १९५
सम्पसादनीये २२३
सम्पसीदती ३३१
सम्बोज्झङ्गा २०४
सम्बोज्झङ्गे ६५
सम्बोधगामी ३९४
सम्बोधि १००, २०१
सम्बोधिमुत्तमं १०
सम्मत्तनियतो ३३१
सम्मत्ता ३९१
सम्मदञ्ञा विमुत्तो १८४
सम्माआजीवेना ११९
सम्माआजीवो १२०
सम्माकम्मन्तो ११९
सम्मादिट्ठि २१६
सम्माननाय २८८
सम्मापटिपत्ति १९३
सम्मावाचा ११९
सम्माविमुत्ति ४०१
सम्मासङ्कप्पो ११९
सम्मासति १२०, ३६६
सम्मासमाधि ३६६
सम्मासमाधी १२१
सम्मासम्बुद्धा २२९
सम्मासम्बुद्धो ४, ५५
सम्मासम्बोधियं १३
सम्मासम्बोधिं २०४
सम्मुखता ३२८
सम्मुखाविनयो ३८८
सम्मुतिकथा २१३
सम्मुतिञाणं ३६३
समुतिथेरो ३३८
सयनं २५७
सरणङ्करो ३५०
सरागो ७
सरागं ९०
सरितोदको २९७
सळागारके १२
सल्लापत्थिको १५२
सल्लेखता २३१
सविचारं ३५
सवितक्कसविचारो ३४४
सवितक्कसविचारं ४२
सवितक्कं ३५
सविपाकं २०५
ससङ्खारपरिनिब्बायी ३७५
सस्सतवादेसु १९७
सस्ततवादो २२०
सस्सं २८१
सहधम्मिको २३०
सळलघरे ५
साकपण्णं १०५
सागरपरियन्तं २५०
सागरसीमं २५०
साटकं २७८, २८१
साठेय्येन १४९

साणभारं १३०
साधुकमनुरक्खा १४९
सानुचारिको १४१
सामगामो २३४
सामञ्ञफले १५९, ३५१
सामीचिकम्मं १८४
सायनीयानी २५५
सारथि ८०
सारप्पत्ता १५८
सारम्भजा २१७
साखल्यं ३१८
सारिपुत्त २०२, ३३१, ३३२
सारिपुत्तत्थेरो २३४, ३१३
सारिपुत्तमोग्गल्लाने ४०४
सारिपुत्ता २०१
सारिपुत्तो २०४, २३५, ३०६
साललट्ठिं ११६
सालिभागं १९१
सालियवबीजादीनि २८१
सावकपारमीञाणे २०३
सावकपारमीञाणं १९६, २०१, २०५
सावकपारमीपटिलाभपच्चया २४९
सावज्जानवज्जा ९६
सासवा २२०
साहसिका २७९
सिक्खानुत्तरियं ३८३
सिगालं १४६
सिङ्गालको २७२, २९२
सिङ्गालकं १४६, २८६
सिङ्गालसुत्तन्तं २७४
सिङ्गालसुत्तं २७२
सिनेरु गिरिराज २३०
सिनेरुभिमुखा १८९
सिनेरुसमीपेन १८८
सिप्पुग्गहणकाले २८७
सिब्बनसन्तोसो २५४
सिरीसरुक्खो १३२
सिलापथवियं १८५
सिवं २५०
सीलकथा ४४
सीलक्खन्धो ३३६
सीलदिट्ठिसम्पदासु ३७३
सीलब्बतपरामास ९८, ३२६
सीलब्बतुपादानं ३६८
सीलमये ३३९
सीलरक्खकानं २६
सीलवा २५७
सीलविपत्ती ३२०
सीलविसुद्धि ३२०
सीलसमादाने २४९
सीलालयो २५१
सीलं २५, २६, ६०, २०४, ३४३
सीहनादो २०१
सीहनादं १४५, १६३, २०२, २४४
सीहहनुलक्खणं २७०
सुकतकम्मकरा २८९
सुकसाळिकसद्दं तथा ३०२
सुक्कविपाका १८३
सुक्कविपाकं ३६७
सुक्का १८३
सुक्को १८२
सुक्कं ३६७
सुक्कं धम्मं ३८४
सुक्खकललपटलं १९०
सुक्खविस्सको २१४
सुखदुक्खादिधम्मायतनं २४२
सुखल्लिकानुयोगं २४०
सुखविपाकट्ठेना २०७
सुखविपाका १७१

सुखसञ्ञं ७०, ३६१
सुखसेवनाधिमुत्तं २४०
सुखूपपत्तियो ३४१
सुखं वेदनं ८७, ८८
सुगतमहाचीवरं १६५
सुगतापदानेस्सू १४६
सुचिपरिवारो २७१
सुजाता २१
सुजाताय ४०
सुञ्ञातो ३४४
सुञ्ञावने १४७
सुञ्ञागारं ७५
सुतमया पञ्ञा ३४२
सुतावुधं ३४२
सुत्तन्तपरियायं २०७
सुत्तन्तपिटके २२५
सुत्तन्तपिटकं २२३
सुत्तसन्तोसो ३५४
सुत्तं २४२, २४३
सुद्दा १९२
सुद्धावासा ३७४
सुधम्मताया १५
सुधम्मदेवसभं ४
सुधम्मा २१, २२, २३, २४
सुधाभोजनीयजातकं १२६
सुनक्खतो १३४, १३७, १४२
सुनिखातइन्दखीलो १८५
सुप्पटिपन्नो २०६
सुप्पतिट्ठितचित्ता २०४
सुभनिमित्तं ९१
सुभुजो २५५
सुमनत्थेरो २१२
सुमनदेविया १७९
सुमागधाया १५३
सुरभिकुसुमदामं १७०
सुरामदेन २७२
सुरं २८२
सुवण्णकक्कटका ३०१
सुवण्णचम्पकपुप्फेहि ३०८
सुवण्णतोरणं ११६, २४६
सुवण्णपासादो ३०८
सुवण्णबिम्बसदिसं १२५
सुवण्णमञ्जूसं ५४
सुवण्णमासकं १३०
सुवपोतकं ५५
सुविमुत्तचित्तो ११
सुविमुत्तं ३७७
सुवुट्ठितं ३७७
सुसङ्गहितपरिजनता २५८
सुसानभावं १३९
सुसाने ८४
सुसू २५५
सुसंविहितकम्मन्ता २८८
सुहदाति २८१
सूकरखतलेणद्वारे २०६
सूकरभत्तं १२९
सूकरमंसं १३९
सूचिकम्मकरणट्ठाने २५२
सूचिपासेन १९९
सूदस्सनो २९८
सूपो २९९
सूरियवच्छसा ७, ११

सूरियालोकं ९५
सूरियुग्गमनकालो १८९
सूरियो १८, १८७, १८८
सूरियं नमस्सति १५६
सेक्खा पञ्ञा ३४१
सेक्खो ३३८
सेट्ठचरियं १६
सेट्ठनादो २०१
सेट्ठो वण्णो १८२
सेतुं बन्धति १८
सेनासनक्खेत्त ३५९
सेनासनसन्तोसो ३५९
सेनासनेना ३५९
सेनासनं ७६, १०२
सेय्या २५३
सेरीसको ३०४
सेरीसकं १३१
सेवितब्बवचीसमाचारो ४४
सेवितब्बासेवितब्बा ९६
सेसपरिसा ६८
सोकधम्मो ४५
सोकसल्लं ४
सोको ११५
सोणत्थेरस्स १०२
सोणत्थेरो ४८
सोण्डा २७९
सोतसम्फस्सादीसु ३७९
सोतापत्तिफले ५९, ६३
सोतापत्तिफलं १९६
सोतापत्तिमग्गेन ९९
सोतापत्तिमग्गो १९६
सोतापत्तिमग्गं १२१, २११
सोतापत्तियङ्गानी ३६४
सोतापन्ना ४३, १७९
सोतापन्नो ६१, १८४, १९८
सोतापपत्तिफलट्ठं २१४
सोत्थियं ३५१
सोपानफलके ४०
सोमो ३०४
सोरच्चं ३१८
सोवग्गिका १७१
सोवण्णमयं २९८
सोवण्णमयं पोक्खरं ६
सोळसविधं आनापानस्सति १९७
संकिलेसधम्मो ४५
संखित्तं ९०
संघनवकं ४८
संघरतनस्स २३५
संघे अगारवो ३८०
संयोजनानि ३२६
संयोजनानी ३७२
संवरपधानं ३६२
संवट्टविवट्टकथा १८६
संवरीपि २९७
संवुतद्वारताया ४७
संवेगो ३२१
संसेदजा ३६८
स्वाक्खातो २०६

ह

हत्थट्ठिकं ८५
हत्थारोहानं ३०
हत्थी मद्दतु २०
हनुकं २७०
हरितकपण्णं १२९
हरितुपलित्तट्ठाने २५२
हरितुपलित्तं ३०३
हरीतकीखण्डम्पि ३४६
हानभागियो २११, ४०५, ४१०
हासपञ्ञा २६२, २६१
हासुबहुलो २६१
हितं २९६
हिरी २०४
हिरी च ओतप्पञ्चा ३१४
हिरोत्तप्पं ४१३
हीनज्झासयो १३७
हीनञ्च सिप्पं २५९
हीनायावत्तो १३६
हेट्ठिमा दिसा २८५

—०—

२. गाथानुक्कमणिका

अ

अच्चङ्कुसोव नागोव ८
अदन्तदमनं दानं ३९२
अनिच्चा वत सङ्खारा ६२
अप्पकेनापि २३५
अलङ्कतो चेपि समं चरेय्य ६८
आयाचितो सुमङ्गलपरिवेणनिवासिना थेरगुणेन ४१७

उ

उभो पादानि भिन्दित्वा ६०

ए

एकायनं जातिखयन्तदस्सी ५६
एवमेतं तदा आदि १७६
एवाहं चिन्तयित्वा ६०
एसा एकासीतिपमाणाय ४१७
एसेव मग्गो नत्थञ्ञो ५८

क

को नाम एत्थ सो सत्तो ८१

च

चत्तारो पञ्च आलोपे ९२
चित्तेन संकिलिट्ठेन ५८

त

ताव तिट्ठतु लोकस्मिं १८

न

न मे आचारियो अत्थि २३१
नमो ते पुरिसाजञ्ञा १०६
न सन्ति पुत्ता ताणाय ५९
नाञ्ञत्र बोज्झा तपसा ६२
नावा मालुतवेगेन ८०
निच्चं उत्रस्तमिदं ६२

प

पञ्जरस्मिं गहेत्वान ६१
पनादो नाम सो राजा १७६

ब

बुद्धो पि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं १९८

भ

भासितं बुद्धसेट्ठस्स ६२

म

मग्गानट्ठङ्गिको सेट्ठो ५८
मग्गो पन्थो पथो पज्जो ५६

य

यथा थम्भे निबन्धेय्य ७६
यथापि दीपिको नाम ७७
यन्तं सुत्तवसेनेव ८१
याव बुद्धा ति नामम्पि ४१८
यो सुखं दुक्खतो अद्द ७४
यं पस्सति न तं दिट्ठं ६९
यं पुब्बे तं विसोधेहि ५९

र

रूपेन संकिलिट्ठेन ५८

स

सत्तवस्सानि भगवन्तं ३३२
सहस्सकण्डो सतगेण्डु १७६
सीलवा वतसम्पन्नो ६१
सुपरिमितपरिच्छिन्नं ४१७